कृपया यह ग्रन्थ नीचे निर्देशित तिथि के पूर्व अथवा उक्त तिथि तक वापस कर दें। विलम्ब से लौटाने पर प्रतिदिन दस पैसे विलम्ब शुल्क देना होगा।

मुमुक्षु भवन वेद वेदाङ्ग पुस्तकालय, वाराणसी।

जून (प्रथम), 1981
मुक्ता
क्या तिब्बती शरणार्थी
स्वतंत्र तिब्बत में जा सकेंगे ?

सुखद वैवाहिक जीवन के लिए

विश्व सुलभ साहित्य

द्वारा प्रकाशित यौन विज्ञान व परिवार संबंधी प्रमाणिक पुस्तकें.

कामकला (दो भाग)
यौन जीवन सुखमय बनाने में सहायक पुस्तक. सेक्स के हर पहलू का वैज्ञानिक विश्लेपण.
प्रत्येक भाग रु. 5.00

युवकों से
युवकों को योग्य पति और जिम्मेदार पिता बनने में सहायक पुस्तक.
रु. 3 50

युवतियों से
एक युवती समझदार वहू, प्रिय पत्नी, योग्य गृहिणी और आदर्श मां बन कर अपनी जिम्मेदारियों को सही ढंग से कैसे निभाए.
रु. 5.00

पति से
पति का पत्नी को समझने व अपना बनाए रखने में सहायक उपयोगी पुस्तक.
रु. 4.00

पत्नी से
परिवार को सुखमय बनाने के लिए विभिन्न समस्याओं का विवेचन. हर पत्नी के लिए अनिवार्य.
रु. 5.00

स्त्री पुरुष
प्राचीन भारतीय काम विज्ञान तथा आधुनिक पश्चिमी खोज के ज्ञान का समावेश इस पुस्तक में मिलेगा रु 6.50

बच्चों की समस्याएं
बच्चों को शारीरिक व मानसिक रूप से स्वस्थ कैसे बनाएं ?
रु. 3.00

आज ही अपने पुस्तक विक्रेता से लें. या आदेश भेजें.

विश्वविजय प्रकाशन

एम-12 कनाट सरकस, नई दिल्ली-110001

VSS 101

पूरा सैट केवल 25 रुपए में डाक खर्च सहित या कोई भी तीन पुस्तकें लेने पर डाक खर्च की छूट. रुपए अग्रिम आने पर

श्रम, तकनीक, स्थान, योग्यता और उत्साह के रहते भी बहुत से युवक अपना उद्योग शुरू नहीं कर पाते. वजह—पूंजी का अभाव.

लघु उद्योग शुरू करने की चाह रखने वाले युवकों की इसी समस्या का समाधान ले कर [illegible]

लघु उद्योग वित्त व्यवस्था अंक

जून (द्वितीय) 1981

इस विशेषांक में आप पाएंगे :

- लघु उद्योगों के लिए ऋण कहां से मिलता है?
- ऋण देने वाली संस्थाएं किन शर्तों पर ऋण देती हैं?
- ऋण प्राप्ति और वापसी की आसान विधियां.
- वित्तीय सहायता प्राप्त करते समय लघु उद्यमियों के सामने आने वाली समस्याएं और उन का समाधान.
- प्राप्त ऋण का सही और समयानुकूल उपयोग कैसे करें?
- उद्योग के प्रबंध व व्यवसाय संबंधी कई नई जानकारियां जो आप को न केवल उद्योग लगाने में सहायक होंगी, उसे विधिवत चलाने में भी मार्गदर्शन करेंगी.

साथ ही समसामयिक विषयों पर कई लेख, लंबी कहानियां, चुटीले व्यंग्य, मर्मस्पर्शी कविताएं व सभी स्थायी स्तंभ.

अपनी प्रति आज ही सुरक्षित करा लें.

सजग, सफल, सरस जीवन की पत्रिका

लेख

कथा साहित्य

कविताएं

स्तंभ

संपादक व प्रकाशक
विश्वनाथ

जून (प्रथम) 1981
अंक : 357

संपादन व प्रकाशन कार्यालय : ई-3, झंडेवाला एस्टेट, रानी झांसी मार्ग, नई दिल्ली-110055.

दिल्ली प्रेस पत्र प्रकाशन प्रा. लि. के लिए विश्वनाथ द्वारा दिल्ली प्रेस, नई दिल्ली व दिल्ली प्रेस म. प. प्रा. लि. गाजियाबाद में मुद्रित.

प्रकाशनार्थ रचनाओं के साथ टिकट लगा पता लिखा लिफाफा (केवल टिकट नहीं) आना आवश्यक है अन्यथा अस्वीकृत रचनाएं लौटाई नहीं जाएंगी.

मूल्य : एक प्रति : 2.75 रुपए, एक वर्ष : 55.00 रुपए. विदेश में (समुद्री डाक से) एक वर्ष : 150.00 रुपए.

मुख्य वितरक व वार्षिक शुल्क भेजने का स्थान :
दिल्ली प्रकाशन वितरण प्रा. लि., झंडेवाला एस्टेट, रानी झांसी मार्ग, नई दिल्ली-110055.

व्यक्तिगत विज्ञापन विभाग : एम—12, कनाट सरकस, नई दिल्ली-110001.

बंबई कार्यालय : 79ए, मित्तल चैंबर्स, नारीमन पाइंट, बंबई-21.

मद्रास कार्यालय : अपार्टमेंट नंबर 342, छठी मंजिल, 31/2ए पैंथन रोड, खलील शिराज एस्टेट, मद्रास-600008.

मुक्ता में प्रकाशित कथा-साहित्य में नाम, स्थान, घटनाएं व संस्थाएं काल्पनिक हैं और वास्तविक घटनाओं या संस्थाओं से उन की किसी भी प्रकार की समानता केवल संयोग मात्र है.
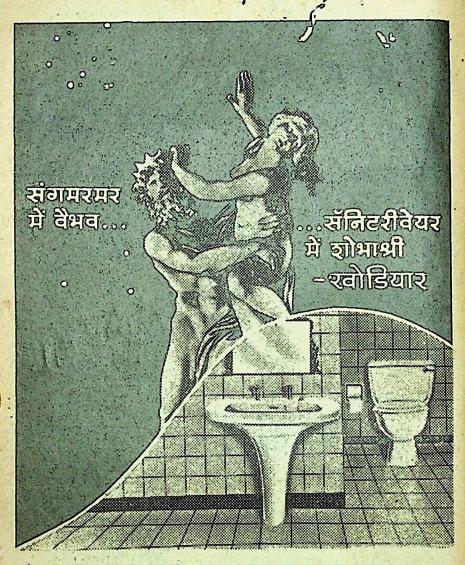
तंदुरुस्ती मौजमस्ती संग संग

अपने पूरे परिवार को मज़ेदार, स्वादिष्ट बोर्नविटा दीजिए. बोर्नविटा कोको, माल्ट, दूध और शक्कर के स्वाभाविक गुणों से भरपूर है.

अब! बड़ी बचत पूरे एक रुपये की
रीफ़िल पैक के साथ

कैडबरीज़
बोर्नविटा
आपके लिए गुणों से भरपूर

महाशक्तियों की विस्तारवादी नीतियों के कारण लगता है कि एक दिन दुनिया के नक्शे पर एक भी गुटनिरपेक्ष या स्वतंत्र देश नहीं बच सकेगा. अफगानिस्तान की स्वतंत्र सत्ता पर कुठाराघात करने के पश्चात रूसी विस्तारवाद विएतनाम, चाड, मोजांबिक आदि देशों में भी अपने पंजे फैला रहा है, कभी सीधे तौर पर और कभी अपने एजेंट क्यूबा, लीबिया आदि के माध्यम से.

अश्वमेध यज्ञ के घोड़े के समान सोवियत विस्तारवाद एक के बाद एक छोटे देशों को अपने अधिकार में लेता जा रहा है जिस की नवीनतम उपलब्धि है —इथियोपिया. इस देश के सैनिक शासन ने सोवियत प्रभाव के समक्ष पूर्ण समर्पण कर दिया है और अब कम्यूनिस्ट देशों की भांति इथियोपिया में भी समाजवाद को थोपा जा रहा है. सारी शिक्षा व्यवस्था में कम्यूनिस्ट प्रवृत्ति अत्यंत मुखर हो गई है और जनता को प्रति सप्ताह अनिवार्य कम्यूनिस्ट कक्षाओं में उपस्थित रहने के लिए बाध्य किया जाता है. यहां वर्तमान शासन की जनता विरोधी नीतियों से सारे देश में आतंक का वातावरण उत्पन्न हो गया है, जैसा कि प्रत्येक कम्यूनिस्ट देश में सामान्यतया दिखाई देता है.

—प्रदीप चौहान

✦

मई (प्रथम) अंक में प्रकाशित 'अवध की बेगम' (लेख : ध. व. कृष्णमूर्ति) पढ़ा. मैं इस बात से सहमत हूं कि बेगम विलायत महल को उन की स्थिति के अनुसार पूरा महल तथा भत्ता मिलना चाहिए, वैसे मुझे शक है कि इस मांग को मनवाने के लिए बेगम विलायत महल ने कभी भी अपने दिवंगत पति इयायत हुसैन से कहा होगा.

किंतु यदि सरकार बेगम विलायत महल को एक महल दे दे तो सवाल यह है कि फिर वाजिद अली शाह के वंशजों का क्या होगा? —इसरार अहमद कुरैशी

✦

अप्रैल (द्वितीय) अंक में प्रकाशित 'कांग्रेस सरकार की देखरेख में धार्मिक अनुष्ठानों के नाम पर एक और नर बलि' (लेख : विशेष प्रतिनिधि) पढ़ कर अत्यंत आश्चर्य एवं दुख हुआ. बुद्धिजीवियों से मेरा अनुरोध है कि वे धर्म के नाम पर होने वाली ऐसी घिनौनी, जानलेवा व अमानवीय कुप्रथाओं को मान्यता न दे कर उस का विरोध करें, ताकि भविष्य में फिर कभी किसी निरपराध व्यक्ति की जिंदगी के साथ इतना क्रूर खिलवाड़ न हो.

—वीना भाटिया

✦

अप्रैल (द्वितीय) अंक में प्रकाशित

'संपादक के नाम' के लिए मुक्ता की रचनाओं पर आप के विचार आमंत्रित हैं. साथ ही आप देश के राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक आदि विषयों पर भी अपने विचार इस स्तंभ के माध्यम से रख सकते हैं. प्रत्येक पत्र पर लेखक का पूरा नाम व पता होना चाहिए, चाहे वह प्रकाशन के लिए न हो. पत्र इस पते पर भेजिए :

संपादक के नाम,
'मुक्ता, झंडेवाला एस्टेट,
नई दिल्ली-110055.

स्तंभ 'धूपछांव' के अंतर्गत 'आत्महत्या का अंतरराष्ट्रीय केंद्र' शीर्षक की कटिंग में एक गलती है. वहां कुतबुद्दीन ऐबक द्वारा सन 1452 में कांकरिया तालाब बनवाने का उल्लेख है जब कि उस का शासनकाल सन 1206-1211 था. —कृष्णकुमार गर्ग

✦

अप्रैल (प्रथम) अंक में प्रकाशित 'आखिर इंदिरा कांग्रेस का विकल्प क्या होगा?' (लेख : राजपाल राजे) में इंदिरा सरकार के गत एक वर्ष के कार्यों तथा उपलब्धियों का जो लेखाजोखा प्रस्तुत किया गया है, वह बिलकुल सही तथा तर्कसंगत है. निस्संदेह इंदिरा कांग्रेस अपने चुनावी वादों को पूरा करने में पूर्णतया असफल रही है. आज देश महंगाई, घोर अराजकता, भ्रष्टाचार तथा अनियंत्रित लालफीताशाही से पीड़ित है.

देश में लोक दल, जनता पार्टी तथा भारतीय जनता पार्टी आदि कुछ प्रभावशाली पार्टियां हैं, परंतु इन में से किसी में भी अकेले कांग्रेस का विकल्प बनने की क्षमता नहीं है. इन तीनों पार्टियों के ही परस्पर संघर्ष का परिणाम था कि 42.58 प्रतिशत मत पाने वाली इंदिरा कांग्रेस 1980 के मध्यावधि चुनावों में सत्तारूढ़ हो गई, जब कि कुल मिला कर तीनों पार्टियों का योग उस से कहीं अधिक था.

जब तक इन तीनों दलों के नेता तथा उन के समर्थक कल्पना के आकाश से उतर कर वास्तविकता के धरातल पर नहीं आ जाते, जब तक पारस्परिक द्वेष तथा कटुता त्याग कर वे एक मंच पर एकत्र हो कर एक झंडे, एक संविधान तथा समान लक्ष्य को निर्धारित कर किसी शक्तिशाली दल का निर्माण नहीं करते, तब तक इंदिरा कांग्रेस के विकल्प की बात कपोल कल्पना के अतिरिक्त कुछ नहीं है.

इतिहास साक्षी है कि इंदिरा कांग्रेस तभी पराजित हुई थी जब 1967 में संविद के रूप में तथा 1977 में जनता पार्टी के रूप में एकत्र हो कर विरोधी दलों ने सामूहिक प्रयास किया था, यद्यपि उन का यह प्रयास अव्यवस्थित तथा अनियोजित होने के कारण चिरस्थायी न हो सका.

—शकुनचंद गुप्त

✦

अप्रैल (प्रथम) अंक में प्रकाशित 'सरकारी बैंकों के रंग' (लेख : सत्येंद्र उप्पल) पढ़ कर बहुत दुख हुआ. ऐसा प्रतीत होता है कि लेखक महोदय किन्हीं व्यक्तिगत कारणों से इस प्रकार का लेख लिखने के लिए मजबूर हुए हैं, जैसा कि उन्होंने लेख में लिखा भी है कि लेखक का आकाशवाणी से मिला चेक खो गया है.

परंतु लेखक को शायद इस बात की जानकारी नहीं है कि चेक डाक द्वारा भेजे जाते हैं. यदि डाक में कोई चेक खो जाता है तो बैंक कर्मचारी कुछ नहीं कर सकता.

जहां तक गबन का सवाल है, जो आंकड़े लेखक ने दिए हैं उन से पता लगता है कि गबन की संख्या घटती जा रही है और आगे भी घटती ही जाएगी.

शायद लेखक को यह भी पता नहीं कि बैंक अपनी शाखा बिना सरकार की इजाजत के खोल ही नहीं सकते और जमा राशि तथा विनियोजन की सीमा भी नियम के अनुसार ही प्राप्त करना उस के लिए आवश्यक है. —सुरेंद्रसिंह

✦

मई (प्रथम) अंक के स्तंभ 'परदे के आगे परदे के पीछे' में 'सेंसर पर सेंसर' शीर्षक के अंतर्गत बताया गया है कि 'ज्वालामुखी' का गाना 'पान बीड़ी सिगरेट' पर विविध भारती द्वारा प्रतिबंध लगा दिया गया है. यह एकदम गलत है. 2 मई, 1981 को ठीक 4.05 बजे शाम के समय आकाशवाणी द्वारा यह गाना बजाया गया था. —डा. गोविंद शर्मा ●

मुख पृष्ठ

भारत में बसे तिब्बती शरणार्थी परिवार

निज छायाकार द्वारा

संपादकीय

जून (प्रथम) 1981

'मकालू' : एक और इंकाई हौवा

सस्ते स्टंट खड़े करने में इंदिरा कांग्रेस वालों का कोई सानी नहीं. अपनी प्रचार शक्ति के सहारे वे बिना किसी मामले के भी बवंडर खड़ा कर सकते हैं. पहले उन्होंने राष्ट्रपति पद्धति का स्टंट चालू किया था, अब इंदिराजी की गिरती प्रतिष्ठा बचाने के लिए उन की हत्या के षड्यंत्रों की बात की जाने लगी है.

एअर इंडिया के बोइंग 707 विमान 'मकालू' के कुछ तारों को काटे जाने की घटना का आरोप लगा कर यह साबित करने की कोशिश की गई है कि कुछ षड्यंत्रकारी इंदिराजी की हत्या का प्रयास कर रहे हैं. श्रीमती इंदिरा गांधी ने इस विमान से स्विट्जरलैंड, कुवैत आदि की यात्रा के लिए जाना था.

गृह मंत्री जैलसिंह ने इस घटना का परदाफाश ऐसे किया मानो देश में सत्ता उलटने का षड्यंत्र रचा गया है. वास्तविकता यह थी कि उस विमान में इंदिराजी की यात्रा 20 दिन बाद होनी थी और उस दौरान विमान ने कितनी ही उड़ानें भरनी थीं. यदि तारों के काटने से नुकसान हो सकता था तो विमान पहले ही दुर्घटनाग्रस्त हो जाता.

षड्यंत्र का रूप देने के लिए न केवल घटना का रहस्योद्घाटन किया गया, गृह मंत्री फटाफट बंबई भी गए, जहां विमान खड़ा था और अपनी जांच के बाद कई अधिकारियों को बरखास्त कर दिया व कई को गिरफ्तार कर लिया गया.

इस से लाभ यह हुआ कि साधारण सी घटना, जो दोचार दिन में भुला दी जाती, बरखास्तगियों व गिरफ्तारियों से महीनों तक अब चर्चित रहेगी.

प्रधान मंत्री के प्रति सहानुभूति पैदा करने का क्या यह अचूक तरीका नहीं है? गड़बड़ सिर्फ इतनी हुई कि इस षड्यंत्र को पकड़ने का श्रेय श्री जैलसिंह ने लेना चाहा जिन्हें बहुत ही थोड़े लोग गंभीरता से लेते हैं. अपनी जल्दबाजी से गृह मंत्री ने पूरे मामले को एक मखौल बना दिया है और जिस सहानुभूति के लिए यह नाटक रचा गया था, वह मजाक में बदल गई है.

स्थानीय निकायों की भूमिका

विश्व भर में लोकतांत्रिक देशों में स्थानीय निकायों के लिए चुनाव सत्तारूढ़ दल की लोकप्रियता के थर्मामीटर का काम करते हैं. चूंकि स्थानीय निकायों के चुनाव आम चुनावों से जल्दी होते हैं, इसलिए सत्तारूढ़ व विरोधी दल अपनी लोकप्रियता का परीक्षण इन चुनावों में आसानी से कर लेते हैं.

भारत में आमतौर पर इसी कारण स्थानीय निकायों के चुनाव ही नहीं कराए जाते. राज्य अथवा केंद्र के सत्तारूढ़ नेता डरते रहते हैं कि स्थानीय निकायों के चुनावों में न जाने क्या लहर हो. इसलिए बेहतर यही है कि ये चुनाव कराए ही न जाएं.

कई बार सत्तारूढ़ दल ही नहीं, विरोधी दल भी इस शक्ति परीक्षण के लिए तैयार नहीं होते. पश्चिमी बंगाल में हाल ही में इंदिरा कांग्रेस इन स्थानीय निकायों के चुनावों को टालने की कोशिश कर रही थी जब कि सत्तारूढ़ वामपंथी मोर्चा अपनी लोकप्रियता का सिक्का जमाने के लिए इन चुनावों को कराने के लिए दृढ़ संकल्प था.

दिल्ली नगर निगम के चुनाव भी इसी वजह से बारबार टाले जा रहे हैं कि कहीं भारतीय जनता पार्टी जीत गई तो इंदिरा कांग्रेस मुंह दिखाने लायक नहीं रहेगी.

अभी हाल में हरियाणा सरकार ने भी मतदाता सूचियों को ठीक कराने के बहाने इन चुनावों को टाला है.

आज हालत यह है कि कई शहरों में तो 20-20 वर्ष से स्थानीय निकायों के चुनाव नहीं हुए हैं. वहां या तो सरकारी अधिकारी नगर का काम देखते हैं या पुराने सदस्य ही बने रहते हैं.

अंगरेजों ने 1880 के लगभग ही स्थानीय निकायों को भारतीयों के सुपुर्द करने के लिए चुनाव कराने शुरू कर दिए थे. इसी के फलस्वरूप भारत में नई राजनीतिज्ञों की जमात पैदा हुई जिस ने स्वतंत्रता संग्राम में योगदान दिया. उन्होंने शहरों को सुधारने के काम से जो प्रशिक्षण प्राप्त किया, उसे बाद में पूरे देश पर इस्तेमाल किया.

अब जब स्थानीय निकायों के चुनाव ही न हों तो राजनीति में प्रवेश सीधे विधान सभा से ही हो सकता है. विधान सभा में कौन क्या कर सकता है, क्या नहीं, यह मतदाताओं को मालूम ही नहीं हो सकता. हमारे राजनीतिज्ञ अब राजनीतिबाजों में जो बदल गए हैं, उस का एक कारण यह भी है.

वैसे भी चुनाव न होने पर, नगर या कसबे का काम कोई सरकारी अधिकारी देखता है और आमतौर पर वह नगर उस का अपना शहर नहीं होता. अतः उसे नगर के विकास से कोई हार्दिक प्रेम या लगाव नहीं होता. यही कारण है कि आज देश के अधिकांश नगर और कसबे बुरी हालत में हैं.

जनता को राज्य सरकारों पर दबाव डालना चाहिए कि वे अपने सत्तारूढ़ दल के हितों की परवा न कर के शहरों के हित के लिए नगर निकायों के चुनाव नियमित रूप से कराएं ताकि शहरियों को अपने नगरों का कामकाज सुव्यवस्थित रूप से चलाने का अवसर मिलता रहे और देश की राजनीति में नए चेहरे उभरते रहें.

इस दिशा में अवकाश प्राप्त कर्मचारी, व्यापारी व उद्योगपतियों को पहल करनी चाहिए. हर कसबे और शहर में नागरिकों की समितियां क़ायम की जाएं जो स्थानीय समस्याओं को उजागर करती रहें और राज्य सरकारों पर लगातार दबाव बनाए रखें कि वे इस समस्या पर ध्यान दें और कसबों व शहरों की हालत को बिगड़ने न दें.

भारतीय संविधान पर पुनर्विचार

सत्तारूढ़ कांग्रेस तो लगभग 1967 से ही भारतीय संविधान में अपनी इच्छानुसार परिवर्तन करने की मांग कर रही है. अब सर्वोच्च न्यायालय के न्यायमूर्ति श्री डी.ए. देसाई ने कहा है कि भारतीय संविधान को एक बार फिर नई नजर से देखा जाना चाहिए.

उन्होंने भी इस के वही कारण बताए हैं जो श्रीमती इंदिरा गांधी या उन

के दल के अन्य लोग बताते हैं. जनता की आकांक्षाओं को पूरा करना. न्यायमूर्ति का मत है कि इस संविधान में 1950 से पहले की विचारधारा का समावेश हुआ है जब कि आज की आवश्यकताएं बदल गई हैं.

राजनीतिबाजों की हां में हां मिलाते हुए उन्होंने माना है कि न्यायपालिका आज किसी के भी प्रति उत्तरदायी नहीं है जब कि सरकार के दो अन्य अंग प्रशासन व विधान मंडल जनता के प्रति उत्तरदायी हैं.

न्यायमूर्ति देसाई को अभी भी वह पुरानी शिकायत है कि जमींदारी उन्मूलन में न्यायपालिका ने बहुत टांग अड़ाई थी जिस की वजह से सरकार को संविधान में कई बार परिवर्तन करने पड़े.

यह सब बातें राजनीतिबाज करें तो समझ आता है क्योंकि राजनीतिबाज निरंकुश शासन चाहता है. आज न्यायपालिका ही प्रशासन व राजनीतिबाज की निरंकुशता के विरुद्ध अकेला हथियार है जिस से आम नागरिक लड़ सकता है.

कहने को तो विधान मंडल यानी राजनीतिबाज जनता के प्रति उत्तरदायी हैं. पर यह उत्तरदायित्व है किस प्रकार का? पांचसात वर्ष में एक बार हां या न कहने के रूप में मतदान का ही तो. चुनावों में न तो व्यक्ति का परीक्षण होता है, न नीति का. वहां तो ठप्पा लगा होता है कि कौन सा दल राज करेगा.

अब यदि सत्ता में आने पर कोई दल या राजनीतिबाज 10-20 या 100-200 व्यक्तियों से बदला लेने की कोशिश करे तो वे व्यक्ति कहां जाएं—क्या वे इस के लिए मतदान की मांग कर सकते हैं?

न्यायपालिका ही है जहां वे राजनीतिबाज अथवा सरकारी अधिकारी के विरुद्ध शिकायत ले जा सकते हैं और जहां अभी तक उन की कमोबेश सही या गलत सुनवाई होती है.

यदि न्यायमूर्ति देसाई के अनुसार न्यायपालिका भी राजनीतिबाज के प्रति उत्तरदायी होने लगी तो क्या वह सत्तारूढ़ दल के विरुद्ध कोई निर्णय दे सकेगी. फिर तो वह रूसी अदालतों की तरह हो जाएगी, जो कहने को तो स्वतंत्र हैं पर वास्तव में सरकारी विभाग की तरह काम कर रही हैं.

यह खेद की बात है कि सर्वोच्च न्यायालय के न्यायाधीश ही न्यायपालिका की स्वतंत्रता का हनन करने की वकालत करने लगे हैं.

न्यायमूर्ति देसाई ऐसा क्यों कर रहे हैं, यह तो नहीं कहा जा सकता, पर यह अवश्य है कि राजनीतिबाज इस तरह के वक्तव्यों का अच्छाखासा लाभ उठाएंगे.

रेलों की किल्लत क्यों?

मुफ्त में या सस्ते दाम पर कोई माल मिल रहा हो और उस के लिए लंबी लाइन में लगना पड़े या बांटने वालों के हाथ गरम करने पड़ें तो इस में कोई आश्चर्य की बात नहीं. पर अब प्रायः सभी कुछ सरकार के ही हाथ में आ जाने से देश के नागरिकों को पूरा पैसा देने पर भी सरकारी विभागों से काम करवाने के लिए हर कर्मचारी की मुट्ठी गरम करनी पड़ती है और उस के सामने गिड़गिड़ाना पड़ता है.

छुट्टियां शुरू होते ही रेलों में आपाधापी शुरू हो गई है. टिकट का पूरा पैसा देने को तैयार होने पर भी यात्रियों को टिकट चैकरों, कुलियों व दलालों के इर्दगिर्द चक्कर काटने पड़ रहे हैं.

कोटा प्रणाली की परंपरा के कारण सुरक्षित स्थान तो खिड़की खुलने से पहले ही खत्म हो जाते हैं. बाद में रेल कर्मचारी विशिष्ट व्यक्तियों, दूसरे स्टेशनों आदि के कोटे से इंतजार कर रहे यात्रियों को ऊंचे दामों पर सीटें दे कर भारी पैसा कमा लेते हैं.

यदि यह समस्या साल में थोड़े दिनों की ही हो तो बात दूसरी है, पर यह कमी तो हर क्षेत्र में बारह महीनों ही रहती है.

यह सरकारी अर्थव्यवस्था का ही कमाल है कि जहां पूरा पैसा मिल रहा है वहां भी सरकार रेल व्यवस्था में विस्तार नहीं करती, जिस से सरकार को भी अधिक लाभ हो और यात्रियों को भी अधिक सुविधा मिले.

रेल अधिकारी मात्र सरकारी चैकर हैं जिन्हें अपने वेतन और भत्तों से मतलब है, नागरिक की सुविधा या सरकार की जिम्मेदारी से नहीं. जब सरकार ही मांग के अनुसार सेवा उपलब्ध कराने को तैयार नहीं है तो वे क्यों सही व्यवस्था करने के लिए सिरखपाई करें?

जनता यदि पिसती है तो पिसती रहे, इस से किस को कम वोट मिल रहे हैं या किस कर्मचारी के वेतन में से कटौती हो रही है?

अनाज की आवाजाही फिर बंद

जनता पार्टी ने अपने शासन काल में एक बहुत बड़ा काम किया था—इंदिरा कांग्रेस द्वारा लगाए गए अनाज की एक जिले से दूसरे जिले को और एक राज्य से दूसरे राज्य को आवाजाही पर से काफी पाबंदियां उठा दी थीं. इस का तत्काल नतीजा यह हुआ कि देश में अनाज के दाम गिर गए और सारे देश में उन का एक स्तर हो गया था.

इस आवाजाही पर पाबंदी का एक ही उद्देश्य था—राजनीतिबाज और सरकारी कर्मचारी द्वारा जेब भरना. हर ट्रक/वैगन पर इतनी घूंस दो और माल ले जाओ. बहाना यह बनाया जाता था कि उत्पादक प्रदेश या जिले में मूल्य न बढ़ने देने के लिए ऐसा किया जा रहा है.

पर इस के साथ यह नहीं बताया गया कि दूसरे उपभोक्ता जिलों या प्रदेशों में माल की कमी के कारण अनाज के भाव बहुत ऊंचे हो जाएंगे और वहां की जनता को बहुत तकलीफ होगी. वैसे देश को एक इकाई माना जाता है और राष्ट्रीय एकीकरण परिषदें बनाई जाती हैं पर इस मामले में दूसरे जिले या प्रदेश विदेश बन गए.

अब इंदिरा कांग्रेस फिर सत्तारूढ़ हो गई है. इस के नेताओं, कार्यकर्ताओं व अधीनस्थ कर्मचारियों को पैसा चाहिए. बस अब फिर अनाज की आवाजाही पर पाबंदियां लगनी शुरू हो गई हैं. बहाना वही पुराना—मूल्यों की वृद्धि की रोकथाम, सरकारी खरीद पर रुकावटें हटाना इत्यादि.

मध्य प्रदेश सरकार ने इस का नया तरीका निकाला है. इस ने व्यापारियों पर प्रतिबंध लगाया है कि जितना माल वे किसानों या मंडियों से खरीदेंगे उस का 50 प्रतिशत सरकार को 140 रुपए क्विंटल पर बेचना होगा. चाहे उन की खरीद का दाम कितना ही हो. क्योंकि बाजार भाव ऊंचा है और किसान भी अधिक पैसों की मांग कर रहा है, इसलिए यहां लागत से कम पर सरकार को बेचना होगा. इस लेवी से भी छुटकारा तो खैर पाया ही जा सकता है—वही पुरानी अचूक दवा, रिश्वत.

इस का नतीजा यह भी हुआ है कि व्यापारियों ने, जो रिश्वत नहीं देना चाहते, यह धंधा ही बंद कर दिया. अब सरकार स्वयं किसानों से खरीदे. इस से कम उत्पादन वाले क्षेत्र में गेहूं के दाम 200 रुपए क्विंटल तक पहुंच गए हैं.

ऐसी ही योजनाएं हरियाणा और पंजाब में भी चल रही हैं और अन्य राज्यों में भी जारी हो जाने की पूरी संभावना है.

बेवकूफ जनता पर शासन ऐसे ही तो किया जाता है. ●

आज का पाकिस्तान

लेख • डा. प्रशांत वेदालंकार
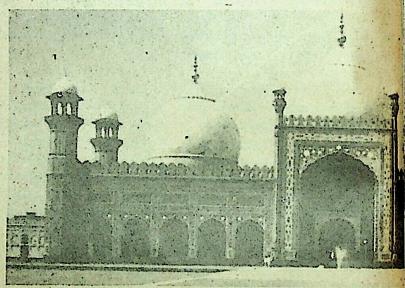
लाहौर की बादशाही मसजिद.

पालम हवाई अड्डे से लाहौर के लिए वायुयान उड़ा परिचारिका ने नाश्ता दिया ही था और हम उसे पूरी तरह ले भी नहीं पाए थे कि घोषणा हुई कि वायुयान पाकिस्तान की धरती लाहौर पर उतर रहा है. अकस्मात इतनी जल्दी पाकिस्तान की भूमि पर उतरते हुए यह अनुभूति जगी कि कहीं हमारे मन अनावश्यक रूप से ही तो पाकिस्तान से दूरी अनुभव नहीं करते. हमारी यह दूरी काल्पनिक और कृत्रिम तो नहीं है? क्या पाकिस्तान के प्रति हमारी दूरी केवल राजनीतिक है? मैं इस लेख में अपनी पाच दिनों की संक्षिप्त यात्रा का विवरण प्रस्तुत कर रहा हूं. इन दिनों में मैं ने वहां जो देखा, सुना तथा पढ़ा और जो अनुभव किया, वही इस लेख में है.

पाकिस्तान के संस्थापक मुहम्मद अली जिन्ना को पाकिस्तान का प्रत्येक व्यक्ति बहुत अदब से स्मरण करता है. प्रत्येक सरकारी कार्यालय व राजकीय अतिथि भवन में उन का विशाल चित्र टंगा होता है.

बंगला देश के मुक्ति संग्राम के समय पाकिस्तान के राष्ट्रपति जनरल मुहम्मद याह्या खां के बारे में पता चला कि वह मात्र सैनिक ही थे; उन्हें राजनीति का कोई अनुभव नहीं था. वह शराब बहुत पीते थे, अतः लोग उन से नाराज रहते थे.

जनरल मुहम्मद अयूब खां के विषय में लोगों की धारणाएं अच्छी थीं. काफी लंबे समय तक पूरी सफलता के साथ उन्होंने शासन किया. 1965 के युद्ध में थोड़ा नुकसान होने के बावजूद वह उस युद्ध के हीरो माने जाते हैं. विशेष रूप से इसलामाबाद जैसे भव्य नगर के निर्माण के लिए लोग उन को बहुत याद करते हैं.

पाकिस्तान में श्री जुल्फिकार अली भुट्टो को जनरल जिया उल हक ने फांसी के फंदे पर झुला दिया था. हम ने रावलपिंडी में वह जेल भी देखी जहां भुट्टो कैद थे. हमारे

पिछले वर्ष भारतीय जनता पार्टी की ओर से तीन सदस्यों का एक प्रतिनिधि मंडल पाकिस्तान गया था. इस के एक सदस्य के रूप में लेखक ने वहां जा कर जो देखा, पढ़ा और अनुभव किया उस का एक तटस्थ विवरण प्रस्तुत किया है, जिस से पाकिस्तान की एक अजानी तसवीर उजागर होती है...

पाकिस्तान के राष्ट्रपति जिया उल हक भारतीय राजदूत से पत्र लेते हुए.

जनरल मुहम्मद अयूब खां : लोग इन्हें आज भी याद करते हैं.

मन में यह जानने की उत्सुकता थी कि वहां के लोगों की उन के बारे में क्या धारणा है. जहां तक उन्हें फांसी दिए जाने का संबंध है, किसी को कोई शिकायत नहीं दीखती थी. आम लोगों का कहना था, "हुक्मरानों की बातें हुक्मरां जानें, सलतनत में जानें तो जाती ही हैं. कभी किसी की, कभी किसी की."

लाहौर में एक सरकारी अधिकारी से जब मैं ने भुट्टो को दी गई फांसी पर उस की प्रतिक्रिया जाननी चाही तो वह बोला, "सच तो यह है कि भुट्टो भी जिया उल हक को न छोड़ता." वहां का यह एक सामान्य मुहावरा था, जो उपर्युक्त प्रश्न के उतर में मुझ से बहुतों ने कहा, "साहब, कब्र एक थी, जानें दो थीं. किसी एक को उस में जाना ही था. भुट्टो न जाता तो जिया जाता. हम सोचते हैं कि भुट्टो का जाना ही मुल्क के लिए अच्छा रहा."

किंतु जब भुट्टो को दी गई फांसी का प्रश्न एक ड्राइवर से किया गया तो वह बोला, "जब जिया ने बड़े-बड़े मुल्कों की बात नहीं मानी तो हमारी क्या मानता?" उस के कहने का भाव था कि भुट्टो को दी जाने वाली फांसी को रोकने के लिए हम कुछ नहीं कर पा रहे थे. वह भुट्टो को दी गई फांसी से प्रसन्न नहीं दीखता था. एक और ड्राइवर ने बताया कि लोग अब भी भुट्टो को याद करते हैं.

श्री भुट्टो के व्यक्तित्व व चरित्र के संबंध में लोगों में मतभेद थे. लाहौर के एक सरकारी अधिकारी का कहना था कि भुट्टो बहुत ही योग्य थे, पर थे बड़े हठी. इसलामाबाद में भी एक अधिकारी का कहना था कि जुल्फिकार अली भुट्टो काबिले तारीफ थे. जो लोग आज उन की बुराई करते हैं, वे ज्यादती करते हैं. उन्होंने भुट्टो से अपना घरेलू रिश्ता बताया था. पर लाहौर के ही एक अन्य सरकारी अधिकारी की धारणा भुट्टो के संबंध में अच्छी नहीं थी. उस का कहना था, "हमारे मुल्क में नैतिक मूल्यों के हनन का एकमात्र दायित्व भुट्टो पर है."

वह भुट्टो पर टिप्पणी करते हुए एकदम आवेश में आ गया और बोला, "भुट्टो से अधिक कमीना मैं ने इतिहास में कोई आदमी नहीं देखा. वह किसी की भी औरत को पकड़ ले, कोई चूं तक नहीं कर सकता था. मैं तो कहता हूं कि उस के मुर्दा जिस्म को हर शहर में ले जा कर जूते पड़वाने चाहिए थे."

भारत में रहते हुए समाचारपत्रों के माध्यम से पाकिस्तान के राष्ट्रपति जिया उल हक के बारे में जो जाना और पढ़ा था, उस के आधार पर उन का व्यक्तित्व बहुत ही संदेहास्पद था. किंतु पाकिस्तान में उन के बारे में लोगों की धारणाएं अच्छी थीं. लाहौर के एक अधिकारी ने हमें बताया कि श्री जिया सरल स्वभाव के तथा खुदा से डरने वाले आदमी हैं. दिन में पांच बार नमाज पढ़ते हैं. सरल प्रकृति के हैं. उन का जमायते इसलाम से कोई संबंध नहीं है.

कुछ और लोगों ने भी उन की प्रशंसा की. एक पत्रकार ने कहा, "उन का हरेक के साथ अच्छा व्यवहार है. मुझे उन के साथ कई बार यात्रा करने का अवसर मिला है, वह हमारी हर सुविधा का, यहां तक कि

खानेपीने का भी ख़्याल रखते हैं." पर जब मैं ने एक ड्राइवर से जिया उल हक के बारे में टिप्पणी करने के लिए कहा तो वह बोला, "जब तक मार्शल ला है, तब तक कोई क्या बोलेगा?"

वैसे हमारा प्रतिनिधि मंडल जिया उल हक से बहुत प्रभावित हुआ. हम जैसे ही उन की बैठक में घुसे, वह एकदम तेजी से आए और हाथ मिलाने लगे. उन्होंने सलवार और कुरता पहन रखा था ऐसा नहीं लगा कि कोई राष्ट्रपति हम से मिलने आ गया है. उन की बैठक भी बहुत ही सादी और छोटी थी. उन के चेहरे पर मुसकान थी. बहुत ही सरल व मिलनसार व्यक्तित्व था उन का. जब उन को पता चला कि मैं मूलत: मुलतान का हूं तो कहने लगे, "इस यात्रा में मुलतान को भी शामिल कर लो. उस को छूते चले जाओ."

हमारे साथी धमेंद्रनाथ आचार्य ने अपनी पुत्री द्वारा भेजे चार रूमाल भेंट किए तो वह गदगद हो गए. उन्होंने उसे पत्र लिख कर उस के प्रति आभार व्यक्त किया तथा उसे पाकिस्तान आने की दावत दी. जिया के सरल व सौम्य रूप को देख कर श्री राम जेठमलानी ने उन से कहा, "आप के जो फोटो भारत में छपते हैं वे आप के असली चेहरे से बहुत अलग हैं. आप को अपने दूतावास को हिदायत देनी चाहिए कि वह आप का सादा और सौम्य रूप ही प्रस्तुत किया करें." 45 मिनट की वह वार्ता बहुत ही सुखद थी.

चुनाव तथा शासन व्यवस्था

पाकिस्तान में पिछले अनेक वर्षों से चुनाव नहीं हुए हैं. अत: चुनाव के बारे में वहां के लोगों की प्रतिक्रिया जानने की मुझ में उत्सुकता थी. पहले ही दिन लाहौर के महापौर से जो रात्रि भोज में मेरे पास ही बैठे थे, मैं ने खूब खुल कर बात की. उन का कहना था, "भुट्टो हमेशा चुनाव टाल देता था. नगर निगम तथा नगर पालिकाओं के चुनाव भी कई वर्षों तक उस ने नहीं करवाए. महापौर के चुनाव तो 22 वर्षों के बाद हुए हैं. जिया उल हक ने आते ही चुनाव करवा दिए हैं."

प्रादेशिक तथा राष्ट्रीय स्तर के चुनावों के अब तक न होने का कारण पूछा तो वह

पाकिस्तान का प्रवेश द्वार यानी कराची हवाई अड्डा.

बोले, "जिया तो चुनाव करवाना चाहते हैं, लेकिन मिनिस्टर लोग ऐसा नहीं चाहते." अनेक लोगों का कहना था कि जनता की ओर से चुनाव की कोई मांग नहीं है.

चुनाव की संभावना के बारे में मैं ने जब एक ड्राइवर से पूछा तो वह बोला, "इस बारे में मैं कुछ नहीं कह सकता." एक उच्च अधिकारी ने पेशावर में मुझे बताया कि अभी राष्ट्रपति ने चुनाव के बारे में कुछ नहीं कहा है. जनता की भी मांग नहीं है. सूचना मंत्रालय की ओर से लाहौर में हमारा पत्रकारों के साथ भोजन था. वहां पत्रकारों ने बताया कि पाकिस्तान में अखबारों पर इस रूप में सेंसर है कि मार्शल ला के खिलाफ कुछ नहीं लिखा जा सकता. लाहौर के गवर्नर का यह स्पष्ट अभिमत था कि पाकिस्तान में भी भारत जैसा प्रजातंत्र आएगा, उसे कोई नहीं रोक सकता.

1978 में पाकिस्तान में नगर निगम व नगर पालिकाओं के चुनाव हुए थे, उन में लोग किसी दल के नाम से चुनाव नहीं लड़े. वहां सभी दलों पर प्रतिबंध है. दल के आधार पर विभाजन समाप्त कर दिया गया है. पर मतदाता प्रत्येक उम्मीदवार की विचारधारा से परिचित था. मुझे यह भी बताया गया कि कुछ उम्मीदवार वामपंथी विचारधारा के भी थे.

इस समय पंजाब भर के महापौरों को एकत्र कर के सूबे की असेंबली बनाई गई है, जो गवर्नर की देखरेख में कार्य करती है. महापौरों की कुछ समितियां — शिक्षा समिति, स्वास्थ्य समिति आदि — बना दी गई हैं.

लाहौर नगर निगम के सभी सदस्य हमारा स्वागत करने के लिए हवाई अड्डे पर आए थे, वे सभी युवा थे. कराची में भी ऐसा ही देखने में आया. एक उल्लेखनीय बात मुझे लाहौर के महापौर ने यह बताई कि वहां का कोई भी सदस्य वेतन या भत्ता नहीं लेता, न उसे टेलीफोन आदि की सुविधा दी जाती है. कौंसिल यदि सिफारिश करे तो केवल महापौर के लिए वेतन की व्यवस्था है. उन्होंने कहा कि कौंसिल ने उन के लिए वेतन की सिफारिश की थी, पर उन्होंने स्वीकार नहीं किया. वह दवाइयों की एक कंपनी के मालिक हैं. कराची के महापौर सारी सुविधाएं ले रहे हैं. उन के पास आमदनी का और कोई जरिया नहीं है. कौंसिल की सिफारिश पर महापौर को 3,000 रुपए

सैनिकों और अंगरक्षकों की देखरेख में पाकिस्तान के दर्शनीय स्थानों का अवलोकन करते भारतीय प्रतिनिधि मंडल के सदस्य.
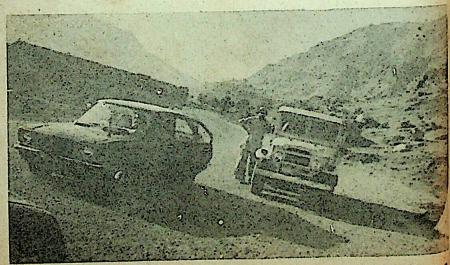
पाकिस्तान के भूतपूर्व राष्ट्रपति जुल्फिकार अली भुट्टो (चित्र में श्रीमती गांधी से हाथ मिलाते हुए) : भुट्टो के व्यक्तित्व व चरित्र के संबंध में लोगों में बहुत अधिक मतभेद हैं.

वेतन, टेलीफोन तथा मकान मिलता है.

मैं ने जब कहा कि वेतन तथा अन्य सुविधाओं के अभाव में इस चुनावों में केवल धनी व्यक्ति ही भाग लेते होंगे तो वह बोले, "हां, अधिकतर लोग धनी ही हैं, पर सामान्य स्थिति का व्यक्ति भी शोहरत के लिए इस में भाग लेता है."

पाकिस्तान में हड़ताल आदि नहीं होती. कलकारखानों में यूनियनें हैं, वे बातचीत से समस्या का हल निकाल लेते हैं. मुझे बताया गया कि पाकिस्तान में बिजली बंद होने या टेलीफोन की शिकायतें बहुत कम हैं. यदि बिजली चली जाए या टेलीफोन खराब हो जाए तो जनता अधिकारी को नहीं बख्शती.

रहनसहन व भाषा

पाकिस्तान भले ही मुसलिम देश हो, अपना जीवन धर्म के आधार पर निर्धारित करना चाहता हो, पर रहनसहन व भाषा में उस पर पूरा यूरोपीय प्रभाव है. राजकीय अतिथि भवन शाही मेहमानघर न हो कर स्टेट गेस्ट हाउस था, फाइव स्टार होटल थे तथा शानदार ऊंचे सरकारी भवन भी थे. सभी की साजसज्जा व वातावरण यूरोपीय था.

सरकारी अधिकारियों व कर्मचारियों नें कोटपतलून ही पहन रखे थे. हां, महापौर व राष्ट्रपति का वेश पूर्णतया देशी है. वे या तो सलवार व कुरता पहनते हैं या शेरवानी और चूड़ीदार पाजामा. सामान्य जनता कमीज और सलवार पहनती है. जो पठानी वेश भारत में फैशन के रूप में आया है, वह वहां सामान्य वेशभूषा है. धीरेधीरे दाढ़ी रखने की पद्धति समाप्त हो रही है. थोड़ा भी पढ़ालिखा मुसलमान बिना दाढ़ी के पैंटकोट में या सलवारकमीज में दिखाई देता है. हम रावलपिंडी में श्री अयूब के पुत्र से मिले, जो पैंटकोट में थे. 26-27 वर्ष का एक व्यापारी युवक मिला. वह भी यूरोपीय वेश में था. अंगरेजी में बात करने में वह अपना गौरव समझता था. वह वहां के वाणिज्य मंडल का वरिष्ठ उपाध्यक्ष था. अंगरेजी के अतिरिक्त इतिहास और राजनीति शास्त्र में एम.ए. था.

यह उल्लेख करना भी आवश्यक है कि वहां के समाज में वर्ग विषमता स्पष्ट दिखाई देती है. एक वर्ग बेहद धनी है, दूसरा सामान्य जनता बेहद निर्धन है. मध्यम वर्ग वहां भी पिस रहा है.

सरकारी अधिकारी तथा पढ़ेलिखे व्यक्ति अंगरेजी बोलने में ही शान समझते
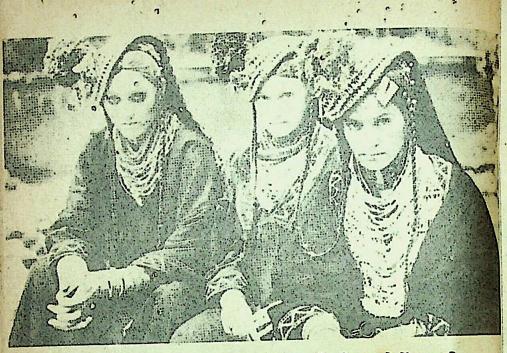
पाकिस्तानी महिलाएं : अभी भी आधुनिकता की ओर बढ़ने में सामाजिक रूढ़ियां आड़े आती हैं.

हैं. लाहौर में कुछ भवन मुसलिम स्थापत्य कला के आधार पर बने मिले, लेकिन उन की संख्या जो बहुत कम है, पर उन पर भी उर्दू के स्थान पर अंगरेजी में लिखा हुआ था. गाड़ियों के नंबर भी अंगरेजी में होते हैं.

26 सितंबर के 'डान' में अफजल अहमद खां नामक किसी व्यक्ति का एक पत्र छपा उस में लिखा था कि कराची दूरदर्शन पर पिछले ढाई महीनों से उर्दू के स्थान पर अंगरेजी फिल्में अधिक दिखाई जा रही हैं, जिन्हें कुछ लोग ही देखते हैं. सरकारी कामकाज व पत्र व्यवहार भी अंगरेजी में ही होता है.

जो लोग उर्दू बोलते हैं वे साफ और सरल उर्दू बोलते हैं. उसे अरबी, फारसी से बोझिल नहीं बनाया जाता. मुझे ए.पी.सी. के एक संवाददाता ने बताया कि पाकिस्तानियों ने जानबूझ कर अरबी, फारसी के शब्दों को छोड़ दिया है ताकि उर्दू सर्वग्राह्य हो सके. जब मैं ने उन के रेडियो से प्रसारित की जाने वाली उर्दू की तारीफ की तो वह बोला, "आप के देश में हिंदी या उर्दू का जो प्रसारण होता है, वह कठिन होता है." कराची में श्री राम जेठमलानी ने जब भाषण दिया तो लोग कह रहे थे कि उन की उर्दू बहुत अच्छी है, जब कि उस में आनंद जैसे शब्दों का भी प्रयोग किया गया था.

वेतन व महंगाई

पाकिस्तान में वेतनमानों को 22 भागों में विभक्त किया गया है. वहां का मजदूर प्रतिदिन 30-40 रुपए से ले कर 50 रुपए तक लेता है. पत्थर कूटने वाले एक पठान से जब मैं ने पूछा कि वह क्या लेता है तो वह बोला, "50 रुपए." बाद में उस के ठेकेदार ने मुझे बताया कि पठानों की मेहनत व कार्यक्षमता को देख कर उन्हें सामान्य मजदूर से अधिक मजदूरी दी जाती है. उस ने यह भी बताया कि ये मजदूर इतने ताकतवर होते हैं कि प्रायः अतिरिक्त काम भी करते हैं और इन को अतिरिक्त काम की मजदूरी 75 रुपए और दी जाती हैं. इस प्रकार ये एक दिन

में कुल मिला कर 125 रुपए तक कमा लेते हैं सोलह घंटे प्रतिदिन काम कर के भी ये मजदूर स्वस्थ और प्रसन्न रहते हैं.

यह जान कर कि मैं प्राध्यापक हूं, लाहौर में कानून के एक प्राध्यापक ने मुझ से कहा कि भारत में प्राध्यापक को बहुत कम मिलता है, जब कि पाकिस्तान में बहुत मिलता है. वह 17 नंबर के वेतनमान में थे जो 950 से 1,500 रुपयों का है. सहायक प्रोफेसर व प्रोफेसर का वेतन 3,000 रुपया है. पाकिस्तान आदर्श प्राथमिक विद्यालयों के अध्यापक भी 17 नंबर के वेतनमान में हैं. जब मैं ने बताया कि हमारे देश में भी कालिज के लेक्चरर को लगभग इतना ही मिलता है तो वह बोले कि पाकिस्तान में लेक्चरर रनिंग ग्रेड में होते हैं, एक वेतनमान समाप्त होते ही वे स्वतः दूसरे वेतनमान में चले जाते हैं.

एक युवक खानसामा से जो कुल आठवीं कक्षा तक पढ़ा था, जब मैं ने उस का वेतन पूछा तो उस ने 500 रुपए प्रति माह बताया. एक ड्राइवर को 450 रुपए मिलते थे. वह कहने लगा, "हमें तो रोटी भी नसीब नहीं होती." कराची में एक और खानसामा मिला, वह 30 वर्षों से नौकरी कर रहा है, उस के 10 बच्चे हैं. पर वेतन कुल 450 रुपए है.

पाकिस्तान की जनता अपने देश की मंहगाई से त्रस्त है. वहां यह सामान्य धारणा थी कि भारत एक सस्ता मुल्क है. सब से पहले हम ने चीनी के भाव जानने चाहे. पता चला कि सारी चीनी सरकार खरीद लेती है और प्रत्येक व्यक्ति को छः रुपए प्रति किलो के हिसाब से एक मास में 900 ग्राम देती हैं. इसी चीनी का व्यावसायिक कार्यों के लिए मूल्य नौ रुपए प्रति किलो है. यह पूछने पर कि अतिरिक्त चीनी का क्या भाव है तो पता चला कि बाजार में खुली चीनी नहीं बिकती. चीनी की चोरबाजारी चोरीछिपे होती है, केवल उच्च सरकारी अधिकारी व पूंजीपति ही उसे ले पाते हैं और उस का भाव 25 रुपए प्रति किलो तक है. सामान्य जनता गुड़ से

पाकिस्तान स्थित मोहनजोदड़ो के अवशेष : पुरानी सभ्यता की खोजखबर जारी है.

काम चलाती है, जो आठ रुपए प्रति किलो है.

चावल के संबंध में बताया गया कि सारा चावल भी सरकार खरीद लेती है. पाकिस्तान में कुल 10 प्रतिशत चावल की खपत है, 90 प्रतिशत चावल सरकार निर्यात करती है. गेहूं का दाम 47 से 55 रुपए मन बताया गया, आटे का 60 रुपए मन. ये सभी नियंत्रित भाव थे. दालें पांच रुपए प्रति किलो से अधिक थीं. दूध चार रुपए किलो था. वनस्पति घी 13 रुपए किलो. मक्खन 25 से 30रुपए किलो. शुद्ध देशी घी वहां नहीं मिलता, मिलता है तो 50-60 रुपए प्रति किलो. लाहौरी नमक छः रुपए प्रति किलो.

कुछ फलों व सब्जियों के भाव इस प्रकार थे : सेब 10 से16 रुपए, अंगूर 16 से 22 रुपए, टमाटर सात रुपए, मांस 15 से 25 रुपए प्रति किलो. पेट्रोल की कीमत भारत जैसी ही थी. एक ड्राइवर ने कहा, "साहब, हम बेकार आजाद हुए, अंगरेजों का जमाना इस से कहीं अच्छा था. हम तो अब मुसीबत में हैं."

यह उल्लेखनीय है कि वहां सारी गाड़ियां — दो पहिए से ले कर चार पहिए की विदेशों से आती हैं. जापानी यामा, हौंडा तथा इटली का वेस्पा वहां बहुत चलता है.

महिला विवाद तथा परिवार नियोजन

पाकिस्तान की महिलाओं से अधिक मिलने का अवसर तो नहीं मिला, पर जिन्हें देखा व जिन से मिला, उस के आधार पर कह सकता हूं कि वे धीरेधीरे आधुनिकता की

जिन्ना रोड (द माल), मरी का एक दृश्य.
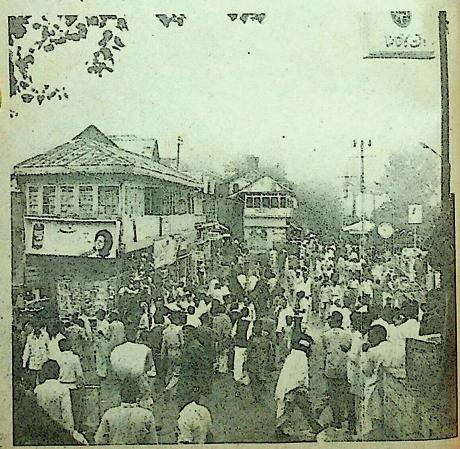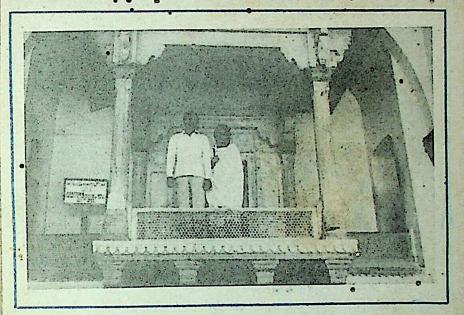
लाहौर के किले में पाकिस्तान के एक नवदंपती से मुलाकात होने पर लेखक द्वारा लिया गया उन का चित्र.

ओर बढ़ रही हैं. वहां जो महिलाएं बुर्का पहने थीं, उन्होंने भी मुंह नहीं ढका हुआ था. बुर्का धीरेधीरे गाउन के रूप में प्रयुक्त हो रहा है. महिलाओं के शरीर प्रदर्शन की प्रवृत्ति सर्वथा नहीं है. सिनमाओं में भी जब अत्याधुनिक वेश में या शरीर प्रदर्शन करती लड़की आती है तो उस का विरोध होता है.

लाहौर में जब हम किला देख रहे थे तो फलालाबाद (लायलपुर) का एक नवयुवक दंपती मिला. लड़का डाक्टर था, लड़की भी शिक्षित लग रही थी. शायद विवाह के एकदम बाद घूमने आए थे. सौम्य लग रहे थे. लड़के ने पैंटकमीज पहन रखी थी. लड़की ने पर्दा नहीं किया हुआ था, पर चुन्नी के ऊपर एक सूती शाल ले रखी थी, सिर ढका हुआ था. उन का फोटो लेना चाहा तो उन्होंने इनकार नहीं किया.

वहां की स्कूल व कालिज जाने वाली लड़कियां चुन्नी नाममात्र के लिए नहीं लेतीं, वरन उसे पूरा खोल कर इस प्रकार से पहनती हैं कि शरीर ढक जाए. थोड़ी बड़ी लड़कियां विशेषतः विवाहिताएं चुन्नी के ऊपर भी एक कपड़ा लेती हैं. प्रौढ़ महिलाएं बुर्का गाउन के रूप में पहनती हैं. साड़ी का प्रचलन बढ़ रहा है. इसलामाबाद के हालीडे इन होटल में एक लड़की साड़ी पहन कर भारतीय ही लग रही थी. जब मैं ने उस से पूछा कि कहां की हो तो वह बोली, "क्यों, मैं पाकिस्तान की नहीं लगती?"

23 नवंबर को प्रेस ट्रस्ट आफ इंडिया के इसलामाबाद के संवाददाता ने एक समाचार भेजा था, जिस के अनुसार पाकिस्तान की महिलाओं में इस खबर पर रोष है कि जिया सरकार 1961 में अयूब सरकार द्वारा बनाए गए उस कानून को समाप्त कर सकती है जिस के तहत पुरुष बहुविवाह आसानी से नहीं कर सकते. पाकिस्तान के धार्मिक मामलों के मंत्रालय ने इस कानून को गैर इसलामी बताया है. इसलाम चार बीवियों की इजाजत देता है. लेकिन 1961 वाले कानून के अंतर्गत किसी पुरुष को दूसरी शादी करने के लिए प्रशासन

से अनुमति लेनी पड़ती है.

इस कानून के तहत विवाहों का पंजीकरण अनिवार्य है. विवाह की न्यूनतम आयु भी निर्धारित है. मैं ने वहां जितने भी लोगों से पूछा उन सब ने एक ही विवाह किया हुआ था, चाहे वह सरकारी अधिकारी हों, या कर्मचारी या कोई और. एक ड्राइवर से जब मैं ने पूछा कि उस ने दूसरा विवाह क्यों नहीं किया तो बोला, "यहां एक ही नहीं संभाली जाती, महंगाई इतनी है कि उस को ही खिलापिला नहीं पा रहा और आप दूसरी पत्नी की वात करते हैं."

जो पैसे वाले हैं वे दोतीन शादियां भी करते हैं. पर अन्य प्रायः सभी की बात से ऐसा लगा कि शिक्षा ही एक विवाह का कारण है. इसी प्रकार परिवार नियोजन के बारे में भी जब पूछा तो पता चला कि प्रायः सभी की तीन या चार तक संतानें हैं. केवल एक बूढ़ा खानसामा ऐसा मिला, जिस की 10 संतानें थीं, पर वे भी एक ही पत्नी से.

1961 वाले कानून में यह भी प्रावधान है कि तलाक की कारवाई शुरू होने से पहले दो बार समझौते का प्रयास किया जाए. पत्नी को भरणपोषण का खर्चा दिया जाए पाकिस्तान के कट्टरपंथी इस कानून का लगातार विरोध करते आ रहे हैं. महिला प्रतिनिधियों ने यह मांग की है कि कानून बना कर यह व्यवस्था की जाए कि मेहर की पूरी रकम अदा किए बिना कोई पुरुष तलाक न दे सके. तलाक के बाद वह पत्नी के व्यक्तिगत सामान वापस करे और बच्चों के पालनपोषण की व्यवस्था हो.

• महिलाओं ने जनरल जिया के इस प्रस्ताव का विरोध किया है कि पुरुषों और महिलाओं के लिए अलगअलग विश्वविद्यालय हों. महिला प्रतिनिधियों का कहना है कि सहशिक्षा का बड़े कारगर ढंग से इस्तेमाल किया जा रहा है.

पिछले दिनों एक महिला कलाकार को पाकिस्तानी टेलीविजन से इसलिए हटा दिया गया कि प्रसारण के दौरान उस ने दुपट्टे से सिर ढकने से इनकार कर दिया था. इस घटना पर भी महिलाओं ने रोष प्रकट किया. मेहताब चानना नाम की इस कलाकार के समर्थकों का कहना है कि यदि महिलाओं के लिए दुपट्टा जरूरी है तो फिर पुरुष कलाकार कानून के अनुसार अचकन क्यों नहीं पहनते.

पाकिस्तान के एक समाचार पत्र के अनुसार, पाकिस्तानी महिलाओं का यह भी कहना है कि विज्ञापनों के लिए माडलिंग करने वाली औरतों से सिर ढकने और निगाहें नीची रखने को क्यों नहीं कहा जाता. उन्हें अपनी जुल्फों को झटकने और जिस्म को हिलकोरने की इजाजत क्यों दी जाती है?

पूर्ण मद्यनिषेध तथा कठोर दंड

पाकिस्तान के बारे में एक उल्लेखनीय बात यह है कि वहां पूर्ण मद्यनिषेध है. लोगों को इस से थोड़ी भी शिकायत नहीं है. फाइव स्टार होटलों में भी यह साफ लिखा देखा गया — "शराब केवल विदेशी अतिथियों के लिए है, मुसलमानों के लिए नहीं." श्री राम जेठमलानी ने राष्ट्रपति जिया से भारतीय दूतावास को कुछ अधिक सुविधाएं देने की मांग की तो वह बोले, "शराब को छोड़ कर जो भी सुविधा चाहें ले लो." ऐसा लगता था कि वहां सभी इस नियम का पूरा पालन करते हैं. उच्च अधिकारी तथा पूंजीपति भारत से चोरीछिपे लाई गई शराब का प्रयोग करते भी होंगे तो बहुत छिप कर ही ऐसा होता होगा.

हमें बताया गया कि पाकिस्तान में बलात्कार, समलिंगी यौनाचार व चोरी आदि सामाजिक अपराधों पर कोड़े लगाने का कठोर दंड दिया जाता है, अतः वहां ये अपराध बहुत कम हैं. वहां उन दिनों के समाचारपत्रों में इस प्रकार के अपराधों का कहीं उल्लेख नहीं था. केवल 22 सितंबर के पाकिस्तान टाइम्स में गुजरांवाला के पास तीन लुटेरों के पकड़े जाने की खबर थी. इन का नेता हमीद उर्फ हमीदी होंडा मोटर साइकिल पर सवार था, उस ने एक फैक्टरी मालिक इफ्तखार से 40,325 रुपए लूटे थे. वह पहले भी चार दफा हत्या के मामलों में गिरफ्तार हो चुका था. अब वह जमानत पर बाहर था.

—क्रमशः

अखंडानंद का अक्षर ज्योतिष

व्यंग्य

राव राजस्थानी

अखंडानंदजी के मुखारविंद से अक्षर ज्योतिष के चमत्कार सुन कर मैं काफी प्रभावित हुआ था, पर उन का ज्योतिष उन्हें इस तरह दगा दे जाएगा इस की तो मैं ने कल्पना भी न की थी...

बंबई से मुझे रतलाम जाना था. आठ बज कर 45 मिनट हुए थे, देहरादून एक्सप्रेस का समय. टिकट ले कर बांबे सेंट्रल के प्लेटफार्म नं. एक पर आया तो ट्रेन तैयार खड़ी थी भीड़ बहुत थी. किसी तरह एक डब्बे में पहुंचा तो वहां खड़े होने की जगह मिल गई. कुछ ही क्षणों में ट्रेन ने सीटी दी और धीरे-धीरे आगे बढ़ने लगी. दादर आ कर ट्रेन पांच मिनट के लिए रुकी और फिर अपनी गति में आ गई.

मेरी नजर यात्रियों के चेहरे पर रेंगने लगी. शायद कोई थोड़ा खिसक कर मेरे लिए जगह कर दे. एक मोटे से

सज्जन मेरे सामने वाली सीट पर पालथी लगा कर बैठे थे. मैं ने उन के आकार-प्रकार से आकर्षित हो कर उन्हें सिर से पैर तक देखा. सिर पर पगड़ी, ललाट पर अंगरेजी के 'यू' अक्षर के आकार का तिलक, आंखें गोलगोल और छोटी. गले से घुटने तक पड़ा हुआ दुपट्टा, कुरता, धोती और पैरों में चमचमाते हुए गौरक्षक जूते. कुल मिला कर विचित्र किंतु सौम्य व्यक्तित्व. होठों पर स्थायी मुसकान, आंखों में अहं भाव और चेहरे पर गंभीरता.

पूरी सीट पर उन का कब्जा था. उन का सामान भी उन्हीं की तरह सीट पर अधिकार जमाए हुए था. एक थर्मस, पानी की एक केटली, वी. आई. पी. ब्रीफकेस और दो सफरी तकिए. अधिक जगह इस सीट पर न होने के कारण ही शायद उन का होलडाल ऊपर की लगेज सीट पर पड़ा था.

मेरे इस पांचसात मिनट के सर्वेक्षण में उन्होंने सिर्फ एक बार मेरी ओर नजर उठा कर देखा और फिर यथावत हो गए. जैसे मेरे अस्तित्व को ही नकार दिया हो. मैं खिड़की के बाहर देखने लगा. अब मुझे उन से यह उम्मीद नहीं रही थी कि वह मुझे स्थान दे देंगे. मैं ने यह जानने के लिए कि कौन हैं, उन के सामान पर नजर डालनी शुरू की. खोज सफल हुई. उन के ब्रीफकेस पर छपी हुई परची लगी थी : अखंडानंद शास्त्री, ज्योतिष मार्तण्ड—संपादक अक्षर ज्योतिष, आगरा.

एकाएक मेरे मन में खयाल आया कि इस व्यक्ति से उस की लाइन की थोड़ी बातें कर ली जाएं तो बैठने की जगह मिलने की संभावना हो सकती है. इस इकलौती संभावना का सहारा ले कर मैं ने उन की ओर प्रश्न उछाला, "अरे, आप संपादकजी हैं ? नमस्कार."

"आशीर्वाद," उन्होंने मेरे नमस्कार के उत्तर में गणेशजी की मुद्रा में अपना विशाल पंजा उठा कर कहा, "हां, एक अर्धवार्षिक ज्योतिष पत्रिका का संपादक हूं, लेकिन आप ने यह कैसे जाना?"

"आप के बैग पर लिखा हुआ है," मैं ने बात आगे बढ़ाई. "बंबई कैसे आना हुआ?"

"कुछ वार्षिक और आजीवन सदस्य बनाने थे, इसलिए 15 दिन का कार्यक्रम बंबई का रहा. अब मध्य प्रदेश का दौरा करूंगा." उन्होंने प्रसन्नता से बताया. फिर पूछा, "आप का शुभ नाम?"

"राव राजस्थानी."

"क्या करते हैं?"

"बस, यूं समझिए कि आप की ही बिरादरी का आदमी हूं. आप छापते हैं और मैं लिखता हूं." मैं ने उन की भवों पर बल देख कर 'बिरादरी' शब्द का स्पष्टीकरण करना आवश्यक माना, "यानी आप संपादक और मैं लेखक."

मेरे इस स्पष्टीकरण से वह सहज हो गए और उन का चेहरा गर्व से खिल उठा. उन्होंने तुरंत कहा, "आप से मिल कर बड़ी खुशी हुई."

"मुझे भी," मैं ने आदर से झुक कर कहा.

"अरे, आप खड़े क्यों हैं ? बैठिए न." उन्होंने इस तरह कहा, जैसे उन्हें यह मालूम ही न था कि मैं काफी देर से खड़ा हूं. उन्होंने अपने शरीर को थोड़ा खिड़की की ओर घसीटा और बैठेबैठे ही अपना ब्रीफकेस ऊपर वाली सीट पर धकेल दिया. मेरे जैसे 'डेढ़ पसली' आदमी के बैठने के लिए पर्याप्त जगह बन गई थी. "धन्यवाद," कह कर मैं बैठ गया.

"आप ने अपना नाम 'राव राजस्थानी' बताया है न ?" उन्होंने बड़ी मधुरता से कहा, "आप लेखन के क्षेत्र में बहुत प्रसिद्धि प्राप्त करेंगे."

"सो कैसे ?" उन के इस कथन पर मैं ने आश्चर्य में पड़ कर पूछा, "क्या आप ने मेरी कोई रचना पढ़ी है ?"

"नहीं. मुझे पढ़ने का समय ही कहां मिल पाता है, अपने अक्षर ज्योतिष के अध्ययन और प्रयोगों के कारण. लेकिन आप की प्रसिद्धि की घोषणा मैं अपने अक्षर ज्योतिष, अपनी खोज और अध्ययन की दृष्टि से कर रहा हूं. मेरी गणना है कि जिस नाम का पहला अक्षर अ, ब (व), स (श) य, र से शुरू होता है, वह व्यक्ति अपने क्षेत्र में असीम सफलता प्राप्त करता है और चोटी पर पहुंच जाता है. सत्तर प्रतिशत सफल व्यक्तियों के नाम इन्हीं अक्षरों से शुरू होते हैं. हां, 30 प्रतिशत अपवाद के मामले होते हैं."

मैं ने अचरज से उन के चेहरे की ओर देखा. उन्होंने अपनी बात के समर्थन में कहा, "अपने साहित्य जगत को ही ले लीजिए—राजेंद्र अवस्थी, शेक्सपीयर, अभिमन्यु अनत, अमृता प्रीतम, रांगेय राघव, आबिद सुरती आदि. इन के नाम का पहला अक्षर शुभ अक्षरों से शुरू होता है. चूंकि आप के नाम में दो बार 'र' है. इसलिए आप भी एक दिन चोटी के लेखक बन जाएंगे."

मैं उन की इस दलील पर दंग रह गया. उन की बातों को तर्क की कसौटी पर कसना शुरू करता, इस से पूर्व ही वह बोल पड़े, "अब कवि, गीतकार की बात करें. अंजान, बाल कवि बैरागी, रामरिख मनहर, राजेंद्र कृष्ण, आनंद बक्षी, इकराम राजस्थानी और..."

"इकराम राजस्थानी में पहला अक्षर अ, ब, (व) स (श) य, र तो है भी नहीं, फिर..." मैं ने पूछा.

"इ' को अक्षर ज्योतिष में 'अ' के साथ मानते हैं क्योंकि अ में इ, उ और

उन्होंने ऊपर वाली बर्थ पर से अपना ब्रीफकेस लेने के लिए हाथ बढ़ाया तो बुरी तरह चौंक पड़े, "अरे, मेरा ब्रीफकेस कहां गया?"

ए छुपे हुए होते हैं." उन्होंने समझाया.

"अब क्रिकेट के प्रसिद्ध खिलाड़ियों के नाम देख लीजिए— सुनील गावसकर, विश्वनाथ, शिवलाल यादव, वीनू मांकड, वेंकट राघवन, सलीम दुर्रानी, रूसी सुरती, अंशुमन गायकवाड़... इन सब के नाम भाग्यशाली अक्षरों से ही शुरू हुए हैं. और तो और मशहूर क्रिकेट कमेंटेटर सुरजीत सेन और सुशील दोषी का नाम भी शुभ अक्षर 'स' से शुरू हुआ है."

कुछ पल के लिए तो मुझे भी लगा कि यह शुभ अक्षरों का ही चमत्कार है कि इन खिलाड़ियों को विश्वव्यापी प्रसिद्धि मिली. लेकिन फिर मेरा ध्यान— चंदू बोर्डे, पाली उमरीगर, फारूख इंजीनियर जैसे ख्याति प्राप्त खिलाड़ियों की ओर गया, जिन के नाम के पहले अक्षर 'शुभ अक्षरों' की शृंखला में नहीं आते हैं. मैं ने उन्हें ये नाम गिनवाए तो वह तपाक से बोले, "मैं आप को पहले ही बता चुका हूं कि ये अक्षर 70 प्रतिशत तक लागू हैं ही. बाकी अपवाद के मामले हैं.

"और भी उदाहरण हैं," उन्होंने बताना शुरू किया, "कुछ प्रसिद्ध स्थानों के नाम देखिए— सब से बड़ी नदी अमेजन (ब्राजिल), सब से बड़ा रेगिस्तान सहारा (अफ्रीका) और सब से बड़ा म्यूजियम अल्बर्ट (लंदन), भारत में सब से बड़ा शहर बंबई, सब से लोकप्रिय पत्रिका सरिता और उस के संपादक स्वयं विश्वनाथ का नाम भी शुभ अक्षर 'व' से शुरू होता है."

वह कुछ पल के लिए रुके. मैं सोचने लगा, "पंडित अखंडानंद शास्त्री के अक्षर ज्योतिष के हिसाब से तो मैं बड़ा लेखक निश्चित ही बन जाऊंगा. विश्व विजय प्रकाशन से मेरी सैकड़ों पुस्तकें छप जाएंगी. प्रकाशकों में मेरी पुस्तकें प्रकाशित करने की होड़ लग जाएगी. मेरे बड़े पुत्र राजेश राव के नाम में भी 'र' अक्षर की पुनरावृत्ति है. उस का पायलेट बनने का सपना सच हो जाएगा. छोटा बेटा योगेश रोता है तो भी लयतालबद्ध, स्कूल से आने के बाद और जाने से पहले सारा समय फिल्मी गीत सुनता और झूमता रहता है. वह जरूर ही बड़ा संगीतकार बनेगा. मेरी पुत्री राजकुमारी डाक्टर बनना चाहती है. यह भी होगा. और मेरी पत्नी सूर्यकांता भी शुभ अक्षर के प्रभावयुक्त है, वह भी...?'

तभी उन की धीर, गंभीर आवाज ने मेरा ताजमहल बिखेर दिया. वह कह रहे थे, "और देश की राजनीति के दो शिखर, इंदिरा गांधी और अटल बिहारी वाजपेयी के नाम का पहला अक्षर भी शुभ अक्षरों का प्रतिनिधित्व करता है. और अंतरराष्ट्रीय ख्याति प्राप्त लोकप्रिय कमेंटेटर अमीन सयानी भी..."

मैं ने उन्हें टोकना उचित न समझा. अक्षर ज्योतिष के कितने सफल कमेंटेटर थे वह.

"अब आप को फिल्म उद्योग के बारे में बताता हूं," वह कहने लगे, "अमिताभ बच्चन. क्या था वह? लंबा, दुबलापतला लड़का. आज सुपर स्टार है. सिर्फ इसलिए कि उस के नाम में 'अ' और 'ब' शुभ अक्षर हैं. और नाम बताऊं? अमजद खान, विनोद खन्ना, राजेश खन्ना, शत्रुघ्न सिन्हा, सुनील दत्त, बलराज साहनी, ओमप्रकाश, शक्ति सामंत, सलीम जावेद, राकेश रोशन, आनंद बक्षी, आशा भोंसले, राहुलदेव बर्मन, रेखा, बिंदु... इन सब की किस्मत इन के नाम के शुभ अक्षरों के कारण ही चमकी है.

"और राज कपूर के खानदान को ही लीजिए—राज कपूर, रणधीर कपूर, ऋषि कपूर, शम्मी कपूर, शशि कपूर सभी सफल कलाकार हैं. भला ऐसा कैसे हो सकता है कि एक ही खानदान में इतने कलाकार पैदा हो जाएं? यह सब उन के नाम के शुभ अक्षरों का ही कमाल है.

"मेरा ही उदाहरण लीजिए. मेरा नाम अखंडानंद शास्त्री, मेरी पत्रिका 'अक्षर ज्योतिष' और वह भी अर्धवार्षिक. मेरी सफलता का रहस्य भी 'अ' और 'श' ग्रुप के अक्षरों की युक्ति पर ही अवलंबित हैं. वार्तालाप में भी मैं 'अ,' 'व' और 'श' अक्षरों को प्राथमिकता देता हूं. जीवन में कभी तकलीफें नहीं देखीं. बंबई आया तो लोगों ने बड़ा स्वागतसत्कार किया. अपनीअपनी जन्म कुंडलियां मेरे सामने फैला दीं. मैं ने उन की कुंडलियां लपेट कर उन्हें थमा दीं और बताया कि ज्योतिष की सभी पुरानी विधाएं अब फेल हो गई हैं. सिर्फ अखंडानंद का अक्षर ज्योतिष ही सही है, इस पर एतबार करें.

"अपने यजमानों की सभी समस्याएं भी मैं ने चुटकी बजाते ही हल कर दीं. किसी के पुत्र का नाम बदलवाया, किसी को हिस्सेदार बदलने की राय दी. किसी की कंपनी का नाम परिवर्तित कराया तो किसी की पत्नी को तलाक दिलवाना पड़ा. अब वे शुभ अक्षरों के प्रभाव से सुखी, समृद्ध, संपन्न हो जाएंगे. उन्होंने बड़ी आस्था से हमारी पत्रिका को चंदा दिया, आजीवन सदस्य बने. किसी ने नकद दिया तो किसी ने चैक. यह सब क्या है? शुभ अक्षर मेरा इतना प्रतिनिधित्व करते हैं कि बिना आरक्षण के गाड़ी में बैठा और मुझे पूरी सीट ही मिल गई."

वह न जाने कब तक कहते रहे, मुझे पता नहीं. क्योंकि मैं नींद की गोद में पहुंच गया था.

इसी तरह स्टेशन के स्टेशन पार होते गए. बीचबीच में नींद उड़ती तो अखंडानंदजी से बातें होतीं. आखिरी बार जब मेरी नींद उड़ी तो रतलाम स्टेशन आ पहुंचा था. मैं ने देखा, ट्रेन की सीटी के बावजूद अखंडानंद खर्राटे भर रहे हैं.

मैं ने उन्हें जगाया, "रतलाम आ गया है."

वह हड़बड़ा कर जागे, तब तक ट्रेन रुक चुकी थी. उन्होंने अपने जूते पैर में डाले और उठ खड़े हुए. फिर जैसे ही उन्होंने ऊपर वाली बर्थ पर अपना ब्रीफकेस लेने के लिए हाथ बढ़ाया तो बुरी तरह चौंक पड़े, "अरे, मेरा ब्रीफकेस कहां गया?"

"यहीं तो रखा था आप ने," मैं ने कहा.

उन्होंने पूरा डब्बा छान मारा. मैं भी सहयोग दे रहा था. मुझे विश्वास था कि ऐसे शुभ अक्षर संपन्न व्यक्ति का कोई नुकसान नहीं हो सकता, लेकिन ब्रीफकेस कहीं नहीं मिला. उन के होश गुम हो गए. मुझे भी दुख हुआ.

"लगता है कोई हाथ मार गया है," मैं ने कहा, "ब्रीफकेस में कोई खास सामान तो नहीं था न?"

"पूरे दो हजार नकद थे. पांच हजार के चैक होंगे, जो बंबई के यजमानों ने चंदा दिया था," कहते हुए उन के चेहरे पर मुर्दनी छा गई.

मैं ने उन्हें सांत्वना दी और डब्बे से उतर गया. वह अपना बाकी का सामान उठाए हुए स्टेशन मास्टर के कमरे की ओर बढ़ रहे थे. ●

रोशनी देने वाला बीज

फिलिपीन्स में एक ऐसा वृक्ष पाया गया है, जिस का बीज मिट्टी के तेल के लैंप का स्थान ले सकता है. ऐसा एक बीज 15 मिनट तक जलता है और चिराग के बराबर रोशनी देता है. एक वृक्ष से साल भर में पांच गैलन बीज प्राप्त किए जा सकते हैं. इस वृक्ष का स्थानीय नाम 'बंगीलुबांग' है.

"मुझे चाहिए तो बस कॉम्प्लान®
मेरे परिवार के लिए
एक परिपूर्ण नियोजित आहार."

सिर्फ़
कॉम्प्लान® ही,
सबके लिए ज़रूरी
२३ अत्यावश्यक पोषक तत्त्वों से परिपूर्ण है.

सिर्फ़ कॉम्प्लान में ही वैज्ञानिक अनुपात से नियोजित २३ अत्यावश्यक पोषक तत्त्व हैं, जिनकी शरीरको रोज़ाना ज़रूरत होती है...प्रोटीन्स, कार्बोहाइड्रेटस स्निग्ध-पदार्थ, विटामिन्स और खनिज-पदार्थ. यह एक ऐसा स्वास्थ्यवर्धक पेय है, जिसकी डॉक्टर अधिकतर सिफ़ारिश करते हैं

कॉम्प्लान चॉकलेट, इलायची-केसर और स्ट्रॉबेरी के स्वाद-भरे जायकों में तथा प्लेन भी मिलता है.

Glaxo
Complan
COMPLETE PLANNED FOOD

लिंटास—GLC. 10-1810 HI

जन्म कुंडली नहीं जैविक कुंडली मिलाइए
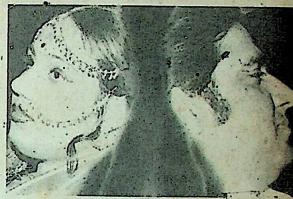
लेख • डा. सुरक्षा अग्रवाल

"यह संयोग बड़ा शुभ है, यजमान, वर और कन्या के तीस गुण मिल रहे हैं. बस हां कह दो," पंडितजी के मुख से यह वाक्य सुनते ही दोनों पक्षों के चेहरे खिल जाते हैं और वे निश्चित हो जाते हैं कि भावी दंपती का जीवन सुखमय रहेगा. विवाह की शहनाइयां बज उठती हैं..

वर्ष गुजरता है, घर की बड़ीबूढ़ी स्त्रियां उत्सुकता से खुशखबरी की प्रतीक्षा करती हैं, मगर बहू में कोई परिवर्तन नहीं दिखता. दूसरा वर्ष गुजरता है और घर में खुसफुस शुरू हो जाती है. तीसरा वर्ष आतेजाते फिर पंडितजी की याद की जाती है. दोनों की कुंडली फैला पंडितजी देर तक गणना करते हैं और सामने बैठी सास की ओर गंभीर दृष्टि डाल कर घोषणा करते हैं, "सातवें में शनि बैठा है, माताजी, बहू के बच्चा कैसे हो?"

"फिर क्या करें, पंडितजी?" मां घबरा कर पूछती है तो पंडितजी

विवाह के पूर्व यदि जैविक कुंडली का मिलान किया जाए तो दांपत्य जीवन तो सुखमय होगा ही विकलांग बच्चों का जन्म और बाल मृत्यु को भी काफी हद तक कम किया जा सकता है...

मातापिता तो अपने दायित्व से बरी हो गए. अब तनाव इन्हें ही झेलना होगा.

हौले से मुसकराते हैं, "घबराओ नहीं, यजमान, अनुष्ठान करना होगा. मैं सामान लिखा देता हूं, तैयारी हो जाए तो खबर करना."

अनुष्ठान होता है, पूजापाठ और मनौतियां मानी जाती हैं और एक दिन घर में इस खबर से खुशी की लहर दौड़ जाती है कि बहू के पैर भारी हैं. मातृत्व बोध से बहू के चेहरे पर चमक आ जाती है. धीरेधीरे समय पूरा होता है और जब सभी उत्सुकता से शुभ समाचार की प्रतीक्षा कर रहे होते हैं, एक वज्रपात सा होता है. बच्चा हुआ अवश्य मगर विकलांग. सारी आयु अधूरा जीवन बिताने को विवश शिशु. पंडितजी द्वारा मिलाए गए तीस गुण घर में खुशी नहीं ला पाते. पूजापाठ और अनुष्ठान बेकार चले जाते हैं.

ऐसा क्यों हुआ? काश, विवाह से पूर्व वर और वधू की जन्मकुंडली मिलाने की जगह जैविक कुंडली मिलाई गई होती तो शायद इस समस्या या इसी तरह की और तमाम समस्याओं ने जन्म न लिया होता. मगर यह जैविक कुंडली आखिर है क्या बला?

जैविक कुंडली क्या है?

हमें पता है कि मानव में 23 जोड़े क्रोमोसोम होते हैं. बाइस जोड़े दोनों लिंगों में एक समान होते हैं जिन्हें आटोसायल कहते हैं और तेइसवां जोड़ा लिंग निर्धारित करता है जिसे सेक्स क्रोमोसोम कहते हैं. इन्हीं क्रोमोसोम पर जींस स्थित होते हैं जिन से किसी भी शिशु में दूसरे शिशुओं से भिन्न विशेषताएं उत्पन्न होती हैं. दूसरे शब्दों में व्यक्ति विशेष में जो विशिष्ट शारीरिक और मानसिक गुण हैं वे इन्हीं जींस का कमाल हैं.

ये जींस बच्चे को मातापिता से प्राप्त होते हैं. इसी लिए बच्चे के शरीर की मांबाप की शारीरिक बनावट से भी समता देखने को मिलती है. मगर कभीकभी बच्चे के गुण मातापिता से न मिल कर दादादादी, नानानानी या और पिछली पीढ़ी के किसी सदस्य से भी मिलते हैं क्योंकि यह जींस पुश्त दर पुश्त

चलते हैं.

इस हालत में अगर इन ज़ींस में किसी पुश्त में कहीं कोई खरावी आ गई तो इस की संभावना हो जाती है कि वह जीन बच्चे में पहुंच जाए और बच्चा भले ही ऊपर से स्वस्थ दिखे लेकिन वह एक रोगी जीन पालता रहे और उस का प्रभाव उस की अगली पीढ़ी पर पड़े. जीन की खरावी से खास परेशानी होती है विकलांग बच्चों का होना. इसलिए यह आवश्यक हो जाता है कि विवाह से पूर्व भावी वरवधू के परिवारों का जितना पुराना विवरण उपलब्ध हो, एकत्र कर उन तथ्यों के आधार पर दोनों परिवारों की जैविक कुंडली विशेषज्ञों से बनवा कर इस वात का पता किया जाए कि वंशानुगत बीमारी की कोई संभावना तो नहीं है.

इस के अतिरिक्त यदि विवाह से पूर्व लड़कालड़की के रक्त समूहों और आर एच की जांच कर ली जाए, साथ ही रक्त के माध्यम से इस बात की जानकारी प्राप्त कर ली जाए कि दोनों में से किसी को कोई यौनरोग आदि तो नही है तो निश्चित रूप से जैविक कुंडली अधिक उपयोगी बन सकती है. जीन के मिलाने के बाद यह ज्ञात करना कठिन नहीं होगा कि भावी दंपती का वैवाहिक जीवन कितना सफल होगा. दूसरी ओर विकलांग बच्चों का होना या बाल मृत्यु को भी काफी हद तक कम किया जा सकता है.

मूल समस्या

किंतु मूल समस्या है कि यह जैविक कुंडली बनाए कौन? दुर्भाग्य से भारत में अभी तक जैविक विज्ञान की उपेक्षा की जाती रही है. अधिकांश मेडिकल कालिजों में विद्यार्थियों को इस महत्त्वपूर्ण विज्ञान की कोई शिक्षा नहीं दी जाती. अतः एक

विवाह से पूर्व वरवधू की जन्म कुंडली मिलाने की जगह जैविक कुंडली मिलाई गई होती तो शायद बच्चे की चाह में यों दरदर न भटकना पड़ता.

सामान्य चिकित्सक से इस बात की अपेक्षा नहीं की जाती कि वह समस्या के जैविक कारणों का पता लगा सकेगा. इस के अतिरिक्त भारत जैसे रूढ़िवादी देश में विवाह से पूर्व रक्त समूहों की जांच और पुरखों का इतिहास पता करना भी सहज नहीं है. किंतु विशेष रूप से विकलांग वर्ष में इस समस्या की ओर ध्यान दिया जाना अनिवार्य हो गया है, जिस के लिए आवश्यक है कि देश में जेनेटिक काउंसलिंग या जैविक परामर्श केंद्रों की स्थापना की जाए.

जैविक विज्ञान का विस्तार

आज जब विश्व में जैविक इंजीनियरिंग पर जोरदार कार्य चल रहा है और इस वर्ष के कई नोबेल पुरस्कार इसी क्षेत्र के वैज्ञानिकों को दिए गए हैं, भारत में भी इस दिशा में प्रयास किया जाना आवश्यक है, जिस से भविष्य की पीढ़ी के स्वास्थ्य की रक्षा की जा सके. विदेशों में जैविक परामर्श का महत्त्व बहुत पहले स्वीकारा जा चुका है और परामर्श केंद्रों का प्रसार तेजी से हो रहा है. मगर भारत में इस दिशा में अभी प्रारंभिक प्रयास किए जाने हैं.

जैविक परामर्श का कार्य भौतिक मानवशास्त्र में उपाधिधारी भली प्रकार कर सकता है. आवश्यकता है उसे सुविधाएं उपलब्ध कराने की और जनता को इस के महत्त्व के प्रति जागरूक करने की, जिस से वह इस सुविधा का लाभ उठा सके. जेनेटिक काउंसलिंग की स्थापना कितनी आवश्यक है, यह इस तथ्य से समझा जा सकता है कि इस के माध्यम से हीमोफीलिया, ग्लूकोस डिहाइड्रोजिनेस डेफीशेंसी से हुआ हिमोलिटिक रोग, रंगांधता रोग, फीनाइल किटोयूरिया, स्क्रीजोफीनिया, स्पाइनल एटेक्सिया, स्पास्टिक पराप्लेजिया और येलासीमिया जैसे अनेक रोगों का निदान संभव है, जिन के विषय में जानकारी जैविक प्रक्रिया के माध्यम से ही संभव है.

ऊपर लिखे रोग मुख्य रूप से दो

अभिभावकों की नासमझी इन बच्चों के लिए सारी आयु अधूरा जीवन बिताने की विवशता बन जाती है.
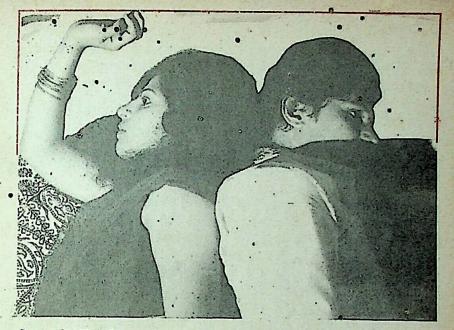
विवाह तो पंडितजी द्वारा मिलाए गए पूरे गुण देख कर ही तय हुआ था. मगर दकियानूसी मानसिकता की वजह से शारीरिक गुणदोषों का मिलान जरूरी नहीं समझा गया. नतीजा—एक साथ रह कर भी दूरियां बढ़ रही हैं:

श्रेणियों में बांटे जा सकते हैं—आटोसामल से संबद्ध और सेक्स से संबद्ध. प्रथम तीन बीमारियां द्वितीय वर्ग में और शेष प्रथम वर्ग में आती हैं. सेक्स से संबद्ध बीमारियों के विषय में बताने से पूर्व यह जानना आवश्यक है कि पुरुष और स्त्री में इस संदर्भ में मूल अंतर यह होता है कि जहां स्त्री केवल रोगी जीन को अगली पीढ़ी में पहुंचाने का काम करती है, वहां पुरुष इन रोगी जीन के लक्षणों को उभार देता है. अत: स्त्री में बीमार जींस का पता नहीं चल पाता किंतु पुरुष में यह स्पष्ट हो जाता है.

जांच से लाभ

ऐसी स्थिति में यदि जांच से यह ज्ञात होता है कि भावी वधू के भाई में सेक्स से संबद्ध कोई रोग रहा है तो इस बात की 50 प्रतिशत संभावना हो जाती है कि वधू की भावी पुरुष संतान को भी वह रोग मां के माध्यम से प्राप्त होगा.

इस संबंध में यह बताना उचित होगा कि हीमोफीलिया रोग में रोगी को चोट लगने पर रक्त प्रवाह बंद नहीं होता और हिमोलिटिक रोग में कुनीन जैसी साधारण औषधि के सेवन से शरीर के लाल रक्ताणु नष्ट हो जाते हैं जिस से रोगी की मृत्यु तक हो जाती है. इन भयंकर रोगों की पूर्व जानकारी होने पर बचने के उपाय किए जा सकते हैं. रंगांधता बीमारी से सभी परिचित ही हैं, यह भी सेक्स से संबद्ध एक बीमारी है.

दूसरी ओर आटोसोमल रोग में मां और पिता दोनों ही रोगी जींस के वाहक का काम करते हैं. किन्हीं रोगों में तो मातापिता दोनों से रोगी जींस प्राप्त करने पर रोग के लक्षण बच्चे में आते हैं और कुछ रोगों में किसी एक से ही रोगी जींस

प्राप्त कर बच्चा रोगी हो सकता है. अतः यदि मातापिता दोनों पक्षों में इन में से कोई रोग रहा है तो इस बात की पूरी संभावना है कि बच्चे में वह रोग जाएगा. दूसरी ओर कुछ बीमारियों में यदि केवल मां या पिता में ही रोग है तो 50 प्रतिशत संभावना बच्चे के रोगी होने की हो जाती है.

तरहतरह के रोग

इन रोगों में फिनाइल किटोयूरिया और स्कीजोफेनिया मानसिक विकलांगता पैदा करते हैं, स्पाइनल एटेक्सिया और स्पेस्टिक पैरापिलोजिया मांसपेशियों के नियंत्रण को समाप्त कर देते हैं और थेलासिमिया में भी कुनीन जैसी दवा लेने पर लाल रक्ताणु नष्ट हो जाते हैं जिस से शरीर में रक्त का अभाव हो जाता है. इन रोगों के अतिरिक्त भी अनेक बीमारियां ऐसी हैं जिन का जैविक कारण होता है.

इन तथ्यों से स्पष्ट है कि जैविक प्रक्रिया का ज्ञान कितना आवश्यक है. यद्यपि विवाह से पूर्व इतना विस्तृत अध्ययन शायद रूढ़ियों से जकड़े भारतीय समाज में संभव न हो किंतु शिक्षा और प्रसार माध्यमों से जनता में जागरूकता लाई जा सकती है. इस के अतिरिक्त यदि विवाह पूर्व इन की जानकारी प्राप्त न भी हो सके तो कम से कम विवाह के बाद ही यदि नवदंपती अपनी जैविक जांच करा लें तो भविष्य में आने वाली अनेक समस्याओं से वे बच सकते हैं.

विकलांग वर्ष में हमारा दायित्व

यों तो हर दंपती बच्चे की कामना करता है किंतु यदि उन्हें जांच से यह पता चले कि जींस की खराबी या रक्तदोष से उन की भावी संतान के विकलांग होने की संभावना है या उसे ऐसे रोग लग सकते हैं जिस से उस का जीवन खतरे में पड़ जाएगा तो शायद बहुत से दंपती ऐसे विकलांग बच्चे की चाह न करें. यद्यपि दंपती के लिए यह सूचना बड़ी दुःखद होगी, लेकिन हर समझदार व्यक्ति यह मानेगा कि एक रोगी, विकलांग बच्चे को पैदा करने से बेहतर है बिना बच्चे के रह जाना. और यह पूर्व जानकारी केवल जैविक परामर्श द्वारा ही प्राप्त हो सकती है.

संभवतः विकलांग वर्ष की सब से महत्त्वपूर्ण उपलब्धि यही होगी कि देश में इस दिशा में गंभीरता से प्रयास किया जाए जिस से कम से कम भविष्य में विकलांग बच्चों की जन्मदर को कम किया जा सके. इस के लिए आवश्यकता है जैनेटिक काउंसिल की न कि जन्म कुंडली मिलाने की.

मादा चिंपैंजी मानव के वीर्य से गर्भवती

शंघाई के एक समाचारपत्र ने समाचार दिया है कि 13 वर्ष पूर्व मानव का वीर्य एक मादा चिंपैंजी के गर्भाशय में कृत्रिम रूप से प्रविष्ट किया गया था जिस से वह गर्भवती हो गई थी. लेकिन सांस्कृतिक क्रांति के दौरान इस परीक्षण को नष्ट कर दिया गया और गर्भवती चिंपैंजी की मौत हो गई थी.

यह परीक्षण एक मेडिकल अनुसंधानकर्ता ने किया था. वह अब फिर इसे दोहराना चाहता है. उस की धारणा है कि मानव वीर्य से चिंपैंजी जिस संतान को जन्म देगी वह मानव जैसा संदर होगा जो मानव के लिए अनेक काम करेगा और कुछ सरल भाषा में बोल सकेगा. उस के अंगों का प्रयोग मानव शरीर में प्रतिरोपण के लिए भी किया जा सकेगा.

दास्ताने दफ्तर

◆ एक दिन मेरी एक सहेली मुझ से दफ्तर में मिलने आई. मैं ने चपरासी से काफी लाने को कहा. किंतु काफी समय बाद भी चपरासी नहीं आया और जब वह आया तो बोला, "बहनजी, कापी तो नहीं मिली, लेकिन यह रजिस्टर ले आया हूं. इसी से काम चला लो."

—आशा कोहली **(सर्वश्रेष्ठ)**

◆

एक दिन मैं बैंक में भुगतान काउंटर पर भुगतान कर रहा था. एक चेक जो किसी गांव वाले का था, मेरे पास भुगतान के लिए आया. जिस का चेक था उस का नाम बुद्धू था. मैं ने उस को दिए गए टोकन नंबर से बुलाया. लेकिन वह अपना टोकन नंबर भूल चुका था. जब वह थोड़ी देर तक नहीं आया तो मैं ने उसे नाम से पुकारा, "बुद्धू कौन है, भई?"

वह जल्दी से आगे आ कर बोला, "बाबूजी, बुद्धू मैं हूं." —पूरनसिंह साजवान

◆

हमारे प्रसार शिक्षण केंद्र के प्रधानाचार्य का स्थान रिक्त था और उन की जगह एक अन्य प्रशिक्षण अधिकारी कार्यवाहक प्रधानाचार्य के रूप में कार्य कर रहे थे.

एक दिन कार्यवाहक अधिकारी कुछ अन्य सहयोगियों के साथ कार्यालय में बैठे बातें कर रहे थे. तभी एक सज्जन कार्यालय में आए. उन्हें देख कर कार्यवाहक अधिकारी स्वभाववश काफी रुष्ट हो कर बोले, "तुम कार्यालय में बिना आज्ञा कैसे घुस आए? तुम्हें इतनी तमीज नहीं कि एक राजपत्रित अधिकारी के कार्यालय में बिना आज्ञा नहीं घुसना चाहिए?"

आगंतुक महोदय बड़ी नम्रता से बोले, "मुझे आप के प्रशिक्षण केंद्र का प्रधानाचार्य नियुक्त किया गया है. अतः मैं कार्य भार ग्रहण करने के लिए उपस्थित हुआ हूं." यह सुन कर कार्यवाहक अधिकारी शर्म से पानीपानी हो गए. —प्रह्लाद गंगवार ●

नौकरीपेशा व्यक्तियों को और किसी कार्यवश दफ्तरों में जाने वालों को दफ्तर में अनेक मनोरंजक स्थितियों से गुजरना पड़ता है और कई बार तो किस्सा बहुत ही दिलचस्प बन जाता है. क्या आप की दृष्टि में कोई इस प्रकार की घटना आई है, जो रोचक हो?

आप ऐसे संस्मरण 'मुक्ता' के लिए भेजिए. प्रत्येक प्रकाशित संस्मरण के लिए 15 और सर्वश्रेष्ठ पर 50 रुपए की पुस्तकें पुरस्कार में दी जाएंगी. पत्र के साथ अपना नाम व पूरा पता अवश्य लिखें.

पत्र इस पते पर भेजिए :

दास्ताने दफ्तर, मुक्ता, रानी झांसी मार्ग, नई दिल्ली-110055.
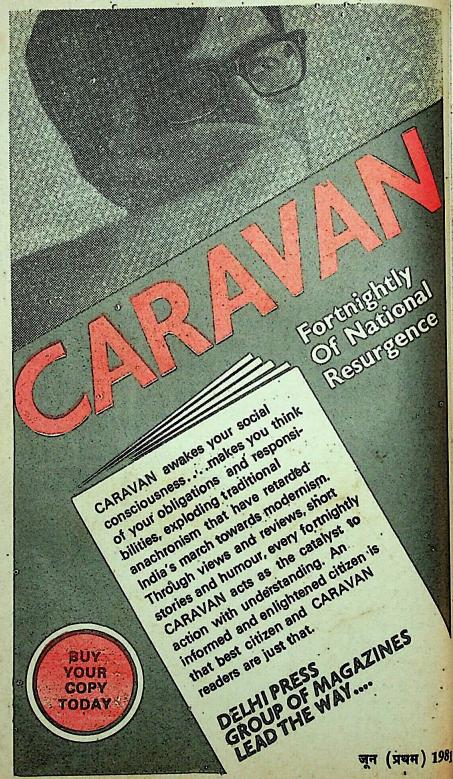
CARAVAN
Fortnightly Of National Resurgence
CARAVAN awakes your social consciousness.....makes you think of your obligations and responsibilities, exploding traditional anachronism that have retarded India's march towards modernism. Through views and reviews, short stories and humour, every fortnightly CARAVAN acts as the catalyst to action with understanding. An informed and enlightened citizen is that best citizen and CARAVAN readers are just that.
BUY YOUR COPY TODAY
DELHI PRESS GROUP OF MAGAZINES LEAD THE WAY....

हिंदी दर्शन

• व्यंग्य • मथुरा कलौनी

• आप की जानकारी में क्या कोई ऐसी भी भाषा है जिस का प्रत्येक स्थान पर अलगअलग उच्चारण और व्याकरण हो या जो कितने ही तोड़मरोड़ के बाद भी अपना अस्तित्व न खोती हो?

भारत के विभिन्न शहरों में हिंदी भाषा के कई रूप मिले, जिस से हिंदी के प्रति मन अथाह श्रद्धा से भर उठा. क्या भाषा है! जिस शहर, जिस गांव में जाती है उसी की हो कर रह जाती है. प्रत्येक जगह इस का अपना अलग उच्चारण और अलग व्याकरण है. भारत की भारती की विविधता का दर्शन हिंदी के विविध रूपों में किया जा सकता है. मजे की बात यह है कि कितने ही तोड़-मरोड़ के बाद भी हिंदी अपना अस्तित्व नहीं खोती, वह हर हाल में हिंदी ही कहलाती है. उदाहरण स्वरूप, एक छोटा सा वाक्य विभिन्न शहरों में किस तरह बोला जाता है, ज़रा मुलाहज़ा फरमाइए.

दिल्ली : मैं जानता हूं कि वह जा रहा है.

बरेली : मैं जानता हूं कि वह जा रिया है.

पटना : हम जानते हैं कि वह जाता है.

कलकत्ता : हम जानता है कि वह जाता है.

बंबई : हम जानता है कि वह जायेला है.

बंगलौर : हमें मालुम वो जाता जी.

हैदराबाद : हमना मालुम उनु जातीं जी.

कलकत्ता के खिदरपुर इलाके की एक दुकान की नामपट्टिका में सुंदर अक्षरों में लिखा हुआ है : "हियां घोड़ी का मेरा मत होता है"

आप में से हिंदी के कुछ ऐसे पंडित

दुकान के बोर्ड पर हिंदी वर्णमाला में लिखे शब्दों को पढ़ कर मैं आश्चर्य चकित रह गया.

अवश्य होंगे जो दावे के साथ कहेंगे कि लिपि देवनागरी होते हुए भी भाषा हिंदी नहीं है. ऐसे भाइयों से निवेदन है कि प्यूरिटन अर्थ में भले ही न हो, लेकिन प्रचलित रूप में भाषा हिंदी है. नामपट्टिका को पहली बार पढ़ कर मैं भी सोच में पड़ गया था कि यह कौन सी भाषा है. 'होता है' से तो निश्चित रूप से प्रतीत होता था कि भाषा हिंदी है, लेकिन बहुत देर तक माथापच्ची करने के बाद भी अर्थ नहीं निकला. 'हियां' मुझे चीनी भाषा का कोई शब्द लग रहा था. इस शब्द को पढ़ते ही मुझे ज्ञात हो गया कि जब तक इस का कोई अर्थ नहीं बताएगा, यह मेरे लिए गूढ़ ही रहेगा. आखिर 'हियां' के प्रति उदासीन हो कर मैं ने दूसरे शब्दों की ओर ध्यान दिया, 'घोड़ी' का अर्थ मैं ने घोड़ा शब्द के स्त्रीलिंग से लगाया. 'मेरा' का अर्थ सीधा था. संबंध कारक सर्वनाम जैसे मेरा घर. 'मत' का अर्थ मैं ने मतदान या मतगणना वाले मत से लगाया. इस तरह अगर 'हियां' को छोड़ दिया जाय तो अर्थ निकलता है :

'मेरा मत घोड़ी का होता है' या 'मेरा वोट घोड़ी को जाता है.'

लेकिन यह चुनाव के दिन तो थे नहीं. फिर जिस तरह पट्टिका लगी हुई थी उस से यही प्रतीत होता था कि वह दुकान के संबंध में है. अतः जो अर्थ मैं ने लगाया वह निरर्थक था.

दुकान में सड़क की तरफ एक स्क्रीन लगी थी, जिस से दुकान की गतिविधि सड़क से दिखाई नहीं पड़ती थी. कौतूहलवश में अंदर गया तो कुरता और धोती पहने एक वृद्ध सज्जन टूटी कुरसी पर बैठे हुए बड़ी सी मेज पर झुक कर कुछ कर रहे थे. दुकान के अंदर दीवारों पर अलमारी के आकार की एक-दो घड़ियां लगी हुई थीं, जिस से शक हुआ कि शायद यह घड़ीसाज की दुकान है.

जब वृद्ध सज्जन ने सिर उठा कर देखा तो उन की दाहिनी आंख में आतिशी शीशे को देख कर विश्वास हो गया कि यहां घड़ियां सुधारी जाती हैं. चट से समझ में आ गया कि 'घोड़ी का मेरा मत' का आशय वास्तव में 'घड़ी की मरम्मत' है. 'हियां' अब भी गूढ़ रहस्य बना हुआ था. मैं ने वृद्ध सज्जन से पूछा, "दादा, यह आप की दुकान है?"

"ह्यों, आमारी है. केनों?"

"ऐसे ही पूछ रहा था. आप ने अपनी दुकान का साइन बोर्ड हिंदी में क्यों लिखवाया है?"

"हियां बहुत हिंदुस्तानी लोग रहता है न, एई वास्ते."

"बहुत धन्यवाद, दादा." कह कर बाहर निकल आया. 'हियां' का अर्थ समझ में आ गया था यानी यहां. इतनी सी बात न समझ सकने के लिए स्वयं को मैं बहुत दिनों तक धिक्कारता रहा.

कलकत्ता में ही मेरा एक बंगाली मित्र एक दिन मुंह लटकाए मेरे पास आया.

उदासी का कारण पूछने पर बोला, "आज सुबेरे बहोत गंडोगोल हो गिया है. हमारा गिन्नी सब्जी को पुड़ा दिया. सब्जी को पुड़ा गंधो हम को आच्छा नहीं लगता. हमारा गिन्नी का साथ एई बात ले के बहोत झौगड़ा हुआ."

हिंदी के इस रूप से जो पाठक अनभिज्ञ हैं उन के लिए अनुवाद प्रस्तुत है:

"आज सुबह बहुत गड़बड़ हो गई. मेरी पत्नी से सब्जी जल गई. सब्जी की जली गंध मुझे अच्छी नहीं लगती. इसी बात को ले कर मेरा पत्नी के साथ बहुत झगड़ा हुआ."

बंगलौर में मैं ने पहली बात यह नोट की कि यहां की हिंदी से 'आप' शब्द लुप्त है. यहां 'तुम' का बोलबाला है. पहलेपहले तो बहुत बुरा लगता था

कि जान न पहचान लोग सीधे 'तुम' पर उतर आते हैं. अब यह हाल है कि मैं भी 'आप' को भूल रहा हूं. 'खड़े होना' को यहां के लोगों ने सुविधा की दृष्टि से संक्षिप्त कर 'खड़ना' कर दिया है. इस तरह "आप लाइन में खड़े हो जाइए" को यहां कहेंगे: "तुम लाइन में खड़ जाओ." बंगलौर में अगर आप से कोई कहे कि "मैंई लाइन खड़कोखड़कों बेजार हो गया" तो आप समझ जाइए कि वह क्या कहना चाह रहा है.

लखनऊ के एक सज्जन यहां बंगलौर में आ कर बस गए हैं. उन्होंने शादी तमिलनाडु की कन्या से की है. उन की इस पत्नी ने हिंदी बहुत कष्ट कर के सीखी है तथा वह बहुत शुद्ध हिंदी बोलती है. लेकिन लखनवी भाई को, जिन का नाम अरुणकुमार है, फिर भी शिकायत रहती है. एक बार मैं ने उन की पत्नी की परिष्कृत हिंदी बोलने पर प्रशंसा की तो कहने लगे, "अमां, आप भी कैसी बातें करते हैं. हिंदी सीखी है इस ने, लेकिन काम चलाऊ. अब आप ही देखिए, सड़क पर कोई कुत्ता या गधा चला जा रहा हो तो कहती है, 'कुत्ते जा रहे हैं, गधे जा रहे हैं.' लेकिन सड़क पर अगर मैं चला गया तो कहती है—'वह देखो, अरुण जा रहा है'"

लेख • डा. महर उद्दीन खां

धंधा ग्रंथ प्रकाशित करने और उपाधियां देने का
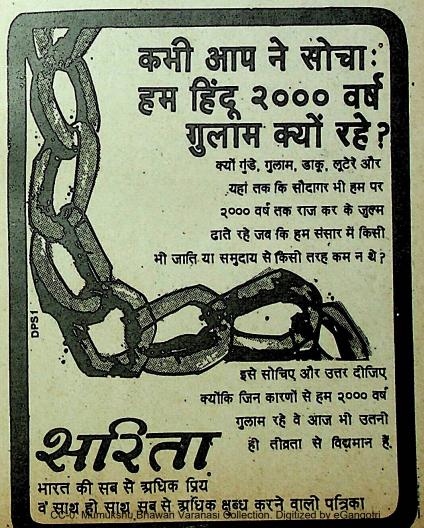
कागज की महंगाई के इस युग में कोई ग्रंथ प्रकाशित करना, कितना कठिन तथा जोखिम भरा कार्य

श्रीमान/श्री/कु० महर उद्दीन खाँ

महोदय,

विषय—विद्यापीठ की साहित्यालंकार/साहित्य सरस्वती सम्मानोपाधि प्रदान करने के सम्बन्ध में।

परिषद् के तत्वावधान में विद्यापीठ द्वारा देश-विदेश के साहित्यकारों, कवियों, गीतकारों, कहानीकारों, नाटककारों उपन्यासकारों, लेखकों और अनुवादकों को बिना किसी भेद-भाव के उपरोक्त सम्मानोपाधि से सम्मानित करने की योजना के अन्तर्गत आपको सम्मानित करने का विषय विचाराधीन है। कृपया अपनी प्रकाशित या अप्रकाशित वह रचना हमें भेज दीजिये जिसे आप श्रेष्ठ समझते हों। ~~रचना की श्रेष्ठता के निर्णय के आधार पर~~ आपको उपरोक्त एक सम्मानोपाधि .... को प्रदान की जा सकेगी। दिनांक .... अप्रकाशित रचना होने पर आपको इस प्रकार का विकल्प लिखकर हमें भेजना होगा कि वह रचना आपकी लिखी है। चालीस पैसे की टिकिट चिपका तथा अपना पूरा पता लिखा लम्बा लिफाफा उपाधि प्राप्ति के लिए साथ भेजिए। पूछताछ के लिए आवश्यक डाक-व्यय साथ भेजिए। शीघ्रता प्रार्थनीय। पिता का नाम, जन्म-तिथि, विशेष परिचय साथ भेजिये।

कृते रजिस्ट्रार

है यह लेखक व प्रकाशक भलीभांति जानते हैं. मगर कुछ लोगों ने नवोदित लेखकों, पत्रकारों व गीतकारों की जेबों के माध्यम से इस जोखिम भरे कार्य को मुनाफे का धंधा बना लिया है. इस धंधे के तहत ये साहित्यिक धंधेबाज पहले विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में छपे पाठकों के पतों के आधार पर हजारपांच सौ लोगों के पते एकत्र करते हैं. फिर उन के पास बड़ी मीठी भाषा में एक छपा हुआ पत्र रवाना करते हैं जिस का मजमून कुछ इस प्रकार होता है :

मान्यवर,

हमारी यह प्रकाशन संस्था राजधानी की एक प्रसिद्ध साहित्यिक संस्था है जो देश की विभिन्न भाषाओं के लेखकों के बारे में हिंदी में एक परिचय ग्रंथ प्रकाशित कर रही है. इस ग्रंथ का नाम होगा भारतीय लेखक परिचय ग्रंथ.

आप एक प्रतिष्ठित हिंदी लेखक हैं. अतः इस ग्रंथ में आप का नाम अवश्य सुशोभित होना चाहिए. आप के जीवन परिचय के लिए एक प्रपत्र भेजा जा रहा है. इसे भर कर तुरंत भेज दें. यदि आप अपना चित्र भी प्रकाशित कराना चाहें तो पासपोर्ट आकार का चित्र तथा 20 रुपए भी भेज दें.

इस परिचय ग्रंथ में आप का जीवन परिचय निःशुल्क छापा जाएगा. यह ग्रंथ आप के लिए एक अमूल्य एवं महत्वपूर्ण ग्रंथ होगा. अतः आप यह जरूर चाहेंगे कि इस ग्रंथ की एक प्रति अमूल्य धरोहर के रूप में आप के पास सदैव सुरक्षित रहे. इस ग्रंथ का मूल्य वैसे तो 25 रुपए होगा, लेकिन आप को यह ग्रंथ मात्र 20 रुपए में घर बैठे मिल जाएगा. अतः अपनी प्रति

(बाएं) उपाधियां देने वाली एक संस्था का प्रमाणपत्र.

लोगों की अपने आप को लेखक मानने और मनवाने की महत्वाकांक्षा का अनुचित लाभ उठा कर कुछ लोग किस तरह इन धंधों से काफी पैसा बटोर रहे हैं...

भारतीय साहित्यकार

कु० अनामिका

साहित्य भवन,

दिनांक:-

सदस्यता पत्र

नाम

पता

आयु

हस्ताक्षर

(दाएं) इस चापलूसी पत्र और तथाकथित 'अनामिका' नाम के भ्रम में न जाने कितने 'नवोदित कवियों' की जेबें खाली हुई होंगी.
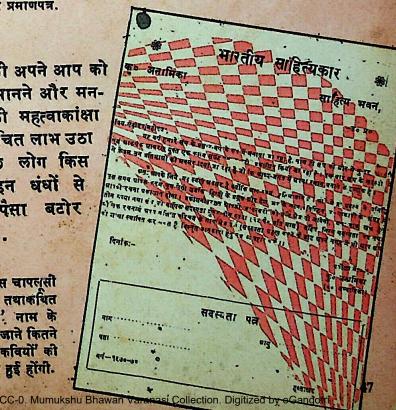
सुरक्षित कराने के लिए 10 रुपए अग्रिम मनीआर्डर द्वारा भेजने का कष्ट करें. आप के पूर्ण सहयोग की प्रतीक्षा में—

विनीत
मुख्य संपादक.

इस प्रकार हजार लोगों को पत्र लिखने पर पांच सौ लोग इस जाल में जरूर फंस जाते हैं. घटिया कागज पर ग्रंथ छाप कर सब को भेज दिया जाता है. इस प्रकार हलदी लगे न फिटकरी और रंग चोखा आ जाता है.

ये आकर्षण—ये प्रलोभन

राजधानी दिल्ली में तथा आसपास के शहरों व कस्बों में ऐसी कई संस्थाएं सक्रिय हैं. कोई लेखक परिचय ग्रंथ छाप रही है तो कोई लेखक संदर्भ ग्रंथ और कोई नए कवियों का गीत संग्रह प्रकाशित कर रही है. ढर्रा सब का वही है. किसी नेता विशेष की विजय पर उन की खुशामद भरी कविताओं के ग्रंथ छापने का धंधा भी इसी ढर्रे पर किया जाता है.

डाक खर्च से बचने का एक तरीका इन्होंने निकाल रखा है. ये धंधेबाज अपनी अखिल भारतीय कहलाने वाली संस्था के साथ किसी नाम से एक मासिक या त्रैमासिक पत्र का घोषणा पत्र दे देते हैं जिस पर कोई खर्च नहीं आता. इसी दो पेजी पत्र पर कविता, लेख या परिचय मांगने का मजमून छपवा कर लोगों के पास भेजते रहते हैं. इस विधि द्वारा एक पत्र पर डाक खर्च 35 पैसे से घट कर मात्र दो पैसे रह जाता है.

लोगों को अपनी ओर आकर्षित करने के लिए इन साहित्यिक धंधेबाजों ने एक और नया तरीका ईजाद किया है. लोगों को लिखे जाने वाले पत्र में ग्रंथ के संपादक के स्थान पर किसी कुमारी का सुंदर सा नाम लिख देते हैं तथा हस्ताक्षर भी उसी नाम के कर के पत्र भेजते हैं. कई मनचले लोग कुमारी का सुंदर सा नाम देख कर महज तफरीह के लिए भी ग्रंथ प्रकाशन की इन योजनाओं में शामिल हो जाते हैं. अपनी धाक जमाने के लिए ये लोग कुमारी प्रधान संपादिका के नाम के साथ एक संपादक मंडल या परामर्शदाता मंडल की भी घोषणा करते हैं जिस में कई प्रमुख कवियों या लेखकों के नाम सम्मिलित होते हैं, जब कि वास्तविकता यह होती है कि इन प्रमुख लोगों का उस ग्रंथ से कुछ लेनादेना नहीं होता.

इस तरह लोगों की जेब पर डाका डाल कर प्रकाशित कराए गए इन ग्रंथों का न तो कोई साहित्यिक महत्त्व होता है और न ही ये ग्रंथ समाज के लिए उपयोगी होते हैं. लोगों की अपना नाम छपा देखने की भावना का अनुचित लाभ उठा कर कुछ लोग इस धंधे में काफी पैसा बटोर रहे हैं.

एक धंधा यह भी

इसी से मिलताजुलता एक और धंधा देखने में आया है. इस धंधे में लगे लोग कुछ अधिक चालाक हैं. ये लोग किसी प्रकार का झंझट व जोखिम न ले कर बड़े मजे में अपना धंधा चला रहे हैं. तरीका इन के धंधे का भी वही है जो ग्रंथ प्रकाशित करने वालों का है. ये लोग अपनी तथाकथित अखिल भारतीय संस्था व उस के दो पेजी पत्र द्वारा लोगों के पास उन की तारीफ का पुल बांधते हुए पत्र भेजते हैं तथा उन्हें अपनी संस्था द्वारा सम्मानित करने की इच्छा व्यक्त करते हैं. ऐसे एक पत्र की बानगी प्रस्तुत है :

महोदय,

हमारी यह अखिल भारतीय साहित्यिक संस्था देशविदेश के साहित्यकारों, कवियों, नाटककारों, उपन्यासकारों, लेखकों और अनुवादकों को बिना किसी भेदभाव के साहित्यालंकार/साहित्य सरस्वती की उपाधि से सम्मानित करती है. इस योजना के अंतर्गत आप का नाम विचाराधीन है. अतः आप अपना नाम, पता तथा डाक टिकट सहित एक लंबा लिफाफा अविलंब

भारतीय लेखक परिचय

WHO'S WHO—INDIAN WRITERS

दिनांक 4 APR 1977

भेजें तथा उपाधि शुल्क मात्र 11 रुपए मनीआर्डर द्वारा भेज दें. यह आप के लिए एक स्वर्ण अवसर है, अतः शीघ्रता प्रार्थनीय है.

धन्यवाद

भवदीय
रजिस्ट्रार.

इस प्रकार मात्र 11 रुपए में साहित्यालंकार या साहित्य सरस्वती की उपाधि घर बैठे लेने के लिए अनेक लोग इसे अपने जीवन का स्वर्ण अवसर समझ कर तैयार हो जाते हैं. उधर उपाधि देने वाली तथाकथित संस्था का खर्च लगभग एक रुपया होता है जिस के बदले उसे 11 रुपए मिल जाते हैं. इस प्रकार उसे 10 रुपए का शुद्ध मुनाफा होता है.

इन तथाकथित साहित्यिक संस्थाओं में दी जाने वाली इन उपाधियों के कुछ नाम हैं—साहित्य सुमन, साहित्य दीप, शहनशाहे गजल, शाहेशायरी, गल्प सम्राट, कला प्रभात, अभिनय भूषण, अभिनय अवतार, आलोचना सम्राट, अनुवाद सागर आदिआदि.

सभी जानते हैं कि इन फर्जी उपाधियों का कोई महत्व नहीं होता. मगर धंधेबाजों को इस से कुछ लेनादेना नहीं होता. इस संदर्भ में एक बात देखने में आई है कि 11 रुपए में मानद उपाधि देने वाली ये संस्थाएं प्रायः कसबाई इलाकों में अपने दफ्तर रखती हैं तथा निर्णायक मंडल में ये वड़ेबड़े नामों की घोषणा अपने पत्रों में करती हैं. अगर कोई व्यक्ति ऐसे बड़े नामों वाले व्यक्तियों को पत्र लिख कर

देश के कोनेकोने तक लेखक का परिचय पहुंचा देने वाली इन संस्थाओं का रुपया बटोरने के बाद देश के किसी भी कोने में अतापता तक नहीं मिलता.

भारतीय लेखक परिचय ग्रंथ

Who's Who—Indian Writers

जीवन-परिचय
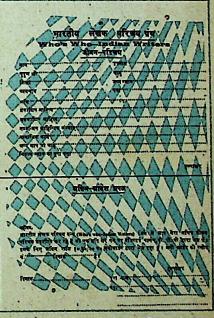
इन उपाधियों के बारे में उन से पूछने का प्रयास करता है तो कोई उत्तर ही नहीं देता. इस का अर्थ तो यही है कि इस धंधे में अपने नाम प्रयुक्त करने की सहमति इन बड़े लोगों ने दी हुई है. हो सकता है उपाधि देने की 11 गुनी कमाई में उन का भी हिस्सा होता हो. तभी तो वे ऐसे पत्रों का उत्तर देना उचित नहीं समझते.

कीमतें कम करने के लिए :

• सरकारी खर्च कम हो

• करों में कमी हो

बढ़ती हुई कीमतों की मूल वजह (और प्रायः एकमात्र) सरकार द्वारा आवश्यकता से ज्यादा खर्च किया जाना (करों व ऋणों से प्राप्त आय की तुलना में ज्यादा व्यय) और उस घाटे को पूरा करने के लिए नए करेंसी नोट छापना तथा माल व सेवाओं पर नएनए कर थोपना है.

हर नया नोट, हर नया कर माल व सेवाओं की कीमत में तुरंत वृद्धि कर देता है, जिस की वजह से सरकारी खर्च में और अधिक वृद्धि आवश्यक हो जाती है. इस वृद्धि की भरपाई के लिए फिर नए नोट छपते हैं, फिर नए कर लगते हैं और इस से कीमतें लगातार बढ़ती जाती हैं.

राजनीतिबाज बढ़ती हुई कीमतों का सारा दोष उत्पादकों व व्यापारियों के जिम्मे मढ़ कर आम लोगों को धोखा देने की कोशिश करता है, यह अच्छी तरह से जानते हुए भी कि करों द्वारा बढ़ी लागत उत्पादक और व्यापारी अपनी जेब से पूरी नहीं कर सकते. उन्हें चीजों के दाम बढ़ाने ही पड़ते हैं. आम लोगों के हाथ में अतिरिक्त धन आने से भी वस्तुओं की मांग ज्यादा बढ़ जाती है जिस से कीमतें भी और बढ़ जाती हैं.

इस के साथ ही राजनीतिबाजों को अपने अस्तित्व को बनाए रखने के लिए, अपनी पार्टियों को चलाने के लिए और चुनाव लड़ने के लिए काले धन की मांग भी जुड़ जाती है. यह रकम सिर्फ माल व सेवाओं की कीमत से ही प्राप्त हो सकती है. इस प्रकार कीमतें और ज्यादा से ज्यादा बढ़ती जाती हैं.

कभीकभी यह कहा जाता है कि ज्यादा उत्पादन से कीमतें बढ़ना रोका जा सकता है. लेकिन अगर कहीं कोई ज्यादा उत्पादन होगा तो वह कच्चे माल और सेवाओं पर बढ़े हुए करों की वजह से ज्यादा कीमत पर ही होगा. और इसलिए बढ़े हुए उत्पादन से भी कीमतें कम नहीं होंगी.

कीमतें कम करने के लिए

• करों में कमी कीजिए.

• सरकारी खर्च कम कीजिए.

इस के अलावा और कोई रास्ता नहीं है.

जब न थे तुम पास मेरे . . .

जब न थे तुम पास मेरे
फूल मुसकाते नहीं थे.

जिंदगी के बाग में तुम
अचानक ही आ समाए,
जिस तरह प्रातः क्षितिज पर
सूर्य आ कर दमक जाए.

जब न थीं यादें तुम्हारी
स्वप्न भी आते नहीं थे.

आज तो सब नियम बदले
धूप, रेशम लग रही है,
प्यार में डूबी दिशाएं
आंधियां बिलकुल नहीं हैं.

जब नहीं थी प्यास पागल
प्राण अकुलाते नहीं थे.

शब्द तुम ने ही दिए हैं
अर्थ समझाना पड़ेगा,
जिंदगी का गीत मेरे
साथ ही गाना पड़ेगा.

जब बुलाता था न कोई
पास हम आते नहीं थे.

और बिना कुछ खर्च किए लगातार दोनों पत्रिकाएं प्राप्त कीजिए

आप जानते ही हैं कि आप के पूरे परिवार की प्रिय पत्रिका सरिता शुरू से ही सामाजिक क्रांति के क्षेत्र में आगे रही है और अपने देशवासियों को विश्व के उन्नत समाजों के साथ कदम बढ़ा कर चलने के लिए अनेक आंदोलन चलाती रही है. इस के अलावा आप का स्वस्थ मनोरंजन करने में भी सरिता कभी पीछे नहीं रही. रूपरंग व साजसज्जा में भी सरिता अपने क्षेत्र की हर पत्रिका से बढ़चढ़ कर है.

सरिता की पूरक मुक्ता भी हिंदी की प्रमुख पाक्षिक पत्रिका है, जो आप के अपने जीवन को सरस, सजग व स्पष्ट बनाने में आप की सहायता करती है.

सरिता और मुक्ता के प्रकाशन के पीछे जो मूल दृष्टिकोण है, वह अन्य पत्रिकाओं की तरह व्यापारिक नहीं है. सरिता और मुक्ता तो अपने में ऐसी संस्थाएं हैं, जिन का लक्ष्य है हजारों वर्षों से गुलाम, विदेशियों द्वारा पांवों से रौंदे हुए हिंदू समाज को संसार में गर्व से सिर उठा कर चलने के लिए प्रेरणा देना. यदि हिंदू समाज ने अपना पुनर्गठन नहीं किया तो फिर गुलाम होते देर नहीं लगेगी. आज भी हजारों वर्ग मील भारतीय भूमि विदेशियों के कब्जे में है.

किसी भी ऐसी लक्ष्य की पूर्ति के लिए बहुत बड़े पैमाने पर सामूहिक सहयोग और सद्भाव की आवश्यकता होती है.

सरिता किसी सरकारी संस्थान, पूंजीपति या राजनीतिक दल से संबंधित नहीं है, न ही यह किसी से किसी प्रकार की सहायता स्वीकार करती है. यह केवल एक ही वर्ग की सहायता और बलबूते पर निर्भर है. और वह हैं सरिता के पाठक. इन्हीं की प्रेरणा, सहायता व प्रोत्साहन से सरिता बड़ी से बड़ी लड़ाई लड़ लेती है.

हिंदू समाज के नवनिर्माण में भाग लीजिए

आज पत्रकारिता में बड़ी पूंजी, सरकार का और देशी व विदेशी

राजनीतिक दलों का बड़े पैमाने पर हस्तक्षेप है. इस 'बड़े धन' के कारण स्वतंत्र पत्रकारिता प्रायः खत्म होती जा रही है. स्वतंत्रता बनाए रखने का केवल एक ही तरीका है—पाठक स्वतंत्र पत्रपत्रिकाओं को अपना कर उन्हें बल दें.

सरितामुक्ता विकास योजना इसी विश्वास पर निर्भर है. साथ ही आप को यह अभूतपूर्व सुविधा भी देती है: आप बिना कुछ खर्च किए एक वर्ष में सरितामुक्ता के 48 अंकों 9,000 से भी अधिक पृष्ठों की सामग्री से लाभ उठा सकेंगे.

सरितामुक्ता के प्रसारप्रचार की इस योजना से लाभ उठाने के लिए आप को सिर्फ यह करना होगा:

सरिता कार्यालय के पास 750 रुपए जमा करा दीजिए.

आप के ये रुपए आप की धरोहर के रूप में जमा रहेंगे.

आप जब भी चाहें, छः महीने का नोटिस दे कर अपने रुपए वापस ले सकेंगे. सरिता कार्यालय भी इसी प्रकार छः महीने का नोटिस दे कर आप की अमानत आप को लौटा सकेगा. जब तक यह रकम सरिता कार्यालय में जमा रहेगी, तब तक सरिता व मुक्ता बिना किसी शुल्क के आप को बराबर मिलती रहेंगी. जब यह रकम आप वापस मंगाएंगे या सरिता कार्यालय द्वारा आप को वापस कर दी जाएगी तो सरिता व मुक्ता भेजनी बंद कर दी जाएंगी.

आप यदि 750 रुपए एक साथ जमा न कराना चाहें तो तीन मासिक किस्तों में भेज सकते हैं. पहले मास 300 रुपए, दूसरे मास 300 रुपए और तीसरे मास 150 रुपए. आप की पहली किस्त प्राप्त होते ही सरिता व मुक्ता पाक्षिक के अंक आप के पास भेजे जाने लगेंगे. दूसरी और तीसरी किस्त ठीक एकएक महीने के अंतर से कार्यालय में पहुंच जानी चाहिए अन्यथा सरिता कार्यालय को अधिकार होगा कि तब तक भेजी जा चुकी प्रतियों का मूल्य काट कर आप की रकम आप को लौटा दे.

आप केवल सरिता या केवल मुक्ता भी केवल 400 रुपए जमा कर के प्राप्त कर सकते हैं.

विशेष उपहार
सात सौ पचास रुपए एक किस्त में जमा कराने पर पचास रुपए की पुस्तकें मुफ्त.

अपनी रकम सुरक्षित रख कर बिना कुछ भी व्यय किए सरितामुक्ता की इस विस्तार योजना में भाग लीजिए. मनीआर्डर, बैंक ड्राफ्ट व चैक "दिल्ली प्रेस" के नाम बनवाएं व इस पते पर भेजें:

दिल्ली प्रेस, 3-ई झंडेवाला एस्टेट, नई दिल्ली-55

स्वतंत्र पत्रकारिता को प्रोत्साहन दीजिए

क्या तिब्बत स्वतंत्र होगा?

लेख • ज्योतिर्मय

माओ के समय से चली आ रही तिब्बत के प्रति चीन की नीति में इन दिनों कुछ परिवर्तन के संकेत मिल रहे हैं. उदाहरण के लिए चीनी शास[न] तिब्बत की जनता के साथ हुई ज्यादति[यों] के लिए चौकड़ी (माओ की पत्नी का गु[ट]

तिब्बत के प्रति चीन की नीति में इन दिनों काफी उदारतावादी परिवर्तन के संकेत मिल रहे हैं. तब भी क्या तिब्बती शरणार्थी निकट भविष्य में स्वतंत्र तिब्बत में जा सकेंगे?

को जिम्मेदार ठहरा रहे हैं. चीनी कम्यूनिस्ट पार्टी की केंद्रीय समिति ने तिब्बत पर बुरी तरह कसे गए कम्यूनिस्ट शिकंजे को कुछ ढीला करने और पिछली गलतियों को सुधारने के निर्देश भी दिए हैं. इन सुधारों में तिब्बतियों को जमीन, पशुधन रखने और निजी उत्पादन करने के अधिकार दिए गए हैं.

गत वर्ष चीन की कम्यूनिस्ट पार्टी के महासचिव हुआ ने उप प्रधान मंत्री के साथ तिब्बत का दौरा किया और इस दौरे में तिब्बती संस्कृति की रक्षा करने पर बल दिया. स्थानीय अधिकारियों को बौद्ध ग्रंथों की रक्षा करने तथा उन का अध्ययन करने के निर्देश दिए गए हैं.

इस के अतिरिक्त माओ की मृत्यु के बाद चीन के शासक दलाई लामा और अन्य तिब्बती शरणार्थियों को वापस बुलाने के लिए भी उत्सुक दिखाई दे रहे हैं. तिब्बत के प्रति चीन की नीति में आए परिवर्तन से कई अटकलें लगाई जा रही हैं. पश्चिमी देशों के अखबारों ने यह लिखना भी शुरू कर दिया है कि दलाई लामा चीन लौटने वाले हैं. पिछले दिनों अमरीका और जापान की यात्राओं के दौरान स्वयं दलाई लामा ने कई ऐसी बातें कही हैं, जिन से इन संभावनाओं को बल मिलता है.

यह भी चर्चा का विषय है कि तिब्बत के प्रति चीन की नीति में आया यह परिवर्तन कहीं भविष्य में तिब्बत के स्वतंत्र

तिब्बती शरणार्थी भावी पीढ़ी के सामने नागरिकता का सवाल मुंह बाए खड़ा है.
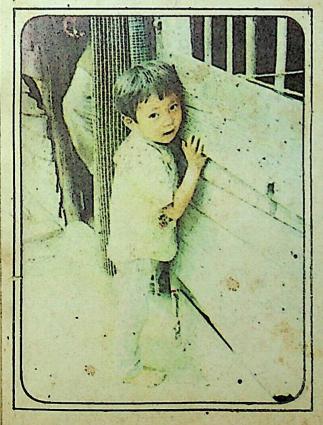
होने का संकेत तो नहीं है. तिब्बत की सभ्यता और संस्कृति तथा वहां के निवासियों की अलग पहचान नष्ट करने के लिए दमन के हर संभव तरीके अपनाए जाने के बावजूद चीन को अपेक्षित सफलता नहीं मिल पाई है. वहां के नवयुवक सीमित साधनों से चीनियों का जिस ढंग से मुकाबला कर रहे हैं, उस संदर्भ में कहा जाता है कि तिब्बत पर कब्जा करना और वहां अपना अधिकार बनाए रखना अब चीन के लिए खासा सिरदर्द बना हुआ है.

तिब्बत की वर्तमान स्थिति

तिब्बत की वर्तमान स्थिति, स्वतंत्रता प्राप्ति के लिए वहां की स्थानीय और बाहरी गतिविधियों तथा भावी संभावनाओं को आंकने के लिए पिछले इतिहास के पन्ने उलटना आवश्यक होगा. इस राज्य का ऐतिहासक वृत्तांत लगभग सातवीं शताब्दी से मिलता है, जब यहां बौद्ध धर्म का प्रचार आरंभ हुआ था. नवीं शताब्दी तक यहां बौद्ध धर्म एक तरह से छा गया. यहां बौद्ध धर्म का प्रभाव धीरेधीरे इतना बढ़ता गया कि लामा राजनीति में भी दखल देने लगे. सन1253 में छोज्यल फग्पा पहले लामा थे जिन्हें तिब्बत के तीन प्रांतों का शासक बनाया गया. सन 1642 में लामाओं का एकछत्र शासन स्थापित हुआ और राज प्रमुख लामा को दलाई लामा का नाम दिया गया. तब से अब तक दलाई लामा ही वहां के शासन प्रमुख होते रहे हैं.

परंपरागत रूप से दलाई लामा शासन प्रमुख होने के साथसाथ सर्वोच्च धार्मिक नेता भी होते हैं. चीन में भी कम्यूनिस्ट क्रांति होने तक बौद्ध धर्म को राजधर्म के रूप में मान्यता मिली हुई थी. इसलिए धार्मिक नेता होने के कारण चीन के शासक दलाई लामा का आरंभ से सम्मान करते रहे. उन्नीसवीं शताब्दी तक चीन के सम्राटों और दलाई लामाओं के बीच घनिष्ठ संबंध रहे.

उन्नीसवीं शताब्दी के अंत तक भार[त] में अच्छी तरह पैर जमाने के बाद अंगरे[जों] ने तिब्बत को भी हथियाना चाहा. तिब्[बत] की सीमाओं पर अंगरेजों ने छुटपुट हम[ले] भी किए परंतु उन्हें सफलता न[हीं] मिली. वहां के लड़ाकू सैनिकों के अ[ति]रिक्त तिब्बत की भौगोलिक स्थिति [भी] इस विफलता का एक प्रमुख कारण [थी.] अंगरेजों ने तिब्बत में अपनी व्याप[ारिक] चौकियां कायम करने के लिए कूटनी[ति] से काम लिया. उन्होंने तिब्बत पर [चीन] के अधिकार को मान्यता देते हुए [सन] 1893 में तिब्बत के दक्षिणी भाग में व्य[ा]पार के अधिकार प्राप्त कर लिए. अंगरे[जों] की शह पर चीनियों को भी मुफ्त में [ए]क प्रदेश मिला. सन 1910 तक मांचू शा[सकों] ने चीन में कई बार सेनाएं भेजीं [और] दलाई लामा को दो बार तिब्बत छोड़[कर] भागना पड़ा.

चीनी हस्तक्षेप की शुरुआत

मांचू शासन का अंत होने के [बाद] सन 1912 में तिब्बत ने अपने आप [को] स्वतंत्र राष्ट्र घोषित कर दिया. सन 18[..] और 1912 के बीच तिब्बत में इस प्र[कार] चीन का शासन रहने के आधार पर [...] चीनी नेता इस राज्य को चीन का भ[ाग] बताते रहे. कम्यूनिस्ट क्रांति होने के [बाद] चीन ने तिब्बत के आंतरिक मामलों [में] हस्तक्षेप करना शुरू किया.

तेरहवें दलाई लामा का निधन [हो] जाने के बाद चौदहवें और वर्तमान द[लाई] लामा तेनजिन ग्यात्सो ने पूरी तरह शा[सन] सूत्र संभाला तो पंछेन लामा प्रतिस्[पर्धी] के रूप में सामने आए. पंछेन लामा [के] कारण उत्पन्न हुए विवाद से चीन [को] तिब्बत में सीधे हस्तक्षेप का बहाना [मिल] गया और उस ने तिब्बत को चीन [के] तहत एक स्वायत्त शासन प्राप्त रा[ज्य] घोषित कर दिया.

तिब्बत को चीन का ही एक भू[...]

घोषित कर देने के बाद चीनी शासन ने वहां कम्यूनिस्ट व्यवस्था लागू करना आरंभ कर दिया. दलाई लामा के अधिकारों में भी कटौती की जाने लगी. तिब्बती अपने धर्मगुरु के प्रति बहुत आदर और श्रद्धा का भाव रखते हैं. उन के अधिकारों में कटौती और चीनी अधिकारियों की मनमानी ने तिब्बती लोगों के मन में असंतोष की आग सुलगा दी. सन 1956 में पहली बार यह आग जोरों से भड़की. जगहजगह आंदोलन, प्रदर्शन और हिंसक घटनाएं घटीं, जिन पर काबू पाने के लिए चीनियों को सख्ती से काम लेना पड़ा.

1958 के अंत और 1959 के आरंभ में पहले से भी अधिक उग्र आंदोलन हुए. चीनी अधिकारियों ने इन आंदोलनों को दबाने के लिए और अधिक कड़ाई व निर्ममता से काम लिया. दमन चक्र इतनी तेजी से चला कि मार्च, 1959 में दलाई लामा अपने सहयोगियों के साथ तिब्बत छोड़ कर भारत आ गए. उन के अलावा करीब 1,20,000 तिब्बतियों ने भी अपना देश छोड़ कर भारत, नेपाल, बर्मा आदि देशों में शरण ली.

चीनी दमन चक्र

दलाई लामा के तिब्बत से निकल आने के बाद दमन चक्र दिन प्रतिदिन निर्मम होता गया. दलाई लामा ने इस दमन चक्र का उल्लेख करते हुए लिखा है, "हमारे दसों हजार आदमी मार डाले गए, केवल सैनिक काररवाई में ही नहीं बल्कि व्यक्तिगत रूप से और जानबूझ कर उन को बिना मुकदमा चलाए कम्यूनिस्टों का विरोध करने या रुपया जमा करने के संदेह पर या उन की हैसियत के कारण, और कोई कारण न होने पर भी मार डाला गया. उन को केवल गोली से ही नहीं मारा गया बल्कि पीटपीट कर, सूली

दलाई लामा : क्या चीनी रुख पर पूरी तरह विश्वास किया जा सकता है?
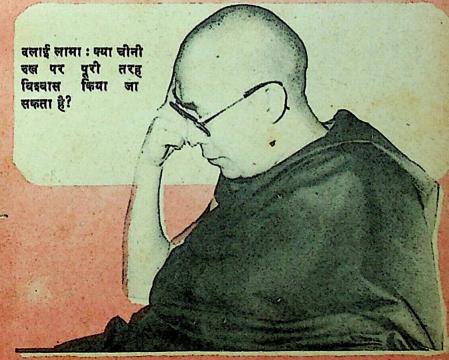
पर चढ़ा कर, जीवित जला कर, पानी में डुबा कर, टुकड़ेटुकड़े काट कर के, गला घोंट कर, जिंदा जमीन में गाड़ कर, आंतें निकाल कर और सिर काट कर यानी जितने भी तरीकों से यंत्रणा दे कर मारा जा सकता था, मारा गया."

इस तरह की हत्याएं एकांत में या जेलों के भीतर नहीं की गईं बल्कि खुलेआम लोगों को यंत्रणा दे कर मारा गया. जिन की हत्या की जाती थी, उन के साथियों, पड़ोसियों और संबंधियों को बुलाया जाता तथा उन्हें विवश हो कर इस तरह के हत्याकांड देखने पड़ते थे. चीनियों ने लामाओं को हलों में जोता, घोड़ों की तरह उन पर सवारी की तथा चाबुकों से पीटा और जब वे कष्ट से कराहते तो उन से चमत्कार द्वारा बचने के ताने कसे जाते.

एक ओर जहां यह अत्याचार किए जा रहे थे, वहीं दूसरी ओर तिब्बत के नवयुवक चीनियों से संघर्ष करने की योजनाएं बना रहे थे. चीनियों द्वारा तिब्बत में किए गए कत्लेआम तथा अत्याचारपूर्ण कारवाइयों की विश्व के कई देशों ने भर्त्सना की. संयुक्त राष्ट्र संघ ने सन 1953 तथा 1961 में दो बार प्रस्ताव पास कर तिब्बत में घट रही घटनाओं पर चिंता व्यक्त की तथा उन्हें रोकने के लिए सदस्य देशों से अनुरोध किया.

दलाई लामा ने भारत में आ कर धर्मशाला (हिमाचल प्रदेश) में अपना मुख्यालय बनाया और वह विश्व जनमत का ध्यान तिब्बत की ओर आकर्षित करने में लग गए. तिब्बत में भी युवक संगठित होने लगे और गुरिल्ला पद्धति से चीनियों पर आक्रमण करने लगे. 1965 तक लगभग 50 स्थानों पर सशस्त्र तिब्बती गुरिल्लाओं ने चीनियों पर हमले किए. इस के बाद सशस्त्र हमलों की गति कुछ मंद पड़ गई. शायद तिब्बती समझने लगे थे कि हथियारबंद लड़ाई से चीनियों को भगा पाना लगभग असंभव होगा. फिर भी छुटपुट रूप से चीनियों पर हमले किए जाते रहे. 1969 में चीनी अफसरों के अत्याचारों से तंग आ कर नेमो कसबे में

तिब्बती लामा : अब चीनी नेताओं ने तिब्बत के लोगों पर से कुछ धार्मिक प्रतिबंध हटा लिए हैं.

एक तिब्बती शरणार्थी परिवार : स्वदेश पहुंचने की चाह जाने कब पूरी हो सकेगी.

लोगों ने सौ सैनिक अधिकारियों को मार डाला.

1970, 72, 74 और 76 में भी इसी प्रकार कई स्थानों पर तिब्बतियों ने चीन की सैनिक छावनियों तथा चीनी कार्यालयों पर हमले किए.

सन 1959 से अब तक तिब्बत को पूरी तरह चीन के रंग में रंग देने के लिए हर संभव उपाय किए जाने के बाद भी तिब्बतियों में देश प्रेम, स्वतंत्रता और चीनी शासन के प्रति घृणा का भाव मुखर है. चीनी नेताओं का खयाल है कि यदि दलाई लामा वापस तिब्बत आ कर रहने लगें तो वहां उत्पन्न असंतोष को एक सीमा तक कम किया जा सकता है.

यह बात सही है कि तिब्बतियों में दलाई लामा के प्रति अपार श्रद्धाभाव है. किंतु उन पर पिछले 25 वर्षों में जो अमानुषी अत्याचार किए गए, उन के घाव दलाई लामा की वापसी से ही नहीं भरे जा सकते. दलाई लामा भी इस तथ्य को जानते हैं. तभी चीन द्वारा उन के सामने तिब्बत लौटने तथा उन की गरिमा के उपयुक्त पद देने के प्रस्ताव का उत्तर देते हुए उन्होंने कहा था कि यदि तिब्बती वर्तमान शासन से संतुष्ट हैं तो वह भी उसे स्वीकार लेंगे.

दलाई लामा के इस उत्तर की प्रतिक्रिया में चीनी नेताओं ने तिब्बत के लोगों पर से कुछ धार्मिक प्रतिबंध हटा लिए तथा दलाई लामा के पुराने मठ (डंपुंग मठ) के प्रशासनिक अधिकारियों को लामा का प्रशिक्षण देने के लिए उपयुक्त नवयुवकों को खोजने का निर्देश दिया.

पिछले तीन वर्षों में इस प्रकार चीन की तिब्बत नीति में काफी कुछ परिवर्तन आया है. परिणामस्वरूप दलाई लामा और चीनी नेताओं के बीच संवाद की स्थिति बनी है. दलाई लामा अपने तीन प्रतिनिधिमंडल चीन तथा तिब्बत की यात्रा पर भेज चुके हैं. चीन ने भी दलाई लामा के इस प्रस्ताव को स्वीकार करने में कोई आनाकानी नहीं की कि तिब्बतियों की वास्तविक स्थिति का अध्ययन करने के लिए दलाई लामा के सहयोगियों का दल वहां जाएगा.

पहले दल में दलाई लामा के भाई भी थे. प्रतिनिधियों ने तिब्बत का दौरा

करने के साथ चीन का भी भ्रमण किया. तिब्बत के प्रतिनिधि वहां के लोगों से मिलि और उन की मन:स्थिति को टटोला. इस दल ने अनुभव किया कि तिब्बती अभी भी दलाई लामा के प्रति घनीभूत श्रद्धा रखते हैं तथा चीन के शासन से खुश नहीं हैं.

चीन की घबराहट

दूसरे दल के पहुंचने पर तिब्बतियों ने जिस उत्साह के साथ दलाई लामा के प्रतिनिधियों का स्वागत किया, उस से चीनी अधिकारी चौंके और उच्च अधिकारियों के निर्देश पर दल को अगले हवाई जहाज से वापस भेज दिया.

दूसरे दल के यात्रा पूरी किए बिना ही वापस लौट आने पर अंदाजा लगाया जा रहा था कि दलाई लामा प्रतिनिधि भेजने का कार्यक्रम रद्द करा देंगे. परंतु ऐसा नहीं हुआ और पिछले वर्ष उन्होंने तीसरा दल भेजा, जिस में उन की बहन रोमा ग्यालपो भी थी. इस दल ने प्रतिष्ठित तिब्बतियों और लामाओं से भी संपर्क किया.

अब तक भेजे जा चुके तीन प्रतिनिधि मंडलों ने जो विवरण दिए उन से तिब्बत की असली तसवीर सामने आई है और चीन का यह दावा झूठा सिद्ध हुआ है कि कम्यूनिस्ट शासन में तिब्बत की जनता खुशहाल है.

पहले प्रतिनिधिमंडल ने जो रिपोर्ट दी थी, उसी से वास्तविकता सामने आने लगी थी और चीन को भी यह स्वीकार करना पड़ा था कि तिब्बत में गरीबी मौजूद है.

इतना ही नहीं, तिब्बत में लगाए गए टैक्सों पर दो साल तक छूट की घोषणा करनी पड़ी थी और निजी उत्पादन फिर चालू करने का निर्णय भी लेना पड़ा था. यह सब केवल इस इरादे से किया गया था कि दूसरे देश चीन को तिब्बत का एक मात्र शुभचिंतक मानने के साथ उसे चीन का ही एक अंग भी स्वीकार कर सकें.

तिब्बत में दलाई लामा को वापस बुला कर वहां अपने शासन को निष्कंटक बनाने के लिए भी इस तरह की छूटें दी गईं क्योंकि तिब्बती दलाई लामा से भावनात्मक रूप से जुड़े हुए हैं. चीनी नेताओं की दृष्टि में उन की उपस्थिति और नैतिक समर्थन ही तिब्बतियों को चीनी शासन से संतुष्ट रखने के लिए पर्याप्त है. इसलिए चीन तिब्बत की स्वतंत्रता को छोड़ कर किसी भी सीमा तक जाने के लिए तैयार दिखाई देता है. स्वायत्तता की मांग को आंशिक रूप से पूरा करने के लिए चीन ने तिब्बत की क्रांतिकारी समितियों को भंग कर दिया है तथा स्वयत्तता शासन की नई समितियां भी गठित की हैं. नई सरकार में तेरह उपाध्यक्षों में से छः पदों पर तिब्बतियों को प्रतिनिधित्व दिया गया है तथा क्षेत्रीय जन अदालतों के अध्यक्ष भी तिब्बतियों को बनाया जाने लगा है.

संदिग्ध घोषणाएं

जैसा कि कम्यूनिस्ट देशों में होता है, वहां के संबंध में सरकार जितना चाहती है उस से अधिक पता लगा पाना असंभव ही है. सारी जानकारियां सरकारी प्रचारतंत्र द्वारा ही उपलब्ध कराई जाती हैं जो प्रायः गलत होती हैं. पहले प्रतिनिधिमंडल द्वारा दी गई वस्तुस्थिति की जानकारी के बाद चीन ने उपयुक्त परिवर्तनों की घोषणा की. पता नहीं घोषणाएं कहां तक सही हैं. परंतु इतना तो मानना पड़ेगा कि प्रत्यक्ष रूप से चीन ने इस बात को स्वीकार कर लिया है कि उस के द्वारा की गई पूर्ववर्ती घोषणाएं गलत हैं.

तिब्बत के प्रति चीन के रवैए में इस परिवर्तन और दलाई लामा की वापसी के लिए पिछले दिनों की गई पहल से तरह तरह की अटकलें लगाई जा रही हैं.

तो यह कि दलाई लामा वापस तिब्बत लौट जाएंगे तथा यथास्थिति को स्वीकार करते हुए धार्मिक नेता का पद स्वीकार कर लेंगे? दलाई लामा के निकटवर्ती सूत्र इस संभावना से इनकार करते हैं. उन का कहना है कि दलाई लामा और उन के सहयोगियों का लक्ष्य तिब्बत की सार्वभौम स्वतंत्रता ही है.

उन के कुछ साथियों ने तिब्बत के स्वतंत्रता प्रेमी युवकों को गुरिल्ला लड़ाई का प्रशिक्षण देने की योजना बनाई है. इस के अतिरिक्त तिब्बत में गांधीजी की तरह असहयोग आंदोलन भी चलाया जा सकता है. अघोषित रूप से तो वह अभी भी चल रहा है.

चीन की नीति बदलने का कारण

तिब्बत के प्रति चीन की नीति बदलने का एक बड़ा कारण यह भी है कि अभी भी चीनी अधिकारियों को वहां की जनता का सामान्य सहयोग तक नहीं मिल पा रहा है.

अप्रैल, 1980 में सोवियत नेताओं द्वारा की गई यह घोषणा भी महत्वपूर्ण है कि उन का देश तिब्बत के प्रति सहानुभूति रखता है और यह मानता है कि वहां की जनता अपनी स्वतंत्रता के लिए संघर्ष कर रही है. इस के साथ ही रूस ने आवश्यकता होने पर तिब्बत की संघर्षशील जनता को सहायता देन की घोषणा भी की है.

सोवियत नेताओं के इस वक्तव्य में तिब्बत के मामले में रूसी हस्तक्षेप की संभावना स्पष्ट झलकती है.

दलाई लामा का रुख

यह वक्तव्य आने के बाद दलाई लामा के सूत्रों ने भी कहा था कि यदि तिब्बत की आजादी का प्रश्न हल नहीं हो पाया तो वे मदद लेने के लिए सोच सकते हैं. रूसी हस्तक्षेप की संभावना को दृष्टिगत रखते हुए चीनी नेतृत्व दलाई लामा की वापसी के लिए आतुर दिखाई दे रहा है तो कोई आश्चर्य नहीं है.

आगे चल कर चीन की नीति में और भी परिवर्तन आ सकता है. एक ओर दलाई लामा तथा उन के सहयोगी तिब्बत के समर्थन में विश्व जनमत को जगाने में लगे हुए हैं दूसरी ओर चीनी नेताओं से भी बातचीत चला रहे हैं. तिब्बत की जनता में स्वतंत्रता की आकांक्षा तो है ही. इन सब स्थितियों के संदर्भ में देरसवेर तिब्बत का स्वतंत्र होना निश्चितप्राय लगता है. ●

लगातार 22 वर्ष तक सोती रही

अब तक छः महीने की नींद लेने वाले कुंभकर्ण का नाम ही सुना गया था, लेकिन रूस में श्रीमती नज्जदाल अपनी 33 वर्ष की उम्र से ऐसी सोईं कि उन्होंने 55 वर्ष की उम्र में पहुंच कर ही अपनी आंखें खोलीं.

इन 22 वर्षों में इतना कुछ बदल चुका था कि उन्हें अपने चारों ओर एक नई दुनिया नजर आ रही थी. उठने के बाद श्रीमती नज्जदाल ने नए सिरे से चलनाफिरना और बोलना सीखा.

इतना ही नहीं, 22 वर्षों में घरेलू उपयोग की इतनी नई मशीनें बन गई थीं कि उन सब को चलाना भी उन्हें सीखना पड़ा. इस दौरान डाक्टर निरंतर उन की जांच करते रहे. निद्राभंग होने के बाद सामान्य ढंग से बोलनाचालना शुरू करने में उन्हें करीब चार वर्ष लगे.

आसान कढ़ाई

- चादर और पिलो कवर
- टोस्टर कवर
- क्रास स्टिच की टीकोजी
- गोल व चौकोर कुशन कवर
- गरमियों के लिए कढ़ाई वाली पोशाक
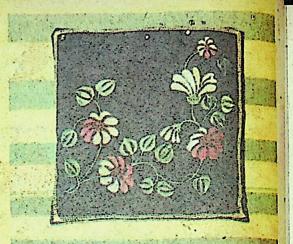
उत्तम सिलाई

- फैंसी फ्राक
- पैचवर्क का बैग
- डिनर सेट
- पैचवर्क के टेबल मैट
- लौंग सैंटर मैट व लंचन मैट

इस के अतिरिक्त आप की गृहशोभा के लिए
नएनए बहुमूल्य लेख और पठन सामग्री.

गृहशोभा जून अंक

अपने पुस्तक विक्रेता से अवश्य खरीदें.

मैं ने भी उतारी एक तसवीर

छायाकार : सुभाष र. गुप्ता, इंदौर

देखें क्या है दिल का हाल
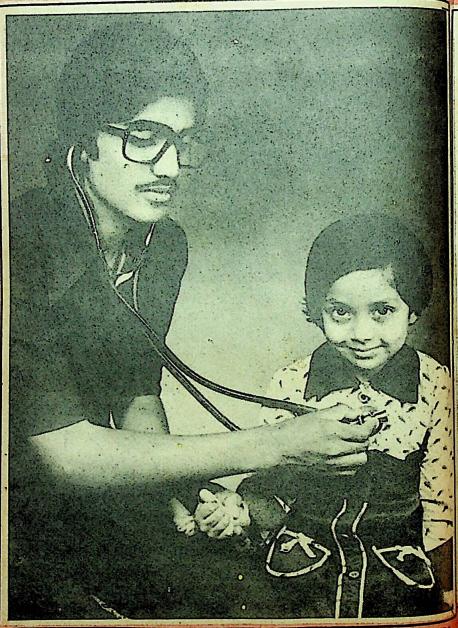
मैं ने भी उतारी एक तसवीर

छायाकार : बालचंद्र काड़ने, बंबई

हम दोनों तो हैं खुशहाल

रजिया सुलतान पूरी?

पिछले छःसात सालों से बन रही कमाल अमरोही की फिल्म 'रजिया सुलतान' की शूटिंग पूरी हो गई हैं. पिछले दिनों जयपुर व जैसलमेर में

परदे के आ...
परदे के पी...
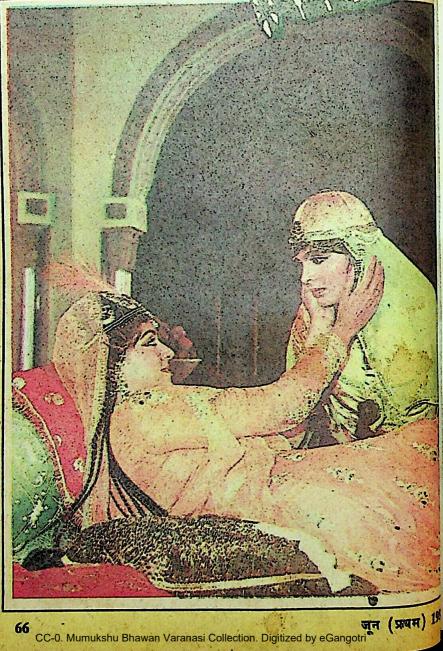
हुई फिल्म की आखिरी शूटिंग में सभी प्रमुख कलाकारों ने हिस्सा लिया. युद्ध दृश्य फिल्माने के लिए जैरी कैपटन, किम ऐलन, डिनी पावेल व जान कैंट जैसे विश्व-विख्यात लोगों की मदद ली गई. लेकिन फिल्म को परदे तक पहुंचने में शायद एक साल और लग जाए. अभी इस का स्टीरीयोफीनिक, साउंड रिकार्डिंग होनी है. कुछ अन्य तकनीकी काम भी हैं, जिन में फिल्म का संपादन भी शामिल है. इस बीच अगर कमाल साहब को कोई सीन न भाया और वह उस की दोबारा शूटिंग कराने पर तुल गए तो फिल्म कब तक दर्शकों के पास पहुंच पाए, कुछ नहीं कहा जा सकता.

अच्छे काम के लिए

उदयपुर के पास एक छोटा सा गांव है—चिरवा जो प्राकृतिक सौंदर्य से भरपूर है. डाकू विषयक फिल्मों के लिए इसे सब से पहले राज खोसला ने 'मेरा गांव मेरा देश' के लिए इस्तेमाल किया. इस के बाद तो वहां फिल्मों की शूटिंग की लाइन ही लग गई. 'हीरा,' 'समाधि,' 'कच्चे धागे,' 'राजपूत,' 'माटी मांगे खून' व 'मेरा दोस्त मेरा दुश्मन' जैसी फिल्मों की शूटिंग वहां से हो चुकी है. शूटिंग के दौरान हेमा, धर्मेंद्र, विनोद खन्ना, शत्रुघ्न सिन्हा, राज खोसला, जानी बख्शी आदि लोगों ने जो रकम गांव को दान दी उस से वहां अब एक माध्यमिक स्कूल बनाया जा रहा है.

अपनी इमेज का शिकार

'शोले' में जगदीप ने सूरमा भोपाली की भूमिका क्या कर दी कि अब कोई भी निर्माता उसे उस ढर्रे से अलग नहीं होने देता. जगदीप इस के लिए निर्माताओं को दोषी ठहराता है. उस का कहना है, "हम हास्य कलाकारों को असली जिंदगी में भी

फिल्म 'रजिया सुलतान' का एक दृश्य : (बाएं) और इस के निर्मातानिर्देशक कमाल अमरोही (दाएं) : फिल्म दर्शकों तक कब पहुंच पाएगी?

जोकर समझ लिया जाता है. हाल के समय का कोई भी निर्देशक हास्य अभिनेता में दिलचस्पी नहीं लेता. इसी लिए अच्छे हास्य कलाकारों की आज कमी है. हास्य अभिनय भी इसी वजह से हमारी फिल्मों में जोकरपने से ज्यादा आगे नहीं बढ़ पा रहा है."

जगदीप : कोई भी निर्देशक हास्य अभिनेताओं में दिलचस्पी नहीं लेता. इसी लिए हम जोकरपने से ज्यादा आगे नहीं बढ़ पा रहे.

एक और बलात्कार

'इंसाफ का तराजू' की सफलता ने बलात्कार जैसी सामाजिक समस्या का सही हल भले ही न तलाशा हो लेकिन उस ने एक बिक सकने वाला फार्मूला जरूर दे दिया है. कुछ ही दिन पहले एक फिल्म बननी शुरू हुई है—'रुसवाई'. इस में भी बलात्कारी राज बब्बर ही है.

व्यस्तता की मार

फिल्मी होड़ आजकल इतनी तेज हो गई है कि समय न मिलने की शिकायत हर फिल्मकार की जबान पर जम गई है. राज खोसला कहते हैं, "तीन सालों से मैं ने कुछ भी नहीं किया है, सिवाय फिल्मों की शूटिंग करने के. एक शाम भी अपने बच्चों के साथ सही ढंग से नहीं बिता पाया हूं. न ठीक तरीके से खा पाता हूं और न ही सो पाता हूं. फिल्मों के बाहर की दुनिया में क्या हो रहा है, मुझे कुछ नहीं पता. लगता है कि मैं पागल हो जाऊंगा. अब ऐसा समय आ गया है कि हमें अपने काम में अनुशासन लाना चाहिए. वरना काफी मुशकिल हो जाएगी." लेकिन सवाल यह है कि यह अनुशासन लाए कौन?

नग्नता की वकालत

हालांकि जीनत अमान कई बार कह चुकी है कि अब वह फिल्मों में जिस्म नहीं दिखाएगी, लेकिन समय मिलने पर वह नग्नता की वकालत करने से भी नहीं चूकती. उस का कहना है, "शरीर दिखाना कोई बुरी बात तो नहीं है. शरीर अगर छरहरा व सुंदर हो तो शो बिजनेस में उस का पूरापूरा फायदा उठाना चाहिए. फिर यह तो अपनी इच्छा की बात है. जिस के पास दिखाने लायक कुछ नहीं होगा, वह क्या दिखाएगी?"

जीनत : शरीर 'अगर' दिखाने लायक हो तो उस से पूरापूरा फायदा उठाना चाहिए.

विद्या सिन्हा खलनायिका भी

अकसर जब कोई कलाकार नए क्षेत्र में कदम रखता है तो उस के लिए आदर्शवादी दलीलें देने लगता है. यही हालत विद्या सिन्हा की है. फिल्मों में जब उस की मांग घटने लगी तो उस ने अमजद खान के साथ नायिका वाली भूमिकाएं स्वीकार करनी शुरू कर दी. अब वह खलनायिका भी बन रही है. ऐसी भूमिका वाली इस समय दो फिल्में उस के पास हैं, जिन में से एक है राज सिप्पी (पिछली फिल्म 'इनकार') की 'जोश'. इस भूमिका के बारे में विद्या सिन्हा कहती है, "राज सिप्पी में मुझे काफी आस्था है. मैं अभिनेत्री हूं और हर तरह की भूमिकाएं करना चाहती हूं, बशर्ते कि वे अच्छी हों. कोई फिल्म स्वीकार करते समय मैं अपने लिए अच्छा व मजबूत चरित्र ही देखती हूं. मेरी शुरू में ही यह शर्त रहती है. नाचना, गाना व रोमांस करना बहुत हो गया. अब मैं अलग किस्म की भूमिकाएं करना चाहती हूं."

विद्या सिन्हा : मैं अभिनेत्री हूं सो हर तरह की भूमिकाएं करना चाहती हूं.

विद्या सिन्हा की दोनों ही बातें गलत हैं. फिल्म स्वीकार करते समय उस ने कभी अपनी भूमिका नहीं सुनी अन्यथा वह 'मगरूर,' 'प्यारा दुश्मन,' व 'सबूत' जैसी बकवास फिल्में न लेती. जहां तक परदे पर नाचनेगाने का सवाल है तो इस के लिए उस की उम्र ही अब कहां रही है? ●
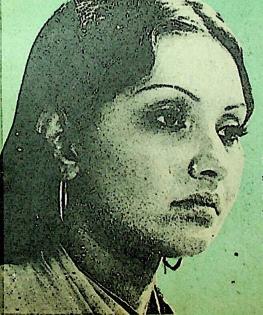
पूरे परिवार के मनोरंजन के लिए
विश्व सुलभ साहित्य

आखिरी दिन
परमाणु युद्ध की रहस्य व दर्दभरी कहानी जिस का हर पात्र आप की सहानुभूति बटोर लेगा
रु. 5.00

हिम सुंदरी
द्वितीय महायुद्ध की विभीषिका के बीच गंगा की घाटी में बर्फ में दबे हुए अनेक जीवित शवों की सनसनी खेज कहानी.
रु 5.00

नानावती का मुकदमा
अनैतिक प्रेम के दुष्परिणामों की सच्ची कहानी. रु. 3.00

भगवान विष्णु की भारत यात्रा
एक तीखा व्यंग्यात्मक उपन्यास रु. 4.00

नई सुबह
एक फौजी द्वारा फौजियों की जिंदगी की कहानी. केरल साहित्य एकादमी से पुरस्कृत रु. 3.50

अंतरिक्ष के पार
कंप्यूटर हेरोकोल्ट-7, एक दिन दास से स्वामी बन बैठा, क्या मानव हार गया? रु. 3.00

प्रतिशोध
एक जर्मन सैनिक की रोंगटे खड़े कर देने वाली सच्ची कहानी जिस ने अपनी ही सेना के विरुद्ध जिहाद कर दिया था
रु 5.00

डाकुओं के घेरे में
डाकुओं की समस्या पर लिखा गया दिलचस्प उपन्यास. रु. 5.00

आज ही अपने पुस्तक विक्रेता से लें.

विश्वविजय प्रकाशन, एम-12 कनाट सरकस, नई दिल्ली-110001

मूल्य अग्रिम आने पर पूरा सैट 25 रुपए में, डाकखर्च नहीं, या कोई भी चार पुस्तकें केवल 15 रुपए में डाकखर्च 2 रुपए.

किस्सा फिल्मी कहानियों का

लेख : गीता उपाध्याय

'फिल्म राइटर्स एसोसिएशन' के सामने प्रस्तुत कहानियों के विवाद अपने आप में रोचक तो होते ही हैं, फिल्मी कहानियां कितनी असली, चुराई हुई या विदेशी फिल्मों की नकल पर आधारित होती हैं, यह भी जाहिर करते हैं.

बंबई में 'फिल्म राइटर्स एसोसिएशन' है जो फिल्मी लेखकों के हितों की रक्षा करती है. यह संस्था लेखकों की कहानियां रजिस्टर्ड करती है और जब कभी कहानीकार और निर्माता के बीच झगड़ा होता है तो यह उन के मुकदमों को तय करती है. यह एसोसिएशन फिल्म निर्माताओं की आलोचनाओं को अकसर सहन करती है. कुछ लोग इस एसोसिएशन को 'कहानी चोर एसोसिएशन' भी कहते हैं क्योंकि इस एसोसिएशन के सदस्य लेखक अकसर विदेशी फिल्मों और उपन्यासों के विषय और कहानियां ही नहीं चुनते, बल्कि पूरी की पूरी कहानी भी चुरा लेते हैं.

हाल ही में फिल्म राइटर्स एसोसिएशन में 'बर्निंग ट्रेन' की कहानी की चोरी का दिलचस्प किस्सा सुनने में आया. कहते हैं कि 'बर्निंग ट्रेन' के प्रदर्शित होने के बाद गौतम और शरीफ नामक लेखकों की एक नई जोड़ी ने फिल्म राइटर्स एसोसिएशन में निर्माता बलदेवराज चोपड़ा

बलदेवराज चोपड़ा : 'दि बर्निंग ट्रेन' तो चार विदेशी फिल्मों की नकल पर बनी थी, फिर यह कहानी किसी भी देशी लेखक की कैसे हो सकती है?
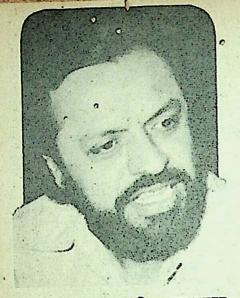
पर मुकदमा दायर कर दिया. इस मुकदम की याचिका में इस लेखक जोड़ी ने दावा किया था कि निर्माता बलदेवराज चोपड़ा और लेखक सी. जे. पावरी ने उन की कहानी चुरा कर 'बर्निंग ट्रेन' की कहानी तैयार की है. लेखक जोड़ी ने यह भी सबूत पेश किया कि उन की यह कहानी 'केपिटल एक्सप्रेस' के नाम से दो साल पहले रजिस्टर्ड कराई जा चुकी है.

फिल्म राइटर्स एसोसिएशन में जब इस मुकदमे की सुनवाई आरंभ हुई तो निर्माता बलदेवराज चोपड़ा ने अपनी सफाई में साफसाफ कहा कि उन पर 'बर्निंग ट्रेन' की कहानी चुराने का आरोप गलत है, क्योंकि इस फिल्म में कोई कहानी है ही नहीं. यह एक टेकनीकल फिल्म है जिस की दिलचस्प घटनाओं को चार विदेशी फिल्मों से लिया गया है. ये चार फिल्में हैं—'दि टावरिंग इनफेर्नो,' 'बुलेट ट्रेन' 'एयरपोर्ट 75,' 'सिलवर्ट स्ट्रीक.' श्री चोपड़ा ने यह भी कहा कि अगर लेखक जोड़ी अपनी कहानी में एक भी घटना चक्र या प्रसंग मौलिक रूप से अपना लिखा हुआ साबित कर दे तो वह हर उस फैसले को मान लेंगे जो राइटर्स एसोसिएशन देगी.

श्री चोपड़ा की बात सच थी. फिल्म

श्याम बेनेगल : फि. रा. ए. के आदेश पर फिल्म 'अंकुर' के सभी प्रिंटों पर संवाद लेखक के रूप में अजीज कैसी का नाम जोड़ना पड़ा.

राइटर्स एसोसिएशन के जजों के सामने ऐसे दो चोर लेखकों का मुकदमा था जो किसी तीसरे लेखक के माल पर अपना हक जता रहे थे. अंत में फिल्म राइटर्स एसोसिएशन ने अपना फैसला श्री चोपड़ा के हक में दिया. एसोसिएशन के नियमों के अनुसार कोई लेखक अगर किसी विदेशी उपन्यास या फिल्म की कहानी पर अपना दावा करता है तो उस दावे को स्वीकार नहीं किया जा सकता, क्योंकि इस स्थिति में दावा करने वाला लेखक खुद ही किसी की कहानी चुराने का दोषी होता है और वह दूसरे की कहानी पर अपना हक नहीं जता सकता. किसी भी विदेशी कहानी पर आधारित किसी फिल्म के ऊपर फि. रा. ए. का लेखक सदस्य अपना हक नहीं जता सकता. चाहे वह अपने नाम से इस चोरी के माल को पहले ही क्यों न रजिस्टर्ड करा चुका हो.

एक दिलचस्प मुकदमा

विदेशी कहानी चुरा कर फिल्म की कहानी की मौलिकता पर अपना दावा करने के कई मुकदमे 'बर्निंग ट्रेन' से पहले भी फि. रा. ए. में आ चुके हैं. किंतु इस से दिलचस्प मुकदमा फिल्म 'वारंट' की कहानी को ले कर सामने आया था. यह मुकदमा फिल्म निर्माता ओमप्रकाश रल्हन ने 'वारंट' के लेखक प्रमोद चक्रवर्ती पर दायर किया था. रल्हन ने यह कहानी फि. रा. ए. में बहुत पहले रजिस्टर्ड कराई थी और रल्हन का कहना था कि 'वारंट' उन की अपनी कहानी पर आधारित है. 'वारंट' उस समय चार या पांच

रीलें ही बन पाई थी. कहानी का भंडाफोड़ भी अजीब ढंग से हुआ था. 'वारंट' में सतीश कौल एक छोटी सी भूमिका निभा रहा था. लेकिन वह सब से दावा करता फिर रहा था कि 'वारंट' में उस का जबरदस्त रोल है. इस बात को साबित करने के लिए सतीश कौल ने कई जगह 'वारंट' की कहानी और अपना रोल सुना दिया जो घूमतेघामते ओमप्रकाश रल्हन तक पहुंच गया. रल्हन ने तुरंत एसोसिएशन में 'वारंट' के कहानीकार प्रमोद चक्रवर्ती पर मुकदमा दायर कर दिया.

किंतु सुनवाई के दौरान जब प्रमोद चक्रवर्ती ने यह साबित कर दिया कि 'वारंट' की कहानी रल्हन की नहीं बल्कि एक अंगरेजी लेखक की कहानी पर आधारित है तो निर्णय प्रमोद चक्रवर्ती के हक में गया. किंतु रल्हन ने इस बात को नहीं माना और मामला फि. रा. ए. से अदालत में पहुंच गया. अदालत में भी जीत प्रमोद चक्रवर्ती की ही हुई. इस मुकदमे के बाद फि. रा. ए. ने यह नियम बना दिया कि किसी फिल्म की कहानी का आधार अगर विदेशी फिल्म या कहानी हो तो किसी भी पार्टी को दावा करने का कोई हक नहीं होगा. जब तक यह साबित न हो कि कहानी लेखक की अपनी मौलिक कल्पना की उपज है तब तक वह अपना कोई हक नहीं जता सकेगा.

'वारंट' के दौरान बनाए गए नियम के अंतर्गत ही 'बर्निंग ट्रेन' के झगड़े में बलदेवराज चोपड़ा के हक में फैसला दिया गया.

फि. रा. ए. के संबंध में बहुत सी भ्रांतियां और संदेह लोगों में फैले हुए हैं. एसोसिएशन के सचिव अजीज कैसी का कहना है कि फिल्म राइटर्स एसोसिएशन कोई अदालत नहीं, बल्कि पंचायत है और

मंजु असरानी : 'सलाम मेम साहब' फिल्म की कहानी लेखिका होने का दावा फि. रा. ए. में झूठा प्रमाणित हो गया.

इस पंचायत में ऐसे झगड़ों को सुलह सफाई द्वारा तय करने की कोशिश की जाती है, जो लिखित अनुबंध न होने या लेखक द्वारा निर्माता का अथवा निर्माता द्वारा लेखक का शोषण किए जाने से उठ खड़े खड़े होते हैं.

अजीज कैसी की यह बात कहां तक सच है, इसे जानने या समझने के लिए हमें फि. रा. ए. के ऐसे ही दोतीन मुकदमों की ओर देखना पड़ेगा.

रोचक मुकदमे

एक दिलचस्प मुकदमा कुछ वर्षों पहले फिल्म 'कल, आज और कल' को ले कर उठा था. इस फिल्म की कहानी वीरेंद्र सिन्हा ने लिखी थी. लेकिन वीरेंद्र सिन्हा ने इसी कहानी को तीन निर्माताओं को बेच कर उन से रकमें वसूल की थीं. वीरेंद्र सिन्हा का पहला शिकार सुबोध मुखर्जी थे. जिन्होंने काफी पहले 'कल, आज और कल' की कहानी वीरेंद्र सिन्हा से खरीदी थी. कुछ दिनों बाद यही कहानी वीरेंद्र सिन्हा ने रणधीर कपूर को बेची और फिर इसी कहानी को एक और नए निर्माता को बेच डाला.

जब सुबोध मुखर्जी को वीरेंद्र सिन्हा की इस हरकत का पता चला तो उन्होंने इस लेखक के विरुद्ध फि. रा. ए. में मुकदमा दायर कर दिया. फि. रा. ए. ने इस मुकदमे का फैसला अपने लेखक सदस्य के हक में न दे कर सुबोध मुखर्जी के हक में दिया. फैसले के अनुसार वीरेंद्र सिन्हा पर 15 हजार रुपया जुरमाना किया गया और एसोसिएशन का गलत सदस्य होने के कारण उन्हें सदस्यता से अलग कर दिया गया.

यह एक लेखक की अनैतिकता थी. अब एक किस्सा 'अंकुर' के निर्देशक श्याम बेनेगल की अनैतिकता का भी सुनि[ए]. श्याम बेनेगल अपने काम और अप[नी] फिल्मों से एक बुद्धिजीवी प्रतीत होते [हैं]. इसी लिए 'अंकुर' के संवादों में स्वा[भा]विकता लाने के लिए उन्होंने यह का[म] अजीज कैसी को सौंपा. अजीज कैसी [ने] 'अंकुर' के संवाद हैदराबादी जबान [में] लिखे और वे फिल्म का एक महत्व[पूर्ण] हिस्सा बन गए. 'अंकुर' के एक प्राइ[वेट] शो में मैं ने यह फिल्म अजीज कैसी [के] साथ देखी. लेकिन फिल्म के निर्माण [में] सहयोग देने वालों में अजीज का ना[म] संवाद लेखक के रूप में न दे कर फि[ल्म] के संवादों को हैदराबादी बोली में रं[गने] वालों के रूप में दिया गया था, जब[कि] वास्तविकता यह है कि अजीज कैसी [ने] 'अंकुर' के पूरे संवाद टेप कर के टेप श्या[म] बेनेगल को सौंप दिया था.

'अंकुर' की यूनिट के एक सदस्य [का] तो यह भी कहना है कि जिस तरह [ये] संवाद टेप में बोले गए थे, फिल्म के [हर] पात्र ने ठीक वैसे ही अंदाज से संवा[दों] को परदे पर प्रस्तुत कर दिया था. [फिर भी] 'अंकुर' के संवाद लेखक के रूप में [नाम]

असरानी : फि. रा. ए. के फैसले के विरुद्ध अदालत में अपील करते ही एसोसिएशन से संबंध समाप्त हो गए.

प्रमोद चक्रवर्ती : 'वारंट' की कहानी रत्हन की नहीं बल्कि एक अंगरेजी लेखक की कहानी पर आधारित थी.

देव दुबे का नाम था.

अजीज कैसी ने अपने हक के लिए फि. रा. ए. में श्याम बेनेगल और सत्यदेव दुबे के विरुद्ध याचिका दायर कर दी और मांग की कि फिल्म के टाइटल्स में उन का नाम डायरेक्टर के रूप में नहीं संवाद लेखक के रूप में दिया जाए, क्योंकि 'अंकुर' के संवाद उन्होंने लिखे हैं.

इस याचिका को दायर करने के बाद एक पार्टी में श्याम बेनेगल जब अजीज कैसी से मिले तो कुछ कहने से पहले ही श्याम बेनेगल ने कैसी से कहा, "आप मेरे साथ तीन फिल्में लिख रहे हैं"

उत्तर में अजीज कैसी ने जो कहा वह सुन कर श्याम बेनेगल दंग रह गए. कैसी ने कहा, "मैं आप के साथ तीन फिल्में तो छोड़िए, तीन सीन भी नहीं लिखूंगा."

इस सवालजवाब के बाद जब फिल्म प्रदर्शित हुई तो पोस्टरों पर संवाद लेखक के रूप में सत्यदेव दुबे और अजीज कैसी दोनों के नाम थे. किंतु फिल्म की नामावली में यह संशोधन नहीं किया गया. फि. रा. ए. ने इस याचिका पर फैसला देने से पहले एसोसिएशन के चार अधिकारियों—ख्वाजा अहमद अब्बास, कृष्ण चंदर, कुर्तुल एन. हैदर और महेंद्रनाथ को 'अंकुर' दिखाई. इन चारों अधिकारियों ने अपने निर्णय में कहा कि फिल्म के संवाद 'डाइलेक्ट' में ही हैं. इस पर फि. रा. ए. ने फैसला दिया कि श्याम बेनेगल को अजीज कैसी का नाम फिल्म के सभी प्रिंट्स पर तुरंत लिखना चाहिए. ऐसा ही किया गया और अजीज कैसी का नाम संवाद लेखक के रूप में दिया गया.

नामों का विवाद

फिल्म 'खोटे सिक्के' में भी एक ऐसा ही झगड़ा उठ खड़ा हुआ था. परदे पर फिल्म की नामावली में नरेंद्र बेदी का नाम कहानीकार के रूप में था, लेकिन जयंत अधिकारी नामक एक लेखक ने दावा किया कि 'खोटे सिक्के' की कहानी उस की है और कहानी फि. रा. ए. में रजिस्टर्ड कराई जा चुकी है. नरेंद्र बेदी ने अपने सबूत में कहा कि 'खोटे सिक्के' की वास्तविक कहानी 'मैगनीफिसेंट सेवन' पर आधारित है. किंतु फि. रा. ए. ने सबूतों के आधार पर फैसला दिया कि कहानी का असली हकदार जयंत अधिकारी है और उस का नाम फिल्म में कहानीकार के रूप में अलग से आना चाहिए. आखिरकार निर्माता को अलग से कहानीकार के रूप में जयंत अधिकारी के नाम की स्लाइड बनवा कर फिल्म के साथ जोड़नी पड़ी.

फिल्म 'सलाम मेम साहब' का किस्सा भी कुछ कम दिलचस्प नहीं है. इस फिल्म की कहानी पर असरानी की पत्नी मंजु असरानी का नाम था लेकिन मनहर नाम के एक लेखक ने फि. रा. ए. में यह दावा दायर किया कि फिल्म की कहानी उस की है और असरानी ने कहानी चुराई है. असरानी के पास सबूत था कि उस ने

वह कहानी मंजु असरानी के नाम से एसोसिएशन में रजिस्टर्ड कराई है. लेकिन जब मनहर ने अपनी रजिस्टर्ड की हुई कहानी दिखाई तो असरानी के छक्के छूट गए. मनहर की कहानी मंजु असरानी की कहानी के रजिस्ट्रेशन से दो साल पहले 'सलाम साब' शीर्षक से रजिस्टर्ड की जा चुकी थी.

कहानी खरीदी नहीं चुरा ली

मनहर ने अपने बयान में कहा, "यह मेरी कहानी है. यह कहानी मैं ने असरानी को सुनाई थी. लेकिन पैसों को ले कर मामला नहीं जमा. असरानी ने फिल्म शुरू कर दी और मुझे पता नहीं चला."

सबूतों और याचिका की सुनवाई के लिए दूसरे पक्ष का मौजूद होना फि. रा. ए. के लिए जरूरी था. असरानी को बुलाया गया. वह नहीं आया. कई बार पत्र लिखने पर भी असरानी नहीं आया तो उस की फिल्म को 'बैन' (प्रतिबंधित) करने का पत्र भेजा गया तब कहीं असरानी बैठक में आया. लेकिन वह बैठक से उठ कर चला गया, क्योंकि एसोसिएशन ने पूर्व सूचना के अनुसार एकतरफा फैसला दे दिया था. इस फैसले के अनुसार असरानी से कहा गया, उसे लेखक मनहर को कहानी का पारिश्रमिक और परदे पर उस का नाम देना होगा.

अदालत जाओ सदस्यता गंवाओ

फि. रा. ए. के इस फैसले को असरानी ने ठुकरा दिया और मुकदमे को अदालत में ले गया. अदालत ने इस मुकदमे का क्या फैसला दिया, यह अदालत की दीवारों तक ही रह गया. कहते हैं दोनों पार्टियों में आपसी समझौता हो गया था. किंतु फि. रा. ए. ने असरानी का नाम उसी दिन अपने रजिस्टर से काट दिया, जिस दिन उस ने फि. रा. ए. के विरुद्ध अदालत में अपील की.

फिल्मी कहानियों के ऐसे किस्सों पर एक पूरी पुस्तक लिखी जा सकती है लेकिन पुस्तक पढ़ने का समय किस के पास है?

फिल्म राइटर्स एसोसिएशन में कहानी कैसे रजिस्टर्ड होती है?

कहानी रजिस्टर कराने के लिए लेखक का 'फि. रा. ए.' का सदस्य बनना आवश्यक है. सदस्य बनने के बाद लेखक अपनी कहानी (पटकथा या संवाद) की एक प्रति एसोसिएशन में ले कर जाता है और उस के सामने ही उस प्रति के हर पृष्ठ पर 'फि. रा. ए.' की मुहर लगा दी जाती है. रजिस्ट्रेशन फीस की रसीद पर कहानी का नाम, लेखक का नाम, तारीख, पृष्ठ संख्या, हस्तलिपि और उस अधिकारी के हस्ताक्षर होते हैं जो कहानी का रजिस्ट्रेशन करता है.

इस के बाद कहानी की वह रजिस्टर्ड प्रति उसी समय लेखक को वापस कर दी जाती है. जब भी कहानी की चोरी या कोई विवाद उठता है तो लेखक इस रजिस्टर्ड कहानी को प्रमाण के रूप में प्रस्तुत कर सकता है और इसे एसोसिएशन वैध मानता है.

इस स्तंभ के लिए समाचार-पत्रों की रोचक कटिंग भेजिए. सर्वोत्तम कटिंग पर 15 रुपए की पुस्तकें पुरस्कार में दी जाएंगी. कटिंग के साथ अपना नाम व पूरा पता अवश्य लिखें :

भेजने का पता : शाबाश, मुक्ता, रानी झांसी रोड, नई दिल्ली-110055.

बिना शादी किए बरात को लौटना पड़ा

मुरादाबाद से उझरानी आई एक बरात को उस समय लड़के की शादी किए बिना ही लौटना पड़ा जब कन्या ने शादी करने से साफ इनकार कर दिया.

कहा जाता है कि वर की उम्र कन्या से दोगुनी थी, अतः उस ने शादी करने से इनकार कर दिया. जिस समय वह जयमाला डालने आई तब सब से पहले उस ने वर को देखा. उसे देखते ही वह सन्न रह गई क्योंकि वह व्यक्ति तो उस के पिता के समान नजर आ रहा था.

जब कन्या के पिता और वर पक्ष द्वारा कन्या को समझाने के सारे प्रयास विफल हो गए तब बरात को चुपचाप लौट जाना पड़ा.

—आज, वाराणसी (प्रेषक : मंजेशकुमार)

स्वर्ण पदक मास्टर साहब को अर्पित

नोबेल पुरस्कार विजेता पाकिस्तानी वैज्ञानिक अब्दुस्सलाम जब अपने 80 वर्षीय 'मास्टर साहब' प्रोफेसर अनिलेंद्र गंगोपाध्याय से दक्षिण कलकत्ता स्थित उन के निवास स्थान पर मिले तब उन्होंने अपना स्वर्ण पदक उतार कर रुग्ण मास्टर साहब को अर्पित कर दिया.

उन्होंने कहा, "श्रद्धेय मास्टर साहब, आप ने मुझे जो पढ़ाया था उस से अधिक मैं और कुछ नहीं जानता."

सन 1945-46 में श्री सलाम प्रोफेसर गंगोपाध्याय के गणित के प्रिय शिष्य थे. श्री गंगोपाध्याय ने स्वर्ण पदक ले कर उसे गौर से देखा और फिर आशीर्वाद देते हुए उन्हें लौटा दिया.

उन्होंने श्री अब्दुस्सलाम से कहा, "मैं पिछले 35 वर्षों से आप से मुलाकात की कामना करता रहा हूं. अब मेरी इच्छा पूरी हो गई है."

—आज, वाराणसी (प्रेषक : अशोककुमार पांडेय)

एक पोर्टर ने हजारों लोगों की जान बचाई

एक रेलवे पोर्टर की सतर्कता और कर्तव्यनिष्ठा से भोपाल-उज्जैन रेल मार्ग पर एक पैसेंजर ट्रेन पटरी से उतरने तथा लुटने से बच गई.

बताया जाता है कि 29 जनवरी की रात को 11 बजे भोपाल से इंदौर के लिए रवाना हुई 90 अप पैसेंजर ट्रेन को पटरी से उतरने तथा लूटने के उद्देश्य से जबड़ी के छोटे रेलवे स्टेशन के होम सिगनल के निकट पटरी के एक जोड़ पर तीन फुट लंबा लोहे का टुकड़ा फंसा दिया गया.

रेलवे का 24 वर्षीय पोर्टर ग्यासीराम रात के लगभग एक बजे जब इस गाड़ी को 'रास्ता साफ है' का संकेत देने के लिए जा रहा था तो उस ने पटरी में फंसे उस लोहे के टुकड़े को देखा. उस ने जब उस लोहे के टुकड़े को झुक कर निकालने की कोशिश की तो पीछे से एक अज्ञात व्यक्ति ने उसे बंदूक का कुंदा दे मारा. इतने में पांचछ: और बदमाश वहां आ गए और उन्होंने उसे घूंसों और लातों से खूब मारा और दोनों हाथ पीछे की ओर बांध दिए.

इन बदमाशों ने उस के बंधे हुए हाथों में बत्ती दे कर स्टेशन जाने और जिधर से गाड़ी आ रही है उस ओर हरी बत्ती दिखाते हुए जाने के लिए बाध्य किया. उस के मुंह में कपड़ा भी ठूंस दिया गया.

ग्यासीराम ने बताया, "वे लोग मेरी ओर बराबर देख रहे थे कि मैं हरी लाइट दिखा रहा हूं या नहीं. स्थिति गंभीर थी. तभी गाड़ी सामने से आती हुई दिखाई दी और मैं ने साहस से काम ले कर किसी तरह कोशिश कर के लाल बत्ती दिखा दी. मेरी लाल बत्ती देख कर ड्राइवर बुंदेल खां ने गाड़ी की रफ्तार धीमी कर दी और मेरे निकट इंजन को रोक लिया. फिर उस ने मुझे रेल के इंजन पर चढ़ा लिया और मेरे बंधे हुए हाथ खोले." इस प्रकार एक भयंकर दुर्घटना घटने से बच गई.

—करंट, बंबई (प्रेषक : र. प. बिजवे)

निर्दयी अपराधी की सहृदयता

निर्दयी अपराधी भी भावुकता में कितना सहृदय हो सकता है, इस का एक रोचक समाचार मिला है.

पिहानी थाना क्षेत्र की सीमा पर नारायण चमार के गिरोह की दो महिला डकैतों ने एक बरात को लूटने के बाद जब नई नवेली दुलहन को लूटने के लिए डोली रोकी तो आतंक से भयभीत दुलहन की करुण मुद्रा को देख कर महिला डकैतों ने गिरोह के पुरुष सदस्यों को यह निर्देश दिया कि वे डोली को हाथ न लगाएं.

उन्होंने कहा कि दुलहन बनने का अवसर किसी औरत के जीवन में एक ही बार आता है. जेवर, कपड़े आदि केवल इस मूहूर्त पर ही दुलहन को पहनाए जाते हैं इसलिए उस के जेवर और कपड़े नहीं उतारे जाएंगे.

इतना ही नहीं, दुलहन को अछूता छोड़ कर जब डकैत दो डलियों सहित अन्य माल ले कर जाने लगे तो शरमाई आवाज में दुलहन के यह कहने पर कि वे दोनों डलियां उस की मां के हाथ की बुनी हुई हैं, डकैतों ने डलियां भी वापस कर दीं.

—आज, कानपुर (प्रेषक : दयानंद जायसवाल)

✦ व्यापार चाहिए, खैरात नहीं

बंबई के राष्ट्रीय हथकरघा मेले में जब अमरीकी पर्यटकों के एक दल ने भारतीय बुनकरों को कुछ डालर दान में देने चाहे तो उन्होंने बड़े गर्व से यह कह कर उन्हें निरुत्तर कर दिया कि हम व्यापार चाहते हैं, खैरात नहीं.

बुनकरों के इस स्पष्ट जवाब के बावजूद जब उन अमरीकियों ने डालर स्वीकार कर लेने का आग्रह किया तो केंद्रीय संयुक्त हथकरघा आयुक्त श्री शेषाद्रि ने उन से कहा कि वे इन डालरों से कपड़ा खरीद लें. उन के इस कार्य से भी बुनकरों को मदद मिलेगी.

बाद में उन पर्यटकों ने 25 हजार मूल्य की साड़ियां व अन्य कपड़े खरीदे.

—नवभारत टाइम्स, दिल्ली (प्रेषक : प्रमोद चतुर्वेदी) (सर्वोत्तम)

संकटों के आलम में चीन के रहनुमा

लेख • विश्राम वाचस्पति
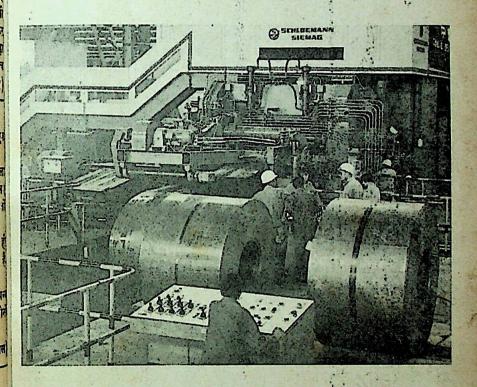
चीन के बदलते हालात क्या यही संकेत नहीं देते कि यदि शीघ्र ही वहां की अर्थनीति में आमूल परिवर्तन न किया गया तो देश में गृहयुद्ध हो सकता है?

रूस की क्रांति से प्रेरणा ले कर चीन में क्रांति हुई थी. स्तालिन को आदर्श बना कर माओ ने चीन को सारी दुनिया से अलग रखने के लिए लोहे की दीवारें खड़ी कर दी थीं और दूसरे सभी देशों पर साम्राज्यवादी, पूंजीवादी, विस्तारवादी, प्रतिक्रियावादी आदि का 'लेबल' लगा कर दिखाना चाहा था कि

सिवा चीनियों के सभी अन्य लोग बेई-मान हैं.

लेकिन फिर वक्त बदला. रूस से अदावत बढ़ने के कारण चीन ने अमरीका जैसे 'घोर पूंजीवादी' देश से समझौते किए, विएतनाम जैसे अपनी ही विचार-धारा वाले कम्यूनिस्ट देश पर हमले किए और तथाकथित पूंजीवाद और विस्तारवाद के खिलाफ जिहाद के उस के नारे बेमानी हो गए.

माओ की मृत्यु के बाद उस की विधवा पत्नी ज्यांग किंग ने अपने तीन साथियों के साथ सत्ता को हथियाने का षड्यंत्र किया, परंतु डेंग जिआओपेंग ने काफी जद्दोजहद के पश्चात स्थिति को अपने पक्ष में कर लिया और 'कुख्यात चौकड़ी' को बंदी बना कर उस प्रयास को असफल कर दिया.

अर्थनीति में कैसा परिवर्तन

नए अध्यक्ष डेंग, उन के साथी उपाध्यक्ष हू यओबेंग और प्रधान मंत्री झाओ जियांग अब यह अनुभव कर रहे हैं कि चीन की अर्थनीति में आमूल परिवर्तन लाना होगा, अन्यथा देश में गृहयुद्ध हो जाएगा.

चीनियों ने हथियार चलाने में उतनी ही दक्षता प्राप्त कर ली है, जितनी कि कुदाल चलाने में. इसलिए अगर वहां अंदरूनी बगावत हो गई तो उस के कितने भयानक परिणाम होंगे, इस का अनुमान आसानी से लगाया जा सकता है.

डेंग और उस के साथियों ने यह भी अनुभव किया है कि माओ और चौकड़ी के घोर दक्षिणपंथी मार्ग को छोड़ कर सत्ता का विकेंद्रीकरण किए बिना तथा प्रांतीय और नागरिक नेताओं को सलाह-मशवरे के लिए खुले दिल से सहयोग देने के लिए आमंत्रित किए बिना देश की हालत और भी खस्ता हो जाएगी.

यह एक बहुत बड़ा काम है, जो चीन के वर्तमान शासकों के बलबूते से बाहर है.

सात समस्याएं

मुद्रा स्फीति : चीन के नेताओं की आंखों के सामने जिन सात समस्याओं को देख कर अंधेरा छा रहा है उन में पहली है— मुद्रा स्फीति. सरकारी आंकड़ों के अनुसार चीन में मुद्रा स्फीति की दर 5.8 प्रतिशत है, परंतु वास्तव में यह इस से तीन गुना है.

चौकड़ी ने माओ के समय में भौतिक समृद्धि की भावना को नष्ट करने का प्रयत्न किया था. उस के परिणाम स्वरूप चीन की जनता को अनुभव होने लगा था कि उस का कोई अस्तित्व नहीं. उस की स्थिति केंद्र द्वारा चालित किसी मशीन के पेंच, ढिबरियों जैसी है. किसान और मजदूर अभी भी अपनी मांगें सरकार के सामने रखने का साहस नहीं कर सकते. ऐसे में क्या खाक उन्नति होगी?

मजदूर और किसानों का शोषण: चीन में किसानों से खरीदे जाने वाले अनाज की क्रय दर तो कम है ही, शहरों में काम करने वाले मजदूर उस से भी ज्यादा शोषित हो रहे हैं. परिणामस्वरूप इन दोनों ही वर्गों में भारी असंतोष फैला हुआ है. इस के बावजूद सरकार अर्थव्यवस्था बढ़ने का दावा कर रही है.

सन 1979 के केंद्रीय बजट में 17 अरब युआन (11.32 अरब डालर) का घाटा दिखाया गया था और अब अनुमान लगाया गया है कि 1981 में यह घाटा बढ़ कर 22 अरब युआन हो जाएगा.

अगर वास्तव में बजट की स्थिति इतनी ही शोचनीय है तो इस घाटे को पूरा करने के लिए कुछ मदों में कटौती क्यों नहीं की जाती? भारी उद्योगों और कारखानों के विस्तार पर रोक क्यों नहीं लगाई जाती और देर में पूरी होने वाली योजनाओं को स्थगित क्यों नहीं किया जाता? देश के नेता या तो यह सम

जनकल्याण के प्रति लापरवाह चीनी शासक और कब तक नागरिकों को भुलावे में रख पाएंगे?

नहीं या समझना नहीं चाहते कि उन के इन काल्पनिक घाटों से गरीब मजदूर और किसानों के भीतर उठती क्रांति की ज्वाला बजाए ठंडी होने के और अधिक भड़क रही है.

उत्पादन क्षमता का ह्रास : चीन में विद्यमान चालू कारखानों और मशीनों की उत्पादन क्षमता में भी काफी गिरावट देखी जा रही है. निकट भविष्य में कुछ कारखानों को शायद बंद भी करना पड़े. ये हैं कपड़े, सिगरेट आदि के कारखाने जिन्हें प्रांतीय सरकारें चला रहीं हैं. एक प्रकार के दो या दो से अधिक कारखानों की प्रबंध व्यवस्था पर किए जाने वाले व्यय में कटौती के लिए इन्हें कम इकाइयों में बांधने के प्रस्ताव को सरकार द्वारा नजरअंदाज कर दिया गया था.

बेरोजगारी : प्रति वर्ष एक करोड़ के हिसाब से बढ़ने वाली जनसंख्या के साथसाथ बढ़ती हुई बेरोजगारी चीन की सरकार के लिए एक और सिरदर्द है. एक विश्वस्त सूत्र के अनुसार चीन में करीब 1.4 करोड़ बेरोजगार हैं.

अगर इन समस्याओं की तरफ सरकार का रवैया यों ही बेरुखी का रहा तो कम से कम 50-60 लाख कुशल कारीगरों के और बेरोजगार हो जाने की संभावना है.

जनकल्याण और आवास : जनता के लिए आवास की व्यवस्था जुटाने में भी वर्तमान सरकार नाकामयाब रही है. चीन की सरकार सरकारी बजट में घाटे को दिखाने की तो कोशिश करती है, परंतु रिहायशी मकान बनाने और जनहितकारी योजनाओं को तेजी से बड़े पैमाने पर चलाने का प्रयत्न नहीं करती.

सत्ता का विकेंद्रीकरण : सभी पहलुओं पर कुशलतापूर्वक और संतोषजनक ढंग से कुछ करने के लिए चीन की केंद्रीय सरकार को माओ के समय के तानाशाही तरीकों को छोड़ना होगा, अधिक लोकतंत्रीय तरीके से चल कर प्रांतीय सरकारों,

चीन में किसानों और मजदूरों का शोषण क्या आज भी जारी नहीं है?

नगर पालिकाओं आदि के स्तर के नेताओं की बात सुननी और माननी होगी.

प्रतिरक्षा : डेंग सरकार चाहती है कि बिना बजट बढ़ाए प्रतिरक्षा के लिए सैनिक बल को बनाए रखा जाए. चीन को शायद पूंजीवादी अमरीका और साम्राज्यवादी पश्चिमी राष्ट्रों से उतना डर नहीं जितना कि रूस से है. फिर रूस और अमरीका के बीच चल रही शक्ति परीक्षा के परिणामस्वरूप ऊंट कब कौन सी करवट बदलेगा, इस का कोई पता नहीं. इसलिए चीन को फिर अपनी सैनिक शक्ति बढ़ाने की फिक्र लगी हुई है. फिर भी सन 1980 के रक्षा बजट को बहुत नियंत्रित रखा गया था, जो 19.33 अरब युआन (12.89 अरब डालर) था. यह पिछले साल से 3 अरब येन (2 अरब डालर कम था.

माना जाता है कि डेंग चीन का सब से शक्तिशाली नेता है, फिर भी हुआ गुआ फेंग और उन के साथी उसे परेशान करते रहते हैं. देखना यह है कि अपने अगले तीन साल के सत्ता काल में डेंग अपने साथी हू योवांग (महासचिव) और प्रधान मंत्री झाओ जियांग के सहयोग... क्याक्या गुल खिलाता है.

इसी साल वसंत में चीन की कम्... निस्ट पार्टी की 12वीं कांग्रेस की कें... समिति का चुनाव होने वाला है. इस... 220 स्थायी और 130 वैकल्पिक सद... का चुनाव होगा, जिस के बाद पता चले... कि डेंग की सरकार कितनी पाए... होगी.

एक लंबे अरसे से चीन वाले मा... की 'लाल किताब' को बाइबल, ... और कुरान की तरह पूजते आ रहे... लेकिन अब केवल माओ के वचनों, ... और नारों से काम नहीं चलेगा. ... वासी 'कैनन फौडर' (तोप के बारू... नहीं, वह एक बड़ी मशीन के कलपुर्जे... नहीं, वरन इनसान हैं. उन्हें इनसान... दर्जा देना होगा. शायद चीन के शासक... समझने भी लगे हैं. फिर भी सत्ताधारि... की मनोवृत्ति आसानी से नहीं बदल... प्रश्न है कैसे, कितना और कितने सम... परिवर्तन किया जाए.

इसी सकते के आलम में हैं चीन... रहनुमा.

इस स्तंभ के लिए समाचार-पत्रों की कटिंग भेजिए. कटिंग के नीचे अपना नाम व पूरा पता अवश्य लिखें : सर्वोत्तम-कटिंग पर 15 रुपए की पुस्तकें पुरस्कार में दी जाएंगी.

भेजने का पता : सावधान, मुक्ता, रानी झांसी रोड, नई दिल्ली-110055.

मुख्य मंत्री के फर्जी हस्ताक्षर से 100 टन सीमेंट हड़पने का प्रयास

कानपुर में फर्जी हस्ताक्षर और मुहर की मदद से एक खद्दरधारी व्यक्ति द्वारा 100 टन सीमेंट लेने का प्रयास उद्योग विभाग के अतिरिक्त निदेशक की सूझबूझ से विफल हो गया.

उद्योग विभाग के अतिरिक्त निदेशक श्री लक्ष्मीचंद ने बताया कि एक खद्दरधारी व्यक्ति उन के सर्वोदय नगर स्थित कार्यालय में आ कर उन से मिला. बातचीत के दौरान उस व्यक्ति ने एक प्रार्थनापत्र दिया जो वाराणसी की एक फर्म का था. प्रार्थनापत्र में सौ टन सीमेंट की मांग की थी. प्रार्थनापत्र में विधान परिषद के सदस्य श्री छेदी प्रसाद के हस्ताक्षर थे और उन की ओर से मुख्य मंत्री श्री विश्वनाथ प्रताप सिंह से सीमेंट देने की प्रार्थना की गई थी. उक्त पत्र में मुख्य मंत्री के फर्जी हस्ताक्षर से सिफारिश की गई थी कि इन्हें सौ टन सीमेंट दे दिया जाए.

श्री लक्ष्मीचंद ने जब पूरा प्रार्थनापत्र पढ़ा तो उन्हें मामला कुछ संदिग्ध सा प्रतीत हुआ. उन्होंने जब उक्त व्यक्ति से पूछताछ की तो उस ने बताया कि उस का भाई लखनऊ में रहता है तथा राजनीति में उस का अच्छाखासा दखल है. यह पूछने पर कि उस को इतना बड़ा आर्डर कैसे मिल गया तो उस ने तुरंत उत्तर दिया कि यह कार्य उत्तर प्रदेश युवक कांग्रेस के प्रमुख नेता तथा विधायक की मदद से हुआ है.

इस पर श्री लक्ष्मीचंद ने उसे एक घंटे बाद आने को कहा ताकि वह देख सकें कि स्टाक में इतना सीमेंट है भी या नहीं. इस के बाद वह खद्दरधारी व्यक्ति वापस लौट कर नहीं आया.

दूसरे दिन पता चल गया कि उस पत्र पर मुख्य मंत्री तथा विधान परिषद के सदस्य के हस्ताक्षर और मुहर फर्जी थे.

—आज, कानपुर (प्रेषक : अंजु कुमारी) **(सर्वोत्तम)**

दूसरों की सिगरेट के धुएं से बचें

टोकियो के राष्ट्रीय कैंसर अनुसंधान संस्थान के अनुसंधानकर्ता डा. हिरायामा का कहना है कि धूम्रपान न करने वाले लोगों को दूसरे लोगों द्वारा छोड़ा गया जो धुआं सांस में निगलना पड़ता है, वह कहीं ज्यादा खतरनाक होता है. उस से फेफड़ों का कैंसर होने का खतरा रहता है.

ब्रिटेन की एक डाक्टरी पत्रिका में प्रकाशित अध्ययन रिपोर्ट के अनुसार इस से यह पहेली भी हल हो जाती है कि बहुत सी महिलाओं को स्वयं धूम्रपान न करने पर भी फेफड़ों का कैंसर क्यों हो जाता है.

—दैनिक हिंदुस्तान, नई दिल्ली (प्रेषक : मीरा नाग)

नींद की गोली खिला कर चोरी

नई दिल्ली के अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान के तीन मरीजों को नींद की गोली खिला कर उन का सामान चुरा लिया गया. सामान चुराने वाले बाहरी लोग थे, जो खुद को वार्ड के कर्मचारी बता कर कमाल दिखा गए. इस के बाद हस्पताल में सुरक्षा का कड़ा इंतजाम कर दिया गया.

उठाईगीरों ने वार्ड की नर्स को यह कह कर हस्पताल में प्रवेश किया था कि वे मरीजों के रिश्तेदार हैं. —नई दुनिया, इंदौर (प्रेषक : अवधेशकुमार)

दूसरे के नाम पर 15 वर्ष नौकरी की

नगर परिषद अजमेर के जलप्रदाय विभाग में फर्जी नाम से 15 साल तक नौकरी कर के वेतन लेने का मामला सामने आया है. सतर्कता समिति ने जांच के लिए यह मामला पुलिस को सौंप दिया.

कोटड़ा गांव की हरिजन महिला कोकिला देवी को जलप्रदाय विभाग में 17 वर्ष पूर्व नौकरी पर रखा गया था. एक दिन अचानक अधिकारियों ने जबानी आदेश दे कर उसे नौकरी से निकाल दिया. उस के बाद वह अपने गांव लौट आई.

लेकिन दूसरी ओर नगर परिषद के रजिस्टर में कोकिला देवी की नौकरी को जारी रखते हुए एक अन्य हरिजन महिला सोनी देवी को लगा दिया गया. वह 15 साल तक कोकिला देवी के नाम से काम कर के वेतन लेती रही.

मामला दो वर्ष पूर्व तब खुला जब कोकिला देवी बन कर काम कर रही सोनी देवी की मृत्यु हो गई.

इस के बाद कोकिला देवी ने कई बार नगर परिषद के अधिकारियों से फरियाद की कि वह जिंदा है, लेकिन कोई सुनवाई नहीं हुई. बाद में उस ने सारा मामला सतर्कता समिति में रख दिया.

—राजस्थान पत्रिका, जयपुर (प्रेषक : म. ल. भटनागर)

नकली इंस्पेक्टर पकड़ा गया

अपने आप को राजस्थान राज्य विद्युत मंडल का इंस्पेक्टर बता कर गांवों में किसानों से रुपए ऐंठने वाला बोहरा नांगल का निवासी सूवालाल पुलिस की गिरफ्त में आ गया है. पुलिस उपअधीक्षक ने बताया कि यह एक लंबे अरसे से चौमूं के आसपास के गांवों में विद्युत उपभोक्ता किसानों से बिजली का कनेक्शन काट देने आदि की धमकियां दे कर रुपए ऐंठता रहता था.

सूवालाल ने गिरफ्तारी के बाद विद्युत लाइनों से तारों की चोरियां करने के अपराध भी कबूल किए हैं. उस ने करीब 13 हजार रुपए के तारों के बंडल एक नाले में डाल कर छिपा दिए थे, जिन्हें पुलिस ने बरामद कर लिया है.

—राष्ट्रदूत, जयपुर (प्रेषक : जयप्रकाश अडवानी)

गोबर में भी मिलावट

मिलावट करने वालों ने अब गोबर को भी नहीं छोड़ा है.

खादी और ग्रामोद्योग आयोग की रिपोर्ट के अनुसार गोबर गैस संयंत्रों को सप्लाई किए जाने वाले गोबर में कीचड़ मिला कर बेचने की घटनाएं सामने आई हैं. कीचड़ मिलाने से गोबर का वजन बढ़ जाता है, किंतु इस से संयंत्र के रखरखाव में कई समस्याएं पैदा होती हैं. —राजस्थान पत्रिका, जयपुर (प्रेषक : विनोदकुमार) ●

"अरे, सुनते हो या बिलकुल बहरे ही हो गए हो? कुछ घर की भी फिक्र है या नहीं? जब देखो तब वही गानाबजाना. मैं तो बेहद परेशान हो गई हूं." चिल्लाती हुई रजिया सहसा कमरे में आ कर खड़ी हो गई.

लेकिन हैदरी खां की उंगलियां पूर्ववत सितार पर थिरकती रहीं और वह उसी तरह भावविभोर गाने में खोए रहे. उन्हें अपनी पत्नी रजिया की उपस्थिति का तनिक भी तो एहसास नहीं हुआ. उन की आंखें लगभग मुंदी हुई थीं और वह मस्ती में झूमते हुए गा रहे थे.

"हद हो गई, जनाब को क्या अब कुछ सुनाईदिखाई भी नहीं पड़ रहा? मैं इतनी देर से चिल्ला रही हूं और आप..." पैर पटकती हुई इस बार वह उन के सि[र] पर ही तो जा खड़ी हुई.

हैदरी खां का गाना बीच में ही रु[क] गया. पत्नी की ओर नजरें उठाते हु[ए] उन्होंने पूछा, "क्या बात है, बेगम? क्यों आफत मचा रही हो?"

"आफत ..उहं..." रजिया ने मुं[ह] विकृत करते हुए कहा, "आप के लिए तो आफत होगी ही. आप को यह फिक्र थो[ड़े] ही है कि नन्हा सलीम भी भूख से तड़[प] रहा है. मुझे तो भूखे रहने की आदत सी पड़ गई है, लेकिन उस बच्चे को..." कहतेकहते रजिया की आंखें छलक आईं. वह आगे कुछ भी नहीं बोल पाई.

संगीतज्ञ

कहानी • रूपसिंह चंदेल
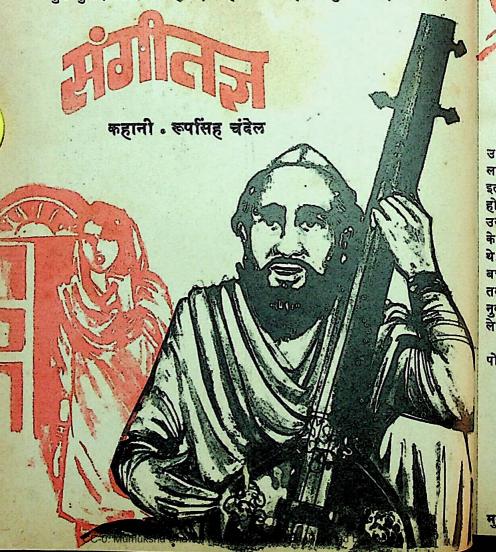
हैदरी खां का चेहरा गंभीर हो गया. उन्हें यह सोच कर अपने ऊपर कुछ झुंझलाहट भी हुई कि वह क्यों संगीत में इतना अधिक खो जाते हैं कि उन्हें यह होश ही नहीं रहता कि घर के प्रति भी उन की कुछ जिम्मेदारी है. वह एक गीत के बोलों का दो दिन से रियाज कर रहे थे. इसलिए कहीं बाहर नहीं गए थे. अलबत्ता कल जब तंबाकू खत्म हो गया था, तब अपनी गली से बाहर गोलागंज की नुक्कड़ वाली दुकान तक जा कर तंबाकू ले कर लौट आए थे.

"क्या सोच रहे हैं?" दुपट्टे से आंखें पोंछते हुए रजिया ने पूछा.

"कुछ नहीं. तुम ने पहले क्यों नहीं बताया कि घर में कुछ नहीं है? अब तो शाम होने वाली है." वह कुछ सोचने लगे, फिर बोले, "जा कर मुश्ताक की दुकान से ही कुछ उधार ले आओ. कल कहीं से इंतजाम कर के उसे पैसे दे दूंगा."

"क्या कह रहे हो, मियां? मुश्ताक हमें और उधार देगा? अभी उस का पिछला हिसाब तो चुकता किया नहीं गया, फिर वह कैसे और उधार दे देगा?"

हैदरी खां पत्नी की ओर देखते रहे. फिर उठते हुए बोले, "अच्छा, मैं जाता हूं. हो सकता है रात देर से लौटूं."

"लेकिन यह मत भूलिएगा कि सलीम

लखनऊ का बादशाह अपनी रियासत के बेजोड़ फनकार हैदरी खां के गायन का वर्षों से कायल था. मगर बादशाह से सामना होते ही हैदरी खां को ऐसा क्यों लगा कि मौत का पैगाम बस आ ही पहुंचा है?

के मुंह में कल से अनाज का दाना भी नहीं गया."

हैदरी खां ने पत्नी की ओर देखा, किंतु कुछ बोले नहीं. चुपचाप घर से बाहर निकल गए.

रास्ते भर वह यही सोचते रहे कि किस के पास जा कर पैसे उधार मांगें. एक बार उन के दिमाग में आया कि अपने एक शायर दोस्त से ही जा कर कहें. किंतु यह सोच कर कि अभी नई दोस्ती है, इकराम से उधार पैसे मांगना ठीक नहीं रहेगा, उन्होंने उस के घर जाने का खयाल छोड़ दिया. लेकिन काफी सोचने के बाद भी जब वह कोई और हल नहीं निकाल पाए, तब उन का मन बेहद खिन्न हो गया. अपने मन को थोड़ा हलका करने की खातिर वह गोमती की ओर चल पड़े.

वह अभी रोमी दरवाजे से कुछ ही आगे बढ़े थे कि किसी की आवाज सुन कर रुक गए. दो आदमी उन की ही ओर बढ़ते हुए आ रहे थे. हैदरी खां कुछ सिड़ी मिजाज भी थे. उन्होंने पीछे मुड़ कर देखा और बुदबुदा कर कहा, "भाड़ में जाओ तुम लोग." और फिर आगे बढ़ने लगे.

"अरे खां साहब, रुकिए तो, जहांपनाह आप को याद कर रहे हैं."

उन्होंने फिर पीछे मुड़ कर देखा और रुक गए. दोनों आने वाले व्यक्ति भी उन के पास आ कर रुक गए. उन्होंने पूछा, "क्या बात है?"

"आप हैदरी खां ही हैं न?" एक ने पूछा.

"हां, पर बात क्या है?"

"आप को जहांपनाह याद फरमा रहे हैं."

"क्यों?"

"वह आप का गाना सुनना चाहते हैं."

हैदरी खां खुश हो गए, पूछा, "कहां हैं वह?"

हाथ से गोमती की ओर इशारा करते हुए एक ने कहा, "उधर हैं."

हैदरी खां ने फिर देखा पर कुछ साफ न दिखाई पड़ा. फिर भी उन्होंने दूर कुछ आदमी खड़े देखे. उन्होंने कहा, "चलिए." और उन दोनों के साथ उधर ओर चल पड़े.

बादशाह गाजीउद्दीन हैदर को संगीत में रुचि थी. जब उन्हें यह खबर मिली कि लखनऊ में ही एक बहुत बड़े संगीतज्ञ हैदरी खां गोलागंज में रहते हैं, तो वह उन का गाना सुनने के लिए बेताब हो उठे. कई बार उन्होंने हैदरी खां को बुलवा भेजा था, किंतु हैदरी खां ने हर बार संदेशवाहक को यह कह कर लौटा दिया था कि वह खुद दरबार में हाजिर हो जाएंगे. लेकिन वह दिन कभी आया नहीं.

लेकिन उस दिन बादशाह जब गोमती के किनारे हवाखोरी कर के लौट रहे थे तब उन के मुसाहिबों ने उन्हें सूचना दी, "हुजूरे आला, हैदरी खां भी यहीं हैं."

बादशाह ने तुरंत कहा, "उन्हें बुलाओ."

बादशाह की बात सुन कर दो मुसाहिब हैदरी खां को बुलाने के लिए दौड़ पड़े. थोड़ी देर बाद वे दोनों हैदरी खां को ले कर बादशाह के हुजूर में पहुंचे.

बादशाह ने बड़ी विनम्रता से कहा, "जनाब खां साहब, आप के गाने की बड़ी तारीफ सुनी है, क्या कभी हमें नहीं सुनाइएगा?"

"क्यों नहीं सुनाऊंगा, मगर मैं आप का दौलतखाना जो जानता," हैदरी खां ने बड़ी मासूमियत से कहा.

बादशाह को हंसी आ गई. हैदरी खां का उत्तर था भी ऐसा ही. हैदरी खां को अपने बादशाह का निवास स्थान कहां नहीं मालूम. लेकिन वह सुन चुके थे कि हैदरी खां अपने में खोएखोए से रहने वाले

बादशाह की बात सुन कर हैदरी खां ने कहा, "हजूर, हो सके तो मुझे फिर कभी गाना सुनाने के लिए न बुलाइएगा."

कलाकार हैं, उन्हें इसी लिए लोग 'सिड़ी हैदरी खां' भी कहते हैं.

बादशाह ने कहा, "अच्छा, आप हमारे साथ चलें. हम खुद ही आप को अपने महल में ले चलेंगे."

"बहुत खूब." कह कर हैदरी खां चलने के लिए तैयार हो गए. इस समय उन के दिमाग में एक ही बात थी कि अब आसानी से वह रजिया और सलीम के लिए खाने की व्यवस्था कर सकेंगे.

छतर मंजिल के करीब पहुंच कर उन्होंने अपने साथ चल रहे बादशाह के मुसाहिबों से कहा, "मैं चल तो रहा हूं, किंतु मेरी कुछ शर्तें भी हैं. वे पूरी होने पर ही गाना गाऊंगा."

"बताइए, आप की क्या शर्तें हैं?"

"मुझे पूरियां और बालाई खिलानी पड़ेंगी. तभी गाऊंगा."

"अरे, यह भी कोई शर्त हुई. जनाब को खास बादशाह के बावरची के हाथ की बनी पूरियां और बालाई खिलाई जाएंगी."

"लेकिन इतने में ही काम नहीं चलेगा. मेरी बेगम और बच्चे के लिए भी ऐसी ही पूरियां और बालाई बनवा कर मेरे घर भेजनी होंगी."

"जनाब, फिक्र न करें. यह सब इंतजाम कर दिया जाएगा."

मुसाहिबों के यह कहने पर वह कुछ बेफिक्र हुए. 'चलो, उन लोगों के आज के खाने की समस्या तो सुलझी. आगे की फिर देखेंगे.' यह सोच कर उन के साथ वह तेजी से चलने लगे.

बादशाह ने उन्हें ले जा कर अपने खास बैठकखाने में बिठाया. बादशाह के कुछ मुसाहिब भी उन का गाना सुनने को

बेताब थे. वे भी वहां आ कर बैठ गए. हैदरी खां ने गाना शुरू किया और इतना अधिक भाव विभोर हो कर गाने लगे कि बादशाह मंत्रमुग्ध हो उठे. गाना खत्म होने पर भी काफी देर तक बादशाह बेसुध से बैठे रहे. थोड़ी देर बाद सेवक से पेचवान मंगा कर तंबाकू पीते हुए उन्होंने हैदरी खां से दोबारा गाने के लिए कहा.

हैदरी खां ने बादशाह की बात पर ध्यान नहीं दिया और पूछा, 'हजूर, यह तंबाकू जो आप के पेचवान में भरा है, बहुत ही अच्छा मालूम पड़ता है. आप किस की दुकान से मंगवाते हैं?"

गाजीउद्दीन हैदर भी कुछ सिड़ी दिमाग थे. हैदरी खां की बात सुन कर नाराज हो गए. वहां उपस्थित मुसाहिबों ने सोचा कि अब शायद हैदरी खां की खैर नहीं. तभी एक होशियार तथा बादशाह के मुंहलगे मुसाहिब ने कहा, "हजूरे आला, यह तो एकदम सिड़ी हैं. अभी तक यह नहीं समझे हैं कि किन से बातें कर रहे हैं."

"ठीक है, इन्हें दूसरे कमरे में ले जाओ," बादशाह ने उस से कहा.

दूसरे कमरे में ले जा कर हैदरी खां को पूरियां तथा बालाई खिलाई गईं. शर्त के अनुसार एक नौकर के हाथ उन की बेगम और बच्चे के लिए भी पूरियां और बालाई भेजी गई.

जब तक हैदरी खां दूसरे कमरे में खाना खाते रहे तब तक बादशाह शराब के जाम पीते रहे. जब बादशाह पूरी तरह नशे में डूब गए तब उन्होंने फिर हैदरी खां का गाना सुनने की फरमाइश की. हैदरी खां पूरियां और बालाई खा कर तृप्त हो चुके थे. अब उन्हें घर की भी चिंता नहीं थी. इस स्थिति में उन से रात भर गाना सुना जा सकता था. बादशाह का हुक्म पा कर उन्होंने फिर गाना शुरू किया.

एक शेर की पंक्तियां ही उन्होंने गाई होंगी कि बादशाह ने उन्हें रोक कर कहा, "हैदरी खां, आज तुम ने गा कर हमें खुश कर दिया. मगर अब गा कर रुलाया नहीं तो याद रखो तुम्हें गोमती में फिकवा दूंगा."

बादशाह की बात सुन कर हैदरी खां सकते में आ गए. अभी तक दरअसल उन्हें इस बात का अंदाज ही न था कि वह किस के सामने बैठे गा रहे हैं. उन्होंने बादशाह को लखनऊ का कोई रईस ही समझ रखा था. अब उन्हें ज्ञात हुआ कि उन के सामने बैठा हुआ और इस प्रकार की धमकी देने वाला व्यक्ति लखनऊ का बादशाह है, तो आतंक से उन का चेहरा पीला पड़ गया. वहां उपस्थित मुसाहिब भी सकते में आ गए. थोड़ी देर बाद अपने को संयत कर हैदरी खां ने कहा, "हजूर, आप का हुक्म बजा लाने के लिए अपनी ओर से पूरी कोशिश करूंगा."

हैदरी खां गाने लगे. गीतों में भरे ओज का असर हुआ. थोड़ी देर बाद ही बादशाह फूटफूट कर रोने लगे. जब बादशाह के आंसू थमे तब खुश हो कर उन्होंने हैदरी खां से कहा, "हैदरी खां, जो जी चाहे मांगो. हमें दे कर खुशी होगी."

हैदरी खां संकुचित हो उठे. सोचने लगे, 'अभी थोड़ी देर पहले यह आदमी मुझे गोमती में फेंक देने की धमकी दे रहा था और अब खुश हो कर मनचाही वस्तु मांगने के लिए कह रहा है.' वह कुछ नहीं बोले, केवल सोचते हुए बैठे रहे.

बादशाह ने पुनः कहा, "क्या सोच रहे हो, हैदरी खां. मांगो, क्या मांगते हो? हिचकिचाने की जरूरत नहीं है. मैं तुम से बहुत खुश हूं."

हैदरी खां ने कहा, "हजूर, जो मांगूंगा दीजिएगा?"

"अरे मियां, मांग कर देखो तो. जब मैं कह रहा हूं, तब क्यों नहीं दूंगा? मांगो, क्या चाहते हो?"

हैदरी खां ने तीन बार बादशाह से कहलवा लिया कि वह जो कुछ भी मांगेंगे बादशाह इनकार नहीं करेंगे. बादशाह के तीनों बार वादा कर लेने पर उन्होंने कहा, "हजूर, मुझे फिर कभी गाना सुनने के लिए न बुलाइएगा. यही मैं आप से मांगता हूं."

हैदरी खां की बात से बादशाह को ताज्जुब हुआ. उन्होंने पूछा, "क्यों, हैदरी खां, यह क्या मांग लिया?"

"हजूर, आप का क्या है? कभी खुश, कभी नाराज. अभी थोड़ी देर पहले आप ने मुझे गोमती में फिंकवा देने की बात कही थी. आप मर जाएंगे तो फौरन कोई दूसरा बादशाह हो जाएगा, पर मैं मर गया तो दूसरा हैदरी खां कहां से आएगा?"

हैदरी खां के इस उत्तर को सुन कर बादशाह फिर नाराज हो गए. उन्होंने हैदरी खां की ओर से मुंह फेर लिया. वहां उपस्थित बादशाह के मुसाहिब फिर एक बार इस आशंका से त्रस्त हो उठे कि कहीं कोई अनर्थ न हो जाए. किंतु बादशाह कुछ नहीं बोले. वह हैदरी खां की ओर से मुंह फेरे बैठे रहे. अपने निकलने का उपयुक्त अवसर जान कर हैदरी खां उठ कर वहां से खिसक लिए. ●
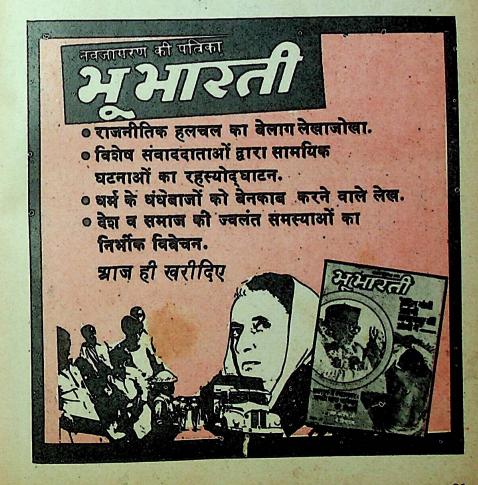
बलात्कार, हत्या, डकैती, तस्करी, जालसाजी, वेश्यावृत्ति, की कहानियां —

क्या आप का सही मानसिक विकास करती हैं?

क्या आप का सही मनोरंजन करती हैं?

क्या आप को सही राह दिखाती हैं?

वे सिर्फ क्षणिक रोमांच देती हैं...

गलत दुनिया में भटकाती हैं...

चरित्रहीनता की ओर ले जाती हैं...

सुरुचिपूर्ण, स्वस्थ मनोरंजन के लिए प्रेरक और उद्देश्यपूर्ण साहित्य पढ़ें.

दिल्ली प्रेस की पत्रिकाएं
ज्योति नए युग की घरघर जगाएं.

अखिल भारतीय राष्ट्रीय महिला कांग्रेस की अध्यक्ष व सांसद

विद्यावती चतुर्वेदी से भेंट

भेंटवार्ता • विवेक सक्सेना

सातवीं लोक सभा में मध्य प्रदेश के खजुराहो चुनाव क्षेत्र से इंदिरा कांग्रेस की उम्मीदवार श्रीमती विद्यावती चतुर्वेदी ने अपने निकटतम प्रतिद्वंद्वी को 50,000 वोटों से हराया था.

एक स्वतंत्रा सेनानी के रूप में श्रीमती विद्यावती चतुर्वेदी कई बार स्वाधीनता संग्राम में भाग लेने के कारण जेल भी जा चुकी हैं.

राजनीति में आने से पहले विद्यावतीजी अध्यापन कार्य करती थीं, मगर अचानक शिक्षण कार्य छोड़ कर राजनीति में आने का निर्णय कैसे और किन हालात में लेना पड़ा?

श्रीमती चतुर्वेदी अखिल भारतीय राष्ट्रीय महिला कांग्रेस की अध्यक्ष हैं. राजनीति में आने से पहले आप छतरपुर के एक स्कूल में मुख्य अध्यापिका थीं.

समाज सेवा में आप की बचपन से ही रुचि थी. आप हरिजन कल्याण संगठन, परिवार नियोजन, सहकारी संस्थाओं व सैनिक कल्याण समितियों में महत्वपूर्ण पदों पर रह चुकी हैं.

श्रीमती विद्यावती चतुर्वेदी विभिन्न ट्रेड यूनियनों से संबद्ध रही हैं. आप राज्य सभा व संसदीय हिंदी सलाहकार समिति की सदस्य के रूप में महत्वपूर्ण भूमिकाएं निभा चुकी हैं.

आप ने आजादी से पहले व बाद की राजनीति को काफी करीब से देखा है. आप राजनीति में उस समय थीं जब हमारे समाज में महिलाओं के घर से अकेले बाहर निकलने पर भी रोक थी.

यहां आप से देश व महिलाओं की सामयिक समस्याओं पर ली गई भेंट-वार्ता दी जा रही है. काफी अस्वस्थ होने के बावजूद श्रीमती चतुर्वेदी ने इस भेंट-वार्ता के लिए समय दिया और सभी प्रश्नों का बिना किसी हिचकिचाहट के जवाब दिया.

श्रीमती चतुर्वेदी से सवालजवाब

प्रश्न : अखिल भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस महिला इकाई का संगठन में क्या महत्त्व है और वह कितनी पुरानी है?

उत्तर : यह इकाई युवक कांग्रेस की ही तरह अखिल भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस का एक महत्वपूर्ण अंग है. सभी कांग्रेसी महिलाएं, भले ही वे एक आम कार्यकर्ता हों अथवा प्रधान मंत्री, इस की सदस्य हैं. इस की स्थापना भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की स्थापना के समय ही हुई थी. श्रीमती इंदिरा गांधी व श्रीमती मुकुल बनर्जी भी इस की अध्यक्ष रह चुकी हैं.

प्रश्न : यह एक राजनीतिक संस्था है. क्या आप लोग अपने दल के अलावा समाज के लिए भी कुछ काम करती हैं?

उत्तर : क्यों नहीं? राजनीति में आने का मुख्य उद्देश्य ही समाज सेवा है. लोगों की समस्याओं का पता लगाना और उन्हें दूर करने के प्रयत्न करना ही हमारा मुख्य काम है.

प्रश्न : राजनीति में आने से पहले आप मुख्य अध्यापिका थीं. अचानक शिक्षण कार्य छोड़ कर आप ने राजनीति में आने का निर्णय कैसे ले लिया?

उत्तर : राजनीति में प्रवेश करने से पहले मैं अध्यापिका थी. उस समय देश गुलाम था. यह 1940 की बात है. मेरी शादी एक ऐसे परिवार में हुई थी जहां सभी लोग सक्रिय रूप से राजनीति में भाग लेते थे. मेरे पति, ननद, सास, ससुर आदि सक्रिय कार्यकर्ता थे. वे कई बार जेल भी जा चुके थे. इसलिए ऐसे माहौल में रहते हुए मैं राजनीति से कैसे अछूती रह सकती थी? मैं ने भी स्वतंत्रता संग्राम में हिस्सा लिया और जेल गई.

प्रश्न : महिला होने के नाते क्या आप यह महसूस करती हैं कि महिला उम्मीदवारों को चुनाव अभियान में किसी खास परेशानी का सामना करना पड़ता है?

उत्तर : बिलकुल नही. यह परेशानी उन उम्मीदवारों को हो सकती है जिन्हें महिला होने के कारण टिकट मिलता है. पर जिन्हें कार्यकर्ता की हैसियत से टिकट दिया जाता है उन्हें किसी तरह की परेशानी का सामना नहीं करना पड़ता.

प्रश्न : महिलाओं का राजनीति में आना कहां तक उचित है? क्या उन की अपने परिवार के प्रति कुछ जिम्मेदारी नहीं है? क्या महिलाओं के राजनीति में भाग लेने से परिवार उपेक्षित नहीं हो जाते हैं?

उत्तर : देखिए, यह इस बात पर निर्भर करता है कि कोई महिला किस तरह के परिवार से आई है. अगर वह मध्यम वर्ग की महिला है तो परिवार पर

निश्चित ही इस का बुरा असर पड़ेगा. बच्चे खुद को उपेक्षित महसूस करेंगे व वह महिला पत्नी या मां के कर्त्तव्यों का पालन नहीं कर सकेगी.

अगर वह महिला उच्च वर्ग की है, उस के परिवार की आर्थिक स्थिति सुदृढ़ है तो मेरे विचार में उस के राजनीति में भाग लेने से परिवार पर कोई खास फर्क नहीं पड़ता.

प्रश्न : आप ने आजादी से पहले और बाद में दोनों ही स्थितियों को काफी करीब से देखा है. तब और अब की राजनीति में आप किसी तरह का अंतर पाती हैं?

उत्तर : जी हां, बहुत बड़ा अंतर आ गया है. पहले हम त्याग व सिद्धांतों की लड़ाई लड़ते थे, जब कि आज राजनीति में स्वार्थों की लड़ाई चल रही है. कुरसी व सत्ता के लिए संघर्ष चलता है और इस को पाने में आदमी बहुत ही नीचे गिर सकता है.

आज एक ही दल के सदस्यों में प्यार, अनुशासन नहीं रह गया है. सब एक-दूसरे को नीचा दिखाने पर तुले हुए हैं. अब मैं इस से ज्यादा क्या कह सकती हूं? बस, चुपचाप देखते रहना पड़ता है.

सांसद विद्यावती चतुर्वेदी : राजनीतिक क्षेत्र में रहते क्या पारिवारिक दायित्व आड़े नहीं आते?

प्रश्न : क्या पुरुष वर्ग महिलाओं को राजनीति में आगे आने के लिए अपेक्षित सहयोग प्रदान करता है. क्या उन के सहयोग के बिना सक्रिय राजनीति में प्रवेश असंभव है?

उत्तर : महिलाओं के लिए राजनीति में पुरुषों या अपने भाइयों के सहयोग के बिना आगे बढ़ पाना असंभव तो नहीं है, पर कुछ कठिन अवश्य है. जहां शराब के

ठेकों पर प्रदर्शन करना होता है या ऐसे कुछ कठिन काम करने होते हैं, वहां महिलाओं को आगे कर दिया जाता है. पर जब उन के सहयोग की बात आती है तो वे उतना सहयोग नहीं करते जितना कि उन्हें करना चाहिए.

पारिवारिक उत्तरदायित्व

प्रश्न : आप अपने परिवार को कितना समय दे पाती हैं?

उत्तर : मेरे तीन बच्चे हैं. बड़ा बेटा विधायक है, छोटा बेटा व बेटी पढ़ रहे हैं. यह तो आप को पता ही है कि मेरे पति अब नहीं रहे. पहले जब बच्चे छोटे थे तब उन को मेरी ज्यादा जरूरत रहती थी. उस समय मैं अपने परिवार को ज्यादा समय नहीं दे पाती थी.

पर अब ऐसी बात नहीं है. बच्चे अपनी पढ़ाई में व्यस्त रहते है. जितना समय उन को चाहिए वह उन्हें मिल जाता है.

प्रश्न : इंदिरा गांधी के संपर्क में आप कब आईं?

उत्तर : जब मैं राजनीति में आई तभी से मेरा उन से संपर्क रहा है.

प्रश्न : आप ने उन के व्यक्तित्व के बारे में क्या कोई खास चीज महसूस की है?

उत्तर : हां, वह सहज ही हर व्यक्ति को आकृष्ट कर लेती हैं. उन का व्यक्तित्व बहुत ही प्रभावशाली है.

प्रश्न : क्या आप ऐसा महसूस करती हैं कि 1977 के चुनावों में हार जाने के बाद उन के अंदर कोई परिवर्तन आया था?

उत्तर : हां, उन के आत्मविश्वास में बढ़ोतरी हुई और यह बात पिछले चुनावों में सामने आ गई.

प्रश्न : वर्तमान लोक सभा व राज्य सभा में महिला प्रतिनिधियों की संख्या काफी कम है. क्या आप लोग महिलाओं का ठीक तरह से प्रतिनिधित्व करने में सफल हो सकेंगी?

उत्तर : अपनी सही बात रखने या उन्हें मनवाने के लिए महिलाओं की संख्या कम या ज्यादा होने से कोई फर्क नहीं पड़ता. देखना यह चाहिए कि जो महिला प्रतिनिधि सदन में हैं वे महिलाओं की समस्याओं के समाधान में गहरी दिलचस्पी ले रही हैं या नहीं. उन को आगे लाने के लिए वे सही ढंग से काम करती हैं या नहीं.

मुझे पूरा विश्वास है कि सदन में जितनी भी महिला सांसद हैं वे सब योग्य हैं और महिलाओं का प्रतिनिधित्व उचित तरीके से कर रही हैं.

महिलाओं का योगदान

प्रश्न : बढ़ते मूल्यों, कालाबाजारी, जमाखोरी आदि को रोकने में महिलाएं कहां तक अपना योगदान दे सकती हैं?

उत्तर : इस में महिलाएं बहुत बड़ा योगदान दे सकती हैं. वे ऐसे लोगों को पकड़ने व उन के खिलाफ जेहाद छेड़ने में महत्वपूर्ण भूमिका अदा कर सकती हैं. बहुत सारे महिला संगठन इस काम में लगे भी हुए हैं.

प्रश्न : माफ कीजिएगा, इन संगठनों द्वारा महत्वपूर्ण भूमिका अदा करने के बावजूद भी कोई ठोस काम नहीं हो पाया है. इन की काररवाई मात्र प्रदर्शन या नारेबाजी तक ही सीमित रह गई. ऐसा क्यों?

उत्तर : जब तक इन संगठनों के पास कुछ अधिकार नही होंगे, तब तक वे कुछ भी ठोस काम नहीं कर सकेंगे. मेरे विचार से ऐसे समाजसेवी महिला संगठनों को सरकार द्वारा प्रशासनिक अधिकार दिए जाने चाहिए.

इस का फायदा यह होगा कि ये संगठन कालाबाजारी, जमाखोरी आदि करने वाले समाजविरोधी तत्वों के खिलाफ काररवाई कर सकेंगे और कानूनी काररवाई में बरबाद होने वाले समय

जितनी भी महिला सांसद हैं वे सब योग्य हैं और महिलाओं का प्रतिनिधित्व उचित तरीके से कर रही हैं.
—विद्यावती चतुर्वेदी

को बचाया जा सकेगा. इस से ये संगठन काफी प्रभावी भूमिका अदा कर सकेंगे.

ट्रेड यूनियनों का औचित्य

प्रश्न : आप ट्रेड यूनियनों से भी काफी समय तक जुड़ी रही हैं. क्या यह बात सही नहीं है कि श्रमिक संगठन जितने अधिक शक्तिशाली होते हैं, उत्पादन पर उतना ही अधिक बुरा असर पड़ता है.

उत्तर : मैं सातआठ साल तक दिल्ली विकास प्राधिकरण व अन्य बोर्डों की यूनियनों से संबद्ध रही हूं. हर श्रमिक संगठन में कुछ न कुछ ऐसे तत्व होते हैं जो मजदूरों को गुमराह कर के प्रबंधकों को ब्लैकमेल करते हैं और अपना उल्लू सीधा करते हैं.

इस से उत्पादन पर असर पड़ना स्वाभाविक है. जब कि ट्रेड यूनियनों को प्रबंधकों के साथ सहयोग कर के उत्पादन बढ़ाने में अपना योगदान देना चाहिए. उन्हें यह सोचना चाहिए कि उन की तरक्की तभी होगी जब उत्पादन बढ़ेगा व संस्था को आर्थिक लाभ पहुंचेगा.

विदेशियों की तुलना में भारतीय

प्रश्न : आप ने बहुत से देशों की यात्रा की है. वहां के कर्मचारियों व अपने देश के कर्मचारियों में आप कितना अंतर पाती हैं?

उत्तर : हमारे देश में अनुशासन व समय की कीमत नाम की कोई चीज नहीं है. एक चपरासी से ले कर प्रशासनिक अधिकारी तक अपने समय की कीमत न समझ कर उसे बेकार के कामों में बरबाद कर देते हैं.

मैं आप को कोरिया का एक छोटा सा उदाहरण दूंगी. हम लोग वहां एक कारखाने का निरीक्षण करने के लिए गए थे. आप को यह जान कर आश्चर्य होगा कि वहां श्रमिक अपने काम में इतना अधिक व्यस्त था कि किसी ने सिर उठा कर भी हम को नहीं देखा, जब कि हमारे देश में शायद ही कोई सरकारी कर्मचारी आप को अपनी कुरसी पर मिले. जितना भ्रष्टाचार हमारे देश में व्याप्त है, वह शायद ही कहीं और देखने को मिले.

प्रश्न : आप का सहकारी संस्थाओं से भी काफी समय तक संबंध रहा है. भारत में सहकारिता आंदोलन अभी तक सफल क्यों नहीं हो पाया है?

उत्तर : जब तक सहकारी संस्थाएं पूरी तौर पर सरकार पर निर्भर रहेंगी, तब तक यह आंदोलन इस देश में सफल नहीं हो पाएगा.

इन संस्थाओं को चलाने वाले लोग आज आपसी टकराव में ज्यादा व्यस्त हैं. उन का नैतिक पतन हो गया है, भ्रष्टाचार बढ़ा है. ऐसी स्थिति में यह उम्मीद कैसे की जा सकती है कि अपने इस देश में यह आंदोलन सफल हो सकेगा? ●

इस स्तंभ के लिए अपने रोचक संस्मरण भेजिए. उन्हें आप के नाम के साथ प्रकाशित किया जाएगा और प्रत्येक प्रकाशित संस्मरण पर 15 रुपए एवं सर्वश्रेष्ठ पर 50 रुपए की पुस्तकें पुरस्कार में दी जाएंगी. संस्मरण के साथ अपना नाम व पूरा पता अवश्य लिखें :
भेजने का पता : ये शिक्षक, मुक्ता, रानी झांसी रोड, नई दिल्ली-110055.

○ हमारे महाविद्यालय में एक नएनए प्रोफेसर आए थे, जिन को लड़के बहुत तंग किया करते थे. हमारी कक्षा में भी एक लड़का काफी शैतान था और आए दिन कोई न कोई हरकत किया करता था.

एक दिन उस ने प्रोफ़ेसर साहब के आने से पहले एक चिट पर 'महामूर्ख' लिख कर उसे मेज पर रख दिया,

प्रोफेसर साहब आए तो उन का ध्यान उस चिट पर पड़ा. थोड़ी देर वह उसे देखते रहे, फिर मुसकरा कर बोले, "कोई अपना विजिटिंग कार्ड यहां छोड़ गया है. जिस का भी हो ले जाए."

कक्षा में सभी हंसने लगे और वह लड़का सिर झुका कर बैठ गया.

—रामगोपाल जोशी (सर्वश्रेष्ठ)

हमारे हिंदी के एक अध्यापक बहुत ही सीधे थे. उन में एक आदत थी कि वह पढ़ातेपढ़ाते भाषण देने लग जाते थे. एक दिन वह बोले, "जिस दिन बाप का जूता बेटे के पांव में आने लगे उस दिन से बेटा बेटा नहीं रहता, छोटा भाई बन जाता है."

इस पर एक छात्र ने पूछा, "यदि बाप का जूता बेटे के पैर में छोटा पड़ जाए, तब?"

इस बात का उन शिक्षक महोदय के पास कोई उत्तर नहीं था. अत: उन्होंने पढ़ना शुरू किया और कहने लगे, "हम अपने विषय से काफी दूर चले गए हैं."

—असितोषकुमार जैन

हमारे कालिज में एक बार 'निशांत' फिल्म दिखाई गई. कई छात्रों को यह फिल्म पसंद नहीं आई. लड़के सांस्कृतिक समिति के अध्यक्ष को उलाहना देने लगे. इस पर एक प्रोफ़ेसर महोदय 'निशांत' की तारीफ करते हुए बोले, "पता है, इस फिल्म को 1945 में राष्ट्रपति पुरस्कार मिला था."

इस पर हमारा एक साथी मुसकरा कर बोला, "श्रीमान, 1945 में तो अपना देश गुलाम होने के कारण कोई राष्ट्रपति ही नहीं था."

उस का इतना कहना था कि पूरा हाल ठहाकों से गूंज उठा और प्रोफेसर महोदय खिसिया कर चलते बने.

—सीताराम शर्मा

आठवीं कक्षा के हम सब लड़के गणित विषय को बहुत कठिन समझते थे. एक दिन शिक्षक महोदय ने पूछा, "कौनकौन से लड़के सवाल हल कर के नहीं लाए हैं?"

लगभग सभी लड़के खड़े हो गए. शिक्षक ने उन की ओर गुस्से से देखा और कहा, "जो कल सवाल हल कर के नहीं लाएंगे, वे मेरे पीरियड में नहीं बैठेंगे."

अगले दिन शिक्षक महोदय गणित की क्लास लेने पहुंचे तो क्लास में एक भी लड़का नहीं था. यह देख कर वह वापस दफ्तर में चले गए. प्रधानाध्यापक ने उन से पूछा, "क्यों, क्या आप क्लास नहीं ले रहे हैं?"

शिक्षक महोदय सिर झुका कर चुप्पी साध गए. बाद में प्रधानाध्यापक को पूरा हाल पता चला तो उन्होंने शिक्षक एवं लड़कों को समझाया और क्लास पूर्ववत चलने लगी.

—दिलीपकुमार चंद्राकर

अपने महाविद्यालय के एक शिक्षक से मैं ने एक दिन अर्थशास्त्र की पुस्तक मांगी, जो मेज पर रखी थी. उन्होंने बड़े प्यार से कहा, "मुझे अभी इस में से कुछ पढ़ना है. तुम मुझ से यह आठदस दिन बाद ले लेना."

दूसरे दिन अचानक मैं अपनी ही कक्षा की एक लड़की के घर गया तो मेरे आश्चर्य का ठिकाना न रहा क्योंकि वही पुस्तक जो मैं ने मास्टरजी से मांगी थी, उस की मेज पर रखी थी और उस पर मास्टरजी का नाम लिखा था. —अजीत अरोरा

हमारे विद्यालय के एक शिक्षक की बहुत बुरी आदत थी कि वह छात्राओं को हमेशा 'औरत' कह कर संबोधित किया करते थे. जैसे 'औरतें चुप रहें.' 'अब औरतें बताएंगी,' 'उस औरत को बुला लो' आदि. यह बड़ा ही अटपटा सा लगता था.

कुछ दिनों बाद जब वह एक पुत्री के पिता बने तो शिष्टाचारवश हम ने उन से कहा, "बधाई हो, मास्टरजी."

वह पहले तो मुसकराए, फिर अनजान बनते हुए उन्होंने पूछा, "किस लिए?"

"आप के घर औरत पैदा हुई है इसलिए, मास्टरजी," हम ने तपाक से उत्तर दिया.

—सरिता मंगतानी

एक दिन हमारी क्लास में कुछ लड़के काम कर के नहीं लाए तो शिक्षक ने उन्हें मुर्गा बन जाने को कहा. लड़के मुर्गा बन गए.

कुछ देर बाद एक लड़का उन के पास गया और बोला, "मास्टरजी, टांगें दर्द कर रही हैं."

इस पर शिक्षक महोदय गुस्से से बोले, "चुपचाप मुर्गा बन जा. हम तो पांच-पांच घंटे मुर्गा बनते थे."

—राजेश वर्मा

हमारे गणित के प्रोफेसर की एक अजीब आदत थी. वह प्रायः ब्लैक बोर्ड पर गणित हल करतेकरते बड़ी तेजी से चारपांच कदम दीवार के सहारे पीछे हटते जाते थे और हल याद आने पर पुनः तेजी से चल कर ब्लैक बोर्ड पर सवाल समझाने लगते थे. उन की इस हरकत का हम छात्र बहुत मजा लेते थे.

एक दिन ऐसे ही वह एक गणित का हल नहीं ढूंढ़ पाने के कारण बारबार आगेपीछे हो रहे थे. परंतु उन्हें हल समझ में नहीं आ रहा था. अचानक वह गुस्से में इतना पीछे हट गए कि कक्षा के प्रवेशद्वार से जा टकराए और बौखलाहट में दरवाजे को पकड़ कर कह उठे, "आई एम वेरीवेरी सारी" (मुझे बहुत अफसोस है).

शायद वह दरवाजे को कोई छात्र समझ बैठे थे. उन का इतना कहना था कि सारी कक्षा ठहाकों से गूंज उठी.

—अनूप वर्मा ●

अक्तूबर, 1980 का वह एक व्यस्त दिन था. पूर्वी अफगानिस्तान के एक छोटे से कसबे रोस्ताक (तोखार) में शुक्रवार बाजार लगा हुआ था. आसपास के गांवों से लोग इसी दिन बाजार आते थे

अफगानिस्तान में जबरन सैनिक भरती

लेख • रमेश भटनागर

अफगानिस्तान का राष्ट्रपति बनते ही बबरक करमाल ने सैनिकीकरण का व्यापक कार्यक्रम बनाया था. क्या इसी के तहत आज अफगानी और रूसी सेनाएं 13 वर्ष से ऊपर के किशोरों को जबरन सेना में भरती करने पर नहीं तुली हुई हैं?

बबरक करमाल : पढ़ाई के साथसाथ सैनिक प्रशिक्षण का क्या औचित्य है?

रोजमर्रा के काम आने वाली चीजें खरीद कर ले जाते हैं. गांवों में सभी आवश्यक वस्तुएं सुलभ नहीं होतीं, इसलिए सप्ताह भर का इकट्ठा सामान खरीदने, कुछ घूमने-फिरने एवं मनोरंजन करने के उद्देश्य से भी ग्रामीण परिवारों के सभी सदस्य साप्ताहिक बाजार में आ जाते हैं. सो वह भीडभाड़ का दिन था.

दोपहर तक बाजार में काफी लोग आ चुके थे और खरीदफरोख्त करने तथा अन्य कामों में व्यस्त हो गए थे. तभी रूसी और अफगान सैनिकों की टुकड़ियों ने बाजार को घेर लिया और 13 वर्ष की आयु से ऊपर लड़कों व युवकों को पकड़ कर ले जाने लगे. जिन लड़कों या युवकों ने चलने में आनाकानी की, उन्हें बंदूक के कुंदों से धकेला गया और संगीनें चुभाई गईं. इस तरह किशोरों और तरुणों को जबरदस्ती ले जाने के बाद बाजार में मौत का सा सन्नाटा छा गया.

इन लोगों को रोस्ताक से 1,125 किलोमीटर दूर कांधार हवाई अड्डे के पास की एक सैनिक छावनी में ले जाया गया और वहां रूसी सैनिक अधिकारियों की देखरेख में सैनिक प्रशिक्षण के लिए बाध्य किया गया. अफगानिस्तान में इस तरह की घटनाएं आम हो गई हैं. अफगानिस्तान की सेनाओं में भरती होने के लिए 22 वर्ष की आयु होना आवश्यक रहा है. हाल ही में इसे घटा कर 20 वर्ष किया गया परंतु इस तरह बंदूक की नोंक पर सेना में भरती करने के लिए आयु का कोई बंधन नहीं है. स्वस्थ और हृष्टपुष्ट किशोरों को भी सैनिक प्रशिक्षण के लिए बाध्य किया जाने लगा है.

गत वर्ष 4 अगस्त को अफगानिस्तान के राष्ट्रपति बबरक करमाल ने उन शिक्षकों को सेना में भरती होने का आदेश दिया, जिन्होंने अभी अपनी सेवा के छः वर्ष पूरे नहीं किए हैं. इस निर्णय के अनुसार अप्रैल, 1978 के बाद शिक्षक नियुक्त हुए करीब 48,000 शिक्षक तो तुरंत अध्यापक से सैनिक बन गए. मार्च, 1980 में बबरक करमाल के राष्ट्रपति बनते ही अफगानिस्तान के सैनिकीकरण का व्यापक कार्यक्रम बनाया गया था, इस कार्यक्रम के तहत 21 वर्ष की आयु वाले युवकों को सैनिक प्रशिक्षण देने के साथसाथ कालिज में पढ़ने वाले छात्रों के लिए, न्यूनतम एक वर्ष तक सेना में काम करना अनिवार्य घोषित कर दिया गया. इस सैनिकीकरण का उद्देश्य कम्यूनिस्ट क्रांति की रक्षा करना और उसे आगे बढ़ाना बताया गया था.

उल्लेखनीय है कि इस से तीन महीने पहले ही रूस ने अफगानिस्तान में सैनिक हस्तक्षेप किया था. यों अफगानिस्तान में तथाकथित कम्यूनिस्ट क्रांति अप्रैल, 1978 में

ही हो चुकी थी, जब नूर मुहम्मद तराकी ने सेना की सहायता से मुहम्मद दाऊद को अपदस्थ कर सत्ता संभाली थी. यह परिवर्तन कम्यूनिस्टों के प्रमुख तीर्थ मास्को के इशारे और सहयोग से हुआ था. रूसी नेताओं ने अधिक वफादार को प्रमुखता देने की नीति के तहत तराकी को हटवाया और हफीजुल्ला अमीन को सितंबर, 1979 में राष्ट्रपति बनवाया. चार महीने भी नहीं बीते थे कि अमीन के स्थान पर बबरक करमाल के राष्ट्रपति बनते ही 25,000 रूसी सैनिक टैंकों, बख्तरबंद गाड़ियों और आधुनिक शस्त्रास्त्रों से लैस हो कर कम्यूनिस्ट विरोधियों को कुचलने के लिए अफगानिस्तान की सीमाओं में घुस गए. कहा यह गया कि अफगानिस्तान में जनविरोधी शक्तियां सिर उठा रही हैं. उन से उत्पन्न खतरे का सामना करने के लिए रूस ने पड़ोसी देश होने के नाते अपनी सेनाएं भेजी हैं.

देशभक्त नागरिक उत्तेजित

करमाल और उन की सरकार की दमनकारी नीतियों तथा रूसी हस्तक्षेप से देशभक्त नागरिकों का उत्तेजित हो उठना स्वाभाविक था. इस विरोध को दबाने के लिए रूसी सेनाओं की संख्या निरंतर बढ़ती गई. कुछ ही दिनों में अफगानिस्तान के भीतर 85,000 सैनिक, 1,000 टैंक, बड़ी संख्या में लड़ाकू विमान और मिग लड़ाकू विमान रूस से अफगानिस्तान पहुंच गए. 1 करोड़ 75 लाख की आबादी वाले इस छोटे से देश में, आधुनिक शस्त्रों से लैस सैनिकों की इतनी बड़ी संख्या में 'उपस्थिति' इस बात का द्योतक थी कि दमन की कितनी व्यापक योजना रही है.

कई देशों ने रूसी हस्तक्षेप का विरोध किया. संयुक्त राष्ट्रसंघ में भी यह प्रश्न उठाया गया और अफगानिस्तान से रूसी सेनाओं को हटाने की मांग की गई. परंतु रूसी नेताओं के कान पर जूं तक नहीं रेंग रही है. लगता है वे अफगानिस्तान को कम्यूनिस्ट उपनिवेश बनाने की कसम [illegible] चुके हैं. जब भी अफगानिस्तान से [illegible] वापसी का प्रश्न उठाया जाता है, [illegible] नेता यह कह कर बात टाल जाते [illegible] स्थिति शांत होते ही रूसी सेनाएं वापस [illegible] ली जाएंगी. कम्यूनिस्ट शब्दावली में 'स्थि[illegible] शांत होने' का अर्थ कम्यूनिस्ट विरो[illegible] का पूरी तरह सफाया, कम्यूनिस्ट [illegible] की कभी न छूटने वाली पकड़ हो जाना [illegible] इस के लिए लोगों का चाहे जितना उत्पी[illegible] करना पड़े, किया जाता है और भविष्य [illegible] विरोध की संभावना को पूरी तरह नष्ट [illegible] देने का उपक्रम चलता है.

अफगान जनता का मनोबल

किंतु बुरी तरह से दबाए और उत्पी[illegible] किए जाने के बाद भी अफगान जनता [illegible] मनोबल टूटा नहीं है. आए दिन वहां [illegible] अधिकारियों और जनता के बीच संघर्ष [illegible] रहता है. करमाल, उन के सहयोगी तथा [illegible] नेता उन लोगों को देशद्रोही कहते हैं [illegible] ये लोग अपने देश को सोवियत सेनाओं [illegible] चंगुल से मुक्त कराने के लिए छापा[illegible] लड़ाई सीख रहे हैं, तथा छुटपुट आक्र[illegible] करते रहते हैं. जुलाई, 1980 में ही अफ[illegible] छापामारों ने सात उच्च अधिकारियों [illegible] 360 रूसी सैनिकों पर आक्रमण कर [illegible] मार दिया था.

संभव है इस तरह के उपद्रवों को [illegible] और एकछत्र कम्यूनिस्ट शासन या रूस [illegible] पिछलग्गू सरकार को मजबूत बनाने के [illegible] सैनिकीकरण की योजना बनाई गई [illegible] किसी भी देश में कम्यूनिस्टों के हाथ [illegible] सत्ता आते ही सर्वप्रथम कम्यूनिस्ट विचा[illegible] धारा के विरोधियों और बुद्धिजीवियों [illegible] दमन किया जाता है. दाऊद का पतन [illegible] और तराकी के सत्ता में आने के तुरंत [illegible] ही यह प्रक्रिया अफगानिस्तान में भी [illegible] हो गई थी. तराकी के बाद अमीन [illegible] अमीन के बाद करमाल के शासन में [illegible] प्रक्रिया निरंतर तीव्र होती गई. धीरे[illegible] अफगानिस्तान के प्रत्येक गांव में सै[illegible]

काबुल में गश्त लगाते रूसी सैनिक : बच्चों को घेरबटोर कर सेना में भरने की तजवीज भी क्या रूसियों की ही देन नहीं है?

नियंत्रण स्थापित किया जाने लगा.

शहरों में बड़े पैमाने पर गिरफ्तारियां करने और विरोधियों को कुचलने व उन की हत्या करने का सिलसिला चल पड़ा है. सरकार की स्थिति यह है कि सेना व अन्य प्रशासनिक सेवाओं में कार्य कर रहे किसी भी व्यक्ति की निष्ठा पर मामूली सा संदेह होता है तो उसे पद से ही नहीं, जीवन से भी मुक्त कर दिया जाता है. करमाल के सत्ता में आने के बाद इस प्रकार हजारों व्यक्तियों को हटाया गया या मार दिया गया. कम्यूनिज्म से असहमति रखने वाले बुद्धिजीवियों को भी रास्ते से हटाने के लिए योजनाबद्ध प्रयास किए जा रहे हैं.

संशय और आतंक का वातावरण

पूरे देश में संशय और आतंक का एक विचित्र सा वातावरण फैला हुआ है. पता नहीं कब किस को कम्यूनिस्ट विरोधी मान लिया जाए या किस का कौन सा व्यवहार अधिकारियों को गैर कम्यूनिस्ट होने का आभास दे दे. इसलिए हर ओर श्मसान का सा सन्नाटा छाया हुआ है. सेना में खास तौर से कड़ी निगरानी रखी जा रही है और जरा भी संदेह होते ही सैनिक अधिकारियों को सेवा मुक्त किया जा रहा है. पिछले दिनों इतने अधिक सैनिक अधिकारियों को हटाया गया कि संख्या की दृष्टि से अफगानिस्तान के पास नगण्य सेना रह गई. हजारों सैनिक और सेनाधिकारी हटा दिए गए. उन के कारण रिक्त हुए स्थानों को भरने के लिए अनिवार्य भरती योजना चलाई गई, जिस का प्रथम लक्ष्य अध्यापक ही बनाए गए.

छः वर्ष से कम अवधि तक शिक्षा सेवा में रहे अध्यापकों को सेना में भरती होने का आदेश जारी करने का मुख्य कारण यह है कि पिछले छः वर्षों में अफगानिस्तान के भीतर कम्यूनिज्म का तेजी से प्रचार हुआ है. कम्यूनिस्ट सरकार बनने से पहले तक

अफगानिस्तान में मुल्लामौलवियों का शासन था. लोगों को उन के बताए नियमों का कड़ाई से पालन करना पड़ता था. इन पाबंदियों और कड़ाइयों से युवक मुल्लामौलवियों को घृणा की दृष्टि से देखने लगे और कम्यूनिज्म के प्रचार से आकर्षित हुए. सो करमाल प्रशासन का यह सोचना अपने आप में ठीक ही था कि युवा शिक्षक एक ओर तो सैनिक का काम भी करेंगे तथा दूसरी ओर नई पीढ़ी को कम्यूनिस्ट संस्कारों से दीक्षित करेंगे.

कम्यूनिज्म का जादू टूटा

गत वर्ष 4 अगस्त को घोषित किए गए इस आदेश के अपेक्षित परिणाम नहीं निकले. जो युवक कम्यूनिस्ट विचारधारा से प्रभावित रहे थे, इस घोषणा के होते ही उन के सिर से कम्यूनिज्म का जादू दूर हो गया. इसी कारण प्रलोभन दे कर अथवा जोरजबरदस्ती से युवकों को सेना में भरती करने का अभियान शुरू किया गया.

नई उम्र के लड़कों को आरंभ से ही कम्यूनिस्ट ढांचे में ढालने के लिए 12-13 वर्ष के बच्चों को सैनिक शिक्षण दिया जा रहा है. इस के लिए जो मातापिता आनाकानी करते हैं, उन्हें डरायाधमकाया जाता है. रूसी और अफगान सैनिकों की टुकड़ियां अचानक किसी भी गांव में पहुंच जाती हैं और गांव को घेर लेती हैं. अचानक इस लिए पहुंचती हैं कि पूर्व सूचना होने पर मांबाप द्वारा बच्चों को उस गांव से हटा देने या अन्यत्र कहीं छिपा देने की संभावना रहती है. गांव को घेर लेने के बाद तलाशी होती है घरों की और बड़ी सख्ती से पूछताछ की जाती है कि घर में कितने बच्चे हैं, कितनी उम्र के हैं. पड़ोसियों से भी पूछताछ की जाती है कि उन का पड़ोसी जो कह रहा है वह सही है या गलत.

इस खोजबीन में 12-13 वर्ष के जितने भी बच्चे ढूंढ़ लिए जाते हैं उन्हें अज्ञात स्थान पर ले जाया जाता है. मातापिता को भी यह पता नहीं रहता कि उन्हें कहां रखा जा रहा है. ममता के वशीभूत हो कोई मां पूछ भी बैठती है कि हम बच्चे को कब पा सकेंगे तो जवाब में मि हैं भद्दी गालियां और बंदूक का डर. बार मां को या पिता को इस तरह के पूछने के लिए मार तक खानी पड़ती

कैंप से भागे लड़कों की दशा

जबरदस्ती ले जाए गए इन ब को सोवियत अधिकारियों की देखरे प्रशिक्षित किया जाता है. इस तरह एक प्रशिक्षण केंद्र कांधार के पास जिस के बारे में किसी तरह भाग कर निकले दो बच्चों ने बताया... कांधार पास स्थित प्रशिक्षण केंद्र में, सोवि सैनिकों की कड़ी निगरानी में सलाहकारों की देखरेख में सैनिक प्रश कराया जाता है.

मुहम्मद रुस्तम और मुहम्मद एहस नामक दो लड़कों ने, जिन्होंने वहां भाग निकलने में सफलता प्राप्त बताया कि उन्हें पहले एक महीने तक कड़ी निगरानी में रखा गया. वे अप मर्जी से टहल भी नहीं सकते थे. दिन एक बार खाने को दिया जाता था उसी के साथ पानी मिलता था. इस बाद न कुछ खाने को मिलता और न पानी. महीने भर बाद एक हेलीकाप्टर उन्हें दूसरी जगह ले जाया गया और दिन तक एक जेल में बंद रखा ग वहां दूसरे स्थानों से लाए गए अन्य ल भी थे.

दो दिन बाद 70 लोगों के स उन्हें हवाई जहाज से कांधार के पास ए सैनिक शिविर में छोड़ दिया गया. व 20 दिन तक उन्हें कवायद करना सिखा गया, प्रतिदिन एक रूसी अधिकारी उ की कवायद देखने आता. फिर उन्हें ए खाली बंदूक दी गई और उस का प्रयो करना सिखाया गया.

वहां के कठोर और कैदी जीवन से तंग आ कर रुस्तम और एहसान भाग

अफगानी बच्चों के हाथों में बंदूकें : आखिर सरकार का इरादा क्या है?

की योजना बनाने लगे. लंबे समय तक निगाह बचा कर निकलने का इंतजार करते हुए जनवरी में उन्हें बच कर भाग निकलने में सफलता मिली और वे किसी प्रकार छिपतेछिपाते पेशावर पहुंच गए.

अकेले कांधार में ही विभिन्न स्थानों से लाए गए लड़कों को 70 ग्रुपों में बांट कर सैनिक प्रशिक्षण दिया जा रहा है. बच्चे इतने डरेदबे रहते हैं कि रुस्तम और एहसान की तरह कोई भी वहां से निकल भागने की कल्पना तक नहीं करता. कहना नहीं होगा कि कैंपों में बच्चों और किशोरों को जबरन सैनिक बनाने के लिए उत्पीड़न व यातनाओं के प्रचलित तमाम कम्यूनिस्टी तरीके अपनाए जाते हैं.

कम्यूनिस्ट देशों में लोगों की और खास तौर से किशोरों की अलग सेना बनाने का प्रचलन है. इन किशोर सैनिकों की फौज 'लाल सेना' कही जाती है. अफगानिस्तान में कम्यूनिस्ट विरोधियों का दमन करने, मार डालने का अभियान चलाए जाने के साथ वहां के लोगों को जोरजबरदस्ती से कम्यूनिज्म के नाम पर रूस का गुलाम बनाने की साजिश चल पड़ी है क्योंकि सब कुछ तो रूसी अधिकारियों की देखरेख में हो रहा है. वहां से रूस तब तक अपनी सेनाएं नहीं हटाएगा, जब तक रूसी नेताओं को यह विश्वास नहीं हो जाएगा कि वहां का बच्चाबच्चा अघोषित रूप से उन का गुलाम हो चुका है. आसार तो इसी तरह के लग रहे हैं.

उस स्थिति में रूसी सेनाएं अफगानिस्तान में रहें या वापस चली जाएं, उस से कोई अंतर नहीं पड़ता. कुरसी के लोलुप नेता किस प्रकार अपने देश को दूसरों के हाथों बेच देते हैं, अफगानिस्तान का पिछला घटनाक्रम इस बात का ताजा उदाहरण है. ●

सामाजिक व पारिवारिक पुनर्निर्माण की पाक्षिक

विश्व का सब से मूल्यवान कागज का टुकड़ा

लेख • संजय गोठवाल

जी हां, यही है ब्रिटिश गियाना का वह डाक टिकट, जिस की कीमत कभी एक सेंट थी और आज 80 लाख रुपए से अधिक हो गई है.

80 लाख रुपए से अधिक का एक डाक टिकट

दुनिया में हर आदमी का अपना कुछ न कुछ शौक होता है. शौक चाहे कुछ भी हो, कैसा भी हो, आखिर है तो शौक ही. शौक की दुनिया में घूमने पर लाखों तरह के शौक देखनेसुनने को मिल जाएंगे.

डाक टिकट संग्रह करना भी एक विचित्र शौक है. इस शौक में भी दुनिया के लाखों लोग लगे होंगे जिन्होंने अपनी सारी उम्र डाक टिकट संग्रह करने में ही बिता दी होगी.

पिछले वर्ष 25 जनवरी से 3 फरवरी तक नई दिल्ली में हुई अंतरराष्ट्रीय डाक टिकट प्रदर्शनी के संबंध में शायद बहुत कम लोगों को यह मालूम होगा कि डाक टिकटों की इस विशाल प्रदर्शनी में ब्रिटिश गियाना का केवल एक सेंट की कीमत का एक ऐसा डाक टिकट भी प्रदर्शन के लिए रखा गया था जिस की कीमत आज विश्व के बाजार में 10 लाख डालर यानी 80 लाख रुपए से ऊपर है.

कहते हैं कि सन 1856 में ब्रिटिश गियाना के पोस्ट मास्टर ने डाक टिकटों का स्टाक समाप्त होने का पता लगते ही यह आदेश दिया कि नए स्टाक के

समय पर न पहुंच पाने की संभावना को देखते हुए कुछ टिकट स्थानीय तौर पर छाप लिए जाएं. तथा जाली डाक टिकटों की रोकथाम के लिए अधिकारियों से यह कहा गया कि वे ऐसे जारी किए जाने वाले डाक टिकटों पर अपने हस्ताक्षर कर दें. कहा जाता है कि ऐसे लगभग 50 टिकट छापे गए.

टिकट के खरीददार

लगभग 16 वर्ष पश्चात सन 1872 में इन में से एक डाक टिकट सर्वप्रथम ब्रिटिश गियाना के डाक टिकट संग्रह का शौक रखने वाले एक स्कूली छात्र को मिला, किंतु उसे उस की बनावट पसंद नहीं आई और उस ने वह अपने एक मित्र को 6 शिलिंग में बेच दिया. टिकट खरीदने वाले मित्र ने उस डाक टिकट की विशेषता को समझते हुए उसे चुपचाप अपने पास रख लिया. कुछ वर्षों बाद उस ने यह टिकट लिवरपुल के डाक टिकट विक्रेता टामस रिडपाथ को 500 डालर में बेच दिया. टामस ने उसे आस्ट्रिया के एक धनाढ्य व्यक्ति काउंट फिलिपवान फरेरी को, जो फ्रांस में रहता था, बेच दिया.

फरेरी की मृत्यु 1917 में हुई. उस ने उस डाक टिकट को अपने संपूर्ण संग्रह सहित बर्लिन डाक टिकट संग्रहालय को वसीयत कर दी. किंतु फ्रांस की सरकार ने प्रथम विश्व युद्ध के तुरंत बाद फरेरी को शत्रु घोषित कर दिया और उस के सारे संग्रह को युद्ध की क्षति पूर्ति के आंशिक भुगतान के रूप में जब्त कर लिया.

उस के बाद सन 1923 में फ्रांस द्वारा सारा संग्रह नीलामी के लिए रखा गया, जिस में ब्रिटिश गियाना के इस टिकट को 32,500 डालर में अमरीका के उद्योगपति आर्थर हिंद ने खरीदा. हिंद की मृत्यु के बाद इस टिकट को पुनः नीलामी में रख कर 42,000 डालर में बेच दिया गया. मजेदार बात यह कि खरीदार ने सामने न आ कर यह टिकट अपने एक एजेंट के द्वारा खरीदा. लगभग 30 वर्ष तक उस टिकट के खरीदार का नाम छिपा रहा. यद्यपि टिकट के फोटो लेने की अनुमति दे दी गई, परंतु यह अवश्य ज्ञात हो गया था कि खरीदार का व्यक्तिगत चिह्न 'पुश्चलतारा' (कामेट) था. यह चिह्न टिकट के पीछे भी अंकित कर दिया गया.

सन 1970 में पुनः इस टिकट को नीलामी के लिए रखे जाने के समय इस के खरीदार के नाम का पता चल गया. यह एक आस्ट्रेलियन था जो फ्लोरिडा के लाडरडेल लेक्स में रहता था और उस का नाम फ्रेडरिक स्माल था. इस बार नीलामी में इस डाक टिकट की कीमत इतनी अधिक हो गई थी कि सभी आश्चर्यचकित रह गए. अमरीका के एक संग्रहकर्ता अरविन वेनबर्ग ने अपनी भागीदारी वाली सिंडीकेट के लिए उस टिकट को 2 लाख 80 हजार डालर में खरीदा. वर्तमान में इस डाक टिकट की बीमाशुदा कीमत 10 लाख डालर हो गई, जिस का भारतीय मूल्य 80 लाख रुपए से अधिक है. इस प्रकार यह संसार का सब से कीमती दुर्लभ डाक टिकट है.

कैसीकैसी बोलियां

यों तो, गलतियों वाले डाक टिकट महत्वपूर्ण होते हैं और उन्हें चाहने वाले भी बहुत होते हैं, किंतु यह डाक टिकट नियमित रूप से जारी होने वाले डाक टिकटों में अपने प्रकार का विश्व में एकमात्र डाक टिकट है.

कहा जाता है कि केवल यही एकमात्र ऐसा डाक टिकट है जो रानी एलिजाबेथ के संग्रह में नहीं है. कौन जानता है कि वह अब भी कभी भी इस के लिए बोली लगा सकती हैं? यह जानते हुए भी कि इस के लिए एक बार उन के पिता ने बोली लगाई थी किंतु उस से ऊंची बोली किसी अन्य व्यक्ति ने लगा दी थी.

हलके लाल रंग के कागज पर काली

डाक टिकट के जन्मदाता सर रालैंड हिल.

स्याही से छपे इस डाक टिकट का रूप अष्ठभुजाकार है और इस के मध्य तैरते हुए जहाज का फोटो है. इस की बनावट बेहूदा तथा गंदी बताते हैं और इस के कोने काट दिए गए हैं. पोस्ट मास्टर के हस्ताक्षर ने इस के रूप को और बिगाड़ कर रख दिया है. फिर भी कोई अरबपति ही इस टिकट को खरीदने की लालसा रख सकता है, ऐसा डाक टिकट प्रेमियों का अनुमान है.

डाक टिकट के मुख्य भाग पर पोस्ट मास्टर के हस्ताक्षर के अलावा दो और मालिकों के चिह्न भी अंकित हैं, एक फरेरी का जिस ने टिकट के पीछे अपने हस्ताक्षर किए हैं तथा दूसरा आर्थर हिंद का. किंतु वेनबर्ग का कहना है कि अब वह इस डाक टिकट का साथ छोड़ देगा और इस पर कोई चिह्न नहीं छोड़ेगा, इसलिए कि उन का इस टिकट के साथ लगाव है.

वेनबर्ग ने 12 वर्ष की उम्र में इस टिकट को सर्वप्रथम न्यूयार्क में एक प्रदर्शनी में देखा था. फिर टिकट व्यवसाय के विस्तार के साथ 30 वर्ष पश्चात वह इस टिकट को खरीदने में सक्षम रहे.

आज प्रत्येक डाक टिकट संग्रहकर्ता का यह स्वप्न है कि एक न एक दिन ब्रिटिश गियाना का यह डाक टिकट उस के संग्रह में आ जाए. किंतु यह शायद बहुत कम लोगों को ज्ञात होगा कि विश्व में डाक टिकट के जन्मदाता कहे जाने वाले सर रालैंड हिल नें, जिन का जन्म 3 दिसंबर, 1795 में हुआ था, पहला डाक टिकट सन 1840 में निकाला था, जिस का नाम 'पेनीब्लेक' था. भारत सरकार ने पिछले दिनों सर रालैंड हिल की स्मृति में दो रुपए का डाक टिकट जारी किया था.

डाक टिकट की पहरेदारी

उदयपुर की अरावली फिलेटलिक सोसायटी के सेक्रेटरी के. डी. सिंह के अनुसार भारत में राष्ट्रीय स्तर पर पहला डाक टिकट सन 1854 में निकला. सोसायटी के प्रवक्ता श्री हर्षकुमार ने बताया कि इस प्रकार की प्रदर्शनियां यों तो भारत में पहले भी कई आयोजित की जा चुकी हैं किंतु भारत में अंतरराष्ट्रीय स्तर की यह प्रथम बार डाक टिकट प्रदर्शनी आयोजित की गई. इस में इस मूल्यवान टिकट को भी प्रदर्शित किया गया. प्रदर्शनी के दौरान इस के लिए कड़े सुरक्षा प्रबंध किए गए थे.

यह टिकट हमेशा हथियार बंद सुरक्षा अधिकारियों की निगरानी में रहता है एवं उन्हीं की निगरानी में चार्टर्ड हवाई जहाज से लाया ले जाया जाता है. महत्वपूर्ण अंतरराष्ट्रीय प्रदर्शनी स्थल पर इसे हेलीकाप्टर से लाया जाता है और इस का सैनिक सम्मान के साथ स्वागत किया जाता है. ●
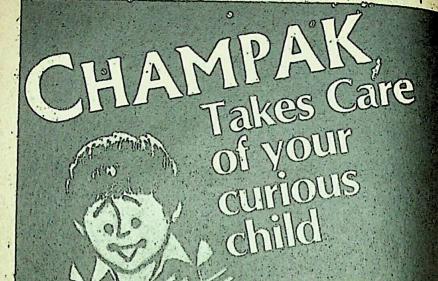
चित्रावली

नरगिस नहीं रहीं : नरगिस भारत की उन अभिनेत्रियों में से एक थीं जिन्होंने अभिनय को एक नई शैली दी जो आगे आने वाले कलाकारों के लिए प्रेरणा का स्रोत बनी. बाल कलाकार से फिल्मी कैरियर शुरू करने के बाद उन्होंने लगभग 100 फिल्मों में अभिनय किया. 'पद्मश्री' का सम्मान पाने वाली वह पहली अभिनेत्री रहीं. 'रात और दिन' उन की अंतिम फिल्म थी जिस के लिए उन्हें देश का सर्वोच्च 'उर्वशी' पुरस्कार दिया गया.

1980 में नरगिस को राज्य सभा का सदस्य मनोनीत किया गया, लेकिन राजनीति की लड़ाई में शामिल होने से पहले उन्हें कैंसर जैसी जानलेवा बीमारी से मुकाबला करना पड़ा और कहीं न डिगने वाली नरगिस इस मोर्चे पर 3 मई को पराजित हो गईं.

आरक्षण समर्थन के लिए : अनुसूचित जातियों के लोगों को विशेष सुविधाएं मिलें या नहीं इस सवाल पर आरक्षण विरोध और आरक्षण समर्थन के परस्पर विरोधी मोर्चे मैदान में आ गए हैं. (चित्र में) नई दिल्ली के बोट क्लब मैदान पर दलित रक्षा समिति द्वारा आयोजित रैली.

शाही कार्यक्रम : लंदन में रायल आपेरा हाउस के विकास की सहायतार्थ एक विशेष कार्यक्रम का आयोजन किया गया, जिस में शाही लोगों ने अपने कार्यक्रम प्रस्तुत किए. चित्र में डायना स्पेंसर (बाएं) पहले शाही कार्यक्रम में मोनाको की राजकुमारी ग्रेस (बीच में) और अपने मंगेतर युवराज चार्ल्स के साथ दिखाई पड़ रही है. संगीत, काव्य, गद्य के इस शानदार कार्यक्रम में राजकुमारी ग्रेस ने भी बाकायदा अपना कार्यक्रम पेश किया.

एक छलांग यह भी : हर खेल का अपना अलग रोमांच होता है. अमरीका में फलोरिडा के समुद्र तट पर धूप सेंक रही यह युवती उस समय बुरी तरह से चीख उठी जब पानी में स्कीइंग करने वाले इस खिलाड़ी ने अपने अभ्यास के दौरान उस के ऊपर से हवा में छलांग लगाई.
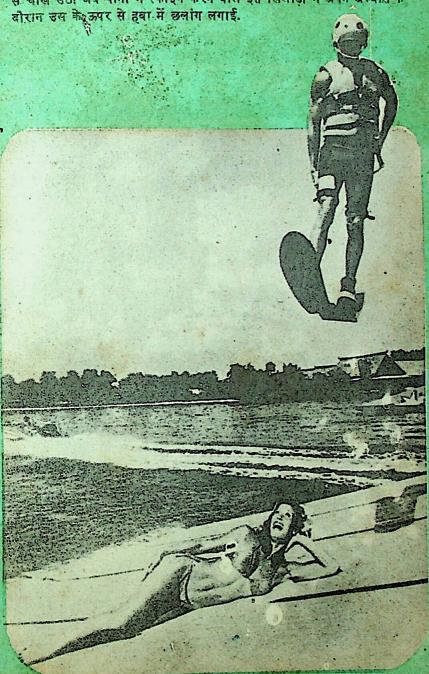
अंतरराष्ट्रीय पुरुष फैशन सप्ताह : पिछले दिनों कोलोन में आयोजित अंतरराष्ट्रीय पुरुष फैशन सप्ताह के दौरान पुरुषों के विविध फैशनों का प्रदर्शन किया गया. इस फैशन शो में यद्यपि नएनए फैशन के कपड़ों का खूब प्रदर्शन किया गया, पर चित्र में जींस पहने दिखाई दे रहा यह आकर्षक पुरुष शायद यही जता रहा है कि अभी जींस का फैशन बना हुआ है.

एक अनौपचारिक मुलाकात : पश्चिमी जरमनी के म्यूनिक नगर में हिलैनब्रन एकमात्र ऐसा भौगोलिक चिड़ियाघर है जहां हर महाद्वीप का अपना अलग विभाग है. सन 1928 में निर्मित इस चिड़ियाघर में जानवरों को न केवल प्राकृतिक वातावरण में रखा जाता है बल्कि धीरेधीरे समाप्त हो रही उन की जातियों को बचाने का भी पूरा प्रयास किया जाता है. दर्शकों के लिए यह काफी उपयोगी एवं नई जानकारी प्रदान करने वाला है. चित्र में इस चिड़ियाघर के निदेशक फ्रिट्ज हिर्स्क वहां के एक प्राणी को गोद में लिए हुए हैं.

राजस्थान के जोगी

लेख • रवींद्रनाथ श्रीवास्तव

राजस्थान की इस विचित्र जाति के लोग शहरी क्षेत्रों में रहने पर भी विकास, शिक्षा, नौकरी और अन्य सुविधाओं में दिलचस्पी लेने के बजाए केवल गानेबजाने में ही मगन क्यों रहना चाहते हैं?

मरुस्थलीय शुष्क जलवायु ने राजस्थान के निवासियों के जीवनयापन के ढंग को बहुत अधिक प्रभावित किया है. मीलों तक फैले रेतीले बंजर मैदानों, पेय जल की भीषण कमी, अनाज व चारे के अभाव आदि कई बातों ने यहां ऐसी अनेक जातियां उत्पन्न की हैं, जो एक जगह टिक कर रहना नहीं जानतीं. इन का सारा जीवन एक जगह से दूसरी जगह घूमतेफिरते बीत गया है. जन्म, विवाह, मृत्यु आदि सब प्रमुख जीवन कर्म अलग-

अलग स्थानों पर घूमतेघूमते ही संपन्न होते हैं. इन्हीं खानाबदोश (घुमंतू) प्रवृत्ति वाली जातियों में एक गाड़िया लोहार है, जो आप को भारत के किसी भी हिस्से में, बैलगाड़ियों में अपनी पूरी गृहस्थी जमाए, लोहे का काम करते दिखलाई पड़ जाएंगे.

एक अन्य जाति 'जोगी' है, जिस का यायावर जीवन राजस्थान के विभिन्न

जोगी युवतियां : गीत सुनाना कला भी पेशा भी.

घरघर घूम कर गातेबजाते भीख मांगना है. ये सदैव झुंड बना कर घूमते हैं. औरतें, मर्द, बच्चे सब के सब अपने सारे तामझाम के साथ किसी भी गांव की बाहरी सीमा पर शिविर लगा लेते हैं. फिर घरघर जा कर गानेबजाने का दौर शुरू हो जाता है. जब तक इन्हें आटा, रोटी, पैसे या कुछ भी प्राप्त नहीं हो जाता, ये वहीं अड़े रहते हैं. सामान्यतः राजस्थान के भागों में फेरी लगाते बीतता है. बंजारा प्रवृत्ति इन के रक्त में रचबस गई है. सरकार द्वारा इन्हें कई बार एक स्थान पर बसाने की कोशिश की गई. इस सिलसिले में विभिन्न स्थानों पर इन लोगों को जमीन भी दी गई, लेकिन बहुत कम लोग एक स्थान पर टिक पाए. ज्यादातर तो ये बरसात के दिनों में अपनी जमीन पर रहते हैं. कुछ उपजा सके तो ठीक, न उपजा सके तो भी गम नहीं. वर्षा की समाप्ति के बाद फिर विभिन्न स्थानों का दौरा शुरू हो जाता है.

इन का पारंपरिक पेशा गांवगांव व

गांव के निवासी इन्हें भीख दे ही देते हैं. लेकिन भीख देने से पहले वे इन से अपनी पसंद का लोकगीत सुनना नहीं भूलते.

अकसर जोगी मर्द विभिन्न वाद्ययंत्र बजाते तथा औरतें लोकगीत गाती हैं. ज्यादातर ये बीन, खंजरी व सारंगी बड़ी निपुणता से बजाते हैं. स्त्रियां उन का साथ देती हुई लंबी तान खींच कर गीत सुनाती हैं. एक गांव में कुछ दिन गाबजा कर कमाई कर लेने के बाद ये अपना डेराडंडा उठा कर पैदल ही अगले गांव की ओर रवाना हो जाते हैं. इस तरह मौसम कैसा भी हो, कितनी भी कठिनाइयां

आएं, ये अपना घुमक्कड़ी स्वभाव नहीं छोड़ते.

अपने साथ ये विभिन्न पालतू जानवर भी रखते हैं. इन में गधे, भेड़, बकरी, मुर्गे व कसारी नामक शिकारी कुत्ते प्रमुख हैं. ये कसारी कुत्ते बहुत तेज होते हैं. दुबले-पतले शरीर व लंबे मुंह वाले कुत्ते तीर की गति से दौड़ते व शिकार को घर दबोचते हैं. इन के डेरों की सुरक्षा में भी

हैं. ये जोगी शिकार करने में भी माहिर होते हैं. अपने कुत्तों की सहायता से हिरण, चिंकारे, खरगोश, लोमड़ी, गोह, सांड आदि का शिकार करते रहते हैं. मांस खाने के ये बेहद शौकीन होते हैं. इन्हें लोमड़ी का मांस विशेष पसंद आता है.

प्रत्येक गांव के लिए अजनबी होने के कारण, गांव में प्रवेश करते ही गांव के
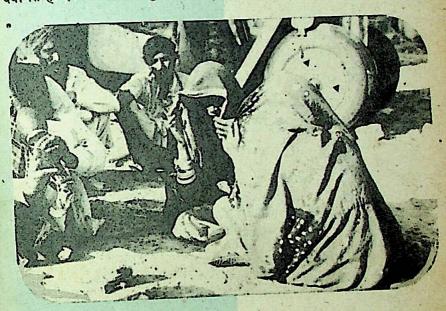
लोक गीत गाती हुई जोगी महिलाएं.

ये कुत्ते मददगार होते हैं. कोई भी बाहरी या अपरिचित व्यक्ति इन के डेरे में प्रवेश नहीं कर सकता. चौकीदारी में तैनात कुत्ते जोरों से भौंकते हुए उसे सब तरफ से घेर लेते हैं और अगर उन के मालिकों द्वारा न रोका जाए तो उसे चीर कर रख देते हैं. भेड़बकरियां दूध व मांस आदि के लिए पाली जाती हैं. गधों के ऊपर ये अपना सारा सामान लाद कर एक स्थान से दूसरे स्थान पर कूच करते हैं.

गानेबजाने व भीख मांगने के अलावा ये पत्थर की चक्की के पाट, लोमड़ी की खाल व सांडे का तेल आदि भी बेचते

कुत्ते इन पर भूंकने लगते हैं. इस कारण ये अपने साथ हमेशा लाठी रखते हैं. अपने पर कुत्तों के भूंकने का कारण ये अपना लोमड़ी खाना बताते हैं. इन का कहना है कि उन के शरीर से फूटती लोमड़ी की गंध के कारण ही गांव के कुत्ते उन्हें देखते ही भूंकने लगते हैं.

पढ़नालिखना, नौकरी करना इन्हें बिलकुल पसंद नहीं है. इस कारण इन में प्रायः सभी लोग अनपढ़ मिलते हैं. अगर इन की जाति का कोई व्यक्ति कहीं नौकरी कर ले तो इन के पूरे समाज द्वारा उस का बहिष्कार कर दिया जाता

है. कोई भी जोगी परिवार उसे अपनी लड़की देने को तैयार नहीं होता. पुरानी व सड़ीगली गलत मान्यताओं से ये इस बुरी तरह बंधे हैं. इसी लिए समय के साथ इन की प्रगति बिलकुल नहीं हो पाई है.

जोगियों की सामाजिक स्थिति

यद्यपि 1981 की जनगणना के लिए प्रकाशित की गई राजस्थान की अनुसूचित जाति व जनजातियों की सूची में जोगियों को शामिल नहीं किया गया है, लेकिन अन्य सभी जातियों द्वारा इन्हें नीची जाति का माना जाता है तथा इन के साथ खानपान का परहेज रखा जाता है. इन में कई उपजातियां भी होती हैं, जो सब राजपूतों की उपजातियों के समान हैं. यथा—भाटी, सोलंकी, देवड़ा, पंवार इत्यादि.

बाहर की किसी भी जाति या धर्म के लड़के इन की शर्तें पूरी कर के जोगियों में शामिल हो सकते हैं. दूसरी बिरादरी के लड़के जोगी युवतियों के साथ शादी करने के लिए या उन के प्यार में पड़ कर इन में शामिल होना चाहते हैं. पर इन की शर्तें बेहद कठिन होती हैं.

जो लड़का किसी जोगी लड़की के साथ विवाह करना चाहता है, उसे अपना घर, धर्म सब छोड़ कर इन के साथ घूमना व भीख मांगना पड़ता है. लगभग दोतीन वर्ष तक कमा कर उसे अपनी सारी कमाई भावी श्वसुर को देनी पड़ती है. इस के लिए पहले उसे बीन या सारंगी आदि बजाने में महारत हासिल करनी पड़ती है, क्योंकि इन की कमाई का मुख्य जरिया गाबजा कर भीख मांगना ही है.

जब लड़की का बाप उस के आचार-व्यवहार से पूरी तरह संतुष्ट हो जाता है, तब उस की शादी कर दी जाती है. शादी से पहले उस लड़के व लड़की को एकांत में नहीं मिलने दिया जाता. अगर इन के जीवनयापन की विचित्र पद्धति से घबरा कर वह लड़का वापस लौटना चाहे तो उस की स्थिति धोबी के कुत्ते की सी हो जाती है—न घर का न घाट का, क्योंकि मूल जाति के लोग फिर अकसर उसे अपने में शामिल करने को कभी तैयार नहीं होते.

इतना सब होने पर भी किसी जोगी युवती के प्यार में पड़ कर अपना घर, गांव, संबंधी सब को छोड़ने वाले मजनूं मिल ही जाते हैं. इस लेख के लिए सामग्री एकत्र करने के सिलसिले में लेखक ने कुछ जोगी दलों से बातचीत की. उन में एक दल में उस की मुलाकात एक ऐसे ही प्रेमी से हुई, जिस ने अपनी प्रेमिका को प्राप्त करने के लिए सब कुछ छोड़ दिया व जोगी बन गया.

जोगन से प्यार— छूटा घर द्वार

बाड़मेर जिले के कोजा गड़रा नामक गांव का मूल निवासी जवाहर जाति से सुथार (बढ़ई) था. वह लकड़ी का काम किया करता था. जोगियों का एक दल, जिन्हें सरकार की ओर से पचभद्रा में जमीन दी गई है, एक बार गाते मांगते उस गांव में पहुंचा. उस दल की युवती नाजू से जवाहर को प्यार हो गया. उस की खातिर अपना सब कुछ छोड़ कर जवाहर जोगियों के साथ तीन वर्ष तक घूमता रहा व अपनी सारी कमाई नाजू के बाप को देता रहा. समय के साथ उस ने बहुत खूबी से बीन बजाना सीख लिया. अब जवाहर व नाजू की शादी हो चुकी है व उन की चार महीने की एक पुत्री भी है.

ऐसे मामले कम ही देखने में आते हैं. सामान्यत: इन के आपस में ही विवाह संबंध होते हैं. जब कोई जोगी युवक किसी युवती से शादी करना चाहता है तो वह उस लड़की के पिता के डेरे के सामने खूंटा गाड़ कर गधा व कसारी कुत्ता बांध देता है. पिता की स्वीकृति मिल जाने पर इस दस्तूर के बाद उस लड़के को अगले दोतीन वर्ष तक अपनी सारी कमाई होने वाले श्वसुर को देनी पड़ती है. लड़की के

बाप के संतुष्ट हो जाने पर विवाह की तिथि निश्चित कर दी जाती है.

विवाह के समय लड़के वाले 25 रुपए देते हैं तथा दोनों पक्ष वाले मिल कर पूरी बिरादरी को पंगत खिलाते हैं. इन की शादी गर्ग या गुरड़ा लोग कराते हैं, जिन्हें स्थानीय लोग मेघवालों के ब्राह्मण कहते हैं. नीची जातियों में इन गर्ग या गुरड़ा लोगों को ऊंचा माना जाता है. शादी के समय खूब नाचगाना होता है. शादी के बाद दंपती अलग डेरा बना अपनी कमाई से अपना खर्चा चलाने लगते हैं.

जोगनों का श्रृंगार

कुंआरी जोगी लड़की आलते या महावर जैसे तरल लाल रंग से माथे पर टीका लगाती है. शादी हो जाने के बाद युवतियां उसी रंग से नाक व माथा रंगने लगती हैं. बच्चा होने पर अपनी सामर्थ्य के अनुसार जच्चा को घी, अजवाइन, मेथी आदि के लड्डू खिलाए जाते हैं. लड़के के नाम के आगे नाथ लगाने का चलन है, जैसे—पत्तानाथ, कालूनाथ आदि. लड़कियों के प्रचलित नाम हैं—केशी, डाकुड़ी, लीला इत्यादि.

लड़के बड़े हो कर किसी को गुरु बनाते व उस से दीक्षा लेते हैं. उस वक्त उन के दोनों कानों में ऊपर की ओर छेद कर दिया जाता है, जिसे 'दर्शन' कहते हैं. इन कानों के कारण ही इन के नाम के आगे नाथ लगाया जाता है. गुरु का उपदेश स्थानीय बोली में होता है, जिस का भावानुवाद है—"सिर्फ अपनी राह पर चलना चाहिए तथा कोई ऐसा काम नहीं करना चाहिए, जिस से गुरु या कान के दर्शन की ओर लोग उंगलियां उठा सकें."

पतिपत्नी की अगर न निभे तो इन में तलाक की प्रथा भी है. पर इस के लिए दोनों ही पक्षों का राजी होना जरूरी है.

तलाक के लिए दोनों छः छः रुपए देते हैं तथा बिरादरी की पंचायत जुड़ती है. पंचायत में उपस्थित लोग उन 12 रुपए का तंबाकू पीते हैं तथा उस जोड़े को अलग घोषित कर दिया जाता है. इस तरह अलग हुए आदमी व औरत दोनों ही पुनर्विवाह के लिए स्वतंत्र होते हैं.

इन में विधवा विवाह का भी चलन है. देवर वयस्क हो तो पहला अधिकार उस का होता है, वरना किसी भी युवक से विधवा स्त्री का विवाह हो सकता है.

मृत्यु के पश्चात इन लोगों को जमीन में गाड़ा जाता है. जिसे समाधि देना कहते हैं. आदमियों को पालथी मार कर बैठी हुई मुद्रा में समाधि दी जाती है तथा स्त्रियों को लिटा कर गाड़ा जाता है.

शहरी क्षेत्रों में रहने पर भी विकास, शिक्षा, नौकरी और अन्य सुविधाओं में इन की कतई दिलचस्पी नहीं है. ये गाने-बजाने में ही मगन रहना चाहते हैं. ●

बिना पांव के पहाड़ पर चढ़ाई

लंदन के एक विकलांग ने आर्जेंनटीना में 16,800 फुट ऊंचे पहाड़ पर चढ़ कर सभी को आश्चर्य में डाल दिया. 40 वर्षीय नार्मन क्रूचेर 21 वर्ष पूर्व एक दुर्घटना में अपने दोनों पैर गंवा बैठा था.

उस ने कृत्रिम पैर और बैसाखी के सहारे यह चढ़ाई की. अमरीका और कनाडा की टोली के साथ वह 22,834 फुट तक जाना चाहता था, लेकिन मार्ग में नकली पैर टूटने से उसे रुक जाना पड़ा.

इस वर्ष नार्मन ने हिमालय पर चढ़ाई की योजना बनाई है

विश्व विजय प्रकाशन

का एक और नया सेट

विश्व सुलभ साहित्य

● खाई — कुसुम गुप्ता

यौन स्वच्छंदता के मुलम्मे के नीचे छिपी जिंदगी की तस्वीर और-एक नारी का अंतर्द्वंद्व प्रस्तुत करने वाला मनोवैज्ञानिक व सामाजिक उपन्यास.

2.50

● ये पति

हास्य के मूल स्त्रोत आप खुद भी हैं. आप व आप की पत्नी व रिश्तेदारों की कई बातें व्यंग्य के रूप में पतियों पर छींटाकशी करती हैं जिन्हें सुन कर पति महोदय के अतिरिक्त पूरा परिवार हंसने लगता है.

2.50

● मेहंदी का पौधा — रा. श्यामसुंदर

दांपत्य जीवन कैक्टस की तरह नहीं है जो कि हर हाल में बिना कुछ पाए भी जीवित रहे. यह तो मेहंदी के पौधे की तरह है—बेहद नाजुक और स्नेह का प्यासा.

2.50

विश्व पाकेट बुक्स

● प्रतिहिंसा — वनमित्र

प्रतिहिंसा की आग में जलते हुए लोगों की एक ऐसी कहानी जिस की शुरुआत रहस्यों से होती है और अंत भी चौंका देता है.

2.50

हर कदम पर एक नया रहस्य, एक नई उलझन.

● आधी रात को दिन — सुनील नाथ चक्रवर्ती

सुनामिका समझ रही थी कि वह सेठ हिरजी के खिलौने ढो रही है पर उसे पता नहीं था कि वह स्वयं एक गिरोह के हाथ का खिलौना बन रही है. क्या था उन खिलौनों में जो सेठ हिरजी इतनी गोपनीयता बरत रहा था.

2.50

● एक भूल — मदन मसीह

प्रकाश की हत्या कर दी गई. संदेह में किशनसिंह गिरफ्तार. कुसुम व भूपेंद्र से कागजातों की मांग व अपहरण! बोस जांच करते खुद ही जाल में जा फंसा. लेकिन जब कोहरा छंटा तो किशनसिंह की भूल का पता चला. वह क्या भूल थी? रहस्य, रोमांच व मनोरंजन से भरपूर रोचक उपन्यास.

2.00

पूरा सेट लेने एवं पूरा धन अग्रिम भेजने पर 10% छूट एवं डाक व्यय केवल पचास पैसे वी. पी. द्वारा.

सभी पुस्तक विक्रेताओं से प्राप्य या

44 - VV

विश्वविजय प्रकाशन एम 12, कनाट सरकस नई दिल्ली-110001

खुचड़ क्रिया

व्यंग्य • तरशचंद्र जैन

गोपीलाल ने नौकरी करने की एक ऐसी तकनीक खोज निकाली है कि उस का चाहे किसी भी सरकारी दफ्तर में तबादला हो जाए, वह हर जगह खुशहाल रहता है...
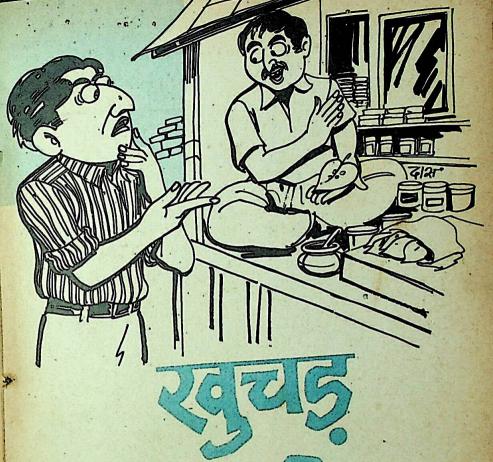
यदि कल गोपीलाल से मेरी इतनी विस्तार से बातचीत नहीं हुई होती तो मैं और देश के लाखों शासकीय कर्मचारी खुचड़ क्रिया जैसे तकनीकी ज्ञान से वंचित रह जाते. गोपीलाल स्वयं पिछले 10 वर्षों से शासकीय सेवा में है. वह चतुर्थ श्रेणी का शासकीय कर्मचारी है. आम बोलचाल में ऐसे कर्मचारी को चपरासी कहा जाता है, पर गोपीलाल इस संबोधन के सर्वथा विरुद्ध है क्योंकि शासकीय सेवा में चपरासी नाम का कोई पद नहीं है.

वैसे कल्याणकारी राज्य की कल्याणकारी सरकार अपने समाजवादी स्वरूप को सिद्ध करने की गरज से चपरासी नाम के इस शासकीय सेवक का तबादला कम

ही करती है पर गोपीलाल अपनी नियुक्ति से ले कर अब तक पांच बार तबादले का उपभोग कर चुका है. तबादलों को लेकर गोपीलाल ने न तो कभी यूनियन का सहारा लिया और न ही कभी किसी नेता के चक्कर लगाए. वह तो तबादलों को शासकीय सेवा की एक नियामत मानता है.

गोपीलाल की मान्यता है कि तबादला सामर्थ्यवान लोगों का ही होता है, क्योंकि तबादला हो जाने पर दुश्मन भी तारीफ करता है. शासकीय व्यय पर नए-नए स्थान देखने को मिल जाते हैं.

रही बात स्थान पर जमने की, तो गोपीलाल का स्पष्ट मत है कि शासकीय कर्मचारी कहीं जमने की सोचता ही क्यों है. गोपीलाल खुद भी पिछले 10 वर्षों की शासकीय सेवा में पांच बार तबादलों पर गया, पर वह किसी स्थान पर नहीं जमा. वह लगातार अपने ही शहर में जमा हुआ है. उस ने बाकायदा हर नए स्थान पर कार्यभार ग्रहण किया. यात्रा भत्ता लिया और खुचड़ तकनीक का प्रयोग किया.

परिणाम हर बार यही हुआ है कि इस का अफसर खुद उस से हाथ जोड़ कर कह देता है, "तेरी जहां मर्जी हो वहां रह. एक तारीख को अपना वेतन ले जाया कर, अपने झूठे मेडिकल बिलों का भुगतान करा लिया कर, पर मेरा पीछा छोड़." और गोपीलाल अपने अफसर की आज्ञा का पालन करता हुआ अपने शहर वापस आ जाता है. और मजे से अपना पान का खोखा चलाता है.

गोपीलाल की एक विशेषता यह भी है कि वह कभी किसी से अभद्रता का बरताव नहीं करता. जब भी किसी से बात करेगा, 'साहबजी' और 'बापजी' कह कर ही संबोधित करेगा. यदि कोई उसे गाली भी दे दे तो वह हंस कर टाल देगा. यह दीगर बात है कि मौका मिलते ही ऐसी पटकनी देगा कि गाली देने वाला चारों खाने चित्त हो जाएगा. अपने अफसरों के साथ तो उस का व्यवहार नम्रता की चरम सीमा पर होता है. मेरी समझ में यह बात अब आई है कि ऐसा व्यवहार ही 'खुचड़ तकनीक' की एक आवश्यक शर्त है.

कुछ महीने पहले सुना था कि गोपीलाल का फिर तबादला हो गया है. गोपीलाल दोतीन महीने से दिखाई भी नहीं दे रहा था. उस के खोखे पर सुबहशाम उस का लड़का बैठ रहा था, पूछने पर वह कहता था, "दादा नौकरी पर गए हैं."

उस रात गोपीलाल खोखे पर मुझे देखते ही चिल्लाया, "साहबजी, नमस्कार."

मैं ने कहा, "नमस्कार भाई गोपीलाल, कहो कहां गायब हो गए थे? कब आए?"

"आज सुबह ही आया हूं, बापजी," गोपीलाल ने कहा, "तबादला हो गया था, नई जगह कुछ समय लग ही जाता है."

मैं ने पूछा, "कितने दिन को आए हो?"

वह हंसा, "कितने दिन को? कैसी बातें करते हो, बापजी? अपने वतन को आदमी कितने दिन को आता है? हमेशा को तो आता है न? अब तो आ गया हूं. महीने में दोचार दिन नौकरी पर हो आया करूंगा."

मेरे लिए यह आश्चर्य की बात थी. "पर, जब यहां रहोगे तो छुट्टी कौन सी कटवाओगे, यार?"

वह फिर हंसा, "मन माफिया."

मैं आश्चर्य में पड़ गया. यह कौन सी छुट्टी होती है! मैं भी सरकारी नौकरी में हूं पर मैं ने तो कभी ऐसी छुट्टी नहीं सुनी.

उस ने समझाया, 'बापजी, आप आकस्मिक (कैजुअल) छुट्टी को इत्तफाकिया छुट्टी यानी जो अकस्मात लेनी पड़े, वैसी छुट्टी कहते हैं न? ऐसे ही जब मन में आए तब लो, जितने दिन की मन में आए उतने दिन की लो, उस छुट्टी

को 'मनमाफिया छुट्टी' कहते हैं, अपनी नौकरी इसी छुट्टी के भरोसे चल रही है."

अब बात और भी रहस्यपूर्ण हो गई. मैं ने पूछा, "गोपीलाल, क्या हर अफसर की महीने दो महीने में इतनी चमचागीरी कर लेते हो कि वह तुम्हें मनचाहे दिन मुख्यालय से बिना छुट्टी बाहर रह लेने देता है?"

"क्या कह रहे हो, बापजी? चमचागीरी? चमचागीरी तो अपने से बाप की भी न हो. अपन चमचा नहीं खुचड़ा है, खुचड़ा."

"खुचड़ा! यह क्या होता है?" मैं ने प्रश्न किया.

वह समझाने लगा, "खुचड़ा चमचा का बिलकुल उलटा है. जो अफसर की हर कमजोरी देख कर उस को अपने काबू में कर ले वह खुचड़ा कहलाता है. पर खुचड़ा बनने में कलेजा लगता है, बापजी. शांति से अफसर की कमजोरियां देखनी पड़ती हैं. कुछ छोटीमोटी कमजोरियां सब पर उजागर करनी पड़ती हैं, ताकि अफसर घबरा जाए कि आप उस की बड़ी कमजोरियां भी जानते हैं, जिस से वह तुम्हारा कुछ बिगाड़ने से भी घबराए और तुम्हें पास रखने से भी घबराए. और हार कर कह दे कि 'भैयाराजा, तुम्हें जो दिखे सो करो, पर मेरा पिंड छोड़ो. यहां से चले जाओ, तुम्हें वेतन मिलता रहेगा.' यानी अफसर के काम में जो खुचड़ या रुकावट पैदा कर सके वह खुचड़ा कहलाता है."

मैं ने गोपीलाल से हाल की खुचड़ कथा विस्तार से सुन ली, जिस की बदौलत वह मनमाफिया छुट्टी ले कर आ गया है. मैं चूंकि कल्याणकारी राज्य की कल्याणकारी सरकार का कल्याणकारी सेवक हूं,

गोपीलाल बोला, "फिर मेरे वेतन का क्या होगा, बापजी?"

इसलिए अपना यह नैतिक दायित्व समझता हूं कि गोपीलाल द्वारा बताई गई खुचड़ क्रिया से अपने शासकीय कर्मचारी बंधुओं को अवगत करा कर जनकल्याण महायज्ञ में सहयोग दे कर यशलाभ करूं और कर्मचारियों को भी कुछ नया कर गुजरने के लिए प्रेरित कर सकूं.

गोपीलाल ने नए स्थान पर कार्यभार ग्रहण करते ही अफसर के नीचे पहुंचने का कार्यक्रम प्रारंभ कर दिया. वह अफसर के सामान्य लक्षणों से प्रारंभ से ही परिचित है जैसे कि अफसर श्वान स्वभावी होता है और उसे अपने समकक्षीय अफसर की बुराई सुनने में बड़ा आनंद आता है.

इस सामान्य लक्षण को ध्यान में रखते हुए गोपीलाल ने नए अफसर से प्रथम साक्षात्कार में ही अपने पुराने अफसर की निंदा स्तुति कर के और नए अफसर को देवता तुल्य बता कर उसे मोह लिया. वह यह कहने से भी नहीं चूका, "साहबजी, खादिम आप का गुलाम है. अभी तो अकेला ही रहूंगा, बापजी. मुझे अपना बच्चा समझ कर सेवा करने का मौका देते रहना."

बस, पहले ही दिन से अफसर का चहेता बन कर उस के घर तक पहुंच बना ली. आठपंदरह दिनों में ही साहब की ऐसीऐसी कमजोरियों का पता लगा लिया कि कोई दूसरा वर्षों में भी पता न लगा पाए. अफसर के घर में चपरासियों द्वारा काम किया जाना, अफसर में सुरासुंदरी की कमजोरी होना, पैसे का मोह होना, अफसर का बीवी से डरना, कुछ भी पचा जाने की क्षमता होना तो आम अफसरीय गुण है. अब गोपीलाल ने खुचड़ क्रिया आरंभ कर दी: सब से पहले उस ने अन्य चपरासियों को साहब के विरुद्ध भड़काना शुरू किया. लुकेछिपे गोपीलाल की शिकायतें भी लगे हाथ साहब तक पहुंचने लगीं. एक शाम दफ्तर के बाद गोपीलाल अपने साथियों को अफसर के विरुद्ध कुछ समझा रहा था कि तभी अफसर आ धमका. सब सकपका गए किंतु गोपीलाल अप्रभावित रहा.

साहब ने कड़क कर पूछा, "क्यों, क्या हो रहा है, गोपीलाल?"

गोपीलाल ने पूरी नम्रता और सहजता से उत्तर दिया, "कुछ नहीं, साहबजी, शासकीय कर्मचारियों को उन के कर्त्तव्यों का बोध करा रहा हूं."

इतना विश्वासपूर्वक दिया गया उत्तर सुन कर अब साहब के सकपकाने की बारी थी. वह कुछ कहे बिना सटक लिए.

गोपीलाल भांप गया कि इस अफसर पर काबू पाने में देर नहीं लगेगी. उस ने अपनी खुचड़ क्रिया को और तेज कर दिया. उधर अफसर भी गोपीलाल के विरुद्ध कुछ ठोस सबूत जुटाने में प्रयत्नशील थे पर गोपीलाल पकड़ में आ ही नहीं रहा था.

एक दिन गोपीलाल ने बड़े बाबू को थैले में साबुन साहब के यहां ले जाते देखा. उस की बाछें खिल गईं. अगले दिन पहुंच गया साहब के कमरे में, "साहबजी, साबुन दिला दीजिए."

"कैसा साबुन? तुम्हारा दिमाग तो खराब नहीं है? जाओ काम करने दो," अफसर ने बिगड़ कर कहा.

"नही, बापजी, दिमाग तो ठीक है," गोपीलाल ने हाथ जोड़ कर कहा, "चतुर्थ श्रेणी कर्मचारियों को हर महीने दो टिकियां मिलती हैं. इसलिए प्रार्थना कर रहा हूं."

अफसर ने फिर टालने की कोशिश की, "यहां कोई साबुन नहीं आता है. जाओ, कोई साबुन नहीं मिलेगा."

गोपीलाल यही सुनना चाहता था. तुरंत बोला, "क्या कह रहे हो, बापजी? कल बड़े बाबू उन्हीं में से तो एक दरजन आप के यहां दे कर आए हैं."

साहब सकपका गए, "जाओ शाम को

देखेंगे," कह कर किसी प्रकार झेंप मिटाई. शाम को सचमुच गोपीलाल को साबुन की दो टिकियां दे दी गईं, जिन्हें अपने साथियों को दिखा कर गोपीलाल ने न केवल उन्हें अपनी सफलता से अवगत कराया बल्कि उन में असंतोष के बीज भी बो दिए.

धीरेधीरे गोपीलाल की खुचड़ क्रियाएं बढ़ती जा रही थीं और उधर अफसर की परेशानियां. वह अपने को एक अदना से चपरासी के सामने असहाय पा रहे थे. इसी बीच मंत्रीजी का दौरा कार्यक्रम आ गया.

वह अगले हफ्ते कार्यालय का निरीक्षण करने वाले थे. पूरा दफ्तर मंत्रीजी की तैयारी में लग गया और गोपीलाल साहब के विरुद्ध 20 सूत्री शिकायती ज्ञापन तैयार करने में. उस ने ज्ञापन की कई प्रतियां टाइप कराईं और इस बात का खूब प्रचार भी किया कि वह अफसर के विरुद्ध मंत्रीजी को ज्ञापन देने जा रहा है.

अफसर को पता चला तो वह घबराए. गोपीलाल को बुला कर समझाया पर वह हाथ नहीं धरने दे रहा था. अफसर ने कलक्टर और पुलिस अधीक्षक से निवेदन किया कि वे गोपीलाल को ऐसा करने से रोकें. कलक्टर व पुलिस अधीक्षक ने गोपीलाल को बुला भेजा. गोपीलाल ने दोनों के चरण छू कर कहा, "साहबजी, मैं छोटा सा शासकीय कर्मचारी आप की बात कैसे टाल सकता हूं, पर आप ही देख लो. मैं ने तो साफ लिखा है, बापजी, कि आरोपों की जांच करा ली जाए और यदि गलत निकलें तो जो सजा जानें वह मुझे दें."

गोपीलाल ने ज्ञापन की एकएक प्रति कलक्टर और पुलिस अधीक्षक को पकड़ा दी. उन की सलाह पर वह मंत्रीजी को ज्ञापन न देने की बात मान गया पर निवेदन किया, "साहबजी, मेरे 20 रुपए खर्च हुए वे तो मुझे दिला ही दीजिए. मैं

लेखकों के लिए सूचना

● सभी रचनाएं कागज के एक ओर हाशिया छोड़ कर साफ-साफ लिखी या टाइप की हुई होनी चाहिए.

● प्रत्येक रचना के साथ वापसी के लिए केवल टिकट नहीं, टिकट लगा, पता लिखा लिफाफा आना चाहिए, अन्यथा अस्वीकृत रचनाएं वापस नहीं की जाएंगी.

● प्रत्येक रचना पर पारिश्रमिक दिया जाता है, जो रचना की स्वीकृति पर भेज दिया जाता है.

● प्रत्येक रचना के पहले और अंतिम पृष्ठ पर लेखक के हस्ताक्षर होने चाहिए.

● स्वीकृत रचनाओं के प्रकाशन में अकसर देर लगती है, इसलिए इन के विषय में कोई पत्रव्यवहार नहीं किया जाता.

● मुक्ता और सरिता में पूर्णविराम की जगह बिंदु का प्रयोग होता है. कृपया इसी का प्रयोग करें. इसी प्रकार अंक बजाए नागरी के अंतरराष्ट्रीय होने चाहिए. भारतीय संविधान में राष्ट्रभाषा हिंदी के लिए यही अंक निर्धारित किए गए हैं और सारे संसार में प्रायः सभी भाषाओं में, यही अंक प्रयुक्त होते हैं.

रचना इस पते पर भेजें :

संपादकीय विभाग
मुक्ता, दिल्ली प्रेस,
नई दिल्ली-110055.

गरीब आदमी हूं." कलक्टर व पुलिस अधीक्षक ने न केवल अफसर को डांटा बल्कि उस से 20 रुपए भी गोपीलाल को दिलवाए.

एक दिन गोपीलाल दफ्तर दो बजे आया. अफसर खार खाए तो बैठे ही थे, मौके का लाभ उठाते हुए उसे लिखित चेतावनी दे डाली और छुट्टी लेने का आदेश दिया. गोपीलाल ने लिखित में क्षमा मांग ली और छुट्टी के लिए प्रार्थनापत्र भी दे दिया. साहब खुश थे पर वास्तव में यह गोपीलाल की खुचड़ क्रिया की एक चाल थी. साहब अकसर बिना छुट्टी गायब रहते थे, उस दिन भी बिना छुट्टी कहीं गए हुए थे. जैसे ही चार बजे शाम की बस से वह दफ्तर के सामने उतरे, गोपीलाल हाथ जोड़ता हुआ बस की ओर दौड़ा. साहब को लंबा सा सलाम मारा और उन का ब्रीफकेस उन के कमरे तक ले गया.

उन के कुरसी पर बैठते ही बोला, "बापजी, आप को चेतावनी कौन देगा? मैं तो दे नहीं सकता. आप ही बताइए, साहबजी, किस को लिखा जाए?"

साहब ने झल्ला कर कहा, "क्या बकते हो? जाओ, अपना काम देखो."

गोपीलाल ने हाथ जोड़ कर निवेदन किया, "बापजी, मैं तो उस दिन दो बजे आ गया था. तब भी आप ने चेतावनी दे डाली थी और मुझे छुट्टी भी लेनी पड़ी थी. आप तो चार बजे आए हो. छुट्टी के नियम तो सब के लिए एक ही हैं न, साहबजी?"

साहब ने अपना सिर पकड़ कर कहा, "मैं तो तीन महीने में ही तुझ से परेशान हो गया, गोपीलाल. तुझे जो दिखे वह कर. तू यहां से बिलकुल चला जा. मैं तुझ से कुछ नहीं कहूंगा. न छुट्टी के लिए कहूंगा, न शिकायत करूंगा."

गोपीलाल ने हाथ जोड़ कर कहा, फिर मेरी तनखाह का क्या होगा, बापजी?"

साहब उसी रौ में कह गए, "तनखाह भी हर माह लिया करना, पर मेरा पीछा तो छोड़."

"मंजूर है, बापजी," गोपीलाल ने धमकी के स्वरों में कहा, "पर अपनी बात याद रखना, साहबजी. अब मैं पहली तारीख को ही आऊंगा. मेरे साथ धोखा हुआ तो समझ लेना, मैं भी कम नहीं हूं." और उसी शाम की गाड़ी से गोपीलाल चला आया.

गोपीलाल दावे से कहता है कि इसी 'खुचड़ क्रिया' के बल पर वह अपनी 10 वर्षीय शासकीय सेवा में लगातार सफलता प्राप्त करता आ रहा है.

यह मैं दावे से कहता हूं कि गोपीलाल झूठ नहीं बोलता.

कुत्ता मां को बुला लाया

लंदन के प्लीमथ एवेन्यू के अपने फ्लैट में 19 वर्षीया मेरीना होम्स अकेली थी कि अचानक सवेरे चार बजे उसे प्रसव पीड़ा होने लगी. घर में टेलीफोन भी नहीं था कि कहीं फोन से ही सूचना दे देती.

तभी एकाएक उसे अपने कुत्ते का ध्यान आया जो वहीं बंधा था. उस ने एक कागज पर संदेश लिखा और अपने कुत्ते स्कैंप के गले में बांध दिया.

संदेश था—"जल्दी आओ, बच्चा होने वाला है." फिर मेरीना ने कुत्ते के कान में धीरे से कहा, "यह कागज जल्दी से मां के पास पहुंचा दो."

मेरीना की मां ब्रिजटन में रहती थी. कुत्ता सारी रात गलियों में दौड़ता हुआ वहां पहुंचा और सुबहसुबह मेरीना की मां को बुला लाया.

मुक्ता

नए लेखकों के लिए कहानी प्रतियोगिता

नए अंकुर

मुक्ता ने अपने जन्म ही से नए लेखकों को प्रोत्साहित किया है. कभी लेखकों के नाम से प्रभावित हो कर उन की रचनाओं को तरजीह नहीं दी है. मुक्ता के लिए रचना ही महत्त्वपूर्ण होती है, लेखक का नाम या उस की ख्याति नहीं.

नए लेखकों को प्रकाश में लाने के लिए मुक्ता द्वारा समयसमय पर नए अंकुर प्रतियोगिताएं भी आयोजित की जाती रही हैं, जिन में केवल उन्हीं लेखकों की रचनाएं स्वीकृत की जाती हैं जिन की कोई रचना पहले कहीं न छपी हो.

अब इस प्रतियोगिता को सामयिक की बजाए स्थायी रूप दिया जा रहा है. यह प्रतियोगिता निरंतर चलती रहेगी. इस में उन सभी नए लेखकों की कहानियों का स्वागत है जिन की कोई रचना पहले कहीं प्रकाशित नहीं हुई है. इन रचनाओं के लिए कोई अंतिम तिथि नहीं है. जैसेजैसे ये प्राप्त होती जाएंगी इन पर विचार कर के निर्णय किया जाता रहेगा और यथासंभव शीघ्र प्रकाशित कर दिया जाएगा. प्रत्येक रचना पर 50 रुपए का पारिश्रमिक दिया जाएगा. वर्ष के अंत में सभी 'नए अंकुर' रचनाओं पर पुनः विचार किया जाएगा और सर्वश्रेष्ठ रचनाओं पर निम्नलिखित पुरस्कार दिए जाएंगे :

प्रथम पुरस्कार	:	200 रुपए
द्वितीय पुरस्कार	:	100 रुपए
तृतीय पुरस्कार	:	50 रुपए

ये पुरस्कार पारिश्रमिक के अतिरिक्त होंगे.

इस विषय में संपादक का निर्णय अंतिम व मान्य होगा.

रचनाएं भेजने से पहले कृपया मुक्ता कार्यालय से लेखकों के नियम मंगवा कर पढ़ लीजिए ताकि आप की रचनाओं पर विचार करने में सुविधा रहे. इस के लिए 35 पैसे का टिकट लगा, अपना पता लिखा लिफाफा भेजिए.

संपादक, मुक्ता, झंडेवाला एस्टेट, नई दिल्ली-110055.

कुरसी कितनी महत्त्वपूर्ण चीज है, यह हम रोजाना देखते हैं. कुरसी से ही आदमी की प्रतिष्ठा होती है. उसी से उस को महत्त्व व आदर मिलता है. कुरसी के लिए राजनीतिबाजों की आपस में लड़ाई भी हम रोज ही देखते हैं. इसे पाने के लिए राजनीतिबाज कुछ भी करने को तैयार रहते हैं. चुनाव भी कुरसी के लिए ही होते हैं.

किंतु कुरसी दो प्रकार की होती है– एक तो पद वाली यानी ओहदे की, दूसरी आम कुरसी जिस पर हम सभी बैठते हैं. आम कुरसी का भी महत्त्व है, शायद इसे कम ही लोग जानते होंगे. हम आज इसी का महत्त्व आप को बताने जा रहे हैं.

घर की कुरसी का भी महत्त्व है

लेख • अजयकुमार सिन्हा

हमारे शरीर व स्वास्थ्य के लिए कुरसी एक महत्त्वपूर्ण चीज है. चौबीस घंटों में औसतन हम 14 से ले कर 16 घंटे तक जागते हैं. इस का तीन चौथाई भाग बैठ कर ही कटता है. घर से दफ्तर जाते समय या घर लौटते समय हम बस या गाड़ी में बैठते हैं. दफ्तर में भी हम कुरसी पर ही बैठते हैं. यहां तक कि खाली समय में भी हम इसी पर बैठे रहते हैं.

कुरसी का चयन करते समय फैशन के साथसाथ इस बात का ध्यान रखें कि कहीं उस का प्रयोग करते समय शरीर पर कोई दुष्प्रभाव तो नहीं पड़ेगा.

कुरसी एक आम पर महत्त्वपूर्ण चीज है. इसी लिए इसे खरीदते या बनवाते समय कुछ विशेष बातों को ध्यान में रखना चाहिए ताकि इस के उपयोग के बावजूद शरीर के समुचित विकास में कोई कठिनाई न आए.

नाटक या सिनेमा भी हम कुरसी पर ही बैठ कर देखते हैं.

अमरीका के जार्ज वाशिंगटन विश्वविद्यालय के विकलांग शल्य चिकित्सा के प्रोफेसर डाक्टर हेनरी फैफर ने इस पर विशेष शोध किया है.

उन के कथनानुसार इतना बैठना शरीर के लिए हानिकारक है. यह नितंबों, जांघों व कंधों की रक्त धमनियों को भींचता व संकुचित करता है. पेट को पिलपिला व नरम करता है और प्रायः शरीर में तनाव बढ़ाता है.

इसलिए बैठने वाली कुरसी कैसी है, इस पर भी ये सब बातें काफी निर्भर करती हैं. हम इसे महत्त्वपूर्ण नहीं मानते या इस ओर ध्यान नहीं देते कि जिस पर हम बैठते हैं वह कुरसी कैसी होनी चाहिए. किंतु कुरसी पर हुए हाल के वैज्ञानिक शोध से जो जानकारी मिली है उसे देखते हुए इस ओर ध्यान देना बहुत जरूरी है. हर कुरसी या हर तरह की कुरसी बैठने के लिए ठीक नहीं होती.

कुरसी यद्यपि एक मामूली सी चीज लगती है, किंतु इस का ठीक या खराब होना हमारे शरीर पर भारी प्रभाव

(ऊपर) कुरसी की पीठ 105 डिगरी कोण बनाते हुए पीछे की ओर मुड़ी होनी चाहिए. (नीचे) कुरसी देखने में आकर्षक भले लगे. पर बैठते समय मांसपेशियों पर ज्यादा दबाव न पड़े, यह भी आप को ही ध्यान रखना है.

डालता है. वैज्ञानिकों का मत है कि आराम कुरसी सब से अधिक हानिकारक होती है. यह मेरुदंड या रीढ़ की हड्डी को नुकसान पहुंचाती है. मेरुदंड शरीर का एक अत्यंत कोमल अंग है. मेरुदंडीय गोलांग पर ज्यादा दबाव पड़ने से पीठ में अनेक विकार व दर्द पैदा हो जाते हैं.

कुरसी कैसी हो?

सभी के लिए सब अवसरों पर सही व ठीक कुरसी न तो है और न कभी हो सकती है, इसलिए ऐसी कुरसी का होना असंभव है, जो हर दृष्टिकोण से सभी के लिए ठीक हो.

बजाए ऐसी कुरसी खोजने के अधिक सही व कम से कम हानिकारक कुरसी को चुनने व उस पर सही ढंग से बैठने का ढंग जान लेना ज्यादा अच्छा है.

कुरसी के बारे में सचेत रहें. उन कुरसियों पर न बैठें जो असुविधाजनक हों.

लगातार देर तक न बैठें, चाहे आप बैठ कर काम कर रहे हों या फिल्म व टेलीविजन देख रहे हों, या गाड़ी या स्कूटर चला रहे हों. बीचबीच में एक आध बार उठते रहें. जब उठें उस समय मांसपेशियों को फैलाने के लिए अंगड़ाई लेना सर्वाधिक उपयुक्त रहता है.

कमर को टेक या सहारा मिलना चाहिए. अधिकांश पीठ के दर्द या रोग यहीं उत्पन्न होते हैं. कुरसियों की पीठ में कमर के लिए सहारा नहीं होता.

पीठ की स्थिति या कोण : कुरसी की पीठ 105 डिगरी का कोण बनाते हुए पीछे की ओर मुड़ी होनी चाहिए. यह धारणा गलत है कि कुरसी की सीट और पीठ 90 डिगरी के कोण सरीखी सीधी होनी चाहिए.

सीट की लंबाई : यदि कुरसी की सीट आगे से पीछे तक बहुत लंबी होगी तो बैठने पर इस से घुटनों के नीचे पैर पर दबाव पड़ता है, जिस से पैरों में दर्द हो सकता है और रक्त संचार में बाधा होती है. कभी पैर सो जाते हैं या सुन्न हो जाते हैं. ज्यादा लंबी सीटों में कमर सीट के पिछले हिस्से तक नहीं पहुंचती.

सीट की ऊंचाई : यदि सीट ज्यादा ऊंची होगी तो आप के पैर फर्श पर आराम नहीं कर सकते. इस से सीट पर जांघें दबती हैं जिस से रक्तसंचार धीमा होने लगता है. ज्यादा नीची सीट शरीर पर मूठदार जेबी चाकू की तरह असर करती है. यह मांसपेशियों को फैलाती है तथा उस कुरसी से उठना कठिन, असुविधाजनक और दबावपूर्ण होता है.

हर कुरसी आप की सुविधा को ध्यान में रख नहीं बनाई जाती. इसलिए कुरसी पर इस तरह बैठिए जिस से शरीर पर विपरीत असर न पड़े.

कुरसी के सामने वाले पैरों के बीच की जगह : यदि वह बंद होगी तो उठते समय पैरों को ठीक से पूरी तरह रखना असंभव होगा. कुरसी से उठते समय तलवे, स[illegible] थोड़ा नीचे होने चाहिए, नहीं तो असु[illegible]ा होती है.

जांघों पर दबाव पढ़ता है. किंतु बहुत कम झुकाव होने से आप को सीट में अपने को सीधा रखने में कठिनाई होगी. सीट का सामने का भाग पीछे के हिस्से से ऊंचा होना चाहिए.

सीट की सामने की किनारे की धार : यह तेज नुकीली न हो. इसे गोल होना चाहिए, ताकि जांघों पर दबाव न पड़े और उठने में आसानी हो.

सीट थोड़ी गद्दीदार होनी चाहिए. किंतु ज्यादा गद्दीदार व मुलायम सीट पर बैठना कठिन होता है. कमर पिछले भाग तक नहीं पहुंच पाती, जिस से मेरुदंड को सहारा नहीं मिल पाता.

बैठने वाले को स्थिति बदलने व कुर्सी से उठने में सहायक होती हैं. ये ऐसी होनी चाहिए कि कुहनी को इन पर टिकाना पड़े, क्योंकि इस से बांह की निचली हड्डी की नसों पर दबाव पड़ता है.

इस से छोटी उंगली व अनामिका सुन्न हो जाती है और इन में झनझनाहट हो सकती है.

अतः यह आवश्यक है कि कुर्सी खरीदते या बनवाते समय आप यह ध्यान रखें कि कुरसी हमारे शरीर के लिए हानिकारक या कष्टप्रद न हो. उस का सौंदर्य उस के बाद की बात है. ●

राष्ट्रीय बैडमिंटन चैंपियन सैयद मोदी

लेख • वीरेंद्र शुक्ल

सैयद के खेल में इधर निरंतर निखार आया है. तब भी क्या वह अंतरराष्ट्रीय स्तर के मुकाबलों में भारत के लिए नई उपलब्धियां दिला सकेगा?

एक जमाना वह भी था, जब प्रकाश पादुकोन सैयद मोदी का सब से प्रिय खिलाड़ी था. कारण? प्रकाश का खेल आधुनिक बैडमिंटन के अनुरूप है. आज इस खेल में जिस गति की जरूरत है, वह प्रकाश में भरपूर है. शायद इसी वजह से जब मैं ने 1977 में कलकत्ता में आयोजित प्रथम राष्ट्रीय जूनियर बैडमिंटन प्रतियोगिता के अवसर पर सैयद मोदी से उस के प्रिय खिलाड़ी के बारे में पूछा था तो उस ने झट से प्रकाश पादुकोन का नाम लिया था.

अपने उसी हीरो खिलाड़ी को चार वर्ष बाद हरा कर सैयद मोदी ने कैसा अनुभव किया होगा, यह तो वह ही जाने, लेकिन पिछले दिनों विजयवाड़ा में संपन्न राष्ट्रीय बैडमिंटन प्रतियोगिता के फाइनल में उस ने प्रकाश का मानमर्दन कर सभी को आश्चर्य में डाल दिया. प्रकाश की पराजय और मोदी की विजय. भारतीय बैडमिंटन के एक दशक का सर्वाधिक सनसनीखेज परिणाम है.

पिछले नौ वर्षों से राष्ट्रीय बैडमिंटन में बारबार प्रकाशित होते रहने वाले प्रकाश के बारे में अब यही कहा जाने लगा था कि भारतीय बैडमिंटन में शायद उस की हार लिखी ही नहीं है, क्योंकि इस दौरान वह भारतीय कोर्टों पर ही अजेय नहीं रहा बल्कि अंतरराष्ट्रीय कोर्टों पर भी अपने रैकेट का कमाल दिखलाने लगा था. पिछले वर्ष तो उस ने आल इंगलैंड में अपनी विजय से सारी दुनिया को अपनी श्रेष्ठता का प्रमाण दे डाला था. उल्लेखनीय है कि आल इंगलैंड बैडमिंटन स्पर्धा को विश्व बैडमिंटन की सर्वाधिक गौरवमयी प्रतियोगिता

के रूप में देखा और माना जाता रहा है.

1971 में भी जब प्रकाश पहली बार भारतीय बैडमिंटन में चमका था, तब भी उस ने एक इतिहास लिखा था क्योंकि अभी तक भारतीय बैडमिंटन में किसी एक खिलाड़ी ने एक ही साथ जूनियर्स व सीनियर्स में विजयश्री नहीं हासिल की थी.

लेकिन मद्रास के उस राष्ट्रीय बैडमिंटन के आयोजन में सभी की जबान पर प्रकाश की ही चर्चा थी. उस ने एक साथ 'दोहरी सफलता' का अविस्मरणीय कीर्तिमान कायम कर दिखाया था.

सैयद की उपलब्धि

सैयद मोदी ने भी कुछ ऐसा ही किया है, लेकिन मोदी को एक साथ दोहरी विजय का करिश्मा दिखाने का यश नहीं मिला है, बल्कि राष्ट्रीय जूनियर चैंपियन बनने के बाद अंततः सीनियर्स में भी वह चैंपियन बनने में सफल रहा है.

पहली बार बैडमिंटन (1974 लुधियाना) में हिस्सा लेने वाले मोदी की यद्यपि उस वर्ष चुनौती अंतिम आठ (क्वार्टर फाइनल) तक ही सीमित रही, लेकिन अगले ही वर्ष बल्लभ विद्यानगर (गुजरात) में उस ने विजय का इतिहास लिखा.

केवल उसी वर्ष तक ही उस की श्रेष्ठता भारतीय बैडमिंटन के जूनियर खिलाड़ियों में शिखर पर नहीं रही, बल्कि 1976 में भी उस के रैकेट ने विजयी शाट के साथ कोर्ट से बाहर कदम रखा. अब तक जूनियर्स सीनियर्स के ही साथ खेला करते थे, लेकिन राष्ट्रीय बैडमिंटन के 40 सालों के इतिहास में यह पहला मौका रहा, जब सीनियर्स से अलग जूनियर्स की प्रतियोगिता आयोजित हुई थी, नहीं तो सीनियर्स की भीड़ में जूनियर्स रखे जाते थे.

राष्ट्रीय बैडमिंटन में अपने नाम की धूम मचाने से पूर्व, मोदी 'होत बीरवान के चिकने पात' वाली कहावत चरितार्थ कर चुका था. मोदी के ही प्रयत्नों से 1973 में जयपुर में और 1974 में इंफाल में उत्तर प्रदेश ने राष्ट्रीय खेलों में बैडमिंटन में टीम खिताब जीता था. उत्तर प्रदेश राज्य बैडमिंटन में वह 1975 में लड़कों में और 1976 (रुड़की) में सीनियर्स में चैंपियन बना.

सैयद को मिली विरासत

सरदार नगर (गोरखपुर) में 12 दिसंबर, 1962 को जन्मे मोदी को बैडमिंटन खेल विरासत में मिला है क्योंकि उस से पूर्व मोदी के बड़े भाई का रैकेट से संबंध था. छः भाइयों एवं दो बहनों में सब से छोटे सैयद मोदी ने अपनी इस चमत्कारी विजय से न केवल पूर्वी उत्तर प्रदेश के इस पिछड़े इलाके को ही खेल की दुनिया में गौरवान्वित किया है, बल्कि वह उत्तर प्रदेश को भारतीय बैडमिंटन में शीर्ष पर पहुंचाने वाले टी. एन. सेठ एवं दिवंगत सुरेश गोयल की परंपरा की एक कड़ी साबित हुआ है. देखना यह है कि वह अब भारतीय बैडमिंटन से दूर अंतरराष्ट्रीय कोर्ट पर कितनी सफलताएं बटोरता है.

मोदी से इसलिए विशेष आशा की जा सकती है क्योंकि उस की उम्र अभी ज्यादा (20 वर्ष) नहीं है. खेल में उस के पास गति के साथसाथ कलात्मकता भी है.

वह प्रकाश के गतिवान खेल से जहां प्रभावित है, वहीं सुरेश गोयल ने भी उसे कम प्रभावित नहीं किया था. वह गोयल के नपेतुले खेल का प्रशंसक था. एक समय वह भी था, जब लोगों ने मोदी में गोयल की छवि देखी थी. वह छवि अब साकार होने लगी है. यही नहीं, वे लोग जिन्हें प्रकाश के सही उत्तराधिकारी की वर्षों से तलाश थी, उन की भी खोज यानी मोदी के करिश्मे से पूरी हो गई है. ●

तुम आए ना. . .

तुम आए ना पिया,
देहरी पर ही बीती
सारी सांझ
प्रतीक्षा की.

थकी आंख ही
तकतक कर गलियारा,
देखदेख आईं
गली पार चौराहा.

मन पर न माना
न माना,
चाहा था एक स्पर्श तुम्हारा.
पर निष्ठुर तुम
क्यों कर जानो,
देह गंध की कोमलता को,
और
गरमाहट को सांसों की.

तुम क्यों जानो,
चांद का उगना
और महक रजनीगंधा की.

महुए पर
देर रात तक, कोयल कुहकी,
पर तुम आए ना,
देहरी पर ही बीती
सारी सांझ
प्रतीक्षा की.

—अरविंद ओझा

जब मुझे अस्वीकृत किया गया

व्यंग्य • डा. त्रिलोकीनाथ
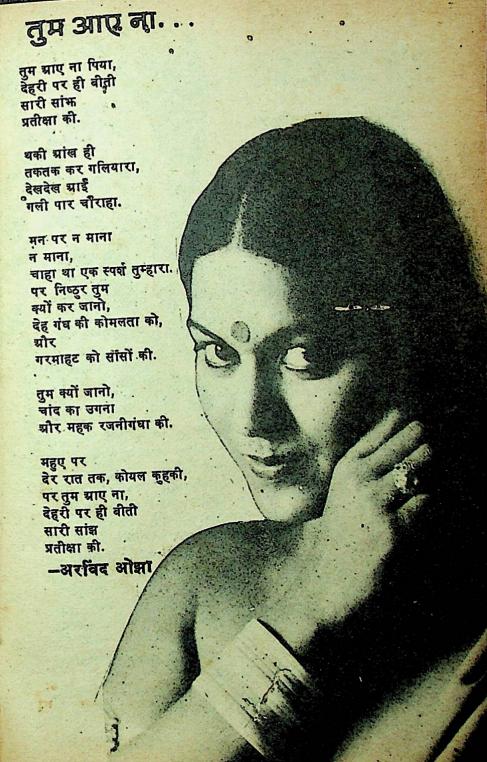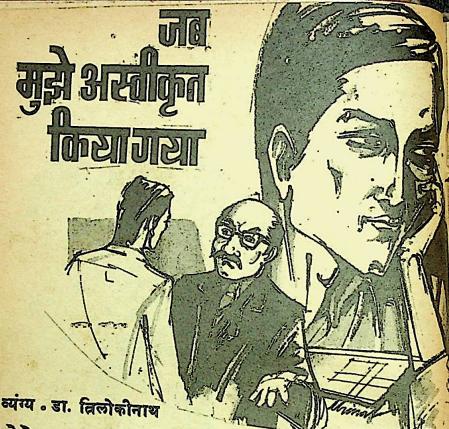
मेरे बाबा जमींदार थे. बाप काश्तकार रह गए थे, और मैं इन में से कोई भी नहीं था. सिर्फ एम. ए. पास एक शिक्षक, शोध कार्य का कीड़ा. मेरे विवाह की चर्चा चल पड़ी. पर मेरे जीवन में शायद किसी सहधर्मिणी का संयोग नहीं लिखा था. अनेक लोग बड़ेबड़े अरमान ले कर आए और कारवां की तरह गुजर गए. हम खड़ेखड़े गुबार ही देखते रहे.

बड़ी कठिनाई से मेरे मामाजी ने एक वकील साहब को पटाया. उन के आने का समाचार आते ही मेरे घर में भूचाल आ गया. मेरी भाभी कुछ सनकी थीं. उन्होंने घर का कोनाकोना धोया, फिर पोंछा, फिर सुखाया. चादरें, सोफा, कवर सब धुले. मेरे तन पर हल्दी, चंदन, बेसन का उबटन मला गया. स्पेशल नाई से दाढ़ी खुरचवाई गई. एक नई टाई आई. उस के लिए नया पिन लाया गया. जूते चमकाए गए और सजा कर मुझे गुड्डा बना दिया गया. वकील साहब पधारे. पूरे पहलवान थे. शिष्टाचार संभाषण के उपरांत मेरी ओर घूर कर बोले, "बरखुरदार, कुछ बीमार हो क्या ?"

"नहीं, सर." कालिज के बास से 'सर, सर' कहतेकहते यह शब्द चेतना में रम गया है.

"यार, तुम्हारा चेहरा पीला लगता है, तुम्हें जरूर तपेदिक की शिकायत होगी."

"तपेदिक मेरे खानदान में किसी को नहीं हुई."

"फिर जवानी में यह पीलापन कैसा? गाल पिचके, हड्डियां आंखों में

हमें जरूरत थी एक अदद बीवी की. पर हमारी हर-चंद कोशिश के बाद भी न जाने क्यों लड़की वाले हमें अस्वीकृत करते जा रहे थे...

धंसीं, होंठ सूखे. अरे भाई, यौवन में तो चेहरा गुलाब सा खिला रहना चाहिए. तुम कितनी बैठकें निकालते हो, कितने दंड पेलते हो?"

"सर, दंडबैठक से दिमाग मंद पड़ जाता है."

"ठीक है, मुझे किसी पीलिया के रोगी से अपनी लड़की का विवाह नहीं करना जिस में जवानी का एक भी लक्षण दिखाई न देता हो." इतना कह कर वह चले गए. उन के जाने के बाद हमारी क्या गति हुई होगी, यह आप स्वयं ही जान सकते हैं.

हमारे चाचा जी किसी पार्टी के नेता थे. किस पार्टी के थे, यह हम आज तक नहीं समझ पाए. एक दिन उन्हें रेस्टोरेंट में एक अदद बाप अपनी एक अदद बेटी के साथ चाय पीते मिल गए. बाप के चेहरे पर उभरी रेखाओं में चाचाजी ने न जाने क्याक्या पढ़ लिया. वह उन से अनायास बातें करने लगे, मानो माइक पर मुग्ध श्रोताओं को भाषण रस पिला रहे हों. वह बोले, "मेरे भतीजे ने एम. ए. फर्स्ट डिवीजन में पास किया है, जाति का कायस्थ है, श्रीवास्तव कहलाता है, कश्यप गोत्र है, संत फंटूदास पर रिसर्च कर रहा है. कालिज में ए. ग्रेड का प्रोफसर है, 1,450 रुपए वेतन पाता है. रूप ऐसा जैसे चौदहवीं का चांद हो. शायद आफताब भी हो तो मैं कह नहीं सकता. बड़ीबड़ी चंचल मदभरी आंखें, उन पर झपकते अलसाए पलक. शुक सी नुकीली नाक, नारंगी से गाल, कपोल को लजाने वाले पतलेपतले अधर, जिन पर थिरकती मुसकान, कद छः फुट, इकहरा शरीर, मांसल पुष्ठ कंधे, लंबी भुजाएं. दुर्गुण एक भी नहीं, सारे गुण ही गुण. योग्यता इतनी की अभीअभी नए राज्यपाल ने उसे विश्वविद्यालय अनुदान आयोग का सचिव बनाने की पेशकश की थी, पर उस ने मना कर दिया. आप उस से मिल कर बड़े प्रसन्न होंगे."

"अवश्य मिलूंगा." वे सज्जन बोले. दूसरे ही दिन वह अपनी बेटी के साथ

अचानक बिना बुलाए मेहमान की तरह पधार गए. हम कालिज जाने को बाहर निकले ही थे. गरमी आ चुकी थी: केवल बुस्सर्ट पहने थे. उन्होंने कम, उन की बेटी ने अधिक गौर से हमें नीचे से ऊपर, फिर ऊपर से नीचे देखा और आंखें फैला दीं. मुंह को षट्कोण बना कर बोली, "पिता जी, यह पिचके गाल वाला, ढीली चाल वाला, लगता है मानो कोई चूरनचटनी बेचने वाला हो. ड्रेस ! वाह. जैसे किसी खेत में कोई बिजूका खड़ा कर दिया हो. हाथ पैर ऐसे हिल रहे हैं, लगता है अंग-अंग जोड़ कर यह माडल बनाया गया है. आंखें तो बिलकुल अंदर को धंसी हुई हैं. हां, होठों पर बनावटी मुसकान जरूर है. उस से रस तो नहीं, हां, लार जरूर टपक रही है. इन के चाचाजी से कह दीजिए, यह माडल किसी नुमाइश में सजवा दें, जहां इस का उपयोग हो सके."

हम झटके से भीतर चले आए और जोर से बिगड़ पड़े, "आप लोग मेरी बेइज्जती क्यों कराते रहते हैं ? इस समय मैं कालिज जा रहा था, बड़ी महत्त्वपूर्ण गोष्ठी में शोध निबंध पढ़ना था. सारा मूड खराब कर दिया."

तभी हमारी भाभीजी आईं और हम पर कुछ छींटे जल के छिड़क कर बोलीं, "बाबूजी, कुम्हारिन से बस नहीं चला तो गधइया के कान उमेठ दिए. वह छोकरी आप के व्यक्तित्व पर शोध-निबंध पढ़ गई, और बिगड़ रहे हैं हमें पर."

हम खिसिया कर रह गए. और कर ही क्या सकते थे?

हम ने अपनी खुराक बढ़ा दी—एक किलो दूध, आधा पाव बादाम, एक छटांक घी, एक पाव फल, साथ ही पांच डंड और पांच बैठकें भी शुरू कर दीं. पर हम पर जवानी नहीं चढ़ी. आज जैसी जवानी बाजारों में घूमती है, वैसे ही हम भी बने रहे. पर एक अदद बीवी की तलाश हमें भी रही और हमारे घर वालों को भी.

हमारे गांव में एक पंडितजी थे, वह पढ़े लिखे थे. उन्हें एक सज्जन रेल यात्रा में टकराए. बस, फिर क्या था. पंडितजी उन से जोंक की तरह चिपट गए. घाट के पंडा की तरह लिपट गए और उन से कन्यादान का संकल्प करा कर ही दम लिया. पर आज के युग में संकल्प हरिश्चंद्री नहीं होते, वे विकल्प की पूरी संभावनाओं से संयुक्त होते हैं. वे महापुरुष हमें देखने आए. हमारा मुंह पीयर्स साबुन से सात बार धुलाया गया, यह सोच कर कि शायद हम भी फिल्म तारिकाओं की तरह कोमल त्वचा वाले हो जाएं. उस पर क्रीम, रूज का गाढ़ा मेकअप किया गया, ताकि गालों पर सुर्खी बनी रहे. हमें शिष्टाचार के सारे नियम कायदे सिखाए. इस के बाद हमें उन सज्जन के सम्मुख, जिन के साथ कोई महिला भी थीं, पेश किया गया. उन्होंने हमें ऊपर से नीचे देखा और तौला, फिर हमारी आंखों में झांक कर बोले, "बेटा, आप कितनी रोटियां खाते हैं?"

उत्तर रटाया नहीं गया था, दिमाग पर जोर दे कर सोचा, और कह दिया, "लगभग बारह!"

वह ठहाका लगा कर हंस पड़े. फिर बोले, "कितना दूध पीते हैं?"

हम ने तपाक से उत्तर दिया, "एक किलो."

"और घी?"

हम ने फिर उत्तर दिया, "आधी छटांक."

वह जोर से हंस पड़े, "तभी इस चौखटे पर खुशहाली नहीं दिखाई दे रही है." फिर तो प्रश्नों की झड़ी ही लग गई, "क्लास में लड़कियों की तरफ तो नहीं देखते हो ?"

"नहीं, जी. मैं तो हर लड़की को अपनी मां ही मानता हूं. उसी भावना

प्रोफेसर बोले, "क्या तुम बैकवर्ड दकिया-नूस हो?"
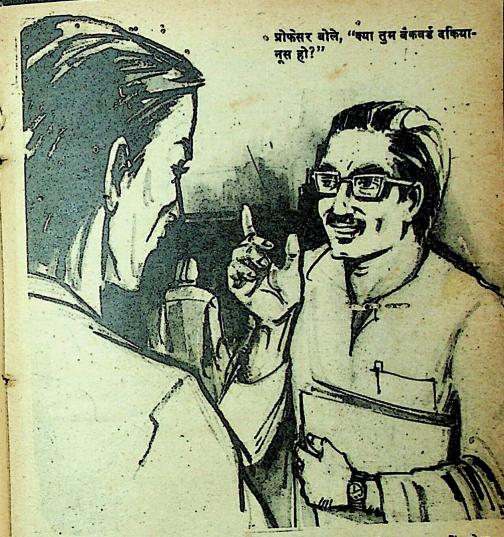
से पूजता हूं."

"सड़क पर किधर देख कर चलते हो?"

"सीधा सामने."

"दाएंबाएं तो कभी नहीं देखते?"

"जब सड़क पार करनी होती है तभी."

"आप को हनुमान चालीसा याद है?"

"जी, पर अब कुछ भूल गया हूं. बचपन में याद किया था."

वह हंस पड़े, "जिस जवान आदमी को हनुमान चालीसा याद नहीं होगा, उस के अंदर शौर्य कहां से आएगा? शौर्यहीन, पराक्रमहीन, नपुंसक, हीन भावना ग्रसित पुरुष को भी कोई कन्या पसंद करेगी?" पर उन के साथ आई महिला कुछ व्यावहारिक बुद्धि की थीं. उन्होंने वार्तालाप का सूत्र अपने हाथ में ले लिया. बोलीं, "अभी कुछ और जानकारी कर लें, फिर फैसला करेंगे."

वह मेरी ओर उन्मुख हो कर बोलीं, "भैयाजी, आप तेल कौन सा डालते हैं?"

मैं ने पूछा, "सिर में या कड़ाही में?"

वह मधुर मुसकान के साथ बोलीं, "सिर में."

"शुद्ध गोले का."

"इत्र कौन सा लगाते हैं ?"

"कोई नहीं, उस से मुझे अरुचि है."

"किस साबुन से नहाते हैं?"

जाड़े में हमाम, गरमी में लाइफ-बाय."

"हफ्ते में कितनी बार सिनेमा जाते हैं?"

"साल में एकाध वार."

"होटल में कितने दिन खाना खाते हैं ?

"एक दिन भी नहीं."

जबां दिखा कर...

जिंदगी बे रब्तो मानी
बन गई,
यह मुहब्बत ने शगूफे
फल दिए,
उन पर इजहारे मुहब्बत
जब किया,
वह जबां अपनी दिखा कर
चल दिए.
—जिया निहरौरी

"रेस्टोरेंट पर चाय कितने दिन पीते हैं?"

"एक दिन भी नहीं."

"ताजमहल कितनी बार देखा है?"

"सिर्फ एक बार. एटा से आगरा हर महीने जाना होता रहता है, पर ताज नहीं देखा."

"आप कपड़े धो लेते हैं ?"

"जी, अपने ही नहीं, मां जी के भी धो देता हूं. घर में झाड़ू लगाता हूं, सुबह की चाय बनाता हूं, बिस्तर उठाता हूं. शाम को फिर बिछाता हूं, शाम की चाय बनाता हूं. रात को सब को दूध गरम कर के देता हूं."

वह गंभीर हो गईं. फिर अपने पति से बोलीं, "पौरुष तो इन में है, आप ने नापने में कमी की है. जो व्यक्ति इतना सारा काम कपड़े धोने से ले कर दूध गरम करने तक कर सकता है, वही असली मर्द है. पर इन में एक कमी है—यह न तो खुशबूदार तेल लगाते हैं न इत्र. सिनेमा जाते नहीं, होटल रेस्टोरेंट भी नहीं जाते. पिकनिक भी नहीं करते, फिर क्लब क्या जाते होंगे. यह दकियानूसीपन हमें अच्छा नहीं लगता. शीला तो वैसे ही आधुनिक विचारों की है. इंटर में पढ़ रही है, आखिर वह यह कैसे मान लेगी ? फिर भी हम उस से पूछ कर ही कुछ जवाब देंगे."

हम फिर अटक गए और सोचने लगे अब की बार हनुमान चालीसा कंठस्थ कर लेना चाहिए और आधुनिक बनने का तरीका भी सीख लेना चाहिए. हम ने अपने सोशालाजी के प्रोफेसर से पूछा, "बंधु, आज के युग में आधुनिक किसे कहते हैं?"

वह हंस कर बोले, "क्या तुम बैकवर्ड दकियानूस हो?"

हम ने कहा, "हम कुछ भी नहीं हैं. बैकवर्ड होते तो आरक्षण पा जाते, आधुनिक होते तो बीवी." ●
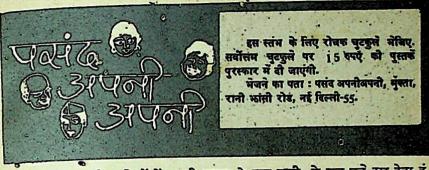
मैं हर वर्ष गरमियों में अपनी दुकान के पास पानी के कुछ घड़े रख देता हूं. एक बार मैं ने एक व्यक्ति की सिफारिश पर पानी पिलाने के लिए एक सात वर्षीय लड़के को नियुक्त कर दिया.

पानी पिलातेपिलाते वह लड़का कोई बहाना बना कर खिसक जाता था. बालक समझ कर मैं उस की तरफ विशेष ध्यान नहीं देता था.

एक दिन अपनी आदत के मुताबिक वह फिर बहाना बना कर खिसक गया. वापस आने पर मैं ने उस से कारण पूछा तो उस ने कहा, "जी, [illegible] लगी थी, पानी पीने चला गया था."

—संजय गर्ग

दो मित्र आपस में बातें कर रहे थे. एक ने कहा, "पिछले दिनों मैं ने एक लड़की की ओर मुसकरा कर देखा तो उस ने पुलिस को बुला लिया."

"भई, तुम तो फिर भी बच गए," दूसरे मित्र ने सहानुभूति प्रकट करते हुए कहा. "मैं ने भी एक लड़की की ओर मुसकरा कर देखा था तो उस ने पंडित को बुला लिया और मैं आज तक वह सजा भुगत रहा हूं."

—श्रीनाथ मिश्र

एक महल्ले में दो डाक्टर रहते थे. दोनों ने एक ही साथ और सड़क के ठीक आमनेसामने अपने दवाखाने खोले, दवाखाने खोलने के बाद करीब एक माह तक दोनों में से किसी के पास भी कोई मरीज नहीं आया.

एक दिन जब दोनों अपनेअपने दवाखाने में बैठे थे तभी उन के सामने वाली सड़क से कुछ लोग अपने कंधे पर शव लिए जा रहे थे. तब उन में से एक डाक्टर दूसरे के पास पहुंचा और उस से पूछने लगा, "अरे यार, यह समझ में नहीं आया कि एक महीने से एक भी मरीज न तो मेरे पास आया और न ही तेरे पास, फिर आखिर यह आदमी मरा तो कैसे मरा?"

—अरशहद शादाब

एक दुकानदार की दुकान पर सभी वाद्ययंत्र जैसे हारमोनियम, तबला इत्यादि के साथ बंदूक देख कर एक नए संगीत सीखने वाले को बड़ा आश्चर्य हुआ. उस ने पूछा, "वाद्ययंत्र के साथ आप बंदूक क्यों बेचते हैं?"

"बंदूकें वाद्ययंत्र खरीदने वालों के पड़ोसी खरीद कर ले जाते हैं," दुकानदार ने मुसकरा कर कहा.

—विजयकुमार तापड़िया

हमारे पिताजी के दोस्त की आदत है कि कोई भी बात कहने के बाद वह दोबारा उसी बात को सामने वाले से पूछते हैं. जैसे अगर मैं पूछूं, चाचाजी, आज आप कितने बजे यहां आए थे?" तो उन का जवाब होगा, "मैं यहां 10 बजे आया था. कितने बजे आया था?"

एक बार बारिश के मौसम में हम बरामदे में बैठे बातें कर रहे थे कि हमें कोई द्वार से दाखिल होता दिखाई दिया. वहां पर्याप्त रोशनी नहीं थी, इसलिए हम पहचान नहीं पाए.

लेकिन पिताजी के मित्र बोले, "लगता है जैसे हाथी का बच्चा चला आ रहा है." फिर अपनी आदत के अनुसार हम से पूछा, "किस का बच्चा?"

हमारे जवाब देने से पहले ही वह व्यक्ति बरामदे में दाखिल होता हुआ बोला, "हाथी का बच्चा."

यह सुन कर हम सब चौंक पड़े. उन महाशय का मुख तो देखने लायक हो गया क्योंकि आने वाला वह व्यक्ति उन का अपना ही बेटा था. —नवनीतकुमार

एक नौजवान यात्री ठहरने के लिए एक होटल में पहुंचा. जब वह रजिस्टर पर अपना नाम व पता लिखने लगा तभी एक खटमल ने उसे काट लिया और रजिस्टर में घुस गया.

यात्री ने प्रबंधक से कहा, "भाई साहब, खटमल तो हर होटल में होते हैं. लेकिन ऐसा पहली बार ही हुआ है कि कोई खटमल कमरा नंबर देखने एवं खून टेस्ट करने आया हो." —अनिलकुमार

कक्षा में पढ़ातेपढ़ाते मास्टर साहब ने एक लड़के से कोई सवाल किया. उसे जवाब मालूम नहीं था. उस ने दूसरे लड़के से धीरे से पूछने की कोशिश की. दूसरे लड़के ने पहले के कान में कहा, "मास्टर साहब तो गधे हैं."

मास्टर साहब चिल्ला कर बोले, "अबे उसे क्यों बताता है? क्या उस को नहीं मालूम?"

—प्रदीपकुमार

परिवहन निगम की एक बस के अंदर लिखा था : "देश की संपत्ति आप की अपनी है."

उस के ठीक नीचे की सीट उखाड़ कर किसी ने लिख दिया था : "मैं ने अपना हिस्सा ले लिया है."

—अवनीशकुमार मिश्र

एक महाशय अपने यहां के आलुओं की तारीफ के पुल बांधते हुए बोले, "क्या आप ने शाहजहांपुर के आलू देखे हैं? कितने बड़ेबड़े होते हैं."

दूसरे महाशय कुछ सोच कर बोले, "देखे तो नहीं हैं. हां, एक बार टेलीफोन से एक मन आलू का भाव पूछा था तो जवाब मिला, "हम आलू काट कर नहीं बेचते."

—अवनीश

◆ एक अफसर सैनिकों को परेड करवा रहा था. उस ने सभी सैनिकों को अपनाअपना दायां पैर ऊपर उठाने को कहा. परंतु एक सैनिक ने गलती से अपना बायां पैर ऊपर उठा लिया तो अफसर गुस्से में चिल्लाया, "अरे, ये दोनों पैर ऊपर उठाए कौन खड़ा है?"

—भवानीसिंह (सर्वोत्तम)

MUKTA June (First) 1981

R.N. 6502/60 D(C)-104

अप्रैल (द्वितीय) अंक के 'मुक्त विचार' में प्रकाशित टिप्पणी 'डाकू समस्या हल हो तो कैसे?' विचारणीय लगी. अभी कुछ समय पूर्व डाकू छविराम का जिस प्रकार अंत हुआ, उसे देखते हुए यह कहना गलत न होगा कि पुलिस ने एक सराहनीय कार्य किया है. डाकुओं को जहां पुलिस से संरक्षण नहीं मिल पाता, उन का अंत निश्चित हो जाता है. जब कि दूसरी ओर पुलिस के संरक्षण में रह कर एक छोटा डाकू भी उभर कर एक दिन डाकू सरदार छविराम का रूप धारण कर लेता है.

—बीरबल मेहर

*

अप्रैल (द्वितीय) अंक के 'मुक्त विचार' में प्रकाशित टिप्पणी 'परीक्षा प्रश्न पत्रों की गोपनीयता' में व्यक्त विचारों से मैं पूर्णतया सहमत हूं. मध्य प्रदेश की 11वीं की बोर्ड की परीक्षा में ऐसी ही घटना घटित हुई. एक प्रश्न पत्र किसी तरह समय से पूर्व पता चल गया. इसलिए उस दिन उस विषय की परीक्षा स्थगित कर दूसरी तिथि दी गई. इस से संबद्ध छात्रों को बहुत परेशानी का सामना करना पड़ा. अतः यह जरूरी है कि प्रश्न पत्र समय से पूर्व पता न चल पाए, इस के लिए कठोर कदम उठाए जाने निहायत जरूरी हैं.

—गुरबीरसिंह चावला

*

मार्च (प्रथम) के अंक के 'मुक्त विचार' में प्रकाशित टिप्पणी 'बेरोजगार: अच्छा बहाना' पढ़ा. निर्भीक व स्पष्ट विचारों के लिए बधाई. निःसंदेह यह जनता के धन को अपने समर्थकों में बांटने की भ्रष्ट राजनीतिबाजों की योजना है. बेरोजगारों के लिए नौकरियों की ऐसी अनेक योजनाएं न केवल हिमाचल प्रदेश की सरकार द्वारा ही चलाई गई हैं, बल्कि भारत के कई अन्य राज्यों में चलाई जाती हैं और इस प्रकार करोड़ों रुपए की रोजगार के नाम पर लूट होती है. उधर बेरोजगारों को रोजगार के नाम पर कुछ भी नहीं प्राप्त होता.

मात्र दिखावे के लिए इस तरह की योजनाएं न चलाई जाएं तो बेहतर है. भारत में कई वर्षों से बेरोजगारी हटाने हेतु ऐसी न जाने कितनी ही योजनाएं चलाई गई हैं और चल रही हैं. परंतु बेरोजगारी की समस्या को अभी तक हल नहीं किया जा सका है. बेरोजगारों के लिए चलाई जाने वाली इन योजनाओं से भला हो रहा है केवल राजनीतिबाजों, उन के समर्थकों व भाईभतीजों का.

सुधीर चौरसिया

*

अप्रैल (द्वितीय) अंक में प्रकाशित लेख 'जापान में हड़ताल और छुट्टी से नफरत' ने दिमाग को झकझोर कर रख दिया. आखिर जापान के उदाहरण से हम सबक क्यों नहीं ले रहे हैं? हमारी धार्मिक भावना का राष्ट्र प्रेम से

'संपादक के नाम' के लिए मुक्ता की रचनाओं पर आप के विचार आमंत्रित हैं. साथ ही आप देश के राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक आदि विषयों पर भी अपने विचार इस स्तंभ के माध्यम से रख सकते हैं. प्रत्येक पत्र पर लेखक का पूरा नाम व पता होना चाहिए, चाहे वह प्रकाशन के लिए न हो. पत्र इस पते पर भेजिए :

संपादक के नाम,
मुक्ता, झंडेवाला एस्टेट,
नई दिल्ली-110055.

न जुड़ो होना इस का सब से बड़ा कारण है. हमारा सब से बड़ा धर्म राष्ट्र प्रेम और उस के प्रति निष्ठा तथा कर्तव्यपरायणता होनी चाहिए. —प्रकाश छाबड़ा

*

अप्रैल (प्रथम) अंक 'लघु व्यापार विशेषांक' के रूप में अपने आप में अद्वितीय रहा. लेख 'नौकरी नहीं व्यापार कीजिए' में व्यापार के संबंध में अमूल्य सुझाव, चेतावनी तथा कार्यप्रणाली का जो ब्यौरा दिया गया है, वह बहुत ही उपयोगी है. उस से नए व्यापारी तो लाभ उठा ही सकते हैं, पुराने व्यापारी के लिए भी वह कम उपयोगी नहीं है. निश्चय ही लेख में वर्णित विचारों को अपना कर कोई भी व्यक्ति सफल व्यापारी बन सकता है.

—शकुनचंद गुप्त

*

लेख 'नौकरी नहीं व्यापार कीजिए' से आम लोग सहमत नहीं हो सकते, क्योंकि आज व्यापार करने वालों को ज्यादा मुसीबतों का सामना करना होता है. स्थानीय शासन से ले कर राज्य और केंद्र सरकार तक सब उन के प्रति कठोर होते हैं. कर एवं चुंगी प्रणाली इतनी कड़ी और भ्रष्ट हो चुकी है कि एक सीधासादा व्यक्ति उन से निपट ही नहीं सकता. अतः मजबूरी में उस के सामने एक ही विकल्प रह जाता है कि वह नौकरी करे और उसी को प्राथमिकता दे. अगर शासन का यही रुख रहा तो देश किस हालत में पहुंच जाएगा, कुछ कहा नहीं जा सकता.

—बिमलकुमार

*

'नौकरी नहीं व्यापार कीजिए' में लेखक ने लिखा है 'जहां तक संभव हो, हमेशा माल नकद बेचना चाहिए व उधार खरीदना चाहिए.' इस से साफ प्रकट होता है कि उन्होंने कभी व्यापार नहीं किया. सामान उधार खरीद कर कोई भी व्यापारी बाजार मूल्य पर सामान नहीं बेच सकता, क्योंकि उसे उधार लिए गए सामान की कीमत नकद खरीद की अपेक्षा अधिक देनी पड़ेगी. ऐसी हालत में वह व्यापारी उस सामान का दाम बढ़ा कर बेचेगा या फिर कम तोल कर. उदाहरण के लिए यदि एक 16.5 किलो ग्राम का डालडा का कनस्तर नकद खरीदने पर 250 रुपए में मिलेगा तो उधार लेने पर 258-260 रुपए में मिलेगा. फिर भला छोटा व्यापारी उसे बाजार मूल्य पर कैसे बेच सकता है?

—महेशचंद्र गुप्ता

*

'लघु व्यापार विशेषांक' बहुत ही उपयोगी है. इस में बहुत से व्यवसायों के गूढ़तम रहस्यों का बड़ी बेबाकी के साथ वर्णन किया गया है या कहा जाए कि रहस्योद्घाटन किया है तो ठीक होगा. 'रेस्टोरेंट', 'पार्किंग स्टैंड,' 'चलता फिरता अल्पाहारगृह,' 'मशीन द्वारा ठंडा पानी' आदि व्यवसायों के अपनाने में सामने आने वाली सभी कठिनाइयों का स्पष्ट वर्णन प्रशंसनीय है, इस से इनकार नहीं. परंतु इन विवरणों में जिस तरह घूसखोरी की बात कही गई है, वह आप की भ्रष्टाचार विरोधी नीति के विरुद्ध नहीं है क्या? क्या वह घूसखोरी को प्रोत्साहन देना नहीं है?

—रामदास घुसिया

घूसखोरी की बात जानबूझ कर स्पष्ट की गई है, ताकि नव व्यवसायी इस के लिए भी तैयार रहें. साथ ही हम साधारण पाठकों को भी बतलाना चाहते हैं कि व्यवसायियों को किस प्रकार सरकारी कर्मचारियों की जबरदस्ती सहनी पड़ती है. कटु तथ्यों को अनदेखा कर देने से वे समाप्त नहीं हो जाते.

—संपादक

*

मुक्ता का 'लघु व्यापार विशेषांक' पढ़ा. बहुत ही पसंद आया, पर इस अंक में प्रकाशित कहानी 'तनहा सफर' बिलकुल ही बकवास लगी. —अशोक खुराना

*

मुक्ता के 'लघु व्यापार विशेषांक' में आप ने किसी भी व्यवसाय के बारे में संपूर्ण जानकारी नहीं दी है. साथ ही यह भी नहीं बताया है कि अमुक वस्तु का निर्माण कहां होता है व उस का थोक बाजार कहां है?

आप ने टेप रिकार्डर के कैसेट के बारे में लिखा है कि टोनी जापान के बने हैं, जो कि बिलकुल गलत है. टोनी जापान के नहीं, बल्कि सिंगापुर के बने होते हैं. खाली कैसेट तो नासिक में भी मिलते हैं.

स्टील के बरतन व क्राकरी का व्यापार यदि स्वयं की दुकान न हो तो 25,000 रुपए में हो ही नहीं सकता. बड़े नगरों की तो बात ही छोड़िए, वहां तो लाखों रुपए सिर्फ पगड़ी के ही देने पड़ते हैं, छोटे शहरों में भी 25,000 रुपए तो सिर्फ दुकान के फरनीचर व साजसज्जा में ही खर्च हो जाते हैं.

स्टील के बरतन मुरादाबाद में नहीं, बल्कि ज्यादातर बंबई में बनते हैं. हां, दो या तीन चीजें, जैसे पानी के जग, चाय की केतली आदि मुरादाबाद में बनते हैं.

—गोपाल शामनाणी

अप्रैल (प्रथम) अंक में प्रकाशित लेख 'व्यावसायिक फिल्मों में काम कर के मैं ने कोई पाप नहीं किया है : शशिकपूर' पढ़ा. इस में शशि कपूर ने कहा, सही रूप में तो हमारे यहां अच्छी फिल्म बनना 1950 के बाद से ही बंद हो गया है. शशि कपूर का यह मत पढ़ कर बड़ा आश्चर्य हुआ. सही तो यह है कि हिंदी फिल्मों का तकनीकी विकास इन दो दशकों में ही अधिक हुआ है. सन 1950 के बाद के 10-15 वर्षों में अनेक श्रेष्ठ फिल्में बनी हैं, जिन्हें हिंदी फिल्मों की प्रगति में मील के पत्थर कहा जाए तो अतिशयोक्तिपूर्ण नहीं होगा.

इस अरसे में बनी विमल राय की 'दो बीघा जमीन,' 'परिणीता,' 'सुजाता,' गुरुदत्त की 'प्यासा,' 'कागज के फूल,' 'साहिब बीबी और गुलाम,' महबूब की 'मदर इंडिया'

मुक्ता के लेखक

डा. सत्यकुमार

इस अंक की कहानी 'सोलह आने सच' के लेखक डा. सत्यकुमार बड़ौत (उ.प्र.) में रसायन विभाग के प्राध्यापक हैं. काल्पनिक पात्रों के माध्यम से आम आदमी की मनःस्थिति का मनोवैज्ञानिक विश्लेषण आप की कहानियों का मुख्य आधार रहा है.

रामकुमार

प्रस्तुत अंक के अग्रलेख 'राजस्थान की लघु चित्र शैलियां' के लेखक रामकुमार जनसंपर्क अधिकारी हैं. भारतीय कला, संस्कृति और समाज के विविध पहलुओं की जानकारी बहुत ही सरल व स्पष्ट भाषा में आम पाठकों तक पहुंचाना आप के लेखन का मुख्य ध्येय रहा है.

दर्शकों के दिलों में अब तक बसी हुई हैं. व्ही शांताराम की 'दो आंखें बारह हाथ,' 'झनक झनक पायल बाजे,' 'नवरंग,' 'गीत गाया पत्थरों ने' जैसी कलात्मक फिल्में भी सन 1950 के बाद की ही देन हैं. यहां तक कि शशि कपूर के बड़े भाई राजकपूर ने इन्हीं वर्षों में 'जागते रहो' जैसी कलात्मक फिल्म हिंदी जगत को दी है. ऋषिकेश मुखर्जी की 'अनुपमा,' 'आशीर्वाद,' 'आनंद,' 'नमक हराम' क्या श्रेष्ठ फिल्में नहीं हैं? 1950 से 1970 के दौरान बनी 'मुगले आजम' (के. आसिफ की) भव्यता तथा कला का श्रेष्ठ नमूना थी. सुनीलदत्त कृत 'यादें' भी इन्हीं वर्षों की एक उल्लेखनीय प्रयोगात्मक फिल्म थी.

सन 1950 के बाद इतनी सुंदर व दर्शनीय फिल्में बनने पर भी शशि कपूर का यह कहना कि सन 1950 के बाद अच्छी फिल्म बनना बंद हो गया, कितना गलत है. हो सकता है, अच्छी फिल्म की व्याख्या शशिकपूर की नजर में कुछ और ही हो.

—वसंत खेड़ेकर

*

मार्च (द्वितीय) अंक में प्रकाशित लेख 'मानवहित में अमानवीय व्यवहार, प्रायोगिक पशुओं के प्रति दया का प्रश्न' विचारोत्तेजक लगा. जीवनदायी दवाइयों के लिए पशुओं पर किए गए परीक्षण अमानवीय होते हुए भी अवांछनीय नहीं ठहराए जा सकते. किंतु सौंदर्य प्रसाधनों के निर्माण के लिए मूक जीवों पर होने वाले बर्बर अत्याचारों के लिए हम वही दलील नहीं दे सकते. —सुभाषचंद्र पासी

*

फरवरी (प्रथम) अंक में प्रकाशित लेख 'आधुनिक मसीहा और उन के पंथ' पढ़ कर यह बात स्पष्ट हो गई कि धर्म संप्रदायों की आड़ में किस प्रकार तस्करी, हिंसा, जासूसी, वासना वृत्ति जैसी मन की विकृतियों को शांत करने के लिए धर्मगुरुओं द्वारा अपने शिष्यों एवं अनुयायियों को गुमराह किया जा रहा है. इस से मोक्ष की प्राप्ति एवं आध्यात्मिक ज्ञान का प्रचारप्रसार' तो क्या उलटे एक सड़ीगली व विकृत प्रथा पनप रही है.

गलती केवल धर्मगुरुओं की ही नहीं बल्कि उन लोगों की भी है जो मन की शांति खोजने के लिए इन संप्रदायों एवं पंथों में निरीह बन कर चले जाते हैं और उन के सदस्य बन जाते हैं, जब कि वास्तविकता वह पहले से ही जानते हैं. —संतोष नौटियाल

और बिना कुछ खर्च किए लगातार दोनों पत्रिकाएं प्राप्त कीजिए

आप जानते ही हैं कि आप के पूरे परिवार की प्रिय पत्रिका सरिता शुरू से ही सामाजिक क्रांति के क्षेत्र में आगे रही है और अपने देशवासियों को विश्व के उन्नत समाजों के साथ कदम बढ़ा कर चलने के लिए अनेक आंदोलन चलाती रही है. इस के अलावा आप का स्वस्थ मनोरंजन करने में भी सरिता कभी पीछे नहीं रही. रूपरंग व साजसज्जा में भी सरिता अपने क्षेत्र की हर पत्रिका से बढ़चढ़ कर है.

सरिता की पूरक मुक्ता भी हिंदी की प्रमुख पाक्षिक पत्रिका है, जो आप के अपने जीवन को सरस, सजग व स्पष्ट बनाने में आप की सहायता करती है.

सरिता और मुक्ता के प्रकाशन के पीछे जो मूल दृष्टिकोण है, वह अन्य पत्रिकाओं की तरह व्यापारिक नहीं है. सरिता और मुक्ता तो अपने में ऐसी संस्थाएं हैं, जिन का लक्ष्य है हजारों वर्षों से गुलाम, विदेशियों द्वारा पांवों से रौंदे हुए हिंदू समाज को संसार में गर्व से सिर उठा कर चलने के लिए प्रेरणा देना. यदि हिंदू समाज ने अपना पुनर्गठन नहीं किया तो फिर गुलाम होते देर नहीं लगेगी. आज भी हजारों वर्ग मील भारतीय भूमि विदेशियों के कब्जे में है.

किसी भी ऐसी लक्ष्य की पूर्ति के लिए बहुत बड़े पैमाने पर सामूहिक सहयोग और सद्भाव की आवश्यकता होती है.

सरिता किसी सरकारी संस्थान, बड़े पूंजीपति या राजनीतिक दल से संबंधित नहीं है, न ही यह किसी से किसी प्रकार की सहायता स्वीकार करती है. यह केवल एक ही वर्ग की सहायता और बलबूते पर निर्भर है. और वह हैं सरिता के पाठक. इन्हीं की प्रेरणा, सहायता व प्रोत्साहन से सरिता बड़ी से बड़ी लड़ाई लड़ लेती है.

हिंदू समाज के नवनिर्माण में भाग लीजिए

आज पत्रकारिता में बड़ी पूंजी, सरकार का और देशी व विदेशी

राजनीतिक दलों का बड़े पैमाने पर हस्तक्षेप है. इस 'बड़े धन' के कारण स्वतंत्र पत्रकारिता प्रायः खत्म होती जा रही है. स्वतंत्रता बनाए रखने का केवल एक ही तरीका है—पाठक स्वतंत्र पत्रपत्रिकाओं को अपना कर उन्हें बल दें.

सरितामुक्ता विकास योजना इसी विश्वास पर निर्भर है. साथ ही आप को यह अभूतपूर्व सुविधा भी देती है: आप बिना कुछ खर्च किए एक वर्ष में सरितामुक्ता के 48 अंकों 9,000 से भी अधिक पृष्ठों की सामग्री से लाभ उठा सकेंगे.

सरितामुक्ता के प्रसारप्रचार की इस योजना से लाभ उठाने के लिए आप को सिर्फ यह करना होगा:

सरिता कार्यालय के पास 750 रुपए जमा करा दीजिए.

आप के ये रुपए आप की धरोहर के रूप में जमा रहेंगे.

आप जब भी चाहें, छः महीने का नोटिस दे कर अपने रुपए वापस ले सकेंगे. सरिता कार्यालय भी इसी प्रकार छः महीने का नोटिस दे कर आप की अमानत आप को लौटा सकेगा. जब तक यह रकम सरिता कार्यालय में जमा रहेगी, तब तक सरिता व मुक्ता बिना किसी शुल्क के आप को बराबर मिलती रहेंगी. जब यह रकम आप वापस मंगाएंगे या सरिता कार्यालय द्वारा आप को वापस कर दी जाएगी तो सरिता व मुक्ता भेजनी बंद कर दी जाएंगी.

आप यदि 750 रुपए एक साथ जमा न कराना चाहें तो तीन मासिक किस्तों में भेज सकते हैं. पहले मास 300 रुपए, दूसरे मास 300 रुपए और तीसरे मास 150 रुपए. आप की पहली किस्त प्राप्त होते ही सरिता व मुक्ता पाक्षिक के अंक आप के पास भेजे जाने लगेंगे. दूसरी और तीसरी किस्त ठीक एकएक महीने के अंतर से कार्यालय में पहुंच जानी चाहिए अन्यथा सरिता कार्यालय को अधिकार होगा कि तब तक भेजी जा चुकी प्रतियों का मूल्य काट कर आप की रकम आप को लौटा दे.

आप केवल सरिता या केवल मुक्ता भी केवल 400 रुपए जमा कर के प्राप्त कर सकते हैं.

विशेष उपहार
सात सौ पचास रुपए एक किस्त में जमा कराने पर पचास रुपए की पुस्तकें मुफ्त.

अपनी रकम सुरक्षित रख कर बिना कुछ भी व्यय किए सरितामुक्ता की इस विस्तार योजना में भाग लीजिए. मनीआर्डर, बैंक ड्राफ्ट व चैक "दिल्ली प्रेस" के नाम बनवाएं व इस पते पर भेजें:

दिल्ली प्रेस, 3-ई झंडेवाला एस्टेट, नई दिल्ली-55

स्वतंत्र पत्रकारिता को प्रोत्साहन दीजिए

संपादकीय

मई (द्वितीय) 1982

मुक्त विचार

आरक्षण : नई सिफारिशें

1978 में जनता सरकार द्वारा नियुक्त मंडल आयोग ने पिछड़ी जातियों को सरकारी व गैरसरकारी नौकरियों में आरक्षण देने का प्रस्ताव किया है. अनुसूचित जातियों व जनजातियों के लिए 22.5 प्रतिशत स्थान पहले से ही सुरक्षित हैं और इस आयोग ने पिछड़ी जातियों के लिए 27 प्रतिशत स्थान सुरक्षित रखने की सिफारिश की है.

आयोग के अनुसार इन पिछड़ी जातियों की जनसंख्या कुल जनसंख्या का 52 प्रतिशत है, लेकिन संवैधानिक कठिनाइयों के कारण उन्हें इतना संरक्षण देना संभव नहीं है. सर्वोच्च न्यायालय ने एक फैसले में राय दी है कि 50 प्रतिशत से ज्यादा संरक्षण किसी भी स्थिति में संवैधानिक नहीं माना जा सकता. अतः आयोग ने 27 प्रतिशत की ही सिफारिश की है.

इस सिफारिश का शुरू से ही कड़ा विरोध आरंभ हो गया है. सरकार भी इस नई आफत को आसानी से स्वीकार नहीं करेगी, क्योंकि हरिजनों और हरिजनों की ही तरह पिछड़ी आदिम जातियों को मिलने वाले 22 प्रतिशत आरक्षण पर ही पिछले कई सालों से गरमागरमी चल रही है.

आरक्षण का प्रश्न अब गंभीर बनता जा रहा है क्योंकि इसी से सरकारी नौकरियां मिलती हैं. सरकारी नौकरी आज हमारे देश में पैसा कमाने का सब से अच्छा तरीका है. एक बार नौकरी मिल गई तो समझिए जीवन भर की पेंशन तय हो गई. वेतन तो मिलेगा ही, मकान (या भत्ता), छुट्टियां, यात्रा भत्ता, सस्ती चिकित्सा, अवकाश प्राप्ति के बाद एक मुश्त पैसा या पेंशन भी मिलती है. काम न करने की जितनी छूट सरकारी नौकरी में है, उतनी और कहीं नहीं. और इस सब से ऊपर है– भरपूर रिश्वत कमाने का अधिकार.

अब कौन इस प्रकार की नौकरी नहीं चाहेगा?

उच्च सवर्ण वर्ग तो जो पहले ही निचले वर्गों को लूट कर या धर्म के नाम पर फुसला कर गुजारा करता था, सरकारी नौकरी को अपना अधिकार समझता है. ब्राह्मण इसे जन्मजात मिलने वाले पुजारी पद के समकक्ष मानता है और क्षत्रिय जागीरदारी.

निश्चित ही जब कल के चूड़ेचमार उन की सदियों की विरासत पर अधिकार जमाना चाहेंगे तो बेचैनी होगी ही. पर समस्या तो यह है कि जब शिक्षित अथवा अर्धशिक्षित पिछड़ी व कथित अछूत जातियों के लोग उन्हें मौज मनाते देखते हैं तो वे अपने मताधिकार के बदले नौकरी का अधिकार मांगते हैं.

यदि एक समाज में सब बराबर या

लगभग बराबर हों तो हर वर्ग के लोग बराबरी से प्रतियोगिताओं में बैठेंगे और योग्यतानुसार चुने जाने पर ही नौकरी पाएंगे तथा सरकारी या अन्य गैरसरकारी नौकरियों में सब का प्रतिशत लगभग एक सा होगा. यह तो सदियों तक इन वर्गों को अशिक्षा और मानसिक गुलामी में रखने की वजह से है कि आज उन का नौकरियों में प्रतिशत जनसंख्या के हिसाब से न के बराबर ही है.

मंडल आयोग की सिफारिश चाहे अव्यावहारिक हो, नैतिकता की दृष्टि से ठीक है. किसी भी एक वर्ग को यह अधिकार नहीं है कि वह दूसरे पर पीढ़ी दर पीढ़ी गुलामी थोपता रहे और उस से अधिक काम करा कर कम मेहनताना देता रहे. खुद अच्छा कमा खाए और दूसरे वर्गों को रोटीरोटी के लिए भी मुहाल करे.

पर प्रश्न तो यह है कि 52 प्रतिशत पिछड़ी जातियों और लगभग 20 प्रतिशत कथित अछूत जातियों के लिए यदि इतनी सारी सरकारी नौकरियां सुरक्षित कर दी गईं तो सवर्णों के शिक्षित बेरोजगार कहां जाएंगे? निचली या पिछड़ी जातियों के युवा तो हाथ का या मेहनत का काम कर के कमा भी लेते हैं, पर ब्राह्मणों, क्षत्रियों के बेटे क्या करेंगे? सवर्ण उम्मीदवारों की ही संख्या इतनी अधिक है कि अगर वे सारी सरकारी नौकरियां पा लें तो भी लाखों बेरोजगार रहेंगे.

इस का हल अब एक ही है– सरकारी नौकरियों को इतना आकर्षक न रहने दिया जाए, सरकारी कर्मचारी को आम बाजार में मिलने वाले वेतन से कम वेतन मिले. इस से यदि आरक्षित स्थानों पर पिछड़ी या निचली जाति के लोग भी आ जाएंगे तो उन को बहुत अधिक वेतन नहीं देना होगा.

सवर्णों को कहा जाए कि वे निजी उद्योगव्यवसायों में जाएं, कृषि में जाएं, चिकित्सा जैसी सेवाओं में जाएं. वहां उन्हें आरक्षण के कारण भेदभाव भी सहना नहीं पड़ेगा और उन की योग्यता (आखिर आरक्षण पाने वाले तो अयोग्य हैं ही) का भी सही मूल्य मिलेगा.

न्यायप्रक्रिया में फेरबदल क्यों?

केंद्रीय सरकार सर्वोच्च एवं उच्च न्यायालयों में बढ़ते हुए विचाराधीन मामलों को कम करने के लिए ट्रिब्यूनलों की नियुक्ति करने की सोच रही है. सरकार चाहती है कि कम से कम श्रम, सरकारी नौकरियों तथा करों के मामले उच्च व सर्वोच्च न्यायालय में न जाएं.

केंद्रीय विधि मंत्री यह भी चाहते हैं कि हर मामले में एक सुनवाई और एक अपील का ही अधिकार होना चाहिए. आजकल कई मामलों में पांचपांच छःछः अपीलें होती हैं और हर एक अपील निबटाने में तीनचार साल तक लगना मामूली बात है. छोटेछोटे मामले भी इसलिए वर्षों तक लटके रहते हैं.

मंत्री महोदय की इच्छा है कि उच्च व सर्वोच्च न्यायालय केवल पेचीदा या संवैधानिक मामले ही सुनें ताकि हर ऐरागैरा इन न्यायालयों का समय खराब न करे.

सरकार के अन्य क्रियाकलाप को जाने बिना तो ये सब सुझाव अच्छे लगते हैं. पर जब सरकार की नीयत ही खराब हो तो अच्छे सुझाव में भी खामियां ढूंढ़ना कोई बड़ी बात नहीं है.

पिछले 10-12 वर्षों से सरकार किसी न किसी तरह न्यायालयों के अधिकारों को कम करने में लगी हुई है. सरकार की अब मंशा यह नजर आती है कि उस का हर निर्णय–चाहे वह मंत्रिमंडल ने लिया हो या किसी अदना से बड़े बाबू ने–बिना किसी चूंचपड़ किए मान्य हो. चाहे किसी को अंधा करने का मामला हो या बिना सबूत बंद करने का, किसी की संपत्ति को जब्त करने का आदेश हो या राजनीतिबाज के सगे संबंधियों को सरकारी संपत्ति खैरात में बांटने का, सरकार यह नहीं चाहती कि न्यायालय उस में टांग अड़ा कर नागरिक के अधिकारों की रक्षा करे.

इसी लिए संविधान में एक के बाद एक संशोधन किए गए हैं, नएनए कानून बनाए

गए हैं, सर्वोच्च व उच्च न्यायालय में खाली स्थान जानबूझ कर नहीं भरे गए हैं तथा अंतिम हथियार के तौर पर न्यायाधीशों का तबादला करने तथा उन्हें अस्थायी रखने की नीति अपनाई गई है. ऐसे माहौल में कैसे मान लिया जाए कि सरकार वास्तव में न्याय दिलाने की प्रक्रिया में गति लाने के लिए संशोधन करना चाहती है, न्यायापालिका का गला घोंटने के लिए नहीं?

वैसे भी ट्रिब्यूनलअपने आप में मामले कम नहीं कर सकते. ट्रिब्यूनल और न्यायालय के कामकाज के तरीके में कोई विशेष अंतर नहीं होता. फर्क सिर्फ इतना होता है कि अपील में उच्च न्यायालय ट्रिब्यूनल के फैसले की बारीकी से जांच नहीं करता. लेकिन मात्र इतने से ऊपरी न्यायालयों में कामकाज कम नहीं हो सकता.

न्यायालयों में कामकाज कम करने का एक ही तरीका है और वह है नएनए कानूनों की भरमार कम करना. केंद्रीय व राज्य सरकारें हर साल सैकड़ों कानून बनाती हैं और हर कानून नागरिकों के अधिकार कम करता है. न्यायालयों में अधिकतर काम इन कानूनों के अंतर्गत की गई सरकारी काररवाई को चुनौती देना ही होता है. सरकार अगर हजार दो हजार कानून कम कर दे तो अदालतों में काम अपने आप कम हो जाएगा.

अनुपयोगी रोजगार कार्यालय

देश में शिक्षित व अर्धशिक्षित बेरोजगारों की संख्या लगातार बढ़ती जा रही है. पिछले 10 वर्षों में यह संख्या तीन गुना हो गई है और इस समय बेरोजगारों के रजिस्टरों में एक करोड़ 78 लाख नाम दर्ज हैं.

मजेदार बात यह है कि शहरों या शहरी इलाकों में काम करने वाले बारोजगार लोगों की संख्या लगभग पांच करोड़ ही है. रोजगार दफ्तरों में सामान्यतः शिक्षित और शहरी युवक ही अपना नाम दर्ज कराते हैं क्योंकि उन्हें ही इन से नौकरी मिलने की आशा हो सकती है. रोजगार दफ्तर न तो गांवों में हैं और न ही उन के पास अनपढ़ लोगों के लिए कोई नौकरियां हैं.

इन पांच करोड़ बारोजगार लोगों में 15 से 30 वर्ष तक के लोगों की संख्या डेढ़ दो करोड़ से अधिक नहीं हो सकती. अतः इस आयु वर्ग के हर रोजगार वाले व्यक्ति के पीछे एक बिना रोजगार वाला युवा है.

यदि यह आंकड़े सही हैं तो देश की स्थिति बहुत गंभीर है. इन युवाओं पर उन के मातापिता, सरकार व समाज ने हजारों करोड़ रुपए खर्च किए हैं. वे अगर कुछ उत्पादन नहीं करते तो उन पर लगी इतनी पूंजी बेकार जा रही है.

हां, यह अवश्य संभव है कि बेरोजगारी के आंकड़े बिलकुल गलत हों. रोजगार कार्यालय सरकारी नौकरी के लिए अब एक आवश्यक औपचारिकता मात्र रह गया है. नौकरियां दिलाना तो इन कार्यालयों के बस का काम नहीं, क्योंकि जब नई नौकरियां ही न हों तो वे क्या करें? वे तो सिर्फ सरकारी कार्यालयों के लिए आवेदन इधर से उधर करने के दफ्तर रह गए हैं. पर चूंकि सरकारी नौकरी उन के बिना मिलती ही नहीं, इसलिए सरकारी नौकरी चाहने वाले सभी इन दफ्तरों में नाम दर्ज करा देते हैं.

उन्हें नागरिक क्षेत्र में नौकरी मिल जाए तो भी वे रोजगार दफ्तर से नाम नहीं कटाते ताकि जैसे ही सरकारी नौकरी मिले, वे उस का लाभ उठा सकें.

एक तरह से रोजगार दफ्तर युवाओं को कुंठित करने का ही काम कर रहे हैं. जब तक नाम दर्ज रहता है, हर युवा कोई और नौकरी या व्यवसाय पूरे मन से नहीं करता क्योंकि उसे आशा होती है कि एक न एक दिन उसे सरकारी नौकरी के लिए अवश्य बुलावा आ जाएगा. न उसे सरकारी नौकरी मिलती है, न ही वह अन्य काम कर पाता है.

जब सरकार को यह मालूम है कि वह एक डेढ़ करोड़ लोगों को नौकरी नहीं दिला सकती तो वह इन रोजगार दफ्तरों को बंद ही क्यों नहीं कर देती? इस से कम से कम उन पर होने वाले करोड़ों रुपयों की बचत तो होगी

और नौकरी चाहने वाले भी अपने वलवूते कुछ करने का प्रयत्न कर सकेंगे.

सरकार अब शराब बनाएगी

लीजिए, सरकार पहले शराव पर केवल कर लगाती थी, फिर उस ने शराव के ठेके देने शुरू कर दिए, वाद में खुद ही शराव की विक्री करने लगी और अव उत्पादन भी करने की सोच रही है. जहां सरकार को नशावंदी करने का संवैधानिक आदेश हो, वहां जव अधिकारी शराव वनाने की वातें करने लगें तो फिर कहना ही क्या.

और सिर्फ शराव वनाने की ही बात नहीं, सरकार तो उसे कोकाकोला की तरह बोतलों में बंद कर के रेढ़ियों पर बिकवाने की योजना वना रही है. धन्य हों गांधी के नाम पर वोट मांगने वाले ये लोग!

सरकारी कंपनी माडर्न बेकरीज ने 1977 के वाद कोकाकोला का स्थान लेने के लिए देश में कई जगह 77 (डवल सेवन) पेय के प्लांट लगाए थे. जव तक नागरिक क्षेत्र के पेय निर्माता नहीं आए, यह पेय कुछ चला, पर थम्स अप और कैंपा कोला आदि के आने के वाद ठंप हो गया.

अव माडर्न बेकरीज इन जंग खा रहे वार्टलिंग प्लांटों में बीयर की बोतलें भरने की योजना वना रही है ताकि लोगों में शराव पीने की प्रवृति वढ़ा कर मुनाफा कमाया जा सके. कहने को तो इस पेय में शराव का अंश कम होगा, पर जो भी स्वाद होगा वह शराव का ही तो होगा. यह तो निश्चित ही है कि एक वार ऐसा पेय वनाने की अनुमति मिल गई तो माडर्न बेकरीज बीयर पीते लड़केलड़कियों, वृद्धों, वच्चों के विज्ञापन दिखा कर औरों को भी बीयर पी कर सरकारी खजाने भरने की प्रेरणा देगी ही.

चलिए, ठीक ही है. इस से सरकार ने यह तो स्वीकार कर ही लिया कि वह नागरिकों के गम कम करने के लिए कुछ नहीं कर सकती तो गम भुलाने के लिए शराब तो पिला ही सकती है.

मुक्ता

भाषा विवाद का सही हल

कर्नाटक में भाषा विवाद का जो हल अपनाया गया है, उसे तुरंत सारे देश में लागू किया जाना चाहिए. वहां भाषा विवाद एक समिति द्वारा कन्नड़ को सभी स्कूली छात्रों के लिए प्रथम भाषा के रूप में पढ़ाने की सिफारिश पर शुरू हुआ था. आंदोलनकारी चाहते थे कि सिफारिश के अनुसार तमिल, उर्दू व हिंदी भाषी भी कन्नड़ पढ़ें.

यह सरासर ज्यादती थी क्योंकि जिन की मातृभाषा कन्नड़ है वे अवश्य ही गैरकन्नड़ लोगों के मुकाबले अधिक अंक प्राप्त कर लेंगे.

नए सुझाव के अनुसार कर्नाटक में प्रत्येक छात्र को प्रथम भाषा के रूप में कन्नड़, तमिल, मलयालम, हिंदी, उर्दू और अंगरेजी में से किसी भी भाषा को लेने की छूट होगी पर जो कन्नड़ को प्रथम भाषा के रूप में नहीं लेंगे उन्हें दूसरी भाषा के रूप में कन्नड़ पढ़नी पड़ेगी. इसी प्रकार कन्नड़भाषियों को दूसरी भाषा के रूप में वाकी में से कोई एक भाषा पढ़नी होगी.

साथ ही सभी छात्रों को एक तीसरी भाषा भी लेनी होगी जो इन भाषाओं के साथसाथ फारसी, संस्कृत, अरवी में से एक हो सकती है.

आम तौर पर कन्नड़भाषी कन्नड़ को मुख्य भाषा के रूप में और हिंदी व अंगरेजी को दूसरी भाषा के रूप में लेंगे और गैरकन्नड़-भाषी मातृभाषा के साथ कन्नड़ व अंगरेजी पढ़ेंगे. तीन भाषाओं वाला यह फार्मूला ही इस देश में सब से अच्छा है क्योंकि इस से लगभग सभी छात्रों को मातृभाषा के साथसाथ संपर्क की भाषाएं–हिंदी व अंगरेजी दोनों पढ़ने का अवसर मिलेगा.

उत्तर भारत के राज्यों में हिंदी व अंगरेजी के साथ तीसरी भाषा के रूप में संस्कृत पढ़ाई जाती है जो बिलकुल बेकार है. यहां भी तीसरी भाषा के रूप में कोई लोकप्रिय भाषा पढ़ाने की सुविधा दी जानी चाहिए.

राजस्थान की लघु चित्र शैलियां

लेख • रामकुमार
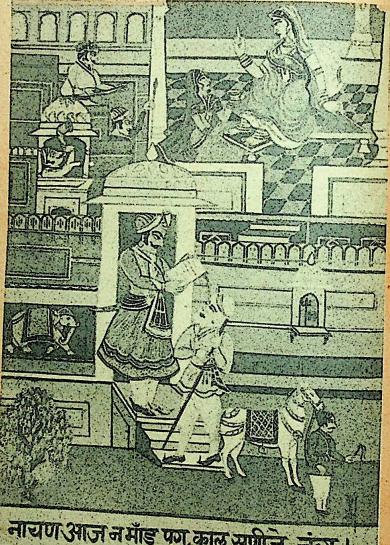
राजस्थान की लघु चित्र शैलियों का मोहक संसार अपने विविध रंगों, पृष्ठभूमि एवं प्रतीकों के कारण इतना समृद्ध है कि हर शैली अपने आप में एक पूर्णता लिए होती है. स्वतंत्रता से पूर्व राजस्थान की विभिन्न रियासतों या रजवाड़ों से ये शैलियां जुड़ी रहीं. प्राकृतिक पृष्ठभूमि एवं पर्यावरण की भिन्नता के संदर्भों में इन का भिन्नभिन्न स्वरूप निखरा. अपनी परंपरा की लंबी यात्रा में विविध चित्र शैलियां स्थान विशेष से इतनी जुड़ गईं कि ये उन स्थानों के नाम से विख्यात हो गईं. ये चित्र शैलियां अपने उदय एवं विकास की जमीन तक पूरी तरह सीमित हो गईं.

कोटा बूंदी शैली, जयपुर शैली, मेवाड़ शैली, अलवर शैली, जोधपुर शैली,

राजस्थान की लघु चित्र शैलियों में आभूषण, वेश-भूषा, शारीरिक बनावट आदि में उतनी ही एकदूसरे से भिन्नता है जितनी राजस्थान के लोकजीवन में.

बीकानेर शैली, नाथद्वारा शैली, किशनगढ़ शैली आदि लगभग 12 लघु चित्र शैलियां राजस्थान में ख्याति प्राप्त मानी गई हैं. पृष्ठभूमि, विषयवस्तु आदि की दृष्टि से लघु चित्र शैलियों की इस मनोरम दुनिया को अलगअलग रूपों में परखा जा सकता है.

राजस्थान के इन लघु चित्रों का

'युद्ध का निमंत्रण' शीर्षक की यह कृति राजस्थान की बूंदी लघु चित्र शैली का एक नमूना है (बाएं), कोटा लघु चित्र शैली का यह चित्र वहां के लोकजीवन की बोलती तसवीर है (नीचे).
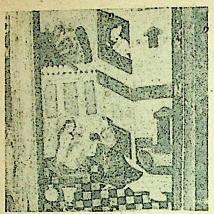
राजस्थानी लघु चित्र शैली का एक अनुपम चित्र.

रंगविधान अत्यंत आकर्षक और लुभावना है. रंगों और रेखाओं की अपनी मोहक रचना में सभी शैलियां पूर्ण होते हुए भी रंग विशेष के प्रति आकर्षण और प्रयोग की दृष्टि से इन में विविधता है. कोटा बूंदी के चित्रों में सुनहरे रंग का, उदयपुर के चित्रों में नीले रंग का, किशनगढ़ के चित्रों में सफेद और गुलाबी रंग का, जयपुर के चित्रों में हरे रंग का, जोधपुर तथा बीकानेर के चित्रों में पीले रंग का प्रयोग ज्यादा हुआ है. चित्रों की संपूर्ण बाह्य पट्टी के रंगों की दृष्टि से जयपुर शैली के लघु चित्रों में काले रंग की पृष्ठभूमि में चंदेरी, लाल रंगों का खुल कर प्रयोग किया गया है, बूंदी के चित्रों में लाल रंग के अतिरिक्त बार्डर में सुनहरे रंग का आधिपत्य रहा है.

रंगों के अतिरिक्त राजस्थान की विविध लघु चित्र शैलियों में पशुपक्षी, वृक्षों आदि के अंकन में भी भिन्नता पाई जाती है. यह विविधता या भिन्नता राजस्थान की प्राकृतिक विविधता को काफी सीमा तक अभिव्यक्त करती है और उस स्थान विशेष की गंध की परिचायक है जहां इन विविध शैलियों का जन्म और विकास हुआ.

किशनगढ़ शैली के चित्रों में केले के वृक्षों की घनी छटा, उदयपुर के चित्रों में कदम का वृक्ष, कोटा बूंदी के चित्रों में खजूर और जयपुर एवं अलवर के चित्रों में पीपल तथा वटवृक्ष की बहुतायत है.

जोधपुर एवं बीकानेर के चित्रों में आम का वृक्ष अधिक अंकित हुआ है. इस प्रकार प्राकृतिक वातावरण एवं मानस दोनों के अलगअलग आधार पर वृक्ष विशेष के प्रति मोह देखने को मिलता है.

राजस्थान के पश्चिमी रेगिस्तान में बहुतायत से देखने को मिलते हैं - कौआ, चील,ऊंट आदि और उन का बेहतरीन चित्रण भी बीकानेर और जोधपुर की चित्र शैलियों में हुआ है, जयपुर और अलवर के चित्रों में मोर और घोड़ा तथा उदयपुर शैली के चित्रों में हाथी और चकोर का चित्रण मिलता है. कोटा बूंदी के चित्रों में बत्तख, हिरण और शेर के प्रति मोह अधिक रहा है.

राजस्थान की लघु चित्र शैलियों में आभूषण, वेशभूषा, शारीरिक बनावट आदि में भी उतनी ही एकदूसरे से भिन्नता है जितनी राजस्थान के लोक जीवन में उपस्थित है. आंखों की बनावट को भी इन चित्रों में देखा जाए तो नाथद्वारा शैली में आंखों की बनावट हिरण की तरह है जब कि बीकानेर शैली के चित्रों में आंखें खंजन के समान हैं. जयपुर के चित्रों में आंखों का चित्रण मछली की तरह व बूंदी शैली में आम के पत्ते की तरह हुआ है तो किशनगढ़ में बादाम की तरह. आकृतियों की लंबाई, गठीलेपन एवं रंगरूप की दृष्टि से भी ये शैलियां अपनाअपना व्यक्तित्व लिए हुए हैं.

राजस्थान के लघु चित्रों की पृष्ठभूमि को जहां भौगोलिक कारणों ने विविधता प्रदान की है, वहां समसामयिक लोकगीतों, लोकसाहित्य एवं समस्त वातावरण ने भी इन शैलियों की रोचकता में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है.

वस्तुतः राजस्थान की लघु चित्र शैलियो को जीवन के विविध पक्षों और समसामयिक वैचारिक एवं भावात्मक धरातल ने सजायासंवारा और चित्रकारों के समर्पित जीवन ने इन को संपूर्णता, सजीवता और कल्पना की गहराइयों की उड़ान दी, जो परंपरा की एक लंबी यात्रा के दौरान निरंतर अपनी धाक जमाए हुए हैं.

किसी भी वजह से दिमाग में पैदा हुई चिंताएं व्यक्ति के स्वास्थ्य और जीवन के लिए हानिकारक होती हैं. इन से छुटकारा पाना जरूरी है, पर छुटकारा पाया किस प्रकार जाए?

लेख • नवोदित

'उसे गए हुए इतनी देर हो गई है, पता नहीं क्या हुआ जो अभी तक नहीं आया. कहीं किसी से झगड़ा न कर बैठा हो और पुलिस ने न पकड़ लिया हो. कैसे निबटा जाएगा पुलिस वालों से. यह भी तो हो सकता है दुर्घटना हो गई हो और वह हस्पताल में पड़ा हो... कहीं मर ही न गया हो. आखिर क्या बीतेगी उस के बीवी बच्चों पर...'

जब भी किसी परिचित अथवा निकट संबंधी को लौटने में बहुत देर हो जाती है तो लोग अकसर इसी प्रकार सोचने लगते हैं और ये बुरे खयाल उन के मस्तिष्क में तनाव पैदा कर देते हैं. कभीकभी यह तनाव इतना बढ़

चिंताओं से मुक्ति कैसे पाएं?

जाता है कि वे बहुत परेशान हो जाते हैं और जीवन में घुटन व टूटन सी महसूस करने लगते हैं.

लेकिन इस प्रकार के खयालों को व्यक्ति खुद ही पैदा करता और बढ़ावा देता है, पर वह यह बात स्वयं महसूस नहीं करता, क्योंकि मन में एक बार कोई विचार आ जाने पर विचारों की शृंखला सी चलने लगती है और व्यक्ति तरहतरह की विशेष कर आशंका भरी बातें सोचने पर मजबूर हो जाता है.

काल्पनिक उड़ानें

इस तरह सोचते चले जाना मनुष्य की कल्पनाशक्ति के कारण होता है. व्यक्ति कल्पना में उड़ानें भरता रहता है, लेकिन क्या इस प्रकार की कल्पनाएं करना जिन से मस्तिष्क में चिंताएं पैदा हों, कल्पनाशक्ति का गलत इस्तेमाल नहीं है? कल्पनाशक्ति का सही प्रयोग भी तो किया जा सकता है. यानी ऐसा भी तो सोचा जा सकता है, शायद उसे कुछ और काम याद आ गया होगा या कोई मित्र मिल गया होगा, बस आता ही होगा या बड़ा समझदार है, अपने आप आ जाएगा आदि.

इस प्रकार सोचना यद्यपि कठिन काम है, किंतु असंभव नहीं है. यदि इसी प्रकार सोचने की लगातार कोशिश की जाए तो आप में इसी प्रकार सोचने की आदत पड़ सकती है. फिर आप को चिंताएं बहुत कम होंगी, क्योंकि किसी भी बात के अच्छे पक्ष को सोचने से आशा की एक सतत भावना मनमस्तिष्क में विद्यमान रहेगी, जो मस्तिष्क को शांति देगी. इस से आप अपने को कम चिंतित महसूस करेंगे.

अपनी कलपनाशक्ति का इस प्रकार सही उपयोग करने से अपनी कल्पनाशक्ति को वश में किया जा सकता है.

चिंतामुक्त होने का तरीका

इतना कर लेंगे तो चिंताओं से पूरी तरह छुटकारा पाने के लिए वह तरीका इस्तेमाल करने के बारे में सोचने लगेंगे जो ईसामसीह इस्तेमाल करते थे. चलिए, ईसामसीह की बात छोड़िए. उन को तो आप महामानव बता देंगे, पर अमरीका के भूतपूर्व राष्ट्रपति हैरी ट्रूमैन भी इसी सिद्धांत को अपनाते थे.

उन्होंने अपने मस्तिष्क में एक काल्पनिक स्थान बना रखा था और केवल

पूर्ण विश्राम : चिंताओं से मुक्ति पाने के लिए हाथपांव ढीले छोड़ कर कुछ क्षण लेटना चाहिए और सहजता महसूस करने का प्रयत्न करना चाहिए.
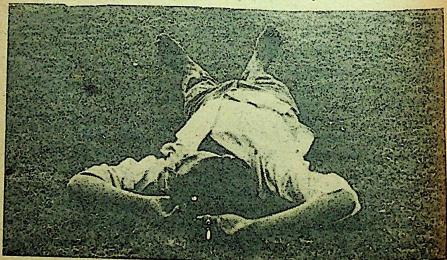
पांच मिनट के लिए ही वह यह महसूस करते थे कि उस काल्पनिक स्थान में पहुंच गए हैं और चिंताओं से भरे इस संसार से उन का कोई नाता नहीं रहा है. जब वह फिर उस वर्तमान संसार में लौटते थे तो उन्हें ऐसा लगता था जैसे उन में एक नई ताजगी आ गई हो.

इस ताजगी की स्थिति में उन्हें कोई भी काम करने में काफी उत्साह महसूस होता था.

डायरी लिखने से भी मस्तिष्क का हलकापन महसूल किया जा सकता है.

अगर आप अपनी कल्पनाओं को इस तरह अपने वश में नही कर सकते तो कम से कम यह तो कर ही सकते हैं कि कुछ क्षण 'पूर्णतया विश्राम' करें. हाथपांव फैला कर एकदम ढीले छोड़ दें और आंखें मूंद कर चित लेट जाएं और सहज रहने की कोशिश करें.

सतही तौर पर देखने से यह क्रिया केवल शरीर को आराम देने वाली लगती है लेकिन वास्तव में इस से मस्तिष्क को भी आराम मिलता है. जब आराम से लेट कर व्यक्ति स्वयं को सहज महसूस करने की कोशिश करता है तो उस के दिमाग में उस समय कोई भी चिंता उतनी तीव्र नहीं रह पाती जितनी तीव्र वह पहले थी.

मस्तिष्क को हलका करने या आराम देने का एक तरीका और भी है. वह है डायरी लिखने का. यदि अपनी चिंताओं को किसी कागज पर उतार दिया जाए तो वास्तव में मस्तिष्क को हलका महसूस किया जा सकता है.

चिंतामुक्ति के लिए एक उपाय और अपनाया जा सकता है. वह यह कि रोजमर्रा के बोलने वाले वाक्यों को कुछ बदल कर बोला जाए.
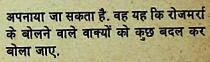
'यदि' के स्थान पर 'कैसे' का प्रयोग करें

एलमर व्हीलर ने अपनी पुस्तक 'टु मेक योर डेड्रीम्स ट्रू' (अपने दिवास्वप्नों को वास्तविकता में बदलने के लिए) में सुझाव दिया है कि अगर रोजमर्रा बोले जाने वाले वाक्यों में 'यदि' के स्थान पर 'कैसे' का प्रयोग किया जाए तो चिंताओं से मुक्ति मिल जाएगी. उन का कहना है कि 'कैसे' का प्रयोग आप को उन उपायों को खोजने के लिए विवश करेगा, जिन से चिंता से छुटकारा पाया जा सकता है. यानी अगर व्यक्ति सोचता है, 'यदि, मैं सफल हुआ' तो उस की जगह उसे सोचना चाहिए,

'मैं सफल कैसे होऊं?'

'यदि मैं सफल हुआ' वाक्य यह दर्शाता है कि व्यक्ति भविष्य के प्रति अनिश्चित है या शब्दों में निराशा की ओर बढ़ रहा है और उस के प्रयासों में कमी है. लेकिन 'मैं सफल कैसे होऊं' वाक्य में व्यक्ति अपनी इच्छा को प्रदर्शित करता है, जिस के तहत वह सफलता पाने के लिए उपयुक्त उपायों की खोज करना चाहता है. जब व्यक्ति उन उपायों को ढूंढ़ कर अमल में लाएगा तो उसे निश्चित रूप से सफलता मिलेगी.

परिवर्तन छोटा लाभ अधिक

अतः यह ध्यान रखना चाहिए कि 'यदि' शब्द असफलता की पूर्ण आशंका को प्रकट करता है. इस से लगता है कि जैसे व्यक्ति हाथ पर हाथ धरे बैठा है. किंतु दूसरी ओर 'कैसे' शब्द का प्रयोग मस्तिष्क को क्रियाशील बना देता है.

चिंताओं से छुटकारा पाने के लिए एक धारणा को भी बदलना जरूरी है. प्रायः मनुष्य यही समझते हैं कि शरीर में मस्तिष्क होता है. इस प्रकार की धारणा से मस्तिष्क की सर्वोच्चता खत्म हो जाती है और व्यक्ति में किसी भी समस्या पर सोचनेसमझने की क्षमता समाप्त हो सकती है. अतः उपर्युक्त धारणा को बदल कर यह सोचा जाए कि मनुष्य एक मस्तिष्क है, जिस के साथ एक शरीर भी है. इस प्रकार की धारणा से मस्तिष्क की सर्वोच्चता कायम रहेगी, आदमी में आत्मविश्वास बढ़ेगा और मनुष्य अपनी हर चिंता का निवारण भलीभांति कर सकेगा.

"अरे नेताजी, अभी तो उद्घाटन के तौर पर आप को बहुत सी लकड़ियां काटनी हैं."

वहां अपराधी इनसान बनाए जाते हैं

लेख • विवेक सक्सेना

इजरायल में अपराधियों पर एक ऐसा प्रयोग किया गया है जिस ने न केवल अपराधियों को नेक इनसान बना कर उन में पश्चात्ताप की भावना भर दी बल्कि समाज में उन अपराधियों के प्रति लगाव भी पैदा कर दिया. क्या ऐसा प्रयोग हमारे देश में भी संभव है?

हर अपराधी को उस के अपराध के अनुसार सजा अवश्य मिलनी चाहिए. पर यहां यह बात ध्यान देने योग्य है कि सजा देने का उद्देश्य अपराधी को केवल इस बात का अहसास कराना ही नहीं होता है कि उस ने एक गलत काम किया था, बल्कि उस में स्वयं को सुधारने की भावना पैदा करना भी होता है. पर शायद ही किसी देश में दंड देते वक्त इस बात पर ध्यान दिया जाता हो. इस प्रकार दंड पा कर कोई व्यक्ति जब एक बार अपराधी घोषित हो जाता है तो फिर समाज भी उसे आसानी से नहीं स्वीकारता. तब वह व्यक्ति अपराधी बने रहने पर विवश हो जाता है.

नए अपराधियों में सुधार लाने के लिए यह भी जरूरी हैं कि उन्हें जेल में पेशेवर अपराधियों के साथ न रखा जाए. यह बात शतप्रतिशत सही है कि इन पेशेवर अपराधियों के साथ रहने के कारण नए अपराधी भी पक्के बन जाते हैं. जेल के भीतर का माहौल उन के अंदर की अपराधी प्रवृतियों को पूरी तरह से विकसित कर देता है.

इन सभी समस्याओं का हल निकालने के लिए इजरायल में एक नया प्रयोग किया गया है जो बहुत सफल रहा है. इस प्रयोग के अंतर्गत यहां छोटेमोटे अपराधियों को बजाए जेलों के समाज में लोगों के बीच रख कर ऐसे क़ामों में लगाया जाता है, जिन से वे न केवल अपनी सजा काटते हैं बल्कि उन में पश्चाताप की भावना भी पैदा होती है और वे स्वयं को सुधारने की कोशिश करते हैं व अच्छे इनसान बन जाते हैं.

इस के लिए इजरायल के एक ऐसे अपराधी का उदाहरण लिया जा सकता है जो

लोगों से बेहद नफरत करता था. इस नफरत के कारण ही वह दूसरों को परेशान करने के लिए उन का सामान चुरा लेता था. वह अपनी इस नफरत व चोरी करने की आदत को बदल सके, इस के लिए उसे चिड़ियाघर में जानवरों के पिंजरे साफ करने की सजा दी गई जिस से वह जानवरों से आपस में मिलजुल कर रहने की सीख ले सके.

अपराधियों को दी गई सजाएं

एक बार वहां एक ऐसा कार चोर पकड़ा गया जो कार चुराने के बाद उसे बहुत तेज रफ्तार से चलाता हुआ भाग निकलता था. सजा देने वालों की दृष्टि में उसे इस बात का अहसास कराना भी जरूरी था कि वह एक साथ दो अपराध करता था. एक तो वह कार चुराता था. दूसरे कार तेज़ चला कर दूसरों की जान भी खतरे में डाल देता था. अतः अदालत ने उसे नौ महीने तक हस्पताल की एंबुलेंस चलाने की सजा दी जिस से उसे पता चल सके कि घायलों और रोगियों को ले जाते समय कितनी सावधानी से गाड़ी चलानी चाहिए.

इसी तरह वहां वायलान बजाने का शौकीन एक व्यक्ति एक दुकान से कुछ सामान चुराने के अपराध में पकड़ा गया. इस के लिए अदालत ने उसे यह सजा दी कि वह एक साल तक मानसिक रूप से विक्षिप्त बच्चों का वायलन बजा कर मनोरंजन करता रहेगा.

इजरायल में पिछले दो सालों में 270 अपराधियों को इस तरह की सजाएं दी जा चुकी हैं और इन सभी अपराधियों को सजा के तौर पर किसी न किसी संस्थान, हस्पताल या स्कूल आदि में काम करना पड़ रहा है.

इन अपराधियों ने विभिन्न तरह के अपराध किए थे जिन में करों की चोरी, धोखाधड़ी व उन की लापरवाही के कारण दूसरों की जान चली जाने जैसे अपराध शामिल हैं.

आम तौर से जिन अपराधियों पर यह प्रयोग किया जा रहा है उन की सजा एक साल से कम अवधि की है.

उपर्युक्त प्रकार की सजा देने का प्रयोग 'समाज के लाभ के लिए सेवा' नामक योजना के अंतर्गत दो साल पहले शुरू किया गया था. जिन अपराधियों पर यह प्रयोग किया जाता है उन पर न तो किसी तरह का जुरमाना किया जाता है और न ही उन्हें जेल में रखा जाता है. उन्हें ऐसे काम में लगाया जाता है जिस से वे अपनी गलती का अहसास कर सकें, उन के मन में किसी तरह की हीन भावना पैदा न हो जाए और सजा समाप्त होने के बाद समाज भी उन्हें स्वीकार कर ले.

अधिकारियों की समस्याएं

यह प्रयोग करने वाले अधिकारियों को शुरू में काफी समस्याओं का सामना करना पड़ा. उन के सामने सब से बड़ी समस्या यह थी कि कोई भी नियोजक उन अपराधियों को काम देने के लिए तैयार नहीं होता था, क्योंकि हर मालिक यह चाहता है कि उस का नौकर उस से दब कर रहे. लोगों को इन अपराधियों को नौकरी देते हुए डर लगता था कि कहीं वे उन्हें परेशान न करें.

यहां यह बात भी उल्लेखनीय है कि उन नियोजकों को ये अपराधी मुफ्त में काम करने के लिए दिए जा रहे थे, फिर भी वे उन्हें काम देने में कतरा रहे थे. पर किसी तरह न्यायाधीशों, पुलिस अधिकारियों व समाज सेवकों ने इन अपराधियों के लिए सजा काटने के रूप में नौकरी का प्रबंध करवाया.

अपराध करने वाले व्यक्ति को सजा देते समय यहां इस बात का ध्यान भी रखा जाता है कि उस व्यक्ति ने कैसा अपराध किया है. उस का व्यक्तित्व कैसा है. उसे क्या काम करना आता है, किस काम में उस की रुचि है. इन सब बातों के आधार पर ही अपराधी को सजा दी जाती है.

अपराधी को मनोवैज्ञानिक ढंग से सुधारने की इस योजना को चलाने वाले येरुसलम के एक वरिष्ठ अधिकारी श्लोम बेन पाजी के अनुसार यह योजना बहुत सफल रही है क्योंकि सजा काटने के दौरान किसी भी अपराधी ने कोई गड़बड़ी नहीं की है. इस में

पेशेवर अपराधियों के साथ रहने के बाद अनजाने में छोटेमोटे अपराध कर के जेल पहुंचे नए अपराधी भी पक्के अपराधी बन जाते हैं.
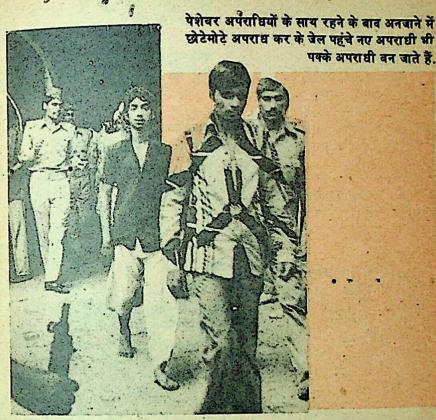
सजा देने वाले व सजा पाने वाले एकदूसरे में विश्वास रखते हैं. सजा देने वाला उन में सुधार लाना चाहता है और सजा पाने वाला अपने अपराध का पश्चात्ताप करना चाहता है.

इस प्रकार की सजा पाए हुए अपराधी हस्पतालों में मरीजों का सामान ढोते हैं, बागों में सुंदर फूल उगाते हैं. मानसिक रूप से विक्षिप्त रोगियों का मनोरंजन करते हैं, अपंग व्यक्तियों को विभिन्न प्रकार का काम करने में सहायता देते हैं, बच्चों को पढ़ाते हैं, दुखी एवं दर्द से परेशान रोगियों को सांत्वना देते हैं.

इस तरह अपनी सजा के दौरान ये अपराधी समाज के अभिन्न अंग बन जाते हैं. जब उन की सजा समाप्त हो जाती है तो जिन लोगों के बीच वे रहते हैं—वे उन्हें छोड़ना ही नहीं चाहते. उन के मन में इन अपराधियों के प्रति सद्भाव व प्यार पैदा हो जाता है.

हमारे देश में कुछ साल पहले हिंदी में एक फिल्म 'दुश्मन' बनी थी, जिस में अदालत अपराधी ट्रक ड्राइवर को उस मृत व्यक्ति के घर वालों के पालनपोषण की सजा देती है, जो कि उस के ट्रक के नीचे दब कर मर गया था.

इस फ़िल्म में भी नायक ट्रक ड्राइवर को समाज की नफरत का सामना करना पड़ा था और वास्तविक व व्यावहारिक रूप में भी ऐसी सजा भोगते अपराधी के साथ यही स्थिति आना निश्चित है. उपरोक्त परीक्षण फिल्मी था, पर इस प्रकार की सजाएं देने पर विचार किया जा सकता है. लेकिन जब तक अपराधी के प्रति समाज की यह नफरत की भावना समाप्त नहीं की जाती तब तक यह प्रयोग सफल नहीं हो सकता. ●

हमारा सम्मेलन में जाना

एक चार दिवसीय शिक्षा सम्मेलन हो रहा था. हमारे साथ की कुरसी पर बैठे व्याख्याता ने हम से पूछा, "आप किस बस या ट्रेन से जा रहे हैं?"

हम ने कहा, "हम नहीं जा रहे हैं."

उन्हें हमारा जवाब सुन कर इतना आश्चर्य हुआ कि वह कुछ क्षण तो बोल ही नहीं सके. फिर थोड़ा संयत हो कर बोले, "उप प्राचार्य को छोड़ कर शेष सब लोग तो जा रहे हैं."

व्यंग्य • बानो सरताज

साथियों के आग्रह करने पर वह सम्मेलन में तो चला गया, पर वहां के हालात देख कर उस की आंखें फटी की फटी रह गईं...

हम ने भी पूरी शांति से घिसापिटा तर्क दोहराया, "सब लोग कुएं में कूदेंगे तो क्या हम भी कूद जाएं?"

बात उन की समझ में नहीं आई, एक वरिष्ठ व्याख्याता की ओर उन्मुख हो कर वह बोले, "सुना आप ने, यह साहब सम्मेलन में नहीं जा रहे हैं."

उन्होंने चश्मा नाक पर नीचे खिसका कर शीशों के ऊपर से हमारा सूक्ष्म निरीक्षण किया, रूमाल से नाक साफ की, फिर बोले, "तुम नई पीढ़ी के लोगों में यही तो बुराई है. अनुभवी लोगों से कभी सलाह नहीं लोगे, कभी बुजुर्गों के पदचिह्नों पर नहीं चलोगे. अरे भई, जानेआने का प्रथम श्रेणी का किराया विश्वविद्यालय ही देगा, 15 रुपए प्रतिदिन के हिसाब से खर्च अलग मिलेगा. न जाने का कोई औचित्य तो हो."

हम उन की वाकपटुता के कायल हो गए. अपने निश्चय पर पुनः विचार करने लगे. उन्होंने हमें लाभान्वित करने का मौका हाथ से न जाने देते हुए आगे फरमाया, "हमारी तो उम्र गुजरी है इसी दश्त की सैयाही में. परिवर्तन के लिए ही सही, पर जाना चाहिए. हम कौन सा सम्मेलन को गंभीरता से ले रहे हैं. विश्वविद्यालय अपने खर्च पर मनोरंजन का साधन उपलब्ध कर रहा है तो क्यों पीछे हटें? क्यों न बहती गंगा में हाथ धो लें?"

स्टाफ रूम में चारों तरफ यह बात फैल गई. सब हमें अजीबअजीब निगाहों से देखने लगे, जैसे हम कोई जानवर हों और भटक कर उन के मध्य आ गए हों. एक व्याख्याता नएनए आए थे. बहुत बोलते थे. बिना सोचेसमझे बोलते थे (यों समझिए बकवास करते थे). वह नित्य की भांति बीच में बोले, "साथ जाएंगे, साथ लौटेंगे. एक पिकनिक समझ कर चलिए."

एक और ने राय दी, "कालिज के काम तो जीवन के साथ लगे हुए हैं. ऐसे अवसर सदा नहीं मिलते."
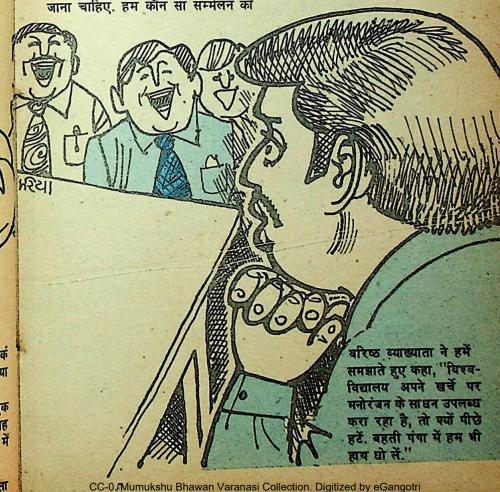
वरिष्ठ व्याख्याता ने हमें समझाते हुए कहा, "विश्वविद्यालय अपने खर्चे पर मनोरंजन के साधन उपलब्ध करा रहा है, तो क्यों पीछे हटें. बहती गंगा में हम भी हाथ धो लें."

हम ने भी हथियार डाल दिए. अर्ध-स्वीकृति दर्शाते हुए कुछ असमंजस में पड़ कर कहा, "बात यह है कि हम ने कोई पेपर तैयार नहीं किया है."

एक ठहाका लगा और हम निक्कू बन कर रह गए. तुरंत एक महाशय ने स्पष्ट किया, "यहां किस ने तैयार किया है पेपर. सब पेपर तैयार करने लगेंगे तो सुनेगा कौन? कुछ लोग चर्चा में भाग लेने वाले भी तो होने चाहिए."

वही अधिक बोलने वाले व्याख्याता ने हांक लगाई, बिलकुल उसी तरह जैसे बस स्टैंड पर प्राइवेट बसों के एजेंट यात्रियों को आकर्षित करते हैं, "क्यों, किसी ने तैयार किया है पेपर?"

उत्तर में कोई स्वर न उभरा तो हम ने आखिर अपनी स्वीकृति दे दी.

कालिज की बागडोर उप प्राचार्य को सौंप कर हमारे कालिज से शिक्षकों की टोली रवाना हो गई. पांच घंटे का सफर तय कर के वह आखिर अपनी मंजिल पर पहुंच गई.

यात्रा के मध्य ही यह निश्चित हो गया था कि कौन कहां ठहरेगा. उस
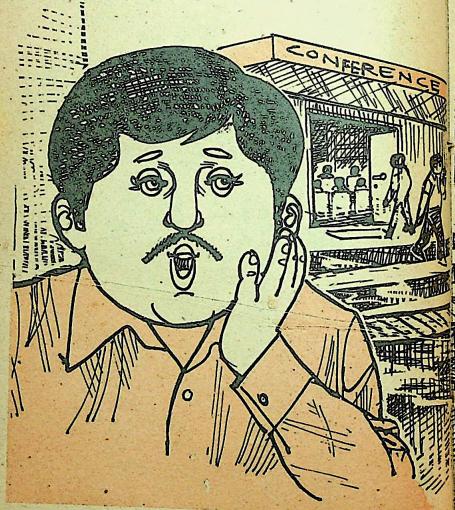
शहर में हरेक का कोई न कोई संबंधी, मित्र या परिचित मौजूद था. किसी की बेटी उस शहर में ब्याही थी, उस की कुशलक्षेम जानना आवश्यक था तो किसी को मेडिकल कालिज में पढ़ रहे अपने बेटे को महीने का ख़र्च देना था, किसी को विश्वविद्यालय से कोई पुराना बिल निकलवाना था. सम्मेलन में जाने के इतने उद्देश्य हो सकते हैं, यह हम ने उसी दिन जाना.

हां, तो साहब, सम्मेलन का उद्घाटन हुआ. किसी भी सम्मेलन का चूंकि यही सब से महत्वपूर्ण भाग होता है, इसी लिए प्रायः सभी उपस्थित थे. पूरा हाल भरा हुआ था. उद्घाटन की काररवाई के पूरा होते ही कोई स्कूटर पर प्रतीक्षा करते मित्र के साथ चल दिया तो किसी ने 70 एम.एम. के थिएटर की राह ली. कोई विश्वविद्यालय में अपने मामले में हुई प्रगति देखने या पुराना बिल निकलवाने चल दिया.

जिन का शहर में कोई संबंधी, मित्र या परिचित नहीं था, जिन को विश्वविद्यालय में कोई काम नहीं था, जिन को यात्रा की नींद

भाई साहब की भेद भरी बातें सुन कर हम सोचने लगे, 'हमें इन बातों पर हंसना चाहिए या गंभीरता से सोचना चाहिए?'
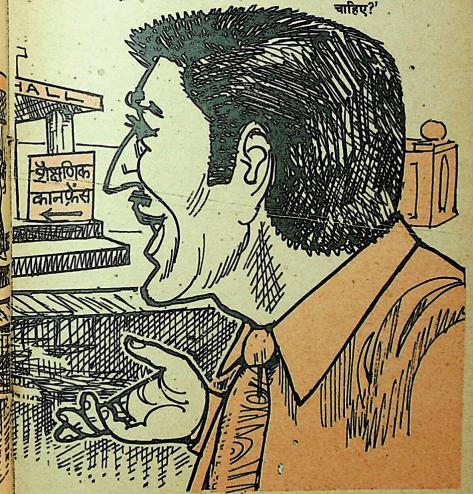
पूरी करनी थी, महिला प्रतिनिधि जो बड़े शहरों से आई थीं और जिन्हें शहर के छोटे बाजार से कोई विशेष दिलचस्पी नहीं थी या जिन को अपना पेपर पढ़ना था, वही लोग बाकी रह गए.

एक महिला काफी समय तक हमारा सिर से पैर तक निरीक्षण करती रहीं. जब संतुष्ट हो गईं तो हमारे समीप आ कर बोलीं, "आप कुछ गलत न समझें, आप हूबहू मेरी प्रिय सहेली के भाई की तरह हैं."

हम ने खुश हो कर कहा, "काश, हम गलत ही समझे होते. पर.. पर.. जाने दीजिए. जान लीजिए कि हम आप की सहेली के भाई की तरह नहीं हैं, बल्कि सहेली के भाई ही हैं. आप मीनाजी हैं न?"

वह खिल उठीं, इस बात पर कि हम ने भी उन्हें पहचान लिया. उन में केवल इतना ही अंतर हुआ था कि वह कुमारी मीना से श्रीमती मीना हो गई थीं. हम तो सिर से पैर तक बदल गए थे. जमाने के उलटफेर ने हमें भारत के मानचित्र की तरह बदल दिया था. पर वाह री नारी दृष्टि! प्राचीन संस्कृति की खोज की तरह हमें ढूंढ़ ही निकाला था. बहुत देर तक वह हमारी प्यारी गुड़िया बहिन के बारे में पूछती रहीं, सत्र खत्म हुआ तभी उन्होंने हमारा पीछा छोड़ा.

दूसरे दिन पहले सत्र के बाद वह फिर हम से आ टकराईं. हम ने घबरा कर कहा, "देखिए, आप की सहेली यानी हमारी बहिन जब से आप से बिछुड़ी है, उस के बाद की समस्त बातें हम ने कल ही आप को बता दी थीं."

वह खिलखिला कर बोलीं, "मैं तो पूछ रही थी कि आप इस सत्र में बड़ी संजीदगी से नोट्स ले रहे थे. बताइए, क्या लिखा है?" कहतेकहते उन्होंने कागज उचक लिया. हमारे नोट्स कुछ इस तरह थे:

सदस्यों की एक तिहाई संख्या गायब है.

अमरावती कालिज की प्रधानाचार्य की साड़ी विदेशी है.

कुमारी शांता का जूड़ा खुलने वाला है.

कुरसियों की दूसरी पंक्ति में बाएं से तीसरे नंबर पर बैठे महाशय सो रहे हैं.

भाषण पढ़ने वाले महोदय बहुत बोर कर रहे हैं.

अध्यक्ष महोदय उबासियां ले रहे हैं.

वह कुछ टिप्पणी करतीं, इस से पहले ही हम ने रफूचक्कर हो जाना ठीक समझा और भाग लिए वहां से.

उसी दिन एक अन्य महाशय से हमारा परिचय हुआ. परिचय कुछ इस विचित्र ढंग से हुआ कि पहले तो हम उन्हें माकूल आदमी समझे ही नहीं, पर प्याज के छिलकों की तरह जब उन के व्यक्तित्व की परतें खुलीं तो कमाल के आदमी निकले वह. गुरु मान लिया हम ने उन्हें. पहचान कुछ इस प्रकार हुई.

तीसरा सत्र चल रहा था. एक साहब की ओर नजर गई. देखा वह हमें ही देख रहे हैं. सुर्ख सफेद रंग, सिंधियों का सा नाकनक्शा. थोड़ी देर बाद उन की ओर देखा तो उन्हें फिर अपनी तरफ देखते पाया. हम समझ गए कि अपनी ही श्रेणी के हैं. बोरियत से बचने के लिए चेहरे का अध्ययन कर रहे हैं. खाने की मेज पर वह संयोग से हमारे सामने आ गए. पूछा, "आप अंगरेजी पढ़ाते हैं?"

हम ने उत्तर दिया, "नहीं, हिंदी पढ़ाते हैं."

उन्होंने फिर पूछा, "आप को खाना पसंद नहीं आ रहा है?"

हम ने अपनी जबान से कुछ नहीं कहा था. शायद हमारे बनतेबिगड़ते मुंह ने कुछ कहा होगा. हम ने शांति से कहा, "हमारे पसंद करने या न करने से क्या होता है? पेट तो भरना ही है. हां, यदि आप इसी तत्परता से हमारे कौर गिनते रहे तो यह भी संभव न होगा."

उन्होंने इतनी जोर का ठहाका लगाया कि हमारी प्लेट में से रोटियां उड़ गईं. हम मुंह देखते रह गए. इसी ठहाके के साथ हमारे मन का क्लेश भी जाता रहा. वह शीघ्र ही हम से घुलमिल गए. हमारे अज्ञान और

अनुभवहीनता को देखते हुए उन्होंने सम्मेलनों और विचार गोष्ठियों आदि से संबंधित कई गुर की बातें बताईं. बोले, "पेपर कभी न पढ़ो क्योंकि पेपर पढ़ने वाले की टांग बेतरह घसीटी जाती है हां, चर्चा में अवश्य भाग लो, पूरा पेपर सुनना जरूरी नहीं है. जो नुक्ता सुनाई पड़ जाए, उस पर एक ऐसा क्लिष्ट प्रश्न कर दो जो पेपर तैयार करने वाले की समझ में तो आए ही नहीं, शेष सब की समझ में भी नहीं आना चाहिए. बस, सब पर आप की धाक जम जाएगी. सब आप का नाम जान जाएंगे. सम्मेलन में जाने का एकमात्र उद्देश्य भी यही होता है."

हम ईमान ले आए इन सब बातों पर. अगले सत्र में हम ने पेंसिल से कुछ रेखाचित्र बनाए. बहुत दिनों से फुरसत ही नहीं मिली थी. भाई साहब को नमूने के लिए एक रेखाचित्र दिखाया. एक छोटे कद के दुबलेपतले महाशय थे. 35-36 वर्ष की आयु. सिर के बाल आधे सफेद हो चुके थे. फिर भी हीरो की तरह गरदन तक उतरे हुए. दांत होंठों से दो कदम आगे थे, जिस पर हंसते रहने का खब्त था. उन्हें हंसी आने की बात हो या नहीं, समर्थन की आवश्यकता हो या न हो, वह पूरी बांछें फाड़ कर हंसते और बिना कारण सिर हिलाते. (स्वयं को कुछ समझने वालों की खास पहचान.)

सिर भी शरीर के अनुपात से दौगुना नहीं तो डेढ़ गुना जरूर होगा. वह किसी मुद्दे पर चर्चा में लीन होते और दूर से कोई उन्हें देखता तो यही सोचता कि मलेरिया ज्वर से थरथर कांप रहे हैं. हमारी समझ में नहीं आता था कि इतना बड़ा सिर हिलाने में क्या उन्हें असुविधा नहीं होती होगी. (वैसे हमें तो इस के भरा होने में भी शक था.) बस इसी मुद्रा का चित्र था वह.

भाई साहब हंसतेहंसते बेहाल हो गए. हम ने प्रश्न भी जड़ दिया, "आखिर आप के प्रधानाचार्य ने इन्हें पकड़ा कहां से?" उन्होंने पता नहीं क्या कहा, पर हमें सुनाई दिया, "चिड़ियाघर से."

खैर, यह तो हंसीदिल्लगी की बात थी, जी तो चाहता था सम्मेलन कभी खत्म न हो. चांदी के दिन थे और सोने की रातें. न घर की चिंता, न कालिज का हौआ. मेजबान कालिज खुद हमारी चिंता कर रहा था. आखिरी सत्र के समय हम भाई साहब को खोजते हुए उन के कमरे तक पहुंच गए. वह अपना सामान समेट रहे थे. हम ने जाते ही उन के कालिज के एक व्याख्याता का नाम ले कर पूछा, "यह आप के साथी बहुत फूलेफूले दिखाई दे रहे हैं, क्या बात है?"

वह तपाक से बोले, "रात के सत्र में गायब थे न? कौन सी फिल्म देखी?"

हम ने बुरा मानते हुए कहा, "ऐसा न

एक विश्व कीर्तिमान यह भी

यदि आप भवन की चौथी मंजिल पर स्थित अपने कार्यालय में बैठे हों और आप को अपनी खिड़की के पास से गुजरता हुआ कोई व्यक्ति दिखाई दे तो आप समझ लें कि वह जान रसैल होगा, जो सब से लंबी (ऊंची) बैसाखियों के सहारे चलने का विश्व कीर्तिमान स्थापित करने का दावा करता है.

'रिंगलिंग ब्रदर्स' और 'बारनम एंड बैले' सर्कस के कलाकार रसैल ने विश्व कीर्तिमानों की पुस्तक 'गिनीज बुक आफ वर्ल्ड रिकार्ड्स' के प्रकाशक डेविड बाहम के सामने 33 फुट ऊंची बैसाखियों के सहारे 34 कदम तक चल कर दिखाया.

डेविड बाहम का कहना है कि रसैल ने 31 फुट ऊंची बैसाखियों के सहारे 30 कदम चलने का अपना ही पिछला विश्व कीर्तिमान भंग किया है.

कहिए. हम पर आप बुजुर्गों का साया अभी तक नहीं पड़ा है. हमारे पांव में मोच आ गई थी, इसलिए कमरे ही में लेटे रहे. आप से तो खैरियत पूछना भी न हो सका."

हमारे बिगड़े तेवर देख कर उन्होंने तुरंत क्षमा मांग ली. उन्होंने बताया कि कल पीएच. डी. पाने वालों का सत्कार हुआ था. उन लोगों की तारीफ में तीनचार लोगों ने जमीनआसमान के कुलावे मिला दिए. बस, तभी से कमीज तंग हो रही है."

हम ने पूछा, "क्या विषय था उन का?"

"कतई फजूल सा विषय था. हमें तो याद भी नहीं रहा," कह कर एक कहकहा लगाया भाई साहब ने, "जरा उन महाशय ही से पूछ देखो; जबानी सहीसही बता सकते हैं या नहीं. उन्होंने स्वयं लिखा होगा तो जानते भी होंगे."

समझ में नहीं आया इस बात पर हम हंसे या रोएं. भाई साहब ने ही मुशकिल आसान की. बोले, "एक लतीफा सुनो. मेरे कालिज के प्रधानाचार्य ने मुझ से पूछा था, 'सत्कार समारोह में बोलोगे?' मैं ने कह दिया, मैं झूठ नहीं बोला करता.'"

हम बरबस हंस पड़े. बड़े खतरनाक थे. बातचीत में यों बात निकालते, यों धज्जियां उड़ाते कि बस. वह हंसते हुए फिर बोले, "मैं सत्कार समारोह तथा शोक सभाओं में नहीं बोला करता, पुरस्कार पाने वाले तथा मरने वाले दोनों ही के विषय में बोलते हुए उन की किसी भी बुराई का जिक्र नहीं कर सकते. सब झूठ कहना पड़ता है. उसे हर प्रकार से गुणी और सदाचारी ठहराना पड़ता है. मरने वाले की प्रशंसा तो चलो नैतिक तौर पर ठीक भी कही जा सकती है, पर उस के लिए झूठ क्यों कहा जाए जो अभी दुनिया वालों को धोखा देने के लिए जीवित है? मैं तो कहता हूं, भई, अपने विरोधी को नीचा दिखाने का सब से सरल तरीका यह है कि सत्कार समारोह कर के उस की तारीफों के पुल बांध दो. दूसरे ही दिन वह आप के कदमों में नजर आएगा."

"बजा फरमाया आप ने." हम ने समर्थन किया, "हम भी डाक्टरेट करने की सोच रहे हैं."

उन्होंने हमारी बात काट दी, "क्या वाकई तुम अपने आप को इस योग्य समझते हो कि डाक्टरेट के लिए शोध प्रबंध लिख सको? लिखो, जरूर लिखो, पर पहले अपने आप को इस स्तर तक पहुंचाओ. वैसे आजकल तो यह हाल है कि कल तक जो दूध बेचा करते थे, पंडिताई किया करते थे, घास खोदा करते थे, वे आज शोध करने लगे हैं. विद्या खरीदी और बेची जाने लगी है. शोध अथक परिश्रम मांगता है, नीलामी की बोलियां नहीं."

हम ने दबी जबान से कहा, "ठीक कहते हैं आप. हमारे प्रधानाचार्य भी यही कहते हैं कि गधे की पीठ पर पुस्तकें लाद देने से वह इनसान नहीं बन जाता. डाक्टरेट की उपाधि किसी के विद्वान होने का सबूत नहीं."

भाई साहब ने हमारी पीठ ठोंकी, "दोस्त, पहले अपना ज्ञान बढ़ाओ. छात्रों का अज्ञान दूर करो. उन लोगों की तरह नहीं जिन्हें लगता है, वेतन छात्रों को पढ़ाने के लिए नहीं बल्कि इस बात के लिए मिलता है कि वे जीजान से शोध प्रबंध पूरा कर के विश्वविद्यालय पर एहसान करें. तुम ऐसे न बनना, दोस्त."

सम्मेलन खत्म हो गया और सम्मेलन में भाग लेने वाले हम इस एक वाक्य को मूल्यवान धरोहर की तरह अपने मन में सजा लाए हैं– "तुम ऐसा न बनना, दोस्त." ●

कभी तो...

जब तुम्हारी
सोचने की शक्तियों पर
बोझ सा बढ़ जाए,
तब हम को बताना
और जो बातें
तुम्हें बेचैन करती हैं,
कभी नजदीक
आ कर के सुनाना.

हम सुनेंगे
और सहेंगे
भार उन का
मुसकरा कर,
आफतों को
बांट लेंगे
महज अंधियारा
समझ कर...

फिर करेंगे
हम प्रतीक्षा
रोशनी वाली
सुबह की,
कभी तो
जीवन क्षितिज पर
उगेगा
सूरज सुहाना
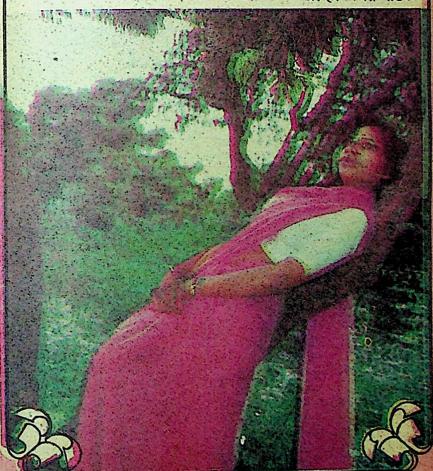
—डा. हरिश्चंद्र पाठक

इस स्तंभ के लिए समाचारपत्रों की रोचक कटिंग भेजिए. सर्वोत्तम कटिंग पर 15 रुपए की पुस्तकें पुरस्कार में दी जाएंगी. पत्र पर अपना नाम व पूरा पता अवश्य लिखें.

भेजने का पता : धूपछांव, मुक्ता, रानी झांसी मार्ग, नई दिल्ली-110055.

हराभरा दहेज

चमोली जिले के मंडल गांव में संपन्न एक विवाह में सेव का एक पेड़ दहेज के रूप में दिया गया.

यही नहीं, वर के पिता श्री चंद्रसिंह राणा भी दुलहन के लिए सेब के दस पौधे भेंट की सामग्री के रूप में ले गए थे. वर की ओर से दहेज में सेब के पौधे की मांग किए जाने पर दुलहन के पिता ने सेब का एक पेड़ दिया, जो प्रायः दो मन सेब देता है.

—दैनिक आज, कानपुर (प्रेषक : शंकरलाल कसेरा) (सर्वोत्तम)

*

पान खाने का रिकार्ड

दुर्ग नगर के एक युवक ने सिर्फ शर्त जीतने के लिए 5 घंटे में लगातार 421 मीठे पान खा कर जिले में एक नया कीर्तिमान स्थापित किया है.

उक्त मुकाबला तब प्रारंभ हुआ जब चंद्रकुमार और बिरदीचंद एकदूसरे से अधिक पान खाने के लिए 21 रुपए की शर्त लगा बैठे. शाम साढ़े छः बजे से रात्रि 11 बजे तक चंद्रकुमार ने 421 पान खा कर शर्त जीत ली, जब कि बिरदीचंद सिर्फ 406 पान ही खा सका.

मजे की बात तो यह है कि केवल 21 रुपए की शर्त जीतने के लिए इन युवकों ने 300 रुपए से अधिक के पान खाए. —नवभारत, रायपुर (प्रेषक : चंदप्रकाश ऋषि)

*

लाटरी की लक्ष्मी महंगी पड़ी

लखपति बनने के लिए हर माह लाटरी के टिकट खरीदने वाले बलिया निवासी कृपाशंकर के नाम एक बार सचमुच लाटरी निकल आई. किंतु एक लाख रुपए के इनाम का चैक देखते ही उस पर पागलपन का दौरा पड़ गया और वह कुएं में कूद पड़ा.

बेहोशी की हालत में उसे कुएं से बाहर निकाला गया.

डाक्टरों ने उसे पागल घोषित कर दिया है और अब वह वाराणसी के पागलखाने में दाखिल है.

—नवभारत, नागपुर (प्रेषक : दिनेशकुमार श्रीवास्तव)

*

कुम्हारिन की शर्त

एक युवक ने एक विचित्र स्वयंवर में 105 गधे मिट्टी खोद कर और गधों पर लाद कर एक अविवाहित कन्या का वरण कर लिया है.

नांगल के निकटवर्ती ग्राम मानपुर में ठहरे हुए हरियाणा के एक कुम्हार परिवार की 20 वर्षीया लड़की ने विवाह के लिए उपर्युक्त शर्त रखी थी कि एक निश्चित समय में अधिक मिट्टी खोदने और गधों पर लादने में जो युवक उसे परास्त कर देगा उसी से वह विवाह करेगी.

—हिंदुस्तान, दिल्ली (प्रेषक : गुलाबराय सिंघल)

जब मुन्ना ३ महीनेका हो जाए, तो उसे सिर्फ़ दूध ही काफ़ी नहीं है

आपके मुन्ने को चाहिए फ़ैरेक्स

मुन्ने का आदर्श ठोस आहार

३ महीने की उम्र— ठोस आहार का समय

३ महीने का होनेपर, मुन्ने की बढ़ती माँगों के लिए केवल दूध काफ़ी नहीं है। दिन-ब-दिन बढ़ते उसके शरीर को अब दूध मे मिलने वाली कॅलोरीज से कहीं अधिक की जरूरत रहती है। साथ ही अब मुन्ने को ठोस आहार की भी जरूरत है जो उसके तरल आहार की मात्रा कम करके थोड़ेमें उसे अधिक कॅलोरीज दे सके और उसको चबाना सिखा सके।

३ महीने की उम्र— अधिक आयरन की आवश्यकता

"बच्चे को ठोस आहार देना शुरू करने का सबसे अच्छा समय है— जब वह २-४ महीने का हो जाए। हालाँकि दूध एक अच्छा आहार है फिर भी आयरन की कमी के कारण अपने आप में पूर्ण आहार नहीं है। इसीलिये बच्चे को आयरनवाले ठोस आहार की जरूरत होती है।"

—डॉ. सुभाष सी. आर्य : "इन्फ़ेंट एण्ड चाइल्ड केअर फ़ॉर दि इण्डियन मदर"

डॉक्टर फ़ैरेक्स की सिफ़ारिश क्यों करते हैं?

फ़ैरेक्स विशेष रीति से बना सुपाच्य आहार है। इसमें कार्बोहाइड्रेट्स, फ़ैट्स, कॅल्शियम, फ़ॉस्फ़ोरस और विटामिनस हैं और पर्याप्त मात्रा में आयरन भी है। इस प्रकार मुन्ने के सर्वांगीण विकास के लिये फ़ैरेक्स एक आदर्श ठोस आहार है।

मुफ़्त! मुन्ने की प्रथमवर्ष पुस्तिका— नयी माताओं के लिए बच्चे की देखभाल सम्बन्धी सुलभ मार्गदर्शन। ५० पैसे का टिकट भेजकर मंगवाइये।

पो. ऑ. बॉक्स नं. 19119, (FAR 36 T), मुंबई - 400 025.

डॉक्टरों की सिफ़ारिश है-फ़ैरेक्स
मुन्ने का आदर्श ठोस आहार- जल्द और सर्वांगीण विकास के लिए

CASGLF-10-172 Hin

कैसे होता है हवाई जहाजों का यातायात नियंत्रण?

आपने गौर किया होगा कि यातायात नियंत्रण का काम कितना महत्वपूर्ण है. सिपाही का ध्यान बटा कि टक्कर हुई. सड़क और उस पर चलने वाले वाहन तो फिर भी छोटी चीज हैं, इन के चालक बखूबी देखते हैं कि कैसे चलना है, किधर चलना है. पर हवाई जहाजों के चालक के लिए तो कोई सड़क होती ही नहीं. अगर सफर लंबा है तो चालक अपने विमान में ही उपलब्ध नक्शों, दिशासूचक यंत्रों आदि की मदद से रास्ता पहचानते हैं. यों भी अगर हवाई जहाज हवाई अड्डे से दूर है तो हवा में हवाई जहाजों की भीड़ इतनी नहीं होती कि जहाजों की आपस में टकराने की नौबत आ जाए. मुशकिल तो तब होती है जब विमान हवाई अड्डे के समीप पहुंचता है. तब आकाश में आनेजाने वाले वायुयानों की संख्या बहुत हो जाती है. विदेशों के कई अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डे तो इस कदर व्यस्त रहते हैं कि हर मिनट कोई न कोई विमान वहां उतरता या उड़ान भरता रहता है.

अब जरा वायुयान चालकों की मुसीबत की कल्पना कीजिए. विशालकाय जेट विमान कोई साइकिल तो है नहीं कि चार मोटरों और आठ स्कूटरों के बीच से कन्नी काट कर लहराते हुए निकाल ली जाए. इतना विशाल हवाई अड्डा, जहां बीसियों उड़न पट्टियों (रन वे) का जाल बिछा हो, वहां चालक न तो

लेख • दीपक

हवा में उड़ने वाले विमान किस प्रकार रास्ता खोजते होंगे, मुड़ते होंगे, उतरते होंगे और ठहरते होंगे, जितने जिज्ञासापूर्ण ये प्रश्न हैं उस से कहीं अधिक रोचक इन के उत्तर हैं.

उड़न पट्टियां देख सकता है और न ही अपने उतरने के लिए निश्चित उड़न पट्टी खोज सकता है. अगर चालक जहां मन किया वहीं विमान उतार बैठा तो या तो वह पहले से खड़े किसी विमान को टक्कर मारेगा या कुछ ही देर में कोई दूसरा विमान उसे टक्कर मार देगा.

इसलिए आधुनिक हवाई अड्डों में विमान जब अड्डे से करीब 200 मील दूर होता है, उस की उड़ान लगभग पूर्ण रूप से हवाई अड्डे के यातायात नियंत्रक (एयर ट्रैफिक कंट्रोलर) के निर्देशों के आधीन हो जाती है. भले ही विमान का अपहरण हो गया हो, भले ही चालक के सिर पर पिस्तौल ताने कोई खड़ा हो, भले ही विमान न्यूयार्क के बजाए वेनेजुएला पहुंच रहा हो, लेकिन जब हवाई जहाज अड्डे के करीब पहुंचता है तो उतरने की अनुमति यातायात नियंत्रक ही देता है और वही बताता है कि कहां उतरना है. अपहरणकर्ता भी इतने बेवकूफ नहीं होते कि नियंत्रक के निर्देशों का उल्लंघन करें. अगर नियंत्रक आधा घंटा हवा में ही रुकने के लिए चालक से कहे तो उसे रुकना पड़ता है (हां, आपात स्थिति की बात और है).

तो अब देखा जाए कि हवाई जहाजों का यातायात नियंत्रण किस प्रकार होता है.

हवाई अड्डे का नियंत्रण कक्ष तो दूर से ही पहचाना जा सकता है. उस में शीशे की खिड़कियां होती हैं. और इस में बैठा वायु यातायात नियंत्रक ही वह एक मात्र व्यक्ति होता है जिसे अपने नियंत्रण क्षेत्र (कंट्रोल जोन) के भीतर वायु में या भूमि पर किसी भी

क्षण उपस्थित हर प्रकार के वायुयानों की ताजातरीन जानकारी रहती है. वह जानता है कि आकाश में कौन सा विमान कितनी ऊंचाई पर है, किस जगह पर है और किस रफ्तार से उड़ रहा है. अपने कक्ष में मौजूद तमाम इलेक्ट्रानिक उपकरणों और अनेक जटिल यंत्रों की मदद के बावजूद उसे यह निर्णय अपने दिमाग से लेना पड़ता है कि किस विमान को किस जगह उतरने की अनुमति दी जाए और वह भी इस तरह कि तमाम विमानों

उड़ान के समय विमान चालक विमान में लगे यंत्रों की सहायता से ही विमान को नियंत्रित करते हैं.
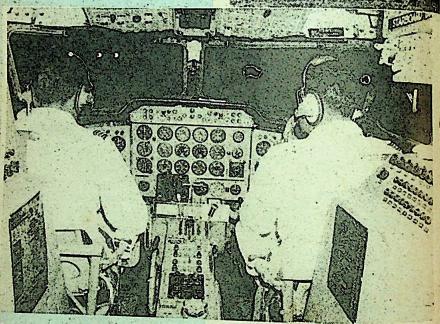
के आने और उड़ान भरने का जो पूर्वनिर्धारित कार्यक्रम है उस में गड़बड़ी न होने पाए. यही नहीं उसे अपने अड्डे से अगले हवाई अड्डे के यातायात नियंत्रक को भी यह सूचित करना पड़ता है कि कौनकौन से विमान उस के यहां से उड़ चुके हैं.

अतः यातायात नियंत्रक का काम अत्यंत कठिन है और इस सारे काम में, आखिरी निर्णय उस का मस्तिष्क ही लेता है, लेकिन उस के कक्ष में अगर विभिन्न प्रकार के इलेक्ट्रानिक उपकरण न लगे होते तो अच्छे-अच्छे दिमाग भी कुछ नहीं कर पाते.

तो आइए देखें कि वे कौन से उपकरण हैं जिन की मदद से वायु यातायात नियंत्रक और उस के सहकर्मी विमान को सुरक्षित उतार लेते हैं. वायुयान उतारने के लिए नियंत्रक को सब से पहले जो काम करना पड़ता है वह है जहाज के चालक से संपर्क स्थापित करना.

और यह संपर्क स्थापित होता है अत्यंत उच्च आवृत्ति पर काम करने वाले एक रेडियो टेलीफोन से. इस टेलीफोन के साथसाथ एक रेडियो दिशाखोजी (रेडियो डायरेक्शन फाइंडर) प्रणाली भी काम में लाई जाती है जिस से आकाश में विमान की स्थिति विशेष का पता अपने आप लगता रहता है कि कौन सा जहाज कहां है, किस रफ्तार से उड़ रहा है, उस का चालक क्या चाहता है.

यह सारी जानकारी उड़ान स्थिति पट (फ्लाइट प्रोग्रेस बोर्ड) पर लगातार प्रदर्शित होती रहती है. इस के अलावा धुंध कैसी है, बादल कितनी ऊंचाई पर हैं, हवाई पट्टी के आसपास साफ दिखाई दे रहा है या नहीं, यह सभी जानकारियां भूमि पर स्थित अलगअलग केंद्रों से यातायात नियंत्रक तक पहुंचाई जाती हैं.

हवाई अड्डे से दो सौ मील दूर से ही हवाई जहाज की उड़ान यातायात नियंत्रक के अधीन हो जाती है.

अब आगे का काम बिना राडार के चलने वाला नहीं और नियंत्रक भी राडार का उपयोग करता है. लेकिन नियंत्रक का राडार मामूली नहीं होता. इस राडार को योजना की स्थिति दर्शाने वाला राडार (प्लान पोजीशन इंडिकेटर राडार) कहते हैं. इस राडार के परदे (स्क्रीन) पर 'इलेक्ट्रानिक वीडियो मैपिंग' नामक तकनीक की मदद से तमाम हवाई पट्टियों और हवा में उन के सापेक्ष वायुयान की स्थिति प्रदर्शित होती है. राडार के परदे पर

उतरता हुआ वायुयान एक सरकते बिंदु जैसा दिखाई देता है. साथ ही इस में यह भी इंगित होता है कि यह कौन सा विमान है.

नियंत्रण के उपकरण

एक मिनट भी तो नहीं लगता कि विमान अड्डे के एकदम करीब पहुंच जाता है. जहाज के हवाई अड्डे से केवल दस मील दूर रह जाने पर नियंत्रक शीघ्र पहुंचने की स्थिति बताने वाले एक दूसरे राडार की मदद लेता है. इस राडार को 'प्रेसिशन एप्रोच राडार' कहते हैं. इस राडार के परदे पर यह बिलकुल स्पष्ट देखा जा सकता है कि विमान किस मार्ग से उतर रहा है. इसी बीच कौन सी हवाई पट्टी खाली है आदि देख कर वायुयान चालक को आवश्यक निर्देश दे दिए जाते हैं.

आधुनिक हवाई अड्डों पर एक और

उतरने के बाद विमान, नियंत्रक द्वारा निर्देशित स्थान पर ही खड़ा किया जाता है.

भूमि पर स्थित अलगअलग केंद्रों से नियंत्रक कक्ष को वातावरण संबंधी जानकारी मिलती रहती है.
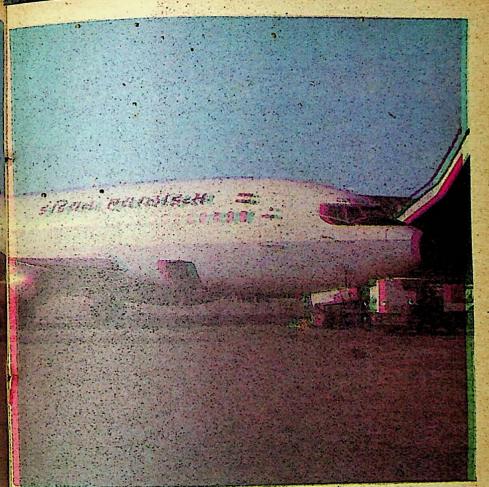
राडार काम में लाया जाता है. वायु क्षेत्र की सतह पर यान की गति बताने वाले इस राडार को 'एयरफील्ड सरफेस मूवमेंट राडार' कहते हैं. इस राडार का कार्यक्षेत्र केवल हवाई अड्डे तक ही सीमित होता है. इस राडार की खूबी यह है कि इस के परदे पर हवाई पट्टी ही नहीं बल्कि टैक्सी के छोटेछोटे रास्ते भी बिलकुल साफ दिखाई देते हैं. हवाई जहाज इस में चमकते बिंदु जैसा न दिख कर अपनी मूल आकृति में ही दिखाई देता है.

इस कार्य के लिए अब यूरोप के कुछ हवाई अड्डों में इस से भी विकसित प्रणाली काम में लाई जा रही है. वहां प्रयोग किए जाने वाले राडारों को जहाज की स्थिति दूसरी बार सूक्ष्मता पूर्वक ज्ञात कराने वाला राडार (सेकेंडरी सर्वीलेंस राडार) कहते हैं. विमान इस राडार की तरंगों को सिर्फ परावर्तित न कर के उन्हें पकड़ कर उन का उत्तर देता है.

विमान उतरने ही वाला है

तो अब वह दस मील का फासला भी सैकंडों में तय हो गया. अब तो विमान बस उतरना ही चाहता है. चालक अब विमान को जहाज उतारने की उपकरण प्रणाली (इंस्ट्रूमेंट लैंडिंग सिस्टम) के हवाले कर देते हैं.

इस प्रणाली का पहला चरण होता है—विजुअल अप्रोच स्लोप इंडिकेटर. हवाई
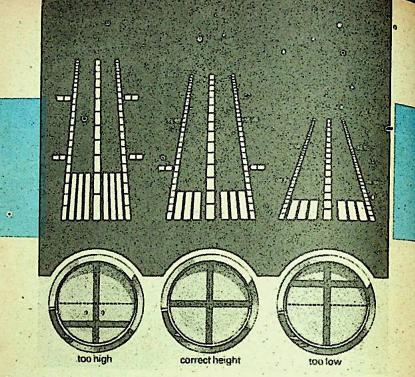
विजुअल एप्रोच स्लोप इंडिकेटर: उतरते समय विमान के सही ढाल पर होन पर चालक को सफेद व लाल दोनों बत्तियां दिखाई देती हैं.

पट्टी पर दूर तक दोनों तरफ बारीबारी से सफेद और लाल बत्तियां लगी होती हैं. ये बत्तियां तीव्र प्रकाश की किरणें फेंकती हैं. इन से फेंकी गई सफेद रोशनी ज्यादा कोण से यानी ऊंची फेंकी जाती है और लाल रोशनी कम कोण से. अब अगर चालक बड़े कोण पर यानी ज्यादा तिरछा हो कर जहाज उतार रहा है तो उसे केवल सफेद बत्तियां दिखाई देती हैं और अगर जहाज बहुत ही धीरेधीरे उतार रहा है तो उसे केवल लाल बत्तियां ही दिखाई देती हैं. पर जब उसे सफेद और लाल दोनों बत्तियां दिखाई देती हैं तो वह जान जाता है कि वह सही कोण या ढाल पर उतर रहा है. पर यह प्रणाली घनी धुंध में काम नहीं देती और तब फिर राडारों की मदद ली जाती है.

हवाई पट्टी से बहुत दूर एक यंत्र लगा होता है. इसे 'स्टैकिंग बीकन' कहते हैं. यह रेडियो तरंगों की एक शंकु नुमा किरण सीधे ऊपर फेंकता है. उतरने को तैयार कोई भी विमान इस किरण के चारों ओर वायु में घूमता रहता है. इसी बीच यदि कोई दूसरा जहाज आ जाए तो नियंत्रक उसे पहले वाले विमान से कम से कम 300 मीटर ऊपर वैसे ही चक्कर लगाने का निर्देश देता है. नियंत्रक द्वारा उतरने का निर्देश मिलने पर नीचे वाला विमान पहले उतरता है.

किरणें फेंकने के 3 स्रोत और

स्कैटिंग बीकन के बाद लेकिन हवाई पट्टी से पूर्व वैसी ही शंकु नुमा किरणें फेंकने वाले 3 स्रोत और होते हैं. इन्हें क्रमशः बाह्य संकेतक (आउटर मार्कर), मध्य संकेतक (मिडिल मार्कर) और सीमा संकेतक (बाउंडरी मार्कर) कहते हैं. उतरता हुआ विमान क्रमशः इन तीनों से हो कर गुजरता है और विमान के यंत्रों से चालक को यह पता
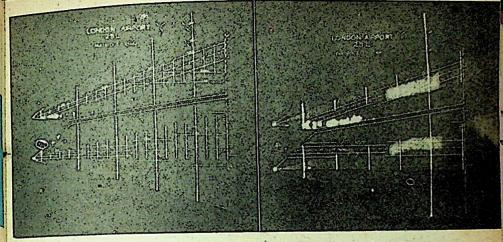
प्रेसिपेशन एप्रोच राडार : प्रकाश का ऊपरी हिस्सा विमान के उतरने का ढलान बताता है. चित्र में—विमान जब हवाई अड्डे से 10 मील दूर है (बाएं), विमान जब हवाई अड्डे से तीन मील दूर है (दाएं).

चलता है कि हवाई पट्टी अब आ ही गई है. हवाई पट्टी के आखिरी छोर पर रेडियो तरंगों के दो स्रोत होते हैं. इन में पहले वाले स्रोत को 'लोकलाइजर' और दूसरे को 'ग्लाइड पाथ' किरण कहते हैं. ये तरंगे पतली पट्टी के रूप में प्रसारित की जाती हैं. इन का ध्रुवण (पोलराइजेशन) विपरीत दिशाओं में होता है.

ये दोनों तरंगपुंज वायु में एकदूसरे को 90 अंश के कोण पर काटते हैं. अब चालक का काम है विमान को उसी रेखा पर चला कर उतार देना. विमान में लगे उपकरण किरणों की उस कटाव रेखा को एक बार पकड़ लेने पर विभिन्न प्रकार की ध्वनियों से चालक को सूचित करते रहते हैं कि जहाज उस रेखा के ऊपरनीचे या दाएंबाएं हो रहा है. इस प्रकार तमाम निर्देशों का पालन करते हुए जहाज वास्तविक हवाई पट्टी के छोर पर सकुशल पहुंच जाता है. लेकिन विमान अभी जमीन से कोई दो सौ फुट ऊंचाई पर होता है. अब हवाई पट्टी पर खूब रोशनी की जाती है और वहां लगी अनेक निर्देशक बत्तियां एक साथ जलाई जाती हैं. इस से धुंध वगैरह के बावजूद चालक को इतना तो दिख ही जाता है कि वह जहाज को हवाई पट्टी पर उतार सके. अब अगर तमाम यंत्र धोखा दे भी जाएं तो भी चालक केवल अपने बूते पर विमान को उतार सकता है.

विमान उतर गया, लेकिन अभी तो इसे निश्चित स्थान पर खड़ा (पार्क) करना है और यह भी यातायात नियंत्रक ही बताएगा कि जहाज को कहां खड़ा करना है.

यातायात नियंत्रक की महत्ता

1975 के बाद से यूरोपीय हवाई अड्डों पर 'यूरोकंट्रोल मैसट्रिक्ट आटोमैटिक डाटा प्रोसेसिंग' नामक प्रणाली लागू की गई है. इस में आठ कंप्यूटरों का प्रयोग होता है जो 250 विमानों का नियंत्रण कर सकते हैं. इन के प्रयोग से यातायात नियंत्रक का काम आसान हो गया है.

फिर भी विमान से सकुशल यात्रा करने के बाद चालक की कुशलता और विमान परिचारिकाओं की मोहक मुस्कानों और सेवासुश्रुषा के साथसाथ उस गुमनाम व्यक्ति का शुक्रगुजार भी होना चाहिए जो हवाई यात्रा के सकुशल पूरा होने में सर्वाधिक योगदान देता है. ●

आदिमानव की

भीमबेटका में प्राचीन सभ्यता के मिले अवशेषों से आदिमानव के बारे में कुछ रहस्यों का पता चला है. पुरातात्विक और ऐतिहासिक दृष्टि से महत्वपूर्ण ये अवशेष आदिमानव के बारे में कितनी रोचक व आश्चर्यजनक जानकारी देते हैं...

कला, चित्रकारी, संगीत या शिकार के प्रति मानव का आकर्षण आधुनिक सभ्यता की देन नहीं है, अपितु हजारों वर्ष पूर्व ही उस में कला, चित्रकारी तथा शिकार का शौक उत्पन्न हो गया था. भोपाल से 40 किलोमीटर दक्षिण में भीमबेटका नामक स्थान पर मिली गुफाओं के भित्तिचित्र इस बात के प्रमाण हैं कि शताब्दियों पूर्व जब मानव आदिमानव कहा जाता था तथा सभ्यता से कोसों दूर था, तब भी वह अपने मन के उद्गार चित्रों द्वारा व्यक्त करता था.

वेतवा घाटी की सभ्यता

अभी इतिहास में सिंधु घाटी की सभ्यता, नील नदी की सभ्यता तथा नर्मदा नदी की सभ्यता ही प्रसिद्ध थीं. भीमबेटका के ये भित्तिचित्र इस बात के प्रमाण हैं कि

चित्रकला का केंद्र: भीमबेटका

लेख • दिनेशचंद्र वर्मा

वेत्रवती अथवा वेतवा के किनारे भी एक सभ्यता फलीफूली थी तथा यह सभ्यता काफी विकसित थी. इस सभ्यता को आदिमानव की सभ्यता कहा जा सकता है. भीमबेटका वेतवा नदी के तट पर स्थित है तथा विंध्याचल पर्वत की उत्तरी शृंखलाओं से घिरा हुआ है. भीमबेटका स्वयं छोटीछोटी पहाड़ियों का समूह है. इन्हीं पहाड़ियों में ये गुफाएं स्थित हैं जहां आदिमानव ने अपनी कला का प्रदर्शन किया है.

भीम से संबंध

आसपास के क्षेत्रों के निवासी इस स्थान का संबंध महाभारत के भीम से बताते हैं. स्थानीय मान्यता के अनुसार यह स्थान भीम की बैठक था. इसी लिए इस स्थान को भीमबैठका या भीमबेटका कहा जाता है. इसी क्षेत्र में बाण गंगा नामक नदी बहती है. स्थानीय लोगों का विश्वास है कि इस नदी का जल प्रवाह अर्जुन ने उस समय किया था, जब
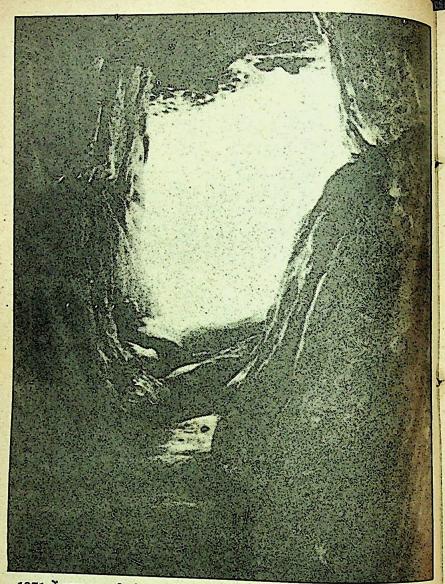
1971 में शुरू हुए भीमबेटका की खुदाई के कार्य के दौरान इस में इस प्रकार की 754 गुफाएं मिलीं.

युद्ध में आहत भीष्म को प्यास लगी थी. तब अर्जुन ने पृथ्वी में तीर मारा था, जिस से पानी निकल पड़ा था. समीप ही पांडवपुरा नाम का एक जलकुंड है.

भीमबेटका से भीम या अर्जुन का संबंध कभी रहा हो, या न रहा हो, पर पुरातत्व एवं इतिहास के विद्वान यह मानते हैं कि निषाद, शबर, पुलिंद एवं वानर नामक गैरआर्य जातियों ने यहां वर्षों निवास किया है. घने जंगल एवं नदियों का किनारा उन के निवास के लिए श्रेष्ठ आधार थे. ये जातियां अपना भरणपोषण शिकार द्वारा ही करती थीं.

शिकार के लिए वे पत्थर के हथियार उपयोग में लाते थे तथा भीमबेटका की प्रकृति निर्मित गुफाएं उन का निवास थीं.

उन्नीसवीं शताब्दी में भीमबेटका की इन गुफाओं तथा वहां के विलक्षण भित्तिचित्रों का पता सब से पहले ए. कैरलियल, जे. काकबर्न तथा डब्ल्यू. फ्रावेट नामक अन्वेषकों को लगा. उन्होंने इन भित्तिचित्रों का अध्ययन तो किया, पर शेष संसार इन से अपरिचित ही रहा.

सन 1957 में इन भित्तिचित्रों की खोज प्रसिद्ध पुरातत्वशास्त्री वी.एस. वाकणकर ने

गुफा व उस का प्रवेश द्वार : आदिमानव की सूझबूझ का प्रमाण.
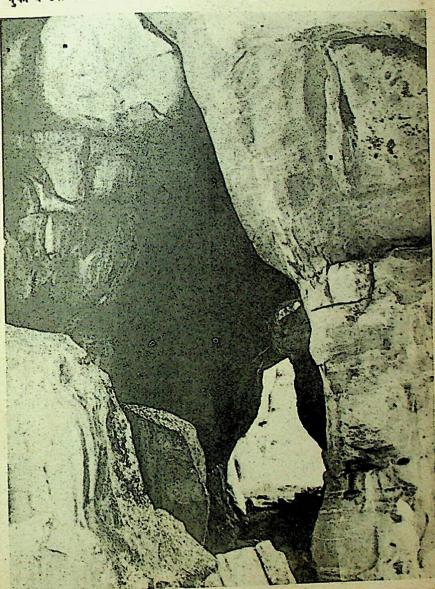
की. इस के बाद उन के प्रयत्नों से सन 1971 में भीमबेटका की व्यवस्थित रूप से खुदाई का काम प्रारंभ हुआ. मध्य प्रदेश के सागर विश्वविद्यालय एवं विक्रम विश्वविद्यालय के अतिरिक्त पुणे के डक्कन कालिज तथा बाजेल (स्विटजरलैंड) के फोल्क आर्ट म्यूजियम ने भी इस खुदाई में भाग लिया. इस खुदाई के जों परिणाम सामने आए, उन से यह पता चलता है कि आदिमानव, जिसे हम असभ्य कहते हैं, कितनी सूझबूझ, बुद्धि, कार्यकुशलता एवं चतुराई का धनी था. इस खुदाई में लगभग 1,623 पत्थर के औजार या हथियार मिले. इन में चाकू तथा छुरी आदि भी शामिल हैं.

इस खुदाई से भारत के प्रागैतिहासिक काल के एक नए अध्याय का पता चला तथा पाषाण युग के मानव के जीवन के रहस्य की कई परतें खुलीं. भीमबेटका में लगभग 754 गुफाएं मिली हैं, जिन में से 500 से ज्यादा गुफाओं में चित्र मिले हैं. इन में से अधिकांश चित्रों के बारे में पुरातत्वशास्त्रियों का अनुमान है कि ये 10,000 वर्ष पुराने हैं. इन चित्रों से प्रागैतिहासिक काल के मानव की गतिविधियों की बहुमूल्य जानकारी मिली है. इन चित्रों में शिकार, नृत्य, संगीत, युद्ध, घुड़सवारी, हाथी की सवारी, शहद एकत्र करने आदि के दृश्य चित्रित किए गए हैं. हिरन, कुत्ते, बकरे,

यहां 500 से ज्यादा गुफाओं में 10 हजार वर्ष पुराने ऐसे चित्र मिले हैं जिन से उस समय के मानव की गतिविधियों की बहुमूल्य जानकारी मिलती है. (बाएं ऊपर व नीचे).

आदि मानव के प्राकृतिक मकान : गुफा की एक दीवार का भीतरी दृश्य (दाएं).

हाथी, घोड़े, शेर, बाघ, गाय, मोर, बंदर भैंस, मगर आदि के भी चित्र हैं.

कई गुफाओं में उस समय के धार्मिक विश्वास से संबंधित चित्र भी मिले हैं. इन चित्रों को देखने से पता चलता है कि उस काल के निवासी अग्नि की पूजा करते थे. पर सब से अधिक संख्या शिकार एवं युद्ध संबंधी चित्रों की है. ऐसा अनुमान किया जाता है कि आदिमानवों को इन गुफाओं को रातदिन के अनुभवों से सज्जित एवं चित्रित करने का शौक था.

भीमबेटका के इन भित्तिचित्रों में लाल, सफेद, काले, गुलाबी एवं हरे रंगों का प्रयोग किया गया है. इन भित्तिचित्रों की रचना से यह भी पता चलता है कि इन चित्रों की रचना किसी एक समय में नहीं हुई, बल्कि इस में अनेक युग एवं सभ्यताएं गुजर गईं. समय एवं काल की दृष्टि से इन भित्तिचित्रों को कई किस्मों में विभाजित किया जा सकता है.

इन में से पहली किस्म उन भित्तिचित्रों की है जो ईसा से चार हजार या इस से अधिक वर्ष पुराने हैं. इन चित्रों की मानवाकृति में मानव का धड़ चौकोर एवं सिर तिकोना बनाया गया है. पशुओं के चित्र बड़ेबड़े हैं तथा इन पशुओं में हाथी, शेर, बारहसिंगा आदि शामिल हैं.
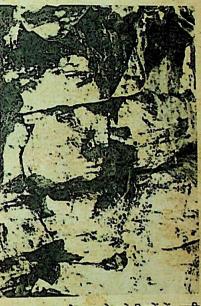
पर इस के बाद के बने चित्रों में काफी विषय शामिल हैं. नृत्य एवं शिकार के दृश्य तो हैं ही, हाथी, शेर, हिरण एवं कई पक्षी भी चित्रित किए गए हैं. शिकार के शस्त्रों में तीरकमान, भाले आदि का चित्रण है.

इस के बाद के बने चित्रों से यह पता चलता है कि भीमबेटका के निवासी खेती के तरीकों से परिचित थे.

इस के बाद के जो चित्र हैं वे ज्ञात इतिहास के युग के समय के आरंभ के चित्र हैं. इन चित्रों में सज्जा पर अधिक ध्यान दिया गया है. इन चित्रों में घोड़े एवं हाथी की सवारी, ढाल एवं तलवार, धार्मिक चिह्न आदि का चित्रण है. यक्ष, वृक्षदेवता, आकाश मार्ग के रथ आदि को भी चित्रित किया गया है.
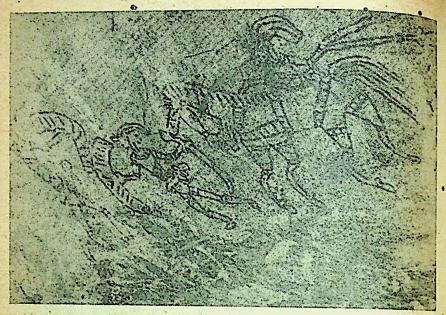
गुफाओं में बने चित्रों से ज्ञात होता है कि उस समय लोगों की आखेट, घुड़सवारी, युद्ध व अग्नि पूजा में रुचि थी.

भीमबेटका के चित्रों के काल के विषय में लंबी अवधि तक विचार किया गया. कई पुरातत्व शास्त्री भीमबेटका के भित्तिचित्रों को आज से 12 और 15 हजार वर्ष पुराना तक मानते हैं.

भीमबेटका की इन छोटी पहाड़ियों में ही वे गुफाएं हैं जहां आदिमानव रहते थे.

भीमबेटका के चित्रों में इस्तेमाल किए गए रंग यद्यपि थोड़े धुंधले हैं, पर हजारों वर्ष तक उन का बना रहना बहुत ही विस्मयकारी है. पुरातत्वशास्त्रियों का अनुमान है कि ये रंग मैंगनीज, लाल पत्थर, कोयले, जानवरों की चरबी, पत्तियों एवं पेड़ों के रस के मिश्रण से तैयार किए गए थे. भीमबेटका की पहाड़ी चट्टानों की सतह पर आक्साइड है. रंगों से आक्साइड के रासायनिक संयोग के कारण ये रंग स्थायी हो गए तथा शताब्दियां बीत जाने पर भी उन में परिवर्तन नहीं हुआ.

रंगों का यह स्थायित्व चाहे मात्र प्राकृतिक संयोग से हुआ हो, पर इन रंगों से जो चित्र बने वे भारत की प्रागैतिहासिक सभ्यता का एक नया रंग पेश करते हैं और जो लोग आधुनिक सभ्यता को रंगीन एवं कलात्मक मानते हैं, उन के लिए ये रंग एक चुनौती देते हैं कि मानव अपने आदि स्वरूप में भी कलाप्रिय, संगीतप्रिय एवं सजावटप्रिय था.●

दुनिया भर की

ईरान : दिवालिया बनने की तरफ

ज्वालामुखी के दहाने पर खड़ा ईरान. अल साल्वाडोर की स्थिति से परेशान अमरीका. सत्ता संघर्ष के नाजुक दौर से गुजरता हुआ रूस. गिरगिट की तरह रंग बदलते कर्नल गद्दाफी और जिंबाब्वे में राजनीतिक उठापटक—की ताजा स्थिति का विहंगम जायजा

पिछले दिनों ईरान ने आयतुल्लाह खुमैनी के नेतृत्व में हुई इसलामी क्रांति की तीसरी वर्षगांठ मनाई और साथ ही सितंबर, 1980 में इराकी आक्रमण के बाद इराक द्वारा छीने गए ईरानी प्रदेशों को फिर से हासिल करने के लिए दुश्मन से लड़ाई जारी रखने का संकल्प भी दोहराया. ईरान में इसलामी क्रांति की शुरुआत बढ़ते विद्रोह के फलस्वरूप जनवरी 1979 में शाह मुहम्मद रजा पहलवी के देश से भाग जाने और यरोप में निर्वासित जीवन बिता रहे ईरानी मुल्लाओं के नेता आयतुल्लाह खुमैनी के अगले ही महीने स्वदेश लौट आने से हुई थी. इस के बाद का अधिकांश समय खुमैनी की जयजयकार में ही बीता है. करीब 20 महीनों से चल रहे ईरान इराक युद्ध के रुकने के अभी कोई आसार नजर नहीं आ रहे हैं. वैसे अनेक विकासशील देश इन दोनों मुसलिम देशों में समझौता कराने की कोशिश में लगे हुए हैं. अल्जीरियाई नेता दोनों में सुलहसफाई के लिए विशेष रूप से दौड़धूप में लगे हुए हैं.

इधर 81 वर्षीय क्रांतिकारी नेता आयतुल्लाह खुमैनी का स्वास्थ्य दिन पर दिन गिरता जा रहा है और वह सार्वजनिक कार्यक्रमों तथा राजनीतिक मामलों से दूर रह कर काम में जिंदगी के आखिरी लम्हे गुजार रहे हैं. पिछले दिनों इन के 'अल्लाहताला को प्यारा' होने की अफवाह ईरान में इतनी तेजी से उड़ी कि लोगों में बेचैनी फैल गई और खुमैनी को अपना बीमार, पीला, मुरझाया चेहरा एक बार फिर जनता को दिखाना पड़ा.

आयतुल्लाह खुमैनी : ईरान में सत्ता संघर्ष, आर्थिक संकट व जन असंतोष के लिए जिम्मेदार.
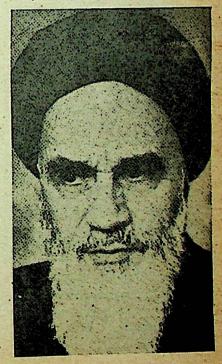
इधर आयतुल्लाह खुमैनी जिंदगी की आखिरी सांसें ले रहे हैं और उधर राष्ट्रपति अली खुमैनी, प्रधान मंत्री मीर हुसैन मुसावी और मजलिस के अध्यक्ष अली अकबर राफसानजानी अपनी स्थिति को मजबूत करने में लगे हुए हैं. जनमत संग्रह और आयतुल्लाह खुमैनी की रजामंदी ही इस त्रिमूर्ति के अस्तित्व को मान्यता दे पाएगी. उधर पेरिस में बैठे भूतपूर्व राष्ट्रपति बनी सदर और कम्यूनिस्ट नेता आयतुल्लाह खुमैनी के चित्रपट से हटने के इंतजार में बैठे हैं और ईरान में किसी भी प्रकार की त्रिमूर्ति के प्रतिष्ठित होने का विरोध कर रहे हैं.

साढ़े तीन करोड़ की जनसंख्या वाला ईरान स्पष्टतः गृहयुद्ध जैसी स्थिति की तरफ बढ़ता नजर आ रहा है. आयतुल्लाह खुमैनी के हाथ में शासन की बागडोर आने के बाद से अब तक करीब चार हजार लोग गोलियों का निशाना बन चुके हैं और हजारों जेलों में सड़ रहे हैं. अमरीका तथा पश्चिमी देशों से टकरा कर आयतुल्लाह खुमैनी ने देश में आर्थिक संकट को और बढ़ावा दिया है. रहीसही कमर ईरान-इराक युद्ध के बढ़ते खर्चे ने तोड़ दी है.

पिछले कुछ अरसे में ही ईरान में 30 प्रतिशत बेरोजगारी बढ़ गई है. बेरोजगार लोग प्रदर्शन के अलावा अब तोड़फोड़ की कारवाइयां भी करने लगे हैं. ईरान की पूर्वी सीमाओं पर 20 लाख अफगान शरणार्थी रह रहे हैं. इराक के करीब एक लाख शिया शरणार्थी भी ईरानी सीमा पर धरना दिए हुए हैं. इधर ईरान-इराक युद्ध के शुरू होने से पूर्व सीमाओं पर रहने वाले करीब 10 लाख लोग भाग कर पहले ही चले गए थे. अब वे वापस लौट कर नई आर्थिक समस्याएं पैदा कर रहे हैं. इराक के करीब पांच हजार युद्धबंदी आराम से बैठ कर ईरान की अर्थव्यवस्था को और नुकसान पहुंचा रहे हैं.

सन 1978 से पूर्व ईरान दुनिया का सब से बड़ा तेल उत्पादक देश था और अब उस के बहुत से तेलकूप युद्ध के कारण बंद पड़े हैं. जितना तेल निकलता है उस से इतनी विदेशी मुद्रा नहीं मिल पाती कि युद्ध जीतने के लिए बढ़िया हथियार खरीदे जा सकें. इधर सुनने में आया है कि ईरान अब इजराइल और रूस से हथियार खरीदने की गुपचुप बातें कर रहा है.

अल साल्वाडोर: क्या दूसरा विएतनाम बनेगा?

प्रशांत महासागर के तट पर होंडुरास तथा ग्वाटेमाला के बीच में बसा मध्य अमरीका का करीब 45 लाख आबादी वाला सब से छोटा देश अल साल्वाडोर इन दिनों धीरेधीरे गृहयुद्ध की चपेट में आता जा रहा है. इस समय करीब 22,000 सरकारी सेना और छः या आठ हजार वामपंथी छापामारों में हरदम मुठभेड़ें होती रहती हैं. एक सब से महत्वपूर्ण बात यह है कि इन छापामारों का अब तक देश के एक तिहाई हिस्से पर कब्जा हो चुका है और बाकी के क्षेत्र पर कब्जे के लिए हमेशा लड़ाई होती रहती है. अल साल्वाडोर में गृहयुद्ध की स्थिति का अंदाजा इसी बात से लगाया जा सकता है कि 1980 में हिंसा के परिणामस्वरूप अनुमानतः 9,000 व्यक्ति मारे गए.

अमरीकी महाद्वीप का देश होने के नाते संयुक्त राज्य अमरीका को इस देश में चल रहे गृहयुद्ध और वामपंथियों के बढ़ते प्रभाव से चिंता हो रही है. अभी हाल में अमरीकी राष्ट्रपति रेगन ने क्यूबा और रूस को वामपंथियों को सहायता देने के विरुद्ध कड़ी चेतावनी भी दी है.

21,393 वर्ग किलोमीटर क्षेत्रफल के इस देश में पिछले चार वर्षों से तो स्थिति दिन ब दिन बिगड़ती जा रही है. इस कृषि प्रधान देश की खेती लायक तीन चौथाई भूमि पर सिर्फ 14 परिवारों का कब्जा है, जो सत्ता के साथ जुड़ कर किसी भी प्रकार के भूमि सुधारों और जनकल्याणकारी योजनाओं को किसी भी रूप से लागू होने देना नहीं चाहते हैं. खेतिहर मजदूरों के असंतोष का लाभ उठा

कर वामपंथी सक्रिय हो उठे हैं. कहा जाता है कि छापामारों को निकारागुआ, क्यूबा और रूस से फौजी मदद मिलती है जब कि कुछ लोगों का कहना है कि जो कुछ भी यहां हो रहा है वह शुद्ध रूप से यहीं के लोगों का मामला है.

अमरीका के भूतपूर्व राष्ट्रपति जिमी कार्टर ने कैरीबियन देशों को वामपंथियों से बचाने के लिए एक योजना बनाई थी, लेकिन ईरान में अमरीकी बंदियों के संकट में फंस जाने के कारण वह इसे लागू न कर सके. रेगन के सत्तारूढ़ होने पर अल साल्वाडोर के वामपंथी छापामारों ने अमरीका से देश में शांति स्थापित करने की अपील की थी, जिसे अल साल्वाडोर सत्ताधारियों के कहने पर राष्ट्रपति रेगन ने नामंजूर कर और हथियारों की नई खेप भेज कर स्थिति को और जटिल बना दिया. यही नहीं, अमरीका ने अल साल्वाडोर के सैनिकों को फौजी प्रशिक्षण दे कर आपसी लड़ाई को और लंबा खींचने में मदद दी है.

अल साल्वाडोर में इन दिनों जहां छापामारों का प्रभाव बढ़ता जा रहा है, वहां सरकारी फौजों द्वारा की जा रही हत्याओं की अमरीका में भी आलोचना की जा रही है.

अल साल्वाडोर की बिगड़ती स्थिति के कारण अमरीका दुविधा में फंस गया है. यदि अल साल्वाडोर में अंतिम विजय वामपंथी छापामारों की हुई तो इस का असर पड़ोसी देशों—होंडुरास और ग्वाटेमाला में भी पड़ेगा और वहां के वामपंथी अल साल्वाडोर का अनुसरण करेंगे. यदि राष्ट्रपति रेगन अल साल्वाडोर में अपनी सेनाएं भेजते हैं तो यह अमरीका के लिए विएतनाम जैसी स्थिति में फंसना होगा, जिस की अनुमति स्वयं अमरीकी जनता नहीं देगी.

सुनने में यह भी आया है कि राष्ट्रपति रगन अब इस समस्या को सुलझाने के लिए रूस से सहयोग लेने के इच्छुक हैं. इस का कारण स्पष्ट है मार्च के अंत में अल साल्वाडोर में जो आम चुनाव हुए, उस में किसी भी दल को स्पष्ट विजय प्राप्त नहीं हुई. राष्ट्रपति जोस नेपोलियन डवार्ट की क्रिश्चियन डेमोक्रेटिक पार्टी, जिसे अमरीकी सरकार का पूरा समर्थन प्राप्त था, बहुमत प्राप्त करने में विफल रही.

अमरीका और लीबिया में बढ़ता तनाव

खारतूम में अमरीकियों द्वारा चलाए जा रहे एक क्लब को जलाए जाने की घटना और अमरीका द्वारा लीबिया से आने वाले कच्चे तेल पर लगाई गई रोक से अमरीका और लीबिया संबंधों में फिर से तनाव आ गया है. अमरीका लीबिया की आतंकवादी प्रवृत्ति से इतना क्षुब्ध है कि उस ने इस बार अनेक आर्थिक प्रतिबंध भी लगा दिए हैं. इन में लीबिया से आने वाले तेल पर प्रतिबंध के अलावा लीबिया को दी जाने वाली तेल और गैस संबंधी तकनीकी मदद को रद्द करना भी है.

पश्चिम एशिया के मुसलिम देशों में लीबिया के कर्नल गद्दाफी अपने आप को

कर्नल गद्दाफी की 'हरी किताब' : जिसे लिख कर अब वह समाज सुधारक होने का दावा कर रहे हैं.

Qathafi

The Green Book

Part Three

The Social Basis of the Third Universal Theory

Part One

The Solution of the Problem of Democracy

'The Authority of the People'

Part Two

The Solution of the Economic Problem

बहुत बड़ा आतंकवादी मसीहा मानने लगे हैं. दुनिया में जहां कहीं भी तोड़फोड़ या आतंकवादी घटनाएं घटी हैं, उन सभी में अपना सहयोग बताने में गद्दाफी पीछे नहीं रहते हैं. अमरीका को कोसने में तो यह सब से आगे रहते हैं. अपनी एक 'हरी क़िताब' लिख कर समाज सुधारक होने का भी इन्होंने दावा किया है.

कर्नल गद्दाफी 'सुधार के कार्यों' में अपने देश तक ही सीमित नहीं हैं. पासपड़ोस के मुसलिम देशों के शासकों का तख्ता पलटने, आतंकवादियों को आर्थिक व राजनीतिक सहायता देने और गृहयुद्ध में फंसे देशों में अपनी सेनाएं भेजने में यह पीछे नहीं रहते. पिछले दिनों अफ्रीका के एक देश चाद में अपनी भूमिका से इन्होंने अनेक अफ्रीकी देशों को नाराज कर दिया और सऊदी अरब के शासकों को भी यह अपनी आलोचना का निशाना बनाने में नहीं चूकते. रूस का पुछल्ला कहे जाने वाले कर्नल गद्दाफी ने कुछ अरसा पूर्व यूरोप, मध्य अमरीकी और फिलिपीन में उभर रहे छापामारों को मदद देने का दावा किया है.

अपने आप को मुसलिम जगत की जबरदस्त ताकत समझने वाले लीबिया के इस शासक को तब गहरा झटका लगा जब अमरीका ने लीबिया के तट के पास सिदरा खाड़ी में अपने युद्धाभ्यास के दौरान इस के दो विमान मार गिराए और सख्त कारवाई करने की भी चेतावनी दी. सिदरा खाड़ी को सन 1973 में कर्नल गद्दाफी ने अपना जल प्रदेश घोषित कर दिया था. अमरीका ने भूमध्य सागर में लीबिया के तट के पास मिस्र, सूडान, सोमतिया और ओमान की नौसेना के साथ युद्धाभ्यास कर लीबिया को यह बता दिया है कि वह किसी गलतफहमी में न रहे.

पिछले दिनों लीबिया में कुछ ऐसी घटनाएं घटी हैं जिन से कर्नल गद्दाफी का तख्ता हिलने लगा है. हाल में लीबिया से सभी गैर देशों के लोगों को वहां से चले जाने के नए फरमान से लगता है कि इन की स्वयं की गद्दी खतरे में पड़ गई है.

जिंबाब्वे : एक दलीय सरकार की ओर

अप्रैल, 1980 में स्वाधीन हुए अफ्रीका के छोटे से देश जिंबाब्वे में प्रधान मंत्री और जिंबाब्वे अफ्रीका नेशनल यूनियन के नेता

अमरीका के राष्ट्रपति रोनाल्ड रेगन : लीबिया को सख्त से सख्त सबक सिखाना जरूरी है.

रॉबर्ट मुगाबे ने अपने राजनीतिक उद्देश्यों की सफलता के लिए छापामार काररवाई के दिनों के साथी और बिना विभागीय मंत्री तथा जिंबाब्वे अफ्रीकन पीपल्स पार्टी के नेता जोशुआ एन्कोमो को सरकार के विरुद्ध क्रांति करने के आरोप में बरखास्त कर देश में नई अस्थिरता का बीज बो दिया है.

64 वर्षीय एन्कोमो के साथ यातायात, सड़क और प्राकृतिक ऊर्जा एवं जनकल्याण मंत्रियों को भी हटा दिया गया है. जिंबाब्वे के राष्ट्रपति कैनन बनाना ने उन्हें मुगाबे मंत्रिमंडल से बरखास्त करने के साथसाथ उन की पार्टी द्वारा संचालित 11 कंपनियों को भी सरकारी कब्जे में लेने के आदेश दिए हैं. उधर एन्कोमो ने मुगाबे के आरोपों को निराधार बताया है और शासन पर अपनी एक दलीय पार्टी का राज स्थापित करने का आरोप लगाया है.

कहा जाता है कि इन दोनों नेताओं के मतभेद काफी पुराने हैं. सात वर्ष तक जिंबाब्वे की स्वाधीनता के लिए ब्रिटेन की सरकार से संघर्ष करते हुए इन दोनों नेताओं के बीच सतही एकता उस समय हुई जब मुगाबे ने सरकार के गठन के समय एन्कोमो का सहयोग मांगा. जिंबाब्वे की सौ सदस्यों वाली संसद में मुगाबे की पार्टी के 57, एन्कोमो की पार्टी के 20 सदस्यों के अलावा 20 गोरे सदस्य और बिशप मुजोरेवा के तीन सदस्य हैं. इस तरह मुगाबे की पार्टी को पूर्ण बहुमत प्राप्त है और वह आसानी से एकदलीय सरकार स्थापित करने की दिशा में सोच सकते हैं. ऐसा लगता है कि मुगाबे ने एकदलीय सरकार की स्थापना के लिए ही एन्कोमो की पार्टी को अपने से अलग किया है.

करीब 74 लाख की आबादी वाले जिंबाब्वे की सेना में 60 हजार सैनिक हैं जिन में 20 हजार एन्कोमो के छापामार गुट के और 30 हजार मुगाबे के छापामार गुट के हैं. बाकी के 10 हजार सैनिकों में एक हजार ऐसे गोरे सैनिक हैं जो पहले रोडेशियाई सेना में काम करते थे.

दोनों नेताओं के छापामार सैनिकों की

लीबिया के राष्ट्रपति कर्नल गद्दाफी: अमरीका को कोसने और मुसलिम राष्ट्रों में अस्थिरता पैदा करने में सब से आगे.

कुछ अरसा पूर्व बुलावायो नामक स्थान पर भिड़ंत हो गई थी, जिसे बाद में सुलझा लिया गया. लेकिन इस घटना के बाद मुगाबे सतर्क हो गए और उन्होंने एक विशेष टुकड़ी का गठन किया. इस के सैनिकों को उत्तरी कोरिया के सैनिकों ने प्रशिक्षण दिया और यह टुकड़ी अब मुबागे की ढाल बन गई है.

जिवाब्वे की संयुक्त सरकार शुरू से ही कबीलों वाले इस देश में नापसंद की जाती रही है. मुगाबे शोना कबीले के और एन्कोमो

जिंबाब्वे के प्रधान मंत्री राबर्ट मुगाबे: अपने पुराने साथी जोशुआ एन्कोमो को बरखास्त कर देश में अस्थिरता पैदा कर दी है.

नदेबेले कबीले के हैं और कबीलों ने सरकारी स्तर पर इस मेलमिलाप को शुरू से ही पसंद नहीं किया है.

अब देखना यह है कि क्या एन्कामो अपनी तरफ से बदले की कोई काररवाई करेंगे और क्या वह जिबाब्वे में एकदलीय शासन प्रणाली को आसानी से लागू होने देंगे.

रूस: परदे की ओट में सत्ता संघर्ष

रूस में घटी हाल की कुछ राजनीतिक घटनाओं से पश्चिमी देश इस बात की आशंका प्रकट कर रहे हैं कि रूस में जल्द ही सत्ता परिवर्तन होने वाला है. पिछले दिनों ब्रेजनेव के बाद रूस के सब से अधिक शक्तिशाली नेता सुसलोव की मृत्यु हो जाने के बाद वहां राजनीतिक घटनाएं तेजी से घट रही हैं. कोई पता नहीं कि बुलगानिन और खुश्चेव की तरह ब्रेजनेव का नाम भी कब गायब हो कर कोई और नाम सुनाई पड़ने लगे. इधर हाल में एक नया नाम सुनाई पड़ा है चेरेनको का. चेरेनको का नाम ब्रेजनेव के उत्तराधिकारी के रूप में पिछले दिनों तब सामने आया जब पोलिट ब्यूरो की एक बैठक में रूस की आंतरिक समस्याओं पर चर्चा हुई.

70 वर्षीय चेरेनको पिछले 30 वर्षों से ब्रेजनेव के नजदीकी सलाहकार और सहायक रहे हैं. तीन वर्ष पूर्व ही पोलिट ब्यूरो के सदस्य बने चेरेनको सन 1956 से ले कर 1965 तक ब्रेजनेव के साथ कम्यूनिस्ट पार्टी के प्रभावशाली नेताओं में रहे हैं. सन 1971 में यह पार्टी के सचिव बने. पिछले छः वर्षों में इन की राजनीतिक भूमिका में तेजी से परिवर्तन हुए हैं. कभी इन का नाम ब्रेजनेव, सुसलोव, आंद्रे क्रिलंको के बाद चौथे नंबर पर था. अब एकदम से दूसरे नंबर पर है. बेचारे नंबर दो के क्रिलंको सत्ता दौड़ में पिछड़ गए हैं. सुसलोव की मृत्यु के बाद पोलिट ब्यूरो समेत सत्तारूढ़ खेमे में उखाड़पछाड़ की सरगरमियां अब भी चल रही हैं.

इधर रूस में ट्रेड यूनियन कांग्रेस के सम्मेलन से 10 दिन पूर्व ही रूसी ट्रेड यूनियन नेता एलेक्सेई शिबायेव को पदमुक्त कर देने के कारण नईनई अटकलें लगाई जा रही हैं. शिबायेव समझौतावादी आंद्रे क्रिलंको के विश्वस्त साथी समझे जाते थे. इन्हें हटाने में के.जी.बी. के अध्यक्ष और पार्टी पोलिट ब्यूरो के एक सदस्य यूरी एंद्रोपोव का हाथ बतलाया

आंद्रे किलंको (ऊपर) सत्ता दौड़ में कभी ब्रजनेव (बीच में) के बाद इन का नाम था, पर अब पिछड़ गए.

के.जी.बी. के प्रमुख यूरी एंद्रोपोव (ऊपर) : अनेक प्रमुख व्यक्तियों की बरखास्तगी में हाथ.
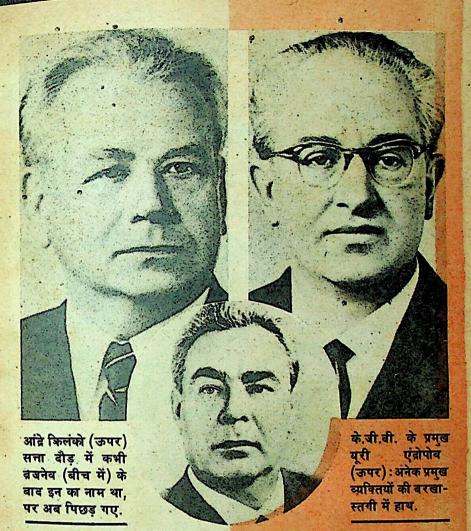
जाता है. एंद्रोपोव ने अनेक विभागों के प्रमुख व्यक्तियों को हाल ही में अपने पदों से बरखास्त करवाया है

पिछले दिनों अनातोली कोलवातोव नामक एक वरिष्ठ सरकारी अधिकारी के घर छापा मार कर लाखों रुपए के हीरे पकड़े गए. इसी तरह बोरिस जीगन नामक सरकस कलाकार को भ्रष्टाचार के आरोप में पकड़ा गया.

मज़ेदार बात यह है कि बोरिस जीगन ब्रेजनेव की लड़की गलीना के मित्र कहे जाते हैं. इन के अलावा कुछ और लोगों को भी भ्रष्टाचार, तस्करी, सट्टेबाजी, रिश्वतखोरी के अपराधों में पकड़ा गया है. इस बात से यह तो जाहिर है कि कम्यूनिस्ट अपने आप में कोई पूर्ण वाद नहीं है. इस में ढेरों कमियां हैं.

इधर रूस में पिछले कुछ वर्षों से कृषि की उपज कम होने और अफगानिस्तान तथा पोलैंड में सैनिक हस्तक्षेप के फलस्वरूप यूरोपीय देशों के व्यापार में उभरी आर्थिक समस्याओं के कारण सत्तारूढ़ नेता परेशान हो उठे हैं. इधर सुनने में आया है कि रूस चीन से अपने संबंध सुधारने के लिए भी नए सिरे से योजना बना रहा है. ●

हेमा से विवाह का निर्णय कर के विजय ने साहसी होने का सबूत तो दिया, मगर हेमा का साहस देखा तो उसे अपना व्यक्तित्व बौना लगने लगा...

कहानी • अरुण अलबेला

साहस

उन दिनों मैं मुख्य स्टोर में सहायक प्रबंधक था. अपनी कुरसी पर बैठेबैठे मेरी नजर अकसर कांच में से अपने कक्ष में बैठे प्रबंधक रामदयाल के चेहरे पर चली जाती.

वह कभी फुफकारते नाग सा भयानक दिखाई देता, कभी युवतियों से बातें करते मोम का पुतला नजर आता. उस के पा ठेकेदार आते रहते. वह गलत माल पास क के उन से मोटी रकम ऐंठ लेता और फिर ज यह देखता कि अब कोई मिलने के लिए आ वाला नहीं है तो सतरंगी दुनिया में मौज कर निकल जाता.

मुझे उस की यह आदत बिलकुल पसं नहीं थी. फिर भी मैं चुपचाप यह सब देखत रहता था.

वह युवतियों से घंटों बातें करता. को विघ्न डालना चाहता तो उसे डसने के लि

मुक

हेमा विजय को झिड़क कर बोली, "आप तो पुरुष हो कर भी विरोध करने से डरते हैं और मुझे विरोध करने की नसीहत देते हैं."

तैयार हो जाता. मैं प्रायः हर नई युवती को चेतावनी देता कि वह उस से सावधान रहे.

जब भी मैं उस के विरोध में आवाज उठाना चाहता, वह एक घटना की याद दिला कर मेरा मुंह बंद कर देता. उस वक्त बदनामी के डर से मेरी धड़कन बढ़ जाती. मैं चुपचाप ऐसे मौके की तलाश में रहता जब मैं उस की उस घिनौनी चाल का बदला ले सकूं.'

उन दिनों हेमा मेरे ही विभाग में काम कर रही थी. बड़ी ही सीधी लड़की थी. न बनावशृंगार, न कीमती पहनावा, फिर भी देखने में सुंदर, चेहरे से गंभीर लेकिन स्वभाव से उग्र. किसी का साहस नहीं होता था कि उस से बिला वजह बोलने की चेष्टा करे. दफ्तर में काम करने वाली युवतियां खूब बनावशृंगार कर, हवा में मधुर मुसकान बिखेरती आतीं और अपनी सुगंध से सब के मस्तिष्क को झंकृत कर देतीं. किंतु हेमा चुपचाप आ कर अपने काम में लग जाती थी.

उस को देख कर रामदयाल कहता, "अब तक उड़ती चिड़ियों से मन बहलाता रहा हूं, अब इस सोन पक्षी के पंख सहलाने को जी चाहता है."

वह उसे अकसर दफ्तर के काम के बहाने अपने कक्ष में बुला लेता और अपनी वाणी में शहद की सी मिठास घोल कर उसे आकर्षित करने की चेष्टा करता. हेमा सिर झुकाए उस की बातें सुनती रहती. उस के चेहरे से लगता कि वह अंदर ही अंदर खौल रही है, पता नहीं कब फट पड़े. वह उसे तेज निगाहों से घूरती और फिर उस के कक्ष से

निकल कर अपना कार्य निबटाने में लग जाती.

रामदयाल कभीकभी कहता, "युवतियों को अपने यौवन, मुसकान, कटाक्ष, मदमाती चाल व स्वर से वातावरण को मधुर बनाए रखना चाहिए, ताकि काम का बोझ महसूस न हो."

सहायक प्रबंधक होने के नाते उस की अनुपस्थिति में मैं ही कार्यभार संभालता. कागजात टाइप कराने के लिए मुझे हेमा को बुलाना पड़ा. वह सिर झुकाए सामने आ खड़ी हुई. मैं ने उसे सामने कुरसी पर बैठने के लिए कहा. वह सकुचा कर बैठ गई. मैं ने बातोंबातों में उस से कहा, "तुम प्रबंधक की चिकनीचुपड़ी बातों में कभी न आना. वह गिरगिट की तरह रंग बदलता है. कब कौन सा रंग बदलेगा, कोई नहीं जानता."

वह भर्राए स्वर में बोली, "अब तक प्रबंधक की बातें न मानने से 'पानी में रह कर मगर से वैर' वाली कहावत चरितार्थ हो रही है. वैसे भी मैं अभी अस्थायी हूं. प्रबंधक के इशारे पर कभी भी मेरी नौकरी जा सकती है. मुझे समझ में नहीं आता कि मैं क्या करूं. उस पर मां और छोटे भाई की जिम्मेदारी..."

मुझे आशा नहीं थी कि गंभीर दिखने वाली हेमा इस तरह की बात कहेगी. मुझे उस से गंभीर उत्तर की आशा थी. मैं चिढ़ कर बोला, "तो क्या तुम अपने स्वार्थ के लिए उस की हर उचितअनुचित बात स्वीकार कर लोगी? क्या तुम में ऐसे लोगों का विरोध करने का साहस नहीं है?"

वह तिलमिला उठी. उस का चेहरा लाल हो उठा. उस के नथुने फूल गए और भौंहें चढ़ गईं. उस की इस मुद्रा को देख कर मैं चकित रह गया.

वह मुझे झिड़क कर बोली, "अगर आप में इतना साहस होता तो आप अपने बास की अनुपस्थिति में उस की इस तरह शिकायत न करते और न ही उस की मौजूदगी में उस की बेजा हरकतों को चुपचाप सहन करते रहते. आप तो पुरुष हो कर भी विरोध करने से डरते हैं और मुझे विरोध करने की नसीहत देते हैं."

मुझे लगा, उस ने मुझे झकझोर दिया है. उस की स्पष्टवादिता पर मैं चकित रह गया. मुझे अपनी स्थिति का भान हुआ. मुझ में अन्याय और भ्रष्टाचार से टकराने की हिम्मत बंध गई. अब तक मैं ऐसा साहस नहीं जुटा पाया था.

हेमा ने मेरी बुजदिली पर प्रहार किया था, मेरे अंत:करण को ललकारा था. यह सच था कि मैं रामदयाल की काली करतूतों का विरोध नहीं कर सका था, शायद इस डर से कि कहीं वह व्यर्थ में मुझे ही बदनाम न कर दे, हालांकि यह भी सच था कि मैं ने ठेकेदारों से कभी घूस नहीं ली थी, न किसी अधीनस्थ युवती से कभी अशोभनीय बात ही की थी. फिर भी मुझे मालूम था कि रामदयाल के चहेते मुझे अकसर 'बगुला भगत' कहा करते थे.

उसी दिन हेमा को यह जताने के लिए कि मुझ में साहस है, मैं ने ठेकेदार से साफसाफ कह दिया कि अगर उन्होंने सही सामान मुहैया न किया तो उन का बिल पास नहीं किया जाएगा. जब उन्होंने मेरे रवैए की शिकायत प्रबंधक से की तो वह भड़क उठा. जलती आंखों से मुझे घूरते हुए बोला, "आप जानते हैं मैं किसी तरह का विरोध सहन नहीं कर सकता. आप को भी कुछ चाहिए तो कहिए... नहीं तो..."

मैं गंभीर हो उठा और आवेश में आ कर बोला, "अब मैं अपनी नौकरी जाने के भय से चुपचाप आप को गलत कार्य करते नहीं देख सकता."

उस ने मुझे धमकाया, फिर किसी से पांच हजार रुपए भिजवा कर मुझे अपने पक्ष में करना चाहा. मैं उस के प्रलोभन में नहीं आया तो उस ने उच्च अधिकारी को मेरी झूठी शिकायत कर दी. मैं भी चुप न रहा. मैं ने भी उच्च अधिकारी के नाम एक पत्र में उस का सारा कच्चाचिट्ठा खोल दिया.

उच्च अधिकारी ने दोनों पर जांच आयोग बैठा दिया. निर्णय होने तक

मुझे वहां से हटा कर छोटे स्टोर में भेज दिया गया.

एक दिन मैं अपनी कार से आ रहा था कि रास्ते में हेमा मिल गई. मैं ने उस से कहा, "तुम ने देख लिया, न मेरा विरोध?"

"हां, और अब प्रबंधक का क्रोध भी देख रही हूं. वह सदा वौखलाया सा रहता है. कल ही एक युवती को उस ने नौकरी से हटा दिया है," वह उत्तर में बोली.

"तो क्या तुम्हें भी अपनी नौकरी चले जाने का डर है? कहीं इस डर से उस की बातों में न आ जाना."

"ऐसा हरगिज नहीं हो सकता." उस के होंठ कांपने लगे.

"अगर वह बहुत परेशान करे तो कहना, मैं तुम्हारी नौकरी का कहीं और प्रबंध कर दूंगा."

हेमा रुंधे स्वर में बोली, "नहीं सह सके न, विजय बाबू? सच्चाई कड़वी होती है न, इसे आसानी से नहीं निगला जा सकता..."

वह व्यंग्य से बोली, "मैं ने झूठी सहानुभूति जताने वाले बहुत देखे हैं. विजय बाबू, थोड़ाबहुत साथ देने वाले वही मिले, जिन्हें कुछ स्वार्थ था. मेरी सचाई जानते ही वे भी भाग गए."

"कैसी सचाई, हेमा?" मैं जानने के लिए उत्सुक हो उठा.

"उसे सुन कर आप भी मुंह मोड़ लेंगे."

"आखिर बताओ भी."

"मेरी इज्जत पर पड़े चूने से जल आई चमड़ी को देख अपने ही लोग मुझ से दूर भागते रहे हैं."

तभी रामदयाल की कार सामने से आती दिखाई दी और हेमा मुख्य स्टोर की ओर मुड़ गई.

उधर जांच अधिकारी जांच करते रहे, इधर मैं सुव्यवस्थित ढंग से छोटे स्टोर में कार्य करता रहा.

अचानक एक दिन मैं चौंक उठा, सामने हेमा खड़ी थी.

"तुम यहां?"

"हां, मैं यहां भेज दी गई हूं."

"क्यों?"

"आप क्यों भेजे गए थे?"

"विरोध के कारण."

"यही कारण मेरे साथ है."

"क्या तुम ने भी रामदयाल का विरोध किया?"

"क्या मैं ऐसा नहीं कर सकती?"

"लेकिन विरोध का कारण?"

"उस ने मुझे कुछ और समझ रखा था. वह चाहता था कि मैं स्थायी होने के लिए उस की किसी भी शर्त को मान लूं. वह नहीं जानता कि मेरे अंदर जो आग है वह उसे जला देगी. सब के सामने मेरे द्वारा जलील किए जाने पर वह भीगी बिल्ली बन गया. उच्च अधिकारी तक यह बात पहुंच गई और उस ने मुझे यहां भेज दिया. हो सकता है रामदयाल भविष्य में मुझ से बदला लेने की कोशिश करे."

"तुम्हारे साहस भरे विरोध के लिए बधाई, हेमा." उस के साहस पर मेरा चेहरा प्रसन्नता से खिल उठा.

लेकिन वह एकाएक उदास हो गई. बोली, "काश, इस से पहले मैं जिस दफ्तर में काम करती थी, उस के प्रबंधक रंजन का विरोध भी कर पाती. वह भी रामदयाल से कम नहीं था."

"वहां क्या हुआ था?"

"मुझे खेद है, मैं अपने व्यक्तिगत जीवन के विषय में आप को सब कुछ बताना आवश्यक नहीं समझती." उस का दो टूक जवाब था.

वह सदा गंभीर रहती, न हंसती, न मुसकराती. मुझ से काम के अतिरिक्त वह अन्य कोई बात न करती. उस के कार्य करने के ढंग से मैं प्रभावित अवश्य था, पर उस का व्यवहार मुझे आहत किए जा रहा था.

दूसरी युवतियां मुझ जैसे सीधे बास की तारीफ करतीं, पर हेमा बिलकुल चुप रहती. मैं सोचता, कहीं हेमा पुरुषों से नफरत तो नहीं करती?

एक दिन मैं उसे समझने के उद्देश्य से एकटक देखे जा रहा था कि वह बौखला उठी, "क्या बात है, विजय बाबू?"

"क...कुछ भी तो नहीं."

"मेरे चेहरे पर तो ऐसा कुछ भी नहीं कि मुझे एकटक देखा जाए. क्या मैं यह समझ लूं कि आप के अंदर भी रामदयाल जैसा शैतान वास करने लगा है? कहीं ऐसा न हो कि मुझे आप का भी विरोध करना पड़े."

मैं ने शांत स्वर में कहा, "हमारे बीच ऐसी स्थिति नहीं आनी चाहिए कि रामदयाल को बेजा फायदा उठाने का अवसर मिले. हमें एकदूसरे का दोस्त रहना चाहिए."

"यह दोस्ती बहुत महंगी पड़ेगी, विजय बाबू."

"सस्ती दोस्ती भी किस काम की? मैं तो ऐसे दोस्त की तलाश में हूं जो मुझे समझ सके."

उसे देख कर मैं सोचता, क्या इस पहाड़ से झरना फूटने की कोई संभावना हो सकती है? क्या इस में कहीं प्यार की भावना नहीं है? क्या कुछ ऐसा नहीं किया जा सकता कि यह भी अन्य युवतियों की तरह हंसेमुसकराए?

बहुत दिनों से मेरी वृद्धा मां की इच्छा थी कि मैं अपने लिए अच्छी लड़की ढूंढ़ लूं जो अच्छे स्वभाव की होने के साथसाथ घर का भी कामकाज संभाल सके. लेकिन अभी तक मुझे ऐसी युवती नहीं मिल पाई थी. मेरे मन में आधुनिक युवतियों के प्रति घृणा थी, क्योंकि रामदयाल ने मेरे अंदर उन के प्रति नफरत भर दी थी. एक बार एक आधुनिक युवती के हाथों उस ने मुझे जबरदस्ती शराब पिलवा दी थी और उस के साथ मेरे कुछ ऐसे चित्र खींच लिए थे, जिन के बल पर वह मुझे सहज ही बदनाम कर सकता था.

मैं ऐसी पत्नी चाहता था जो रामदयाल के षड्यंत्र को समझ सके और मुझ पर विश्वास कर सके.

मैं कभीकभी सोचता, हेमा को अपने

उपर्युक्त बनाया जा सकता है बशर्ते कि वह मुझ में रुचि लेने की चेष्टा करे.

एक दिन मैं ने उसे से कहा, "चलो, हेमा, तुम्हें घर छोड़ दूं."

उस के तेवर बदल गए. वह क्रोध से बोली, "क्या मेरे पैर नहीं? क्या इसी बहाने आप यह देखना चाहते हैं कि मैं कहां, कैसे रहती हूं? तो लीजिए, मैं आप को खुद ही बताए देती हूं कि मैं एक टूटेफूटे मकान में रहती हूं, जहां अकसर सिलाई की मशीन की आवाज गूंजती रहती है. मेरी मां मेरे लाख मना करने पर भी आसपास के लोगों के कपड़े सीती है. सच मानिए, इन परिस्थितियों से जूझने से ही मुझे मनुष्य का वेश धारण किए भेड़ियों से लड़ने का साहस आया है, ताकि अगर नौकरी चली भी जाए तो सिलाई कर के पेट की आग बुझाई जा सके."

"हेमा, मैं तुम्हारी मां से मिलना चाहता हूं."

"क्या यह जानने के लिए कि मैं क्यों बदनाम हुई?"

"तुम हर बात को उलटा क्यों लेती हो?"

"क्यों न लूं, जब कि जमाने ने मुझे अविश्वास ही दिया है."

"हर व्यक्ति अविश्वासी नहीं होता. चलो, फिल्म देखें आएं, मन बहल जाएगा."

"मैं नहीं चाहती कि आप भी मेरे पिछले बासों की तरह घटिया प्रस्ताव करें. इस तरह कितनी ही युवतियों को मर्द लोग गलत राह पर ले जाते हैं."

"लेकिन तुम जैसी गंभीर युवती को कोई नहीं ले जा सकता."

वह अतिशय गंभीर हो उठी, "ऐसा न सोचिए, विजय बाबू. मैं पहले इतनी गंभीर नहीं थी. रंजन ने ही मुझे गंभीर बनाया. मुझे स्थायी करने के लिए उस ने गलत प्रस्ताव रखा. मैं ने इनकार कर दिया. मैं तब यह नहीं जानती थी कि लोग मनुष्य के रूप में भेड़िए भी हुआ करते हैं. उस ने मुझे बदनाम कर दिया. सोचिए, मेरी मां पर इस का क्या प्रभाव पड़ा होगा, मेरे भाई ने क्या सोचा होगा. क्या कोई मां चाहेगी कि उस की बेटी को लोग गलत समझें? क्या कोई भाई यह सुनना पसंद करेगा कि उस की बहन चरित्रवान नहीं? पर लोगों की नजरों में मैं बदचलन हूं, पेशेवर हूं, परदे की ओट में इज्जत बेचती हूं, नौकरी बरकरार रखने के लिए बास को खुश रखती हूं..." उस का स्वर भर्रा उठा.

कुछ क्षण रुक कर वह फिर बोली, "जिस से मेरी मंगनी हुई थी उस ने भी मेरा

जब सब हैरान रह गए

पिछले दिनों लंदन के हीथ्रो हवाई अड्डे पर एक घटना ऐसी हुई कि जिसे देख कर हैरान रह गए कुछ यात्रियों के हाथ से उन के सूटकेस ही गिर गए और कुछ माताओं ने अपने बच्चों को दूसरी तरफ देखने को कहा.

असल में हुआ यह था कि हवाई अड्डे की इमारत में एक हाल से दूसरे हाल तक यात्रियों को लाने ले जाने वाले स्वचालित गलियारे के फर्श पर एक पुरुष और स्त्री संभोग में जुटे हुए थे.

एक प्रत्यक्षदर्शी के अनुसार यह प्रक्रिया साढ़े सात मिनट तक चलती रही.

इस विषय में एक विमान परिचारिका ने कहा, "उन्होंने यात्रा तो बहुत छोटी सी की थी पर वह काफी रोमांचक थी. मैं कह नहीं सकती कि वे किस प्रकार इतना उत्तेजित हो गए."

यह दोनों स्त्रीपुरुष न्यूयार्क से आए एक हवाई जहाज से उसी समय उतरे थे. बाद में वे पेरिस जाने के लिए दूसरे हवाई जहाज में सवार हो गए.

सरिता व मुक्ता में प्रकाशित लेखों के महत्त्वपूर्ण रिप्रिंट
सेट नं. 1

प्राचीन हिंदू संस्कृति
शंबूक वध
अतीत का मोह
पुरोहितवाद
गौ पूजा
हमारी धार्मिक सहिष्णुता
कृष्ण नीति: हमारा नैतिक पतन
ज्ञान की कसौटी पर परलोकवाद
राम का अंतर्द्वंद्व
राम का अंतर्द्वंद्व:आ. व आ. के उत्तर
भारत में संस्कृति का ब्राह्मण
नियंत्रित विस्तार
हिंदू धर्म
संस्कृत
भारतीय नारी की धार्मिक यात्रा
कर्ण
भारतीय नारी की सामाजिक यात्रा
तुलसी और वेद
रामचरितमानस में ब्राह्मणशाही
युगोंयुगों से शोषित भारतीय नारी
भ्रष्टाचार
रामचरितमानस में नारी
सत्यनारायण व्रत कथा
क्या नास्तिक मूर्ख है?
गांधी जी का बलिदान
यज्ञोपवीत
जंत्र तंत्र मंत्र
कर्मयोग
गुरुड़पुराण
ईश्वर आत्मा और पाप
कितना महंगा धर्म?

मूल्य-5 रुपए
50% की पुस्तकालयों, विद्यार्थियों व अध्यापकों के लिए विशेष छूट.
रुपए अग्रिम भेजें.
वी.पी.पी. नहीं भेजी जाएगी.
सेट में लेखों का परिवर्तन कभी भी हो सकता है.

दिल्ली बुक कंपनी,
एम-12, कनाट सरकस, नई दिल्ली

विश्वास नहीं किया. क्या सभी नौकरीपेशा युवतियां गिरी हुई होती हैं? नहीं, यह उन पर सरासर झूठी तोहमत है. अधिकतर युवतियां तो स्वयं ही नौकरी करना नहीं चाहतीं. वे विवशता में ही नौकरी करती हैं. अगर मैं भी नौकरी न करूं तो सिर्फ सिलाई के काम से हम सब का पेट नहीं भर सकता, मुझे नौकरी करनी ही होगी और मैं चाहूंगी कि मेरी नौकरी स्थायी हो. और स्थायी करने का प्रलोभन दे कर कोई भी बास मुझ से फायदा उठाना चाहेगा. ऐसी स्थिति में कोई लड़की क्या करे, विजय बाबू?"

"तुम ठीक कहती हो, हेमा."

"मेरा वश चले तो मैं ऐसे नीच लोगों के चेहरे पर कोलतार पोत दूं."

तभी फोन की घंटी बज उठी.

जांच अधिकारी ने मुझे बुलाया था. मैं उठ कर चल दिया.

मां के बारबार कहने पर मैं ने विवाह करने का निश्चय कर लिया, हेमा की सरलता, सादगी व गंभीरता ने मेरा मन मोह लिया था. वह मेरी कल्पना में रचबस गई थी. मैं उसे चाहने लगा था.

मैं उस के सामने विवाह का प्रस्ताव रखना चाहता था, पर उचित अवसर नहीं मिल पा रहा था.

एक दिन मैं दफ्तर पहुंचा तो वह आ चुकी थी. मुझे गंभीर देख कर उस ने पूछा, "क्या बात है, विजय बाबू?"

"तुम्हें मतलब?" मैं ने कहा.

"इसलिए कि आप मेरे बास हैं."

"बास का खयाल तुम कब से करने लगीं?"

उसे अपनी गलती महसूस हुई. यही समय था जब मैं उस से अपनी बात कह सकता था. मैं बोला, "बात यह है कि मुझ पर एक बोझ आ गया है."

"कैसा बोझ?"

"बता कर तुम पर बोझ नहीं लादना चाहता."

"क्यों?"

"क्योंकि तुम क्ह बोझ लेना नहीं चाहोगी."

"लेने योग्य होगा तो जरूर लूंगी."

"क्या सच?" मैं उस के करीब जा खड़ा हुआ, "ले सकोगी मेरे घर का बोझ?"

लगा जैसे उसे बिजली ने छू लिया हो. वह कंपित स्वर में बोली, "लगता है मुझे सचाई बतानी ही पड़ेगी. तब आप मुझे हरगिज अपनी पत्नी बनाने का साहस नहीं कर सकेंगे."

"पुनः साहस दिखाना चाहता हूं."

"मैं सोना नहीं पीतल हूं."

"चाहे जैसी भी हो..."

"भावना में मत बहिए. सचाई जानने के बाद ही निर्णय लीजिए. ऐसा न हो कि आप को भी मेरे मंगेतर की तरह भागना पड़े."

मैं ने सचाई पर परदा हटाने को कहा तो वह गंभीरतापूर्वक बोली, "सुनिए, मैं अछूती नहीं, मेरा कौमार्य भंग हो चुका है. रंजन ने षड्यंत्र से मुझ से बलात्कार किया था और उस स्थिति में मेरे चित्र भी खींचे थे, ताकि मैं उस की बात मानती रहूं. बाद में उस ने चित्रों का डर दिखा कर मुझे अपने इशारे पर चलाना चाहा तो मैं ने उस के मुंह पर थूक दिया. इस पर उस ने मेरे मंगेतर को वे चित्र दिखाए और मुझे घर और बाहर वालों में बदनाम कर दिया. मेरे मंगेतर ने मुझ से शादी करने से इनकार कर दिया. कहिए, विजय बाबू, अब भी आप मुझे स्वीकार कर सकेंगे? है आप में इतना साहस?"

मैं ने सोचा भी नहीं था कि उस के साथ ऐसा कुछ भी हुआ होगा. मैं सोचने लगा, 'क्या ऐसी युवती से विवाह करना ठीक होगा? क्या समाज मेरे ऊपर उंगलियां नहीं उठाएगा? क्या रंजन मुझे भी बदनाम करने में कोई कसर रखेगा? अभी तो रामदयाल से ही घिरा हुआ हूं... नहीं, जानते हुए भी कोलतार के ड्रम में गिरने से क्या लाभ?'

मेरा सिर चकराने लगा. अचानक मैं लड़खड़ा कर सीढ़ियों पर गिर गया. पैर में मोच आ गई.

हेमा ने दौड़ कर मुझे संभाला. फिर बोली, "नहीं सह सके न, विजय बाबू? सचाई कड़वी होती है. इसे आसानी से नहीं निगला जा सकता. बताइए, मेरा दोष कहां है? मैं पतिता होती तो क्या रामदयाल के साथ पतन के मार्ग पर न जाती? आप को भी उधर ले जाने की चेष्टा करती. पर नहीं, रंजन ने जबरदस्ती मेरी इज्जत लूटी. विरोध के बावजूद मैं हार गई थी. कहिए, क्या मैं यह बात छिपा नहीं सकती थी? पर छिपाने से मेरा अंतःकरण स्वयं मुझे धिक्कारता रहता. मैं अविवाहित रहना पसंद करूंगी, पर यह बरदाश्त नहीं कर सकती कि जिसे मैं अपना सब कुछ मानूं, वही मुझे अविश्वास की नजरों से देखे, मुझे पतिता समझे."

लगा, मैं ने विवाह का प्रस्ताव रख कर गलत किया है. पहले इस के विषय में पता लगा लेना चाहिए था.

मैं कुछ जवाब देता, इस से पहले ही स्टोर में काम करने वाले अन्य लोग भी आ पहुंचे थे.

मां मेरे पैर की हलदीचूने से सिकाई कर रही थीं और मेरे अंदर हेमा की चुनौती गूंज रही थी, "कहिए, अब भी आप मुझे स्वीकार कर सकेंगे? है आप में इतना साहस?"

तभी मुझे उस घटना की याद हो आई जब रामदयाल ने षड्यंत्र रच कर एक युवती के हाथों मुझे जबरदस्ती शराब पिलाई थी और नशे में मैं भी वह सब कर बैठा था जो मुझे नहीं करना चाहिए था. और तब रामदयाल ने उस सारी घटना को कैमरे में समेट लिया था. उसी के बल पर वह मुझे वश में रखना चाहता था.

हेमा ने ही मेरे साहस को ललकारा था अन्यथा मैं चाह कर भी रामदयाल का विरोध नहीं कर पाता था. हेमा ने युवती हो कर भी मुझ से अपने पतन की बात कह दी थी ताकि भविष्य में कभी दांपत्य जीवन में आग न लगे. लेकिन मैं पुरुष हो कर भी कुछ नहीं कह पा रहा था.

मैं ने मां से पूछा, "चूने में हलदी पड़ते ही रंग लाल हो जाता है न?"

"हां."

"तो मुझे हलदी दो."

मां कुछ समझ नहीं सकी.

मैं दफ्तर आया तो हेमा नहीं मिली. [illegible] चला कि जांच आयोग ने रामदयाल [illegible] दोषी पाया है और प्रबंध विभाग ने [illegible] बरखास्त कर दिया है. मेरे खिलाफ [illegible] आयोग को कोई सबूत नहीं मिला था.

मैं हेमा के घर की ओर चल पड़ा. [illegible] मुशकिल से उस के घर का पता चला.

मुझे देख कर वह सन्न रह गई थी. [illegible] ने अपनी मां और भाई से मेरा परिचय करा[illegible] और अपने कमरे में ले गई.

मैं ने उस की ओर हलदी बढ़ा दी.

"यह किस लिए?" उसे बेहद आश्च[illegible] हुआ.

"मैं तुम्हारे हाथ पीले करने आया हूं[illegible]"

"आ...प?" उस के स्वर में कंपन [illegible]

"हां, हेमा, मैं ने तुम्हें स्वीकार करने [illegible] साहस पैदा कर लिया है."

"ओह, सचमुच आप बड़े साहसी हैं[illegible]"

"अभी मेरा साहस देखना. मैं [illegible] समाज को दिखा दूंगा कि उन की गलतियों प[illegible] मैं ने कैसा प्रहार किया है. अरे, तुम्हारी आंख[illegible] में आंसू?"

"नहीं, ये खुशी के आंसू हैं. मैं आज हा[illegible] गई हूं."

"हारा तो मैं हूं, हेमा, अपने विषय [illegible] कुछ न बता कर..."

"कुछ बताने की जरूरत नहीं [illegible] रामदयाल ने आप के विषय में बता कर मुझे [illegible] फोड़ना चाहा था."

"सब जान कर भी तुम चुप रहीं? तु[illegible] सचमुच महान हो. कहो, क्या मेरे विषय [illegible] सब कुछ जान कर भी मुझे स्वीकार करने का [illegible] साहस है तुम में?"

"आप ने साहस दिखा कर मेरा मन [illegible] जीत लिया है."

उस ने हलदी आंचल में रख ली. उस के चेहरे पर शरम की लाली फैल गई थी. •
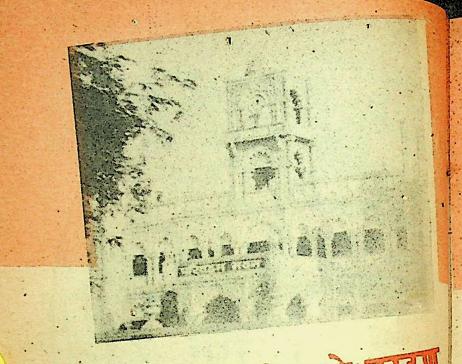
राजनीतिक हस्तक्षेप के कारण बिहार के सरकारी उद्यमों में करोड़ों का घाटा

लेख • राकेश रंजन

बिहार सरकार द्वारा संचालित सरकारी क्षेत्र के लगभग सभी उद्यम घोर संकट में हैं. मार्च, 1981 तक इन पर राज्य सरकार ने 1,320 करोड़ रुपए व्यय किए. लेकिन कुल मिला कर 194.77 करोड़ रुपए के घाटे ने राज्य की छठी पंचवर्षीय योजना के अतिरिक्त स्रोतों की गतिशीलता को संकट में डाल दिया है. स्थिति यह है कि अगर ये उद्यम खुद कंगाल नहीं हो जाते हैं तो

(बाएं ऊपर) बिहार राज्य पथ परिवहन निगम का मुख्य कार्यालय, (दाएं ऊपर) बिहार राज्य बिजली बोर्ड का पटना स्थित कार्यालय और (दाएं नीचे) सरकारी लापरवाही का नमूना—कांटी थर्मल पावर में पानी में डूबे विद्युत संसाधन.
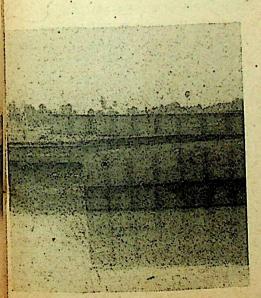
तकनीकी ज्ञान का अभाव अनुशासनहीनता, भ्रष्टाचार, नियुक्तियों में धांधलेबाजी व पक्षपात पूर्ण रवैए के कारण ये सरकारी उद्योग बिहार को कंगाली की कगार पर ले आए हैं.

बिहार राज्य को तो निश्चय ही कंगाल बना डालेंगे. कारण कि इन को चलाने के लिए राज्य सरकार को प्रति वर्ष करोड़ों रुपए की व्यवस्था कर्ज या अनुदान के रूप में करनी पड़ती है और यह धन विभिन्न प्रकार के करों द्वारा जनता से ही वसूला जाता है.

बिहार के सभी 44 सरकारी उद्यमों का सर्वेक्षण करने के बाद बिहार राज्य सरकारी उद्यम कार्यालय इस निष्कर्ष पर पहुंचा है कि इन में से 38 उद्यमों की दशा शोचनीय है और बाकी छः की दशा तो और भी खराब है. अपनी 1980-81 की रिपोर्ट में इस कार्यालय ने पूरे वर्ष के घाटे की रकम 187 करोड़ रुपए बताई है, जो बिहार जैसे हर मामले में पिछड़े प्रदेश के लिए बहुत ही शोचनीय स्थिति की सूचक है.

इन सभी रुग्ण 44 संस्थानों में बिहार बिजली बोर्ड का नाम घाटा देने वालों में प्रथम स्थान पर है. दूसरे स्थान पर बिहार राज्य पथ परिवहन निगम है.

अन्य घाटा उठा रहे उद्यमों में जल विकास निगम का नाम तीसरे स्थान पर है. इस निगम की स्थापना लगभग 10 साल पहले 10 करोड़ रुपए की पूंजी से की गई थी और इस ने अब तक प्रति वर्ष सरकार को चार करोड़ रुपए का घाटा दिया है. रिपोर्ट में मात्र राज्य वित्त निगम, पाठ्यपुस्तक प्रकाशन निगम और निर्यात निगम का ही लाभ देने वाले संस्थानों के रूप में उल्लेख किया गया है. लेकिन ये भी प्रति वर्ष कुल मिला कर मुशकिल से चार करोड़ का लाभ दे रहे हैं.

घाटे के प्रमुख कारण

बिहार राज्य सरकारी उद्यम कार्यालय ने अपनी रिपोर्ट में इस घाटे के लिए आंशिक रूप से उपर्युक्त बोर्डों की गलत कार्यविधियों, अनुशासनहीनता, अतिरिक्त दक्षता और तकनीकी ज्ञान के अभाव, भ्रष्टाचार और आवश्यकता से अधिक कर्मचारियों की नियुक्ति को जिम्मेदार ठहराया है, पर उस का कहना है कि इस का मूल कारण इन संस्थानों के कामकाज में राजनीतिबाजों द्वारा किया जाने वाला हस्तक्षेप है.

रिपोर्ट के अनुसार ये सरकारी उद्यम अपने दैनिक कामकाज के लिए जरा भी स्वतंत्र नहीं हैं. इन के क्रियाकलाप में राजनीतिक हस्तक्षेप रोजमर्रा की बात है. इस स्थिति में परिवर्तन की बात तब तक नहीं सोची जा सकती, जब तक कि इन उद्यमों के अध्यक्ष और उपाध्यक्ष के रूप में सत्तारूढ़ दल के राजनीतिक व्यक्तियों की नियुक्तियां होती रहेंगी और ये राजनीतिक व्यक्ति अपनेअपने लोगों को नियुक्त करते रहेंगे. ये राजनीतिक व्यक्ति तीन वर्ष के लिए इन पदों पर आसीन होते हैं और मुख्य रूप से मुख्य मंत्री के कृपापात्र होते हैं. ये लोग अपने विभाग को 'चरागाह' समझ कर कुरसी पर बैठते ही आजादी के साथ उसे 'चरना' शुरू कर देते हैं. इन की नजरों में उद्यम के कार्यों और विकास की कोई कीमत नहीं. यह तीन वर्ष का समय इन की नजरों में 'स्वर्णिम' होता है, जिस का ये खुल कर दुरुपयोग करते हैं.

राज्य के इन रुग्ण निगमों और बोर्डों में चल रही लूटखसोट का अंदाजा इसी बात से लगाया जा सकता है कि मात्र 1980-81 के वित्तीय वर्ष में राजनीतिबाजों और अधिकारियों ने विदेश यात्रा के मद में लगभग 12 करोड़ रुपए व्यय किए. इतना ही नहीं, अध्यक्षों एवं अधिकारियों के बंगलों को सजाने के नाम पर अकेले एक वर्ष में करीब 20 करोड़ रुपए व्यय किए गए.

एक तरफ सत्तारूढ़ दल अपने शासनकाल की वर्षगांठ मना कर अपनी उपलब्धियों का ढिंढोरा पीट कर जनता की आंखों में धूल झोंकता है और दूसरी ओर इस प्रकार के कुकृत्यों द्वारा राज्य के विकास के मार्गों को अवरुद्ध ही नहीं करता, बल्कि निरीह जनता की पीठ में छुरा भोंकने का कार्य भी करता है. राजनीतिबाजों की इस दोरंगी नीति के कारण बिहार जैसे पिछड़े राज्य के लगभग सभी बोर्ड और निगम पतन के कगार तक पहुंच चुके हैं. लेकिन आश्चर्य इस बात का है कि अधिकांश बोर्डों एवं निगमों के हिसाबकिताब की जांच तक नहीं की गई है. सब के सब बहती गंगा में डुबकी लगाने में मशगूल हैं और राज्य बुनियादी तौर पर दिवालिया हो गया है.

सरकारी संस्थानों की इस दुर्दशा को देखते हुए लोगों का कहना है कि अगर सरकार इन संस्थानों को चला पाने में अक्षम है तो वह इन्हें नागरिक क्षेत्र में क्यों नहीं दे देती. अगर वह इन्हें नागरिक क्षेत्र को सौंपने को तैयार नहीं है तो फिर इन में व्याप्त राजनीति, भ्रष्टाचार, अनुशासनहीनता एवं लूटखसोट को रोकने के लिए कारगर कदम उठाने में क्यों हिचकिचा रही है? जाहिर है कि इस मामले में सरकार की उदासीनता भ्रष्ट राजनीतिबाजों और सरकारी कर्मचारियों को अपनी मनमानी करने और जनता को दोनों हाथों से लूटने का पूरा मौका दे रही है. ●

उत्तर प्रदेश की पुलिस और सरकार कहां है?

डाकुओं से घिरा बेबस मुख्य मंत्री

उत्तर प्रदेश के मुख्य मंत्री विश्वनाथप्रताप सिंह एक ओर चालबाज राजनीतिबाजों और भ्रष्ट अधिकारियों से घिरे हैं तो दूसरी ओर डाकू आतंक, कानून और व्यवस्था की बिगड़ती स्थिति ने इन्हें परेशान कर रखा है...

लेख • निरंकारसिंह

उत्तर प्रदेश में आज कानून और व्यवस्था की स्थिति अत्यंत चिंताजनक हो गई है. पुलिस द्वारा डाकुओं से की गई मुठभेड़ों के समाचार आए दिन सुननेपढ़ने को मिल रहे हैं. मैनपुरी, एटा, गोंडा सहित अनेक स्थानों पर पुलिस को डाकुओं की जबरदस्त चुनौतियों का सामना करना पड़ रहा है.

पुलिस और डाकुओं में जहां कहीं भी वास्तविक मुठभेड़ होती है, पुलिस को वहां मात खानी पड़ती है. प्रदेश में, छविराम सहित मारे गए कुछ कुख्यात डाकुओं के बारे में कहा जा रहा है कि उन्हें धोखे से उस समय मारा गया है जब वे आत्मसमर्पण की तैयारी

में थे. इस से उपर्युक्त क्षेत्रों में आतंक और चिंता व्याप्त है कि डाकू पुलिस द्वारा किए गए इस विश्वासघात का बदला ले कर ही रहेंगे. (देखिए संलग्न रिपोर्ट).

इतनी आतंकपूर्ण और नाजुक स्थिति होने के बाद भी सत्ता पक्ष के राजनीतिबाजों द्वारा अकसर यह कहा जाता है कि उन क्षेत्रों में कानून और व्यवस्था की स्थिति बदतर है, जहां मार्क्सवादी कम्यूनिस्ट पार्टी का शासन है. पर यह कथन वास्तव में राजनीति से प्रेरित है, क्योंकि स्थिति इस के ठीक विपरीत हैं. साथ ही यह स्वीकार करने में अब

गृह राज्यमंत्री राजेंद्र त्रिपाठी : भ्रष्ट अधिकारियों व अपराधी तत्वों को संरक्षण देने की बात कहां तक सही है?

हिचकिचाहट नहीं होनी चाहिए कि भारत के सब से बड़े प्रांत उत्तर प्रदेश में कानून और व्यवस्था की स्थिति अत्यंत निराशाजनक है.

उत्तर प्रदेश में डाकुओं का हौसला कितना बुलंद है, इस का ताजा उदाहरण है बांदा के समीप का वह हत्याकांड, जिस में मुख्य मंत्री के बड़े भाई न्यायाधीश श्री चंद्रशेखरप्रताप सिंह, उन का पुत्र और दो अन्य व्यक्ति दर्दनाक मौत के शिकार हुए हैं. अगर यह समाचार सही है कि डाकुओं ने इन लोगों पर आक्रमण यह समझ कर किया कि यह जीप पुलिस की है, तो यह मानना पड़ेगा कि पुलिस के प्रति डाकुओं के मन में घृणा व प्रतिशोध की आग धधक रही है. और यह बात सही भी है, क्योंकि उक्त हत्याकांड के संदर्भ में गलत सूचना देने वाले मुखबिर का डाकुओं द्वारा हत्या किया जाना यह प्रमाणित करता है कि उन का लक्ष्य मुख्य मंत्री के परिवार को मारना नहीं था, बल्कि पुलिस वालों को मौत के घाट उतारना था.

डाकुओं के हौसले बुलंद क्यों हुए?

इसी स्थिति के परिप्रेक्ष में अब सवाल यह उठता है कि डाकुओं के हौसले इतने बुलंद क्यों हुए?

यह तथ्य स्वीकार करना ही पड़ेगा कि सर्वोदयी नेताओं के संरक्षण में डाकुओं से उन के आत्मसमर्पण की वार्ता ऐसे चलती थी, जैसे वे कहीं के राजा हों और बड़ी इज्जत के साथ सरकार के सामने हथियार डालना चाहते हों. अतः गहराई से देखा जाए तो आत्मसमर्पण की यह प्रक्रिया ही गलत थी.

पर बात अगर यहीं तक सीमित रहती तब भी गनीमत थी, यहां तो कोढ़ में खाज वाली कहावत चरितार्थ हो गई. स्वार्थी और पदलोलुप राजनीतिबाजों ने डाकुओं को अपनी सफलता का हथियार बना लिया. इस हथियार के बल पर गांव के गांव आतंकित करवा दिए गए और बेचारे आतंकित मतदाताओं ने डाकुओं के कहने के अनुसार दल विशेष के उम्मीदवार को आंख मूंद कर वोट दिया. इस तरह राजनीतिबाजों की पौबारह रही और डाकू भी निस्संकोच लूटपाट करने लगे, क्योंकि उन को अब किसी प्रकार का डर नहीं रहा था. चुनाव में राजनीतिबाजों को जिता कर अब वे उस अहसान के बदले में अपनी सुरक्षा के प्रति आश्वस्त हो गए थे. पर आजकल राजनीतिबाज अपने ऊपर किए गए उन के अहसान का बदला चुकाने में सामने नहीं आ रहे हैं, क्योंकि डाकुओं से उन की साठगांठ की बात खुल कर जनता के सामने आ गई है और जनता की नजर में वे गिर गए हैं. अतः डाकुओं को अपनी सुरक्षा खुद ही करनी पड़ रही है. साथ ही पुलिस का रवैया भी उन के

साथ धोखेबाजी का रहा है, इसलिए वे पुलिस के भी दुश्मन बन गए हैं.

डाकू अपने आप को बागी कहते और मानते हैं और एक बागी हत्या या लूटपाट करना अपना फर्ज मानता है. आज उस के फर्ज के आगे सरकार और पुलिस लाचार है और लाचारी केवल स्वार्थों के कारण है. अतः डाकू राजनीति का दौर चल रहा है और यह दौर तब तक चलेगा, जब तक कि हथियार ले कर चलने वाले इन डाकुओं के पीछे सफेदपोश राजनीतिबाजों का किसी न किसी रूप में हाथ रहेगा, पुलिस और डाकुओं में रिश्वत के बल पर छूट देने का रिश्ता कायम रहेगा.

डाकू आतंक कैसे दूर हो?

डाकू आतंक की गंभीर समस्या का हल निकालने के लिए डाकू आतंक वाले क्षेत्रों की जनता को प्रशासन द्वारा पूर्ण सुरक्षा दी जानी चाहिए और उन में आत्मविश्वास पैदा किया जाना चाहिए. पर एक विडंबना यह है कि इस कार्य के लिए पुलिस का सहयोग लिया जाएगा और अब यह बात भी किसी से छिपी नहीं है कि गांव वाले पुलिस से अधिक डरते हैं, डाकुओं से कम, क्योंकि डाकू भय और आतंक पैदा करने में सफल हो जाते हैं जब कि पुलिस सुरक्षा प्रदान करने में असफल रहती है. गांव वालों को डाकुओं से मेलजोल रखना पड़ता है, क्योंकि अगर वे डाकुओं से मेलजोल न रखें तो डाकू उन के लिए काल बन जाएं. अतः नाजुक क्षेत्रों में केंद्रीय आरक्षी पुलिस बल और सीमा सुरक्षा बल की तगड़ी व्यवस्था की जा सकती है.

इसी बीच ध्यान देने योग्य एक बात यह भी है कि पुलिस वालों को भी सरकार यदि पर्याप्त प्रोत्साहन और उन के परिवार वालों को उपयुक्त संरक्षण दे तो कोई वजह नहीं कि वे फर्जी मुठभेड़ें दिखा कर खानापूरी ही करें. पर ऐसा कोई विशेष प्रबंध नहीं है और पुलिस विभाग द्वारा अभी तक झंझटों से किनाराकशी करने की नीति से ही काम लिया जाता रहा है. साथ ही उत्तर प्रदेश के पुलिस विभाग में आज भ्रष्टाचार उस बिंदु तक पहुंच गया है, जहां पुलिस विभाग के बेहतर और ईमानदार अधिकारियों के सामने अपने अस्तित्व को बनाए रखने का संकट पैदा हो गया है.

पुलिस का मनोबल क्यों गिरा?

गोंडा के पुलिस उप अधीक्षक क.प्र. सिंह की हत्या के बारे में अनेक संदेह पैदा हो गए हैं. इस मृतक पुलिस अधिकारी की पत्नी का कहना है कि उस के पति की हत्या साजिश से की गई, क्योंकि उस के पति ने हत्या से कुछ दिन पूर्व, कुछ गंभीर आरोपों के संदर्भ में एक दरोगा को लाइन हाजिर कर दिया था.

वाराणसी के तत्कालीन जिलाधिकारी भूरेलाल : जमाखोरों व तस्करों के विरुद्ध काररवाई पर इनाम मिला—एक और तबादला.

वाराणसी में कोतवाली के तत्कालीन कोतवाल इंस्पेक्टर ज.ब. मिश्र ने जब एक तस्कर के विरुद्ध काररवाई की तो तत्कालीन पुलिस उप महानिरीक्षक, जो अब अतिरिक्त पुलिस महानिरीक्षक हैं, के आदेश से उन का स्थानांतरण इटावा कर दिया गया. किंतु श्री मिश्र, जिन्हें अपनी कार्यकुशलता के लिए राष्ट्रपति स्वर्ण पदक प्राप्त हुआ है, हतोत्साहित नहीं हुए और इटावा पहुंचने के बाद उन्होंने एक कुख्यात डाकू को मौत के घाट उतार दिया. पर इस के बदले में उन का फिर स्थानांतरण हो गया. कहा जाता है कि
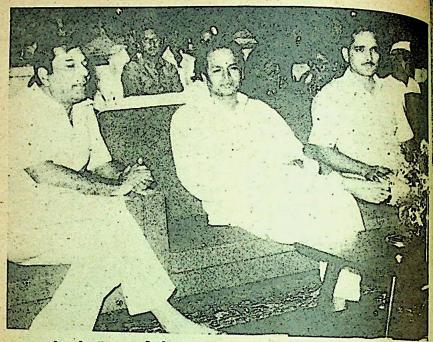
उत्तर प्रदेश के पुलिस महानिरीक्षक, गृह राज्य मंत्री राजेंद्र त्रिपाठी और पुलिस उप महानिरीक्षक (बाएं से दाएं): क्या कानून और व्यवस्था बनाए रखने का दायित्व पूरा कर पा रहे हैं?

जिस डाकू को उन्होंने मारा था उस का संबंध प्रदेश के एक मंत्री से था.

गृह राज्य मंत्री पर आरोप

इधर उत्तर प्रदेश के गृह राज्य मंत्री राजेंद्र त्रिपाठी पर भ्रष्ट अधिकारियों तथा अपराधी तत्त्वों को संरक्षण देने के आरोप लगाए गए हैं. उत्तर प्रदेश अपराध शाखा एक ऐसे पत्र की जांच भी कर रही है, जो गृह राज्य मंत्री की ओर से, किसी अपराधी की सिफारिश के लिए बाराबंकी के एक थानेदार को लिखा गया बताया जाता है. गृह राज्य मंत्री पर विधान सभा में इस प्रकार के आरोप खुल्लमखुल्ला लगाए गए हैं. विपक्षी सदस्यों ने तो उस की फोटोस्टेट प्रति भी विधान सभा के अध्यक्ष को पेश की है, जो गृह राज्य मंत्री की ओर से बाराबंकी के थानेदार को लिखा गया बताया जाता है. पर गृह राज्य मंत्री ने इस पत्र को जाली बताया है तथा अपने ऊपर लगाए गए आरोपों को निराधार बताया है, हालांकि मामला गंभीर है और इस की जांच चल रही है, किंतु प्रशासन में व्याप्त भ्रष्टाचार के संदर्भ में किसी मंत्री के विरुद्ध जांच का क्या परिणाम आएगा, यह सब को पता है.

यदि उत्तर प्रदेश में यही स्थिति बनी रही तो देश के इस सब से बड़े प्रदेश को भीषण अराजकता के दौर में जाते देर नहीं लगेगी.

अतः आज उत्तर प्रदेश के मुख्य मंत्री विश्वनाथप्रताप सिंह एक ओर अपने ही चालबाज राजनीतिबाजों और भ्रष्ट अधिकारियों से घिरे हैं तो दूसरी ओर डाकू आतंक व अपराध बढ़ने तथा कानून और व्यवस्था की स्थिति से जनता में व्याप्त असंतोष के शिकार हैं. यह स्थिति उन के ज्यादा समय तक पद पर बने रहने के अनुकूल नहीं है. ●

छविराम का अपराधी इतिहास

लेख • गिरधारीलाल पाठ्या

इस दशक का सब से खौफनाक डाकू छविराम मारा गया, पर वह अपने पीछे कितनी ही दंतकथाएं छोड़ गया है. छविराम किन हालात में और कैसे डाकू बना?

उत्तर प्रदेश का इस दशक का सर्वाधिक चर्चित दस्यु सरगना छविराम 3 मार्च, 1982 को मैनपुरी में एक मुठभेड़ में मारा गया. पुलिस मुठभेड़ में पांच घंटे तक निरंतर गोलियां चलने के बाद उस के गिरोह के 12 साथी मौत के घाट उतार दिए गए.

छविराम का जन्म 1942 में मैनपुरी जिले में कुरावली थाने के हरनागरपुर नामक गांव में निरंजन उर्फ चिरौंजी अहीर के घर हुआ था. आरंभ में ही वह अपराधी लोगों के संपर्क में आ गया और सातवीं कक्षा पास करतेकरते छुटपुट अपराध करने लगा.

पहले वह जरमन डाकू के संपर्क में आया और उस के मारे जाने के बाद इस क्षेत्र के अलवर डाकू गिरोह का सक्रिय सदस्य बन

गया. अलवर के मारे जाने के बाद छविराम काशी के गिरोह में जा मिला और काशी की मौत के बाद उस ने अपना स्वतंत्र गिरोह बना लिया. इस गिरोह में पोथी अहीर भी जा मिला और इस गिरोह को छविराम पोथी गिरोह पुकारा जाने लगा.

इस गिरोह के पास आधुनिक हथियार काफी थे, मसलन—एस.एल.आर. 30—कारबाइन, स्टेनगन, स्वचालित राइफलें, पिस्तौलें, बंदूकें व हथगोले फेंकने वाली राइफलें आदि. यह गिरोह मैनपुरी, एटा, बदायूं व शाहजहांपुर जिलों में ही डकैती, हत्या व लूटपाट एवं अपहरण के 140 जघन्य अपराध कर चुका है. पुलिस महानिरीक्षक के अनुसार इस गिरोह में 166 सदस्यों के होने की सूचना है, जिन में से 34 लोग 1981 के दस्यु विरोधी अभियान के दौरान मारे गए और 12 पकड़े गए.

मैनपुरी के लोगों का कहना है कि छविराम को अपनी जाति के राजनीतिक नेताओं का संरक्षण प्राप्त क्योंकि उस के आतंक की वजह से उन्हें के गांव वोट देते थे. विधान सभा के अधिवेशन में एक विधायक का छविराम नाम एक पत्र पेश किया गया था जिस स्पष्ट था कि उस से चुनाव में मदद मांगी थी.

मैनपुरी के वरिष्ठ पुलिस अधिकारी करमजीतसिंह: क्या यह कारनामा पुलिस के प्रति जनता में विश्वास पैदा कर सकेगा?

नेता के घर से गिरफ्तारी

मार्च 1976 में छविराम मैनपुरी के नेता के घर से गिरफ्तार हुआ था. अक्तूबर, 1977 को मुखबिरी के संदेह डाकुओं के गिरोह ने जैथरा थाना क्षेत्र काली नदी में पांच व्यक्तियों को डुबो कर मार डाला. फिर 11 नवंबर, 1979 को ओछा थाने के मैनपुरी बदनपुर ग्राम में इस गिरोह ने 11 हरिजनों को गोली से भून दिया, जिन में पांच महिलाएं भी थीं. दिसंबर 1979 में एटा के सकीट थाने के गठकोई गांव में सात व्यक्तियों की हत्या कर दी गई. एटा के कंवरपुर गांव में मई, 1981 में 11 हरिजनों की नृशंस हत्या कर इसी गिरोह ने आतंक फैलाया. इस गिरोह में ज्यादातर अहीर हैं और ये पहले हरिजनों पर अत्याचार करते थे, फिर धीरेधीरे अन्य वर्गों के लोगों के यहां भी डकैतियां डालने और हत्याएं करने लगे.

अगस्त, 1981 में एटा के अलीगंज थाने के नथुआपुर नामक ग्राम में डकैती पड़ने और हत्याएं करने की सनसनी खेज घटना घटी. अक्तूबर 1981 में छविराम व उस के साथियों ने मैनपुरी के ओछा थाने के फकीरपुर गांव में पांच महिलाओं सहित 12 ठाकुरों की हत्याएं की. फिरोती के लिए इस गिरोह के सदस्यों ने दरजनों लोगों का अपहरण किया.

एटा, मैनपुरी, फर्रुखाबाद जिलों में सरगरम इस गिरोह के विरुद्ध संगठित कारवाई के फलस्वरूप अनेक पुलिस कर्मचारी व डाकू मारे गए. पर छविराम निरंतर बचता रहा. 9 मई, 1981 को मैनपुरी के घिरौर थाने के इलाके में मुठभेड़ में इंस्पेक्टर मुंशीलाल शर्मा तथा पांच सिपाही
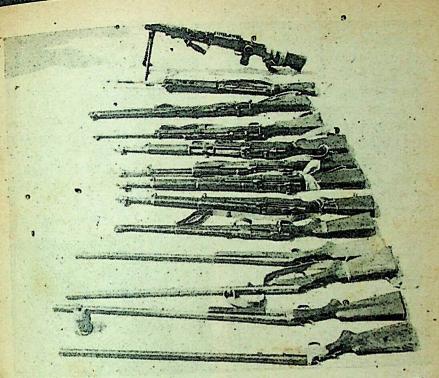
छविराम गिरोह के पुलिस द्वारा बरामद किए गए हथियार : एस.एल.आर. 30 कारबाइन व स्टेनगन जैसे हथियार गिरोह तक कैसे पहुंचे?

मारे गए. 29 मई, 1981 को आगरा के पिनहट थाने के इलाके में इस गिरोह से पुलिस की मुठभेड़ में दो सिपाहियों की जानें गई. 17 अगस्त, 1981 को एटा के अलीगंज थाने के थानाध्यक्ष राजपालसिंह सहित नौ पुलिस कर्मचारी व तीन ग्रामीण छविराम के गिरोह से मुठभेड़ में मारे गए. इस मुठभेड़ में तीन डाकू भी मारे गए, लेकिन छविराम द्वारा उन का दाह संस्कार कर दिए जाने की वजह से उन की शनाख्त नहीं हो सकी.

इस मुठभेड़ के बाद इस क्षेत्र में डाकुओं के आतंक को दूर करने के लिए बहुत बड़ी संख्या में सशस्त्र पुलिस तैनात कर दी गई और इन्हें स्वचालित हथियार, वायरलैस सैट तथा जीपें मुहैया की गई. फिर देहुली कांड के बाद तो मुख्य मंत्री श्री विश्वनाथ प्रताप सिंह ने यह भी घोषणा की कि अगर 24 दिसंबर, 1981 तक इस कांड के दोषी न पकड़े जा सके तो वह अपने पद से इस्तीफा दे देंगे.

वैसे छविराम गिरोह के 100 से अधिक सदस्यों में से पोथी, महाबीरा और अनारसिंह के स्वतंत्र 20-30 व्यक्तियों के गिरोह हैं जो कभी इस गिरोह में मिल जाते, कभी अलग से डकैतियां डालते. कहा जाता है पुलिस द्वारा घिरे होने की सूचना छविराम ने अनारसिंह को भिजवाई थी, पर मदद के लिए नहीं पहुंच सका था.

अंतिम मुठभेड़

अंतिम मुठभेड़ में छविराम के साथ उस के करीब 20-22 साथी थे, जिन में से मथुरासिंह, भूरायाख, भगवानसिंह उर्फ कमांडर, अंतराम, रामकुमार और एजेंटसिंह सहित करीब 10 लोग ग्रामीणों के रूप में निकल भागने में कामयाब हो गए. पुलिस ने छविराम के गिरोह के 34 डाकुओं को मार

डालने और 12 को पकड़ने का दावा किया है. मारे जाने वालों में बलबीरा जिस पर चार हजार रुपए का पुरस्कार था, रघुवीरा कुंदन उर्फ टोडी, मेहताब (दोदो हजार इनाम), जयपीरा, रशपाल और कलक्टर (1,500-1,500 रुपए पुरस्कार) तथा चरनसिंह (एक हजार रुपए का इनाम) प्रमुख थे.

बंदी बनाए गए डाकुओं में राम औतार, राजेंद्र, दुर्योधन, देवीदयाल, छेदालाल, मिलापसिंह, महाराज नरेश, शंकर यदुनाथ, सोनपाल, जब्बरसिंह और अब छविराम के सब से विश्वासपात्र मथरासिंह को एटा में
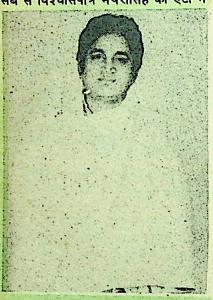
प्रदेश इंदिरा कांग्रेस के विधायक अजमानी : छविराम से आत्मसमर्पण करा के जयप्रकाश बनने की योजना अधूरी रह गई.

एक बस में यात्रा करते हुए गिरफ्तार कर लिया गया है.

विश्वस्त सूत्रों से पता चला है कि छविराम की अंतिम मुठभेड़ की मुखबिरी उस के ही एक विश्वासपात्र सहयोगी ने की थी. 6-8 फरवरी को छविराम का खुले आम जनता में आना भी उस की मौत का कारण बना क्योंकि तब तक उसे बहुत कम लोग पहचानते थे लेकिन उस के बाद गांव... जानने लगे और उस के गांव में होने... सूचनाएं पुलिस तक पहुंच जातीं. छविराम... आत्मसमर्पण के लिए पहल करने वाले... कांग्रेस के विधायक सतीश अजमानी ने... विशेष भेंट में बताया, "छविराम को... अंत नजर आ रहा था और इधर उस... रवैया मानवीय हो गया था. वह महिलाओं... जोरजबरदस्ती या बलात्कार नहीं करता... न अपने साथियों को बलात्कार करने... इजाजत देता था."

छविराम के आत्मसमर्पण की यो...

कुछ वरिष्ठ नेताओं के संकेत पर श्री अजमा... ने तैयार की और वह मुख्य मंत्री के... छविराम का पत्र भी ले गए, पर छविराम... खुले आम मैनपुरी के गांवों में घूमने... प्रशासन की छवि बिगड़ गई और सरकार... पुलिस अधिकारियों के विरुद्ध कड़ा रु... अपनाया.

मुठभेड़ से दो दिन पहले ही मैनपु... के वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक करमजीतसिंह... लखनऊ तबादला कर दिया गया. पर उ... तक आदेश पहुंचने से पूर्व ही छविराम मा... गया और तबादला रद्द कर दिया गया.

पुलिस महानिरीक्षक श्री नरेशकुमा...

को महानिदेशक का दर्जा दे कर सम्मानित किया गया है. लेकिन दस्युग्रस्त क्षेत्रों में अब भी पहले की तरह आतंक छाया हुआ है. ग्रामीण अंचलों में तरहतरह की चर्चाएं हैं. कुछ सूत्रों का कहना है कि बचे हुए डाकू संगठित हो कर प्रतिशोध ले सकते हैं. इसलिए विशेष सावधानी बरती जा रही है. इन सूत्रों का संकेत है कि डाकू पुनः यमुना व चबल की कंदराओं में मंलखानसिह से मिल कर भावी योजना बना रहे हैं.

मुठभेड़ स्थल: मैनपुरी जिले में सगेर नदी का किनारा जहां ग्राम नवाखेड़ा के निकट छविराम मारा गया.

एक डाकू के मरने से कुछ राहत भले ही महसूस हो, पर जब तक यहां पुलिस चुस्त नहीं होगी और राजनीतिक नेता जातीय आधार पर डाकुओं को संरक्षण व सहायता देना बंद नहीं करेंगे, तब तक समस्या का हल निकलने वाला नहीं. लेकिन राजनीतिबाज ऐसा करेंगे, इस में संदेह है क्योंकि सत्ता दल व विपक्ष दोनों ही चुनावों में डाकुओं की मदद से मतदान केंद्रों पर कब्जा कर लेते हैं और डाकुओं से जनता को आतंकित कर उन के वोट हासिल करने की कोशिश करते हैं.

इस स्थिति को बदलने के लिए यह भी जरूरी है कि भूमि सुधार कानूनों पर तेजी से अमल किया जाए, पुलिस अधिकारियों की नियुक्तियां जातीय आधार पर न हों और थानों की नीलामी न हो, हथियारों के लाइसेंस देते समय व्यक्ति की हैसियत देखी जाए और कारतूसों का हिसाब रखा जाए.

किस नेता का किस डाकू से संबंध है, इस की जानकारी जिला पुलिस को रहती है, पर बिना ऊपर के आदेश के पुलिस कुछ नहीं कर सकती. स्थानीय विधायक, मंत्री और सत्ता दल के पदाधिकारी यदि किसी पुलिस अधिकारी को अपने उपयुक्त नहीं पाते तो उस का तबादला करवा देते हैं. इस से पुलिस में अनुशासनहीनता पनपती है. पुलिस में राजनीतिक हस्तक्षेप कम हुए बिना डाकुओं की समस्या का सख्ती से मुकाबला नहीं किया जा सकता. फिर विरोधी दल के नेताओं को डाकुओं से संबंधित अध्यादेश के अधीन बंदी बनाने से पहले सत्ता दल को अपने गरेबान में भी झांक कर देखना चाहिए. ●

पुलिस महानिदेशक नरेशकुमार: छविराम की मौत इन के लिए पदोन्नति तो जनता के लिए भय का कारण बनी.

नए लेखकों के लिए कहानी प्रतियोगिता

नए अंकुर

मुक्ता ने अपने जन्म ही से नए लेखकों को प्रोत्साहित किया है. कभी लेखकों के नाम से प्रभावित हो कर उन की रचनाओं को तरजीह नहीं दी है. मुक्ता के लिए रचना ही महत्वपूर्ण होती है. लेखकों का नाम या उस की ख्याति नहीं.

नए लेखकों को प्रकाश में लाने के लिए मुक्ता द्वारा समयसमय पर नए अंकुर प्रतियोगिताएं भी आयोजित की जाती रही हैं, जिन में केवल उन्हीं लेखकों की रचनाएं स्वीकृत की जाती हैं जिन की कोई रचना पहले कहीं न छपी हो.

अब इस प्रतियोगिता को सामयिक की बजाए स्थायी रूप दिया जा रहा है. यह प्रतियोगिता निरंतर चलती रहेगी. इस में उन सभी नए लेखकों की कहानियों का स्वागत है जिन की कोई रचना पहले कहीं प्रकाशित नहीं हुई है. इन रचनाओं के लिए कोई अंतिम तिथि नहीं है. जैसेजैसे ये प्राप्त होती जाएंगी इन पर विचार कर के निर्णय किया जाता रहेगा और यथासंभव शीघ्र प्रकाशित कर दिया जाएगा. प्रत्येक रचना पर 75 रुपए का पारिश्रमिक दिया जाएगा. वर्ष के अंत में सभी नए अंकुर रचनाओं पर पुनः विचार किया जाएगा और सर्वश्रेष्ठ रचनाओं पर निम्नलिखित पुरस्कार दिए जाएंगे :

प्रथम पुरस्कार : 200 रुपए
द्वितीय पुरस्कार : 100 रुपए
तृतीय पुरस्कार : 50 रुपए

ये पुरस्कार पारिश्रमिक के अतिरिक्त होंगे.
इस विषय में संपादक का निर्णय अंतिम व मान्य होगा.

रचनाएं भेजने से पहले कृपया मुक्ता कार्यालय से लेखकों के नियम मंगवा कर पढ़ लीजिए ताकि आप की रचनाओं पर विचार करने में सुविधा रहे. इस के लिए 35 पैसे का टिकट लगा, अपना पता लिखा लिफाफा भेजिए.

संपादक, मुक्ता, झंडेवाला एस्टेट, नई दिल्ली-110055.
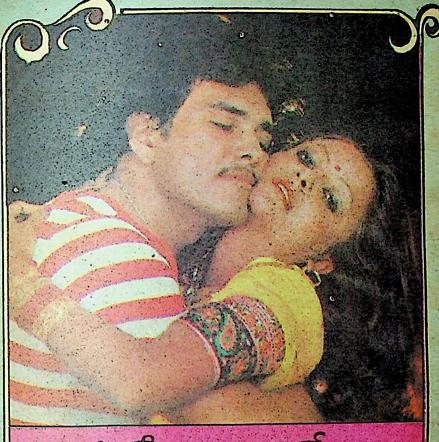
जिंदगी लहर हो गई...

तुम्हारी मुसकानों में जिंदगी गुलमोहर हो गई,
इन आंखों की छांव में जिंदगी बसर हो गई.

तुम्हारे चेहरे के नूर में धुंधला गए सारे गम,
हंसी परछाई बन गई, जिंदगी सहर हो गई.

बहुत लड़खड़ा गए थे राह में ये थकेथके कदम,
तुम्हारे बाजुओं ने थामा, तो जिंदगी सफर हो गई.

ठहरा हुआ सैलाब थे हम, सूखे हुए किनारे थे,
कुछ यूं छुआ तुम ने कि जिंदगी लहर हो गई.

—वनिता श्रीवास्तव
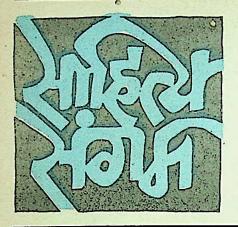
मरुभूमि

लेखक : शंकर
प्रकाशक : लोकभारती प्रकाशन, 15-ए, महात्मा गांधी मार्ग, इलाहाबाद (उ.प्र.)
पृष्ठ संख्या : 198
मूल्य : 27.50 रुपए
प्रथम संस्करण : 1981

कुछ वर्ष पहले बंगला के प्रसिद्ध उपन्यासकार शंकर का एक उपन्यास प्रकाशित हुआ था— 'जनअरण्य'. उस उपन्यास में लेखक ने महानगर कलकत्ता में शिक्षित बेरोजगारों की समस्या को दो पात्रों— सोमनाथ और सुकुमार (जो घनिष्ट मित्र भी हैं) की व्यथा के रूप में उजागर किया था. सोमनाथ मध्यवर्ग परिवार का प्रतिनिधि था तो सुकुमार निम्नमध्य वर्ग का. उक्त उपन्यास का अंत लेखक ने सोमनाथ को व्यवसायी और सुकुमार को बेराजगार ही बनाए रख कर किया था, मगर साथ ही सुकुमार की बहन कणा को बारोजागर दिखाया था.

समीक्ष्य उपन्यास 'मरुभूमि' इसी कथा को आगे बढ़ाता है. पिछले उपन्यास का बेरोजगार सहनायक सुकुमार बेराजगारी से इतना उद्विग्न हो जाता है कि अपना मानसिक संतुलन खो बैठता है, कणा रोजगार के नाम पर वेश्यावृत्ति करने को लाचार हो जाती है, जिसे व्यवसायी अपने मनोरंजन के लिए कभी भी उपभोग कर सकते हैं. सोमनाथ को व्यापार के क्षेत्र में सफलता पाने के लिए अपनी पार्टी की इच्छा पर उस के मनोरंजन के लिए किसी जीतीजागती गुड़िया (लड़की) की जरूरत पड़ती है. उस की यह जरूरत पूरी करता है एक दलाल. सोमनाथ को सफलता मिलती है पर जब सोमनाथ को पता चलता है कि इस के लिए उसी के मित्र सुकुमार की बहन कणा को यह घृणित काम करने के लिए लाया गया था तभी से वह पश्चाताप की आग में जलने लगता है. वह अपने इस कृत्य को भूल नहीं पाता और मानसिक वेदना सहता रहता है.

पर उसे पश्चाताप इसलिए नहीं होता क्योंकि उस ने अपनी सफलता के लिए एक स्त्री का दुरुपयोग किया बल्कि इसलिए कि उपभोग्य लड़की उस के मित्र की बहन थी जो भाई के इलाज, परिवार के भरणपोषण के लिए यह सब करने पर विवश है. कणा को अपनी काया किराए पर देने के इस काम से मुक्ति पाने का कोई उपाय नजर नहीं आता. मगर अनायास उसे मुक्ति मिल जाती है लेकिन अनचाहे मातृत्व के भार के साथ. इस स्थिति से बचने का उसे एक ही रास्ता दिखाई देता है— आत्महत्या. मगर ऐन वक्त पर उस का भाई सुकुमार उसे बचा लेता है. कणा की व्यथा कथा सुन कर उसे इस मुसीबत से छुटकारा दिलाना चाहता है. वह सब से पहले अपने लिए रोजगार ढूढ़ता है फिर अपने घर से बहुत दूर किसी दूसरी जगह मकान. रोजगार तो मिल जाता है मगर मकान मिलने का एक ही उपाय है— पतिपत्नी के रूप में किराएदार बन कर रहना. लाचार हो कर वह अपनी बहन कणा को अपनी पत्नी बता कर एक दूर के महल्ले में रहने लगता है.

उधर सोमनाथ निरंतर व्यस्त रह कर भी अपने किए को भूल नहीं पाता. मगर इतना आत्मबल भी नहीं जुटा पाता कि जा कर अपने किए की क्षमा मांग ले या सुकुमार, कणा या उस के परिवार की खोजखबर ही ले ले. इसी लिए जब दो एक बार सुकुमार उसे राह चलते दिखाई देता है, वह उस से किनारा कर जाता है.

कणा का गर्भपात कराने के लिए सुकुमार को कुछ रुपयों की जरूरत पड़ती है. इस की पूर्ति के लिए वह जिस दुकान में नौकरी करता है वहीं से रुपयों की चोरी करता है और पकड़े जाने पर जेल पहुंच जाता है.

जब सोमनाथ को पता चलता है तो वह जेल में जा कर सुकुमार से मिलता है. उस से कणा का हाल जान कर कणा के पास जाता है और अवैध संतान को जन्म देने जा रही कणा को उसी रूप में अपनी पत्नी बनाने को तैयार हो जाता है. इस तरह भारतीय परंपरा के अनुसार उपन्यास का अंत सुखद होता है.

उपन्यास का सब से महत्त्वपूर्ण पक्ष कथावस्तु व पात्रों का चरित्रचित्रण है. मगर कथावस्तु के विकास के लिए जिन प्रसंगों का सहारा लिया गया है, उन्हें कहींकहीं अनावश्यक विस्तार दिया गया है. अवैध संतान से मुक्ति दिलाने के लिए सुकुमार द्वारा अपनी बहन को अपनी पत्नी के रूप में अपने साथ रखना भी अखरता है. सुकुमार का आत्मबोध स्पष्ट रूप में उजागर हुआ है.

उपन्यास में अंगरेजी शब्दों का प्रयोग अखरता है. कहींकहीं हिंदी के ऐसे कठिन शब्द प्रयोग किए गए हैं जो आम पाठक की समझ से परे हैं. भाषा दुरूह हो गई है व कथा सूत्र बहुत से स्थानों पर बिखरा हुआ है.

उपन्यास में सब से ज्यादा अखरने वाली बात है, अनुवादक, संपादक और अशुद्धि संशोधक द्वारा की गई बेहिसाब लापरवाही. कई स्थानों पर पात्रों के नामों में उलटफेर हो गया है तो कई जगह वाक्यों के अर्थ ही बदल गए हैं.

इस उपन्यास का हिंदी अनुवाद भी समयानुकूल नहीं कहा जा सकता. संभवतः यह उपन्यास मूल रूप में अब से कई वर्ष पहले लिखा गया होगा, जब अनचाहे मातृत्व से मुक्ति पाना दुरूह रहा हो, मगर अब तो गर्भपात कराना बहुत ही सरल और सर्वसुलभ हो गया है. एक पूरक उपन्यास के लिए पाठकों से इतना अधिक मूल्य वसूलना भी उचित नहीं कहा जा सकता.

महानगरों की छलछद्म भरी जिंदगी, मध्यम वर्ग, निम्न वर्ग की सामाजिक, आर्थिक परेशानियों, बदलते मानदंडों के तानेवाने में बुनी अच्छी खासी विषय वस्तु के होते हुए भी उपन्यास उल्लेखनीय कृति नहीं बन पाया, बल्कि साधारण पाठक की समझ से दूर केवल एक विशेष वर्ग के लिए सीमित हो कर रहा गया है.
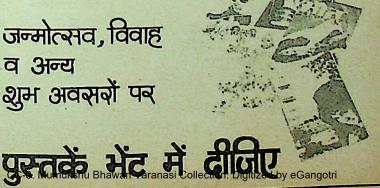
स्टाक एक्सचेंज :
जहां कोई भी अमीर बन सकता है . . .

लेख • अजयकुमार सिन्हा
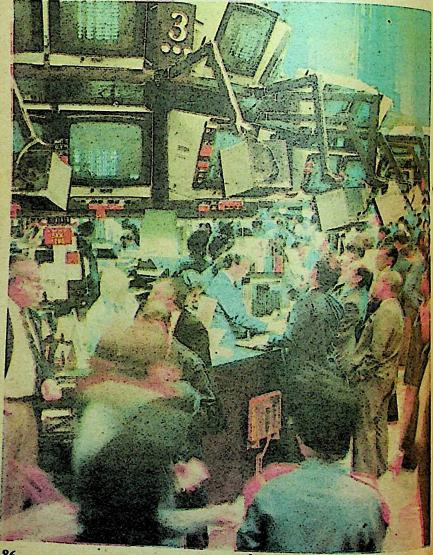
रातोंरात अमीर बन जाने के बहुत से तरीके हैं, जैसे जुआ खेलना, सट्टा लगाना, लाटरी खरीदना आदि. किंतु जुआ खेलना या सट्टा लगाना न केवल बदनाम तथा गैरकानूनी धंधा अपनाना है बल्कि इन में हानि की भी संभावना रहती है. लाटरी का टिकट खरीदना या कंपनियों के शेयर खरीदना कानूनी धंधों में आता है. यद्यपि ये कानूनी धंधे भी एक प्रकार का जुआ ही हैं क्योंकि ये संयोग पर निर्भर करते हैं, किंतु इन्हें कानून व सरकार की न केवल मान्यता प्राप्त है बल्कि सरकार इन्हें बढ़ावा भी देती है. इस के पीछे उस का मुख्य उद्देश्य विकास कार्यों के लिए धन जुटाना तथा मुद्रा स्फीति को रोकना है. जाहिर है कि मुद्रा स्फीति आज संसार की एक सब से ज्वलंत समस्या है.

शेयर बाजार में लोग रातोंरात बनते और बिगड़ जाते हैं. उत्तेजना और संभावनाओं से भरे ये लुभावने बाजार आजकल स्वस्थ आर्थिक संस्था बनने की बजाए जुए के कानूनी अड्डे बन कर रह गए हैं...

(बाएं) शेयर होल्डरों और दलालों से भरा रहने वाला न्यूयार्क का स्टाक एक्सचेंज.

(नीचे) न्यूयार्क स्टाक एक्सचेंज में बना संग्रहालय जो शेयर खरीदने के फायदों की जानकारी देता है.

स्टाक एक्सचेंज यानी शेयर बाजार में प्रायः बड़ी सरगरमी रहती है क्योंकि यहां जाने कितने बनते और बिगड़ते हैं. करोड़ों का वारान्यारा होता है. यदि किसी कंपनी के शेयरों यानी हिस्सों के भाव गिर जाने से हिस्सेदारों को घाटा होता है तो भाव में एकाएक वृद्धि हो जाने से बड़ा मुनाफा भी होता है. इसी लिए शेयर बाजार एक बड़ा लुभावना, उत्तेजना व संभावनाओं से भरा स्थान है जहां अनेक लोगों के स्वप्न साकार होते हैं. स्टाक एक्सचेंज वह स्थान है जहां कंपनियों के शेयर बेचे व खरीदे जाते हैं. यह कार्य शेयरों के दलाल के माध्यम से होता है. यही वह जगह है जहां आप शेयर, सिक्योरिटी, बांड, डिबेंचर (ऋण पत्र) आदि बेच या खरीद सकते हैं.

ये बांड, सिक्योरिटीज या डिबेंचर क्या हैं? ये किसी कंपनी में लगाए रुपए पर ब्याज मिलने का प्रतिज्ञापत्र या दस्तावेज अथवा वाउचर होते हैं जिस से रुपया वसूल होता है. स्टाक एक्सचेंज में कंपनियां शेयर बेचती या नीलाम करती हैं. इस पर खूब सट्टेबाजी होती है. फलस्वरूप यह संस्था सट्टेबाजी की संस्था के रूप में ज्यादा जानी जाती है. शेयरों के दलालों ने इसे एक प्रकार से जुए व सट्टेबाजी का रूप दे रखा है, अन्यथा यह एक ऐसी संस्था है जो लोगों को बचत के लिए प्रोत्साहित कर सकती है और एक स्वस्थ

सब से बड़े स्टाक एक्सचेंजों में गिना जाने वाला न्यूयार्क स्टाक एक्सचेंज का विशाल भवन: यहां विश्व की 1,500 सब से बड़ी कंपनियों के लाखों शेयर बेचे और खरीदे जाते हैं.
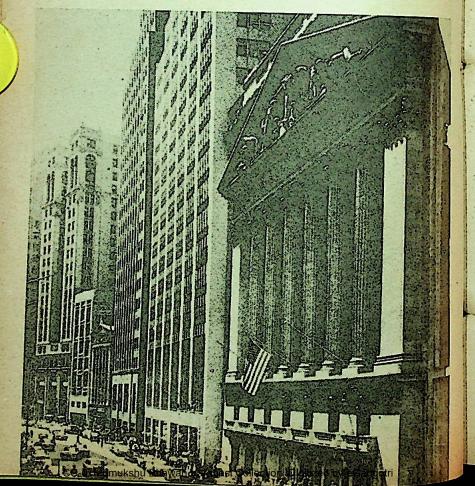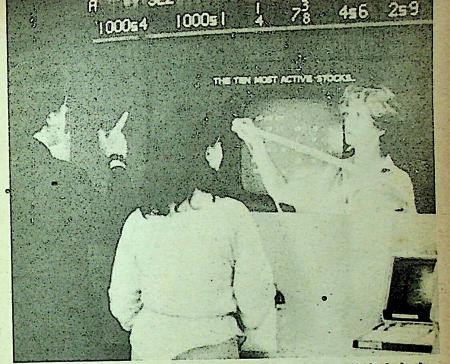
शेयर खरीद कर अपनी रकम में बढ़ोतरी के साथ ही समयसमय पर कंपनियों की ओर से उपहार भी पाए जा सकते हैं.

आर्थिक व सामाजिक संस्था हो सकती है. फिर भी सट्टेबाजी होने के बावजूद इस से बचत व पूंजी लगाने के कार्य को बढ़ावा तो मिलता ही है, क्योंकि सट्टेबाजी से भी जब शेयर खरीदा जाता है तो पूंजी तो लगती ही है.

भारत में बंबई, अहमदाबाद, कलकत्ता, दिल्ली, इंदौर, मद्रास, हैदराबाद, बंगलौर व कोचीन में कुल मिला कर नौ स्टाक एक्सचेंज हैं. बंबई का स्टाक एक्सचेंज भारत का सब से पुराना और सब से बड़ा है.

स्टाक एक्सचेंज संस्था की शुरुआत मध्ययुगीन यूरोप के कुछ देशों में हुई थी. उन देशों की सरकारें युद्ध तथा अन्य कार्यों के संचालन के लिए जनता से ऋण लेने लगीं, जिस से स्टाक एक्सचेंज की उत्पति हुई. धीरेधीरे व्यापारी वर्ग, खरीदार व विक्रेता भी इस का प्रयोग करने लगे. संसार का पहला स्टाक एक्सचेंज लंदन में खुला, न्यूयार्क का स्टाक एक्सचेंज संसार के सब से बड़े स्टाक एक्सचेजों में से है. यहां पर संसार की सब से बड़ी 1,500 कंपनियों के लाखों शेयर बेचे व खरीदे जाते हैं. इतना ही नहीं, लोगों को समझाने के लिए कि स्टाक एक्सचेंज क्या है और कैसे काम करता है, न्यूयार्क स्टाक एक्सचेंज ने एक छोटा संग्रहालय भी बना रखा है.

स्टाक एक्सचेंज की उत्पत्ति

स्टाक एक्सचेंज की उत्पत्ति उस समय हुई जब जायदाद से संबंधित सिक्योरिटियों या प्रामिसरी नोट (भुगतान करने का इकरार नामा) का चलन शुरू हुआ. भारत में इन की शुरुआत अंगरेजों की ईस्ट इंडिया कंपनी की लोन सिक्योरिटी से हुई. शुरू में इन का क्रयविक्रय बहुत थोड़ा था. सन 1830 तक आतेआते इस में काफी वृद्धि हो गई. कंपनियों
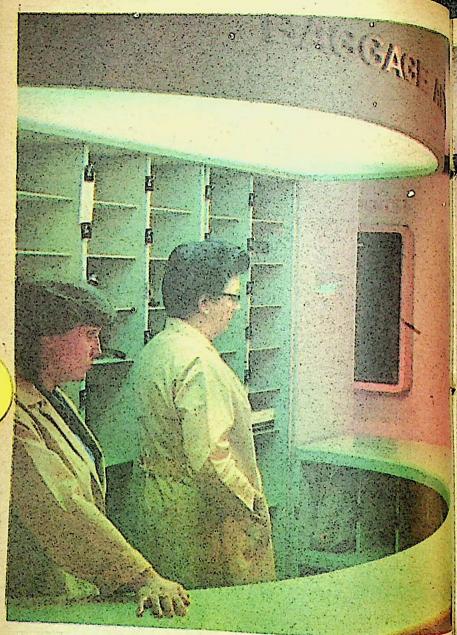
शेयर बेचने और खरीदने का काम शेयर दलालों के माध्यम से होने के कारण स्टाक एक्सचेंज आज सट्टे के अड्डे बन कर रह गए हैं.

के शेयरों का भी क्रयविक्रय शुरू हो गया. बंबई में अनेक बैंकों के शेयर बिकने लगे. कलकत्ता में ईस्ट इंडिया कंपनी के शेयर का क्रयविक्रय और भी बढ़ गया.

किंतु भारत में शेयरों वाली कंपनियों का युग वास्तव में सन 1850 में शुरू हुआ
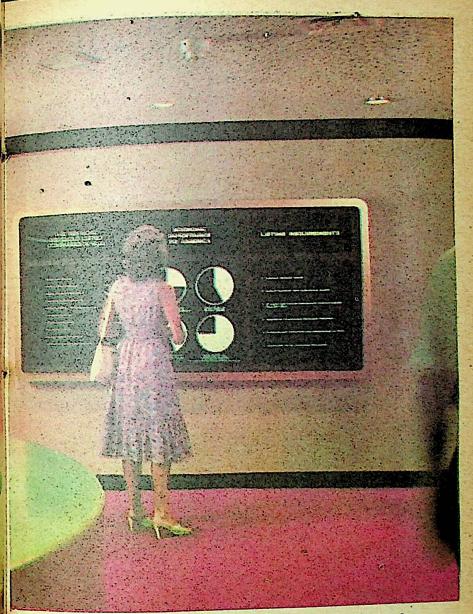
जब सरकार ने कंपनियों के बारे में सीमित दायित्व (लिमिटेड लाइबिल्टी) का अधिनियम बनाया. इस से शेयरों की दलाली को प्रोत्साहन मिला. 1861 में अमरीका में गृहयुद्ध शुरू हो गया, जिस के फलस्वरूप अमरीका से यूरोप जाने वाले कपास की मात्रा में आधी कटौती हो गई. परिणामस्वरूप भारत के कपास की मांग तेजी से बढ़ गई. इस से कपास के शेयरों का क्रयविक्रय खूब बढ़ा और शेयर दलालों की संख्या 60 से बढ़ कर 250 हो गई और दलालों का महत्त्व व सम्मान भी बढ़ गया. बैंकों के प्रबंधक दलालों

को महत्त्व देने लगे." दलाल अत्याधुनिक फैशनेबिल जगहों पर सभाएं करने लगे.०

किंतु अमरीका में गृहयुद्ध के समाप्त होते ही दलालों की संख्या भी घट गई, उन की समृद्धि व ऐश्वर्य में कमी आ गई. बंबई के शेयर दलाल अब आलीशान जगहों पर इकट्ठा न हो कर एक गली में इकट्ठे होते, जिस का नाम आज दलाल स्ट्रीट है और जहां बंबई का स्टाक एक्सचेंज है. 1875 में बंबई के दलालों ने अपनी एक संस्था भी बनाई, जिस का एक उद्देश्य संस्था के सदस्यों के लिए एक हाल का निर्माण करना भी था. इस प्रकार सन 1875 में बंबई स्टाक एक्सचेंज का गठन हुआ, तब इस का सदस्यता शुल्क एक रुपया था और इस के 318 सदस्य थे. आज इस के सदस्यों की संख्या 500 से अधिक है.

बंगाल के जूट उद्योग ने कलकत्ता के स्टाक एक्सचेंज को जन्म दिया, जहां जूट उद्योग के शेयरों का क्रयविक्रय होने लगा. सन 1880 और 1890 के बीच चाय कंपनियों के शेयर और 1904 और 1908 के बीच कोयला कंपनियों के शेयर भी बेचे जाने लगे. सन 1902 में बाराकुट कोल कंपनी के एक शेयर का मूल्य 85 रुपए था. सन 1908 में उस का मूल्य 540 रुपए हो गया और रिलांयस कोल का शेयर 160 रुपए से बढ़ कर 500 हो गया. सन'1908 में कलकत्ता के 150 प्रमुख दलालों ने अपनी एसोसिएशन बनाई. सन 1927 में इन लोगों ने एक सुंदर इमारत खरीदी. पूरी इमारत वातानुकूलित है और यहीं कलकत्ता स्टाक एक्सचेंज है.

अन्य स्टाक एक्सचेंज

सन 1937 में पांच सदस्यों ने मद्रास स्टाक एक्सचेंज का गठन किया जो देश का चौथा स्टाक एक्सचेंज था. इस के बाद स्टाक एक्सचेंजों की संख्या तेजी से बढ़ने लगी तो सरकार ने देश के चुने हुए स्टाक एक्सचेंजों (बंबई, कलकत्ता, अहमदाबाद, मद्रास, हैदराबाद, दिल्ली और इंदौर) को मान्यता देने के लिए सन 1956 में सिक्योरिटीज कांट्रेक्ट (रेगुलेशन) ऐक्ट 1956 बना दिया.

भारत के नौ स्टाक एक्सचेंजों में से एक—दिल्ली का स्टाक एक्सचेंज : भारतीय स्टाक एक्सचेंज अपने लक्ष्य को प्राप्त करने में पूरी तरह असफल रहे हैं.
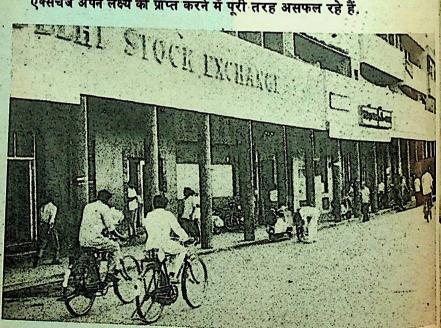
बंगलौर व कोचीन के स्टाक एक्सचेंजों को क्रमशः सन 1963 और 1979 में मान्यता मिली.

इन मान्यताप्राप्त स्टाक एक्सचेंजों का संचालन सरकार द्वारा अनुमोदित व मान्य नियमों एवं उपनियमों के अंतर्गत होता है. इन का मुख्य कार्य है– केंद्रीय व राज्य सरकारों, सरकारी संस्थानों और संयुक्त या साझेदारी की स्टाक कंपनियों की सिक्योरिटियों के विक्रय के लिए एक सुव्यस्थित बाजार या क्रयविक्रय स्थल के रूप में काम करना.

भारतीय स्टाक एक्सचेंजों में कुल पूंजी

देश के स्टाक एक्सचेंजों में कुल मिला कर 2,133 गैरसरकारी पब्लिक लिमिटेड कंपनियां पंजीकृत हैं जिन की कुल भुगतान की हुई पूंजी 3,000 करोड़ है. इन के अतिरिक्त स्टाक एक्सचेंजों में सरकार के विभिन्न बांड, सरकारी क्षेत्र के संस्थानों, अधिनियमित कंपनियों तथा स्थानीय संस्थाओं के डिबेंचर भी बेचे व खरीदे जाते हैं. नौ स्टाक एक्सचेंजों पर बेचे जाने वाले इन सभी के शेयरों का कुल योग 10,000 करोड़ रुपए के बराबर है.

पूंजी या रुपया लगाने वाले की सुरक्षा के लिए सरकार द्वारा उठाए गए कदमों के बावजूद दलालों द्वारा अनेक गैरकानूनी काम किए जाते हैं. और इसी लिए उतने शेयर नहीं बिकते जितने कि बिक सकते हैं. शेयरों के बिकने में चीजों के मूल्यों में वृद्धि या महंगाई का भी असर पड़ता है. पाश्चात्य देशों में शेयर बहुत खरीदे जाते हैं. अमरीका की एक कंपनी-अमरीकन टेलीफोन एंड टेलिग्राफ के 30 लाख शेयर होल्डर (भागीदार) हैं.

इस प्रकार भारत के स्टाक एक्सचेंज अपने मुख्य लक्ष्य या उद्देश्य को प्राप्त करने में असफल रहे हैं. वह लक्ष्य है घरेलू बचत या पैसे को उद्योगों की ओर आकर्षित करना. भारत में सभी उद्योगों को सरकारी बैंकों से पूंजी मिलती है. शेयर बाजार द्वारा जनता से प्राप्त पूंजी बहुत कम है. अधिकांशतः पुरानी मशहूर कंपनियों के अत्यंत लाभप्रद शेयर ही

भारत में हालांकि स्टाक एक्सचेंज अन्य देशों जितने विकसित तो नहीं हुए हैं, मगर यहां भी बडी सरगरमी रहती है और प्रतिदिन करोड़ों का वारान्यारा होता है.

न्यूयार्क के स्टाक एक्सचेंज संग्रहालय में लोगों को शेयर बाजार के इतिहास और वर्तमान गतिविधियों के बारे में भी जानकारी दी जाती है.

जनता खरीदती हैं. नई कंपनियों को पूंजी की सख्त जरूरत होती है पर उन के शेयर लोग बहुत कम खरीदते हैं. साथ ही स्टाक एक्सचेंज की सेवाएं केवल महानगरों तक ही सीमित हैं. छोटे नगरों तथा गांवों में इन की सेवाएं उपलब्ध नहीं हैं.

स्टाक एक्सचेंज देश की अर्थव्यवस्था में एक बड़ी महत्त्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं बशर्ते कि उन में कुछ आधारभूत सुधार किए जाएं और शेयरों के दलाल आचार संहिता और सिद्धांतों का ईमानदारी से पालन करें. इस समय स्थिति यह है कि शेयर बाजार एक शक्तिशाली अल्पसंख्यक वर्ग के हाथ में है जो अपनी क्रयशक्ति से मूल्यों को अपने स्वार्थों के अनुसार नियंत्रित कर लेते हैं.

स्टाक एक्सचेंज के बारे में लोगों को भी शिक्षित करना आवश्यक है. कलकत्ता स्टाक एक्सचेंज ने इस दिशा में कदम उठाए हैं और चार महीने का एक पाठ्यक्रम शुरू किया है. मद्रास स्टाक एक्सचेंज भी आठ महीने का एक पाठ्यक्रम शुरू करने वाला है. अमरीका में इस चीज को इतना महत्त्व दिया जाता है कि न्यूयार्क स्टाक एक्सचेंज के विजिटर्स सेंटर में स्टाक एक्सचेंज के इतिहास, इस की वर्तमान स्थिति आदि पर पूरा प्रकाश डाला जाता है. यहां पर आ कर कोई भी यह जान सकता है कि पूंजी लगाने वालों के धन का उपयोग किस प्रकार रोजगार पैदा करने, नए कारखाने बनाने या अनुसंधान व विकास के लिए धन की व्यवस्था करने तथा लोगों का जीवन स्तर सुधारने में किया जाता है.

भारत में स्टाक एक्सचेंजों को भी ऐसे कार्यक्रम शुरू करने चाहिए जिस से ज्यादा से ज्यादा लोग शेयरों के महत्त्व को समझें और उन में अपनी पूंजी लगाएं. छोटे नगरों तथा गांवों में स्टाक एक्सचेंज खोले जाने चाहिए ताकि इन क्षेत्रों के लोग भी शेयर खरीद सकें और इस प्रकार उद्योगों तथा देश की विकास योजनाओं में उन की पूंजी का सदुपयोग हो सके. ●
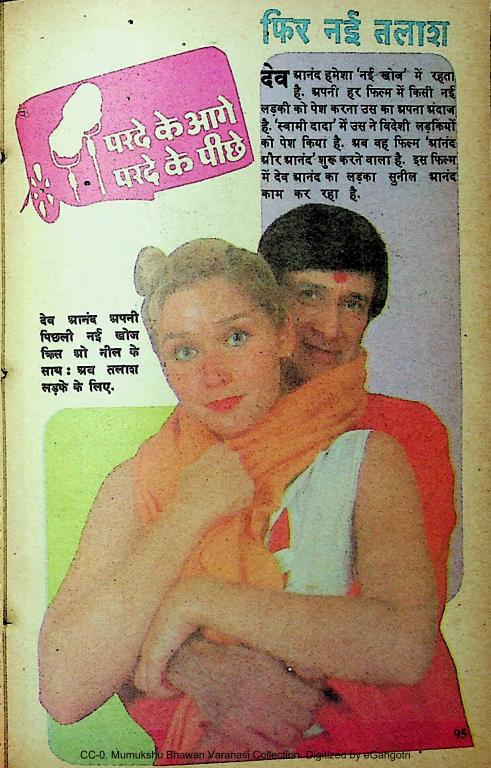
फिर नई तलाश

देव आनंद हमेशा 'नई खोज' में रहता है. अपनी हर फिल्म में किसी नई लड़की को पेश करना उस का अपना अंदाज है. 'स्वामी दादा' में उस ने विदेशी लड़कियों को पेश किया है. अब वह फिल्म 'आनंद और आनंद' शुरू करने वाला है. इस फिल्म में देव आनंद का लड़का सुनील आनंद काम कर रहा है.

देव आनंद अपनी पिछली नई खोज किल ओ नील के साथ: अब तलाश लड़के के लिए.

मजे की बात यहँ है कि इस बार देव आनंद को जिस लड़की की तलाश है, वह अपने लिए नहीं, अपने बेटे सुनील आनंद के लिए है. अच्छा तो यह होगा कि देव आनंद नई लड़की की तलाश की यह जिम्मेदारी अपने बेटे सुनील आनंद पर ही छोड़ दे. कम से कम इतनी आजादी तो देव आनंद को अपने बेटे को देनी ही चाहिए.

बाप का सहारा

कुणाल कपूर फिल्म 'आहिस्ता आहिस्ता' में हीरो बन कर आया. इस फिल्म में और सब कुछ तो लोगों को पसंद आया, लेकिन कुणाल कपूर किसी की पसंद पर भी खरा नहीं उतरा. फिल्म की सब से बड़ी कमजोरी कुणाल कपूर

कुणाल कपूर : आखिर फिल्मों में बनाए रखने के लिए पिता (शशि कपूर) को ही फिल्म बनानी पड़ी.
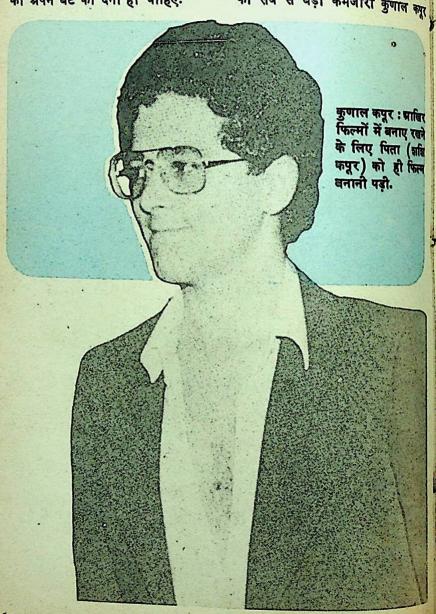
साबित हुआ. इस के बावजूद पद्मिनी कोल्हापुरे ने कुणाल को फिल्म में काम दिलाने के लिए कई निर्मातानिर्देशकों से सिफारिश की. लेकिन कुणाल कपूर को किसी ने भी अपनी फिल्म में लेने की हिम्मत नहीं की. आखिर शशि कपूर ने ही अपने बेटे को सहारा दे कर दोबारा फिल्म के परदे पर पेश करने की हिम्मत दिखाई है.

अब कुणाल कपूर शशि कपूर की अगली फिल्म में एक फौजी अफसर का रोल अदा कर रहा है.

हेलन कहां है?

हेलन के पास इस वक्त कोई भी फिल्म नहीं है. लेकिन उस के घर जब भी कोई पत्रकार फोन करता है तो उसे यही जवाब मिलता है कि हेलन शूटिंग पर गई हुई है. जब यह पूछा जाता है कि कौन से स्टूडियो में और किस फिल्म की शूटिंग में गई है तो टेलीफोन रख दिया जाता है.

अगर हेलन इसी तरह कोई फिल्म पास न होने के बावजूद शूटिंग पर जाती

हेलन : बिना कोई फिल्म पास होने पर भी आखिर किस तरह की शूटिंग पर जाती है?
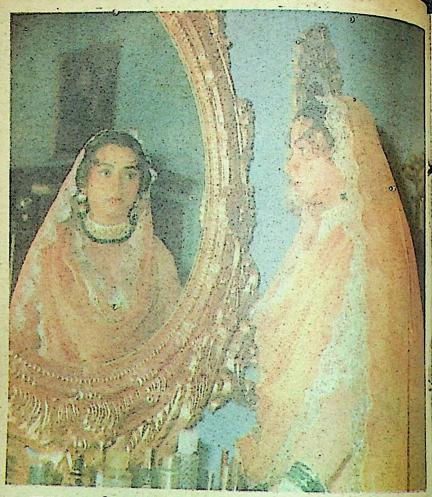
सलमा आगा : फिल्म वालों की भूखी नजरों को कब तक बरदाश्त कर सकेगी?

है तो कौन सी शूटिंग पर जाती है यह तो वही जाने, लोगों को कुछ पता नहीं.

फिल्म वालों की भूखी नजरें

बलदेव राज चोपड़ा की फिल्म 'तलाक तलाक तलाक' में एक नई लड़की सलमा आगा बतौर हीरोइन काम कर रही है और गीत भी वही गा रही है. सलमा आगा कराची (पाकिस्तान) की रहने वाली है और फिल्मों में आने से पहले वह लंदन में रहती थी.

सलमा आगा से जब पूछा गया कि भारत, पाकिस्तान और इंगलैंड में उसे कौन सा देश अच्छा लगता है तो उस ने कहा कि इंगलैंड उसे सब से ज्यादा पसंद है. सलमा आगा से जब दूसरा सवाल यह किया गया कि उसे आखिर इंगलैंड क्यों पसंद है? तो उस ने जवाब में कहा, "वहां मर्द औरतों को भूखी नजरों से नहीं घूरते."

अब देखना यह है कि फिल्म जगत की भूखी नजरों का वह कब तक सामना कर सकेगी या जाहिरा की तरह वापस लंदन लौट जाएगी. ●

पिछले छः महीनों की फिल्में

निर्देशिका उ. : उद्देश्यपूर्ण/अवश्य देखिए | म. : मनोरंजक/देख लें | नि. :निर्देशक
स. : समय काटिए/चलताऊ | अ. : अपव्यय/समय की बरबादी | मु. पा. : मुख्य पात्र

दो दिल दीवाने : मूल रूप से तमिल में बनी फिल्म का हिंदी संस्करण. एक सीधीसादी प्रेम कहानी में विदेश भ्रमण का गैर जरूरी प्रसंग जोड़ दिया गया है. 'एक दूजे के लिए' की कमल व रति की जोड़ी कहीं भी प्रभावित नहीं करती. डविंग में काफी खराबियां हैं. नि.: के. बालाचंदर, मु.पा.: कमल हासन, रति. अ.

देश प्रेमी : देशभक्ति पर बनी बेहद सामान्य फिल्म जिस में दोहरी भूमिका में भी अमिताभ सामान्य लगता है. कलाकारों की भीड़ फिल्म में जुटा दी गई है, जो बिना किसी उद्देश्य के दर्शकों को सिर्फ मनोरंजन देती है. नि.: मनमोहन देसाई, नु.पा.: अमिताभ, हेमा, उत्तम, शम्मी. म.

तुम्हारे बिना : तलाक के बाद पतिपत्नी के बीच पैदा हुए तनाव और उस से बच्चे पर पड़ने वाले प्रतिकूल असर की सहज फिल्म. नि.: सत्येन बोस, मु.पा.: सुरेश ओबराय, स्वरूप संपत. उ.

बेमिसाल : दो मित्र डाक्टरों की कहानी. डाक्टर प्रशांत चतुर्वेदी धन के लालच में गर्भपात और अवैध काम करने लगता है. डाक्टर सुधीर उसे अपने त्याग द्वारा सीधे रास्ते पर लाता है. नि.: ऋषिकेश मुखर्जी, मु.पा.: अमिताभ, राखी, विनोद मेहरा, अरुणा ईरानी, शीतल. म.

जीवनधारा : 'तपस्या' फिल्म की भांति संगीता नौकरी कर के अपने भाईबहनों का पालनपोषण करती है. परिवार के लिए एक युवती के त्याग की मार्मिक कहानी. नि.: त. रामाराव, मु.पा.: रेखा, अमोल पालेकर, सिंपल कापड़िया, मधु कपूर, राकेश रोशन, कंवलजीत. उ.

प्यारा दोस्त : खजाने की खोज की ऊलजलूल फिल्म. असली कहानी को पीछे हटा कर अमजद खान अपनी भूमिका को तूल देता चला जाता है. नि.: इम्तियाज खान, मु.पा.: नसीरुद्दीन, रंजीता, अमजद, इम्तियाज खान. अ.

राजपूत : मनु और जानकी प्रेम करते हैं, पर जानकी की शादी धीरेंद्र से हो जाती है. अंत में धीरेंद्र को बचाते हुए मनु का बलिदान हो जाता है. मनु के भाई भानु की प्रेमिका कमली को राजा साहब के आदमी उठा ले जाते हैं. अंत में भानु का विवाह राजा की लड़की कामिनी से होता है. पात्रों और घटनाओं से भरपूर रोचक फिल्म, नि.: विजय आनंद, मु.पा.: हेमा, धर्मेंद्र, राजेश खन्ना, विनोद खन्ना, रंजीता, टीना, रणजीत. म.

श्रीमान श्रीमती : एक ऐसे युगल की कहानी है जो फिल्म 'बावर्ची' की तरह दुखी परिवारों में जा कर उन की समस्याएं हल करते हैं. अति नाटकीय घटनाओं से युक्त मद्रासी फार्मूले की पारिवारिक फिल्म. नि.: विजया रेड्डी, मु.पा.: संजीव, राखी, राकेश रोशन, दीप्ति नवल, अमोल पालेकर, सारिका, श्रीराम लागू. स.

शमां : शमां एक स्त्री के जीवन के उतारचढ़ावों की कहानी है, जिस की शादी असलम से तय होती है, पर परिस्थितिवश असलम के बड़े भाई विधुर यूसफ से हो जाती है. इस के बाद देवर के जुल्मों और मां बेटे के प्यार की कहानी बन जाती है. नि.: नईम बसीत, मु. पा.: गिरीश करनाड, शबाना, कुलभूषण खरबंदा, अरुणा ईरानी. स.

जियो तो ऐसे जियो : भाइयों के कहने पर कुंदन गांव छोड़ जाता है और बंबई जा कर अपने परिश्रम व ईमानदारी से उन्नति के शिखर पर पहुंचता है. भाई बरबाद हो जाते हैं. करुण मिलन के साथ अंत. नि.: कनक मिश्र, मु.पा.: अरुण गोविल, देवश्री राय, जयश्री गडकर, विजय अरोड़ा, नीलम. स.

प्यारा तराना : मूल रूप से तमिल भाषा में बनी फिल्म का डब संस्करण, संगीतमय फिल्म में सब से ज्यादा कमजोर पक्ष संगीत का ही रहा है. निर्देशन व फिल्म का प्रस्तुतीकरण बेहद सामान्य. नि.: के. बालाचंदर, मु.पा.: कमल हासन, जयप्रदा. अ.

प्रेम रहस्य : एक किशोर व बड़ी उम्र की युवती के बीच शारीरिक आकर्षण की कहानी जो अश्लील दृश्यों की वजह से अपना उद्देश्य पूरा नहीं कर पाती. मूलतः यह फिल्म मलयालम भाषा में बनी थी. नि.: के. भारतन, मु.पा.: जया भारती, सोमन. अ.

अपना बना लो : एक बच्चे का पहले अपनी मां से अलग होना और फिर नाटकीय स्थितियों में उन दोनों का नहीं बल्कि नायकनायिका का भी मिलन. गीतसंगीत ठीकठाक. नि.: जे. ओमप्रकाश, मु.पा.: जीतेंद्र, रेखा. स.

उस्तादी उस्ताद से : 'मुकद्दर का सिकंदर' व 'हम किसी से कम नहीं' के प्रसंगों को ले कर बनी अस्वाभाविक फिल्म जिस में मारधाड़ की घटनाओं का जरूरत से ज्यादा इस्तेमाल किया गया है. नि.: दीपक लहरी. मु.पा.: मिथुन, रंजीता, विनोद. स.

ये नजदीकियां : विवाहित जीवन की महत्ता को स्थापित करने वाली इस फिल्म में नायक एक ही समय में अपनी पत्नी व प्रेमिका के साथ प्रेम करने की कोशिश करता है लेकिन सारा जीवन असंतुलित हो जाने की वजह से वह फिर अपने विवाहित जीवन में वापस लौट जाता है. नि.: विनोद पांडे, मु.पा.: मार्क जबेर, परवीन बाबी, शबाना आजमी. उ.

आमने सामने : दोहरी भूमिका पर बनी एक सामान्य स्टंट फिल्म, जिस में तेज गति के सिवाय और कुछ नहीं है. नि.: असीम सामंत, मु.पा.: मिथुन, विंदिया, आरती गुप्ता. अ.

रक्षा : आणविक प्रगति को रोकने के लिए खलनायक द्वारा किए गए षड्यंत्र को रोकने की कहानी इस फिल्म में है. फिल्म का कोई भी पक्ष स्वाभाविक नहीं है. नि.: रवी नगाइच, मु.पा.: जितेंद्र, परवीन, मौसमी, रंजीत, प्रेम चोपड़ा. अ.

नई इमारत : गांवों के नवनिर्माण पर बनी पुरानी शैली की प्रचार प्रधान फिल्म. नि.: राम पाहवा, मु.पा.: परीक्षित साहनी, सारिका, विद्या सिन्हा, रंजीता, मदन पुरी, चंद्र शेखर, हंगल, राकेश पांडे. अ.

श्रद्धांजलि : नायिका प्रधान फिल्म. श्रद्धा अपने पति व सास के हत्यारे से उस की हत्या कर के बदला लेती है. आम लीक से हट कर शुरू हुई फिल्म फार्मूलों के दलदल में समाप्त होती है. नि.: अनिल, मु.पा.: राखी, अरुण गोविल, सुरेश ओबराय, दीपक पाराशर, मधु कपूर, सोनिया साहनी. स.

कच्चे हीरे : एक अजनबी और पांच अपराधियों की कहानी जो लुक्का डाकू से मुकाबला करते हैं. पात्रों से भरपूर अपराध प्रधान फिल्म. नि.: नरेंद्र बेदी, मु.पा.: फिरोज खान, टीना, डैनी, देवकुमार, शक्ति कपूर, नरेंद्र नाथ, पेंटल. अ.

जोश : स्मगलरों के एक ऐसे बादशाह की कहानी जो भिखारियों से कर वसूल करता है. अकबर और बीरबल दो पत्रकार उस का भांडा फोड़ते हैं. नि.: राज न. सिप्पी, मु.पा.: अमजद, देवेन वर्मा, विद्या सिन्हा, राज किरण, सारिका. स.

जमाने को दिखाना है : प्रेम और अपराध कथाओं को मिला कर बनाई गई संगीत प्रधान फिल्म. गीत बहुरंगी भव्य सैटों पर फिल्माए गए हैं. नि.: नासिर हुसैन, मु.पा.: ऋषि कपूर, पद्मिनी कोल्हापुरे, श्रीराम लागू, अमजद, कादर खान, योगिता बाली. स.

गोपीचंद जासूस : प्राइवेट जासूस गोपीचंद और बेला मिल कर बचकाना और जोकरों जैसी हरकतों से बैंक से हीरे चुराने वाले गिरोह को पकड़ते हैं. हर दृष्टि से घटिया फिल्म. नि.: नरेशकुमार, मु.पा.: राज कपूर, जीनत अमान, प्रेम चोपड़ा, जौहर, सुजीतकुमार. अ.

रास्ते प्यार के : मद्रासी शैली की प्रेम के त्रिकोण की कहानी. गौरी और श्यामा दो सहेलियां मोहन से प्रेम करती हैं. दो सहेलियों में एक दूसरी के लिए प्रेम में त्याग की होड़ लग जाती है. नि.: व.व. राजेंद्रप्रसाद. मु.पा.: जितेंद्र, रेखा, शबाना, उत्पल दत्त, श्रीराम लागू, परीक्षित साहनी. स.

सत्ते पे सत्ता : अमरीकी फिल्म 'सेवन ब्राइड्स फार सेवन ब्रदर्स' की नकल पर बनी फिल्म जिस में सात जंगली भाई रोमांस के चक्कर में आ कर सुधर जाते हैं. हास्य की अधिकता लिए हुए एक स्टंट फिल्म. नि.: राज न. सिप्पी, मु.पा.: अमिताभ, हेमा, रंजीता, महमूद, अमजद. स.

इतनी सी बात: पत्नी को घर में रहना चाहिए... पतिपत्नी में परस्पर विश्वास व सहयोग की भा... कायम रहनी चाहिए—यही इस फिल्म का विषय... अगर फिल्म को सिर्फ हास्य प्रधान ही रखा जाता तो... काफी दिलचस्प बन सकती थी. नि. : मधुएम, मु.पा... संजीव, मौसमी, अरुण गोविल, तमन्ना. म.

कालिया : पैसा कमाने का तरीका स्मगलि... है—यह सीख देने वाली 'कालिया' में पिछले तीन... सालों में प्रदर्शित कई सफल फिल्मों की नकल है. फि... का संगीत व गति काफी तेज है. नि. : टीनू आनंद, मु.पा. अमिताभ, परवीन, आशा, अमजद. स.

कहानी एक चोर की : अच्छाई और बुराई... संघर्ष की पुरानी कहानी पुराने ही अंदाज में पेश की ... है. फिल्म अपराध के प्रति घृणा करने की बजाय अपराध... को ग्लैमराइज करती है. काफी समय में पूरी हो पाने की वजह से फिल्म के रंग कई जगह उड़े हुए हैं. नि.: ए... रामनाथन, मु.पा. : जितेंद्र, मौसमी, अ.

दिले नादान : दो दोस्तों की कहानी जो एक ही लड़की से प्यार करते हैं. हालात दोनों में मतभेद पैदा क... देते हैं. लेकिन अंत में सब कुछ ठीकठाक हो जाता है. फोटोग्राफी को छोड़ कर फिल्म में और कुछ भी नया नहीं है. नि. : श्रीधर, मु.पा. : राजेश, जयप्रदा, स.

दौलत: बिछुड़े भाइयों की अपने भाइयों को बरबा... करने वाले अपराधी से बदला लेने की जो कहानी ... बार दोहराई जा चुकी है वही कहानी 'दौलत' की भी ... फिल्म में तेज गति है और कुछ प्रसंग रोचक हैं. नि.: मोहन सहगल, मु.पा. : विनोद, जीनत, राज बब्बर, सारिका, अमजद. म.

उमराव ज़ान : वाजिदअलीशाह युग की एक नर्तकी—वेश्या की कहानी जो ऐतिहासिक तथ्यों पर आधारित है. फिल्म में उस काल का लखनऊ निर्देशक ने बड़ी सजीवता से फिल्मांकित किया है. अभिनय के लिहाज से रेखा की सर्वश्रेष्ठ फिल्म. नि. : मुजफ्फर अली, मु.पा. : रेखा, फारूख शेख, नसीरुद्दीन उ.

नागिन और सुहागन : बेतुकी मान्यताओं और घटिया अंधविश्वासों पर आधारित फिल्म में सिर्फ अविश्वसनीय चमत्कार है. पूरी फिल्म व्यक्ति को दकियानूसी व भाग्यवादी बनने पर ही जोर देती है. नि.: शांतिलाल सोनी, मु.पा. : विजय अरोड़ा, रीता. अ.

कोबरा : 'एंटर दि ड्रेगन' की नकल पर बनी फिल्म में जूडो, कराटे कम है बंबईया फिल्मों की मारधाड़ ज्यादा. न तो अभिनय में कोई कलाकार प्रभावित कर पाता है और न ही निर्देशक फिल्म के किसी हिस्से में जान डाल पाया है. नि. : बत्रा मोहिंदर, मु.पा. : अर्घ्येंदु बोस, नमिताचंद्र, अजीत, रंजीत. अ.

फिफ्टीफिफ्टी : अपराध और अपराधियों को ग्लैमराइज करने का प्रचलन हिंदी फिल्मों में बहुत चल पड़ा है. इस फिल्म के नायकनायिका चोरी करते हैं लेकिन अंत में उन्हें शरीफ बना दिया गया है. लेकिन यह परिवर्तन बेहद ड्रामाई लगता है. नि. : शोमू मुखर्जी. मु.पा. : राजेश खन्ना, टीना. स.

चंद्र बारोत

'डान' फिल्म के निर्देशक से बातचीत
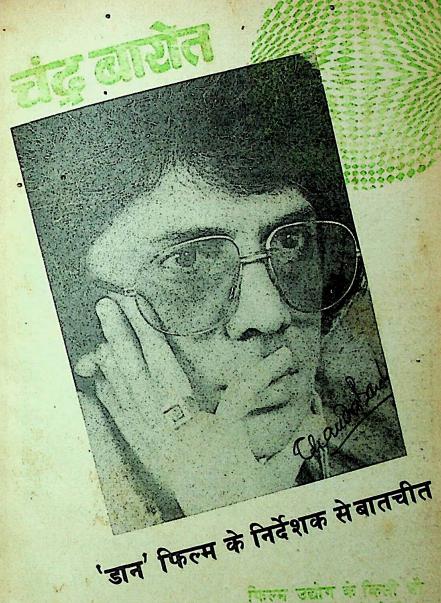
भेंटवार्ता • सतीशचंद्र धींगड़ा

फिल्म उद्योग के किसी भी क्षेत्र में पांव जमाने के लिए घोर संघर्ष करना पड़ता है, लेकिन एक युवा निर्देशक ने अपनी पहली ही फिल्म द्वारा कैसे अपनी धाक जमा ली?

फिल्मी दुनिया में चंद्र बारोत का नाम नया नहीं है. उन की प्रसिद्धि 'डान' फिल्म से हुई थी और लोग अभी तक इस फिल्म को भूले नहीं है. 30 वर्ष के इस

नौजवान ने मात्र एक फिल्म का निर्देशन कर के फिल्मी दुनिया के चहेते निदेशकों में जगह बना ली है.

इसी चंद्र बारोत से जब मेरी मुलाकात हुई तो मेरा पहला सवाल था : इतनी छोटी उम्र में इतनी सफलता कम लोगों को मिलती है. विशेष रूप से सुपर हिट फिल्म 'डान' के वाद आप की क्या स्थिति है?

उत्तर : 'डान' की सफलता के वाद मेरे पास 60 से भी अधिक फिल्मों के निर्देशन के प्रस्ताव आए, पर मैं ने अस्वीकार कर दिए, क्योंकि लेदे कर सब 'डान' जैसी फिल्म चाहते थे.

प्रश्न : फिल्में अस्वीकार करने से बाजार में आप की स्थिति पर असर नहीं पड़ा?

उत्तर : जी नहीं, मेरी रोजीरोटी का साधन फिल्में नहीं हैं. यह तो मेरा शौक है.

प्रश्न : इसे जरा विस्तार से समझाइए.

उत्तर : देखिए, फिल्मी दुनिया मेरे लिए नई नहीं है. मेरी वड़ी वहन कमल बारोत पार्श्व गायिका है, अत: फिल्मोद्योग के काफी लोग बहुत पहले से मुझे जानते हैं. यों मैं अफ्रीका में पैदा हुआ और वहीं पला हूं. वहां हमारा हीरेजवाहरात का काम है. इसलिए उल्टासीधा करने के लिए मेरे सामने आर्थिक मजबूरी नहीं है. मैं जब भी बंबई आता हूं बहन के यहां रुकता. इस से फिल्मों से संबंधित काफी लोगों से मुलाकात होती.

प्रश्न: आप ने निर्देशन का ही रास्ता क्यों चुना?

उत्तर : देखिए, हीरो तो मैं बन नहीं सकता था. खलनायक मैं बनना नहीं चाहता था. अतः निर्देशक ही बन गया.

अमिताभ के साथ कुछ आत्मीय क्षणों में निर्देशक चंद्र बारोत व अन्य सहयोगी.

प्रश्न : फिल्म निर्देशन एक तकनीकी विधा है. क्या आप ने किसी से निर्देशन सीखा?

उत्तर : जी हां, मैं नौ वर्ष तक मनोजकुमार का सहायक रहा हूं. वहां मैं ने कैमरा उठाने से ले कर क्लैप देने तक सब प्रकार का काम किया है. उन से मैं ने काफी कुछ सीखा है.

प्रश्न : फिर आप को निर्देशन का अवसर कैसे मिला?

उत्तर : मनोजजी ने ही निर्माता से मेरी सिफारिश की थी. उन्हें मेरी प्रतिभा पर विश्वास था. मुझे खुशी है कि मैं उन के विश्वास पर खरा उतरा.

इस पर मैं ने चुटकी ली, "हां, क्यों नहीं, वह देशभक्ति को व्यवसाय बनाए हुए हैं और आप ठहरे शुद्ध व्यवसायी." मेरी बात सुन कर वहां उपस्थिति सभी लोग हंस पड़े. प्रसिद्ध कहानी लेखक नारायण और प्रचारक अमरजीत वहीं बैठे थे. वे अपनी नई फिल्म के लिए चंद्र से अनुबंध करने आए थे. चंद्र का जवाब था, "मैं मूलत: व्यवसायी हूं. इस का कारण एक तो पैतृक व्यवसाय है और दूसरे मेरी पृष्ठभूमि है. अफ्रीका में मैं बर्कली बैंक में नौकरी करता था. बंबई आ गया तो फिल्मों से जुड़ गया और अब मेरा यही व्यवसाय बन गया है."

प्रश्न : आप की पहली फिल्म में काफी बड़े सितारे थे. क्या आप को उन से काम लेने में कोई दिक्कत पेश आई?

उत्तर : दरअसल मेरी पहली फिल्म के अधिकांश कलाकार मुझ से पहले ही से परिचित थे. जीनत, विनोद, अमिताभ आदि से मेरी मित्रता थी और ये सब पढ़ेलिखे, नौजवान और समझदार लोग हैं. ये लोग अपनी भूमिका और काम को अच्छी तरह समझते हैं.

प्रश्न: आप कभी उत्तर प्रदेश के पूर्वी भाग में नहीं गए, फिर भी 'डान' के सुपर हिट गाने 'खइके पान...' का विचार आप को कैसे आया और इस को फिल्माते समय माहौल को सही रूप देने का प्रयत्न कैसे किया गया?

उत्तर : इस गाने के बारे में किसी की अच्छी राय नहीं थी. एक बार तो यह तय हुआ कि इसे फिल्म से निकाल दिया जाए, पर गीतकार अनजान ने इसे रखने पर जोर दिया. हम तो किसी और ही गीत के हिट होने की आशा कर रहे थे.

प्रश्न : आजकल आप क्या कर रहे हैं?

उत्तर : आप देख ही रहे हैं, कहानी पर चर्चा चल रही है. फिल्म 'बास' की शूटिंग शुरू हो चुकी है, इस में दिलीपकुमार, विनोद खन्ना, जीनत आदि हैं. पूरी फिल्म अफ्रीका में ही फिल्माने का इरादा है. मेरी अगली फिल्म

अपनी सफल फिल्म 'डान' के सैट पर चंद्र बारोत अभिनेता प्राण को दृश्य समझाते हुए.

'मास्टर' है. उस में भी दिलीपकुमार को लिया गया है. यह भी जल्दी शुरू होगी.

प्रश्न : आप ने अभीअभी कहा कि दिलीपकुमार आप की दोनों फिल्मों में हैं. क्या आप को उन से काम लेने में कोई दिक्कत नहीं आ रही? मेरा मतलब उन के बड़प्पन, दखलअंदाजी आदि की प्रवृत्ति से है.

उत्तर : जी नहीं, यह सब गलत प्रचार है कि वह दखलअंदाजी करते हैं. जब मैं पैदा भी नहीं हुआ था, तब से वह फिल्मों में काम कर रहे हैं. इस के बावजूद जब वह कैमरे के सामने खड़े होते हैं तो वह कलाकार हैं और मैं निर्देशक. वह निर्देशक को पूरी इज्जत देते हैं. पर यदि वह कोई अच्छा सुझाव देते हैं तो उसे स्वीकार करने में क्या हर्ज है?

प्रश्न : आप की फिल्म 'डान' अंगरेजी नाम लिए हुए थी. 'मास्टर' और 'बास' भी अंगरेजी नाम लिए हुए है. क्या इस का कोई खास कारण है?

उत्तर : कोई खास कारण नहीं है. नाम छोटे और आकर्षक हैं, और कहानी से भी मेल खाते हैं, इसलिए रख लिए.

प्रश्न : क्या 'बास' की कहानी भी 'डान' जैसी है?

उत्तर : जी हां, थोड़ीबहुत तो वैसी ही है पर उसे प्रस्तुत करने का ढंग बिलकुल अलग है. कहानी तो मैं विस्तार से नहीं बता सकता क्योंकि इस बात का डर रहता है कि इस विषयवस्तु को ले कर कहीं दूसरा फिल्मकार न बना ले, पर इतना बता सकता हूं कि इस की कहानी मैं ने ही लिखी है.

इस पर मैं ने चुटकी ली, "तो आप कहानी लेखक भी हो गए?"

सुन कर वह मुसकरा दिए और बोले, "फिल्मों में निर्देशक को सब कुछ होना पड़ता है. यों इस के संवाद बाबूराम इशारा के हैं."

प्रश्न : इशारा के बारे में आप की क्या राय है? वह तो निर्देशक और संवाद लेखक दोनों हैं.

उत्तर : इशारा में आग है, सड़ीगली मान्यताओं के प्रति विद्रोह की भावना है. मुझे ऐसे ही लोग पसंद हैं. हम एकदूसरे को समझते हैं. मेरे और उन के विचारों में काफी साम्य है.

प्रश्न : 'बास' कब तक पूरी होगी?

उत्तर : बस इस साल के अंत तक प्रदर्शित करने का इरादा है.

प्रश्न : आप के प्रिय फिल्म निर्देशक कौन हैं?

उत्तर : मनोजकुमार और मनमोहन देसाई.

प्रश्न : क्या आप नए सिनेमा, कलात्मक सिनेमा के पक्षधर नहीं हैं?

उत्तर : क्या नया, क्या पुराना? सिनेमा का मूल उद्देश्य तो मनोरंजन करना है. अब यदि वह मनोरंजक होने के साथसाथ स्वच्छ और सोद्देश्य भी है तो दर्शक को पसंद आएगा और फिल्म हिट हो जाएगी और यदि ऐसा नहीं है तो फिल्म पिट जाएगी.

यह था चंद्र बारोत का फिल्मी दर्शन जो फिल्मों के बारे में इस नए निर्देशक के दृष्टिकोण को उजागर करता है.

मुक्ता के स्तंभों के बारे में सूचना

मुक्ता में प्रकाशित होने वाले विविध स्तंभों के लिए चुटकले, अपने रोचक अनुभव, संस्मरण व अन्य सामग्री भेजते समय स्पष्ट अथवा सुपाठ्य शब्दों में अपना नाम, पता और भेजने की तारीख अवश्य लिखें. साथ ही यह भी लिख कर भेजें कि रचना मौलिक एवं अप्रकाशित है. भेजी गई सामग्री किसी भी हालत में लौटाई नहीं जाएगी. अतः बजाए टिकट लगा व पता लिखा लिफाफा भेजने के उस की एक प्रति अपने पास सुरक्षित रख लें. जहां तक संभव हो, सामग्री टाइप करवा कर अथवा साफ शब्दों में कागज के एक ओर हाशिया छोड़ कर लिख कर भेजें. हर तरह की सामग्री कम से कम शब्दों में और रोचकतापूर्ण होनी चाहिए.

सोलह आने सच

कहानी • डा. सत्यकुमार

बोर्ड की परीक्षा चल रही थी. एक कमरे में तीन विद्यार्थी नकल कर रहे थे. निरीक्षक का कार्य कर रहे नए अध्यापक ने रिपोर्ट कर दी.

परीक्षा के बाद साथी अध्यापकों ने उस से कहा, "तुम ने यह क्या गजब कर दिया? भिड़ के छत्ते में हाथ डाल दिया. वे विद्यार्थी तो दादा हैं."

वह अध्यापक बोला, "मैं ने कोई गलत काम नहीं किया है, मैं ने तो उलटे कर्तव्य का पालन किया है. हां, रिपोर्ट न करना अवश्य गलत काम होता."

साथियों ने छींटाकशी की, "नयानया आया है, अभी आटेदाल का भाव मालूम नहीं. बड़े सूरमा बनते हैं, सही गलत सब धरा रह जाएगा."

कुछ ने सलाह दी, "रात को अकेले मत निकलना. कोई मिलने आए या द्वार पीटे तो बिना नामपता पूछे किवाड़ मत खोलना."

उस अध्यापक ने सोचा 'जो होगा, देखा जाएगा.' नयानया लगा था, परिश्रम से पढ़ाता था तथा अपने काम से काम रखता था.

अगली सुबह जब वह स्कूल पहुंचा तो

सभी अध्यापक यही समझ रहे थे कि नकल न करने देने वाले अध्यापक की छात्रों ने जम कर पिटाई की होगी. फिर भी वास्तविकता जान कर सब को हैरानी क्यों हुई?

अन्य अध्यापक उसे विस्मय से देखने लगे.

एक ने कहा, "कहो, भई, कुशल तो है?"

दूसरा बोला, "ज्यादा चोट तो नहीं आई?"

तीसरे ने पूछा, "पुलिस में तो रिपोर्ट दर्ज नहीं कराई?"

वह अध्यापक विस्मित हो कर उन की ओर देखने लगा. स्पष्टीकरण करते हुए एक साथी ने उसे बताया, "भई, यहां तो यह अफवाह थी कि तुम्हारी रात को बड़ी पिटाई हुई."

तभी दादा किस्म के उन लड़कों में से एक परीक्षा देने के लिए आता दिखाई दिया. उस नए अध्यापक ने आगे बढ़ कर उस की बुशर्ट का कालर पकड़ लिया और झकझोर कर पूछा, "क्यों रे, क्या बी... की उड़ा रखी है? किस ने मेरी पिटाई की?"

विद्यार्थी घबरा गया. आज तक कि... अध्यापक ने इतना साहस नहीं किया था... सकपका कर बोला, "आप पर भला कौ... हाथ उठा सकता है? वह तो इतिहास वाले... पिटाई हुई है. उन्होंने नकल कराने के... रुपए लिए थे. रात को मिले तो बोले, 'मैंने... नए अध्यापक की ड्यूटी यह सोच क... लगवाई थी कि वह स्वयं नकल कर के... हुआ होगा. तुम्हें क्यों रोकेगा? पर वह... अफलातून निकला.' जब उन से रुपए लौटा... को कहा तो बोले कि वह तो लाल परी की भें... हो गए. क्या करते? हाथपैर तोड़ आए. अ... वह हस्पताल में पड़े हैं."

"1857 की क्रांति के असफल होने का प्रमुख कारण यह था कि उस क्रांति में दिलीपकुमार, मनोजकुमार, शशि कपूर और शत्रुघ्न सिन्हा की तरह चिल्लाने और गानेबजाने वाले क्रांतिकारी नहीं थे."

कमर्शियल आर्टिस्ट

लेख • स. कि.

कला के प्रति रुझान रखने वाली और अत्यधिक कल्पनाशील महिलाएं इस व्यवसाय को अपना कर अच्छी आय प्राप्त कर सकती हैं...
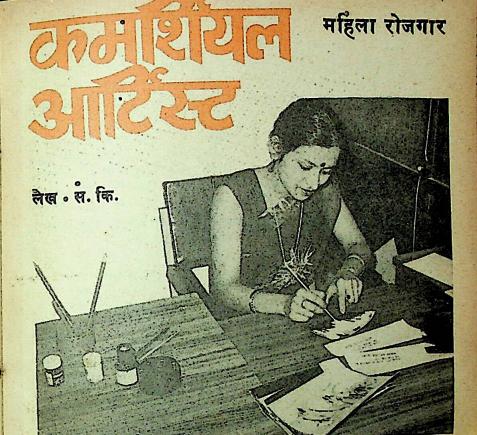
पहले कला का संबंध केवल मन की संतुष्टि से हुआ करता था, पर अब कला आहिस्ताआहिस्ता व्यावसायिकता से जुड़ने लगी है. वैसे तो कमर्शियल आर्टिस्ट का अर्थ व्यावसायिक कलाकार ही है, पर यह शब्द हर किस्म के कलाकार के लिए प्रयुक्त नहीं होता. यह एक खास व्यवसाय के लिए रूढ़ हो गया है.

कमर्शियल आर्टिस्ट उस व्यावसायिक कलाकार को कह सकते हैं, जो किसी व्यावसायिक संस्थान के लिए उस की साख व उत्पादन बढ़ाने के लिए कलात्मक डिजायन, रेखाचित्र, ले आउट आदि तैयार करता है. कमर्शियल आर्टिस्ट का काम कलात्मक दृष्टि से उतना नहीं देखा जाता, जितना व्यावसायिक दृष्टि से.

कार्य

आज के व्यावसायिक व औद्योगिक युग में कमर्शियल आर्टिस्ट का कार्यक्षेत्र बहुत व्यापक हो गया है. वह किताबों, पत्रिकाओं, कैलेंडरों, बधाई के कार्डों, सिनेमा स्लाइडों तथा कई प्रकार की प्रचार व विज्ञापन सामग्री के लिए डिजायन व

रूपरेखा तैयार करता है. डिजायन के अनुसार रेखाचित्र बनाता है, छायाचित्रों का संयोजन करता है, रंगों के बारे में योजना (कलर स्कीम) बनाता है और आकर्षक ढंग से लेटरिंग (हाथ से अक्षरों की लिखावट) करता है. विभिन्न प्रदर्शनियों और सभाओं में प्रदर्शन के लिए चार्ट, डायग्राम व नक्शे भी कमर्शियल आर्टिस्ट ही बनाता है. कारखानों में बनने वाली चीजों की पैकिंग को आकर्षक बनाने का काम भी कमर्शियल आर्टिस्ट ही करते हैं.

कमर्शियल आर्टिस्ट के लिए काम की संभावनाएं काफी विस्तृत हैं. वह चाहे तो निजी तौर पर अपना स्टूडियो खोल कर विभिन्न संस्थानों के लिए कार्य कर सकता है या किसी विज्ञापन एजेंसी, प्रकाशन संस्थान अथवा सरकारी कार्यालयों में नियमित रूप से नौकरी कर सकता है.

कमर्शियल आर्टिस्ट को असाधारण कल्पना शक्ति और व्यापक सामान्य ज्ञान का धनी होना जरूरी है. उसे समयसमय पर विभिन्न एनसाइक्लोपीडिया और तकनीकी साहित्य का अध्ययन करते रहना चाहिए. जिस विषय पर वह कार्य करने वाला है, उस से संबंधित पुस्तकें पढ़ना उस के लिए लाभदायक रहता है. यदि आप का कलात्मक रुझान तो अच्छा है पर आप में सामान्य ज्ञान की कमी है तो आप अपने व्यवसाय में ज्यादा सफलता प्राप्त नहीं कर सकतीं.

योग्यता

आजकल कई कमर्शियल आर्टिस्ट विषय से संबंधित कोई डिगरी न होते हुए और मामूली शैक्षणिक योग्यता होते हुए भी विभिन्न संस्थानों में काम कर रहे हैं. इन आर्टिस्टों ने पहले से प्रतिष्ठित आर्टिस्टों का सहायक बन कर काम सीखा होता है. आप की प्रवृत्ति भी यदि कलात्मक है तो किसी अच्छे आर्टिस्ट के साथ रह कर काम सीख सकती हैं. पर इस किस्म के आर्टिस्टों को एक सीमित दायरे में ही मान्यता प्राप्त होती है. अधिकांश और लगभग सभी नियमित सेवाओं में यह देखा जाता है कि आप ने 'कमर्शियल आर्ट' में प्रमाणपत्र या डिप्लोमा लिया है या नहीं.

यदि आप मैट्रिक या इस के समकक्ष परीक्षा पास हैं और कलात्मक अभिरुचि रखती हैं तो कमर्शियल आर्ट के विभिन्न पाठ्यक्रमों में प्रवेश ले सकती हैं. इस के प्रमुख पाठ्यक्रम हैं—एक वर्षीय प्रमाणपत्र पाठ्यक्रम, तीन वर्षीय पूर्णकालिक या पांच वर्षीय अंशकालिक डिप्लोमा पाठ्यक्रम, पांच वर्षीय पूर्णकालिक या सात वर्षीय अंशकालिक डिगरी पाठ्यक्रम.

कुछ विश्वविद्यालयों—जैसे महाराजा सियाजीराव विश्वविद्यालय, वडोदरा—में स्नातकोत्तर और 'पोस्ट डिप्लोमा' पाठ्यक्रम भी कराए जाते हैं.

विशेषज्ञता

अधिकांश कमर्शियल आर्टिस्ट सभी प्रकार के काम में महारत हासिल करने की कोशिश करते हैं. पर कुछ आर्टिस्ट एक विशेष क्षेत्र को चुन कर उसी के विशेषज्ञ बन जाते हैं और उसी क्षेत्र में अपनी प्रतिभा का विकास करते जाते हैं. जैसे कोई इलस्ट्रेशन (रेखाचित्र) का विशेषज्ञ हो जाता है, कोई लेटरिंग (अक्षर लेखन) का तो कोई 'ट्रेड मार्क्स' व 'पैकेज लेबल' तैयार करने में माहिर बन जाता है. कोई सिर्फ व्यंग्य चित्रकार (कार्टूनिस्ट) बन जाता है तो किसी को रंग संयोजन व 'पेंटिंग' में निपुणता प्राप्त होती है.

ऐसी संस्थाओं और कार्यालयों की संख्या काफी अधिक है जहां कमर्शियल आर्टिस्ट के लिए काम की संभावनाएं हैं. विज्ञापन एजेंसियां, कमर्शियल आर्ट स्टूडियो, मुद्रण व प्रकाशन संस्थान, टेलीविजन व फिल्म स्टूडियो, निजी व सरकारी क्षेत्र के विभिन्न व्यापार संस्थानों के विज्ञापन व प्रचार विभाग तथा और भी कई स्थानों पर कमर्शियल आर्टिस्टों की आवश्यकता

होती हैं. इन के अतिरिक्त 'कर्मशियल आर्ट' का पाठ्यक्रम करने वाली लड़कियां 'अध्यापन' के क्षेत्र में भी जा सकती हैं.

सरकारी क्षेत्र में कर्मशियल आर्टिस्ट का वेतनमान सामान्यतः 200 से 500 रुपए होता है. निजी संस्थान अपनी क्षमता व नियमों के अनुसार वेतन देते हैं. एक औसत दरजे का निजी संस्थान 400 से 1,000 रुपए तक का वेतन दे सकता है.

दिल्ली के एक प्रतिष्ठित प्रकाशन संस्थान में विगत तीन वर्षों से कार्य करने वाली एक कर्मशियल आर्टिस्ट ने बताया, "मैं बेहद कल्पनाशील लड़की थी. कल्पनाएं मुझ पर इस कदर हावी रहती थीं कि यदि मैं ने चित्रकला और कर्मशियल आर्ट का क्षेत्र न चुना होता तो शायद पागल हो जाती. इस व्यवसाय में आदमी की कल्पनाशीलता को सृजनात्मक रूप मिलता है, उस के अंदर की अमूर्त कल्पना मूर्त हो उठती है. इस से कलात्मक अभिरुचि वाला व्यक्ति न केवल द्वंद्व की कशमकश से मुक्ति पा लेता है, बल्कि उस के सामने आजीविका का रास्ता भी खुल जाता है." ●

भविष्य के राजा पर चोट : कलाकार कैरोल पेन ने भविष्य में इंगलैंड के राजा बनने वाले प्रिंस चार्ल्स को सेक्स प्रतीक के रूप में इस्तेमाल कर कुछ पेंटिंग बनाई हैं. प्लाइमाउथ में लगाई गई प्रदर्शनी में नग्न प्रिंस चार्ल्स की पेंटिंग लगाई गई है.
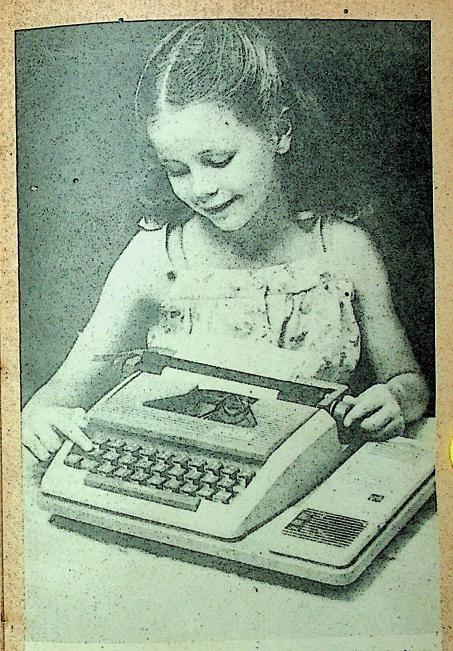
बोलने वाला टाइपराइटर : अब टाइपराइटर भी बोलने लगे हैं. इंगलैंड में बना कंप्यूटर द्वारा संचालित यह टाइपराइटर बच्चों को शब्दों की सही स्पेलिंग व उन शब्दों को ठीक ढंग से टाइप करने में मदद करता है. जहां जरा सी गलती हुई कि टाइपराइटर के साथ लगा बक्सा बोल कर गलती सुधार देता है.
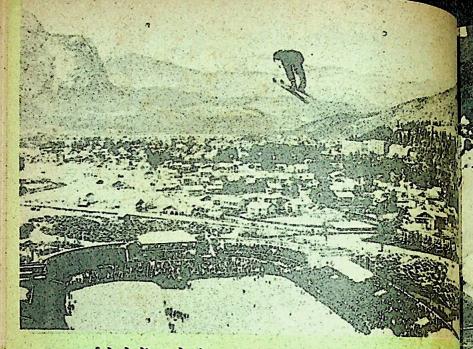
बर्फ के खेलों का रोमांच : स्की जंप के मुकाबले में न सिर्फ हिम्मत की बल्कि बेहद आत्मविश्वास की भी जरूरत होती है. यही कमाल दिखा कर बावेरिया के 17 वर्षीय आद्रिआज वेडर ने दर्शकों को मंत्रमुग्ध कर दिया.

परनिंदा का आनंद : इंगलैंड में आजकल दूसरों के फोन टेप कर उन्हें सुनने का विचित्र फैशन शुरू हो गया है. इस के लिए जिस विशेष उपकरण की जरूरत होती है, उस की कीमत सिर्फ 25 पौंड है.
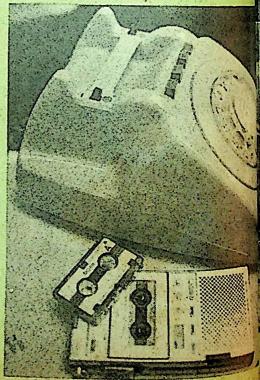
शौक के लिए: 30 वर्षीय डाक्टर मैक्स डलरिख वुश व 29 वर्षीया खेल प्राध्यापिका रीनेट हिलगर्ट को वाल रूम नृत्य का शौक क्या पैदा हुआ कि दोनों मिल कर 12 राष्ट्रीय व कई यूरोपियन पुरस्कार जीत चुके हैं. तीन वार जीतने की वजह से विश्व कप पर तो उन का स्थायी अधिकार हो ही चुका है.

एक खेल कठपुतलियों का: लोक कला की प्रतीक कठपुतलियां अब ज्यादा आधुनिक व परिस्कृत रूप में मनोरंजन के माध्यम के तौर पर इस्तेमाल की जा रही हैं. कोलोन (पश्चिमी जरमनी) में 1802 में वना कठपुतली थियेटर आज भी अपनी लोकप्रियता बरकरार रखे हुए है.

वक्त साथ दे गया : व्यापार में निराश हो अपनी पत्नी को कुछ भी बताए बिना कीथ व्हाइट घर से भाग गया. दस दिन बाद उसे जुए में एक लाख 95 हजार पौंड व 12 हजार पौंड की विश्व यात्रा का जैकपाट मिला. लेकिन अब बजाए घर वापस लौटने के वह लगातार जुआ खेल रहा है जिस में हजारों पौंड वह गंवा भी चुका है.

कार्योन्माद का इलाज क्या है?

अपने काम में डूब कर अधिकारी तनाव और दबाव से बचना चाहते हैं, पर क्या इस तरह छुटकारा पाया जा सकता है? इस बारे में पढ़िए प्रमुख मनःचिकित्सक डाक्टर दत्ता रे के विचार...

भेंटवार्ता • प्रतिनिधि

डाक्टर स. दत्ता रे से उन के नई दिल्ली स्थित निदान गृह (क्लीनिक) में भेंट की. मृदुभाषी होने के नाते वह तुरंत ही आप का विश्वास जीत लेंगे और यह एक मनःचिकित्सक का सब से बड़ा गुण है.

डाक्टर रे ने अधिकारियों के मानसिक और शारीरिक स्वास्थ्य की जांच की आवश्यकता पर जोर देते हुए बताया कि कंपनी के कामकाज से उपजे तनावों और दबावों के कारण होने वाली बीमारियों का मुकाबला करने के लिए ऐसा करना जरूरी है.

प्रश्न : हाल ही में यह सुनने में आया है कि अधिकारी अब 'कार्योन्माद' के शिकार हो रहे हैं. क्या आप इस का अर्थ और कारण बता

सकते हैं?

उत्तर : हां, ऐसे मामलों में वृद्धि हुई है. आम आदमी की भाषा में कहा जाए तो मैं कहूंगा कि जिस प्रकार कोई व्यक्ति तनाव और चिंता से छुटकारा पाने के लिए शराब, नशीली दवाओं या नींद लाने वाली अन्य दवाओं का आदी हो जाता है, उसी प्रकार कार्योन्माद से पीड़ित अधिकारी जब अपने काम में डूबा हुआ नहीं होता तो वह उसी तरह बेचैनी महसूस करता है जैसे कोई शराबी शराब न मिलने पर करता है.

महत्वाकांक्षी अधिकारी ज्यादा परेशान

आम तौर पर यह बात अत्यधिक महत्वाकांक्षी अधिकारियों में देखने को मिलती है जो अपनी छवि बना कर अपनी योग्यता सिद्ध करना चाहते हैं. लेकिन विडंबना यह है कि वे दूसरों से ज्यादा अपने को ही विश्वास दिलाने के लिए ऐसा करते हैं.

वास्तव में यह एक दुश्चक्र है— मनोवैज्ञानिक रूप से आप जितने ही छोटे आदमी होंगे, उतनी ही अपनी छवि बनाने की कोशिश करेंगे ताकि आप अपने आप को यह विश्वास दिला सकें कि आप जो सोचते हैं वह नहीं हैं. और इसे प्राप्त करने की कोशिश में आप 'कार्योन्मादी' बन जाते हैं.

प्रश्न : 'कार्योन्मादी' बनने के क्याक्या खतरे हैं, क्योंकि शराब और मादक दवाओं की तरह इस का असर शरीर के विभिन्न अंगों के कार्यों पर सीधा नहीं पड़ता?

उत्तर : हर समय काम करते रहने का आदी हो जाना (इस से मेरा मतलब यह कतई नहीं है कि कोई कर्तव्य की भावना से अपनी जायज जिम्मेदारियों को भी न निभाए) दीर्घकाल में लाभदायक नहीं होता और हानि पहुंचाता है.

बड़े व्यापारिक घराने और कंपनियां केवल उत्पादन और बिक्री के समयबद्ध और चहुमुखी बढ़ते हुए लक्ष्यों के रूप में सोचती हैं. वे अपने अधिकारियों से बहुत काम करवाते हैं और इस प्रक्रिया में वे मानवीय बातों को भी भूल जाते हैं तथा अपने अधिकारियों को मशीन और मशीनी मानव बना देते हैं. परिणाम प्राप्त करने के लिए यही एकमात्र चीज है, जिस में मालिकों की रुचि होती है. अधिकारी को अपने अंत:करण की आवाज के खिलाफ घूस आदि देने के तरीके भी अपनाने पड़ सकते हैं, जिस के कारण उस में तनाव पैदा हो जाता है तथा मनोवैज्ञानिक तनाव और दबाव निरंतर बढ़ता रहता है. आगे चल कर ये उसी तरह की शारीरिक बीमारियों के रूप में प्रकट होती हैं, जिस तरह ये बीमारियां शराब और नशीली दवाओं के प्रयोग करने वालों को होती हैं.

प्रश्न : कंपनी में और उस के बाहर अधिकारियों में मानसिक तनाव और दबाव बढ़ाने के लिए कौन सी बातें जिम्मेदार हैं?

उत्तर : आज का समाज जबरदस्त प्रतिस्पर्धा और आय की असमानता से भरा हुआ है, जिस से असुरक्षा की भावना महसूस होती है और मान्य सामाजिक व नैतिक आदर्शों में गिरावट आती है. रोजगार के अन्य अवसर न होने के कारण यह स्थिति और खराब हो गई है. यह स्थिति अधिकारियों में केवल तनाव बढ़ाती है. अधिकारियों को जो प्रोत्साहन दिया जाता है वह भी पैसे के रूप में होता है, जिस से स्थिति और खराब हो जाती है. इसे मापदंड मान कर हर अधिकारी अधिक से अधिक पैसा कमाने की कोशिश करता है और सामान्य आदमी के रूप में संपूर्ण विकास की आवश्यकताओं से वह पूरी तरह बेखबर हो जाता है.

मनोवैज्ञानिक बातों की उपेक्षा

जहां तक कंपनी के वातावरण की बात है, काम का बंटवारा ठीक से नहीं होता और कुछ महत्वाकांक्षी अधिकारियों को निरंतर दबाव में काम करना पड़ता है. इस प्रक्रिया में वे अच्छे सक्षम अधिकारी तो बन जाते हैं लेकिन भावनात्मक संवेदनशीलता के कारण सामाजिक प्राणी के रूप में वे बहुत असफल होते हैं.

आजकल कोई भी अधिकारी तकनीकी और व्यावसायिक कुशलता प्राप्त कर के

व्यक्तित्व में भावनात्मक विकास की खाई को पाटने के लिए समय से भी तेज भागता है, जिस का परिणाम न केवल उस के लिए, बल्कि उस के परिवार, मित्रों और अन्य हितैषियों के लिए भी खतरनाक होता है.

इस का हमारी शिक्षा पद्धति से बहुत गहरा संबंध है, जो व्यावसायिक और तकनीकी कुशलता पर तो अधिक बल देती है पर मनोवैज्ञानिक रूप से स्वस्थ मानव विकास के लिए आवश्यक अन्य बातों को नजरअंदाज कर देती है.

शुरू से ही नए उम्मीदवार का दृष्टिकोण आर्थिक जरूरतों के कारण इतना बंध जाता है कि वह सफलता प्राप्त करने और अधिक पैसा और नाम कमाने में अपनी सारी शक्ति लगा देता है. मानव के रूप में उस का भावनात्मक विकास रुक जाता है, जिस का दीर्घकालीन प्रभाव उस के जीवन में कटुता और अशांति के रूप में पड़ता है.

प्रश्न : इस तनाव भरे वातावरण का अधिकारियों के स्वास्थ्य पर बुरा असर न पड़े, इस के लिए क्या उपाय किए जा सकते हैं?

उत्तर : मैं मानता हूं कि व्यापारिक घरानों का यह दायित्व है कि अपने अधिकारियों की समयसमय पर शारीरिक और मनोवैज्ञानिक रूप से जांच करवाएं. समयसमय पर किए गए इस परीक्षण से यह पता चलता रहेगा कि अधिकारी पर काम का कितना दबाव पड़ता है.

प्रमुख मनःचिकित्सक डाक्टर रे : कसरत व योगाभ्यास तथा व्यवसाय से पृथक कुछ रचनात्मक कार्य कर के मानसिक तनाव से बचा जा सकता है.
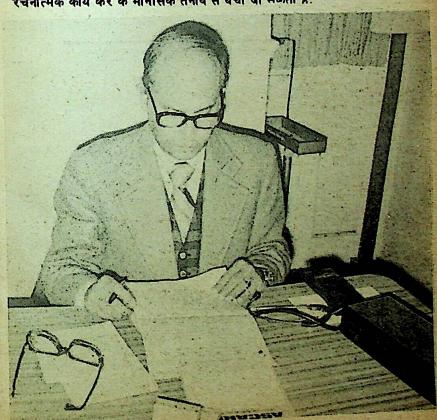
आवश्यकतानुसार अधिकारी को आराम, शारीरिक कसरत, दिनचर्या में परिवर्तन आदि के लाभों के बारे में समय रहते बताया जा सकता है, जिस से अनजाने में तनाव इस स्तर तक न बढ़ जाए कि उस के भयंकर परिणाम हो जाएं.

आंतरिक तनावों और दबावों से स्वास्थ्य पर जो बुरा असर पड़ता है उस से अधिकारी के स्वास्थ्य को बनाने के लिए इन लक्षणों का शुरू में ही पता लगाना बहुत जरूरी है.

प्रश्न : कौनकौन सी मन:शारीरिक बीमारियां हैं जिस से अधिकारी के स्वास्थ्य पर बुरा प्रभाव पड़ता है?

उत्तर : भावनाओं का प्रभाव हमारी मनोवैज्ञानिक प्रणाली दिल, फेफड़े, गुर्दा, जिगर, पेट, आंत, यौनांगों आदि पर पड़ता है. यह एक अचेतन प्रक्रिया है जिस से सामान्य बचाव क्रिया पूरी तरह से संतुलन बनाए रखने में सक्षम होती है. लेकिन अगर तनाव जारी रहते हैं और उन के निकलने का कोई रास्ता नहीं होता तो बचाव क्रिया असफल हो जाती है और उन में परिवर्तन नजर आने लगता है. इन्हें मन:शारीरिक असंतुलन कहा जाता है. एक सीमा के बाद ये परिवर्तन स्पष्ट रूप से दिखाई देने लगते हैं.

शारीरिक बीमारी टल सकती है

ये मन:शारीरिक बीमारियां समयसमय पर परीक्षण करने से भी पता चल सकती हैं. इस से इन बीमारियों से प्रभावी ढंग से बचा जा सकता है और एक स्वस्थ अधिकारी हमेशा कंपनी को अपनी क्षमता के रूप में लाभ पहुंचाता है.

प्रश्न : अपने ऊपर तनावों और दबावों के दुष्प्रभावों का कोई कैसे पता लगा सकता है?

उत्तर : व्यक्तिगत तौर पर ही इस का अच्छी तरह पता लग सकता है, लेकिन स्वास्थ्य के लिए खतरे के संकेत के रूप में लक्षण ये होते हैं— अनिद्रा, अपच, चिड़चिड़ापन और अलगअलग रहने की प्रवृत्ति, लोगों से मिलनेजुलने की इच्छा न होना और चिंता तथा उदासी के दौर. ये प्राथमिक लक्षण हैं, जिन्हें अधिकारी को गंभीरता से लेना चाहिए और डाक्टर से उचित सलाह ले कर आवश्यक कदम उठाने चाहिए.

सब से अच्छा तरीका

सब से अच्छी बात तो यह होगी कि जब किसी अधिकारी को लगे कि वह अपनी मानसिक शांति खो रहा है और दूसरे लोगों के संग रहने पर उसे खुशी नहीं होती तो उसे समझ लेना चाहिए कि वह कामकाज के कारण तनावों और दबावों का शिकार हो गया है. उसे तुरंत सुधारात्मक कदम उठाने चाहिए.

प्रश्न : क्या आप यह बता सकते हैं कि नौकरी से असंतोष, काम की कद्र न किया जाना या परिवार से कटे रहना आदि अधिकारी के जीवन में दबाव का मुख्य कारण होते हैं?

उत्तर : इन बातों से इस में योगदान मिल सकता है, लेकिन यह कहना कठिन है कि किसी मामले में कौन सी चीज ज्यादा नुकसानदेह है, क्योंकि दबावपूर्ण परिस्थितियों में दो व्यक्तियों में एक निश्चित प्रतिक्रिया नहीं होगी.

इस मामले में व्यक्ति की मनोवैज्ञानिक पृष्ठभूमि पर बहुत कुछ निर्भर करता है और विस्तृत जांच किए बिना किसी भी कारण को दबाव का मुख्य आधार नहीं कहा जा सकता.

प्रश्न : क्या आप इस बात से सहमत हैं कि कार्यालय संबंधी कर्तव्यों के प्रति प्रतिबद्धता की वजह से परिवार से कटे रहने के कारण अधिकारी के जीवन में बहुत तनाव पैदा होता है? फिर इस से छुटकारा कैसे पाया जा सकता है?

उत्तर : इस तरह की चीजों पर भी निरंतर नजर रखनी चाहिए. मैं इस बारे में केवल इतना कह सकता हूं कि कुछ मामलों में कसरत और योगिक क्रियाओं से लाभ हुआ है. अपने व्यवसाय से बाहर कुछ रचनात्मक कार्य करने से भी इस से बचा जा सकता है.

इस स्तंभ के लिए समाचारपत्रों की कटिंग भेजिए. कटिंग के नीचे अपना नाम व पूरा पता अवश्य लिखें. सर्वोत्तम कटिंग पर 15 रुपए की पुस्तकें पुरस्कार में दी जाएंगी.

भेजने का पता: सावधान, मुक्ता, रानी झांसी मार्ग, नई दिल्ली-110055.

* चला कर देखने के बहाने कार उड़ा ले गए

लुधियाना के निकटवर्ती गांव कंगनवाली के समीप तीन व्यक्ति एक फिएट कार उड़ा कर ले गए.

बताया जाता है कि इन तीनों लुटेरों ने कार के मालिक से कार का सौदा करने के लिए कहा था और कार को चला कर देखने के लिए वे कार में सवार हो गए. बस, एक बार कार चली तो न तो वे वापस लौट कर आए और न ही कार का कुछ पता चला.

—पंजाब केसरी, जालंधर (प्रेषक : कैलाश गर्ग) **(सर्वोत्तम)**

*

नीमहकीम ने 20 लोगों को अंधा किया

हजारीबाग के निकटवर्ती गांव झुमरा के 20 व्यक्तियों को एक नीमहकीम द्वारा अंधा बना दिया गया.

उपर्युक्त कथित नीमहकीम झुमरा गांव में पहुंचा और स्वयं को पटना का प्रसिद्ध नेत्र चिकित्सक बता कर उस ने लोगों की आंखों की शल्यक्रिया कर दी और रुपए ले कर चलता बना. इस प्रकार 20 लोगों ने रुपए के साथसाथ अपनी आंखें भी खोईं.

—आज, पटना (प्रेषक : बीरबल)

*

आबकारी कर्मचारी बता कर कई घर लूटे

अजमेर के आदर्श नगर की एक मुर्गीपालन फार्म के पास स्थित रेलवे कर्मचारियों के कई मकानों में एक रात कुछ व्यक्तियों ने स्वयं को आबकारी विभाग के कर्मचारी बता कर लूटमार की.

पुलिस सूत्रों के अनुसार कुछ व्यक्तियों ने रात डेढ़ बजे सोहनलाल नाम के एक रेल कर्मचारी के घर का दरवाजा यह कह कर खुलवा लिया कि वे आबकारी विभाग से आए हैं और उन्हें घर में शराब रखी होने की सूचना मिली है.

सोहनलाल द्वारा दरवाजा खोले जाने पर, तलाशी लेने के बहाने एक बक्सा उठा कर वे बाहर ले आए और उस में पड़े लगभग 250 रुपए निकाल लिए.

इस के बाद वे नूरा नाम के व्यक्ति के घर में जा घुसे और उस की पत्नी से उन्होंने जेवर उतरवा लिए. इसी प्रकार वे दो अन्य मकानों में भी गए. एक मकान से उन्होंने दो घड़ियां व दूसरे मकान से गले की हंसली छीन ली.

इस से पहले कि महल्ले वाले उन्हें पकड़ें, वे भागने में सफल हो गए.

—आधुनिक राजस्थान, अजमेर (प्रेषक : रश्मि गुप्ता) ●

हिंदी में रोज हजारों पाकेट बुक्स प्रकाशित होती हैं, उन सबसे अलग हैं-

विश्व सुलभ साहित्य

धुएं के बीच
चीनी शासकों द्वारा संपत्ति हड़प लिए जाने के भय से ल हांग भारत चला आया. मगर चीनियों ने उसे यहां भी आ दबोचा. तभी भारतीय छापामार दल ने उस की रक्षा की...एक निरीह नागरिक के विरुद्ध चीनी शासकों की निर्ममतापूर्ण कहानी.

मौत के आंसू
राजन मृदुला के साथ रंगरलियां मनाने अलकापुरी पहुंचा मगर वहां उस की मुलाकात मृदुला की बजाए उस की लाश से हुई. हालात राजन को ही हत्यारा साबित करते थे मगर हत्यारा कौन था?

कलंक रेखा
पतिपत्नी की मुसकराती जिंदगी में लीला ने अविश्वास की दलदल पैदा कर दी और राजेश रानी से नफरत करने लगा. क्या सचमुच ही रानी के डा० घोष के साथ अनैतिक संबन्ध थे? या राजेश ही लीला के गदराए जिस्म का प्यासा हो गया था?

हंसने की बारी
रंगीन चुटकुलों का एक अभूतपूर्व संकलन जिसे पढ़ कर आप हंसतेहंसते लोटपोट हो जाएंगे जिसे आप बारबार पढ़ना चाहेंगे.

प्रतिशोध
एक जरमन सैनिक की सच्ची कहानी जिस ने अपनी सेना के विरुद्ध जिहाद कर दिया.

आंख मिचौनी
एक ही स्थिति से जूझते विभिन्न लोग...निर्लिप्त से मम्मीपापा, जीवन से कटीकटी रीता भाभी, जिंदगी की घनीभूत पीड़ा की शिकार पल्लवीजी, जीने की अदम्य लालसा से प्रेरित सुधीर बाबू और राज?—शायद इन सब का योगफल.

—प्रत्येक रु. 4

पूरे परिवार के लिए मनोरंजक व सुरुचिपूर्ण पुस्तकें

आज ही अपने पुस्तक विक्रेता से लें या लिखें.

दिल्ली बुक कंपनी

एम-12, कनाट सरकस, नई दिल्ली-110001.

पूरा सेट लेने पर 5% व डाकखर्च की छूट. आदेश के साथ पांच रुपए अग्रिम भेजें.

VSS 108

वह बोली, "यहां पर नियमावली अंगरेजी में ही छपती है, आप को चाहिए तो बेशक ले जाइए."

यारो, हम पत्राचार द्वारा बी.ए. कर रहे हैं...

व्यंग्य • चंद्रशेखर अगस्त्य

पत्नी के व्यंग्य बाणों से परेशान हो कर हम ने भी पत्राचार द्वारा बी.ए. करने का बीड़ा उठाया. पर इस के लिए हमें कितनी मुसीबतों से दोचार होना पड़ा?

"**अजी**, तुम क्या जानो इस बात को. मैं बी.ए. हूं. मैं इस बारे में तुम से ज्यादा जानती हूं." करीब 20 वर्षों तक जब श्रीमतीजी का यह वाक्य बातबात पर सुनतेसुनते हमारे कान पक गए तो हम ने भी बी.ए. करने का अटल इरादा कर लिया.

चूंकि हम नौकरीपेशा व्यक्ति थे और किसी कालिज में दाखिला नहीं ले सकते थे, इसलिए हम ने पत्राचार पाठ्यक्रम द्वारा ही बी.ए. करने की ठानी.

एक सोमवार को दफ्तर से छुट्टी ले कर हम अपने शहर के पत्राचार कालिज में

विस्तृत विवरण प्राप्त करने के लिए जा धमके.

नया सत्र प्रारंभ हो चुका था और दाखिला लेने के इच्छुक व्यक्तियों से वहां पर काफी गहमागहमी थी.

हम ने दीवारों पर शिक्षा की उपयोगिता के बारे में लिखे कई महान विचारकों के विचार पढ़े और नतमस्तक हो कर स्वागत कक्ष में जा घुसे.

स्वागत कक्ष में एक सुंदर रमणी बैठी थी. हम ने उस से पूछा, "बेटी, हमें बी.ए. में दाखिला लेना है. क्या करें?"

वह हमारी अधिक उम्र पर आश्चर्य व्यक्त करते हुए बोली, "आप यहां से नियमावली खरीद कर उस में लिखी बातों पर अमल करें. आप को दाखिला मिल जाएगा."

"अच्छा, फिर नियमावली की एक प्रति हमें भी दे दो."

"जी, दो रुपए," उस ने एक छोटी सी पुस्तिका हमारे समक्ष रखते हुए कहा.

"दो रुपए तो बहुत हैं. तुम 50 पैसे ले लो," हम ने नियमावली को उलटतेपलटते हुए कहा. श्रीमतीजी के साथ इतने दिन रहतेरहते हम मोलभाव करना खूब सीख गए थे.

यह सुन कर वह हंसती हुई बोली, "यह सरकारी दर है. एक भी पैसा कम नहीं होगा."

"अच्छा," हम ने एक गहरी सांस लेते हुए कहा, "अगर ऐसी बात है तो चलो दो रुपए ही सही. लेकिन, बेटी, यह नियमावली तो अंगरेजी में है, हमें हिंदी की नियमावली चाहिए."

"चाचाजी," वह बोली, "यहां नियमावली अंगरेजी में ही छपती है. आप को चाहिए तो बेशक ले जाइए." उस का साफसाफ इशारा था कि अगर नहीं लेनी हो तो भाड़ में जाइए.

हम ने चुपचाप दो रुपए दे कर नियमावली खरीद ली.

घर आ कर हम ने श्रीमतीजी से कहा, "हम भी बी.ए. कर रहे हैं. यह देखो, हम पत्राचार कालिज की नियमावली ले आए हैं."

श्रीमतीजी मुसकराते हुए बोलीं, "अब इस उम्र में बी.ए. करोगे? सठिया गए हो क्या? मेरा विचार है कि तुम अब जीवन में कभी बी.ए. नहीं कर सकते."

"अजी, अब हमारे बी.ए. होने में कसर ही क्या है. तीन साल की ही तो बात है. बी.ए. में दाखिला लेने के बाद हम भी बी.ए. के छात्र कहलाएंगे. तीन वर्षों बाद हम बी.ए. हो जाएंगे," हम ने तीन वर्ष बाद होने वाली घटना का पूर्वानुमान करते हुए कहा.

"अच्छाअच्छा, पहले दाखिला ले लो. बाकी की बातें बाद में सोचना," श्रीमतीजी बोलीं.

इस के बाद हम ने श्रीमतीजी की सहायता से संपूर्ण नियमावली का अध्ययन किया. नियमावली में साफसाफ लिखा था कि छात्र अध्ययन एवं परीक्षा के लिए हिंदी या अंगरेजी में से कोई भी माध्यम चुन सकता है.

हम ने झट से हिंदी को माध्यम चुना. फिर नियमावली में दिए निर्देशों के अनुसार प्रवेशपत्र भरा और इंटर की अंक सूची तथा प्रमाणपत्र की एकएक नकल साथ नत्थी कर दी. एक राजपत्रित अधिकारी से प्रमाणपत्र भी ले आए. बालों में खिजाब लगा कर एक फोटो खिंचवाई और उसे प्रवेशपत्र के ऊपर चिपका दिया.

इस संपूर्ण प्रक्रिया में तीन दिन नष्ट हुए. चौथे दिन हम फिर पत्राचार कालिज में जा धमके. दाखिला मिलने की खुशी में हमारा दिल तेजी से धड़क रहा था.

स्वागत कक्ष की युवती ने हमारे प्रमाणपत्रों को उलटनेपलटने के बाद कहा, "आप कमरा नंबर 15 में चले जाइए, आप का दाखिला हो जाएगा."

कमरा नंबर 15 में एक लाइन लगी हुई थी. कुछ समय बाद ज्योंज्यों हमारा नंबर निकट आता जा रहा था, खुशी से हमारा दिल उछल रहा था.

तभी दाखिला दे रहे व्यक्ति ने एक लड़के को डांटते हुए कहा, "कमाल है, आप बी.ए. में दाखिला लेने आए हैं और आप को

लेखा विभाग के एक कर्मचारी की बात पर झुंझलाकर उन्होंने कहा, "यह क्या बकवास है. अगर हम ने फीस की पहली किस्त नहीं जमा करवाई तो हमारा दाखिला कैसे हो गया?"
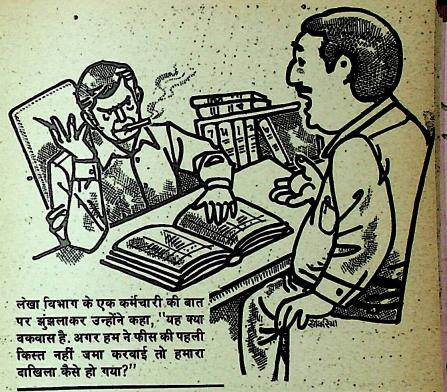
यह भी मालूम नहीं कि अपने फोटो पर हस्ताक्षर करने चाहिए."

यह सुन कर हम ने अपने प्रवेशपत्र पर लगी अपनी फोटो की तरफ देखा. हम ने उस पर अपने हस्ताक्षर किए हुए थे. फिर भी हम ने उस पर दोबारा अपने हस्ताक्षर कर दिए.

"आप बी.ए. में दाखिला क्यों लेना चाहते हैं?" हमारा नंबर आने पर उस व्यक्ति ने पूछा.

हम ने उसे सब कुछ सचसच बता दिया कि किस प्रकार अपनी श्रीमतीजी के व्यंग्य बाणों से घायल हो कर हम बी.ए. करना चाहते हैं.

यह सुन कर वह हंसते हुए बोला, "आप को दाखिला अवश्य मिलेगा." कहते हुए उस ने हमारे प्रवेशपत्र पर हस्ताक्षर कर दिए और बोला, "आप इसे ले कर कमरा नंबर 16 में जाएं. आगे की कारवाई वहीं होगी."

कमरा नंबर 16 में बैठे व्यक्ति ने हमारे कागजपत्रों को उलटनेपलटने के बाद कहा, "अरे, आप के शैक्षणिक प्रमाणपत्र की प्रतिलिपियों पर किसी राजपत्रित अधिकारी के हस्ताक्षर नहीं हैं. हम आप का प्रवेशपत्र स्वीकार नहीं कर सकते."

"कोई बात नहीं, साहब," हम ने कहा, "हम अपने साथ इंटर के मूल प्रमाणपत्र भी लाए हैं. आप इन्हें देख लें."

"यह सब हम नहीं जानते," वह बड़े ही ढीठ स्वर में बोला, "आप को इन प्रतिलिपियों पर किसी राजपत्रित अधिकारी के हस्ताक्षर करवाने ही होंगे."

"यार, बेकार में क्यों तंग कर रहे हो?" हम ने जरा झुंझला कर कहा, "जब हम अपने मूल प्रमाणपत्र भी साथ लाए हैं तो प्रतिलिपियों पर किसी राजपत्रित अधिकारी के हस्ताक्षर होने या न होने से क्या फर्क पड़ता है?"

"यह सब मैं नहीं जानता." वह एक ही राग अलापते हुए बोला, "दाखिले के लिए हमें किसी राजपत्रित अधिकारी के हस्ताक्षर वाली प्रतिलिपियां ही चाहिए."

"अच्छा, यह बताइए कि क्या यहां पर कोई राजपत्रित अधिकरी है? हम उसी से हस्ताक्षर करवा लाते हैं," हम ने पूछा.

"आप कालिज के सहायक रजिस्ट्रार के पास चले जाइए." उस ने उत्तर दिया.

आखिर एक घंटे के विवाद के पश्चात सहायक रजिस्ट्रार ने अपने हस्ताक्षर कर दिए.

"अब ठीक है," 16 नंबर कमरे वाले ने कहा, "अब आप खजांची के पास जा कर यह कागजात फीस समेत जमा करवा दें. आप का दाखिला हो जाएगा."

यह सुन कर हम खुशीखुशी कालिज के खजांची के पास गए और उस के पास फीस के साथसाथ कागजात भी जमा करवा दिए.

"यह लीजिए, साहब, अब आप का दाखिला हो गया. आज से आप इस पत्राचार कालिज के छात्र हो गए हैं," खजांची ने हमारी तरफ फीस की रसीद बढ़ाते हुए कहा.

'छात्र' शब्द सुन कर हम उतने ही प्रसन्न हुए जितना एक 60 वर्षीय दूल्हा लड़की वाले को यह कहते सुन कर प्रसन्न होता है कि 'लड़का आ रहा है.'

"अब कृपया यह भी बता दीजिए कि हमें बी.ए. में क्या कुछ पढ़ना है और हमें पाठ कब से मिलने शुरू होंगे. साथ ही परीक्षाएं कब होंगी?" हम ने एक ही सांस में खुशी से झूमते हुए पूछा.

"अब आप आराम से घर जाइए. सभी सूचनाएं आप को घर बैठे डाक से मिल जाएंगी," वह बोला.

यह सुन कर हम दमकते हुए वापस अपने घर लौट आए.

हम ने पत्राचार कालिज में दाखिला गरमियों में लिया था, लेकिन बरसात का मौसम बीत जाने के बाद भी न तो हमें वहां से पाठ्यक्रम के बारे में कोई सूचना मिली, न पाठ ही प्राप्त हुए.

यह देख कर हम परेशान हो गए कि कहीं कालिज वालों ने हमें भुला तो नहीं दिया है. हम ने टेलीफोन कर के इस विषय में पूछताछ की. वहां से उत्तर मिला, "धैर्य रखिए, पाठ्यक्रम प्रारंभ होने ही वाला है."

करीब चार दिनों बाद हमें पत्राचार कालिज से एक रजिस्ट्री प्राप्त हुई. बड़ा ही साधारण सा दिखने वाला खत था, जिसे पढ़ कर हमारे हाथपांव फूल गए. पत्र में लिखा था:

"प्रिय छात्र/छात्रा, हमें हर्ष है कि आप ने हमारे कालिज में दाखिला लिया है. लेकिन साथ ही खेद है कि आप अपने पाठ्यक्रम को गंभीरता से नहीं ले रहे हैं. प्रदेश के प्रमुख समाचारपत्रों में दिए विज्ञापनों के बावजूद आप ने अपना परीक्षा फार्म पर्याप्त परीक्षा शुल्क के साथ जमा नहीं करवाया है. इसलिए आप का नाम कालिज के रजिस्टर से काटा जा रहा है. धन्यवाद."

हमें तो कुछ पता ही नहीं चला कि किस दिन के अखबार में परीक्षा फार्म जमा करने की सूचना निकली. रद्दी के ढेर से जब तीन महीने पुराने अखबारों का सूक्ष्म अध्ययन करने के बाद भी हमें परीक्षा फार्म भरने वाली सूचना नजर नहीं आई तो हम दौड़ेदौड़े पत्राचार कालिज गए.

वहां के एक कर्मचारी के सामने अपना दुखड़ा रोने के बाद हम ने कहा, "साहब, हमारी समझ में तो कुछ नहीं आया. किस समाचारपत्र में परीक्षा फार्म जमा करने की सूचना निकली थी?"

यह सुन कर उस कर्मचारी ने दोचार ऐसे समाचारपत्रों के नाम गिनवा दिए, जिन को आम आदमी खरीद कर पढ़ना तो दूर मुफ्त में भी पढ़ने को तैयार नहीं होते.

"अरे, भले आदमी, अगर परीक्षा फार्म को आप छात्रों के पास व्यक्तिगत रूप से भेज देते तो हम जैसे छात्रों को मुफ्त में अपना नाम कटवाने की नौबत तो न आती," हम ने कहा.

"जी, इस तरह से कार्य करने का हमारे यहां कोई नियम नहीं है. खैर, घबराने की

कोई बात नहीं है. आप अब भी विलंब शुल्क के साथ अपनी परीक्षा फार्म भर सकते हैं. सिर्फ 10 रुपए का दंड भर[illegible]गा," वह कर्मचारी मेज की दराज से एक परीक्षा फार्म निकाल कर हमारी तरफ बढ़ाते हुए बोला.

हम ने तुरंत ही परीक्षा फार्म भर कर उस कर्मचारी के सम्मुख रख दिया.

वह बोला, "आप इसे कमरा नंबर 15 में ले जाएं."

कमरा नंबर 15 में पांच साहब एक महिला टाइपिस्ट को कुछ इस तरह घेरे बैठे थे जैसे महाभारत के काल में पांचों पांडव द्रौपदी को घेर कर बैठे रहते होंगे. हम ने उन के रंग में भंग डालते हुए कहा, "हजूर, हमें अपना परीक्षा फार्म जमा करवाना है."

"जरूर करवाइए, लाइए अपना परीक्षा फार्म," एक साहब ने अपना हाथ आगे बढ़ाते हुए कहा.

हम ने झट से अपना परीक्षा फार्म उन के हाथों में थमा दिया.

"पर आप ने अपना रोल नंबर तो लिखा ही नहीं," कुछ समय बाद वह बोला.

"हमें तो आप से कोई रोल नंबर मिला ही नहीं," हम ने कहा.

"खैर, आप इस फार्म पर पहली रसीद का नंबर लिख कर जुरमाना दे दें."

"जी, वह रसीद तो घर में है," हम ने कहा.

"आप इस फार्म को घर ले जाइए और इस पर रसीद का नंबर लिख कर कल ले आइए," वह बोला.

यह सुन कर हमारे पास घर लौटने के अलावा कोई चारा नहीं था. तभी हमें सूझा कि क्यों न पाठ्यक्रम आदि के विषय में भी पता

द्वितीय वर्ष के एक छात्र ने बताया, "यदि आप यहां के पाठ अधिकारी को सौ रुपए दें तो आप को सारे के सा[illegible] पाठ एक साथ और अभी मिल जाएंगे."
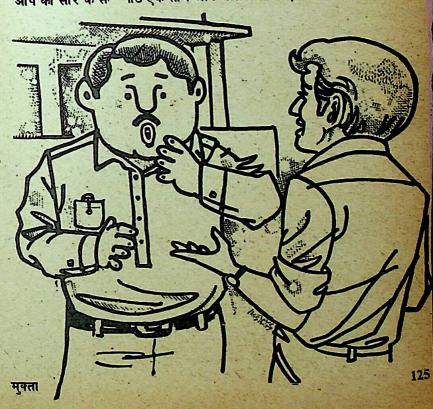
लगा लिया जाए. हम ने उन से पूछा, "भाई साहब, हमें दाखिला लिए करीब पांच माह हो गए हैं, लेकिन अभी तक हमारे पास किसी भी विषय पर कोई पाठ नहीं पहुंचा है. पाठ की बात तो दूर, हमें तो अभी तक पाठ्यक्रम के विषय में भी कुछ नहीं पता. किस से पूछताछ करें?"

"आप इस विषय में पाठ अधिकारी से बात करें," उस ने कहा.

पाठ अधिकारी अपनी कुरसी पर आराम से बैठे फिल्मी अभिनेता प्राण की तरह मुंह से सिगरेट के धुएं के छल्ले छोड़ रहे थे. हम ने उन से अपना सवाल किया तो वह बोले, "आप निश्चित हो कर घर जाएं. हम परीक्षा से पूर्व ही आप को सभी विषयों के पाठ भेज देंगे."

हम ने पूछा, "लेकिन, साहब, आखिर इतनी देरी का कोई कारण तो होना चाहिए. परीक्षाएं सिर पर हैं. छात्र क्या पढ़ेंगे और कैसे परीक्षा की तैयारी करेंगे?"

"यह सब तो आप को यहां दाखिला लेने से पूर्व ही सोच लेना चाहिए था," वह बेबाक हो कर बोले.

"क्या मतलब?"

"मतलब यह है कि हमारे शिक्षक आजकल हड़ताल पर हैं. वे हमें कोई पाठ बना कर नहीं दे रहे हैं. जैसे ही वे अपने पाठ देंगे, हम तुरंत उन्हें छाप कर आप को भेज देंगे," वह महाशय बोले.

"आखिर ये लोग हड़ताल क्यों कर रहे हैं?" हम ने उत्सुकता से पूछा.

"क्योंकि इन्हें पिछले पांच महीनों से वेतन नहीं मिला है."

"कमाल है! पर इन्हें वेतन क्यों नहीं मिल रहा है?"

"क्योंकि ये लोग समय पर पाठ तैयार कर के हमें नहीं देते. इसी लिए इन्हें वेतन नहीं दिया जा रहा है."

"इस का अर्थ तो यह हुआ कि जब तक इन को वेतन नहीं मिलेगा, ये लोग अपना काम नहीं करेंगे और हमें पाठ नहीं मिलेंगे." हमारा स्वर निराशा से भरा था.

"बस, इन लोगों की हड़ताल समाप्त होने ही वाली है," वह हमें दिलासा देते हुए बोले.

अगले दिन जब हम दोबारा अपना परीक्षा फार्म जमा करवाने पहुंचे तो खजांची ने कहा, "हम आप का परीक्षा फार्म तब तक स्वीकार नहीं कर सकते, जब तक इस पर खाता विभाग के अध्यक्ष के हस्ताक्षर नहीं होंगे."

खाता विभाग के एक कर्मचारी ने एक मोटा सा रजिस्टर पलटने के बाद कहा, "अरे, आप ने तो कालिज की फीस की पहली किस्त भी नहीं दी है. जब तक आप पहली और दूसरी किस्त जमा नहीं करवा देते, तब तक हम आप का परीक्षा फार्म स्वीकार नहीं कर सकते."

यह सुन कर हम झुंझलाए. बोले, "यह क्या बकवास है? अगर पहली किस्त जमा नहीं हुई है तब हमारा दाखिला कैसे हो गया?"

"यह सब मैं नहीं जानता. हो सकता है कि भूलवश आप के पहली किस्त दिए जाने का ब्योरा हमारे रजिस्टर में न लिखा गया हो. फिर भी यदि आप को परीक्षा फार्म जमा करवाना है तो आप को कालिज की पहली और दूसरी किस्त जमा करवानी होगी."

"फिर हमारी दी गई पहली किस्त का क्या होगा?" हम ने हताश स्वर में पूछा.

"आप इस विषय में एक प्रार्थनापत्र दे दीजिए.हम जांच करेंगे कि आप के द्वारा दी गई पहली किस्त का ब्योरा हमारे रिकार्ड में क्यों नहीं दर्ज हुआ है. अगर आप की बात सही निकली तब हम आप को पहली किस्त की रकम लौटा देंगे," वह बोला.

यह सब सुन कर हमारा सिर चकराने लगा. हम इतना अवश्य समझे कि इस लंबीचौड़ी प्रक्रिया के बाद फीस की पहली किस्त की रकम हमें वापस मिलने की गुंजाइश है.

"ठीक है. साहब, जब आप कहते हैं तो हम फीस की दोनों किस्तें एकसाथ भरने को

तैयार हैं," हम ने कहा.

"केवल फीस ही नहीं, बल्कि आप को परीक्षा शुल्क एवं विलंब शुल्क भी देना होगा," वह कर्मचारी बोला.

"ठीक है," यह कहने के अलावा हमारे पास और चारा भी क्या था.

इस बार हम ने कालिज के तमाम शुल्क जमा करवाए और पहली किस्त की वापसी के लिए एक प्रार्थनापत्र दे कर घर वापस आ गए.

सर्दी का मौसम शुरू हो गया था. शरीर को सूर्य की गुनगुनी धूप अच्छी लगने लगी थी. लेकिन पत्राचार कालिज वालों ने पाठ तो क्या पाठ्यक्रम भी नहीं भेजा था.

एक दिन हम ने मन ही मन ठान लिया कि चाहे जो भी हो जाए हम कालिज की इस लापरवाही का कारण जान कर ही रहेंगे. फिर एक सुबह हम पाठ अधिकारी के पास जा कर बोले, "हमें अभी तक कोई पाठ नहीं मिला है. पाठ्यक्रम का तो कुछ पता ही नहीं है. आधा साल गुजर गया है."

"आप निश्चिंत हो कर घर जाइए," वह बोला, "हम आप को सारे पाठ परीक्षा से पहले ही भेज देंगे."

"आप तो पाठों को परीक्षा से पूर्व भेज देंगे; लेकिन हम क्या उन्हें परीक्षा में फेल होने के बाद पढ़ेंगे?" हम ने जरा गुस्से में कहा.

"उन पाठों को पढ़ना या न पढ़ना आप की अपनी जिम्मेदारी है," वह बोला.

"लेकिन जब छात्रों के पास पाठ ही नहीं पहुंचेंगे तो वे पढ़ेंगे क्या?" हम ने पूछा, "क्या अभी तक आप के शिक्षकों की हड़ताल समाप्त नहीं हुई?"

"वह तो दो माह पूर्व ही समाप्त हो गई."

"फिर?"

"बात यह है, साहब, अब हमारे प्रेस के लोग हड़ताल पर हैं. जब तक उन की हड़ताल खत्म नहीं हो जाती आप के पाठ नहीं छप सकते. हड़ताल खत्म होते ही हम उन्हें छाप कर आप को पाठ भेजना प्रारंभ कर देंगे," वह स्पष्टीकरण देते हुए बोले.

"अजीब गोरखधंधा है. खैर, आप जैसे भी हो हमें बी.ए. का पाठ्यक्रम तो दिलवाइए. हम बाजार से पुस्तकें खरीद कर घर पर अध्ययन कर लेंगे."

"यह तो बहुत ही सरल बात है. आप बाजार के किसी भी पुस्तक विक्रेता से पाठ्यक्रम का पता लगा सकते हैं," वह बोला.

यह सुन कर हम ने क्रोध से अपने माथे पर हाथ मारा. इतनी सी बात हमारे दिमाग में नहीं आई थी.

"और, साहब, इस रविवार से बी.ए.

वह बच्चों के पैरों से खून चूसता था

कुआलालंपुर में पांच से 13 वर्ष तक के छोटे बच्चों के पैरों में दांत गड़ा कर उन का खून चूसने के अपराध में एक 35 वर्षीय व्यक्ति को गिरफ्तार किया गया है.

जांच पूरी होने तक उस व्यक्ति का नाम गुप्त रखा जा रहा है और इस संबंध में पुलिस ने केवल इतना बताया है कि यह व्यक्ति मलेशियाई है. उस की दो पत्नियां हैं तथा वह भवन निर्माण के समय काम करने वाला मजदूर है.

एक महीने के अंदर पुलिस ने ऐसे 17 मामले दर्ज किए हैं, जिन में वह व्यक्ति 5 से 13 वर्ष तक के बच्चों को फुसला कर उन से कहा करता था कि यदि वे उसे अपने पैर धोने दें तो उन्हें वह मिठाई देगा. बच्चों को नहलानेधुलाने के बाद वह उन के पैरों के तलवों में अपने दांत गड़ा कर उन का रक्त चूसा करता था. ये घटनाएं अखबारों के पहले पृष्ठों पर छापी गईं और उस व्यक्ति को 'ड्रेक्युला' की संज्ञा दी गई.

की कक्षाएं भी प्रारंभ हो रही हैं. आप भी उन में शामिल हो सकते हैं," पाठ अधिकारी ने कहा.

यह सुन कर हम उछल पड़े, "कमाल है, हमें इस बात की कोई सूचना ही नहीं दी गई."

"अब तो आप को इस बात की सूचना मिल गई है न," वह बोला, "रविवार को यहां पर तशरीफ ले आइए. ऊपर के कमरों में कक्षाएं लगेंगी. ये कक्षाएं परीक्षा होने तक हर सप्ताह लगेंगी."

हम ने मन ही मन इन कक्षाओं में उपस्थित होने का निर्णय ले लिया.

करीब दो दिन बाद हमें रजिस्ट्री से एक मोटा सा पार्सल प्राप्त हुआ. खोल कर देखा तो उस में एम.ए. का पाठ्यक्रम व पाठ थे. यह देख हम मन ही मन झल्लाए और फिर पाठ अधिकारी के पास गए. पार्सल को उन की मेज पर पटकते हुए बोले, "यह क्या मजाक है? हम बी.ए. के छात्र हैं और आप ने हमें एम.ए. के पाठ भेज दिए हैं."

"इस बारे में मैं कुछ नहीं जानता. आप यहां के डाक भेजने वाले व्यक्ति से जा कर मिलें."

डाक भेजने वाला व्यक्ति हमें गुस्से में देख कर बोला, "अब, साहब, इस में हमारा क्या दोष है? प्रशासन विभाग वाले हमें छात्रों की जो सूची भेजते हैं, हम लोग उसी के अनुसार पाठ भेजते हैं. आप ही पहले व्यक्ति नहीं हैं जो यह शिकायत ले कर हमारे पास आए हैं. बी.ए. के और छात्रों को भी हम ने उन की ऐसी ही गलती के कारण एम.ए. के पाठ भेजे हैं. आप अपना पार्सल यहां दे दीजिए और बी.ए. के पाठों का सेट ले जाइए."

"क्या आप के प्रशासन विभाग वाले भांग खाते हैं, जो आप को छात्रों की गलत सूची देते हैं?" हम ने क्रोध से पूछा.

"अब इस में मैं क्या कर सकता हूं? प्रशासन विभाग के कर्मचारियों का आपस में इतना द्वेष और मनमुटाव है कि वे एक दूसरे को नीचा दिखाने का कोई भी मौका नहीं चूकते." उस ने स्पष्ट किया.

"लेकिन इस से छात्रों का जो नुकसान होता है, उस का आप के पास कोई इलाज नहीं है?" हम ने पूछा.

"यह सब मैं नहीं जानता," वह बोला, "वैसे मुझे आप से ये सब बातें करने का अधिकार नहीं है, आप अपने पाठों का सेट बदल कर ले जाइए."

बी.ए. के पाठों का प्रथम सेट ले कर हम ने सोचा कि क्यों न खाता विभाग में जा कर दोबारा ली गई प्रथम किस्त की राशि की वापसी के बारे में ही पूछ लिया जाए.

खाता विभाग में चाय और समोसों की पार्टी हो रही थी. सभी गप्पों में व्यस्त थे. एक कर्मचारी से फीस के बारे में पूछा तो वह बोला, "इस समय किसी भी हालत में आप को वह राशि वापस नहीं मिल सकती. कालिज को अभी तक सरकार से पैसा नहीं मिला है."

"क्या मतलब?" हम ने चौंक कर पूछा, "हम ने फीस आप के कालिज के खजांची को दी थी. फिर भला इस में सरकार का क्या मतलब? वह क्यों हमें फीस लौटाने लगी?"

"आप समझ नहीं रहे हैं," वह हड़बड़ा कर बोला, "इस समय कालिज के पास कर्मचारियों को वेतन देने तक के पैसे नहीं हैं."

"आप तो सरासर झूठ बोलते हैं. यहां पर आते समय मैं ने आप के खजांची को सौ सौ के नोट गिनते देखा था. आप उस से कह कर मेरी रकम दिलवाइए," हम ने तैश में आ कर कहा.

"देखिए, साहब, हमारे यहां इस तरह रकम लौटाने का कोई नियम नहीं है. आप इस बारे में यहां के लेखा अधिकारी से मिलिए." उन्होंने दो टूक उत्तर दिया.

"यह साहब कहां मिलेंगे?" हम ने पूछा. उन्होंने हमें कमरा नंबर बता दिया.

लेखा अधिकारी के कमरे के आगे ताला लगा हुआ था. करीब आधे घंटे की प्रतीक्षा के बाद हम ने उधर से गुजर रहे एक

चपरासीनुमा व्यक्ति से पूछा, "भाई साहब, यह लेखा अधिकारी कहां गए हैं? हम आधे घंटे से उन से मिलने के लिए खड़े हैं."

"अजी, हम लोग तो उन से मिलने के लिए छः महीनों से इंतजार कर रहे हैं," वह बोला.

"हम कुछ समझे नहीं."

"बात यह है, साहब," वह बोला, "पिछले छः महीनों से लेखा अधिकारी की कुरसी खाली पड़ी है."

"यह क्या मतलब है? जब कोई लेखा अधिकारी ही नहीं है, तब हमें यहां क्यों भेजा गया?" हम ने उस व्यक्ति की बांह पकड़ते हुए कहा.

"यह तो आप उन्हीं से पूछिए जिन्होंने आप को यहां भेजा है." हमारे रौद्र रूप को देख कर वह कुछ आतंकित होता हुआ बोला, "मुझे क्यों परेशान करते हैं? मैं तो अभीअभी इस कालिज में नियुक्त हुआ हूं."

यह सुन कर हम शेर की तरह गुर्राते हुए लेखा विभाग में गए और उस कर्मचारी को जा कर दबोचा जिस ने हमें लेखा अधिकारी से जा कर मिलने की सलाह दी थी.

वह बोला, "जिस प्रकार के प्रश्न आप पूछ रहे थे उस का उत्तर देना लेखा अधिकारी का ही काम था. मैं आप को क्या जवाब देना?"

यह सुन कर हम मन ही मन उस घड़ी को कोसते हुए लौट आए जब हमें पत्राचार कालिज में दाखिला लेने की बात सूझी थी. लौटते समय हम ने एक पुस्तक विक्रेता से बी.ए. का पाठ्यक्रम मालूम किया और किताबें खरीद कर घर पर ही अध्ययन करने लगे.

कुछ समय बाद हमें कालिज की ओर से एक पत्र प्राप्त हुआ. उस में लिखा था :

प्रिय छात्र/छात्रा,

आप को जान कर हर्ष होगा कि हर वर्ष की भांति इस वर्ष भी हम 'कालिज पत्रिका' निकाल रहे हैं. आप से अनुरोध है कि अपनी श्रेष्ठ मौलिक रचना छपने के लिए इस माह के अंत तक भेज दें.

धन्यवाद.

पत्र पढ़ कर हमारी बांछें खिल उठीं. देश भर की पत्रिकाओं में हमारी रचनाएं छप चुकी थीं, लेकिन किसी कालिज पत्रिका में छपने का सुनहरी अवसर हम खोना नहीं चाहते थे.

हम ने तुरंत एक मौलिक रचना का सृजन किया और पत्राचार कालिज के संपादकीय विभाग को भेज दिया.

एक रविवार को हम ने भी पत्राचार

कालिज द्वारा आयोजित कक्षाओं में जाने का निश्चय किया. एक कापी कलम ले कर हम फिर से कालिज में जा धमके.

वहां पहुंच कर कुछ अन्य छात्रों से परिचय हुआ. हम ने तृतीय वर्ष के एक छात्र से कहा, "बेटा, समझ में नहीं आता कि इस पत्राचार कालिज के कर्मचारी अपने छात्रों के प्रति इतने उदासीन क्यों हैं, ये छात्रों को समय पर पाठ क्यों नहीं भेजते और परीक्षा के लिए उन का मार्गदर्शन क्यों नहीं करते."

वह छात्र बोला, "आप तो अभीअभी इस कालिज में आए हैं. अभी आप ने देखा ही क्या है. आगेआगे देखिए क्या होता है."

"बेटा, तुम कहना क्या चाहते हो?" हम ने पूछा.

"आप यहां की अव्यवस्था को जब तक अपनी आंखों से नहीं देखेंगे, आप मेरी बातों पर विश्वास नहीं करेंगे. हम जैसे नौकरीपेशा लड़कों को तो ऊंची शिक्षा के लिए मजबूरन इस कालिज में दाखिला लेना पड़ता है," वह बोला.

यह सुन कर हम ने कुछ और नहीं पूछा. हम ने सोचा जब ओखली में सिर दे ही दिया है तो मूसलों से क्या डरना, जैसे भी हो हम बी.ए. कर के ही रहेंगे.

हम 10-15 छात्र दोपहर के 12 बजे तक इधरउधर की हांकते रहे. दोपहर के बाद एक शिक्षक ने कक्षा में प्रवेश किया. बिना किसी दुआसलाम के उन्होंने तूफान एक्सप्रेस की गति में अपना लेक्चर देना शुरू कर दिया. हमारी समझ में कुछ नहीं आया. कुछ पूछने की गुस्ताखी की तो वह डांटते हुए बोले, "अपने घर पर भी कुछ पढ़ा कीजिए. यहां पर सवाल पूछना मना है."

अब इतिहास के शिक्षक आए और वह भी बिना दुआसलाम के लेक्चर देने लगे; पर धाराप्रवाह अंगरेजी में. जब हम ने उन्हें टोका और हिंदी में लेक्चर देने के लिए कहा तो वह बोले, "हिंदी में इतिहास पढ़ाने वाले शिक्षक तीन माह की छुट्टी पर गए हुए हैं."

यह सुन कर हम चुप रह गए. आखिर क्या कहते?

करीब चारपांच दिनों बाद पत्राचार कालिज से एक और पत्र मिला. लिखा था:

प्रिय छात्र/छात्रा,

आशा है कि आप लोगों को परीक्षा के लिए रोल नंबर मिल गया होगा और आप लोग कमर कस कर पढ़ रहे होंगे. अगर आप को कोई दिक्कत हो तो कालिज के अधिकारियों से संपर्क करें.

धन्यवाद

यह पढ़ कर हमारे हाथपांव फिर से फूल गए. हमें अभी तक कोई रोल नंबर प्राप्त नहीं हुआ था.

पत्राचार कालिज जाने पर पता चला कि सभी छात्रों को करीब एक सप्ताह पूर्व ही रोल नंबर भेजे जा चुके हैं.

"लेकिन हमें तो कोई रोल नंबर प्राप्त नहीं हुआ है," हम ने घबराते हुए कहा.

"लेकिन हम तो भेज चुके हैं." कालिज के एक कर्मचारी ने निश्चिंत स्वर में उत्तर दिया.

"आप ने रोल नंबर कब भेजा? मुझे तो कभी कोई रजिस्ट्री प्राप्त नहीं हुई."

"जी, रोल नंबर हम ने साधारण डाक से भेजा था." उत्तर मिला.

"आप भी बड़े अजीब लोग हैं. रोल नंबर भेजने की सूचना तो आप रजिस्ट्री द्वारा भेजते हैं और रोल नंबर साधारण डाक से. क्या उसे भी रजिस्ट्री द्वारा नहीं भेज सकते थे. हमें तो लगता है कि हमारा रोल नंबर कहीं डाक में गुम हो गया है," हम ने उदास स्वर में कहा.

"अब इस में हम लोग क्या कर सकते हैं?" वह बोला.

"आप लोग जो कर सकते थे वह तो किया नहीं, खैर, अब इतना बता दीजिए कि हमें फिर से रोल नंबर प्राप्त करने के लिए क्या करना पड़ेगा?" हम ने दुखी स्वर में पूछा.

"आप विश्वविद्यालय जा कर अपने रोल नंबर की दूसरी प्रतिलिपि बनवाने के लिए स्वतंत्र हैं." उत्तर मिला.

खैर, किसी तरह विश्वविद्यालय की लालफीताशाही को परास्त कर हम ने अपना रोल नंबर बनवाया.

परीक्षा में मात्र 15 दिन रह गए थे. तभी हमें पत्राचार कालिज वालों ने पाठों का दूसरा सेट भेजा. उन पाठों की छपाई इतनी गंदी थी कि शब्दों को ढूंढ़ढूंढ़ कर पढ़ना पड़ता था, गलतियों का तो कोई हिसाब ही नहीं था.

जिस दिन हम परीक्षा देने जाने वाले थे, सुबहसुबह हमें अपने पाठ्यक्रम के सभी पाठ प्राप्त हो गए. हमें पत्राचार कालिज का यह आश्वासन याद आ गया कि परीक्षा से पहले ही सभी पाठ भिजवा दिए जाएंगे.

हम ने परीक्षा के लिए पूरी तैयारी कर रखी थी. फेल होने की कोई गुंजाइश नहीं थी. फिर भी परीक्षा वाले दिन हम ने डरतेडरते परीक्षा भवन में प्रवेश किया. हमारा दिल तेजी से धड़क रहा था.

प्रश्न पत्र बंटने से करीब 15 मिनट पूर्व एक निरीक्षक महोदय कमरे में आए और हमारे नाम के साथसाथ पांचछः अन्य परीक्षार्थियों का नाम पुकारा.

"क्यों, क्या बात है?" हम ने अपनी सीट पर से उठते हुए कहा.

"आप लोग जरा बाहर आइए," वह बोले.

"आप लोग परीक्षा नहीं दे सकते," बाहर आने पर वह हम पर वज्रपात करते हुए बोले.

यह सुन कर हमारे साथसाथ अन्य छात्रों के भी पसीने छूट गए. समझ में नहीं आया कि यह अचानक क्या हो गया है.

"क्या आप का नाम विजय है?" निरीक्षक महोदय ने एक छात्र से पूछा.

"ह...हां," वह घबराते हुए बोला.

"आप परीक्षा नहीं दे सकते. आप तुरंत परीक्षा भवन छोड़ कर बाहर चले जाएं."

"ल...लेकिन, महोदय, मेरा कसूर क्या है?" वह छात्र रुआंसे स्वर में बोला.

"बी.ए. में दाखिले के लिए आप के इंटर में कम से कम 40 प्रतिशत अंक होने चाहिए. आप के कुल 38 प्रतिशत ही हैं. आप का दाखिला रद्द किया जाता है," वह बोला.

तभी परीक्षा प्रारंभ होने की घंटी बजी.

"लेकिन, श्रीमान, दाखिले के समय तो किसी ने कोई आपत्ति नहीं उठाई थी. पूरे साल आप ने कुछ नहीं कहा. ऐन परीक्षा के समय यह बात कह रहे हैं. मेरा तो बेकार ही एक वर्ष बरबाद हो गया," कहतेकहते उस छात्र की आंखों से आंसू निकल आए.

"यह सब मैं नहीं जानता. मुझे जैसा आदेश मिला है, मैं वैसा ही कर रहा हूं. आप तुरंत परीक्षा भवन से बाहर चले जाएं," वह निरीक्षक बड़ी निर्दयता से बोला.

"लेकिन, हजूर, आप ने मुझे क्यों रोक रखा है? मेरे तो इंटर में 60 प्रतिशत अंक थे," हम ने घबराते हुए कहा. परीक्षा प्रारंभ हुए 15 मिनट बीत चुके थे और यहां हम से अंटशंट बातें पूछी जा रही थीं.

उस ने कंप्यूटर से करोड़पति बनना चाहा

पश्चिमी बर्लिन के 'डाक चैक केंद्र' में नियुक्त एक कंप्यूटर संचालक ने अपनी चालाकी से 43 लाख मार्क (लगभग एक करोड़ 88 लाख रुपए) का गबन कर लिया.

कंप्यूटर में उस ने ऐसी हेरफेर कर रखी थी जिस से लोगों के चैक निरंतर उसी के बैंक खाते में जमा होते रहे. वह 1977 से ऐसा कर रहा था. उस की यह पोल तब खुली जब बैंक वालों को यह देख कर हैरानी हुई कि एक साधारण डाक कर्मचारी इतना अधिक पैसा कहां से प्राप्त कर रहा है. बैंक वालों ने डाक घर वालों को सावधान किया और तब यह आदमी पकड़ा गया.

"आप का नाम क्या है?" उन्होंने हाथों में लिए एक परचे की ओर देखते हुए पूछा.

"र...राजेश, रोल नंबर 1,123." हम ने तेजी से कहा.

"आप भी परीक्षा नहीं दे सकते. आप ने अपने दाखिले के फार्म के नीचे अपने हस्ताक्षर नहीं किए हैं," वह बोले.

"अमां यार," हम बिगड़ उठे, "बस, इतनी सी बात के लिए आप इतनी हायतोबा मचा रहे हैं. आप हमें तुरंत दाखिले वाला फार्म दीजिए. हम अभी उस पर हस्ताक्षर कर देते हैं," हम ने तेजी से कहा.

"आप तुरंत कमरा नंबर 16 में जाइए और वहां श्री केशव से मिलिए. अपने दाखिले के फार्म पर हस्ताक्षर करने के बाद आप परीक्षा में बैठ सकते हैं."

यह सुन कर हम दौड़ेदौड़े कमरा नंबर 16 की ओर भागे. वहां जा कर मालूम हुआ कि केशव साहब कैंटीन की तरफ गए हैं. हम ने कैंटीन जा कर केशव साहब को ढूंढ़ निकाला. बदहवास स्वर में उन्हें अपनी विपदा सुनाई और 10 मिनट के बाद उन से परीक्षा में बैठने की अनुमति प्राप्त कर वापस अपनी सीट पर जा बैठे. बाकी के तीन छात्रों का क्या हुआ, यह सोचने का समय नहीं था. किसी तरह ढाई घंटे में प्रश्नपत्र को हल किया.

परीक्षा भवन से बाहर आने पर पता चला कि उन तीन छात्रों को परीक्षा देने से वंचित कर दिया गया. कारण पूछने पर कोई संतोषजनक उत्तर नहीं मिला. हां, इतना अवश्य समझ में आया कि कालिज के कर्मचारी की असावधानी के कारण उन का बेकार में एक वर्ष खराब हो गया.

परीक्षाओं के समाप्त होने के करीब 10 दिनों बाद हमें कालिज से एक और रजिस्ट्री प्राप्त हुई. उस में कालिज की पत्रिका थी. उत्सुकतावश हम ने पत्रिका का तीसरा पृष्ठ देखा, यह जानने के लिए कि हमारी रचना पत्रिका के किस पृष्ठ पर छपी है. लेकिन वहां कहीं हमारी रचना का उल्लेख नहीं था. यह देख कर हमें आश्चर्य और दुख हुआ.

फिर सहसा पत्रिका के पन्ने पलटे हम ने अपनी रचना को किसी दूसरे शीर्षक कुमारी विनीता देवी के नाम से छपा पा यह देख हमारे तनबदन में आग लग गई.

हमारी रचना कुमारी विनीता देवी के फोटो समेत छपी थी और लेखिका को आ वाली पीढ़ी की एक महान लेखिका बता गया था. पूरी रचना पढ़ने के बाद हम ने उ में पचास से अधिक वर्तनी एवं प्रूफ संबंधी भूलें निकालीं.

हम अगले ही दिन इस विषय में पूछताछ करने के लिए पत्राचार कालिज जा पहुंचे. कालिज के मुख्य द्वार पर लिखा था- "हमारी मांगों के समर्थन में एक दिन की सांकेतिक हड़ताल."

अंदर घुसे तो प्रिंसिपल साहब के कमरे के ऊपर लिखा था– "भ्रष्ट प्रिंसिपल को हटाओ." कमरे के बाहर एक दरी बिछी हुई थी और उस पर बैठे 15-20 व्यक्ति एकत्र कर 'भ्रष्ट प्रिंसिपल को हटाओ, भ्रष्ट प्रिंसिपल को हटाओ' का नारा लगा रहे थे.

हम ने एक से जा कर पूछा, "हमें आप के कालिज की पत्रिका के संपादक से मिलना है."

"देखते नहीं, हम आजकल हड़ताल पर हैं?" वह जरा गुस्से से बोले.

"कहिए, क्या बात है? मैं ही पत्रिका का संपादक हूं," एक युवक ने खड़े हो कर कहा.

"तो आप ही हैं पत्रिका के संपादक?" हम ने उस को व्यंग्य भरी नजरों से घूरते हुए कहा, "आप की तारीफ में दो शब्द कहने थे."

"कहिए," वह प्रसन्न हो कर बोला.

"आप से तो बहुत सारी बातें करनी हैं. हम ने आप जैसा संपादक आज तक नहीं देखा," हम ने उन पर कटाक्ष करते हुए कहा.

"तब चलिए, आप मेरे कमरे में," वह बोला, "वहीं पर इत्मीनान से बातें होंगी."

"आप लोग यहां सांकेतिक हड़ताल

क्यों कर रहे हैं?" हम ने पूछा.

"अरे साहब, आप नहीं जानते. यहां का प्रिंसिपल एक नंबर का भ्रष्टाचारी है."

"क्यों, साहब, क्या किया है आप के प्रिंसिपल ने?" हम ने पूछा.

वह युवक रहस्यमय स्वर में बोला, "राज की बात है, साहब, किसी से कहिएगा नहीं. हमारे यहां इतिहास विभाग में एक स्थान खाली था. मैं अपने भानजे को वहां लगवाना चाहता था और 10 हजार तक देने को तैयार था. लेकिन इस कमबख्त प्रिंसिपल ने 20 हजार ले कर अपने ही किसी आदमी को वहां लगवा दिया," वह निर्भीक स्वर में बोला.

"अगर प्रिंसिपल साहब आप के भानजे की नियुक्ति करवा देते तो शायद वह आज भ्रष्टाचारी न होते, यही न?" हम ने पूछा.

यह सुन कर वह हंस दिया.

"कहिए, आप किस सिलसिले में मुझ से मिलना चाहते थे?" अपने कमरे में पहुंच कर उस युवक ने कहा.

"अरे, हां, हम तो भूल ही गए थे. आप की इस पत्रिका में विनीता देवी की एक रचना छपी है," हम बोले.

"हां, हां, वह मेरी भानजी है. बड़ी होनहार है. कहानियां लिखने का उसे बड़ा शौक है. एम.ए. पास है. क्या आप अपने लड़के के लिए उस का रिश्ता मांगने आए हैं?" उस ने एक सांस में कई प्रश्न कर डाले.

"देखिए, साहब, हमारा कोई लड़का नहीं है और न ही हम किसी रिश्ते के लिए आए हैं. आप की पत्रिका में विनीता देवी के नाम से जो रचना छपी है, वह हमारी रचना है. हम इस कालिज के छात्र हैं और यह रचना हम ने आप की पत्रिका में प्रकाशनार्थ भेजी थी. हमारी रचना को आप ने किसी दूसरे के नाम से क्यों छापा?" हम ने गुस्से से भरे स्वर में पूछा.

"इस बात का आप के पास क्या सबूत है कि वह रचना आप ही ने लिखी है?" वह सतर्क स्वर में बोला.

"साहब, यह रचना वर्षों पूर्व हमारे ही नाम से एक पत्रिका में पहले भी छप चुकी है," हम ने उसे डराने के लिए यों ही कहा.

"अ...अरे साहब, आप तो व्यर्थ ही नाराज हो रहे हैं. जरा मेरी बात भी तो सुनिए," वह हड़बड़ा कर बोला, "आप क्यों किसी लड़की का जीवन बरबाद करना चाहते हैं? देखिए, भाईसाहब, लड़की का मामला है. आप समझते क्यों नहीं हैं. अगर उस के नाम से दोचार कहानियां छप जाएं तो उस के लिए बहुत ही अच्छा होगा. यह बात उस की शादी में सहायक हो सकती है. पढ़ीलिखी और लेखिका लड़की की शादी में ज्यादा अड़चन

डकैत जल्दबाजी के कारण पकड़ा गया

फ्रांस का एक बैंक डकैत पेरिस के बाहर स्थित एक बैंक के खजांची की दराज से सारा मालमत्ता ले कर भागा और जल्दबाजी में बजाए मुख्य द्वार के बगल के दरवाजे में घुस कर बाहर निकलने की कोशिश करने लगा. परंतु उस दरवाजे से लगे गलियारे के अंदर बाहर के दोनों दरवाजों में दोहरे ताले लगे थे.

बैंक के एक लिपिक ने जैसे ही उस डाकू को गलियारे में घुसते देखा कि बटन दबा कर उस ने गलियारे के अंदर और बाहर के दोनों दरवाजों से स्वचालित ताले बंद कर दिए.

उस डाकू ने कांच के दरवाजों को तोड़ कर बाहर निकलना चाहा और इसलिए दरवाजों पर उस ने कई गोलियां चलाईं. पर दरवाजे टूट नहीं सके क्योंकि वह ऐसा कांच था, जिस पर गोलियों का असर नहीं होता.

इसी बीच गलियारे में आंसू गैस छोड़ कर पुलिस ने उस पर काबू पा लिया.

नहीं आती," वह बोले.

यह सुन कर हमारी समझ में नहीं आ... कि उस से क्या कहा जाए. हम इधरउधर की बात कर वहां से चले आए.

जैसे ही हम पत्राचार कालिज से बाहर आ रहे थे, हमारी मुलाकात एक परिचित छात्र से हो गई; जिस ने हमारे साथ परीक्षा दी थी. "कहो, बेटा, कहो कैसे?" हमारे मुंह से निकला.

"जी, द्वितीय वर्ष के पाठ लेने आया था," वह बोला.

"क्या मतलब?" हम ने चौंक कर पूछा, "अभी तो प्रथम वर्ष का परिणाम ही नहीं निकला, फिर भला तुम्हें द्वितीय वर्ष के पाठ कैसे मिल जाएंगे?"

"आप को शायद पता नहीं है," वह बोला, "परीक्षा में हम पास तो हो ही जाएंगे और द्वितीय वर्ष में हमारा दाखिला भी हो जाएगा. हां, द्वितीय वर्ष के पाठ हमें परीक्षा से पूर्व ही प्राप्त होंगे. मैं ने सोचा कि क्यों न नया सत्र प्रारंभ होने से पहले ही सारे पाठ प्राप्त कर लिए जाएं."

"हमारी समझ में कुछ नहीं आ रहा है," हम ने कहा.

"चाचाजी," वह बोला, "आप यहां के पाठ अधिकारी को सौ रुपए दें तो आप को सारे के सारे पाठ एक साथ हाथोंहाथ मिल जाएंगे," वह रहस्योद्घाटन करते हुए बोला, "पर यह रकम फीस से अलग होगी."

यह सुन कर हम समझ गए कि छात्रों को समय पर पाठ क्यों नहीं भिजवाए जाते. पाठों की कालाबाजारी के बाद ही तो छात्रों के बारे में सोचा जाएगा.

इस घटना के तीन माह बाद विश्वविद्यालय ने अपने परिणाम घोषित किए. हम भी पास हो गए. परिणाम घोषित होने के एक माह बाद हमें पत्राचार कालिज की ओर से एक पत्र प्राप्त हुआ और साथ ही अंकसूची भी,

पत्र में लिखा था:

प्रिय छात्र/छात्रा,

हमें खुशी है कि हमारे मार्गदर्शन में आप ने प्रथम वर्ष की परीक्षा उत्तीर्ण कर ली है. आगे के वर्षों में भी हम आप का इसी प्रकार मार्गदर्शन करते रहेंगे.

द्वितीय वर्ष में प्रवेश पाने के लिए आप तुरंत कालिज में अपनी फीस की पहली किस्त जमा करा दें. धन्यवाद.

पत्र पढ़ कर हम ने तुरंत कालिज जा कर फीस की पहली किस्त जमा करा दी. इस के बाद 100 रुपए दे कर पाठ अधिकारी से द्वितीय वर्ष के पूरे पाठ भी प्राप्त कर लिए.

करीब चार माह बाद हमें फिर एक पत्र प्राप्त हुआ.

प्रिय छात्र/छात्रा,

हमें हर्ष है कि आप ने हमारे कालिज में प्रवेश लिया है. लेकिन साथ ही खेद भी है कि आप अपने पाठ्यक्रम को गंभीरता से नहीं ले रहे हैं. शहर के प्रमुख समाचारपत्रों में भारी विज्ञापन के बावजूद आप ने अपना परीक्षा फार्म अभी तक नहीं भरा है, इसलिए आप का नाम कालिज के रजिस्टर से काटा जा रहा है.

धन्यवाद.

सब कुछ गत वर्ष की भांति ही हो रहा था. इस के बाद हम ने अपना धैर्य नहीं खोया. चुपचाप जा कर विलंब शुल्क के साथ परीक्षा फार्म जमा करवा दिया.

इस के बाद फिर से गत वर्ष की भांति हमें कालिज पत्रिका, परीक्षा फार्म न मिलने आदिआदि के पत्र प्राप्त हुए. हम समझ गए कि पत्राचार कालिज की कार्यप्रणाली हर वर्ष एक ही ढर्रे पर चलती है.

हम ने इस के विरुद्ध संबंधित विभागों और समाचारपत्रों को ढेर सारे पत्र लिखे हैं और दूसरे छात्रों को भी ऐसा ही करने के लिए उकसाया है. आशा है कि किसी न किसी दिन पत्राचार कालिज की कार्यप्रणाली में सुधार अवश्य होगा.

और यारो, हम इस तरह पत्राचार से बी.ए. कर रहे हैं और देश भर के स्नातकों में अपना नाम दर्ज कराने की ओर कदम बढ़ा रहे हैं. ●

वाह रे तकिया कलाम !

मेरे एक मित्र को 'यह तो दुनिया जानती है' कहने की आदत थी. वह अपने दफ्तर से अकसर गायब रहता था.

एक बार दफ्तर के बड़े बाबू ने उसे बुला कर फटकारते हुए कहा, "आप निहायत की कामचोर व्यक्ति हैं."

यह सुन कर मेरे मित्र ने अपनी आदत के अनुसार कह डाला, "यह तो दुनिया जानती है."

किंतु जब उसे अपनी भूल का एहसास हुआ तो उस का चेहरा देखने लायक था. इस के बाद उस ने इस तकिया कलाम का प्रयोग करना ही छोड़ दिया.

—संजयकुमार ठाकुर 'प्रियदर्शी'

*

हमारे एक मित्र हमारे साथ आयुध निर्माणी खमरिया में काम करते हैं. जब भी कोई कर्मचारी किसी काम के लिए उन के पास आता तो वह कह देते थे, "फालतू बात नहीं."

एक बार निर्माणी के वरिष्ठ अधिकारी ने उन के पास आ कर उन से कहा, "हम ने आप को एक काम बताया था उस का क्या हुआ?" अपनी आदत के अनुसार हमारे मित्र बोले, "फालतू बात नहीं." किंतु कार्यालय में यकायक सन्नाटा महसूस कर के उन्होंने जब अपना चेहरा ऊपर उठाया तो अधिकारी को सामने देख कर वह जल्दी से खड़े हो गए और बोले, "नमस्कार साहब."

इस पर अधिकारी ने उन से कहा, "फालतू बात नहीं." हमारे मित्र का चेहरा उस समय देखने लायक था.

— रमाशंकर तिवारी

*

हमारे एक अधीनस्थ अधिकारी को बातबात में 'अजी आप पहले आदमी हैं जिस ने ऐसी बात कही है' कहने की आदत थी.

एक दिन मेरे पास खड़े हुए फाइलों में से वह कुछ आंकड़े एकत्रित कर रहे थे कि एक लिपिक ने, अपने विरुद्ध की जा रही अनुशासनात्मक काररवाई रुकवाने की सिफारिश करने के लिए उन से आग्रह किया.

जब उन्होंने अपनी असमर्थता प्रकट की तो लिपिक ने कहना शुरू किया, "अजी साहब, मुझे पूरा विश्वास है आप यह काम जरूर करवा देंगे, आप तो यहां के मालिक हैं."

इस पर उन्होंने स्वाभाविक रूप में कहा, "अजी, आप पहले आदमी हैं जिस ने ऐसी बात कही है."

"क्यों साहब, क्या घर में भी कोई आप को मालिक नहीं कहता?" जब मैं ने बीच में ही टोकते हुए पूछा तो सभी लोग हंस पड़े और अधिकारी महोदय बुरी तरह झेंप गए.

—महेंद्र पाल जुनेजा •

विश्व सुलभ साहित्य

बेतवा की कसम :

ग्रामीण पृष्ठभूमि पर आधारित बदलते हुए परिवेश, व मान्यताओं का दस्तावेज.

प्रमोद भटनागर मूल्य : 3.00

कार में हत्या :

कार में लाश मिलने पर देशपांडे उस हत्या को सुलझाने में और अधिक उलझता गया. असली अपराधी को पकड़ने में कैसे सफल हुआ ?

जनमित्र मूल्य : 3.00

ईर्ष्या का ज्वालामुखी :

देशपांडे रहस्यपूर्ण हत्याओं को सुलझाने में कैसे उलझता गया रहस्यरोमांच से भरपूर उपन्यास.

कुसुम गुप्ता मूल्य : 3.00

इंसानों का व्यापार :

इंसानों के व्यापार के रहस्य का परदा जब देशपांडे ने उठाया तब सभी आश्चर्यचकित रह गए.

जनमित्र मूल्य : 3.00

पूरा सेट लेने तथा धन अग्रिम भेजने पर डाक खर्च 50 पैसे वी.पी.पी द्वारा.

दिल्ली बुक कंपनी

एम-12, कनाट सरकस, नई दिल्ली-110001

महिला अधिकारियों की समस्याएं

भेंटवार्ता • विशेष प्रतिनिधि
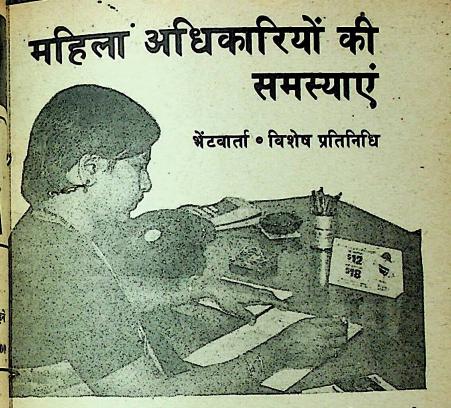
महिला अधिकारियों को अपने कार्यकाल के दौरान कई समस्याओं का सामना करना पड़ता है. ये समस्याएं क्या हैं, कैसे वातावरण में पनपती हैं और इन से छुटकारा कैसे पाया जा सकता है? यहां ऐसे ही सवालों का जवाब दे रही हैं ब्रिटिश एयरवेज की वरिष्ठ महिला अधिकारी कुमारी न. पैरीरा.

महिला अधिकारियों को किनकिन समस्याओं, अतिरिक्त दबावों और तनावों का सामना करना पड़ता है, यह जानने के लिए 'मुक्ता' के प्रतिनिधि ने ब्रिटिश एयरवेज की वरिष्ठ महिला अधिकारी कुमारी न. पैरीरा से साक्षात्कार किया, जिन्हें देश के उच्च वर्गों के बीच एयरलाइंस की छवि बनाने का कठिन काम सौंपा गया है.

कुमारी पैरीरा एक बहुत अच्छी जनसंपर्क अधिकारी हैं. उन का दृष्टिकोण व्यवसाय के प्रति बहुत ही सुलझा हुआ है तथा वह अपने काम के प्रति पूरी तरह निष्ठावान हैं. एक अविवाहित और विवाहित महिला अधिकारी का अपने व्यवसाय के प्रति दृष्टिकोण में जो अंतर होता है, उसे भेंटवार्ता के दौरान उन्होंने बखूबी बताया.

वह जनसंपर्क क्षेत्रों में जानीमानी, सुविज्ञ महिला हैं. और महिला अधिकारियों की समस्याओं और चुनौतियों के बारे में विचारविमर्श करने वाली गोष्ठियों में भाग लेती रही हैं.

प्रश्न : महिला अधिकारी होने के नाते क्या आप को पुरुष अधिकारियों के मुकाबले अधिक दबावों और तनावों के बीच से गुजरना पड़ता है?

उत्तर : कार्यालय के व्यावसायिक वातावरण में पुरुष अधिकारियों का महिला अधिकारियों के प्रति रवैया निश्चित ही ठीक नहीं होता. यह उस समय अधिक होता है जब कोई महिला अधिकारी मध्यम प्रबंधकीय संवर्ग (कैडर) से वरिष्ठ स्तर पर पहुंच जाती है.

निजी तौर पर मैं ने इस के साथ सामंजस्य स्थापित कर लिया है. लेकिन इस बात से इनकार नहीं किया जा सकता कि यह अमैत्रीपूर्ण रवैया उन महिला अधिकारियों के मन में अतिरिक्त चिंता और तनाव पैदा कर देता है जो व्यावसायिक जीवन का ध्यान रखने वाली और अपने क्षेत्र में व्यावसायिक रूप से बहुत योग्य होती हैं.

अपनी नौकरी के शुरू के दिनों में पुरुष सहयोगियों के इस तरह के रवैए से बहुत चिढ़ होती थी, क्योंकि यह बहुत ही अनुचित था. ऐसे मामलों में महिला अधिकारी के अन्य गुण नजरअंदाज कर दिए जाते हैं तथा उस के स्त्री होने पर आधारित पूर्वाग्रह उभर आते हैं. जब किसी महिला अधिकारी की योग्यता और उपलब्धियों को स्वीकार करने की बात उठती है तो पुरुष सहयोगियों का रुख भेदभाव और पूर्वाग्रह से ग्रस्त हो जाता है.

प्रश्न : क्या कुछ मामलों में गृहस्थी की अन्य जिम्मेदारियों के साथ परिवार को चलाना सामान्य महिला अधिकारी के लिए मानसिक दबाव का कारण बन जाता है?

उत्तर : जहां तक मेरा सवाल है, अविवाहित अधिकारी होने के नाते अपनी बीमार मां और स्कूल जाने वाली बहिन की देखभाल करने से मेरे ऊपर कोई असर नहीं पड़ा है.

लेकिन इस मुद्दे पर अगर गहराई से विचार किया जाए तो मैं समझती हूं कि अविवाहित महिला अधिकारी कुछ और नहीं कर सकती क्योंकि उस के भविष्य की सुरक्षा पूरी तरह अपने व्यवसाय में ... आधारित होती है. दूसरी ... कामकाजी मां के लिए यह निश्चि... समस्या होगी तथा उस की चिन्ता... बढ़ा देगी. एक मां के नाते वह ... परिवार को अपने खयालों से ... सकती क्योंकि परिवार के प्रति ... निष्ठा होती है.

प्रश्न : अपने कर्तव्य के ... दौरान एक अधिकारी को बहुत ... करने पड़ते हैं. क्या इसे ... अधिकारियों के लिए समस्या पैदा ...

उत्तर : निजी तौर पर मुझे ... लगते हैं, क्योंकि इस से मेरी ... जानकारी बढ़ती है.

लेकिन मेरे सामने ऐसे मामले ... हैं, जिन में पारिवारिक जिम्मे... कारण महिला अधिकारी घर नहीं ... हालांकि वह ऐसे दौरे की उत्सुकता ... कर रही होती है.

प्रश्न : आज के जीवन में ... व्यक्ति से संबंध बनाने और नए ... प्राप्त करने में मनोरंजन एक मुख्य ... क्या आप मानती हैं कि महिला अधि... यह कमी महसूस होती है और ... बढ़ाने के लिए अच्छे ग्राहक का ... करते वक्त अतिरिक्त तनाव से गुज...

उत्तर : जो महिला अधिकारी ... व्यावसायिक श्रेष्ठता और योग्यता के ... पर व्यापारिक क्षेत्र में ऊंचे स्थान पर ... है, उसे अपनी व्यावसायिक क्षमता ... ऐसे काम लेते वक्त और उस से उत्प... वाली जटिल परिस्थिति का मुकाबला ... में किसी प्रकार की हिचकिचाहट नहीं ... लेकिन ऐसा देखा गया है कि उन ... अधिकारियों में ऐसी मुलाकातों से ... जटिल परिस्थितियों का मुकाबला ... करने की क्षमता नहीं होती, जो ... भाईभतीजावाद या शारीरिक ... कारण ऊंचे पदों पर पहुंची हैं. वे ... लेने में अपने को अक्षम पाती हैं और ... उठती हैं.

प्रश्न : एक महिला अधिकारी के वाहिक जीवन में आम तौर पर व्याप्त टुता के बारे में खासकर जब पति अच्छी नख्वाह पा रहा हो और अपनी पत्नी को म न करने देना चाहता हो, आप कुछ हना चाहेंगी?

उत्तर : आम तौर पर ऐसी स्थिति में टुता होगी, चाहे पति अपनी पत्नी की मता और योग्यता का कितना ही कायल यों न हो. मनोवैज्ञानिक और अचेतन रूप से स के अहं को चोट पहुंचेगी. अगर वेदनशील न हो तो और बात है. लेकिन सा होना संभव नहीं.

प्रश्न : ऐसी स्थिति में कटुता से बचने के लए आप के क्या सुझाव हैं?

उत्तर : मैं यह सुझाव दे सकती हूं (जैसा क मैं ने इसी स्थिति में पड़े अपने सहयोगी वाहित अधिकारियों को दिए हैं) कि अपने पति के मित्र या ...नी सहेलियों के सामने महिला अधिकार... अपने दफ्तर के पद को महत्ता नहीं देनी चाहिए. इस से उस के पति के अहं को बल मिलेगा. वास्तव में उसे अपनी सफलता का श्रेय अपने पति के प्रयासों को देना चाहिए.

मैं ऐसा महसूस करती हूं कि अगर वे ऐसी भेंटमुलाकातों में दिखावे से बचें और पति को अपनी भूमिका निभाने दें तो वे तनाव से बच सकती हैं और इस से उन के वैवाहिक जीवन में कटुता नहीं आने पाएगी.

प्रश्न : आम तौर पर यह देखने में आया है कि एक महिला अधिकारी के लिए अहं की समस्या तब खड़ी होती है जब वह बहुत महत्वाकांक्षी और सफल होती है तथा पति से ज्यादा कमाती है. क्या आप इस बात से सहमत हैं कि ऐसे में महिला अधिकारियों का मानसिक तनाव बढ़ जाता है क्योंकि पति

ब्रिटिश हवाई सेवा में जनसंपर्क अधिकारी न. पैरीरा : सहकर्मी पुरुष अधिकारियों का रवैया ठीक नहीं होता.

ईर्ष्या नहीं तो बेचैनी महसूस करते हैं?

उत्तर : हां, अहं की समस्या तो उठती है और जैसा कि मैं ने पहले बताया है, महिला अधिकारी को अपने पति के अहं को बढ़ावा देने के लिए बहुत अधिक प्रयत्न करने पड़ेंगे. लेकिन महिला अधिकारी को काफी समय तक इस के लिए दृढ़ प्रयास करने पड़ेंगे जो शायद वह न कर पाए.

उत्तर : अपने व्यवसाय में सफलता प्राप्त करने के लिए महिला अधिकारियों पर अपने नारीत्व का उपयोग करने के आरोपों के बारे में आप की क्या प्रतिक्रिया है?

उत्तर : इस बारे में मेरा उत्तर 'हां' और 'न' दोनों में है.

'न' उन महिला अधिकारियों के लिए जो व्यावसायिक दृष्टिकोण रखती हैं और कंपनी के निर्णयों में महत्त्वपूर्ण योगदान देती हैं.

हां उन गैरव्यावसायिक महिला अधिकारियों के लिए जो अपने उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए अपने नारीत्व का उपयोग करती हैं, क्योंकि संगठन में उन की स्थिति अच्छे शारीरिक सौंदर्य, पक्षपात और भाईभतीजावाद के कारण होती है.

प्रश्न : क्या पुरुष सहयोगियों द्वारा महिला अधिकारियों से भेदभाव बरता जाता है? अगर ऐसा है तो इस का प्रमाण क्या है?

उत्तर : यह जीवन का एक सच है जिस का महिला अधिकारियों को सामना करना पड़ता है. इस से उन में कुंठा और निराशा पैदा होती है. जब पुरुष अधिकारियों के साथ इसी तरह का भेदभाव बरता जाता तो उन में इस का परिणाम मनः शारीरिक बीमारियों के रूप में सामने आता है. जब महिला अधिकारी सफलता की ऊंचाइयों पर पहुंच जाती है तो यह बात और स्पष्ट रूप से झलकने लगती है.

मैं समझती हूं कि लोगों का खयाल है कि महिला अधिकारी केवल छोटीछोटी जगहों के लिए ही उचित होती है. कुछ उच्चस्तरीय पद केवल पुरुषों के लिए ही हैं. हमारी पुरुषोन्मुख समाज की संस्कृति के कारण यह पूर्वाग्रह बना हुआ है. इसी कारण एक महिला को नियमित क्षेत्र के उच्चस्तरीय पद के योग्य नहीं समझा जाता.

प्रश्न : महिला अधिकारियों [illegible] अधिक सिगरेट और शराब पीती [illegible] है. क्या यह सच है कि महिला [illegible] अपने पुरुष सहयोगी की बराबरी [illegible] परिवार और दफ्तर के कारण [illegible] को दबाने के लिए ऐसा करती हैं?

उत्तर : मैं पुरुषों के साथ बराब[illegible] में विश्वास नहीं करती. सामाजिक [illegible] मैं शराब नहीं पीती और [illegible] नहीं. मैं ने कुछ ऐसी महिला अधिक[illegible] देखा है जो अपनी निजी खामियों [illegible] के साथ बराबरी करने के लिए [illegible] शराब पीती हैं, जिसे मैं नारीत्व [illegible] अर्थ लगाना मानती हूं.

अधिक खानेपीने से [illegible] योग्यता नहीं स्थापित की जा सक[illegible]

कुछ महिलाओं के लिए यह [illegible] वातावरण से बचाव का तरीका हो[illegible]

प्रश्न : क्या आप ऐसा मान[illegible] महिला अधिकारियों के जीवन में [illegible] मुख्य कारण पुरुषवाद है?

उत्तर : मैं निजी तौर पर ऐसा [illegible]

अपवाद स्वरूप ही कोई [illegible] अधिकारी महिला अधिकारी को [illegible] बराबर का समझता है. अभी तक [illegible] नियम का अपवाद नहीं मिला.

प्रश्न : क्या आप यह मानती [illegible] मानसिक बनावट के कारण [illegible] अधिकारी की कुछ सीमाएं होती हैं [illegible] पुरुष अधिकारियों के समान [illegible] व्यवस्था के ऊंचे पदों पर प्रभावी [illegible] पातीं?

उत्तर : मैं इस बात से सहमत हूं [illegible] प्रतिशत महिला अधिकारी ऐसे पदों [illegible] चाहती हैं जहां उन्हें निर्णय लेना [illegible] क्योंकि भारतीय संस्कृति में औरत को [illegible] स्थान दिया गया है. शुरू में वह पिता [illegible] में पति से और उस के बाद बड़े लड़के [illegible] निर्देश लेती है.'

लेकिन पांच प्रतिशत ऐसी महि[illegible] हैं जो कंपनी के मामलों में निर्णय [illegible]

झिझकती या डरती नहीं हैं. वास्तव में कई मामलों में यह साबित हो गया है कि इस छोटे अल्पसंख्यक वर्ग द्वारा लिए गए फैसलों से संगठन को वित्तीय रूप से बहुत लाभ हुआ है.

जहां तक महिला निदेशक की बात है, वह प्रभावी नहीं होगी क्योंकि निदेशक मंडल का निर्णय पुरुष निदेशकों के बहुमत द्वारा लादा जाता है. इसलिए अकेली महिला के लिए अपने अन्य सहयोगियों को अपने विचारों से प्रभावित करना कठिन है.

प्रश्न : क्या महिला अधिकारी का अपने सहयोगियों के साथ भावात्मक लगाव ज्यादा होता है?

उत्तर : मेरी निजी राय यह है कि अगर महिला अधिकारी अपने पेशे के प्रति ईमानदार है तो प्रबंध का उचित तरीका इस्तेमाल करना पड़ेगा. मैं तो यह कहूंगी, 'मित्रतापूर्ण रवैया अपनाइए लेकिन बहुत निकट मत जाइए.'

लेकिन मुझे ऐसे मामलों की भी जानकारी है, जिन में उन का कार्यालय के वातावरण से भावात्मक लगाव हो गया. मेरे विचार में इस में दोष खुद महिला अधिकारियों का होता है, क्योंकि नौकरी के शुरू में वे निजी संबंधों के बारे में सावधान नहीं रहतीं.

प्रश्न : अंत में क्या आप महिला अधिकारियों की किसी विशेष समस्या के बारे में बताएंगी?

उत्तर : अधिकतर महिला अधिकारियों की सब से बड़ी समस्या वजन का बढ़ जाना होता है. यह उन के कार्य की प्रकृति और खाने के बारे में लापरवाही बरतने के कारण होता है. दीर्घकाल में उस से हृदय और आंत की कई बीमारियां हो सकती हैं.

मैं तो इस बात पर बल दूंगी कि महिला अधिकारी को प्रभावी ढंग से अपना कर्तव्य निभाने के लिए हंसमुख और देखने में अच्छा होना चाहिए. इस के लिए उन्हें रोजाना 15 से 30 मिनट तक योगाभ्यास करना चाहिए. इस से शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य बना रहता है.

लेखकों के लिए सूचना

- सभी रचनाएं कागज के एक ओर हाशिया छोड़ कर साफ-साफ लिखी या टाइप की हुई होनी चाहिए.
- प्रत्येक रचना के साथ वापसी के लिए केवल टिकट नहीं, टिकट लगा, पता लिखा लिफाफा आना चाहिए, अन्यथा अस्वीकृत रचनाएं वापस नहीं की जाएंगी.
- प्रत्येक रचना पर पारिश्रमिक दिया जाता है, जो रचना की स्वीकृति पर भेज दिया जाता है.
- प्रत्येक रचना के पहले और अंतिम पृष्ठ पर लेखक के हस्ताक्षर होने चाहिए.
- स्वीकृत रचनाओं के प्रकाशन में अकसर देर लगती है, इसलिए इन के विषय में कोई पत्रव्यवहार नहीं किया जाता.
- मुक्ता और सरिता में पूर्ण-विराम की जगह बिंदु का प्रयोग होता है. कृपया इसी का प्रयोग करें. इसी प्रकार अंक बजाए नागरी के अंतरराष्ट्रीय होने चाहिए. भारतीय संविधान में राष्ट्रभाषा हिंदी के लिए यही अंक निर्धारित किए गए हैं और सारे संसार में प्रायः सभी भाषाओं में, यही अंक प्रयुक्त होते हैं.

रचना इस पते पर भेजें :
संपादकीय विभाग
मुक्ता, दिल्ली प्रेस,
नई दिल्ली-110055

अपनी समस्याएं भेजिए. इस स्तंभ के अंतर्गत नीरजा द्वारा आप की समस्याओं का समाधान दिया जाता है.

भेजने का पता: नीरजा, मैं क्या करूं? मुक्ता, रानी झांसी मार्ग, नई दिल्ली-110055.

मैं एम.ए. पास 22 वर्षीय युवक हूं और अपने भाई की साली से बहुत प्यार करता हूं. हम दोनों शादी करना चाहते हैं, पर इस के लिए मेरी मां तैयार नहीं हैं, क्योंकि आज तक हमारे परिवार में ऐसा नहीं हुआ है. उस के बिना मैं रह नहीं सकता. मेरा आत्महत्या करने को मन करता है, पर वह मुझ से दृढ़ता से मां का मुकाबला करने को कहती है, जब कि मैं ऐसा करने में स्वयं को असमर्थ पाता हूं. मैं क्या करूं?

आप ने यह स्पष्ट नहीं किया है कि क्या आप शादी के बाद अपना खर्च खुद उठा सकने की स्थिति में हैं या नहीं. यदि आप ऐसा कर सकते हैं तो आप को दृढ़ता के साथ यह बात अपनी मां से कह देनी चाहिए. इस काम में आप अपने भाई व भाभी की सहायता भी ले सकते हैं. जब तक आप खुद हिम्मत कर के कड़ा कदम नहीं उठाएंगे तब तक आप को सफलता नहीं मिलेगी. आम तौर पर यही देखने को मिलता है कि शादी हो जाने के बाद संबंध फिर से सामान्य हो जाते हैं.

*

मैं 21 वर्षीया स्वस्थ व सुंदर लड़की हूं. मैं अपने मांबाप की सहमति से माडलिंग करना चाहती हूं. इस के लिए मुझे क्या करना चाहिए.

लगभग हर बड़े शहर में विज्ञापन एजेंसियां होती हैं जिन्हें माडलों की आवश्यकता पड़ती है. आप इन से संपर्क कर सकती हैं. वैसे विभिन्न पत्रिकाओं में भी माडलों की जरूरत होती है. आप इस संबंध में हमारे कार्यालय से भी पत्रव्यवहार कर सकती हैं. इस के लिए अपने विभिन्न कोणों से लिए गए तीनचार नए फोटोग्राफ भेजना जरूरी है. यह ध्यान रखें कि आप को इस काम के लिए दिल्ली आना पड़ेगा.

*

मैं 17 वर्षीय छात्र हूं. मेरे सामने के दांत थोड़े ऊंचे होने के कारण मेरा मुंह खुला रहता है. मेरे दोस्त मुझे बहुत चिढ़ाते हैं जिस से मेरा पढ़ने में मन नहीं लगता. मैं क्या करूं?

अपने दांतों के कारण मन में किसी तरह की हीन भावना लाना उचित नहीं है. आप उन की बातों का बुरा मानना बंद कर दीजिए. कुछ ही दिनों में वे आप को चिढ़ाना बंद कर देंगे. अपने दांतों को ठीक करवाने के लिए आप किसी अच्छे दांतों के डाक्टर से सलाह ले सकते हैं.

*

मैं 24 वर्षीय अविवाहित युवक हूं और अपनी ही जाति व महल्ले की एक 17 वर्षीया लड़की से प्यार करता हूं. हम दोनों के घर वाले किसी भी कीमत पर हमारी शादी करने के लिए तैयार नहीं हैं. ऐसी हालत में हम किस तरह से शादी कर सकते हैं. कृपया ऐसा तरीका बताएं जिस से हमें किसी प्रकार की कानूनी समस्या का सामना न करना पड़े.

जब तक उस लड़की की उम्र 18 साल पूरी नहीं हो जाती, आप उस से किसी भी तरह शादी नहीं कर सकते हैं. शादी करने के समय आप के पास इस बात का प्रमाण होना चाहिए कि उस की आयु 18 वर्ष हो चुकी है. आप अदालत में जा कर भी शादी

कर सकते हैं, पर यह थोड़ा पेचीदा व महंगा काम है. बेहतर यही होगा कि आप आर्यसमाजी तरीके से शादी करें जो हर दृष्टि से काफी सरल साबित होगा.

*

मैं 19 वर्षीय युवक हूं व नौकरी कर रहा हूं. मेरे चेहरे पर दाढ़ीमूंछें नहीं आई हैं, जब कि पूरे शरीर पर सामान्य बाल हैं. लोग मजाक में मुझे हिजड़ा तक कह देते हैं, जिस से मुझे बहुत दुख होता है. इस समस्या का समाधान करने का कष्ट करें.

दाढ़ीमूंछों का निकलना एक विशेष ग्रंथि से निकलने वाले हारमोंस पर निर्भर करता है. इस संबंध में आप को किसी अच्छे चिकित्सक की सलाह लेनी चाहिए. लोगों की बातों का बुरा मानने से कोई लाभ नहीं होगा क्योंकि ऐसी हालत में आप के मन में हीन भावना आती जाएगी जो व्यक्तित्व के विकास के लिए काफी घातक साबित होगी.

*

मैं भोपाल मेडिकल कालिज का छात्र हूं और एक ऐसी लड़की से प्यार करता हूं जो खूबसूरत है, पर एक पैर से लंगड़ा कर चलती है. वह बंगाली है और मैं पंजाबी. हम दोनों शादी करना चाहते हैं. मैं क्या करूं?

जब तक आप अपनी शिक्षा पूरी कर के डाक्टर न बन जाएं तब तक आप को शादी नहीं करनी चाहिए, क्योंकि मेडिकल शिक्षा में बहुत अधिक मेहनत करने की जरूरत होती है. यह जानते हुए भी कि वह लंगड़ा कर चलती है आप उस से शादी करना चाहते हैं, यह एक अच्छी बात है. पर इस बारे में अंतिम निर्णय लेने से पहले आप यह बात अच्छी तरह सोच लें कि कहीं मात्र भावुकता में आ कर तो आप ऐसा नहीं कर रहे हैं. डाक्टर बन जाने के बाद आप को और भी अधिक अच्छी लड़कियां मिल सकती हैं. तब कहीं आप के मन में अपनी पत्नी की इस कमी का खयाल आया तो यह आप के वैवाहिक जीवन के लिए अच्छा नहीं होगा.

मैं 22 वर्षीय छात्र हूं, व 26 वर्षीय ... से प्यार करता हूं. वह भी मुझे बहुत चा... है. हम दोनों आपस में शादी करना चाहते ... मैं अपनी इच्छानुसार अपना सेक्स बदल ... स्त्री बनना चाहता हूं ताकि हमारी शादी ... किसी रुकावट के हो सके. कृपया यह ... का कष्ट करें कि यह आपरेशन भारत ... किसी हस्पताल में होता है?

आप मानसिक रूप से असामान्य व्यक्ति नजर आते हैं. आप जो ... चाहते हैं वह हर तरह से गलत ... जहां तक आपरेशन द्वारा सेक्स परिवर्तन करवाने का संबंध है वह आप की इच्छा ... किया जा सकना संभव नहीं है. आपरेशन द्वारा सेक्स परिवर्तन तब हो सकता है ... कि व्यक्ति में विपरीत सेक्स के गुणों ... विकास स्वतः ही होने लगे. आप कि... मनोरोग चिकित्सक से अपना इलाज करा...

*

मैं 19 वर्षीय युवक हूं व सहशि... माध्यम से एक विद्यालय में 12वीं कक्षा ... पढ़ता हूं. बुरी संगत में पड़ जाने के कारण ... सिगरेट पीने लगा हूं. अब मुझे यह डर लग... लगा है कि कहीं इस से मुझे किसी तरह ... नुकसान न हो जाए. मेरी एक खास महि... मित्र भी सिगरेट पीती है. मैं उसे ऐसा कर... नहीं देख सकता क्योंकि वह स्त्री है. मैं उस... यह आदत छुड़वाने के लिए क्या करूं?

बुरी आदत हर इनसान के लिए नुकसानदेह साबित होती है चाहे वह स्त्री हो या पुरुष. पुरुष होने का अर्थ यह नहीं है कि समाज में अपनी विशेष स्थिति होने के कारण वह धूम्रपान करने के लिए स्वतंत्र है. धूम्रपान से होने वाली हानियों से सभी परिचित हैं. अगर आप वास्तव में अपनी मित्र की यह आदत छुड़वाना चाहते हैं तो सब से पहले आप को खुद सिगरेट पीना छोड़ना होगा. जब तक आप खुद ऐसा नहीं करेंगे, तब तक आप उसे भी ऐसा करने से रोक नहीं पाएंगे.
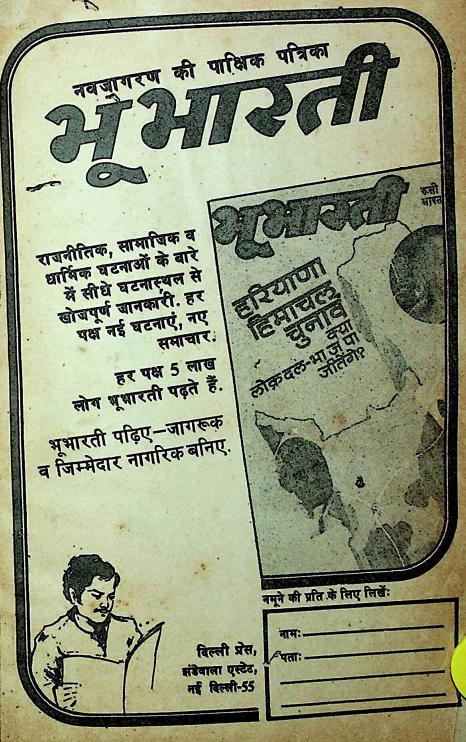
—नीरजा

नवजागरण की पाक्षिक पत्रिका
भूभारती
राजनीतिक, सामाजिक व
धार्मिक घटनाओं के बारे
में सीधे घटनास्थल से
खोजपूर्ण जानकारी. हर
पक्ष नई घटनाएं, नए
समाचार.
हर पक्ष 5 लाख
लोग भूभारती पढ़ते हैं.
भूभारती पढ़िए—जागरूक
व जिम्मेदार नागरिक बनिए.
भूभारती
हरियाणा
हिमाचल
चुनाव
क्या
लोकदल-भाजपा
जीतेंगे?
नमूने की प्रति के लिए लिखें:
नाम:
पता:
दिल्ली प्रेस,
झंडेवाला एस्टेट,
नई दिल्ली-55

R.N. 6502/60 D(C)-104

मई (प्रथम) 1983 रुपए 3.25
मुक्ता
बैंकों से परेशान ग्राहक
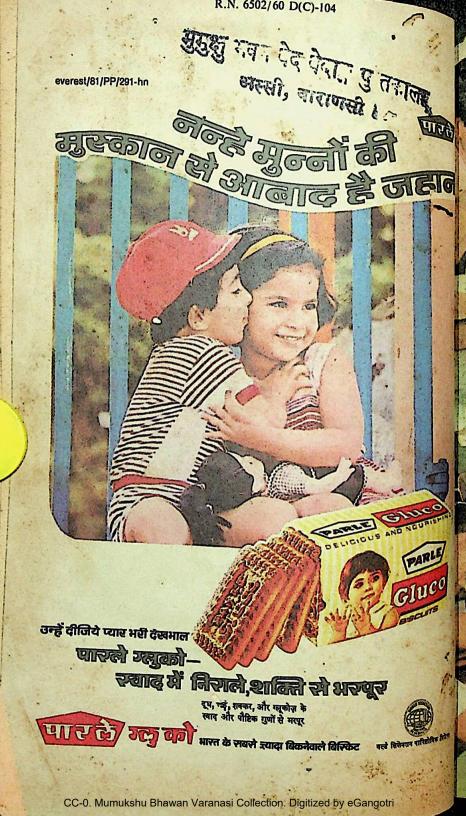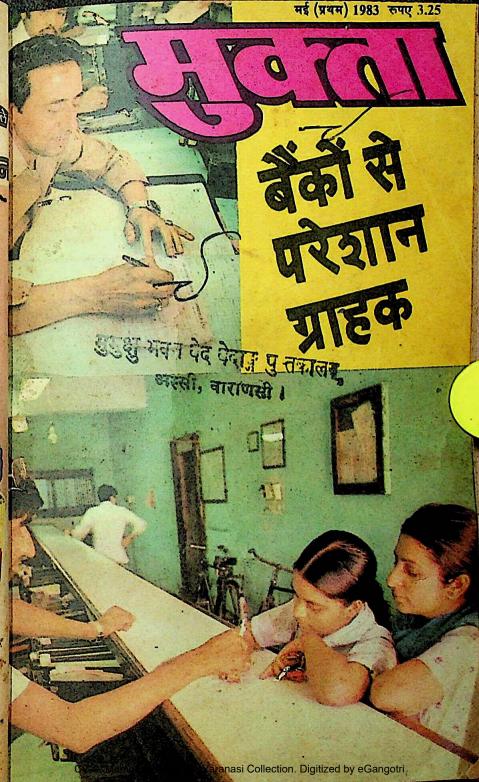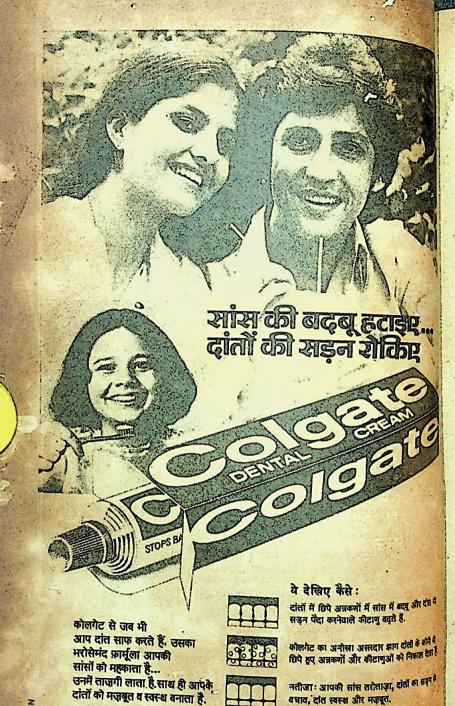
सांस की बदबू हटाइए...
दांतों की सड़न रोकिए
Colgate
DENTAL CREAM
Colgate
STOPS BA
ये देखिए कैसे :
दांतों में छिपे अन्नकणों में सांस में बदबू और दांत में सड़न पैदा करनेवाले कीटाणु बढ़ते हैं.
कोलगेट का अनोखा असरदार झाग दांतों के कोने में छिपे हुए अन्नकणों और कीटाणुओं को निकाल देता !
नतीजा : आपकी सांस तरोताज़ा, दांतों का सड़न से बचाव, दांत स्वस्थ और मज़बूत.
कोलगेट से जब भी आप दांत साफ करते हैं, उसका भरोसेमंद फ़ार्मूला आपकी सांसों को महकाता है... उनमें ताज़गी लाता है.साथ ही आपके दांतों को मज़बूत व स्वस्थ बनाता है.
इसीलिए हर भोजन के बाद बिना भूले कोलगेट डेंटल क्रीम से दांत साफ कीजिए. सांस की बदबू हटाइए, दांतों की सड़न रोकिए.
कोलगेट का ताज़ा पेपरमिंट जैसा स्वाद मन में बस जाता है!
GK&E B82.86 HN

संपादक व प्रकाशक
विश्वनाथ

मई (प्रथम) 1983
अंक: 402

सजग, सफल, सरस जीवन की पत्रिका

लेख

कथा साहित्य

कविताएं

स्तंभ

संपादन व प्रकाशन कार्यालय : ई-3, रानी झांसी मार्ग, नई दिल्ली-110055.
दिल्ली प्रेस पत्र प्रकाशन प्रा.लि. के लिए विश्वनाथ द्वारा दिल्ली प्रेस, नई दिल्ली व दिल्ली प्रेस स.प.प्रा.लि. गाजियाबाद में मुद्रित.

मूल्य : एक प्रति 3.25 रुपए, एक वर्ष 78.00 रुपए. विदेश में (समुद्री डाक से) एक वर्ष 160.00 रुपए. अमरीका में (हवाई डाक से) एक वर्ष : 400.00 रुपए. यूरोप में (हवाई डाक से) एक वर्ष : 325.00 रुपए.
मुख्य वितरक व वार्षिक शुल्क भेजने का स्थान : दिल्ली प्रकाशन वितरण प्रा.लि. रानी झांसी मार्ग, नई दिल्ली-110055. व्यक्तिगत विज्ञापन विभाग : एम-12, कनाट सरकस, नई दिल्ली-110001. बंबई कार्यालय : 79 ए, मित्तल चैंबर्स, नारीमन पाइंट, बंबई-400021. मद्रास कार्यालय : नं. 14, पहली मंजिल, सीसंस कांप्लेक्स 150 82, मांटीअथ रोड, मद्रास-600008. कलकत्ता कार्यालय : पोद्दार पाइंट, तीसरी मंजिल, 113, पार्क स्ट्रीट, कलकत्ता-16. बंगलौर कार्यालय : नं. 302- बी, 'ए' विंग-तीसरी मंजिल, क्वींस कार्नर अपार्टमेंट, 3, क्वींस रोड, बंगलौर-560001.

मारुति: जिस की सफलता में संदेह है

जापान की सुजुकि कंपनी के सहयोग से सरकारी क्षेत्र में मारुति कार बनाने का सब्जबाग दिखा कर सरकार किस प्रकार जनता के साथ 500 करोड़ रुपए का धोखा करने जा रही है. विदेशों में बनी देशी कार की चौंका देने वाली दास्तान...

दिल्ली नगर निगम व महानगर परिषद के चुनाव

इंदिरा कांग्रेस आपसी फूट के बावजूद कैसे जीती तथा संगठित होते हुए भी भारतीय जनता पार्टी क्यों हारी?

कोई लड़की वेश्या क्यों बनती है?

मासूम लड़कियों के सामने ऐसी कौन सी मजबूरियां होती हैं जो उन्हें वेश्यावृत्ति के रास्ते पर ले जाती हैं. एक खोजपूर्ण रिपोर्ट...

पिछड़े क्षेत्रों में उद्योगों की स्थापना के संबंध में आप के विचार (मुक्त विचार/अप्रैल/प्रथम) संकुचित दृष्टिकोण के परिचायक हैं. यह ठीक है कि पिछड़े क्षेत्रों में उद्योग लगाने में व्यावहारिक कठिनाइयां हैं, लेकिन किसी भी कार्य के प्रारंभ में कठिनाइयां उत्पन्न होना स्वाभाविक है और केवल इसी लिए इस प्रकार की नीति को न अपनाना कतई युक्तिसंगत नहीं होगा. क्या ऐसी स्थिति में पिछड़े क्षेत्र और नहीं पिछड़ जाएंगे?

सरकार को चाहिए कि पिछड़े क्षेत्रों में उद्योगों की स्थापना के लिए छूट दे. तभी उद्योगपति पिछड़े क्षेत्रों की ओर आकर्षित होंगे. सरकारी उद्यमों की स्थापना में भी पिछड़े क्षेत्रों को यथासंभव प्राथमिकता दी जानी चाहिए.

पिछड़े क्षेत्रों में कर्मचारियों की अनुपलब्धता का तर्क हास्यास्पद है. भारत की बेरोजगारी को देखते हुए यह बात तो तर्कसंगत है ही नहीं.

यदि सरकार देश के सभी भागों के विकास पर ध्यान नहीं देगी तो आर्थिक असमानता बढ़ेगी और कालांतर में इस से पिछड़े इलाकों में असंतोष की भावना और भी भड़क सकती है.

—गोपालप्रसाद गुडडेवाला

*

आज के समय में यदि देश के किसी भी कोने में किसी भी वस्तु का उद्योग स्थापित करो तो आयकर, बिक्रीकर, पंजीयन, कच्चा माल और श्रम आदि के लिए पापड़ बेलने पड़ते हैं.

इसलिए आज कोई भी व्यक्ति आसानी से कोई धंधा शुरू करने में हिचकिचाता है.

—पूनमसिंह सोलंकी

*

'अटलजी: इस्तीफा दे ही दो' (मुक्त विचार/मार्च/द्वितीय) में आप ने सही लिखा है कि हर जीवंत दल में दसियों ऐसे व्यक्ति होने चाहिए जो दल और राष्ट्र का नेतृत्व कर सकें. अफसोस की बात है कि इस समय भारत में ऐसा कोई भी दल नहीं है जो नए व्यक्तियों अथवा विचारों को पनपाने तथा उन्हें प्रोत्साहन देने का कार्य कर रहा हो.

—गोवर्धन कोठारी

*

'असम: सभी हारे' (मुक्त विचार/मार्च/द्वितीय) में आप ने सही स्थिति को प्रस्तुत किया है.

असमवासियों के पूर्ण विरोध के बावजूद असम में चुनावों का खूनी नाटक खेला गया, क्योंकि शायद हमारी सरकार की नजरों में बजाए संविधान में संशोधन करने के हजारों लोगों का मरना ही अच्छा था.

खैर, जो भी हो. इस चुनाव ने यह सिद्ध

'संपादक के नाम' के लिए मुक्ता की रचनाओं पर आप के विचार आमंत्रित हैं. साथ ही आप देश के राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक आदि विषयों पर भी अपने विचार इस स्तंभ के माध्यम से रख सकते हैं. प्रत्येक पत्र पर लेखक का पूरा नाम व पता होना चाहिए, चाहे वह प्रकाशन के लिए न हो. पत्र इस पते पर भेजिए:

संपादकीय विभाग
मुक्ता,
ई-3, रानी झांसी मार्ग,
नई दिल्ली-110055.

कर दिया है कि असम की सारी जनता आंदोलन की समर्थक है और यही कारण है कि सरकार की इतनी चेष्टाओं के बावजूद सिर्फ 10-12 प्रतिशत ही मतदान हुआ.

गृह मंत्री ने एक बार कहा था कि असम में जो खूनखराबा हुआ है, वह तो चुनाव न कराए जाने पर भी होता, क्योंकि हिंसा तो आंदोलनकारियों की कार्ययोजना का हिस्सा था, तो क्या वह यह बता सकते हैं कि क्या कारण है कि गत तीन वर्षों से आंदोलनकारी अहिंसक बने रहे और फिर अचानक हिंसक बन गए और वह भी चुनावों के दौरान?

—ओमप्रकाश अग्रवाल

*

बजट से पहले नए करों के संबंध में आप के विचार (मुक्त विचार/मार्च/प्रथम) वर्तमान स्थिति को देखते हुए बिलकुल सही हैं.

जहां एक ओर सरकार कमजोर वर्ग एवं गरीबों के उत्थान का नारा लगाती है, वहीं दूसरी ओर नएनए करों का बोझ लाद कर आम उपभोक्ता वस्तुओं की कीमतों में भारी वृद्धि भी करती जाती है.

यही नहीं, वह खेती के काम आने वाली चीजों के दाम भी निरंतर बढ़ाती जा रही है.

सरकार की कोई भी नीति ऐसी प्रतीत नहीं होती जो गरीब अथवा निम्न वर्ग के हित में हो और जिस से उस का उत्थान हो सके.

स्वाभाविक है कि जब दाम बढ़ेंगे तो सरकार इस का दोष व्यापारियों पर थोपने की कोशिश करेगी और इन परिस्थितियों में भ्रष्टाचार को भी बढ़ावा मिलेगा. अंततः इस कमरतोड़ महंगाई में गरीब आदमी का ही शोषण होता रहेगा.

—दाताराम ध्यानी

*

लेख 'चीन की अद्भुत शिक्षा प्रणाली' (अप्रैल/प्रथम) बहुत पसंद आया. वास्तव में ऐसे लेख बहुत कम पढ़ने को मिलते हैं. इस में भारत में स्नातक डिगरी के समकक्ष चीन में सि युत्सई की डिगरी है. इस प्रकार की कई बातें पढ़ने से चीन की शिक्षा के स्तर का व वहां की शिक्षा प्रणाली का पता चलता है.

—प्रशांत पैंडसे

*

व्यंग्य 'अनुभव एक आटोमोबाइल इंजीनियर के' (अप्रैल/प्रथम) बहुत रोचक लगा. वास्तव में आजकल भला आदमी घाटे में ही रहता है, क्योंकि दुनिया पूर्णरूपेण स्वार्थी प्रवृत्ति की हो चुकी है. सभी व्यक्ति मीठा बोल कर अपना काम बनाने में उस्ताद हैं.

—जगदीशचंद्र नागर

मुक्ता

स्तंभों के बारे में सूचना

मुक्ता में प्रकाशित होने वाले विविध स्तंभों के लिए चुटकुले, अपने रोचक अनुभव, संस्मरण व अन्य सामग्री भेजने के लिए अलगअलग लिफाफा प्रयोग करने की आवश्यकता नहीं हैं. एक ही लिफाफे में एक से अधिक स्तंभों में प्रकाशन योग्य सामग्री भेजी जा सकती है.

सामग्री भेजते समय स्पष्ट अथवा सुपाठ्य शब्दों में अपना नाम, पता और भेजने की तारीख अवश्य लिखें. साथ ही यह भी लिख कर भेजें कि रचना मौलिक एवं अप्रकाशित है. भेजी हुई सामग्री किसी भी हालत में लौटाई नहीं जाएगी. अतः बजाए टिकट लगा व पता लिखा लिफाफा भेजने के उस की एक प्रति अपने पास सुरक्षित रख लें. जहां तक संभव हो, सामग्री टाइप करवा कर अथवा साफ शब्दों में कागज के एक ओर हाशिया छोड़ कर लिख कर भेजें. हर तरह की सामग्री कम से कम शब्दों में और रोचकतापूर्ण होनी चाहिए.

सभी स्तंभों के लिए सामग्री एक ही लिफाफे में रख कर इस पते पर भेजें:

संपादन विभाग,
मुक्ता,
ई-3, रानी झांसी मार्ग,
नई दिल्ली-110055.

लेख 'मिरगी: अंधविश्वासों में फंसी एक बीमारी.' (अप्रैल/प्रथम) उपयोगी व जानकारीपूर्ण रहा. मिरगी जैसा रोग होने पर अनपढ़ लोग प्राय: अंधविश्वासों के पचड़े में फंसे रहते हैं. फलस्वरूप यदि रोगों का समय पर उपचार न किया जाए तो रोगी की मृत्यु भी हो जाती है.

ऐसे लेखों से जनसाधारण में निश्चय ही जागृति आएगी तथा लोग वास्तविकता से अवगत हो कर रोगी की समुचित चिकित्सा की ओर ध्यान देंगे. —चंद्रकांत यादव

*

होली विशेषांक (मार्च/द्वितीय) बहुत रोचक व ज्ञानवर्द्धक रहा.

कहानी 'वापसी' में बांछड़ी वर्ग की समस्याओं को जिस सरस ढंग से उजागर किया गया है उस के लिए लेखक को बधाई.

—हेमंतकुमार चौहान

*

होली विशेषांक बहुत ही अच्छा रहा.

लेख 'भारत में देवदासियां' में देश में धर्म के नाम पर प्रचलित देवदासी प्रथा के संबंध में प्रस्तुत विवरण बहुत ही विचारोत्तेजक रहा. निश्चय ही यह प्रथा भारत तथा हिंदू धर्म के लिए कलंक है.

कई कानूनों के बनने के बाद भी इस का जारी रहना आश्चर्यजनक है. सरकार को इसे समाप्त करने के लिए कठोर कानून बनाना चाहिए ताकि सती प्रथा की भांति देवदासी की यह कुप्रथा भी अपना दम तोड़ दे.

—शकुनचंद गुप्त

*

गियाना के लेख (मार्च/द्वितीय) में कुछ गलत बातें दी गई हैं. गियाना द्वीप नहीं है, बल्कि दक्षिण अमरीका की मुख्य भूमि पर एक देश है.

मई 1966 में जब गियाना स्वतंत्र हुआ था, उस समय बर्नहम दिसंबर 1964 का आम चुनाव जीतने के बाद सरकार का नेतृत्व कर रहे थे. वह स्वतंत्र गियाना के पहले प्रधान मंत्री थे.

इस लेख को पढ़ कर लगता है जैसे गियाना में भारतीय मूल के लोगों का जीवन केवल गांवों तक सीमित है, वे सिर्फ खेती करते हैं तथा शिक्षा के मामले में पिछड़े हुए हैं. यह सच नहीं है. वास्तविकता यह है कि गियाना में स्कूल जाने वाली उम्र के बच्चों के लिए स्कूल जाना अनिवार्य है. नर्सरी से ले कर विश्वविद्यालय तक की शिक्षा निःशुल्क दी जाती है. इस तरह गियाना में रहने वाले भारतीय मूल के लोगों को शिक्षा के क्षेत्र में समान अवसर प्राप्त हैं तथा वे इस का पूरा लाभ उठाते हैं.

भारतीय मूल के लोग गियाना की प्रशासनिक, राजनीतिक व न्यायिक सेवाओं में महत्त्वपूर्ण पदों पर कार्य करते रहे हैं तथा इस समय भी कर रहे हैं. इस के अतिरिक्त अनेक भारतीय डाक्टर, वकील व इंजीनियर भी हैं. वे कृषि व अन्य उद्योगों में समृद्धतम व्यक्तियों में से भी हैं.

—डब्ल्यू. ली
गियाना हाई कमीशन, नई दिल्ली

*

लेख 'टेलीविजन का एंटेना' (फरवरी/प्रथम) के लिए लेखक को धन्यवाद, किंतु इस लेख के संदर्भ में मैं यह कहना चाहूंगा कि लेखक को यह ध्यान होना चाहिए कि बड़े शहरों में तो हर प्रकार के मैकेनिक व संबंधित सामग्री उपलब्ध हो जाती है, परंतु कसबों एवं

गावों के लिए, जो दूरदर्शन केंद्र से 250-300 किलोमीटर दूर होते हैं, लेखक इन बातों को भी स्पष्ट कर देता तो लेख बहुत उपयोगी हो जाता:

दूरदर्शन केंद्र के 250-300 किलोमीटर दूर होने पर जमीन से एंटेना की ऊंचाई कितनी होनी चाहिए?

प्रसारित तरंगों की दिशा किस प्रकार जानी जाए, जिस से एंटेना को उस की सीध में लाया जा सके या 90 अंश के कोण पर स्थित किया जा सके? —जयचंदलाल नाहटा

इस संबंध में लेखक का उत्तर इस प्रकार है :

टेलीविजन कार्यक्रमों का प्रसारण ऊंचे स्तंभ लगा कर किया जाता है. स्तंभ की ऊंचाई आम तौर पर 150-200 मीटर रखी जाती है. टोकियो और मास्को के टी.वी. स्तंभ दिल्ली टी.वी. प्रसारण स्तंभ से लगभग तीन गुना ऊंचे हैं और पेरिस में तो विश्व प्रसिद्ध ऐफिल टावर को ही कार्यक्रमों के प्रसारण के लिए इस्तेमाल किया जा रहा है. टी.वी. कार्यक्रमों की पहुंच का क्षेत्र स्तंभ की ऊंचाई बढ़ने से बढ़ जाता है. उदाहरणत: दिल्ली का टी.वी. केंद्र केवल 65 किलोमीटर की दूरी तक ही साफसाफ कार्यक्रम भेजता है.

उस से परे पानीपत, रोहतक, मेरठ आदि में लगे रिसीवर ज्यादा साफ कार्यक्रम नहीं पकड़ पाते. मेरठ और पानीपत के लोग इसी लिए अपने रिसीवरों को मसूरी रिले केंद्र के चैनल पर लगा कर दिल्ली से बढ़िया कार्यक्रम देख पाते हैं, क्योंकि मसूरी रिले केंद्र का स्तंभ ऊंचाई पर होने की वजह से वहां के रिसीवरों के एंटेना की 'लाइन आफ साइट' में आ जाता है.

लेख में यह पहले ही बताया जा चुका है कि टी.वी. टावर का और एंटेना का लाइन आफ साइट में होना जरूरी होता है. 250-300 किलोमीटर संदेश भेजने के लिए स्तंभ की ऊंचाई भी कम से कम 350-400 मीटर तो होनी ही चाहिए. इतने ऊंचे स्तंभ बनाने की बजाए उपयुक्त दूरी पर रिले स्तंभ लगाना श्रेयस्कर समझा जाता है. टेलीविजन

तरंगों की अति उच्च फ्रीक्वेंसी होती है. यह आयन मंडल को पार कर जाती है, जब कि रेडियो तरंगें आयन मंडल से परावर्तित हो कर फिर जमीन की ओर लौट आती हैं. इसी लिए रेडियो तरंगें काफी दूर तक पहुंचती हैं.

250-300 किलोमीटर दूर का कार्यक्रम देखने के लिए न केवल एंटेना 50 मीटर ऊंचा लगाना पड़ेगा, बल्कि एंटेना के साथ ही एक बूस्टर भी लगाना पड़ेगा.

दिल्ली में आजकल अच्छे सिग्नल बूस्टर मिल जाते हैं, लेकिन व्यावहारिक रूप से यह सरल और सफल नहीं रहता. हवा के झोंकों से एंटेना टिक नहीं पाएगा और लगातार हिलते रहने से तसवीर खराब होती रहेगी. इस का सस्ता और सरल हल है उपग्रह टी.वी. प्रणाली का अपनाया जाना. इस में टी.वी. रिसीवर और एंटेना में थोड़े फेरबदल के साथ सीधे उपग्रह से ही कार्यक्रम प्राप्त होता है. यह प्रणाली ब्रिटेन में अपनाई जा चुकी है, पर यदि उपयुक्त दूरी पर रिले टावर लगा दिए जाएं तो वर्तमान व्यवस्था में सारे देश को टी.वी. कार्यक्रम दिखाए जा सकते हैं. विज्ञान की तरक्की को देख कर आजकल भविष्य के लिए जो योजनाएं बन रही हैं, उन में उपग्रह टी.वी. का अपनाया जाना ही संभव प्रतीत हो रहा है.

दूसरे प्रश्न के उत्तर में यही कहूंगा कि इस का उत्तर लेख में दिया जा चुका है यानी टी.वी. स्तंभ से कार्यक्रम का प्रसारण चारों तरफ समान शक्ति से होता है. केंद्र को सीधा मान कर इस के 90 अंश पर आप के एंटेना की छड़ें होनी चाहिए. —रणवीरसिंह ●

मुक्ता के लेखक

प्रवीण 'तन्मय'

इस अंक में प्रकाशित कविता 'नाविक रे' के रचयिता प्रवीण तन्मय मूलतः गीत और गजल लिखते हैं. लेखन के अतिरिक्त संगीत और अभिनय में भी आप की रुचि है.

कृष्णकांत

इस अंक में प्रकाशित कहानी 'लखपतिया' के लेखक कृष्णकांत वरिष्ठ प्रणाली अभियंता के पद पर कार्यरत हैं. आप को हिंदी, अंगरेजी के अलावा फ्रेंच और जरमन भाषा का भी ज्ञान है.

मुक्त विचार

धार्मिक जहर फैलाया किस ने

केंद्र सरकार जैसेजैसे अकालियों को खुश करने की कोशिश कर रही है, उन के धर्मगुरुओं का रुख वैसेवैसे और कड़ा होता जा रहा है. इंदिराजी ने सिखों की कई धार्मिक मांगें मान ली हैं, जिन में जालंधर रेडियो से गुरुवाणी का प्रसारण करने और हवाई जहाजों में सिखों को कृपाण ले कर जाने की अनुमति देने की मांगें भी शामिल हैं.

अकाली अब चंडीगढ़ और कुछ नदियों के पानी के बंटवारे के प्रश्न पर उग्र हो रहे हैं. मजे की बात यह है कि वर्तमान राजनीतिक संदर्भ में यदि ये मांगें मान भी ली जाएं तो अकाल तख्त पर बैठे महानुभावों को कुछ नहीं मिलेगा, क्योंकि इस का लाभ इंदिरा कांग्रेस की दरबारासिंह सरकार को ही मिलेगा.

पंजाब में अकाली स्पष्टतया अल्पमत में हैं. वहां सिख ही केवल 52 प्रतिशत हैं और उन का भी काफी बड़ा भाग अकालियों के साथ नहीं है. अकाली इसी लिए बढ़चढ़ कर ऐसी मांगें रख रहे हैं जो किसी भी हालत में न मानी जा सकें और उन की आड़ में वे पंजाब को अस्थिरता की स्थिति में रख सकें.

4 अप्रैल को 'रास्ता रोको' आंदोलन शुरू करना और 14 अप्रैल को 30,000 सिखों की 'शहीदी सेना' बनाना इसी बात की ओर इंगित करता है. अकाली पंजाब में ऐसी स्थिति पैदा कर देना चाहते हैं कि वहां के गैरअकाली भी मुंह न खोल पाएं और या तो चुनाव हो ही न पाएं और अगर हों तो वे अल्पमत में रहते हुए भी जीत जाएं.

1947 तक सिख हिंदू जाति और धर्म का ही एक अभिन्न अंग थे. 1956 में जब हिंदू विवाह कानून आदि बनाए गए और उस के अंतर्गत सिखों को भी रखा गया तो सिखों ने कोई आपत्ति नहीं की. पंजाब में हिंदुओं और सिखों में आपस में रोटीबेटी का सामान्य रिश्ता रहा है. अनेक हिंदू घरों में तो बड़े लड़के को सिख बना कर पाला जाता रहा है.

इस का कारण था सिख धर्म का तुलनात्मक उदार रवैया. सिखों में पुरोहितों की बहुत अधिक नहीं चलती थी. यह पद पुश्तैनी नहीं था. सिखों में शारीरिक श्रम को अधिक महत्त्व नहीं दिया जाता था. वे धर्म के नाम पर बहुत ज्यादा बंधे हुए नहीं थे.

पर 1947 के बाद अकाली धर्मगुरुओं ने देखा कि जब पंडे, पादरी, मुल्ला हलवापूरी खा रहे हैं तो वे पीछे क्यों रहें. जैसे ही सिख जनता ने अपनी कर्मठता, लगन से पैसा कमाना शुरू किया, उन्होंने धर्म का नाम ले कर अपना राज बढ़ाना शुरू कर दिया.

सरकार ने धर्मनिरपेक्षता के नाम पर न केवल इसे चलने ही दिया, बल्कि इसे और उभारा भी. सिख मतों को मुट्ठी में रखने के लिए सिख धर्मनेताओं को हर तरह की छूट दी

गई. जहां हिंदू धर्म में सामाजिक व वैचारिक क्रांति की शुरुआत हो गई, सिख धर्म में किसी भी नए विचार को धर्म का अपमान माना जाना लगा.

यदि किसी सिख या गैरसिख ने सिख धर्म की किसी बात की आलोचना कर दी तो अकाल तख्त उसे धर्म पर आक्रमण की संज्ञा देने लगा और सरकार बजाए नए विचारों और आवश्यक आलोचना को संरक्षण देने के धर्मनेताओं का ही साथ देने लगी.

नतीजा यह हुआ कि आज एक आम सिख यह मान कर चलने लगा है कि उस का धर्म और उस के धर्म अधिकारी ही सर्वश्रेष्ठ हैं और उन में किसी तरह की त्रुटि या कमी हो ही नहीं सकती, इसलिए वह आंख मूंद कर, विवेक को ताक पर रख कर सिखों के धर्म अधिकारियों के पीछे चलने लगा है.

अकालियों के कारण उत्पन्न वर्तमान समस्या वास्तव में सिखों के इसी रुख की देन है. आज आम सिख और सिख नेता अपने बारे में 'न' सुनने को तैयार नहीं हैं. जब पिछले 35 वर्षों में भारत ही नहीं, अन्य स्थानों पर भी उन की हठधर्मिता चली है तो वे सोचते हैं कि तथाकथित स्वायत्तता या 'खालिस्तान' के नाम पर उन की बात क्यों नहीं मानी जाएगी.

जब तक सरकार धर्मों के प्रचारप्रसार को बढ़ावा देती रहेगी और धर्म की आलोचना को गुनाह मानती रहेगी, धर्माधिकारी चाहे वे किसी भी धर्म के क्यों न हों, धर्म को मनाने की पूरी कोशिश करते रहेंगे, भले ही इस चक्कर में उन के अपने अनुयायियों की ही जानें क्यों न चली जाएं और देश को कितनी ही आर्थिक हानि हो या उस के टुकड़ेटुकड़े होने लगें.

अब जरूरत इस बात की है कि सरकार बजाए 'धर्म निरपेक्षता' का नारा लगाने के, जिस का अर्थ उस की दृष्टि में सभी धर्मों के प्रति समभाव रखने से है, धर्म के प्रति पूर्ण उदासीनता, असहयोग का नारा लगाए, सरकार या सरकारी व्यक्ति के संरक्षण में कोई धार्मिक कांम न हो, सरकार धार्मिक उत्सवों पर सिवा कानून व्यवस्था बनाए रखने के कोई सहयोग न दे, धार्मिक स्थलों पर सरकारी सहयोग पूरी कीमत ले कर ही दिया जाए.

जब तक धर्म को नितांत व्यक्तिगत मामला नहीं बनाया जाएगा, धर्म को ले कर देश में विवाद उठते ही रहेंगे, लोग मरते ही रहेंगे और देश के प्रगति करने में व्यवधान उपस्थित होते रहेंगे.

कम्यूनिस्ट स्वर्ग से पलायन

कम्यूनिस्ट देशों की पिछले 30-40 वर्षों की तथाकथित प्रगति, खुशहाली व लोकप्रियता की कलई एक अकेला व्यक्ति ही खोल सकता है, इस का प्रमाण 19 वर्षीया चीनी टेनिस खिलाड़ी कुमारी हू ना के अमरीका में राजनीतिक शरण लेने से मिला.

हू ना एक चीनी खिलाड़ी दल के साथ पिछले वर्ष अमरीका गई थी और फिर उस ने वहीं बसने का इरादा कर लिया. अमरीकी अधिकारियों ने फैसला करने में जरूर आठ माह लगाए, पर अंत में चीनी सरकार के कड़े विरोध के बावजूद उसे राजनीतिक शरण दे ही दी.

गुस्से में चीनी सरकार ने अमरीका से सांस्कृतिक संबंध तोड़ कर सभी तरह की खेल टीमों व अन्य सांस्कृतिक दलों को वहां न भेजने का निर्णय लिया है. नौबत दोनों देशों के राजनयिक संबंध बिगड़ने तक पहुंच गई है.

पूर्वी यूरोपीय, रूस, उत्तरी कोरिया आदि कम्यूनिस्ट देशों से भाग कर पश्चिमी देशों में जाने वाले लोगों का सिलसिला अंतहीन है.

इस में कोई संदेह नहीं कि पिछले 30-40 वर्षों में इन देशों ने खासी प्रगति की है. लोग पहले से अधिक खुशहाल हैं. स्तालिन के जमाने का सा आतंक भी अब इन देशों में नहीं है. फिर भी अभी वहां दमघोंटू वातावरण बना हुआ है.

कम्यूनिस्ट देशों के शासक समझते हैं कि जनता तो निरी भेड़ है, जिसे जहां मर्जी हांक लो. आम व्यक्ति तो इस स्थिति को स्वीकार भी कर लेता है, पर जिन में जरा भी

स्वाभिमान, विवेक और प्रतिभा होती है, वे लोग ऐसे वातावरण में छटपटाने लगते हैं.

कम्यूनिस्ट देशों में मनचाही नौकरी पाने की स्वतंत्रता भी नहीं है. जिस काम में लगा दिए गए, जीवन भर वहीं रहेंगे. दूसरी जगह जाने के लिए सैकड़ों लोगों की खुशामद करनी पड़ेगी, कई आवेदन करने पड़ेंगे. फिर भी यह हो सकता है कि कर्मचारी न घर का रहे, न घाट का.

अधिकृत तौर पर तो वहां बेकारी नहीं होती, पर अधिकारी से कोई विवाद हो जाए तो नौकरी तो छूटेगी ही, साथ ही साइबेरिया के श्रमिक शिविर में जाने के अलावा और कोई चारा नहीं. ऐसे व्यक्ति को दूसरी नौकरी मिलना भी मुशकिल हो जाता है, क्योंकि पहले स्थान का अधिकारी सही प्रमाणपत्र तक नहीं देगा.

इस कारण भरपेट खानापीना मिलने पर भी लोग हर समय आक्रांत रहते हैं. कम्यूनिस्ट देशों के शासक और विवेकी व्यक्ति जानते हैं कि जो प्रगति कम्यूनिस्ट देशों में हुई है, उस से अधिक गैरकम्यूनिस्ट देशों में हुई है.

इसी लिए बहुत से लोग अपने परिवार, मित्रों, संबंधियों, समाज और देश तक को छोड़ कर एकदम नए देश में नए सिरे से जीवन जीने का खतरा मोल लेने को भी तैयार हो जाते हैं. यह खतरा कितना बड़ा है, हर एक की समझ में आसानी से नहीं आ सकता.

पहले तो ऐसे व्यक्ति को विदेश जाने की पृष्ठभूमि बनानी पड़ती है. कम्यूनिस्ट शासक उन्हें ही विदेश भेजते हैं, जिन का कोई सगा संबंधी देश में हो ताकि उस के आकर्षण में बंधा वह कहीं और भागे नहीं.

फिर मेजबान देश के कायदेकानूनों व परंपराओं की छानबीन कर यह देखना होता है कि वह भगौड़ों को राजनीतिक शरण देता है या नहीं. उस देश में पहुंचने पर वहां तैनात कम्यूनिस्ट अधिकारी प्रायः अपने लोगों को अकेले घूमने की छूट ही नहीं देते.

अवसर पा कर भागना सब से बड़ा जोखिम होता है. पकड़े गए तो देश में जा कर मृत्यु दंड से ले कर जीवन भर की जेल हो सकती है. भाग कर कहीं ऐसी जगह छिपना पड़ता है, जहां से दूसरे देश के विदेश विभाग से संपर्क साधा जा सके. लोकतंत्री देश भी कई बार पचड़े में पड़ने से बचने के लिए शरण देने से ही इनकार कर देते हैं.

और फिर यदि शरण मिल भी गई तो कम्यूनिस्ट शासक संबद्ध व्यक्तियों को लौटाने की मांग करते हैं, जैसा चीन हू ना के मामले में कर रहा है. यह तो अमरीका की सिद्धांतप्रियता है कि उस ने एक बार शरण आए व्यक्ति को लौटाने से इनकार कर दिया, भले ही इस से चीन और अमरीका के संबंधों के खराब होने का खतरा पैदा हो गया तथा चीन ने सांस्कृतिक संबंध तो तोड़ भी दिए.

जब कम्यूनिस्ट देशों के लोग इतना खतरा उठा रहे हैं तो वे अपने तथाकथित स्वर्ग में कितने सुखी हैं, इस का अंदाजा लगाना कोई मुशकिल नहीं है.

सरकारीकरण के बाद बैंक

1969 में बैंकों के सरकारीकरण के बाद उन को आदेश दिए गए थे कि वे समाज के कमजोर वर्ग को कर्ज दिए जाने के संबंध में खूब प्रचार करें. इस का नतीजा यह हुआ कि समाचारपत्रों, होर्डिंगों और रेडियो के जरिए यह प्रचार किया जाने लगा कि जिन लोगों को भी, चाहे वे छोटे हों या बड़े, मजदूर हों या किसान, कर्ज की आवश्यकता हो, वे बैंकों के संबद्ध अधिकारियों से मिलें.

चूंकि बैंकों के सरकारीकरण से इंदिराजी को बहुत राजनीतिक लाभ हुआ. इसलिए उन्होंने महाजनी प्रथा भी समाप्त कराने के लिए कानून बना दिए और किसानों को कर्ज दिलाने के लिए भूमि विकास बैंक, ग्रामीण बैंक आदि शुरू करा दिए. बैंकों ने इन लोगों को अरबों रुपया कर्ज तो दे दिया, पर अब इन की अदायगी बिलकुल नहीं हो पा रही है.

उत्तर प्रदेश सरकार का भूमि विकास बैंक भी अब वसूली के चक्कर में पड़ा हुआ है.

पहले जहां ये लोग बढ़चढ़ कर कर्ज लेने को आमंत्रित करते थे, अब कर्ज के समय पर अदायगी का प्रचार करने लगे हैं. यह बैंक विविध भारती से एक प्रायोजित कार्यक्रम प्रसारित कराता है, जिस में कर्ज की अदायगी समय पर करने के लाभ गिनाए जाते हैं.

अब इन बैंकों और महाजनों में अंतर ही क्या रह गया है? महाजनों को भी तो इसी लिए कोसा जाता था कि वे कर्ज दे कर वसूली करते थे. अब बात यहां तक आ पहुंची है कि बैंक वसूली के लिए जब चाहे पुलिस और जेल तक का उपयोग करने लगे हैं. बेचारा महाजन तो केवल डराधमका कर ही रह जाता था. अगर वह कुर्की लाता भी था तो अदालती कारवाई के कारण उस में काफी समय लग जाता था.

लगता है सामान्य व्यापारिक व्यवहार ने समाजवादी यानी सरकारवाद का बंटाधार कर दिया है.

गांधी को ओस्कर पुरस्कार

ओस्कर पुरस्कार फिल्मों को दिए जाने वाले सब से अधिक प्रतिष्ठित पुरस्कार हैं और दुनिया भर में फिल्मों से संबंधित लोग जीवन में कम से कम एक बार अवश्य ओस्कर पुरस्कार जीतने के स्वप्न लेते हैं. जब रिचर्ड ऐटनबरो की फिल्म 'गांधी' ने एक या दो नहीं आठ पुरस्कार प्राप्त किए तो यह सचमुच एक महत्त्वपूर्ण बात है.

किसी फिल्म ने पहली बार आठ पुरस्कार प्राप्त किए हों, ऐसी बात नहीं है, पर एक गरीब, पिछड़े देश से संबंधित एक नंगे से फकीर पर बनी फिल्म को ढेर सारे पुरस्कार दिया जाना यह अवश्य दर्शाता है कि इस फिल्म में कुछ ऐसी बात थी जिस ने निर्णायकों को इतना अधिक प्रभावित कर दिया.

'गांधी' फिल्म का निर्देशन वाकई बहुत बढ़िया था. बेन किंग्सले ने गांधी के अभिनय में ऐसी जान डाल दी कि लगने लगा मानो गांधीजी स्वयं चले आ रहे हों. स्वतंत्रता से पूर्व भारत का वातावरण, कपड़े इत्यादि इस खूबी से तैयार किए गए कि स्वयं भारतीयों को अचंभा हो जाए. फिल्म के निर्माण से संबंधित लोगों को, इन कामों को पुरस्कार मिले तो ठीक ही था.

पर फिल्म की जो सब से बड़ी खूबी थी और जिसे न तो पुरस्कार दिया गया, न ही दिया जा सकता था, वह था स्वयं गांधीजी का व्यक्तित्व.

असल में ये सभी आठों पुरस्कार परोक्ष रूप में विश्व के फिल्म उद्योग द्वारा गांधीजी के कार्यों, व्यक्तित्व और विचारों की प्रशंसा के प्रतीक हैं.

किसी भी फिल्म की सफलता का सब से मुख्य कारण होता है उस की विषयवस्तु. अच्छे से अच्छा निर्देशन हो, अच्छा अभिनय हो, अच्छी दृश्यावली हो, पर फिल्म की विषयवस्तु दर्शक को न पकड़ पाए तो फिल्म बेजान हो जाती है.

गांधीजी के बारे में दुनिया भर ने बहुत कुछ सुन रखा था, पर टुकड़ों में. लोग उन के विचारों से प्रभावित थे, पर उन्हें मालूम न था कि वह मात्र भारत में अंगरेजों से लड़ने वाले व्यक्ति थे या उन की मानवता को और भी कोई देन थी.

रिचर्ड ऐटनबरो ने यह बात अपनी साढ़े तीन घंटों की फिल्म में इतनी खूबी से कही कि राजनीति पर बनी एक डाक्यूमेंट्री फिल्म ने साधारण दर्शक को भी गांधीजी के निकट ला खड़ा किया. गांधीजी के प्रति इसी उत्सुकता ने पुरस्कार दिलाए हैं.

खेद की बात यही है कि भारत का फिल्म उद्योग खासा बड़ा हो कर भी ऐसे महत्त्वपूर्ण विषय की अवहेलना करता रहा. भारत की स्वतंत्रता की लड़ाई का सारे विश्व पर प्रभाव पड़ा है और करोड़ों लोग उस से संबंधित घटनाओं और व्यक्तियों को जानने के लिए उत्सुक हैं.

फिल्म सब से अधिक प्रभावशाली माध्यम है और भारत के फिल्म निर्माता इस का भरपूर लाभ उठा सकते थे. खेद है कि वे घटिया किस्म के रोमांस या हिंसा में फंस कर इस ओर ध्यान ही नहीं दे पाए हैं. ●

लेख • विवेक सक्सेना

बैंक का ग्राहक क्या होता है? जिस का बैंक में आना उस के काम में बाधक न हो कर उस के अस्तित्व को बनाए रखने में सहायक होता है. यदि ग्राहक न हो तो बैंक का अस्तित्व ही नहीं रहेगा. ग्राहक का बैंक में विश्वास ही बैंक की अपनी सुरक्षा का द्योतक है. उस का बैंक से असंतुष्ट होना एक ऐसे संक्रामक रोग का लक्षण है, जिस की उपेक्षा करने से न केवल बैंक की स्थिति पर बुरा असर पड़ता है, बल्कि उस का भविष्य ही अंधकारमय हो जाता है.

बैंक के ग्राहक की यह परिभाषा पढ़ने और सुनने में बड़ी अच्छी लगती है. इसे पढ़ कर ऐसा लगता है कि जैसे बैंक की दृष्टि में सब से ज्यादा महत्त्वपूर्ण व्यक्ति उस का ग्राहक ही होता है और बैंकों के कर्मचारी उस की हाथोंहाथ सेवा करने के लिए तैयार रहते होंगे, पर वास्तविकता इस के एकदम विपरीत है. आज अगर सरकारी बैंकों में किसी व्यक्ति की सब से ज्यादा उपेक्षा होती है तो वह बैंक का ग्राहक ही है. ग्राहक की यह परिभाषा भारत सरकार द्वारा सरकारी बैंकों में बिगड़ती सेवा का अध्ययन करने के लिए नियुक्त एक कार्यकारी दल ने अपनी अंतरिम रिपोर्ट में दी है.

इस अध्ययन दल ने यह भी कहा है कि जब भी कोई व्यक्ति बैंक में आता है तो वह उस की सेवा ले कर उस में अपना विश्वास व्यक्त करता है. इसलिए बैंक का यह कर्तव्य है कि वह उस व्यक्ति के इस विश्वास को

समस्या ले कर आता है, जो उस की नजरों में बहुत गंभीर होती हैं और बैंक उस की दृष्टि में उस समस्या का समाधान ढूंढ़ने वाला विशेषज्ञ होता है. इसलिए बैंक का यह कर्तव्य है कि वह अपने ग्राहकों की समस्त वित्तीय समस्याओं को सुलझाने में अपना पूरा सहयोग दे.

सरकार को ग्राहकों की बैंकिंग संबंधी समस्या का अध्ययन करने के लिए इस दल को इसलिए नियुक्त करना पड़ा, क्योंकि उस ने खुद यह महसूस किया कि बैंकों के सरकारीकरण के बाद उन की सेवा के स्तर में दिन प्रतिदिन गिरावट आती जा रही है. आज बैंक की सेवाओं का स्तर इतना अधिक गिर चुका है कि उसे किसी भी अन्य सरकारी कार्यालय की तुलना में रखा जा सकता है.

यहां एक सवाल यह उठता है कि जब सभी सरकारी कार्यालयों की यही हालत है, कामचोर हैं, भ्रष्टाचार का बोलवाला है ना यहां हम ने आलोचना के लिए सरकारी बैंकों के कर्मचारियों को ही क्यों चुना है. इस के जवाब में इतना ही कहना पर्याप्त होगा कि आज समस्त सरकारी विभागों में सब से

बैंकों में बढ़ती अव्यवस्था और कर्मचारियों के उद्दंड व्यवहार ने ग्राहक को परेशानी में डाल दिया है. बैंकों के इस बिगड़ते रूप को सुधारने के लिए क्या कभी प्रयास किए जाएंगे?

बैंक कर्मचारी : अपने कर्तव्यों के प्रति कितनी जागरूकता?

ग्राहकों की जरूरतों से बेखबर कर्मचारी.

ज्यादा सुविधाएं व वेतन सरकारी बैंकों के ही कर्मचारियों को प्राप्त हैं. दूसरी महत्त्वपूर्ण बात यह है कि यह एक ऐसा उद्योग है जो प्रत्यक्ष रूप से देश की समस्त आर्थिक, औद्योगिक गतिविधियों को प्रभावित करता है.

असंतोषजनक कार्यप्रणाली

शायद ही कोई ऐसा व्यक्ति होगा जो सरकारी बैंकों की कार्यप्रणाली से संतुष्ट हो. आज जिस तेजी से विकास हो रहा है, उसे देखते हुए बैंक एक आम व्यक्ति से ले कर उद्योगपति तक के जीवन का महत्त्वपूर्ण अंग बनते जा रहे हैं. एक साधारण नागरिक को अपना खाता खुलवाने से ले कर एक करोड़पति उद्योगपति को देश की प्रगति के लिए आवश्यक उत्पादन को बनाए रखने या उस में बढ़ोतरी करने के लिए बैंक से कर्ज लेने के लिए न जाने कितनी दिक्कतों का सामना करना पड़ता है.

ये समस्याएं क्या हैं, इन्हें दूर करने के लिए इस कार्यकारी दल ने क्या सुझाव दिए हैं व बैंक के कर्मचारी किस तरह से ग्राहकों के लिए समस्याएं पैदा करते हैं, इन सब बातों को जानने के लिए हमें गहराई में जाना पड़ेगा. बैंकों के सरकारीकरण के बाद उन की बिगड़ती सेवा का मुख्य कारण यह है कि आज बैंकों की स्थिति ऐसी है कि उन्हें ग्राहक को अपनी ओर आकर्षित नहीं करना पड़ता, बल्कि ग्राहक खुद अपनी मजबूरी के कारण उन के पास आता है और वे उस की इस विवशता का पूरा लाभ उठाते हैं.

बैंकों द्वारा अपने ग्राहकों की उपेक्षा करने व उन की आवश्यकताओं की पूर्ति न करने या उन्हें असंतुष्ट रखने का मुख्य कारण यह है कि सरकारीकरण के बाद कर्मचारियों की नौकरी की सुरक्षा बढ़ जाने से वे अब काम करने में रुचि ही नहीं लेते, ऊपर से कर्मचारी संघों के कारण बढ़ती अनुशासनहीनता व अयोग्य हाथों में बैंकों का प्रबंध कोढ़ में खाज का काम करता है.

यहां यह सोचना गलत होगा कि इस लेख में जो कुछ भी कहा जा रहा है, वह पूर्वाग्रह से ग्रस्त है. वास्तविकता यह है कि इस पूरे लेख में बैंकों की सेवाओं से संबंधित विचार, उन की आलोचना या प्रतिक्रिया सरकार द्वारा नियुक्त उस कार्यकारी दल की है, जिस के सदस्य छः सरकारी बैंकों के

अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक हैं.

किसी भी आम व्यक्ति के लिए सब से बड़ी समस्या यह होती है कि वह अगर बैंक के किसी ग्राहक को नहीं जानता तो वह अपना खाता ही नहीं खुलवा सकता. यह बात अलग है कि दिखावे के लिए बैंकों द्वारा हर साल लाखों की धनराशि 'बचत पखवारे' के दौरान लोगों को खाता खोलने के लिए प्रोत्साहित करने के नाम पर किए जाने वाले प्रचार पर खर्च कर दी जाती है. इस संबंध में इस दल ने यह सिफारिश की थी कि यह जरूरी नहीं होना चाहिए कि नया खाता खोलने वाला बैंक के ही किसी ग्राहक से अपना परिचय दिलवाए.

शाखा प्रबंधक को यह अधिकार होना चाहिए कि वह उस क्षेत्र के किसी भी प्रतिष्ठित व्यक्ति की सिफारिश पर उस व्यक्ति का खाता खोल दे, भले ही सिफारिश करने वाले व्यक्ति का उस बैंक में खाता न हो. इसी तरह बैंक के भी किसी कर्मचारी की सिफारिश पर उस व्यक्ति को खाता खोलने की अनुमति होनी चाहिए. इस से आम व्यक्ति की खाता खोलने में होने वाली दिक्कतों को दूर किया जा सकेगा.

बैंक खुद इस बात को स्वीकारते हैं कि यदि किसी खाताधारी व्यक्ति की मृत्यु हो जाती है तो उस का पैसा उस के आश्रितों को बहुत मुश्किल से मिल पाता है. उन्हें न जाने कितनी कानूनी दिक्कतों का सामना करना पड़ता है. इस का सीधा सा उपाय यह है कि जीवन बीमा निगम की पालिसी की तरह खाता खोलने वाला अपने उत्तराधिकारी का नाम पहले ही लिखवा दे, जिस से बाद में किसी समस्या का सामना न करना पड़े. इस बारे में एक सुझाव यह भी दिया गया है कि लोगों को संयुक्त खाते खोलने के लिए प्रोत्साहित किया जाए.

खाताधारी के आश्रित परेशान

यह मानी हुई बात है कि परिवार को चलाने वाले व्यक्ति की मृत्यु के बाद उस के आश्रितों को जिस समस्या का सब से पहले सामना करना पड़ता है वह आर्थिक होती है, अतः ऐसी हालत में बैंकों को कानूनी पचड़ों में न पड़ कर स्थानीय स्तर पर खुद जांचपड़ताल कर के उस के पैसों का भुगतान उस के आश्रितों को कर देना चाहिए.

अगर आप का किसी बैंक में खाता हो और आप का तबादला किसी दूसरे शहर में हो जाए तो खाते का तबादला करवाने में बहुत समय लग जाता है, हालांकि इस से बैंक को ही लाभ होता है, क्योंकि यदि ग्राहक उस

आप कितनी ही मजबूरी में क्यों न हों बैंक कर्मचारी आप की मजबूरी को नहीं समझेगा.
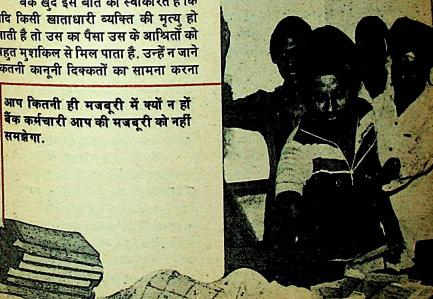
के यहां अपना खाता बंद कर देता है तो कोई जरूरी नहीं कि वह दूसरे शहर में जा कर उसी बैंक की किसी शाखा में अपना खाता खुलवाए. ऐसी हालत में जब ग्राहक संबंधित शाखा में जा कर यह पूछता है कि उस का खाता वहां आ गया या नहीं तो वहां के कर्मचारी उस की बात का जवाब नहीं देते, क्योंकि वह उन के लिए अपरिचित होता है. इस प्रकार उसे काफी समस्या का सामना करना पड़ जाता है.

इस समस्या का हल यही है कि संबंधित बैंक तुरंत ग्राहक से मिली जानकारी के आधार पर मूल बैंक से टैलेक्स या तार से इस संबंध में पूछे कि आखिर उस का खाता अभी तक वहां क्यों नहीं पहुंचा है. इस संबंध में स्पष्ट निर्देश होने के बाद भी शायद ही कभी बैंक इतनी तत्परता दिखाते हों. यही कारण है कि लोग तबादला होने पर अपना खाता बंद कर देते हैं और नए शहर में जा कर कहीं भी नया खाता खुलवा लेते हैं.

पासबुक की समस्या

आम व्यक्ति की एक शिकायत यह भी होती है कि उस की पासबुक में जमा या निकाली गई सभी रकमें दर्ज नहीं होती हैं या अकसर उस की पासबुक बैंक में ही खो जाती हैं, क्योंकि जब वह अपनी पासबुक प्रविष्टियों के लिए देता है तो उसे इस के बदले में कोई रसीद नहीं दी जाती और पासबुक खो जाने पर नई पासबुक बनवाने का शुल्क ग्राहक को देना पड़ता है. यही हालत चालू खाते वाले ग्राहकों के साथ है. उन्हें समय पर विवरण (स्टेटमेंट) नहीं मिलता. जब विवरण या पासबुक मिलती भी है तो उस में प्रविष्टियां इतनी गंदी व जल्दी में की गई होती हैं कि कुछ समझ में ही नहीं आता.

कार्यकारी दल ने यह सुझाव दिया था कि बचत खातों की पासबुक में उसी समय प्रविष्टियां की जानी चाहिए. अगर उस समय इसे पूरा न किया जा सके तो पासबुक ले कर ग्राहक को रसीद दे देनी चाहिए और 24 घंटे के अंदर इसे पूरा कर देना चाहिए. अगर ग्राहक एक सप्ताह तक अपनी पासबुक लेने न आए तो ग्राहक के खर्च पर पासबुक रजिस्टर्ड डाक से उसे भेज दी जानी चाहिए.

इसी तरह चालू खाते के ग्राहकों ने अगर अपनी तरफ से विवरण भेजने की तिथि के बारे में निर्देश न दिए हों तो उन्हें हर महीने की 5 तारीख से पहले ही विवरण भेज देना चाहिए. यहां इस बात का ध्यान रखना जरूरी है कि पासबुक व विवरण वही कर्मचारी तैयार करे, जिस की लिखावट बहुत अच्छी हो, जिस से ग्राहक को पढ़ने में असुविधा न हो.

सुविधा बनाम नुकसान

बैंक एक तरह से ग्राहक के वित्तीय प्रतिनिधि के रूप में भी काम करता है. बहुत से बैंकों में यह सुविधा होती है कि वह अपने ग्राहक के निर्देशानुसार उस के खाते में से पैसा ले कर उस के बिजली के बिल, विभिन्न प्रकार के करों की अदायगी तथा जीवन बीमा निगम की पालिसी का प्रीमियम जमा करवा देते हैं, पर अकसर देखने में आता है कि बैंक की लापरवाही के कारण लोगों को इस सुविधा में फायदा कम और नुकसान ज्यादा उठाना पड़ता है. उदाहरण के लिए यदि बैंक समय पर जीवन बीमा निगम की किस्त जमा करना भूल जाता है तो ग्राहक की पालिसी रद्द हो सकती है.

ऐसी हालत में यह जरूरी है कि बैंक ग्राहक को तुरंत सूचित करे कि उस के द्वारा दिए गए निर्देशों के अनुसार बैंक ने उस के खाते से पैसा जमा करवा दिया है और यदि नहीं जमा करवाया है तो उस का कारण बताए, जिस से ग्राहक को नुकसान न हो.

अगर किसी कारणवश किसी चैक का भुगतान रोकना हो तो यह देखा जाता है कि अधिकारी इस बात की प्रतीक्षा करते हैं कि लैजर उन की मेज पर लाया जाए और वह अपनी कुरसी पर बैठेबैठे उस में 'स्टाप पेमेंट' लिख दें, जब कि इस बारे में स्पष्ट निर्देश दिए गए हैं कि ऐसी हालत में संबंधित अधिकारी को खुद उठ कर लैजर में भुगतान रोकने की परची लगानी चाहिए.

बैंकों में आए दिन होने वाली हड़तालें क्या ग्राहक को दिक्कत पैदा नहीं करतीं?

अकसर देखा जाता है कि दो बजे से 10-15 मिनट पहले ही कर्मचारी भुगतान के लिए यह कह कर चैक स्वीकार करना बंद कर देते हैं कि जब तक वह चैक खजांची के पास पहुंचेगा तब तक दो बज चुके होंगे. उन की इस हरकत से लोगों को बेहद परेशानी उठानी पड़ती हैं. यह बात बहुत कम लोगों को मालूम होगी कि इस संबंध में यह सिफारिश की गई है कि शाखा प्रबंधक निर्धारित समय बीत जाने के बाद भी ग्राहक को पैसे का उस स्थिति में भुगतान करवा दे, अगर वह इस बात से संतुष्ट हो कि वह भुगतान करवाना जरूरी है.

आज लगभग हर सरकारी बैंक द्वारा लोगों की सुविधा के लिए यात्री चैक जारी किए गए हैं.

कहने को तो यात्री चैकों के सुविधाजनक होने की बात बढ़चढ़ कर की जाती है, पर सचाई यह है कि अगर आप को एक बैंक द्वारा जारी यात्री चैक किसी अन्य बैंक से भुनाना हो तो उस में वह बैंक अनेक दिक्कतें पैदा करता है. इस समस्या को तभी हल किया जा सकता है कि जब हर बैंक एक समान यात्री चैक जारी करे, जिस का हर बैंक द्वारा भुगतान किया जा सके.

पैसा आने में देरी

अगर आप किसी दूसरे शहर का चैक अपने खाते में जमा करवाते हैं तो आप के खाते में पैसा आने में 15-20 दिन लग जाना मामूली बात है. ऐसी हालत में चैक जमा करवाने से ले कर खाते में पैसा आने तक की अवधि का उस पैसे पर ब्याज भी नहीं मिलता और बैंक द्वारा की गई इस देरी का नुकसान ग्राहक को उठाना पड़ता है. इस बारे में यह सुझाव दिया गया है कि 2,500 रुपए तक की रकम का चैक होने पर ग्राहक के खाते में वह राशि उसी समय जमा कर देनी चाहिए, यदि बैंक की गलती से पैसा खाते में आने में देरी होती है तो बैंक को जुरमाने के रूप में उस अवधि का ब्याज अदा करना चाहिए. इस के लिए यह जरूरी है कि सरकार यह कानून बनाए कि अगर किसी चैक का भुगतान नहीं हो पाता है तो उस को जारी करने वाले व्यक्ति के खिलाफ कानूनी काररवाई करने का अधिकार बैंक को हो और झूठा चैक देना कानूनन अपराध माना जाए, पर उस व्यक्ति के खिलाफ कारवाई तभी की जाए जब संबंधित बैंक उस के विरुद्ध

कारखाई करना चाहे.

इस व्यवस्था की सिफारिश इसलिए की गई है, क्योंकि कई बार लोग खाते में पैसा न होते हुए भी जानबूझ कर चैक दे डालते हैं या कई बार धोखाधड़ी के इरादे से ऐसा करते हैं. ऐसी हालत में बैंक को यह भी अधिकार देना जरूरी हैं कि वह अपनी इच्छा के अनुसार ही कानूनी कारखाई करे, जिस से निर्दोष व्यक्तियों को बचाया जा सके.

ऋण लेना एक समस्या

बैंकों से ऋण लेते समय बहुत सी समस्याओं का सामना करना पड़ता है. बैंक द्वारा बहुत लंबी कागजी खानापूरी करवाई जाती है. ऐसी जानकारी व आंकड़े मांगे जाते हैं, जिन का कोई उपयोग नहीं होता है. कर्जदारों की समस्याओं को दूर करने के लिए बैंकों को यह सुझाव दिया गया है कि वे बजाए कागजी खानापूरी करने के छोटे उद्योगों, लघु व्यवसायियों या कमजोर वर्ग के लोगों को ऋण देते समय इस ओर ज्यादा ध्यान दें कि ऋण मांगने वाले की योजना व्यावहारिक हो, वह ईमानदार लगता हो, उस के पास अनुभव हो व उसे दिया गया पैसा सुरक्षित रहे.

खासतौर से उस से ऋण की अदायगी की किस्तें तय करते समय इस ओर ध्यान देना बहुत जरूरी है कि क्या वास्तव में वह उतनी किस्त अदा कर सकेगा. उस की किस्तें तय करते समय उस के परिवार के आवश्यक खर्चों को भी ध्यान में रखना चाहिए. यदि किसी व्यक्ति को कर्ज न दिया जा रहा हो तो उस को वे कारण भी बताने चाहिएं जिन की वजह से उसे कर्जा नहीं मिल पा रहा है.

इस दल ने बैंक के कर्मचारियों की गतिविधियों व उन के व्यवहार का भी बहुत गहराई से अध्ययन किया था. उस ने अपनी जांच में यह पाया कि कर्मचारी देर से आते हैं और जल्दी चले जाते हैं. काम के समय में भी बातचीत करते रहते हैं या चाय पीते रहते हैं. दल ने यह सिफारिश की थी कि कर्मचारियों के व्यक्तिगत फोन पर प्रतिबंध लगाया जाए और काम के समय उन के परिचितों को बैंक में उन से मिलने की छूट न दी जाए, क्योंकि इस से ग्राहकों को बहुत असुविधा होती है.

शाखा प्रबंधक को ये अधिकार दिए जाने चाहिए कि वह अनुशासनहीन कर्मचारियों के खिलाफ कारखाई करे. उन की हर अनुशासनहीनता, शिकायत व गलती का ब्योरा रखा जाए व उन्हें पदोन्नति देते समय इस ओर विशेष ध्यान दिया जाए. उन के बीच काम का बंटवारा उन की वरिष्ठता के आधार पर नहीं, बल्कि योग्यता के आधार पर किया जाना चाहिए.

हर कर्मचारी की मेज या काउंटर के आगे उस के नाम की तख्ती होनी चाहिए, जिस से उस के द्वारा दुर्व्यवहार करने पर ग्राहक को उस के खिलाफ शिकायत करने में आसानी रहे. इस के लिए यह आवश्यक है कि हर शाखा में शिकायत व सुझाव पेटी उपलब्ध हो. वहां खाली कागज रखे जाएं. इस पेटी को हर महीने शाखा प्रबंधक खुद खोले. प्रत्येक शिकायत को रजिस्टर में दर्ज किया जाए व उस पर क्या कारखाई की गई, इस बारे में ग्राहक को भी तुरंत सूचित किया जाए

अयोग्य प्रबंधक

शाखा प्रबंधक उसी व्यक्ति को बनाया जाए, जिस में नेतृत्व की क्षमता और पर्याप्त अनुभव हो और जो खुद निर्णय ले सकने की योग्यता रखता हो. कर्मचारियों के व्यवहार कुशल व मधुर स्वभाव का होने के साथसाथ उन्हें बैंक के सामान्य कामकाज की भी पूरी जानकारी होनी चाहिए, जिस से वे ग्राहक को बैंक के बारे में विभिन्न प्रकार की जानकारी दे सकें.

अध्ययन दल का यह विचार था कि सामान्य कामकाज में सब से ज्यादा गतिरोध कर्मचारी संघ पैदा करते हैं. जैसे वे यह निर्धारित कर देते हैं कि कोई कर्मचारी कितने बिल निबटाएगा या ड्राफ्ट बनाएगा अथवा नोटों की कितनी गड्डियां गिनेगा. यह भी देखने को मिलता है कि कोई कर्मचारी जिस सीट पर बैठा काम कर रहा होता है, वहां का
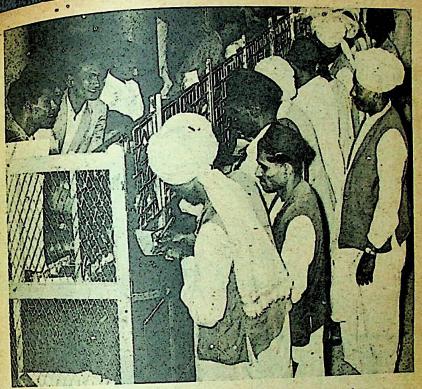
लंबी कतारें और निष्क्रिय कर्मचारी.

काम खत्म हो जाने पर दूसरा कोई काम करने से स्पष्ट इनकार कर देता है.

वरिष्ठ कर्मचारी डिस्पैच का काम करने, पासबुक में प्रविष्टियां करने या डे बुक लिखने से मना कर देते हैं. क्लर्क टाइपिस्ट का काम करने से मना कर देता है तो कैशियर यह कह देता है कि या तो वह क्लर्क की तरह काम करेगा अथवा कैशियर की तरह. संदेशवाहक दफ्तरी का काम करने से मना कर देता है व दफ्तरी संदेशवाहक का. ये लोग खिड़की, मेजों आदि की सफाई करने को भी तैयार नहीं होते.

क्लर्क व अफसर यह कह देते हैं कि जब तक उन की मेज पर वाउचर लैजर नहीं पहुंचाए जाएंगे, वे काम नहीं करेंगे. हैड क्लर्क- क्लर्क का काम नहीं करता. जरूरत पर समय समाप्त होने के बाद शाखा प्रबंधक के कहने के बावजूद कैशियर भुगतान नहीं करता. यहां तक कि यदि लैजर भारी हो तो चपरासी उसे उठाने से मना कर देता है. यह सब कामचोरी व अनुशासनहीनता के ऐसे उदाहरण हैं जो आए दिन बैंकों में देखने को मिलते हैं.

बैंकों की सेवाओं के संबंध में इस दल द्वारा किया गया अध्ययन व उस की सिफारिशें वास्तव में महत्त्वपूर्ण थीं. अगर उन्हें ज्यों का त्यों लागू कर दिया जाता तो बैंकों की वर्तमान सेवा के स्तर में बहुत कुछ सुधार लाया जा सकता था.

इस अध्ययन दल की कितनी उपयोगिता रही और उस की सिफारिशों पर सरकार ने कितना ध्यान दिया, इस का अंदाजा बैंक का कोई भी ग्राहक खुद ही बैंक की सेवा के स्तर से लगा सकता है. ●

लखपतिया की बातों और उस के व्यवहार से मैं उस से गहरा जुड़ाव महसूस करने लगा था, पर अंत में मैं चाह कर भी उस की मदद क्यों नहीं कर सका?

लखपतिया

कहानी • कृष्णकांत
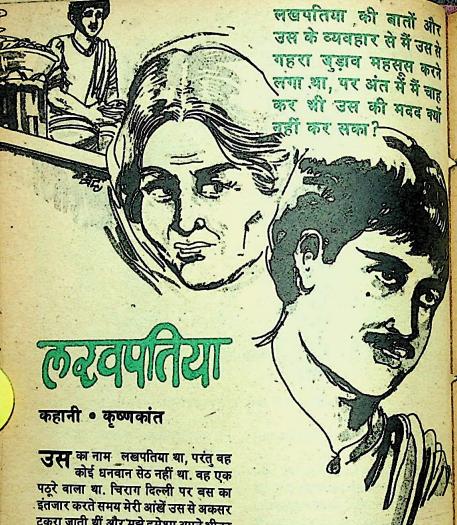
उस का नाम लखपतिया था, परंतु वह कोई धनवान सेठ नहीं था. वह एक पठूरे वाला था. चिराग दिल्ली पर बस का इंतजार करते समय मेरी आंखें उस से अकसर टकरा जाती थीं और मुझे हमेशा अपने भीतर कुछ अजीब सा महसूस होता, जैसे उस की आंखों में वह सब कुछ है, जो इस शहर के लाखों लोगों की आंखों में नहीं है.

दिल्ली में जहां लोग विना टिकट बस में सफर करते समय राजनीति पर जोरशोर से बहस करते हैं, नेताओं को गाली देते हैं, चिराग दिल्ली मोड़ पर लखपतिया खामोश छोलेपठूरे बेचता हुआ मुझे एक अजीब सा एहसास देता था.

एक बार उस से छोलेपठूरे खाते हुए मैं ने पूछ ही लिया, "कहां के रहने वाले हो?"

उस ने आश्चर्य से मेरी ओर देखा, जैसे मैं कोई अजूबा हूं, फिर धीरे से बोला, "बाबूजी, प्याज और लेंगे आप?"

महानगर में रहने वाले आदमी में झूठी प्रतिष्ठा और अहं का ज्यादा बोध होता है. मैं अधखाए पठूरे छोड़ कर ही उठ गया. हाथ धो कर झटके से उस की ओर नोट बढ़ा दिया. सहजता से नोट ले कर, सिर झुकाए हुए वह धीरे से बोला, "बाबूजी आप को खाने पर गुस्सा नहीं करना चाहिए था. मैं झांसी से आया हूं, एक रंडी की औलाद हूं और आप

क्या जानना..." मैं उस की बात अनसुनी करता सिर झुकाए बाहर आ गया.

भावनाओं की अपनी भाषा होती है. कभी तो हम घंटों बोल कर भी अपने आप को व्यक्त नहीं कर पाते और कभी बिना बोले ही बहुत कुछ कह जाते हैं. लखपतिया ने अपने दो ही वाक्यों में अपनी पूरी जिंदगी खोल कर रख दी थी.

एक ऐसा आदमी, जिस का बचपन दूसरों का तिरस्कार सहते हुए बीता है. शायद, उस ने अपनी आंखों से अपनी मां को कई मर्दों के साथ...एक नई जिंदगी जीने की लालसा में वह अपने अतीत को झांसी में छोड़ आया है, परंतु स्वयं को उस से किसी न किसी रूप में जुड़ा पाता है.

शायद उस ने सोचा होगा कि मैं दोबारा उस की दुकान पर नहीं जाऊंगा. इसलिए जब दूसरे दिन मैं वहां पहुंचा तो उसे आश्चर्य हुआ, परंतु वह बोला कुछ नहीं. इस के बाद मेरी शामें उस की दुकान पर गुजरने लगीं. अकसर शाम को मेरे पास कुछ करने के लिए नहीं होता था. चाय के घूंट पीता हुआ मैं उस शांत ज्वालामुखी को देखता रहता. कभी उस के बचपन और कभी जवानी के बारे में सोचता रहता.

एक बार उस ने पूछा, "बाबूजी, आप की मेमसाहब कहां हैं?"

मैं मुसकरा कर बोला, "दिल्ली में हैं."

"आप की लड़ाई हो गई क्या बाबूजी?"

"नहीं लखपतिया, अभी मेरी सिर्फ मंगनी हुई है." मैं सोचने लगा कि जब प्रिया को मेरे इस नए दोस्त के बारे में पता चलेगा तब उस की क्या प्रतिक्रिया होगी. क्या, वह यह सब कुछ देख पाएगी जो मैं ने देखा है.

"बाबूजी, यदि आप झांसी में होते तो अब तक आप की पांच बार शादी हो चुकी होती," वह बोला. मुझे बहुत जोर से हंसी आ गई. मैं ने उस से पूछा, "तुम्हारी कितनी शादियां हो चुकी हैं?"

इस पर वह खामोश हो गया, शायद उसे मुझ से इस सवाल की उम्मीद नहीं थी, मैं ने आगे कहा था, "शायद मेरी बात से तुम्हें दुख हुआ है."

"नहीं बाबूजी, दुख और सुख तो मन के अंदर से होता है. मेरी शादी हुई थी, परंतु वह लड़की भी अपनी मरजी में मेरी मां की तरह..." इतना कह कर वह मेरी आंखों में देखने लगा. वे आंखें मैं शायद कभी नहीं भूल पाऊंगा. शायद वे आंखें पूछ रही थीं—जिंदगी हर मोड़ पर ठोकरें क्यों खिलाती है?

कुछ दिनों बाद मुझे किसी काम से झांसी जाना पड़ गया. जाने के पहले मैं ने यों ही उस से पूछ लिया, "लखपतिया, अगले

हफ्ते झांसी जा रहा हूं, कोई काम हो तो बताना"

यह सुन कर वह कुछ उदास सा हो गया, बोला, "कोई काम नहीं बाबूजी." फिर अचानक एक दिन मेरे दफ्तर आ गया. उस के हाथ में एक छोटा सा डब्बा था, "बाबूजी, यदि कष्ट न हो तो यह छोटी सी चीज मेरे दोस्त के घर भिजवा दीजिएगा. सीपरी बाजार में ही उस का घर है. पता डब्बे पर लिख दिया है."

मैं ने मन ही मन बोझ महसूस किया. मैं और और प्रिया साथसाथ जाने का कार्यक्रम बनाए हुए थे. प्रिया के चाचा का घर था झांसी में, उसे पता चल गया तो बहुत गुस्सा करेगी. सारा समय सफाई देने में ही निकल जाएगा. निदेशक की लड़की, जिस ने जिंदगी में कभी अभाव नहीं देखा, क्या लखपतिया को समझ पाएगी? मैं मन ही मन खुद को कोसने लगा कि क्यों मैं ने अपने झांसी जाने की बात लखपतिया को बताई.

मुझे चुप देख कर वह बोला, "बाबूजी, आप को शायद ज्यादा काम होगा, छोड़िए, उन्होंने ही मुझे क्या दिया है जो मैं..." पर मैं ने उस का मन रखने के लिए कहा, "नहीं, ऐसी कोई बात नहीं है. अच्छा, तुम्हें मेरा दफ्तर कैसे पता लगा." यह सुन कर वह सिर्फ मुसकरा दिया, "अच्छा बाबूजी, अब मैं चलता हूं, ग्राहक गाली दे रहे होंगे."

उस के जाने के बाद, मैं अपने, लखपतिया और प्रिया के त्रिकोण के बारे में सोचता रहा. मैं लखपतिया को छोड़ना नहीं चाहता और प्रिया को भी नहीं छोड़ सकता. लखपतिया से मुझे सिर्फ हमदर्दी हो ऐसा नहीं है, मुझे उस से गहरा लगाव हो गया है. प्रिया को मैं बेइंतहा प्यार करता हूं. प्रिया को अभी तक इस बारे में कुछ पता नहीं है, परंतु वह हरगिज पसंद नहीं करेगी कि मैं छोले वालों से दोस्ती करूं. इस विषय में कोई दलील सुनना भी पसंद नहीं करेगी वह. मैं ने निर्णय लिया कि मैं लखपतिया के पास जाना बंद कर दूंगा, परंतु मैं अपने निर्णय से खुश नहीं था.

झांसी में प्रिया के चाचा का घर रेलवे स्टेशन के पास ही था. मैं शाम को बहाना बना कर पैदल ही सीपरी बाजार चला गया. लखपतिया के दोस्त ने मुझे बताया कि किस तरह से एक अनाथ लड़का लखपतिया किसी वेश्या के फेंके हुए टुकड़ों पर पल कर बड़ा हुआ. उस की मां कहलाने वाली औरत और ग्राहकों का उस से व्यवहार, उस की एक वेश्या से शादी और फिर उस की पत्नी का उसे छोड़ देना...मुझे ऐसा लग रहा था कि यह सब सिर्फ कहानी है. लखपतिया इतना सब कैसे बरदाश्त कर गया? "उस में बहुत धीरज है बाबूजी," उस का दोस्त बोला, "मेरा नमस्ते बोल दीजिएगा. मैं उस से मिलूंगा नहीं, उसे बीती बातें याद नहीं दिलाना चाहता."

दिल्ली वापस आ कर मैं पहले ही दिन उस की दुकान पर गया, उस के दोस्त का नमस्कार उस तक पहुंचाने के लिए, फिर मैं ने अपने निर्णय के अनुसार अपनी शामें कहीं और बिताना शुरू कर दीं, पर रात को जब भी लेटता, उस का चेहरा आंखों के सामने घूम जाता. इस तरह से एक महीना गुजरा गया.

फिर मैं एक दिन दफ्तर पहुंचा तो देखा कि लखपतिया सीढ़ियों पर बैठा हुआ है. मुझे देखते ही मुसकरा कर बोला, "मुझ से कोई गलती हो गई है क्या? आप ने आना बंद कर दिया."

"नहीं लखपतिया, आजकल दफ्तर में ज्यादा काम है. मैं सोच रहा था कि आज से..." मुझ से आगे न बोला गया.

उस की आंखों से लगा कि उस ने मेरे मन की बात भांप ली है. बोला, "दोस्त की चिट्ठी आई है कि झांसी में मां बीमार है. बुढ़ापे का कोई सहारा नहीं होता, बाबूजी. मैं चाहता हूं कि कुछ रुपए भेज दूं. यदि आप मुझे सौ रुपए दे सकें तो बड़ी कृपा होगी. मैं आप को अगले महीने लौटा दूंगा."

मैं एकटक उस के चेहरे को देखता रहा. वह आगे बोला, "बाबूजी, आप सोच रहे होंगे कि लखपतिया पागल हो गया है, परंतु वह

मेरी मां है. उस ने मेरे लिए क्या किया इस का हिसाब मैं क्यों करूं. आज उस की जरूरत के वक्त मैं अपने कर्तव्य से पीछे क्यों हटूं.?"

"लखपतिया, मुझे तुम्हारी कहानी पता है. पहली बात तो यह कि वह तुम्हारी मां नहीं है. एक वेश्या को अपने ग्राहकों के लिए एक नौकर की जरूरत थी, जो उस ने तुम्हारे रूप में ढूंढ़ लिया था. दूसरी बात यह कि मैं ऐसी औरतों से नफरत करता हूं और यदि तुम चाहो तो मैं ज्यादा रुपए भी दे सकता हूं, परंतु ऐसे लोगों के लिए नहीं. इन सब झंझटों में मुझे मत घसीटो."

उसे मेरे शब्दों पर विश्वास नहीं हुआ. शायद पहली बार मैं ने उस से इस लहजे में बात की थी. सिर झुका कर वह धीरे से बोला, "बाबूजी, आप सच कहते हैं, परंतु लखपतिया उसी औरत के टुकड़ों पर पल कर बड़ा हुआ है. ग्राहक या वेश्या होना तो सब देख लेते हैं, परंतु वही औरत कभीकभी मेरे सिर पर स्नेह से हाथ फेरा करती थी. शायद, मां बनने की चाह उस में भी होगी. नफरत करना सब के लिए इतना आसान नहीं होता. बाबूजी, माफ कीजिएगा, मैं ने आप को कष्ट दिया." हाथ जोड़ कर, वह तुरंत वापस चल दिया.

मैं उसे आवाज दे कर रोक सकता था, परंतु मैं ने ऐसा नहीं किया. शायद अपने मन की कमजोरी के कारण या शायद मैं अब उस की दोस्ती के काबिल नहीं रहा था.

कुछ दिनों बाद जब मैं चिराग दिल्ली से गुजरा तो उस की दुकान पर अनायास नजर गई. दुकान बंद थी. पूछने पर लोगों ने बताया कि वह सब कुछ बेच कर कहीं चला गया है. अब जब भी दिल्ली की सड़कों से गुजरता हूं तो महसूस होता है कि किसी मोड़ पर लखपतिया खामोश छोलेपठूरे बेच रहा होगा. कानों में आवाज गूंजती है—"बाबूजी प्याज और लेंगे आप?" ●

हफ्ते झांसी जा रहा हूं, कोई काम हो तो बताना"

यह सुन कर वह कुछ उदास सा हो गया, बोला, "कोई काम नहीं बाबूजी." फिर अचानक एक दिन मेरे दफ्तर आ गया. उस के हाथ में एक छोटा सा डब्बा था, "बाबूजी, यदि कष्ट न हो तो यह छोटी सी चीज मेरे दोस्त के घर भिजवा दीजिएगा. सीपरी बाजार में ही उस का घर है. पता डब्बे पर लिख दिया है."

मैं ने मन ही मन बोझ महसूस किया. मैं और और प्रिया साथसाथ जाने का कार्यक्रम बनाए हुए थे. प्रिया के चाचा का घर था झांसी में, उसे पता चल गया तो बहुत गुस्सा करेगी. सारा समय सफाई देने में ही निकल जाएगा. निदेशक की लड़की, जिस ने जिंदगी में कभी अभाव नहीं देखा, क्या लखपतिया को समझ पाएगी? मैं मन ही मन खुद को कोसने लगा कि क्यों मैं ने अपने झांसी जाने की बात लखपतिया को बताई.

मुझे चुप देख कर वह बोला, "बाबूजी, आप को शायद ज्यादा काम होगा, छोड़िए, उन्होंने ही मुझे क्या दिया है जो मैं..." पर मैं ने उस का मन रखने के लिए कहा, "नहीं, ऐसी कोई बात नहीं है. अच्छा, तुम्हें मेरा दफ्तर कैसे पता लगा." यह सुन कर वह सिर्फ मुसकरा दिया, "अच्छा बाबूजी, अब मैं चलता हूं, ग्राहक गाली दे रहे होंगे."

उस के जाने के बाद, मैं अपने, लखपतिया और प्रिया के त्रिकोण के बारे में सोचता रहा. मैं लखपतिया को छोड़ना नहीं चाहता और प्रिया को भी नहीं छोड़ सकता. लखपतिया से मुझे सिर्फ हमदर्दी हो ऐसा नहीं है, मुझे उस से गहरा लगाव हो गया है. प्रिया को मैं बेइंतहा प्यार करता हूं. प्रिया को अभी तक इस बारे में कुछ पता नहीं है, परंतु वह हरगिज पसंद नहीं करेगी कि मैं छोले वालों से दोस्ती करूं. इस विषय में कोई दलील सुनना भी पसंद नहीं करेगी वह. मैं ने निर्णय लिया कि मैं लखपतिया के पास जाना बंद कर दूंगा, परंतु मैं अपने निर्णय से खुश नहीं था.

झांसी में प्रिया के चाचा का घर रेलवे स्टेशन के पास ही था. मैं शाम को बहाना बना कर पैदल ही सीपरी बाजार चला गया. लखपतिया के दोस्त ने मुझे बताया कि किस तरह से एक अनाथ लड़का लखपतिया किसी वेश्या के फेंके हुए टुकड़ों पर पल कर बड़ा हुआ. उस की मां कहलाने वाली औरत और ग्राहकों का उस से व्यवहार, उस की एक वेश्या से शादी और फिर उस की पत्नी का उसे छोड़ देना...मुझे ऐसा लग रहा था कि यह सब सिर्फ कहानी है. लखपतिया इतना सब कैसे बरदाश्त कर गया? "उस में बहुत धीरज है बाबूजी," उस का दोस्त बोला, "मेरा नमस्ते बोल दीजिएगा. मैं उस से मिलूंगा नहीं, उसे बीती बातें याद नहीं दिलाना चाहता."

दिल्ली वापस आ कर मैं पहले ही दिन उस की दुकान पर गया, उस के दोस्त का नमस्कार उस तक पहुंचाने के लिए, फिर मैं ने अपने निर्णय के अनुसार अपनी शामें कहीं और बिताना शुरू कर दीं, पर रात को जब भी लेटता, उस का चेहरा आंखों के सामने घूम जाता. इस तरह से एक महीना गुजर गया.

फिर मैं एक दिन दफ्तर पहुंचा तो देखा कि लखपतिया सीढ़ियों पर बैठा हुआ है. मुझे देखते ही मुसकरा कर बोला, "मुझ से कोई गलती हो गई है क्या? आप ने आना बंद कर दिया."

"नहीं लखपतिया, आजकल दफ्तर में ज्यादा काम है. मैं सोच रहा था कि आज से..." मुझ से आगे न बोला गया.

उस की आंखों से लगा कि उस ने मेरे मन की बात भांप ली है. बोला, "दोस्त की चिट्ठी आई है कि झांसी में मां बीमार है. बुढ़ापे का कोई सहारा नहीं होता, बाबूजी. मैं चाहता हूं कि कुछ रुपए भेज दूं. यदि आप मुझे सौ रुपए दे सकें तो बड़ी कृपा होगी. मैं आप को अगले महीने लौटा दूंगा."

मैं एकटक उस के चेहरे को देखता रहा. वह आगे बोला, "बाबूजी, आप सोच रहे होंगे कि लखपतिया पागल हो गया है, परंतु वह

मेरी मां है. उस ने मेरे लिए क्या किया इस का हिसाब मैं क्यों करूं. आज उस की जरूरत के वक्त मैं अपने कर्तव्य से पीछे क्यों हटूं.?"

"लखपतिया, मुझे तुम्हारी कहानी पता है. पहली बात तो यह कि वह तुम्हारी मां नहीं है. एक वेश्या को अपने ग्राहकों के लिए एक नौकर की जरूरत थी, जो उस ने तुम्हारे रूप में ढूंढ लिया था. दूसरी बात यह कि मैं ऐसी औरतों से नफरत करता हूं और यदि तुम चाहो तो मैं ज्यादा रुपए भी दे सकता हूं, परंतु ऐसे लोगों के लिए नहीं. इन सब झंझटों में मुझे मत घसीटो."

उसे मेरे शब्दों पर विश्वास नहीं हुआ. शायद पहली बार मैं ने उस से इस लहजे में बात की थी. सिर झुका कर वह धीरे से बोला, "बाबूजी, आप सच कहते हैं, परंतु लखपतिया उसी औरत के टुकड़ों पर पल कर बड़ा हुआ है. ग्राहक या वेश्या होना तो सब देख लेते हैं, परंतु वही औरत कभीकभी मेरे सिर पर स्नेह से हाथ फेरा करती थी. शायद, मां बनने की चाह उस में भी होगी. नफरत करना सब के लिए इतना आसान नहीं होता. बाबूजी, माफ कीजिएगा, मैं ने आप को कष्ट दिया." हाथ जोड़ कर, वह तुरंत वापस चल दिया.

मैं उसे आवाज दे कर रोक सकता था, परंतु मैं ने ऐसा नहीं किया. शायद अपने मन की कमजोरी के कारण या शायद मैं अब उस की दोस्ती के काबिल नहीं रहा था.

कुछ दिनों बाद जब मैं चिराग दिल्ली से गुजरा तो उस की दुकान पर अनायास नजर गई. दुकान बंद थी. पूछने पर लोगों ने बताया कि वह सब कुछ बेच कर कहीं चला गया है. अब जब भी दिल्ली की सड़कों से गुजरता हूं तो महसूस होता है कि किसी मोड़ पर लखपतिया खामोश छोलेपठूरे बेच रहा होगा. कानों में आवाज गूंजती है—"बाबूजी प्याज और लेंगे आप?" ●

हमारे बैंक के चपरासी किशोरीलाल को बातबात में, "बाबूजी, और भी तो चपरासी हैं. उन से कहिए न." कहने की आदत थी.

मुख्य अधिकारी का सहायक होने के नाते अकसर टेलीफोन मुझे ही सुनने पड़ते थे. एक बार किशोरीलाल के लिए किसी का टेलीफोन आया. मैं ने उस का नाम ले कर पुकारा तो उस ने तुरंत कहा, "बाबूजी, किसी और से कहिए न," लेकिन वास्तविकता जानने के बाद वह बहुत लज्जित हुआ और फिर उस ने यह वाक्य कभी नहीं दोहराया.—अनिल गुप्ता

*

हमारे कार्यालय में एक ही टाइपिस्ट होने के नाते अकसर उस के कार्य और उस की प्रशंसा होती रहती है, लेकिन वह किसी भी दिन समय से नहीं आता.

हमारे साथियों ने उस से कहा कि उस की कार्यकुशलता पर 26 जनवरी को बोर्ड ने उसे पुरस्कृत करने का फैसला किया है. यह सुन कर वह इतना खुश हुआ कि उस ने उस की चर्चा अपने दोस्तों से की और समय पर कार्यालय आने लगा.

जब 26 जनवरी को उसे पुरस्कार नहीं मिला तो वह बहुत दुखी हुआ. इस पर एक मित्र ने उसे डायरी देते हुए कहा, "इसे सांत्वना पुरस्कार समझ लो."

बाद में जब उसे पता चला कि उस के समय पर कार्यालय न आने के कारण ही साथियों ने यह नाटक रचा था, तो दूसरे दिन से वह समय पर कार्यालय आने लगा. —ज.क. भिमटे

*

हमारे दफ्तर में नियुक्त हुए नए चपरासी ने पहले ही दिन हमें रसगुल्ले खिलवा दिए. इस का कारण यह था कि उक्त चपरासी कम सुनता था.

हुआ यह कि प्रबंधक ने उसे 10 रुपए का नोट देते हुए कहा कि इस के 'खुल्ले' ले आओ. काफी देर बाद वह लौटा तो उस के हाथ में एक पैकेट था. प्रबंधक ने उस से पूछा, "यह क्या है? खुल्ले नहीं लाए?"

वह बोला, "साहब, रसगुल्ले ही हैं."

यह सुन कर प्रबंधक को उस के कम सुनने का एहसास हुआ और उन्होंने चुपचाप पैकेट ले कर सभी कर्मचारियों में रसगुल्ले बांट दिए. —भीमसेन अरोड़ा पप्पू

*

हमारे कार्यालय में फरवरी माह के अंतिम दिन पत्रक पर हस्ताक्षर करने के बाद हमारे कक्ष के एक लिपिक ने देखा कि 29, 30, 31 तारीख के खाने में किसी ने पहले से ही क्रास कर दिया है. इस तरह का निशान अवकाश के दिनों में किया जाता है. लिपिक ने बड़े आश्चर्य से कक्ष में उपस्थित अन्य कर्मचारियों से पूछा कि 29, 30, 31 की छुट्टी क्यों है.

यह सुन कर अन्य सभी लिपिक हंसने लगे. बाद में लिपिक को पता चला कि फरवरी माह 28 दिन का ही था. —राधाराय चंदानी

मैं सिंचाई विभाग में कार्यरत था. हमारे बड़े बाबू कुछ चिड़चिड़े स्वभाव के थे. एक दिन एक ठेकेदार मिट्टी के कार्य के लिए इकरारनामा करवाने आया. वह बड़े बाबू से नमस्कार कर के बोला, "मुझे मिट्टी के कार्य के लिए इकरारनामा करवाना है."

बड़े बाबू किसी कार्य में व्यस्त थे. वह बोले, "आप तमीज से बात करिए."

ठेकेदार कुछ देर खामोश रहा, लेकिन फिर उस ने अपनी बात दोहराई. तो बड़े बाबू ने जोर से कहा, "आप तमीज से बात करिए."

अब ठेकेदार सकपका गया. उस ने कहा, "हजूर, मुझ से ऐसी कौन सी गलती हो गई है कि आप..."

तभी हम लोग हंस पड़े. जब ठेकेदार को बताया गया कि इस कार्य से संबंधित लिपिक का नाम तमीज अहमद है और बड़े बाबू उस से उसी लिपिक से बात करने को कह रहे हैं तो उस की सूरत देखने लायक थी.
—क.प. सिंह तरकर

*

मैं मध्यप्रदेश विद्युत विभाग में कार्यरत था. हमारा एक चपरासी अकसर काम बताते ही बीड़ी की फरमाइश करने लगता था. उस की इस आदत से सभी परेशान थे. हम लोगों ने उस की आदत छुड़ाने का फैसला किया.

एक दिन उसे एक बीड़ी पीने को दी गई और कहा गया कि इस में गांजा भरा हुआ है, बहुत स्वाद आएगा.

लालची चपरासी ने उसे तुरंत ही सुलगा कर कश लेना शुरू कर दिया. वास्तव में उस में लालमिर्च का पाउडर भी भरा था. आखिर उसे बहुत जोरों से खांसी आने लगी और आंखों से पानी बहने लगा. तब उसे वास्तविकता का पता लगा.

उसी दिन से उस की बीड़ी की फरमाइश करने की आदत छूट गई. —क.क. जोशी

*

मेरे दफ्तर में एक मनोहरजी हैं, जिन्हें सिनेमा देखने का बड़ा शौक है. अकसर वह दफ्तर से सिनेमा देखने चले जाते हैं. वह जाते वक्त अपने जूते अपनी मेज के नीचे छोड़ जाते हैं, जिस से यदि कोई व्यक्ति उन से मिलने के लिए आए तो मेज के नीचे उन के रखे जूते देख कर सहज अनुमान लगा ले कि वह यहीं कहीं होंगे और उन का इंतजार करता रहे.

जब यह बात दफ्तर के अधिकारी को पता लगी तो वह उन से बहुत कड़कड़ाती आवाज में बोले, "क्यों महोदय, आप जूते मेज के नीचे रख कर घंटों गायब रह कर सिनेमा देखते हैं."

उन्होंने बड़ी नम्रता से उत्तर देते हुए कहा, "जब रामचंद्र की खड़ाऊं से 14 वर्ष राजकाज चल सकता है तो क्या मेरे जूतों से दफ्तर का तीन घंटे का काम भी नहीं चल सकता." इतना सुन कर दफ्तर के सभी कर्मचारी हंसतेहंसते लोटपोट हो गए. —अनिलकुमार श्रीवास्तव ●

नौकरीपेशा व्यक्तियों को और किसी कार्यवश दफ्तरों में जाने वालों को दफ्तर में अनेक मनोरंजक स्थितियों से गुजरना पड़ता है और कई बार तो किस्सा बहुत ही दिलचस्प बन जाता है. क्या आप की दृष्टि में कोई इस प्रकार की घटना आई है, जो रोचक हो?

आप ऐसे संस्मरण 'मुक्ता' के लिए भेजिए. प्रत्येक प्रकाशित संस्मरण के लिए 15 रुपए की पुस्तकें पुरस्कार में दी जाएंगी. पत्र के साथ अपना नाम व पूरा पता अवश्य लिखें.

पत्र इस पते पर भेजिए :
संपादकीय विभाग, मुक्ता, ई-3, रानी झांसी मार्ग, नई दिल्ली-110055.

आपके बच्चे कल क्या बनते हैं

यह इस पर निर्भर करता है कि आप उन्हें आज पढ़ने के लिए क्या देते हैं

आपके बच्चों के लिए
स्कूल के पश्चात सिर्फ खेलना ही काफी नहीं.
उनको दीजिए सुमन सौरभ- दिल्ली प्रेस की नई पत्रिका
जी हां, वही दिल्ली प्रेस जो पिछले 40 वर्षों से
आपके पूरे परिवार के लिए सरिता, गृहशोभा, मुक्ता,
भूभारती, चंपक, कैरेवान और वूमंसईरा प्रकाशित
करते आ रहे हैं.

सुमन सौरभ आपके बच्चों का संतुलित विकास करने के लिए प्रकाशित की जा रही है.

सुमन सौरभ की शिक्षा पूर्ण कहानियां व रोचक स्तंभ आप के बच्चों को जीवन में आगे बढ़ने की प्रेरणा देंगे. उन का स्वस्थ मनोरंजन करने के साथसाथ उन को देश व समाज के प्रति अपना उत्तरदायित्व निभाने के लिए तैयार करेंगे.

हर महीने अपने बच्चों को ले कर दें

किशोरों को सही दिशा दिखाने वाली मनोरंजक पत्रिका
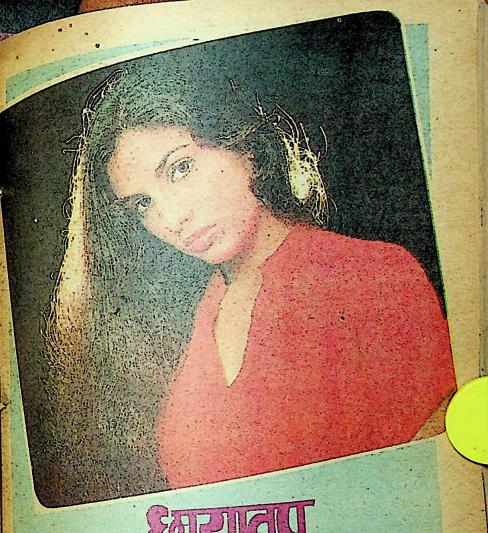
छायातप

हम तो उजड़े हुए गांव हैं.
कौन आंख में हमें बसाए?

ऐसी जगह समय ने छोड़ा
परिचित लगे अपरिचित जैसे.
अपने मन की सुविधा तक से
अब तक हम हैं वंचित जैसे.
बीहड़ वन में लगी आग को
देखे भी तो कौन बुझाए?

छुआ नहीं हो जिसे हवा ने
उसे गंध भी क्यों पहचाने?
सूखी आंखों के सपनों को
कोई सच भी कैसे माने?
कौन यहां जो पिघल रहे
लावे के घर में रात विताए?

मिटी हथेली की रेखाएं
कैसे रूप दिखें जीवन के?
अधरों से अधरों पर कोई
कैसे नाम लिखे यौवन के?
छाया तप में कटी जवानी
दुख भी कैसे गले लगाए?

—तारादत्त 'निर्विरोध

इस स्तंभ के लिए अपने रोचक संस्मरण भेजिए. उन्हें आप के नाम के साथ प्रकाशित किया जाएगा और प्रत्येक प्रकाशित संस्मरण पर 15 रुपए की पुस्तकें पुरस्कार में दी जाएंगी. संस्मरण के साथ अपना नाम व पता अवश्य लिखें.

भेजने का पता : संपादकीय विभाग, मुक्ता, ई-3, रानी झांसी मार्ग, नई दिल्ली-110055.

गणतंत्र दिवस को हमारे स्कूल में प्रधानाचार्य ध्वजारोहण करने वाले थे और छात्र झंडे को सलामी देने के लिए खड़े थे. ठीक समय पर प्रधानाचार्य ऊपरी मंजिल की ओर जाने लगे, जहां से उन्होंने ध्वजारोहण करना था. हमारे व्यायाम के शिक्षक ने माइक पर कहा, "सावधान, प्रधानाचार्य महोदय ऊपर चले गए हैं."

यह सुन कर शिक्षक हैरान रह गए और छात्र उन की ओर देख कर मुसकुराने लगे.

उन्होंने कड़कती हुई आवाज में फिर कहा, "सावधान हो जाओ. प्रधानाचार्य ऊपर चले गए हैं और ध्वजारोहण होने वाला है."

तभी एक छात्र ने चुटकी ली, "श्रीमानजी, अभी प्रधानाचार्य के ऊपर जाने का समय नहीं आया है."

यह सुन कर व्यायाम शिक्षक बहुत झेंपे और तुरंत अपनी गलती सुधारते हुए बोले, "प्रधानाचार्य महोदय, ध्वजारोहण हेतु तैयार हो गए हैं." —सोंधिया

*

हमारे महाविद्यालय के प्रधानाध्यापक बहुत ही छोटे कद के हैं और अपने मजाकिया स्वभाव के कारण पूरे महाविद्यालय में प्रसिद्ध हैं. एक बार हमारे यहां वादविवाद प्रतियोगिता हो रही थी. प्रतियोगिता का अध्यक्ष प्रधानाध्यापक महोदय को ही बनाया गया था. प्रधानाध्यापक वादविवाद प्रतियोगिता के ऊपर अपने विचार प्रकट करने उठे तो हाल में बैठे श्रोताओं में से एक ने कहा, "अरे छोटू, तेरी अम्मां बुला रही है." इतना सुनना था कि पूरा हाल स्तब्ध रह गया, किंतु अगले ही क्षण प्रधानाध्यापक ने कविता में कहा, "किस ने आवाज दी मुझे यह हाल के सूने कोने से, शायद ये वह उल्लू है जो बिछड़ गया है सोने से." और यह सुन कर पूरा हाल ठहाकों से गूंज उठा.

—विवेक दीक्षित

*

मैं बी.एससी. का छात्र था. सामान्य हिंदी की कक्षा में शिक्षक मुहावरों का प्रयोग बता रहे थे. उन्होंने 'नाकों चने चवाना' मुहावरे का प्रयोग करने के लिए एक छात्र से कहा, पर उसे मुहावरे का अर्थ ही नहीं मालूम था. शिक्षक ने उसे कई बार समझाया, लेकिन फिर भी वह समझ न सका. खीझ कर शिक्षक ने कहा, "यह लड़का एक छोटी सी बात पर मुझे नाकों चने चववा रहा है."

यह सुनना था कि सभी छात्र हंस पड़े और वह बुरी तरह झेंप गया.

—किशोरचंद्र कांतिलाल जोशी

*

हमारे स्कूल में एक नए शिक्षक आए थे. वह बहुत ही अच्छे शिक्षक थे. उस समय एक छात्र जो मेरे साथ पढ़ता था, अपनेआप को स्कूल का 'दादा' समझता था. एक दिन जब नए

शिक्षक हमारी कक्षा में पढ़ा रहे थे, तब वह छात्र कक्षा में सिगरेट पी रहा था. मास्टरजी ने उसे देखा, लेकिन कुछ बोले नहीं. इस तरह कई दिन तक उस लड़के ने तरहतरह की हरकतें कीं.

कुछ दिनों बाद स्कूल में वार्षिक उत्सव मनाया जा रहा था. नए शिक्षक ने एक नए प्रकार का पुरस्कार देने की घोषणा की. यह पुरस्कार सब से अच्छे छात्र को दिया जाने वाला था. पुरस्कार देते समय जब उसी छात्र का नाम बोला गया तो सब चौंक पड़े. छात्र ने कांपते हाथों से मुख्य अतिथि से पुरस्कार लिया और सामने बैठे नए शिक्षक के पांवों में गिर कर माफी मांगने लगा. बाद में वह छात्र एक आदर्श छात्र बन गया.

—सुबोध चौधरी

*

हमारे प्रधानाचार्य ने अपने इकलौते पुत्र के विलायत से डाक्टर बन कर आने की खुशी में पूरे स्कूल को भोज दिया था. स्कूल के प्रांगण में दरी की पट्टियां बिछा कर स्टील के बरतनों में स्वादिष्ट व्यंजन शुद्ध भारतीय रीति से परोसे गए थे.

दसवीं कक्षा के छात्र, जो अपने को बड़ा फैशनपरस्त समझते थे, जमीन पर बैठ कर खाने में नाकभौं चढ़ा रहे थे. तभी सामने से मुख्याध्यापक और उन के डाक्टर बेटे को आते देख कर वे सकपका गए और हड़बड़ाहट में पूछ बैठे, "श्रीमानजी, जूते उतार दें क्या?"

मुख्याध्यापक बड़े विनोदी स्वभाव के हैं. हंस कर बोले, "हां, हां, उतारोगे नहीं तो क्या खाओगे?"

—पिया कपूर

*

हमारे एक शिक्षक का भांजा हमारी कक्षा में पढ़ता था. फीस माफ कराने की बात चल रही थी. शिक्षक का भांजा वास्तव में गरीब था, लेकिन बाकी सभी लड़के धनी घरों के थे.

शिक्षक ने उस की फीस माफ नहीं कराई तो प्रधानाचार्य ने कहा, "कक्षा में सभी धनी घरों के लड़के हैं तो क्या हुआ, आप अपने भांजे की फीस माफ कराएं, इस में शरमाने की बात क्या है?"

शिक्षक ने कहा, "शरमाने की बात नहीं, वास्तव में मैं इस वजह से फीस नहीं माफ करा रहा कि कल को लड़के यह न कहने लगें कि मास्टरजी ने केवल अपने भांजे की ही फीस माफ कराई."

—जैक्सन टाटा

*

मैं उस समय दसवीं कक्षा में पढ़ता था. हमारे कक्षा अध्यापक जितने नम्र और मृदुल थे. उतने ही अनुशासनप्रिय भी थे. छोटी सी छोटी भूल के लिए कड़ी से कड़ी सजा देने के लिए वह मशहूर थे.

एक दिन किसी लड़के ने बादाम खा कर छिलके कक्षा में ही फेंक ही दिए. जब वह शिक्षक आए तो छिलके देख कर आग बबूला हो गए. उन्होंने जानना चाहा कि छिलके किस ने फेंके हैं, लेकिन डर के मारे किसी की हिम्मत यह बताने की नहीं हुई.

उन्होंने कक्षा के मानीटर से छड़ी लाने को कहा और स्वयं छिलके चुनने लगे. छिलके फेंकने वाले विद्यार्थी से यह नहीं देखा गया वह उन के सामने आ कर बोला, "श्रीमानजी, यह गलत काम मैं ने किया है."

यह कहते हुए वह लड़का डर के मारे थरथर कांप रहा था. सभी लोग सजा की कल्पना करने लगे, लेकिन उन्होंने जेब से एक रुपया निकाल कर उस लड़के को देते हुए कहा, "जाओ, इस के बादाम खा कर आओ, फिर ऐसी गलती नहीं करना."

हम सभी उन के इस नाटकीय व्यवहार को देख कर दंग रह गए.

—शिवचंद्र साह
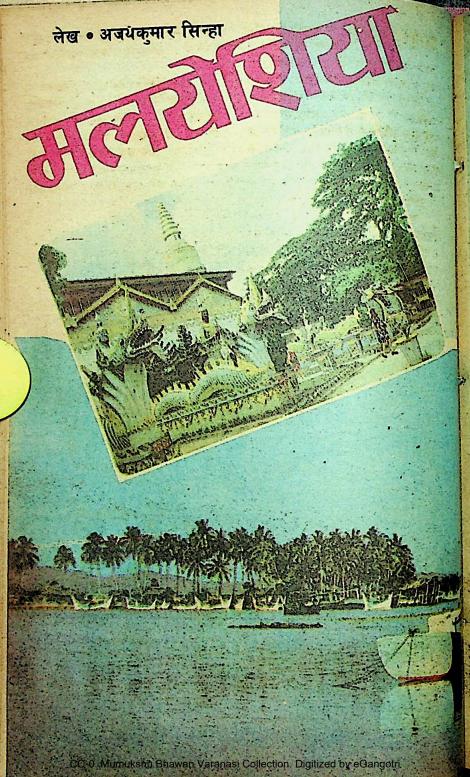
लेख • अजयकुमार सिन्हा

मलयेशिया

मलयेशिया के पेनांग द्वीप के चाइना टाउन में एक अत्यंत अलंकृत चीनी मंदिर है, जिस में ठीक पूजा स्थल पर पचासों जीवित विषैले नाग व सांप लटके हुए हैं. पूरे मंदिर में सब कहीं विषैले नाग ही लटके नजर आते हैं. ये नाग हरे और पीले रंगों के हैं. गैर चीनी लोग इन की वजह से मंदिर में जाने से डरते हैं, किंतु चीनी लोग धड़ल्ले से मंदिर में जाते और पूजा करते हैं. उन की मान्यता है कि मंदिर के घने धुएं से इन नागों का विष प्रभावहीन हो जाता है.

सचाई जो भी हो, पर इसी से मलयेशिया के अनोखेपन का आभास मिल जाता है. मलयेशिया के कुआला उंगन समुद्र तट पर, जो दक्षिणी चीन सागर का तट है, विश्व भर में दुर्लभ आधे टन (50 क्विंटल तक) भारी दैत्याकार कछुए पाए जाते हैं. इन की आयु एक हजार वर्ष होती है. मलयेशिया में घने जंगल भी हैं, जिन में हाथी, बाघ और धूम्रवर्ण के बंदर तथा खतरनाक दलदली क्षेत्र हैं.

मलयेशिया ही दुनिया का एकमात्र ऐसा देश है, जहां राजसिंहासन पर नौ राजवंशों का बारीबारी से (हर पांच वर्ष बाद) अधिकार होता है. ये राजवंश बारीबारी से प्रधान सुल्तान या शासक पांच वर्ष के लिए चुनते हैं.

केवल 19 वर्ष पहले मलयेशिया आज के रूप में सामने आया, किंतु इन्हीं 19 वर्षों में

प्राकृतिक सुंदरता से भरपूर यह देश किस प्रकार एशिया महाद्वीप के पिछड़ेपन को समाप्त करने में मदद कर रहा है?
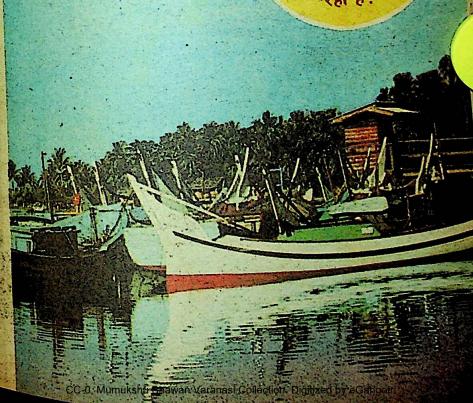
इस ने महत्त्वपूर्ण प्रगति की है और एक आधुनिक देश बन गया है. इस की आर्थिक प्रगति का अंदाजा इस की प्रति व्यक्ति वार्षिक आय से लगाया जा सकता है. इस दृष्टि से यह एशिया में चौथे नंबर पर है. यह 6,300 रुपए वार्षिक है, जब कि भारत की प्रति व्यक्ति वार्षिक आय केवल 1,590 रुपए ही है. मलयेशिया तीन अरब छः सौ करोड़ रुपए का माल हर साल निर्यात करता है, जिस में टिन, काली मिर्च, रबड़ आदि शामिल हैं.

यह तो रहे आर्थिक आंकड़े, किंतु यह देश और भी अनेक आश्चर्यों से भरा पड़ा है. इस के हाथी दांत के चमक वाले समुद्र तट पर मलमल जैसी मुलायम रेत है. यहां का आकाश गाढ़ा नीला है. चीनी और भारतीय मूल की लड़कियां यहां स्वच्छंद विचरण करती हैं. जंगलों में 60 मीटर ऊंचे वृक्ष हैं. 800 प्रकार के फूलों के पौधे यहां हैं. इन जंगलों में सफेद गैंडे भी पाए जाते हैं.

हर जगह फीकी हरितमणि के रंग सी शीतल और गहरी हरियाली फैली हुई है. वारिश खूब होने से यहां की मिट्टी से हरियाली फूट पड़ती है. ताड़ के वृक्ष, हिबिसकस के फूल छातों के आकार के विशाल फर्न घास और पपीते यहां खूब मिलते हैं. लान की घास रात भर में पांच सेंटीमीटर बढ़ जाती है.

यहां का प्रमुख खनिज टिन है और रबड़ के बागान और ताड़ का तेल यहां की प्रमुख

खेत में अनन्नास चुनती एक महिला मजदूर (बाएं) व राजधानी कुआलालंपुर का 'इंगलिश सेकेंडरी स्कूल' (नीचे).
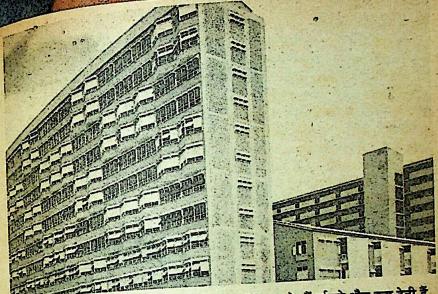
खूबसूरत व आधुनिक गगनचुंबी इमारतें मलयेशिया के सौंदर्य को और बढ़ा देती हैं.

संपदा है. कूटने पर ताड़ के एक फल से उस के वजन का 20 प्रतिशत तेल निकलता है, जिस में काफी प्रोटीन होती है. इस तेल का अनेक कार्यों में प्रयोग होता है.

मलयेशिया संघ में कुल 11 राज्य हैं, जिन में दो राज्य–सबाह और सारावाक बोर्नियो द्वीप (मलाया प्रायद्वीप से 650 किलोमीटर पूर्व में) पर हैं तथा शेष नौ राज्य

कुआलालंपुर का हवाई चित्रः मलयेशिया की प्रगति का साक्षी.
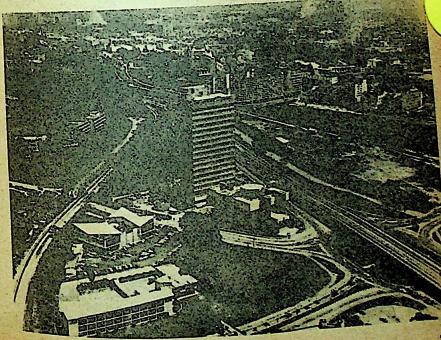
मलाया प्रायद्वीप में है.

1.10 करोड़ मलयेशियाई बहुभाषी हैं. दक्षिण तटीय गांवों में ये लोग लौहयुग में आ कर बस गए थे. लगभग 130 वर्ष पहले चीनी (जो जनसंख्या का 34 प्रतिशत हैं) टिन की खोज में यहां आए. भारतीय मूल के लोग, जिन की संख्या 10 प्रतिशत है, रबड़ के बागान में काम करने के लिए यहां आए. अधिकांशतया दक्षिण भारतीय ही, जिन में मद्रासी ज्यादा हैं, यहां आए. यहां के मूल निवासी (मलायी) मुसलमान हैं. चीनी बौद्ध मतावलंबी हैं और भारतीय मूल वाले हिंदू व मुसलमान दोनों हैं.

काली मिर्च मलयेशिया की एक और विशेष उपज है. सारावाक में काली मिर्च पैदा होती है.

एक राष्ट्र के रूप में मलयेशिया का संगठन आसानी से नहीं हुआ. काफी लंबे समय तक विद्रोह चलता रहा, जिस से इस देश का स्थायित्व ही खतरे में पड़ गया था. सन 1960 तक सर जेराल्ड टेंपलर की सेना ने विद्रोह का दमन कर दिया और देश आजाद हो गया. टेंपलर एक ब्रिटिश कमांडर था. उस का स्मारक व मूर्ति टेंपलर पार्क में तथा लेक गार्डन में है, जो राष्ट्रीय स्मारक हैं.

गुफाएं और मंदिर

मलयेशिया में भारतीयों का जानामाना चिह्न बाटू गुफाएं हैं, जो राजधानी कुआलालंपुर से लगभग 13 किलोमीटर (आठ मील) उत्तर में हैं. ये गुफाएं एक पहाड़ी

पर हैं, जिस पर चढ़ने के लिए 272 सीढ़ियां चढ़नी पड़ती हैं. ये गुफाएं चूने के पत्थर की नैसर्गिक गुफाएं हैं. चोटी पर मरियम्मा देवी का हिंदू मंदिर है. हिंदू प्रवासी थायीपुसम का त्योहार मनाते हैं, जिस में भक्त अपनी छाती व पीठ में नुकीली बर्छियां चुभो कर भगवान मंदिर तक जाते हैं. यह उत्सव बड़ा उत्तेजनापूर्ण होता है. उस दिन बड़ी भीड़ होती है. वाटू गुफा मंदिर को देख कर ऐसा लगता है, जैसे आप भारत में हैं. पहाड़ी को जाने वाले मार्ग पर 'जालन रामचंद्र नायडू' →

बौद्ध व इसलाम धर्म के लोगों की इबादतगाहें (क्रमशः बाएं व नीचे) : सामाजिक विविधता की प्रतीक.

(मलय भाषा में जालन सड़क या गली को कहते हैं) का नामपट्ट लगा हुआ है.

मलयेशिया में अनेक जातियों के रहने से सांस्कृतिक विविधता है. यहां के मूल निवासी मलय लोग कुल जनसंख्या के 50 प्रतिशत हैं, किंतु उन के कब्जे में देश की कुल संपत्ति या धन का 1.5 प्रतिशत ही है. अधिकांश व्यापार चीनियों के हाथ में है. ज्यादातर भारतीय भी व्यापार व अन्य व्यवसायों में ही हैं. आरंभ में जातीय सौहार्द व

और बिना कुछ खर्च किए लगातार दोनों पत्रिकाएं प्राप्त कीजिए

आप जानते ही हैं कि आप के पूरे परिवार की प्रिय पत्रिका सरिता शुरू से ही सामाजिक क्रांति के क्षेत्र में आगे रही है और अपने देशवासियों को विश्व के उन्नत समाजों के साथ कदम बढ़ा कर चलने के लिए अनेक आंदोलन चलाती रही है. इस के अलावा आप का स्वस्थ मनोरंजन करने में भी सरिता कभी पीछे नहीं रही. रूपरंग व साजसज्जा में भी सरिता अपने क्षेत्र की हर पत्रिका से बढ़चढ़ कर है.

सरिता की पूरक मुक्ता भी हिंदी की प्रमुख पाक्षिक पत्रिका है, जो आप के अपने जीवन को सरस, सजग व स्पष्ट बनाने में आप की सहायता करती है.

सरिता और मुक्ता के प्रकाशन के पीछे जो मूल दृष्टिकोण है, वह अन्य पत्रिकाओं की तरह व्यापारिक नहीं है. सरिता और मुक्ता तो अपने में ऐसी संस्थाएं हैं, जिन का लक्ष्य है हजारों वर्षों से गुलाम, विदेशियों द्वारा पांवों से रौंदे हुए हिंदू समाज को संसार में गर्व से सिर उठा कर चलने के लिए प्रेरणा देना. यदि हिंदू समाज ने अपना पुनर्गठन नहीं किया तो फिर गुलाम होते देर नहीं लगेगी. आज भी हजारों वर्ग मील भारतीय भूमि विदेशियों के कब्जे में है.

किसी भी ऐसी लक्ष्य की पूर्ति के लिए बहुत बड़े पैमाने पर सामूहिक सहयोग और सद्भाव की आवश्यकता होती है.

सरिता किसी सरकारी संस्थान, बड़े पूंजीपति या राजनीतिक दल से संबंधित नहीं है, न ही यह किसी से किसी प्रकार की सहायता स्वीकार करती है. यह केवल एक ही वर्ग की सहायता और बलबूते पर निर्भर है. और वह हैं सरिता के पाठक. इन्हीं की प्रेरणा, सहायता व प्रोत्साहन से सरिता बड़ी से बड़ी लड़ाई लड़ लेती है.

हिंदू समाज के नवनिर्माण में भाग लीजिए

आज पत्रकारिता में बड़ी पूंजी, सरकार का और देशी व विदेशी

राजनीतिक दलों का बड़े पैमाने पर हस्तक्षेप है. इस 'बड़े धन' के कारण स्वतंत्र पत्रकारिता प्रायः खत्म होती जा रही है. स्वतंत्रता बनाए रखने का केवल एक ही तरीका है—पाठक स्वतंत्र पत्रपत्रिकाओं को अपना कर उन्हें बल दें.

सरितामुक्ता विकास योजना इसी विश्वास पर निर्भर है. साथ ही आप को यह अभूतपूर्व सुविधा भी देती है: आप बिना कुछ खर्च किए एक वर्ष में सरितामुक्ता के 48 अंकों 9,000 से भी अधिक पृष्ठों की सामग्री से लाभ उठा सकेंगे.

सरितामुक्ता के प्रसारप्रचार की इस योजना से लाभ उठाने के लिए आप को सिर्फ यह करना होगा:

सरिता कार्यालय के पास 750 रुपए जमा करा दीजिए.

आप के ये रुपए आप की धरोहर के रूप में जमा रहेंगे.

आप जब भी चाहें, छः महीने का नोटिस दे कर अपने रुपए वापस ले सकेंगे. सरिता कार्यालय भी इसी प्रकार छः महीने का नोटिस दे कर आप की अमानत आप को लौटा सकेगा. जब तक यह रकम सरिता कार्यालय में जमा रहेगी, तब तक सरिता व मुक्ता बिना किसी शुल्क के आप को बराबर मिलती रहेंगी. जब यह रकम आप वापस मंगाएंगे या सरिता कार्यालय द्वारा आप को वापस कर दी जाएगी तो सरिता व मुक्ता भेजनी बंद कर दी जाएंगी.

आप यदि 750 रुपए एक साथ जमा न कराना चाहें तो तीन मासिक किस्तों में भेज सकते हैं. पहले मास 300 रुपए, दूसरे मास 300 रुपए और तीसरे मास 150 रुपए. आप की पहली किस्त प्राप्त होते ही सरिता व मुक्ता पाक्षिक के अंक आप के पास भेजे जाने लगेंगे. दूसरी और तीसरी किस्त ठीक एकएक महीने के अंतर से कार्यालय में पहुंच जानी चाहिए अन्यथा सरिता कार्यालय को अधिकार होगा कि तब तक भेजी जा चुकी प्रतियों का मूल्य काट कर आप की रकम आप को लौटा दे.

आप केवल सरिता या केवल मुक्ता भी केवल 400 रुपए जमा कर के प्राप्त कर सकते हैं.

विशेष उपहार
सात सौ पचास रुपए एक किस्त में जमा कराने पर पचास रुपए की पुस्तकें मुफ्त.

अपनी रकम सुरक्षित रख कर बिना कुछ भी व्यय किए सरितामुक्ता की इस विस्तार योजना में भाग लीजिए. मनीआर्डर, बैंक ड्राफ्ट व चैक "दिल्ली प्रेस" के नाम बनवाएं व इस पते पर भेजें:

दिल्ली प्रेस, 3-ई झंडेवाला एस्टेट, नई दिल्ली-55

स्वतंत्र पत्रकारिता को प्रोत्साहन दीजिए

मलयेशिया संघ के सभी द्वीप अत्यंत रमणीक हैं.

मैत्री खूब रही, किंतु सन 1969 में चीनी व मूल मलयवासियों में जातीय दंगे हुए, अब परस्पर शांति है.

मलयेशिया की सरकार, मूल मलयवासियों के आर्थिक विकास को खूब प्रोत्साहन दे रही है. तेजी से हो रहे आर्थिक विकास का लाभ इन्हें मिल सके, इस का प्रयास हो रहा है. सभी उद्योगों के लिए कानून बना दिया गया है कि वे सभी जातियों के लोगों को उन की जनसंख्या के अनुपात में रोज़गार देंगे.

मलयवासियों को सुविधाएं

मलायी भूमिपुत्रों को विशेष शिक्षा सुविधाएं प्रदान की जा रही हैं. उन की मदद करने के लिए नई संस्थाएं खोली गई हैं, जिन का कार्य भूमिपुत्रों को व्यापार व उद्योग लगाने में मदद करना, उन्हें भूमि देना हैं, ताकि वे आवास बना सकें. बैंक भी भूमिपुत्रों को विकास के लिए ऋण देते हैं. भूमिपुत्रों से ऋण पर सूद की दर भी कम ली जाती है. चीनी लोग इसे पक्षपातपूर्ण नीति बतलाते हैं.

मलयेशिया जो भी कर रहा है, वह वही है, जो भारत कर रहा है. वहां भी ग्रामीण क्षेत्रों का आधुनिकीकरण व विकास हो रहा है. क्षेत्रीय असंतुलन को कम करना और रोजगार के नए अवसर उत्पन्न करना उस का उद्देश्य है.

भारत व मलयेशिया में घनिष्ठ संबंध हैं. भारत की कुछ कंपनियां वहां भारतीय संयुक्त उद्योग लगा रही हैं. वहां भारतीय उद्यमियों के लिए पूंजी लगाने हेतु काफी अनुकूल वातावरण है. भारत की गोदरेज व किरलोसकर जैसी प्रतिष्ठित कंपनियां वहां सक्रिय हैं.

मलयेशिया में भारत की तरह निर्णय लेने में विलंब नहीं होता. इस वजह से वहां उद्यमियों को बड़ी सुविधा रहती है. भारतीय उद्यमी, जो मलयेशिया के विकास में योगदान

करना चाहते हैं, उन को वहां की सरकार प्रोत्साहन देती है.

मलयेशिया में विकास कार्य काफी हुआ है. कुआलालंपुर के बाजार व दुकानें माल से खचाखच भरी रहती हैं. 21,000 किलोमीटर लंबी एक नई पक्की सड़क निर्मित की गई है. संपूर्ण एशिया महाद्वीप में यह उच्चकोटि की सड़क है. मलयेशिया का 5,000 किलोमीटर लंबा संमुद्र तट है, जिस पर ताड़ व खजूर के
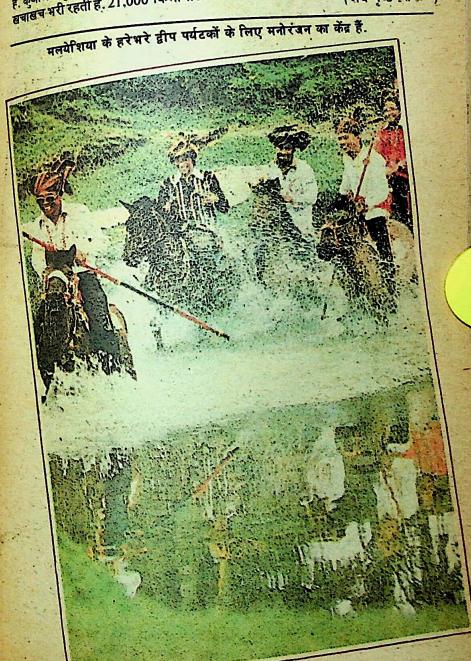
(शेष पृष्ठ 50 पर)

मलयेशिया के हरेभरे द्वीप पर्यटकों के लिए मनोरंजन का केंद्र हैं.

इस स्तंभ के लिए समाचारपत्रों की रोचक कटिंग भेजिए. सर्वोत्तम कटिंग पर 15 रुपए की पुस्तकें पुरस्कार में दी जाएंगी. कटिंग के साथ अपना नाम व पूरा पता अवश्य लिखें.

भेजने का पता : संपादकीय विभाग, मुक्ता, ई-3, रानी झांसी मार्ग, नई दिल्ली-110055.

आटो रिकशा चालक को डाक्ट्रेट की उपाधि

मैसूर में एक आटो रिकशा चालक वेणुगोपाल को मैसूर विश्वविद्यालय ने डाक्ट्रेट की उपाधि प्रदान की है.

वेणुगोपाल ने 1971 में एम.ए. करने के बाद लिपिक के रूप में काम करना शुरू किया, लेकिन कुछ समय बाद उस ने इस्तीफा दे कर ए.एन. उपाध्याय की देखरेख में शोध कार्य शुरू किया. एक अच्छी नौकरी पाने की असफल कोशिश के बाद वेणुगोपाल ने बैंक से ऋण ले कर आटो रिकशा खरीदा और उसे चलाने लगा. वेणुगोपाल को अपने व्यवसाय से लगाव है, लेकिन वह शिक्षण व्यवसाय में आना चाहता है.

—उमर उजाला, बरेली (प्रेषिका: मीरा पांडेय) (सर्वोत्तम)

*

शराब न पीने की प्रतिज्ञा

महाराष्ट्र के सतारा जिले में एक ऐसा गांव भी है, जहां कोई भी व्यक्ति शराब को हाथ नहीं लगाता. राज्य सरकार के शराबबंदी विभाग ने इस गांव के लोगों को पुरस्कृत किया है.

कुसवड़े नाम के इस गांव के लोग पिछले छः वर्षों से शराब से बिलकुल दूर हैं और अपना समय व धन अन्य कामों में लगाते हैं. —आज, वाराणसी (प्रेषक: राधेश्याम मौर्य)

*

रेल दुर्घटना टाली

नई दिल्ली में तुगलकाबाद रेलवे क्रासिंग के पास दो स्कूटर चालकों की सतर्कता से एक बड़ी रेल दुर्घटना टल गई. सीमा सुरक्षा बल के सहायक कमांडेंट पी.सी. शर्मा और हरियाणा पुलिस के हैडकांस्टेबल राजेंद्रप्रसाद की सूचनानुसार उन्होंने रेल की पटरी पर पांच मीटर लंबा लोहे का टुकड़ा पड़ा देखा. उसी समय उन्होंने एक शटल रेलगाड़ी को भी आते देखा.

स्थिति की गंभीरता को देखते हुए उन्होंने स्कूटर की हेडलाइट और लाल कमीज की सहायता से गाड़ी रुकवाई. इन्हीं दोनों की सहायता से लोहे का वह टुकड़ा भी हटाया गया.

तुगलकाबाद स्टेशन के सहायक स्टेशन मास्टर ने दोनों को विशेष प्रमाणपत्र जारी किए हैं.

—दैनिक देशबंधु, रायपुर (प्रेषक: राधेश्याम गुप्ता)

*

विकलांग का विश्व कीर्तिमान

नई दिल्ली में एक विकलांग सैनिक ने साइकिल दौड़ में 32 सर्वांग व्यक्तियों को पराजित कर एक विश्व कीर्तिमान स्थापित किया.

36 वर्षीय भूतपूर्व पैराट्रूपर पीतांबरन ने पुणे से कन्याकुमारी तक 20 हजार किलोमीटर की साइकिल दौड़ 58 दिनों में पूरी की.—पंजाब केसरी, जालंधर (प्रेषक: गुलशनपामर 'प्रदीप')

"मुझे चाहिए तो बस कॉम्प्लान®
मेरे परिवार के लिए
एक परिपूर्ण नियोजित आहार."

सिर्फ़
कॉम्प्लान® ही,
सबके लिए ज़रूरी
२३ अत्यावश्यक पोषक तत्वों से परिपूर्ण है.

सिर्फ़ कॉम्प्लान में ही वैज्ञानिक अनुपात से नियोजित २३ अत्यावश्यक पोषक तत्त्व हैं, जिनकी शरीरको रोज़ाना ज़रूरत होती है...प्रोटीन्स, कार्बोहाइड्रेटस स्निग्ध-पदार्थ, विटामिन्स और खनिज-पदार्थ. यह एक ऐसा स्वास्थ्यवर्धक पेय है, जिसकी डॉक्टर अधिकतर सिफ़ारिश करते हैं

कॉम्प्लान चॉकलेट, इलायची-केसर और स्ट्रॉबेरी के स्वाद-भरे जायकों में तथा प्लेन भी मिलता है.

कॉम्प्लान®
-परिपूर्ण नियोजित आहार.

GLC. 10-1810 HI
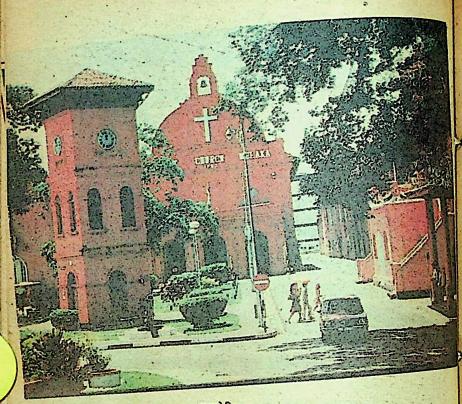
मलयेशिया : खूबसूरत इमारतें

वृक्ष लग हैं. यहां पर चारचार किलोग्राम के पपीते होते हैं.

मलयेशिया का पेनांग द्वीप अत्यंत रमणीक है. यह द्वीप अपनी सुपारी के लिए मशहूर है. इस का निर्यात होता है.

विविधता का नगर

राजधानी कुआलालंपुर एक महानगर है. इसे विविधता का नगर भी कहा जा सकता है. एक तरफ यदि मूरिश वास्तुकला की मसजिदें हैं तो दूसरी ओर उपनिवेशकाल की इमारतें हैं. एक ओर चीनी नामपट्ट हैं तो दूसरी ओर भारतीय ढाबे हैं. खूबसूरत व आधुनिक गगनचुंबी इमारतें इस विविधता को और चार चांद लगाती हैं. मलयेशिया एक मुसलिम राज्य है. मसजिद नेगारा यहां की राष्ट्रीय मसजिद है.

केमरान पहाड़ियों में रात को तापक्रम 10 डिगरी सेंटीग्रेड तक नीचे चला जाता है. जब कि यह विषुवत रेखा के बिलकुल नजदीक है. आइपोह नगर लखपतियों का नगर है. पेनांग द्वीप में महात्मा बुद्ध की 33 मीटर लंबी लेटी हुई प्रतिमा है.

मलयेशिया सरकार ने पर्यटन उद्योग का बहुत विकास किया है और अनेक बड़े होटल आदि बनाए हैं. अंतरराष्ट्रीय विमान सेवाओं के क्षेत्र में भी मलयेशिया ने बहुत तरक्की की है. यहां बहुत सैलानी और व्यापारी आते हैं. निर्यात के लिए भी यह देश एक अच्छा बाजार है. तेजी से आगे बढ़ रहा यह देश, एशिया महाद्वीप के पिछड़ेपन को समाप्त करने में मदद कर रहा है. •

आप का भाषा ज्ञान

निम्नलिखित परिभाषा के लिए उपयुक्त शब्द बताइए. अपने उत्तर का मिलान पृष्ठ 78 पर दिए गए शब्दों से कीजिए.

1. विद्रोह की घोषणा करना.

2. महाजनों, व्यापारियों आदि के हिसाब का रजिस्टर.

3. अधिनियमों, विधियों आदि का क्रमबद्ध संग्रह.

4. किसी राज्य की सरकार के सचिवों, मंत्रियों तथा विभिन्न विभागों के प्रधान अधिकारियों आदि के कार्यालयों का समूह.

5. जो बड़ी आसानी से थोड़े में ही जल उठे.

6. राज्य का या किसी संस्था का वह अधिकारी, जो उस के कार्यों की प्रगति आदि संबंधी प्रामाणिक जानकारी लोगों में प्रसारित या वितरित करता है.

7. किसी वस्तु की उत्पत्ति होना.

8. किसी विषय का कोई अंग जिस पर विचार किया जाए.

9. लिपटे हुए कागजों का बंडल.

10. खाकी रंग की धातु, जिसे तांबे के साथ मिलाने से पीतल बनता है.

11. धोखा देने वाला.

12. आदमियों की भीड़.

13. बहुत बोलने वाला.

14. स्वार्थ साधन के लिए किया हुआ आडंबर.

15. छापामार दस्ते का सैनिक.

16. मछली फंसाने का कांटा.

17. न्यायालय अथवा अधिकारी के सामने किसी अभियोग या मुकदमे के पेश होने और सुने जाने की काररवाई.

18. मास के ऊपर और त्वचा के नीचे रहने वाला सफेद या हलके पीले रंग का चिकना पदार्थ.

19. वह आधारभूत सिद्धांत जिस के अनुसार कोई कार्य संचालित किया जाए.

20. किसी का ऐसा नपा तुला परिचय जिस से उस के स्वरूप, गुण, वैशिष्टय आदि का यथार्थ ज्ञान हो जाए.

21. लपट फेंकते हुए जलना.

22. वह पत्र जो दो या अधिक आदमियों के बीच होने वाले व्यवहार के संबंध में लिखा गया हो.

मनुष्य और अन्य जीवधारियों में सब से बड़ा अंतर यही है कि मनुष्य बोल सकता है, अपनी बात दूसरे मनुष्य तक पहुंचा सकता है और दूसरे की सुनसमझ सकता है. आप अपनी अधिक से अधिक बात थोड़े शब्दों में कह सकें, यही मानवीय ज्ञान का रहस्य है.

आप को जो कहना होता है उस के लिए उपयुक्त शब्द नहीं मिलता. यह स्तंभ आप की इस कठिनाई को दूर करने का एक प्रयत्न है. इस से आप का भाषा ज्ञान बढ़ेगा और दैनिक जीवन में सुविधा मिलेगी.

—संपादक

लेख • हरीश पाठक

लावारिस पड़ी कला

आज से कुछ वर्ष पूर्व समकालीन मूर्ति कला को दर्शकों के सामने रखने के उद्देश्य से ग्वालियर में पांचवे मूर्तिकला
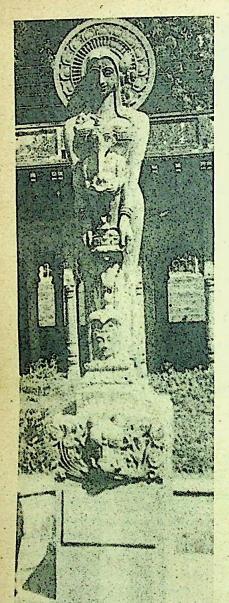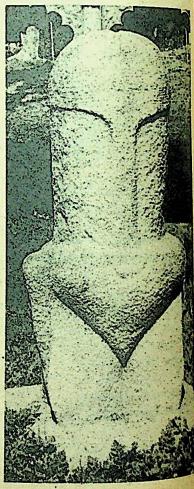
प्रख्यात मूर्तिशिल्पी रुद्र हांजी द्वारा शिविर में बनाई गई मूर्ति (ऊपर) व (दांए) बेडौल पत्थर पर तराशी गई एक मूर्ति.

शिविर का आयोजन किया गया था. 15 दिसंबर, 1974 से 10 जनवरी, 1975 तक चलने वाले इस शिविर में देश भर के दो दरजन से अधिक चुनिंदा मूर्तिकारों ने हिस्सा लिया था. तब शायद न तो आयोजकों और न ही शिविरार्थियों के मस्तिष्क में यह बात आई होगी कि जिस खूबसूरत विचार को ले कर यह शिविर आयोजित किया जा रहा है- इस के

उद्देश्यपूर्ण शिविर का अनुपयोगी वर्तमान.
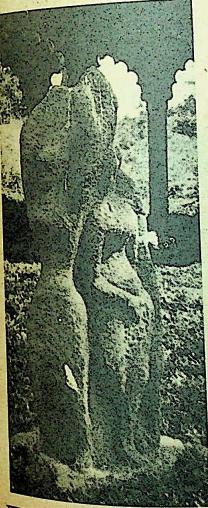
ग्वालियर में आयोजित पांचवें मूर्तिकला शिविर में अनगढ़ पत्थर को तराश कर बनाई गई मूर्तियां आज कला प्रेमी राज्य सरकार और स्थानीय प्रशासन की उपेक्षा का शिकार क्यों हैं?

परिणाम उतने ही निराशाजनक और तकलीफदेह होंगे.

ललितकला अकादमी, मध्यप्रदेश कला परिषद और नगरनिगम, ग्वालियर के सहयोग और अनुदान से आयोजित इस शिविर में देश के शीर्षस्थ मूर्तिकारों ने अनगढ़, बेडौल पत्थरों पर दिनरात काम कर के उन्हें अपनी कला के जरिए सजीवता दी. ये सभी कलाकार तब इस बात से पूरी तरह बेखबर रहे होंगे कि जो पत्थर उन की कला

राज्य सरकार को कोई चिंता है.

लाल पत्थर से बनी यह इमारत जो बारहदरी के नाम से जानी जाती है, पुरानी नक्काशी और कला से सजी है. इस में जगहजगह फव्वारे लगे हुए हैं, लेकिन वर्षों से उन का उपयोग ही नहीं किया गया है. इस के भीतर एक विशाल खुला आंगन है, जहां ये मूर्तियां बेतरतीब पड़ी है. बारहदरी के खंभों पर आकर्षक चित्रकारी हैं, पर ये बारहदरी भी उजड़ी, वीरान पड़ी है. यह स्थान शहर की आबादी से दूर होने के कारण तमाम अनैतिक, अवैध कार्यों का सुरक्षित स्थल बन गया है. बलात्कार जैसे हादसे भी यहां घटने लगे हैं.

बारहदरी के जिस खुले भाग में ये मूर्तियां बिखरी पड़ी हैं, उस के बीचोंबीच गुलाबी रंग की एक आदमकद मूर्ति बनी है. सिर्फ यही एक ऐसी मूर्ति है, जो सीमेंट से बनाई गई है. इस आदमकद मूर्ति के सिर के पीछे एक गोल चक्र है. यह मूर्ति विख्यात

बेडौल पत्थर पर बारीकी से तराशा गया शिल्प.

से बोलने लगेंगे, उन्हें एक दिन वीरान जंगल जैसे इलाके में लावारिस पड़ा रहना पड़ेगा.

आज उस शिविर को लगे कई वर्ष हो चुके हैं और इस के साथ ही उस खूबसूरत विचार का भी खात्मा हो चुका है, जो तब आयोजकों के मस्तिष्क में रहा होगा. ग्वालियर स्थित गांधी उद्यान के पीछे बारहदरी नामक एक खंडहरनुमा इमारत में इस पांचवें मूर्तिकार शिविर में बनाई गई ये मूर्तियां आज पूरी तरह असुरक्षित व उपेक्षित पड़ी संरक्षण की तलाश में हैं. इन के संरक्षण के लिए न तो स्थानीय स्तर पर ही कोई कार्य, किया जा रहा है और न ही कला, संस्कृति प्रेमी

मूर्तिकार रुद्र हांजी ने बनाई थी. इसी शहर में कुछ वर्ष पूर्व ही उन का देहांत हुआ है, पर शहर में उन के द्वारा बनाई गई कई मूर्तियां आज भी उन की कला का मूक प्रमाण देती हैं. इस मूर्ति के चारों ओर एक चबूतरा बना है, जिस में पानी भर कर या फव्वारे लगा कर इसे विकसित किया जा सकता है.

रुद्र हांजी द्वारा बनाई गई इस मूर्ति के बीच में संगमरमर के एक पत्थर पर काले अक्षरों में लिखा है— 'ललितकला अकादमी एवं मध्यप्रदेश कला परिषद के तत्वावधान में आयोजित पंचम अखिल भारतीय मूर्तिकार शिविर—15 दिसंबर, 1974 से 10 जनवरी,

1975 तक की स्मृति में.'

इस आदमकद मूर्ति के चारों ओर ऊबड़खाबड़ रेतीली भूमि पर ही औंधीसीधी पड़ी हैं वे 26 से अधिक मूर्तियां, जिन्हें इस शिविर में ही तैयार किया गया था. यह स्थान आज गायों के चरने और यदाकदा किसी के आ जाने भर का स्थान रह गया है. दिन भर यहां सिर्फ पत्ते डोलते हैं.

मूर्तिकला के श्रेष्ठ नमूने

यद्यपि इस शिविर में भाग लेने वाले सभी मूर्तिकारों के नाम ज्ञात न हो सके, पर जो नाम पता चले, उन से साबित होता है कि भाग लेने वाले कलाकार न केवल कला के प्रति समर्पित भाव रखते हैं, बल्कि वे अनगढ़ पत्थरों में भी ऐसी जान फूंक सकते हैं, जिन्हें देख कर दर्शक कुछ क्षण के लिए स्तब्ध रह जाएं.

रुद्र हांजी, राम छप्पर, उस्मान सिद्दीकी, विद्यारत्न खजूरिया, औतारसिंह पवार, हरी श्रीवास्तव, एन.एच. कुलकर्णी, बलवीरसिंह, एम.टी. शाखरकर, शंखवार, विमलकुमार, विजय शिंदे, ओम खरे, यूसुफ, रमेश जैन, शशिकांत मुंडी और राघवेंद्रसिंह जैसे कलाकारों ने इस शिविर में शिरकत की थी.

आदमी की जिजीविषा, उस की कोमल संवेदनशील भावना, आदिम प्रकृति, स्वच्छंद यौनाचार, उन्मुक्त प्रेम, प्रेमी युगल, प्रबल महत्त्वाकांक्षा, अपना एकांत जैसे गूढ़ और सार्वजनिक विषयों को आधार बना कर इन मूर्तियों की रचना की गई थी.

बारहदरी में लावारिस पड़ी एक मूर्ति.

यद्यपि स्थानीय स्तर पर एकाध बार इन मूर्तियों को सुरक्षा देने और उन्हें दर्शकों के सामने रखने के हलके प्रयास भी किए गए, पर कोई भी सार्थक कदम अभी तक नहीं उठाया गया है. नगरनिगम, ग्वालियर द्वारा एक बार इस बारे में कोई पहल भी की गई और कुछ हजार रुपए इन के संरक्षण के लिए रखे भी गए, पर यह हलचल मात्र कागजों में ही हो कर रह गई.

मूर्तिकला के प्रति बढ़ता रुझान और लगन को देखते हुए यह निहायत जरूरी हो गया है कि उपेक्षित पड़ी यह महत्त्वपूर्ण कला और ये कृतियां बेहतर तरीके से संवारी जाएं, ताकि आने वाली पीढ़ी इस कला के प्रति अपने लगाव को लगातार महसूस करे.

ऐतिहासिक महत्त्व रखने वाला यह नगर मूर्तिकला शिविर के इस अंतिम अवशेष को सहेज कर रख सके तो यह कई अर्थों में महत्त्वपूर्ण होगा. यदि बारहदरी को नया रूप दे कर बिखरी और उजाड़ पड़ी इन मूर्तियों को सुधार कर सजा दिया जाए तो शायद न केवल शहर बल्कि मूर्तिकला के शुभचिंतकों के लिए भी यह काररवाई सुखद होगी, वरना किसी भी दिन यह वीरान और उपेक्षित पड़ा स्थान इन मूर्तियों के रहेसहे अस्तित्व को भी नकार देगा और तब यह हादसा मूर्तिकला के वर्तमान अस्तित्व पर एक प्रश्न चिह्न जड़ जाएगा. ●

"सभा में अव्यवस्था कतई न होती...अगर आप देश में कानून व्यवस्था की हालत अच्छी होने की बात न कहते...!"
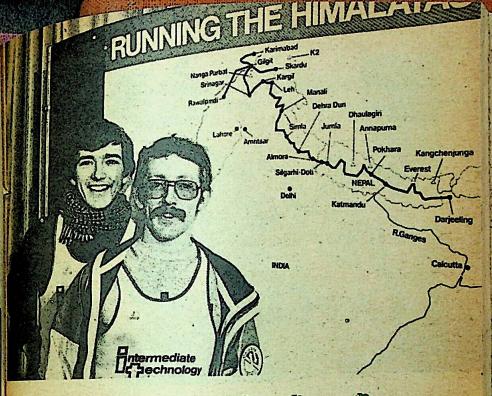
एक दौड़ ऐसी भी

लेख • प्रशांतकुमार बनर्जी

दो साहसी युवक आखिर किस उद्देश्य को ले कर दार्जिलिंग से रावलपिंडी तक की रोमांचक दौड़ लगा रहे हैं?

इस दुनिया में स्वयंसेवी संस्थाओं का अभाव नहीं है और न ही अभाव है उन तौरतरीकों का, जिन से इन संस्थाओं की योजनाएं चलाने के लिए कोष इकट्ठा किया जाता है, लेकिन कोष इकट्ठा करने के ऐसे तौरतरीकों में जब रिचर्ड क्रेन तथा एड्रियन क्रेन जैसे नौजवानों की दिलेरी सामने आती है तो जरा आश्चर्य होता है.

ब्रिटेन निवासी रिचर्ड क्रेन तथा एड्रियन क्रेन दो भाई हैं. उन्होंने 'इंटरमीडिएट टेक्नोलोजी डेवलपमेंट ग्रुप' नामक एक सामाजिक संस्था के लिए धन इकट्ठा करने का एक अभिनव रास्ता अपनाया है.

मार्च के तीसरे सप्ताह में दोनों भाइयों ने हिमालय की गोद में 4,000 किलोमीटर की लंबी दौड़ शुरू की है. इस के बदले में उन्हें 100 डालर प्रति 1.6 किलोमीटर के हिसाब से 2.5 लाख डालर की धनराशि दानियों की ओर से मिलेगी. इसे वे उक्त संस्था की योजना में लगाएंगे. यह दौड़ पश्चिम बंगाल में
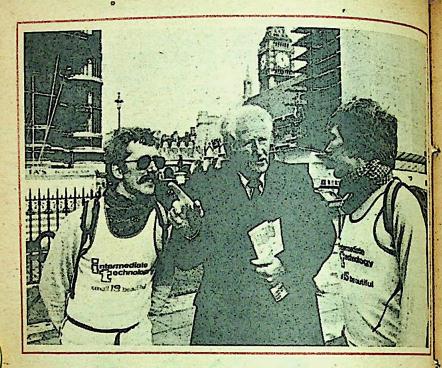
एड्रियन क्रेन (बाएं) व रिचर्ड क्रेन (दाएं) ब्रिटिश एवरेस्ट पर्वतारोही दल के नेता लार्ड हंट के साथ.

दार्जिलिंग से शुरू हुई है और रावलपिंडी (पाकिस्तान) में समाप्त होगी. हिमालय की पर्वत शृंखलाओं में यह उन की पहली यात्रा है.

संस्था का उद्देश्य

इंटरमीडिएट टेक्नोलोजी ग्रुप की स्थापना 1970 में इंगलैंड में हुई थी. इस सामाजिक संस्था का उद्देश्य विकासशील देशों को सस्ती तकनीकी सहायता देना है. संस्था की स्थापना डा. शुमेचर ने की है, जिन के अनुसार, "हर छोटी वस्तु सुंदर होती है."

यह संस्था न केवल छोटेछोटे गरीब और विकासशील देशों की प्रगति के लिए उन्हें तकनीकी सहायता देगी, बल्कि उन्हें सस्ते उपकरण तथा लघु उद्योगों के लिए आवश्यक मशीनरी जुटाने में भी मदद करेगी. इस से न केवल उन की गरीबी मिटेगी, बल्कि उन देशों के समुचित विकास में भी मदद मिलेगी.

रिचर्ड और एड्रियन भूवैज्ञानिक हैं. उन की उम्र क्रमशः 19 और 27 वर्ष है. उन का उद्देश्य अन्य पर्वतारोहियों की तरह पर्वत के शिखर तक पहुंचने का नहीं है. ये हिमालय पर्वत के 16,000 फीट ऊंचाई वाले पर्वतीय रास्ते से चलेंगे. उन की यात्रा दार्जिलिंग से शुरू हुई है और माउंट एवरेस्ट बेस कैंप तथा काठमांडु से होती हुई रावलपिंडी में समाप्त हो जाएगी. इस तरह 4,000 किलोमीटर की यह यात्रा हिमालय पर्वत श्रेणियों में आड़ी तय होगी.

इस दुस्साहसिक और रोमांचकारी कदम के लिए दोनों भाइयों ने किसी भी संस्था या सरकार से मदद नहीं ली है. हां, लार्ड हंट (1953 के ब्रिटिश एवरेस्ट पर्वतारोही दल के नेता) से उन्होंने प्रोत्साहन के दो शब्द जरूर

लिए हैं. इस यात्रा में वे अपनी निजी जमा पूंजी और उधार लिया हुआ धन प्रयोग कर रहे हैं.

इस यात्रा के लगभग 100 दिन में पूरे होने की आशा है, पर एड्रियन कहते हैं कि वे इस से पहले ही अपने गंतव्य तक पहुंच जाएंगे.

उन को अब तक बहुत लोगों से उत्साह और सहायता अपनेआप मिली है, 10 हजार फर्में भी अपना सहयोग प्रदान कर चुकी हैं. इस प्रकार अब तक प्राप्त सारी धनराशि वे लंदन भेज चुके हैं.

दौड़ने का अभ्यास

इस अभियान के लिए अपनेआप को तैयार करने से पहले उन्होंने स्काटलैंड की पहाड़ियों पर दौड़ने का अभ्यास किया है और अपनेआप को इस काविल बना लिया है कि अब वे किसी भी पहाड़ी रास्ते पर 11-12 किलोमीटर प्रति घंटे की रफ्तार से दौड़ सकते हैं. उन्हें उम्मीद है कि वे 5.2 किलोमीटर प्रति घंटे की रफ्तार से चल लेंगे.

उन्होंने अपने कपड़े तथा साथ ले कर चलने वाली चीजों की तरफ विशेष ध्यान दिया है. उन चीजों का निर्माण भी कुछ विशेष तरीके से किया गया है. अन्य वस्तुओं के अलावा उन के साथ थरमल अंडरवीयर, अल्ट्रा लाइट जैकेट और पैंट तथा एक ऐसा झोला है, जो खोलने पर तंबू का रूप धारण कर लेता है.

उन्होंने अपनी सारी चीजें सामान्य से कुछ छोटी बनवाई हैं, ताकि उन्हें साथ रखने में असुविधा न हो. प्रत्येक के साथ लगभग 15 पौंड वजन का सामान है.

खानेपीने की व्यवस्था रास्तों में पड़ने वाले गांवों से की जाएगी, पर जरूरत के लिए वे अपने साथ भी खाने की चीजें व दवाएं रखे हैं.

कुछ भारतीय कंपनियों ने भी उन्हें प्रोत्साहित किया है. उन में खेल का सामान बनाने वाली कंपनियां मुख्य हैं. इस के अलावा उन्हें एयर इंडिया द्वारा दी गई मदद भी उल्लेखनीय है. ●

लेखकों के लिए सूचना

- सभी रचनाएं कागज के एक ओर हाशिया छोड़ कर साफ-साफ लिखी या टाइप की हुई होनी चाहिए.
- प्रत्येक रचना के साथ वापसी के लिए केवल टिकट नहीं, टिकट लगा, पता लिखा लिफाफा आना चाहिए, अन्यथा अस्वीकृत रचनाएं वापस नहीं की जाएंगी.
- प्रत्येक रचना के पहले और अंतिम पृष्ठ पर लेखक के हस्ताक्षर होने चाहिए.
- प्रत्येक रचना पर पारिश्रमिक दिया जाता है, जो रचना की स्वीकृति पर भेज दिया जाता है.
- स्वीकृत रचनाओं के प्रकाशन में अकसर देर लगती है, इसलिए इन के विषय में कोई पत्रव्यवहार नहीं किया जाता.
- मुक्ता और सरिता में पूर्ण-विराम की जगह बिंदु का प्रयोग होता है. कृपया इसी का प्रयोग करें. इसी प्रकार अंक बजाए नागरी के अंतरराष्ट्रीय होने चाहिए. भारतीय संविधान में राष्ट्रभाषा हिंदी के लिए यही अंक निर्धारित किए गए हैं और सारे संसार में प्रायः सभी भाषाओं में, यही अंक प्रयुक्त होते हैं.

रचना इस पते पर भेजें :
संपादकीय विभाग
मुक्ता, ई-3, रानी झांसी मार्ग,
नई दिल्ली-110055.

तहसील के इस छोटे से कार्यालय में एक अजीब सी अफरा-तफरी मची हुई थी. उस दिन बारबार दत्त साहब मुझे और तहसीलदार साहब को बुला रहे थे. हमारी वह छोटी सी तहसील प्रशासन का अनुविभागीय मुख्यालय भी थी. दत्त साहब हमारे अनुविभागीय अधिकारी थे. उन का स्थानांतरण किसी दूसरे स्थान पर हो गया था और वह जाने से पहले सभी जरूरी काम निबटा रहे थे. बारबार दौड़ने से जरा फुरसत पा कर मैं अपनी सीट पर बैठा ही था कि रामदीन फिर आ कर सिर पर खड़ा हो गया.
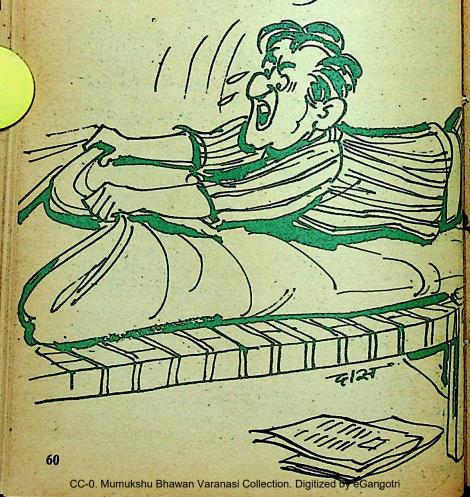
आफिस बाक्स

कहानी • आलोक सक्सेना

दत्त साहब ने फिर बुलाया था.

मैं मन ही मन सरकारी नौकरी को बुराभला कहता हुआ साहब के सामने हाजिर हुआ. दत्त साहब बहुत व्यस्त थे. किसी फाइल को बड़े ध्यान से पढ़ रहे थे. मुझे देखते ही फाइल एक ओर खिसका दी, बोले, "क्यों भाई नाजिरजी. बंगले का तो इंतजाम हो गया, लेकिन दफ्तर में और दौरे पर कौन सा अरदली रहेगा नई अधिकारी के साथ?"

हर वक्त नेतागीरी करने वाले नंदू से कार्यालय के सभी लोग परेशान थे, पर किस प्रकार नई अनुविभागीय अधिकारी ने उस का सही इलाज ढूंढ़ निकाला?

"जी, वही नंदू."

साहब का मुंह बिगड़ गया. "अरे अरे, नाजिरजी, कभी तो अक्ल से काम लिया करिए. मेरा यहां से तबादला हो गया है. मुझे क्या पड़ी है, जो इन सब बातों में सिर खपाता फिरूं, लेकिन मैं परेशान हो रहा हूं तो इसी

लिए न कि मेरे स्थान पर एक महिला आ रही है. उन्हें किसी प्रकार की तकलीफ न हो, इस दूरदराज के कस्बे में और आप हैं कि उस बदमाश को उन के लिए दफ्तर में लगा रहे हैं."

बात सही थी. मैं ने अभी तक इस मसले पर गौर नहीं किया था. पहली बार हमारे इस अनुविभाग में महिला अधिकारी आ रही थीं और नंदू ने दत्त साहब जैसे सख्त अफसर के भी छक्के छुड़ा दिए थे. किसी महिला अधिकारी को तो वह और भी आसानी से परेशान कर सकता था. हमारे अनुविभाग में अधिकारी महोदय को दो अरदली मिले हुए थे. एक कार्यालय में काम करता था और एक बंगले में काम देखता था. नंदू उन्हीं में से एक था.

वैसे शुरू में नंदू बहुत लगन और मेहनत से काम करता था. वह था भी बड़ा फुरतीला, दुबलापतला, छरहरे बदन का. उम्र भी उस की कुछ अधिक नहीं थी. हर काम वह बड़ी फुरती से दौड़दौड़ कर करता था. इसी लिए उस की ड्यूटी हमेशा साहब लोगों के बंगले पर रहती थी. लेकिन एक ऐसी घटना घटी जिस ने नंदू को अचानक ही बदल डाला.

हुआ यह कि तहसील का एक चपरासी हमारे तहसील मुख्यालय तक आने वाली एक बस की चपेट में आ कर अपनी टांग तुड़वा बैठा. उसे कई दिनों तक हस्पताल में रहना पड़ा और काफी कुछ खर्च करना पड़ा. उस ने राज्य परिवहन से हरजाने की मांग की. राज्य परिवहन वाले भला कहां सुनने वाले थे. उन दिनों नंदू उस चपरासी को देखने रोज हस्पताल जाया करता था. किसी ने उसे सलाह दी कि यदि वह चपरासी आदलत में राज्य परिवहन पर दावा कर दे तो शायद हरजाना मिल जाए.

नंदू चुस्त और फुरतीला तो था ही. उस ने फौरन यह जिम्मेदारी अपने सिर पर ले ली. दौड़भाग कर के सारे कर्मचारियों से चंदा इकट्ठा किया और उस चपरासी की ओर से मुकदमा दायर कर दिया. उस चपरासी के साथ सभी लोगों की सहानुभूति थी. इसलिए बहुत सारा चंदा इकट्ठा हो गया था नंदू के पास. संयोग से वह चपरासी मुकदमा जीत गया और अदालत ने उसे राज्य परिवहन से हरजाना दिलवा दिया. बस, नंदू रातोंरात नेता बन गया. इधर उस के मुंह को चंदे का खून भी लग गया था. नंदू ने फिर तो कोई भी मौका अपने हाथ से नहीं जाने दिया. किसी चपरासी को कोई जरा भी परेशान करे, किसी का शासकीय ऋण मंजूर होने में देर हो, यहां तक कि कोई अधिकारी किसी चपरासी से जरा जोर से कुछ कह भी दे, नंदू फौरन उस की तरफ से लड़ने को तैयार हो जाता.

हमारे देखते ही देखते वह नंदू से नंदलाल नेता बन गया. फिर जब हमारी तहसील में चतुर्थ वर्ग कर्मचारी संघ की शाखा खुली तो नंदू को निर्विरोध अध्यक्ष चुन लिया गया. तभी से नंदू ने काम करना छोड़ दिया. वैसे ड्यूटी पर वह हाजिर अवश्य रहता. साहब के कमरे के बाहर स्टूल पर बैठा बीड़ियां फूंकता रहता. साहब घंटी बजाते, तो वह चिक उठा कर बड़ी शान से खरामाखरामा चलता हुआ अंदर जाता और ऐसी अकड़ के साथ साहब के सामने खड़ा होता कि साहब की आवाज खुद ब खुद नम्र हो जाती. वह धीरे से कहते. "भाई नंदू, जरा पानी पिलाना."

नंदू उसी शान से बाहर आता और बाहर आ कर आवाज देता, "रामदीन, जरा साहब को पानी दे आना."

साहब लोग कुछ नहीं कहते थे. संघ का अध्यक्ष था नंदू और अधिकांश साहब लोग उस के संघ से उलझना नहीं चाहते थे, लेकिन ये सब तो पुरानी बातें हैं. फिलहाल तो चिंता इस बात की थी कि जो नई अनुविभागीय अधिकारी आ रही थीं, उन के कार्यालय में किस की ड्यूटी लगाई जाए? रामदीन बंगले पर काम कर सकता था, लेकिन फिर कार्यालय में कौन रहेगा? नाजिर होने के नाते यह व्यवस्था करने का उत्तरदायित्व मेरा था.

"मेरी मानो तो नंदू तुम भूख हड़ताल पर बैठ जाओ," अनुविभागीय अधिकारी शीरीन ने नंदू से कहा.

नंदू पिछले कुछ दिनों से अफसरों के साथ जिस प्रकार का अपमानजनक व्यवहार कर रहा था. उसे देखते हुए उसे दूर रखना वेहतर था. आखिर बहुत सोचने के बाद मैं ने दत्त साहब से निवेदन किया, "साहब, ऐसा करते हैं कि तहसील से एक चपरासी ले कर उस की ड्यूटी दफ्तर में लगा देते हैं और नंदू को उस की जगह तहसील में भेज देते हैं."

"क्या वह जाने को तैयार होगा?" दत्त साहब ने चिंतित हो कर पूछा.

"कोशिश कर के देखते हैं."

"हां, ऐसा ही करो, वह शायद मान जाए वरना शीरीनजी के लिए वह सिरदर्द से कम नहीं होगा." साहब बोले.

लेकिन जिस बात को ले कर हम इतने चिंतित थे, उसे नई अनुविभागीय अधिकारी आते ही इतनी आसानी से सुलझा लेंगी और चतुर्थ वर्ग कर्मचारी संघ का अध्यक्ष नेता नंदूलाल फिर से नंदू बन जाएगा. यह तब किसे मालूम था? मालूम होता तो क्या मैं इतना चिंतित होता और क्या दत्त साहब इतने परेशान रहते, लेकिन हमारी चिंता अकारण ही तो नहीं थी. पिछले कितने ही अधिकारी नंदू को छेड़े बिना कभी तहसील के तो कभी विकास खंड के चपरासियों से अपना काम चला कर चले गए थे, पर दत्त साहब थे जरा सख्त. उन्होंने सारी जानकारी मिलते ही मुझे बुलाया था. बहुत नाराज हो कर बोले थे, "यह विकास खंड का चपरासी यहां काम क्यों करता है? यहां कुल कितने अरदली हैं?"

"जी, दो हैं"

"तो दूसरा कहां गया?"

"जी, वह चतुर्थ श्रेणी कर्मचारी संघ का अध्यक्ष है" मैं ने निवेदन किया था.

"अध्यक्ष है तो काम नहीं करेगा क्या? आप अभी उस की ड्यूटी बंगले पर लगाइए." दत्त साहब चिल्ला कर बोले थे.

मैं नाजिर हूं. मुझे हुक्म मानने से

अधिकारी बहुत सीधी हैं. रोजाना अब वह किसी न किसी चपरासी की दरख्वास्त ले कर उन के पास पहुंच जाता. कभी किसी की ऋण मंजूरी की दरख्वास्त तो कभी किसी की छुट्टी की दरख्वास्त. ऋण मंजूर करवाने में वह लोगों से कमीशन भी वसूल लेता. नई अधिकारी उस के द्वारा लाए गए हर प्रार्थनापत्र पर हस्ताक्षर कर देतीं.

नंदू की चांदी हो रही थी. ऋण की मंजूरी मुख्यालय का वित्त विभाग करता था, लेकिन प्रार्थनापत्र अनुविभागीय अधिकारी जांच करने के बाद भेजा करते थे. आम तौर पर ऐसा होता था कि जिस प्रार्थनापत्र को अनुविभागीय अधिकारी आगे भेजते थे. उस पर ऋण मिल ही जाता था. जब से नई अधिकारी आंख मूंद कर प्रार्थनापत्रों पर हस्ताक्षर कर रही थीं. तब से चपरासी लोग धड़ाधड़ ऋण मांगने लगे थे. किसी की शादीशुदा बेटी की शादी फिर से होने लगती थी तो किसी का बनाबनाया मकान फिर से बनने लगता, लेकिन यह सब ज्यादा दिन तक नहीं चला. तहसील के एक चपरासी महादेव ने लड़के की शादी के लिए ऋण लेने के लिए आवेदन किया. उस के लड़के की शादी वास्तव में एक महीने बाद होने वाली थी, यह सब को पता था. नंदू ने महादेव से अपना कमीशन तय किया और झट से जा कर अनुविभागीय अधिकारी से हस्ताक्षर करवा लाया. महादेव का आवेदन जिला मुख्यालय भेज दिया गया.

कुछ दिनों बाद अनुविभागीय अधिकारी भी जिला मुख्यालय की एक बैठक में भाग लेने गईं. लगभग 10-15 दिन बाद महादेव के ऋण के आवेदन पर जिला मुख्यालय से जानकारी मांगी गई.—'महादेव के कितने पुत्र हैं? किस पुत्र की शादी है? जिस की शादी है वह स्वयं कमाता है या नहीं? शादी हो रही है इस का प्रमाण भेजा जाए'

हम सब हैरान रह गए. जिन्होंने झूठे कारण बताए थे, उन के आवेदन तो मंजूर हो गए, महादेव के पुत्र की शादी सचमुच हो रही थी तो उस के आवेदन में अड़ंगा लग गया था. गया काम से बेचारा महादेव. शादी में कुल एक सप्ताह बचा था. सारी जानकारियां और प्रमाणपत्र भेज दिए जाएं तो भी इतनी जल्दी ऋण मंजूर नहीं हो सकता था. मेरे दिमाग में एक बात आने लगी कि इन्हीं दिनों हमारी अधिकारी महोदया भी जिला मुख्यालय गई थीं. कहीं ऐसा तो नहीं कि उन्हीं के इशारे से यह सब.....लेकिन मैं तो नाजिर हूं. मुझे क्या, यही सोच कर मैं ने किसी से कुछ नहीं कहा. उधर नंदू को महादेव ने पकड़ा और पहुंच गया अधिकारी महोदया के पास. महादेव और नंदू उन के कमरे में गए तो मैं भी उत्सुकतावश एक फाइल ले कर वहां पहुंच गया. महादेव वहां खड़ा गिड़गिड़ा रहा था, "हजूर मैं मर जाऊंगा. बरबाद हो जाऊंगा."

"हां. यह तो सरासर अन्याय है. तुम्हारे पुत्र की शादी है. तुम्हारे ही फंड का रुपया है. तुम्हें ही समय पर नहीं मिला तो फिर क्या फायदा है?" अधिकारी महोदया शांत स्वर में बोलीं.

"हां, अब आप ही कुछ करवाइए. मेरा ऋण दोतीन दिन के अंदर मंजूर नहीं हुआ तो सब काम चौपट हो जाएगा हजूर" महादेव रुआंसा हो कर कह रहा था.

अधिकारी महोदया का स्वर फिर भी उतना ही शांत और संयत था, "मैं चाहूं तो भी इतनी जल्दी कुछ नहीं हो सकता. हां, तुम लोग कुछ करो तो शायद कुछ हो."

अब नंदू अकड़ कर बोला, "हां जी, लगता है अब हमीं लोगों को कुछ करना होगा. हम कल से हड़ताल करेंगे."

"हड़ताल से क्या होगा?" महोदया ने शांत स्वर में पूछा, "10-15 दिन तक हड़ताल चलेगी, तब जा कर जिला मुख्यालय के कान पर जूं रेंगेगी. तब तक महादेव के लड़के की शादी भी हो जाएगी. मेरी मानो तो नंदू तुम भूख हड़ताल पर बैठ जाओ. वह जरा गंभीर बात होती है. देख लेना दो दिन बाद ही वित्त विभाग के प्रभारी अधिकारी खुद ही

एहसास

सिलसिला तोड़ लिया
है उस ने,
मुझ को एहसास
दिलाते क्यूं हो.

—शबाब दावर

के. एक बार डाक ले कर जिला मुख्यालय भेजा तो दूसरे दिन वह वापिस आया और उस डाक को लौटाते हुए बोला, "वह साहब दौरे पर हैं, इसलिए वापस ले आया."
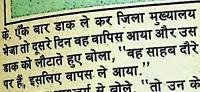
साहब आश्चर्य से बोले, "तो उन के स्टेनो को दे देते."

"हजूर ने यह कब कहा था? अगर कोई खास बात होती तो उल्टे हजूर मुझ पर गुस्सा होते कि लिफाफा स्टेनो को क्यों दे दिया. बड़े लोगों की कई ऐसीवैसी बातें भी तो होती हैं, सरकार..."

दत्त साहब तिलमिला कर रह गए. ऐसे किस्से कई बार हुए. कई बार तो दत्त साहब ने नंदू का निलंबन आदेश भी टाइप करवा लिया मगर फिर कर्मचारी संघ की नारेबाजी व हड़ताल वगैरह के बारे में सोच कर चुप रह गए. आखिर में उन्होंने नंदू से काम लेना ही छोड़ दिया, पर नंदू के ठाठ पूर्ववत् बने रहे.

अब एक महिला आ रही थी अधिकारी हो कर, इसी लिए दत्त साहब को चिंता थी. मैं ने दत्त साहब द्वारा चार्ज दिए जाने से पहले ही नंदू को तहसील में भेजने के आदेश जारी करवा दिए.

नाजिर की यही तो मुसीबत है, दूसरे सैकड़ों काम तो होते ही हैं. उस पर चपरासियों की व्यवस्था करने में भी उस का दिमाग घूम जाता है. नई अनुविभागीय अधिकारी को आए 15 दिन ही हुए थे कि मुझे बुलाया गया. नई अधिकारी शीरीनजी अकेली ही आईं, लेकिन साथ में एक वृद्धा आया है. वही उन का सब काम करती है. खाना बनाने से ले कर कपड़े धोने तक. बाजार का सामान रामदीन ला देता है, इसलिए बंगले पर चपरासी की ड्यूटी लगाने का झंझट नहीं है. मैं उन के कमरे के अंदर घुसा तो नंदू वहां पहले से खड़ा हुआ था. मेरे कान खड़े हो गए. अब क्या बात हो गई? मुझे अधिकारियों के कमरे में जाने से बड़ा डर लगता है. दत्त साहब के सामने तो पहुंचते ही जान निकल जाती थी. शीरीनजी की बात कुछ और थी. वह हमेशा शांत रहती थीं. संयत स्वर में नपीतुली बात करती थीं और देखने में भी ऐसी कि लगता था अभी कालिज में ही पढ़ती हों. अतः ज्यादा भय नहीं लगता था उन से. मैं उन के सामने पहुंचा तो वह बोलीं, "नाजिरजी, यह नंदलाल अनुविभागीय अधिकारी के कार्यालय के चपरासी हैं. इन्हें तहसील में क्यों भेजा गया है?"

"जी ....वह दत्त साहब...." मेरी बात पूरी नहीं हो पाई.

"आप इन्हें आज ही इसी कार्यालय में वापस बुलाने के आदेश तैयार कराइए."

मैं ने उन्हें समझाने की कोशिश की, लेकिन वह कुछ भी सुनने को तैयार नहीं हुई. दत्त साहब भी उन्हें विदाई पार्टी वाले दिन नंदू के विषय में सब समझा गए थे. 'फिर भी वह जानबूझ कर परेशानी में फंसना चाहती हैं तो फंसें,' मैं ने सोचा.

नंदू फिर अपनी जगह पर वापस आ गया. अब वह विजयी दृष्टि से सब को देखता हुआ शान से अपने स्टूल पर बैठा रहता. पहले से वह अब कुछ ज्यादा ही अक्खड़ हो गया था. शायद वह समझ गया था कि नई

मतलब था. मैं ने फौरन नंदू को बुलाया और साहब का हुक्म सुना दिया. वह बहुत भन्नाया. "यह कौन से नियम में लिखा है कि अरदली साहब के बंगले पर कपड़े धोएगा?"

"लिखा हो या नहीं. साहब ने यह भी कहा है कि अगर तुम आदेश नहीं मानोगे तो तुम्हें तुरंत निलंबित कर दिया जाएगा." मैं ने उसे बताया.

नंदू एकदम ढीला पड़ गया. वह उन दिनों संकट के दौर से गुजर रहा था. हमारे इस छोटे से कस्बे में कभी हड़ताल नहीं हुई थी. नंदू चाहता तो करा सकता था, लेकिन वह इतनी जल्दी हार मान लेगा, इस की मुझे उम्मीद नहीं थी. वह बंगले पर काम करने लगा था. उस में लाख अवगुण हों, पर एक बड़ा अच्छा गुण था—वह खाना बहुत ही अच्छा बनाता था. वह बंगले पर काम करने लगा, तो दत्त साहब बहुत प्रसन्न हुए.

दफ्तर के बाबू लोग कहने लगे. "देखा, अफसर जरा सख्त हो तो सब ठीक हो जाता है." लेकिन चौथे रोज ही नंदू बंगले से दौड़ादौड़ा आया और बोला, "साहब आज दफ्तर नहीं आएंगे. जरूरी फाइलें आप घर पर ही भिजवा दें उन की तबियत ठीक नहीं है."

"लेकिन हुआ क्या उन्हें," हम सब ने उत्सुकता से पूछा. नंदू ने चारों तरफ एक बार नजर घुमा कर देखा, फिर मेरे पास आ कर धीरे से बोला, "सारा दोष उस नायलोन की निवाड़ वाले पलंग का है. साहब उस पर लेटे थे. बोले, 'नंदू जरा पैर दबा.' मैं पैर दबाने लगा तो बोले, 'नंदू, जरा पैरों के अंगूठे चटका.' मैं ने चटकाने के लिए साहब के अंगूठे पकड़ कर खींचे. अब मुझे क्या मालूम था कि उस नायलोन के निवाड़ वाले पलंग से बिस्तर फिसल जाता है. बिस्तर फिसला तो साहब को तो फिसलना ही था." नंदू फिर एकदम चौंक कर बोला, "लो नाजिरजी, आप भी बस बातों में लगा लेते हो. मैं तो भूल ही गया था कि डाक्टर को बुलाने जाना है."

इस के बाद दत्त साहब चार दिन कार्यालय नहीं आ पाए. तभी एक दिन बंगले पर मेमसाहब ने मुझे बुलाया और बोलीं, "नाजिरजी, आज ही बंगले से नंदू की ड्यूटी बदल दीजिए. साहब कुछ भी कहें. खबरदार अगर आप ने उसे यहां भेजा तो."

नंदू की ड्यूटी बदलने की बात चली तो मैं ने अनुभव किया कि दत्त साहब कुछ झेंपेझेंपे से हैं. बोले, "अच्छा, मेमसाहब को उस का काम पसंद नहीं है तो उस की ड्यूटी मेरे दफ्तर में लगाइए. उसे काम तो करना ही पड़ेगा."

नंदू अब दत्त साहब के कमरे के बाहर बैठने लगा. नंदू ने वहां बैठना शुरू किया और इधर साहब का रक्तचाप बढ़ना शुरू हो गया.

एक दिन जिला मुख्यालय से चारपांच साहब लोग हमारे साहब से मिलने आए. दत्त साहब ने घंटी बजाई और नंदू से चाय लाने को कहा. वह कस्बे की एकमात्र चाय की दुकान की ओर चल दिया. 10 मिनट बीते...20 मिनट बीते... फिर आधा घंटा बीता, मगर चाय नहीं आई. साहब लोगों को देर हो रही थी. वे बोले, "रहने दो भाई दत्त. चाय फिर कभी आ कर पिएंगे. देर हो रही है. अब चलते हैं."

तभी नंदू कमरे में दाखिल हुआ, झुक कर सलाम मारा और विनम्रता से बोला. "हुजूर, चाय की दुकान पर पहुंच कर याद आया कि हुजूर ने यह तो बताया ही नहीं कि कितनी चाय लानी हैं. पूछने आया हूं. बता दें सरकार कि कितनी चाय लानी हैं, अभी दो मिनट में लाता हूं."

दत्त साहब का चेहरा अपमान और गुस्से से लाल हो गया और बाहर से आए साहब लोगों का हंसी के मारे बुरा हाल हो गया. चाय ही दुकान काफी दूर थी. वह तो भला हो बड़े बाबू का, जिन्होंने देर होती देख, इसी बीच दूसरा आदमी को चाय लेने भेज दिया था वरना उस दिन तो मारे गुस्से के दत्त साहब शायद बेहोश ही हो जाते.

ऐसे कितने ही किस्से थे नेता नंदलाल

महादेव की फाइल ले कर यहीं दौड़े चले आएंगें."

नंदू सकपका कर एक कदम पीछे हट गया. महादेव बड़ी आशा भरी नजरों से नंदू की ओर देख रहा था और मेरी हंसी रोके नहीं रुक रही थी. हंसी आने की बात ही थी. अब यह तो सभी जानते हैं कि नंदू भूख के मामले में बड़ा कच्चा आदमी है. कई बार साहब लोगों के यहां खाना बनातेबनाते ही खाने लगता है. ऐसा करते हुए कई बार पकड़ा भी गया है. भूख हड़ताल का सुझाव सुनते ही नंदू को कैसा लगा होगा. यह मैं खूब समझ रहा था. आखिर बड़ी देर बाद थूक निगलता हुआ नंदू बोला, "भूख हड़ताल की क्या जरूरत है साहब, वह काम तो हड़ताल से ही हो जाएगा."

"यह असंभव है. साधारण हड़ताल से इतनी जल्दी कुछ नहीं होगा. सिर्फ आश्वासन मिलेंगे. हां, भूख हड़ताल की बात कुछ और ही होती है. फिर जब चतुर्थ वर्ग कर्मचारी संघ का अध्यक्ष भूख हड़ताल करेगा तो जिला मुख्यालय फौरन हरकत में आ जाएगा," महोदया अपने आगे फाइल खींचते हुए बोलीं.

स्पष्ट था कि अपनी ओर से उन्होंने बात समाप्त कर दी थी. हम सब बाहर निकल आए. हर समय खुश रहने वाले नंदू का चेहरा इस समय देखने लायक था.

चूंकि मैं इस कार्यालय का नाजिर हूं और सभी चतुर्थ वर्ग के कर्मचारियों की ड्यूटी लगाना, उन का वेतन बांटना, उन्हें वरदी सिलवा कर देना आदि काम मेरे ही जिम्मे हैं, इसलिए मेरे पास इस वर्ग के कर्मचारियों का जमघट भी लगा रहता है और इन लोगों के सारे किस्से भी सुनने को मिलते रहते हैं. इसी लिए मुझे यह बात भी मालूम हो ही गई कि कमरे से बाहर निकलते ही महादेव और नंदू में खूब झगड़ा हुआ. महादेव नंदू को इस बात के लिए दबा रहा था कि अध्यक्ष होने के नाते उसे भूख हड़ताल पर बैठ जाना चाहिए और नंदू इस बात पर अड़ा था कि साधारण हड़ताल से ही काम चल सकता है. अधिकारी महोदया की बात महादेव के गले उतर गई थी उसे यह पक्का विश्वास हो गया था कि नंदू के भूख हड़ताल पर बैठे बिना कुछ नहीं होने वाला, लेकिन न नंदू को तैयार होना था और न वह तैयार हुआ.

क्षुब्ध हो कर महादेव ने दौड़धूप कर के चतुर्थ वर्ग कर्मचारी संघ की अनुविभागीय

सिर पर बक्सा लादे हांफता हुआ नंदू नई विभागीय अधिकारी के पीछे चलता रहता...

शाखा की बैठक बुलाई. वहां भी अधिकांश लोग महादेव के पक्ष में ही बोल रहे थे. आखिर नंदू ने उन सब को यह कह कर शांत किया कि वह कल ही छुट्टी ले कर जिला मुख्यालय जाएगा और वहां से महादेव का ऋण मंजूर करवा कर ले आएगा.

ये सब बातें अधिकारी महोदया को पता चलीं या नहीं, मुझे नहीं मालूम, लेकिन मुझे जरूर पता चल गईं, क्योंकि मैं इस कार्यालय का नाजिर हूं और चूंकि मैं नाजिर हूं इसलिए मुझे यह भी मालूम हो गया कि नंदू छुट्टी ले कर जिला मुख्यालय गया. उस ने बहुत दौड़धूप भी की, लेकिन वित्त विभाग के प्रभारी के सामने उस की एक भी न चली. अंत में नंदू हड़ताल करवाने की धमकी दे कर वहां से चला आया, लेकिन वह ड्यूटी पर वापस नहीं आया. छुट्टी का प्रार्थनापत्र भेज कर खुद न जाने कहां गायब हो गया.

इधर जब महादेव के पुत्र की शादी में कुल चार दिन बाकी रह गए तो अधिकारी महोदया ने मुझे फिर बुलाया. मैं उन के कमरे में पहुंचा तो महादेव भी वहां खड़ा था और वह उस से पूछ रही थीं, "फिलहाल कितने रुपयों से तुम्हारा काम चल जाएगा?"

"हजूर, बाकी इंतजाम तो मैं ने कर लिया है. ढाई हजार रुपयों का कर्जा मांगा था सरकार से. अगर वह मिल जाता तो सब संभल जाता," महादेव हाथ जोड़ कर बोला.

अधिकारी महोदया मेरी ओर मुड़ कर बोलीं, "नाजिरजी, जरा किसी को भेज कर बैंक से मेरे खाते से ढाई हजार रुपए मंगवा दीजिए. मैं ने चैक काट दिया है. रुपए महादेव को दे दीजिएगा. बेचारे का काम तो चले. इस से एक रसीद ले लीजिएगा. जब इस का पैसा मंजूर हो जाएगा तो यह रकम वापस कर देगा और हां, वह नंदू कहां चला गया है? उस की तो शक्ल ही नहीं दिख रही है कई दिनों से."

महादेव आगे बढ़ कर उन के पैर छूने के लिए झुका तो मेरे दिमाग में वही बात कुलबुलाने लगी. मैं समझ गया कि अब दिन लद गए नंदलाल के, लेकिन मैं तो नाजिर हूं. बस अपने काम से काम रखता हूं.

महादेव को ढाई हजार रुपए मिल गए, उस के पुत्र की शादी भी हो गई. नंदू भी छुट्टी से वापस आ गया, लेकिन अब वह स्टूल पर बैठता तो पहले जैसा अकड़ कर नहीं बैठता था. कुछ झुकाझुका सा, मुंह लटकाए हुए. घंटी बजती तो सुस्त कदमों से अंदर बढ़ जाता. एक दिन अधिकारी महोदया ने घंटी बजाई और नंदू से पानी लाने को कहा तो नंदू ने पहले की तरह रामदीन को आवाज लगाई. "जरा अंदर पानी तो दे आना, रामदीन" और फिर उदास सा स्टूल पर बैठ कर बीड़ी फूंकने लगा.

रामदीन थोड़ा कुनमुनाया, पर पानी ले कर चला गया. आखिर नंदू अभी भी संघ का अध्यक्ष था. रामदीन के अंदर जाते ही हमेशा शांत रहने वाली अधिकारी महोदया एकदम गुस्से से लाल हो गईं. चिल्ला कर बोलीं, "तुम से किस ने कहा पानी लाने को? निकल जाओ फौरन, नंदलाल को भेजो पानी ले कर."

रामदीन हड़बड़ा कर बाहर निकल आया. अब नंदू की परीक्षा की घड़ी आ गई थी. उस की सोई नेतागीरी फिर जाग उठी. पानी ले कर तो वह चला गया, लेकिन फिर दत्त साहब के समय के लटकेझटके आजमाने लगा. दूसरे दिन उसे कार्यालय के रजिस्टर लाने के लिए जिला मुख्यालय भेजा गया. नंदू जिला मुख्यालय की स्टेशनरी शाखा तक गया जरूर, पर बिना रजिस्टर लिए वापस लौट आया. आ कर बड़े बाबू से बोला. "यह तो आप ने मांग पत्र में लिखा ही नहीं था कि कौन से रजिस्टर लाने हैं. मैं क्या करता. वहां से परेशान हो कर वापस लौट आया."

गलती बड़े बाबू की थी. हर बार एक ही तरह के रजिस्टर मंगाए जाते थे. इसी लिए उन्होंने रजिस्टरों की पृष्ठ संख्या नहीं लिखी थी. नंदू को बहाना मिल गया था, लेकिन यह बात सभी जानते थे कि विभाग में कैसे रजिस्टर उपयोग में लाए जाते हैं. नंदू का यह झटका अधिकारी महोदया ने सुना तो फौरन उसे बुलाया और अपने परिचित शांत स्वर में

एतबार

उसे किसी की
मुहब्बत का एतबार नहीं,
उसे जमाने ने
शायद बहुत सताया है.

—बशीर बद्र

बोलीं, "नंदलाल अब तुम कभी बाहर का कोई भी काम करने नहीं जाओगे, यह सब काम रामदीन करेगा. मेरी घंटी भी रामदीन सुनेगा."

नंदू समझ गया कि अब आमनेसामने के युद्ध का मौका आ गया है. वह अकड़ कर बोला, "फिर मैं कौन सा काम देखूंगा? क्या रामदीन आप के दरवाजे के बाहर मेरे स्टूल पर बैठेगा?"

"हां, और तुम उस के स्थान पर बंगले का काम देखोगे."

नंदू और भी भड़क कर बोला, "मैं यह सब नहीं होने दूंगा. अब मैं बंगले का कोई काम नहीं करूंगा. अगर मेरे स्टूल पर वह कल का छोकरा रामदीन बैठा तो मैं कल से ही चपरासी लोगों की हड़ताल करवा दूंगा."

अधिकारी महोदया खूब जोर से हंसी, "कल से क्यों, हड़ताल आज से ही करवा दो न. जरा कोशिश कर के तो देखो नंदलाल."

नंदू की आंखें झुक गईं. यह बात वह अच्छी तरह जानता था कि अब हड़ताल करवा देना उस के बस में नहीं है. एक तो महादेव के पुत्र की शादी में आर्थिक मदद कर उन्होंने सब चपरासियों का दिल जीत लिया है. फिर उस समय उस के गायब हो जाने से वे सब लोग उस से मन ही मन क्रुद्ध हैं. उस समय कमरे के अंदर तीसरा और कोई भी व्यक्ति नहीं था, लेकिन मैं नाजिर हूं न, इसी लिए मुझे यह सब पता चल गया.

मुझे यह भी पता चल गया कि इस के बाद, थोड़ी देर यों ही खड़े रहने के बाद नंदू ने लपक कर अधिकारी महोदया के पैर छू लिए और आंखों में आंसू भर के बोला, "हजूर, मुझे हटा कर यहां रामदीन को न बैठाइए. पहले ही मेरी इज्जत चपरासियों में बहुत गिर गई है. फिर तो बिलकुल ही खत्म हो जाएगी." नंदू की बात सोलह आने सच थी. अनुविभागीय अधिकारी का चपरासी होना गौरव की बात थी. आम जनता के लोग उसी की चापलूसी कर के अंदर घुस पाते थे. फिर मामलेमुकदमे वालों से कभीकभी नज़रानाशुकराना भी मिल जाता था.

अधिकारी महोदया फौरन मान गईं, लेकिन साथ ही यह भी बोलीं, "तुम सिर्फ यहां बैठे ही नहीं रहोगे, अनुविभागीय अधिकारी के अरदली के जितने काम होते हैं. सब करोगे. मेरा बक्सा रोज शाम को बंगले पर पहुंचाओगे और कार्यालय के समय पर यहां लाओगे भी."

नंदू बोला, "कसम ले लीजिए सरकार अगर किसी भी काम में गड़बड़ करूं तो."

अब बक्से की बात चली है तो यह भी बता दूं कि हमारे यहां कार्यालयों में काले रंग के आफिस बाक्स होते हैं. जिन मुकदमों को अधिकारीगण दिन में कार्यालय के समय में नहीं निबटा पाते हैं और जिन मुकदमों के लिए उन्हें कानून की मोटीमोटी किताबें पढ़नी पड़ती हैं. बहस वगैरह सुनने के बाद ऐसे मुकदमों की फाइलें साहब का पेशकार या साहब स्वयं इस बक्से में भर के अपने हाथ से इस में ताला लगा देते हैं. फिर साहब का अरदली इस बक्से को बंगले पर पहुंचा आता है. रात को फैसला लिखने के बाद साहब सारी फाइलें फिर इसी बक्से में बंद कर देते हैं और सुबह उन का अरदली इस बक्से को फिर दफ्तर ले आता है. इस में महत्त्वपूर्ण फाइलें

होती हैं. इसी लिए ताले की चाबी हमेशा साहब के पास ही रहती है.

मैं नाजिर हूं न, इसलिए ऐसे सारे बक्सों का हिसाब मुझे ही रखना पड़ता है. इस में पहले अधिकारी महोदया कभी भी बक्सा घर नहीं भिजवाती थीं. उस दिन उन्होंने मुझे बुलवाया और आदेश दिया कि कार्यालय के बक्सों में से जो सब से बड़ा बक्सा हो. वह उन्हें दिया जाए. उन्हें बहुत सारे मुकदमों की फाइलें हर रोज घर भिजवानी पड़ेंगी. इधर काम भी कुछ ज्यादा ही बढ़ गया है.

उस दिन से नंदू रोज वह काला बक्सा सिर पर रख कर उन के बंगले ले जाता और सुबह फिर बंगले से दफ्तर लाता. बक्से में हमेशा एक मोटा सा ताला लटकता रहता. नंदू ने अनुभव किया कि बक्से का वजन दिन प्रतिदिन बढ़ता ही जा रहा है. कार्यालय से बंगले की दूरी भी कुछ कम नहीं थी. पूरे चार किलोमीटर दूर था बंगला. अधिकारी महोदया स्वयं पैदल ही आतीजाती थीं. सिर पर बक्सा लादे हांफता हुआ नंदू उन के पीछे चलता रहता. वह कभीकभी हलके से सिर मोड़ कर नंदू की हालत देख लेतीं और फिर आगे बढ़ जातीं. जब बक्से का वजन बहुत ही ज्यादा हो गया तो नंदू पेशकार से उलझ पड़ा. "आप कितनी ढेर सारी फाइलें और किताबें भर देते हैं बक्से में? जेठ का महीना है, परेशान हो जाता हूं बक्सा ढोतेढोते."

पेशकार ने दो टूक जवाब दे दिया. "मुझे नहीं मालूम उस बक्से में कितनी फाइलें हैं. वह स्वयं अपने हाथ से ही रखती हैं. खुद ही बक्सा बंद करती हैं और उस की चाबी भी उन्हीं के पास रहती हैं."

अब नंदू बेचारा क्या करता? उसी तरह परेशान हो कर उस बक्से को ढोता रहा. आखिर तंग आ कर उस ने साइकिल खरीदने के लिए ऋण की दरख्वास्त दी. उस में कारण भी साफसाफ लिखा कि दफ्तर का बक्सा बहुत भारी है. उसे ढोना बहुत मुशकिल है. इसलिए उसे एक साइकिल की सख्त जरूरत है. उसी साइकिल पर रख कर वह उस बक्से को ले जाया करेगा." अधिकारी महोदया ने उस का आवेदन फौरन आगे भेज दिया.

लेकिन ऋण मंजूर हो पाता और नंदू की साइकिल आ पाती, इस से पहले ही एक दिन रामदीन दौड़ा हुआ मेरे पास आया और हांफता हुआ बोला, "साहब जल्दी चलिए, नंदू गिर पड़ा है. उसे बहुत चोट लगी है, हस्पताल ले गए हैं उसे."

मैं फौरन उठ कर हस्पताल की ओर चल दिया. रास्ते में रामदीन से जो कुछ मालूम हुआ उस का सार यह था कि बक्सा बहुत भारी होने के कारण नंदू कार्यालय से बंगले तक रास्ते में कई बार किसी ऊंची जगह पहुंच कर बक्सा उतार लेता था. कुछ देर आराम करने के बाद फिर से सिर पर बक्सा लाद कर आगे बढ़ जाता था. आज उस ने मोड़ के पास वाली पुलिया पर जैसे ही बक्सा उतारना चाहा कि वजन के कारण बक्सा फिसल गया. बक्से को पकड़ने की कोशिश में नंदू भी पुलिया के नीचे गिर गया. पुलिया कुछ ज्यादा ऊंची नहीं थी. फिर भी गिरने के कारण उस मजबूत बक्से का तो कुछ नहीं हुआ, पर नंदू चोट खा गया.

हस्पताल पहुंचा तो देखा अधिकारी महोदया वहां पहले से ही मौजूद थीं. वह कुछ चिंतित दिखाई दे रहीं थीं और डाक्टर को बारबार हिदायत दे रही थीं कि नंदू की अच्छी तरह जांच की जाए व अच्छे से अच्छा इलाज किया जाए, लेकिन डाक्टर ने हम सब लोगों को बताया कि इतनी चिंता की कोई बात नहीं है. सिर्फ एक पैर में मोच आई है व कुछ खरोंच लगी है, आठदस रोज में वह बिलकुल ठीक हो जाएगा.

मैं आड़ में खड़ा अधिकारी महोदया और डाक्टर की बातें सुन रहा था. नंदू की हालत के बारे में बारबार तसल्ली कर लेने के बाद उन्होंने कुछ सोच कर डाक्टर से पूछा. "क्यों डाक्टर साहब, आप को याद है. मेरे पहले जो दत्त साहब थे. उन को एक बार पलंग से गिर जाने के कारण चोट आई थी? आप ही ने उन का इलाज किया था न?"

नजर

वो नजर गर्द
हो चुकी कब की,
तीर बाकी है अब भी
घाव के साथ.

—ताज

"जी हां, जी हां... मुझे खूब याद है. दत्त साहब की कमर की हड्डी उतर गई थी. पूरा एक हफ्ता लगा था ठीक होने में."

"नंदू को उस से ज्यादा चोट तो नहीं लगी है?"

"जी नहीं, नंदू तो बस चारपांच दिन में बिलकुल ठीक हो जाएगा, लेकिन आप को दत्त साहब की अचानक याद कैसे आ गई?" डाक्टर ने हैरानी से पूछा.

"कुछ नहीं, बस यों ही याद आ गई. आप नंदू का इलाज जरूर करिएगा, अच्छी तरह." महोदया ने शांत भाव से कहा और चल दीं.

नंदू जब ठीक हो गया तो मेरे पास आया. कहने लगा, उस की ड्यूटी साहब के बंगले पर ही लगा दी जाए. मैं हैरान रह गया, "फिर तुम्हारे स्टूल पर रामदीन बैठने लगेगा," मैं ने कहा.

"बैठने दीजिए साहब."

"मगर अधिकारी महोदया से पूछ लिया है?"

"हां, पूछ लिया है. उन्हें कोई एतराज नहीं है." नंदू बोला.

अब मैं ठहरा नाजिर. जब साहब को एतराज नहीं है तो भला मुझे क्या आपत्ति हो सकती थी? तो इस तरह नंदू उन के बंगले पर काम करने लगा. खूब मन लगा कर काम किया उस ने. रामदीन नंदू के स्टूल पर बैठने लगा. सब कुछ ठीकठाक चलने लगा. मैं बड़ा संतुष्ट था कि रोजरोज ड्यूटी बदलने के झंझट से छुटकारा मिल गया.

सच पूछा जाए तो सभी संतुष्ट और प्रसन्न थे. नंदू भी बड़ा खुश नजर आता था. बंगले पर खूब मेहनत से पहले की तरह काम करने लगा था. तभी एक दिन अधिकारी महोदया के तबादले के आदेश आ गए. हम सब लोगों को बड़ा दुख हुआ. ऐसा शांत, सीधा और नम्र स्वभाव का अधिकारी कहां मिलता है? इसलिए सब को दुख तो होना ही था, लेकिन क्या किया जा सकता था. सरकारी नौकरियों में स्थानांतरण तो होता ही रहता है.

नए साहब भी आ गए. विदाई समारोह वगैरह भी हुआ. अधिकारी महोदया जब जाने लगीं तो उन्होंने सभी चपरासियों को इनाम दिया, लेकिन सब से अधिक इनाम दिया नंदू को. नंदू भी बहुत उदास था. कुछ ही दिनों में वह अधिकारी महोदया का बहुत आदर करने लगा था. उन का सामान ट्रक पर लद कर चला गया. नए साहब अभी डाक बगंले में ही ठहरे थे.

बिलकुल आखिरी दिन, जब अधिकारी अपनी आया के साथ बस से जाने लगीं, तो हम सब कर्मचारी लोग उन्हें बस अड्डे तक छोड़ने गए. किसीकिसी ने उन के पैर भी छूए. तभी उन की नजर मुझ पर पड़ी. उन्हें अचानक जैसे कुछ याद आया. मुझे इशारे से पास बुला कर वह बोलीं, "नाजिरजी एक बात मैं भूली ही जा रही थी. वह बक्सा, नंदू जिसे ले कर गिर पड़ा था. बंगले के पिछवाड़े पड़ा है. उसे उठवा लीजिए... और उस के ताले की चाबी कहीं खो गई है. आप खुद ही कोई चाबी लगा कर खोल लीजिए." यह कह कर वह हंसी, फिर बोलीं, "लेकिन उसे अकेले में खोलिएगा और उस में जो फाइलें हैं, उन के विषय में किसी को कुछ बताइएगा नहीं."

वह तो चली गईं, लेकिन मैं बड़ी हैरत में पड़ गया. जब भीड़ छंट गई तब मैं चुपचाप टहलता हुआ उस सुनसान बंगले के पीछे पहुंचा. वहां वह काला बक्सा पड़ा हुआ था. उस पर वही ताला झूल रहा था. किसी तरह ताले को खोला. मैं कुछ फाइलें मिलने की उम्मीद कर रहा था. इसी उत्सुकता में वहां तक आया था कि आखिर ऐसी कौन सी फाइलें हैं, जिन्हें वह इस तरह फेंक गई हैं, लेकिन ढक्कन खोलते ही देखा. पूरे बक्से में खूब वजनी मोटेमोटे पत्थर भरे हुए हैं. अरे, तो क्या बेचारा नंदू पत्थर ही ढोता रहा इतने दिन, मैं ने सोचा.

वह बक्सा मैं खाली कर के उठा लाया. उस में कौन सी फाइलें थीं. यह मैं ने किसी को नहीं बताया. क्यों बताता? मैं तो नाजिर हूं न. मुझे बस अपने काम से मतलब रखना चाहिए, लेकिन एक बात आज तक मेरी समझ में नहीं आई. इतने वजनी पत्थर अधिकारी महोदया ने कहां से बटोरे होंगे? उन्हें ऐसा करते हुए क्या किसी ने देखा नहीं होगा? लेकिन मैं क्यों माथापच्ची करूं? अच्छा, अब चलूं. नए साहब बुला रहे हैं. नाजिर की यही तो मुसीबत है. •

लेख • राकेश रंजन
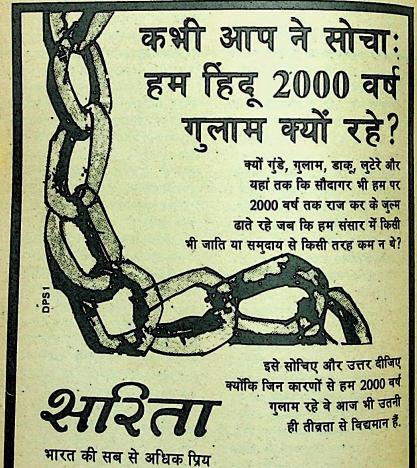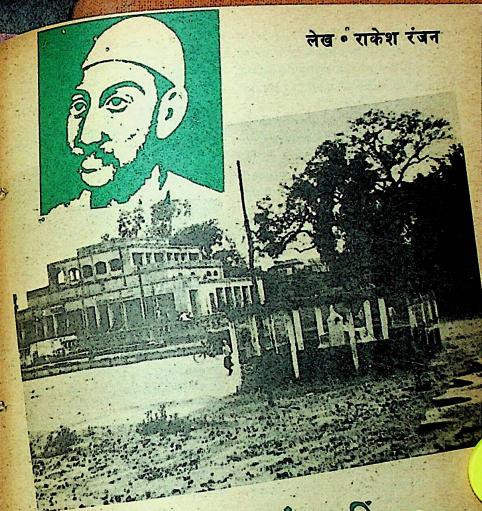
बाबू कुंवरसिंह के गांव में

स्वतंत्रता संग्राम में सक्रिय भूमिका निभाने वाले बाबू कुंवरसिंह का परिवार और उन का गांव आज सरकार की घोर उपेक्षा का शिकार क्यों है?

1857 के स्वतंत्रता संग्राम की चर्चा होते ही बाबू कुंवरसिंह का नाम जबान पर आ जाता है. इस संग्राम में देश के जिन तीनचार स्वतंत्रता सेनानियों ने अंगरेजों का डट कर मुकाबला किया था, उन में जगदीशपुर (बिहार) के निवासी बाबू कुंवरसिंह का महत्त्वपूर्ण स्थान है. अपने

सीमित साधनों के बल पर और 80 वर्ष की उम्र होने के बावजूद उन्होंने अंगरेजों के दांत खट्टे कर दिए थे, जिस की वजह से ब्रिटिश शासकों ने उन्हें सब से अधिक खतरनाक आदमी करार दिया था.

बाबू कुंवरसिंह ने अपने वचन के अनुसार 23 अप्रैल, 1857 को जगदीशपुर को अंगरेजों से मुक्त कराया था. इस से दो दिन पहले शिवपुर घाट से गंगा पार करते समय अंगरेजों ने उन की बांह में गोली मार दी थी. गोली लगने के बाद उस बूढ़े जांबाज ने अपने हाथ को काट कर गंगा नदी में प्रवाहित कर दिया था. घायल अवस्था में ही उन्हें जगदीशपुर पहुंचाया गया था, जहां 26 अप्रैल को उन की मृत्यु हो गई थी.

बाबू कुंवरसिंह की जन्मतिथि इतिहास में कहीं नहीं मिलती. किसी भी व्यक्ति का सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण दिन वह होता है, जिस दिन वह अपने लक्ष्यों तक पहुंच जाता है. चूंकि 23 अप्रैल को कुंवरसिंह ने घायल अवस्था में अंगरेजों से लड़ कर विजय हासिल की थी, इसलिए देश की स्वतंत्रता के बाद उसी दिन को 'विजय दिवस' के रूप में मनाने का निर्णय लिया गया. तब से ले कर अब तक हर 23 अप्रैल को 'विजय दिवस' कुंवरसिंह के स्मृति दिवस के रूप में मनाया जाता है.

इस अवसर पर जगहजगह गोष्ठियों का
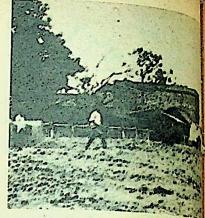
आयोजन होता है, राजनीतिबाजों द्वारा कुंवरसिंह के विषय में लंबेचौड़े भाषण होते हैं. उन की स्मृति को कायम रखने के उद्देश्य से स्मारकों के निर्माण आदि की घोषणाएं की जाती हैं और दूसरे दिन से सब कुछ सामान्य हो जाता है. किसी भी नेता या समाज सुधारक को यह स्मरण नहीं रहता कि उन्होंने 'विजय दिवस' के अवसर पर जनता को क्या वचन दिए हैं.

आजादी के 35 वर्ष बाद कुंवरसिंह का गांव जगदीशपुर कैसा है, यह देखने के लिए लेखक वहां तथा कुंवरसिंह से जुड़े अन्य गांवों में गया तथा उन के परिवार के बचे लोगों से मिला. कुंवरसिंह की स्मृति से जुड़े गांवों को

एक प्रतिमा तक स्थापित नहीं की गई है, जब कि इस स्थान का भ्रमण देश के दो महत्त्वपूर्ण नेताओं (जवाहरलाल नेहरू और श्रीमती इंदिरा गांधी) को छोड़ कर प्रायः सभी छोटेबड़े नेताओं ने एक या एक से अधिक बार किया होगा और उस स्थान पर कुंवरसिह की प्रतिमा बैठाने का आश्वासन भी दिया होगा.

बाबू कुंवरसिह के निवास के अहाते में पड़ी गंदगी (ऊपर) व (दाएं) बाबू कुंवरसिह.

देख कर ऐसा प्रतीत हुआ जैसे हमारे देश को अपने उन स्वतंत्रता सेनानियों पर कोई गर्व नहीं, जो राजनीति से जुड़े हुए नहीं हैं. इस से बढ़ कर विडंबना की बात और क्या हो सकती है कि जगदीशपुर में आज भी कुंवरसिह की

वलीपपुर स्थित कुंवरसिह का ऐतिहासिक मकान.
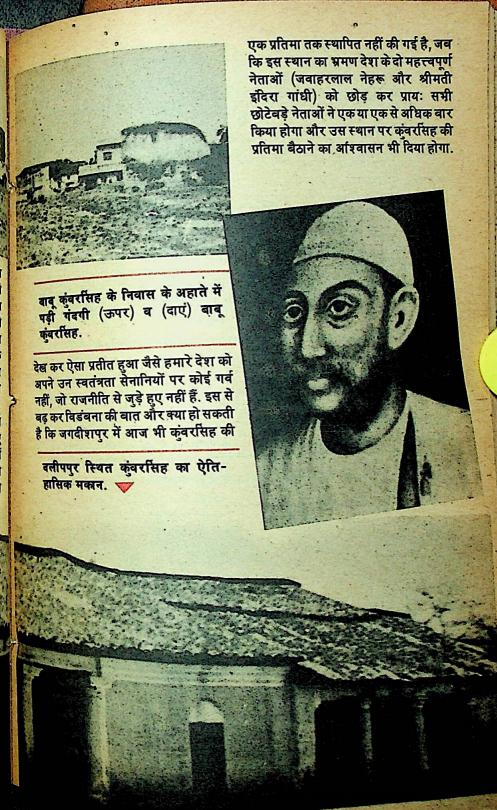
जगदीशपुर में बाबू कुंवरसिंह का निवास स्थान जिस अहाते में है, वह विहार सरकार के अधिकार में है. अहाते का कम से कम आधा भाग आसपास के लोगों द्वारा शौच करने के काम में इस्तेमाल होता है. अहाते के बीच में आज भी पीपल का वह ऐतिहासिक पेड़ खड़ा है, जो इस बात का गवाह है कि इसी अहाते में कई देशभक्त लोगों को अंगरेजों ने गोलियों से उड़ा दिया था या पीपल के पेड़ से बांध कर फांसी पर लटका दिया था.

बाबू कुंवरसिंह के निवास के ठीक सामने एक मजार है. कहते हैं कि कुंवरसिंह ने संपूर्ण आरा क्षेत्र में सांप्रदायिक सद्भाव कायम करने में अभूतपूर्व सफलता हासिल की थी. संभवत: इसी कारण आरा में एक मुसलिम महिला (जो उन की करीबी बताई जाती है) धरमन के नाम पर 'धरमन बीबी की मसजिद' और 'धरमन चौक' है.

बाबू कुंवरसिंह के निवास में अब केवल सामने के दो खंभे खड़े हैं, जो उन के समय के बनवाए हुए हैं. इसी निवास में आजकल बिहार पुरातत्त्व विभाग के अधीन 'बाबू कुंवरसिंह स्मृति संग्रहालय' है. यह संग्रहालय केवल नाम मात्र का है. इस में बाबू कुंवरसिंह की एक छोटी सी प्रतिमा है तथा लगभग एक दरजन कागज पर बनाए हुए चित्र हैं, बस. इसी की देखरेख के लिए पांच कर्मचारी हैं.

संग्रहालय की दशा

जिस समय लेखक संग्रहालय में पहुंचा, उस समय दिन के 11 बज कर 45 मिनट हो रहे थे. उस समय तक संग्रहालय में मात्र एक चपरासी तथा एक चौकीदार उपस्थित था. चपरासी से जब यह पूछा गया कि संग्रहालय के मुख्य अधिकारी कहां हैं तो उस ने बताया कि वह पटना गए हैं. पटना जाने का उस ने जो कारण बताया, वह भी कम हास्यास्पद नहीं था. उस ने बताया कि वह 'संग्रहालय के उत्थान' के लिए पटना गए हैं. उस के बोलने के लहजे से लगा कि यह उस का रटारटाया जुमला है.

जगदीशपुर में बाबू कुंवरसिंह की स्मृति से जुड़ा हुआ एक पोखर है, जिसे उन्होंने स्वयं बनवाया था. इस पोखर की गंदगी का वर्णन नहीं किया जा सकता. उस पर कमाल यह कि उस के ठीक सामने नगरपालिका का कार्यालय है. नगरपालिका के कार्यालय से सट कर ही कुंवरसिंह के नाम

कुंवरसिंह की स्मृति से जुड़ा पोखर.
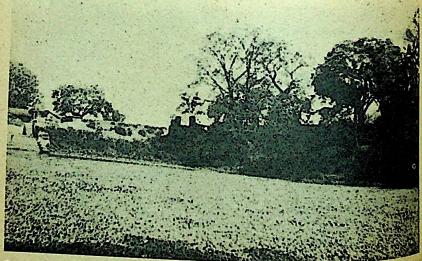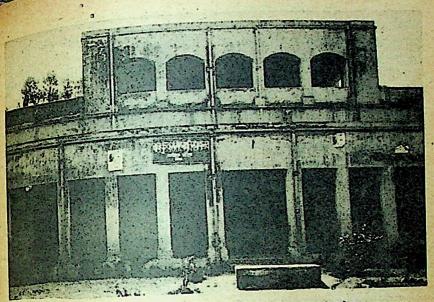
बाबू कुंवरसिंह स्मृति संग्रहालय : ऐतिहासिक मूल्यों के प्रति सरकारी उपेक्षा का प्रमाण.

पर एक बालिका विद्यालय है, जिस के विषय में यह पता चला कि बोर्ड तो कुंवरसिंह के नाम का लगा है, लेकिन इधर सरकारी कागजपत्रों में कुंवरसिंह का नाम हटा दिया गया है.

बिहार के कोनेकोने में छुटभइए नेताओं के नाम पर विद्यालय एवं महाविद्यालय चल रहे हैं, लेकिन कुंवरसिंह के नाम को यदि वहां से हटाने का कोई सरकारी कार्यक्रम है तो यह गलत बात है. मगध विश्वविद्यालय का क्षेत्र इतना विस्तृत है कि संपूर्ण विश्वविद्यालय पर प्रशासनिक नियंत्रण बेकाबू हो उठता है. भोजपुर और रोहतास जिले के महाविद्यालयों को मिला कर बाबू कुंवरसिंह के नाम पर विश्वविद्यालय की स्थापना की मांग एक अरसे से की जा रही है, लेकिन अब तक इस पर कोई ध्यान नहीं दिया गया है.

कुछ दिनों पूर्व यह चर्चा थी कि जगदीशपुर में कुंवरसिंह के नाम पर एक सैनिक स्कूल की स्थापना होगी. इसी प्रकार इस क्षेत्र को रेल लाइन से जोड़ने की भी योजना है. कुंवरसिंह के निवास वाले अहाते को भी पार्क के रूप में परिणित करने की मांग समयसमय पर उठती रही है, लेकिन सब कुछ यथावत है. कहीं कोई परिवर्तन नहीं हुआ है और न ही निकट भविष्य में होने की आशा ही है. हां, आरा में कुछ उत्साही लोगों ने 'कुंवर सेना' के नाम से एक संगठन जरूर खड़ा कर लिया है, पर वह भी अपने घोषित कार्यक्रमों पर सफल ढंग से अमल नहीं कर पा रहा है.

दलीपपुर का ऐतिहासिक महत्त्व

जगदीशपुर से मात्र छः किलोमीटर की दूरी पर दलीपपुर गांव है. इस गांव में कुंवरसिंह के भाई दयालसिंह रहते थे. इस गांव में भी कुंवरसिंह की सेना के लिए गोलाबारूद का निर्माण होता था. मात्र दलीपपुर की ही कोठी बची है, जिस का निर्माण 1830 ईसवी में हुआ था. अंगरेजों ने इस कोठी में भी आग लगा दी थी, जिस के अवशेष आज भी विद्यमान हैं. इस कोठी से जुड़ी एक महत्त्वपूर्ण बात यह है कि इस में कुंवरसिंह ने 18 वर्ष गुजारे थे. दयालसिंह के वंशज आज भी दलीपपुर में रह रहे हैं.

दलीपपुर में एक हाईस्कूल, दो मिडिल स्कूल, तीन प्राइमरी स्कूल तथा एक स्वास्थ्य

उपकेंद्र है. सोन नहर पर आश्रित दलीपपुर के किसानों का जीवन आज भी परंपरागत है, सिवा इस के कि पढ़ेलिखे लोग गांव से जा चुके हैं. मुख्य सड़क से गांव को जोड़ने वाली सड़क की दुर्दशा अवर्णनीय है. गांव के लोगों ने बताया कि देश का कोई भी नेता जब जगदीशपुर में आता है तो वह दलीपपुर में जरूर आता है. आश्चर्य है किसी की नजर सड़क की दुर्दशा पर नहीं पड़ी.

नक्सली गतिविधियों के लिए भोजपुर जिला कुख्यात रहा है, लेकिन जगदीशपुर एवं दलीपपुर गांवों में नक्सलियों का कोई उत्पात नहीं. इस क्षेत्र में कोई जातीय टकराव भी नहीं है. कुंवरसिंह के प्रति आम लोगों की जो धारणा है, वह निर्विवाद है और उस धारणा को सतही समस्या खड़ा कर के तोड़ पाना मुशकिल है.

बाबू कुंवर सिंह के जीवन में ही उन के अपने परिवार का नामोनिशान मिट चुका था, लेकिन उन के भाई दयालसिंह का परिवार आज भी दलीपपुर में है. इस परिवार के मुखिया सच्चिदानंदसिंह से हुई बातचीत यहां दी जा रही है.

प्रश्न : बाबू कुंवरसिंह के परिवार के ज्येष्ठ होने के नाते आप कैसा महसूस करते हैं?

उत्तर : गौरव का अनुभव होता है.

प्रश्न : सरकार की ओर से आप के परिवार को कोई मदद मिली है?

उत्तर : नहीं.

आप का भाषा ज्ञान
(पृष्ठ 51 के उत्तर)

1. बगावत, 2. बही, 3. संहिता, 4. सचिवालय, 5. ज्वलनशील, 6. सूचना अधिकारी, 7. अंकुरण, 8. पहलू, 9. पुलिंदा, 10. जस्ता, 11. जाली, 12. जमघट, 13. बातूनी, 14. ढकोसला, 15. गुरिल्ला, 16. बंसी, 17. पेशी, 18. चरबी, 19. नीति, 20. परिभाषा, 21. दहकना, 22. दस्तावेज.

प्रश्न : सरकार से किसी प्रकार के सहयोग की अपेक्षा भी करते हैं?

उत्तर : कदापि नहीं.

प्रश्न : कुंवरसिंह के प्रति आम लोगों की जो धारणा है, उस से आप संतुष्ट हैं?

उत्तर : पूर्णतः संतुष्ट हूं. कुंवरसिंह के कारण हम लोगों को भी लोग श्रद्धा और सद्भाव की दृष्टि से देखते हैं.

प्रश्न : क्या आप ने कभी ऐसा भी महसूस किया है कि आजादी के बाद कुंवरसिंह जैसे स्वतंत्रता सेनानी की तथा उन से जुड़े क्षेत्र की सरकारी तौर पर घोर उपेक्षा की गई है?

उत्तर : महसूस किया है, लेकिन इस मामले में मेरा कुछ कहना व्यर्थ होगा. देश के प्रथम राष्ट्रपति से ले कर कई मंत्री और अधिकारियों ने समयसमय पर स्वयं ही आ कर कई आश्वासन दिए. आश्वासन कोरे सिद्ध हुए. इस बात पर अकेले मुझे ही नहीं, देश को भी चिंतित होना चाहिए.

प्रश्न : आजादी के बाद कुंवरसिंह की संपत्ति का, जो यत्रतत्र बिखर गई थी, क्या सही उपयोग हुआ?

उत्तर : नहीं, इस के लिए सरकार जिम्मेदार है. अलगअलग लोगों के हाथों में जो ऐतिहासिक अवशेष हैं, उन्हें समेटने का प्रयास होना चाहिए.

प्रश्न : कुंवरसिंह की ऐतिहासिक महत्ता को अक्षुण्य बनाए रखने के लिए आप ने अपनी ओर से क्या प्रयास किया?

उत्तर : बिलकुल व्यक्तिगत रूप से तो कुछ नहीं किया, लेकिन उन के नाम पर जहां कहीं मुझ से कोई सहयोग मांगा गया, मैं ने दिया.

प्रश्न : आप के विचार में शहीदों के प्रति स्वतंत्र और स्वाभिमानी देश की क्या भावना होनी चाहिए?

उत्तर : बिना बढ़ाएचढ़ाए उस की महानता को स्वीकार कर उस की ऐतिहासिक महत्ता को सुरक्षित करना चाहिए, ताकि आने वाली पीढ़ी उस से प्रेरणा ले सके.

जगदीशपुर, दलीपपुर तथा उस के

आसपास के गांवों, सड़कों तथा किसानों की दुर्दशा देख कर कोई आज यह कल्पना नहीं कर सकता कि इस संपूर्ण क्षेत्र ने आजादी की पहली लड़ाई में अपनी अहम भूमिका निभाई थी.

बाबू कुंवरसिंह तथा उन के प्रखर सेनापति हरकिसुनसिंह के अलावा भी हजारों लोगों ने मातृभूमि के लिए आत्मबलिदान किया था, लेकिन उन्होंने कल्पना भी नहीं की होगी कि आजाद भारत में उन के अपने क्षेत्र और वंशजों की घोर उपेक्षा होगी.

बाबू कुंवरसिंह की जीवनी सर्वप्रथम उमाशंकर दीक्षित ने 1923 में लिखी थी. उस की भूमिका में आचार्य शिवपूजन सहाय ने लिखा था कि बाबू कुंवरसिंह जैसा स्वतंत्र प्रकृति का निर्भीक वीर यदि किसी दूसरे देश में उत्पन्न हुआ होता तो वहां के लोग उस की पूजा और प्रतिष्ठा करते, लेकिन आजाद भारत में ठीक इस के विपरीत हो रहा है, जब कि कहा यह जाता है कि यदि इतिहास और स्वतंत्रता दोनों ही शत्रु के हाथों में पड़ कर नष्ट हो रहे हों और दोनों में से किसी एक की रक्षा करने का प्रश्न सामने हो तो स्वतंत्रता का मोह छोड़ कर इतिहास को ही बचा लेना चाहिए, क्योंकि समय पा कर स्वतंत्रता पुनः प्राप्त की जा सकती है, पर इतिहास के नष्टभ्रष्ट हो जाने से उस का दोबारा निर्माण नहीं हो सकता और इतिहास अगर बचा रहेगा तो उस से प्रेरणा तथा प्रोत्साहन पा कर स्वतंत्रता फिर प्राप्त की जा सकती है. ●

सुरभि पांडेय
उभरती हुई नृत्यांगना

भारतीय नृत्यों की प्राचीन परंपरा को कायम कर ऊंचाइयों तक पहुंचने के प्रयास में रत जिन

नृत्यांगनाओं का नाम लिया जाता है उन में सहसा एक और नाम सामने आ जाता है वह है— सुरभि पांडेय का, जिस ने अल्पायु में ही अपनी मेहनत और लगन से कत्थक नृत्य में अपना एक विशिष्ट स्थान बना लिया है. वह कत्थक की प्रसिद्ध नृत्यांगना फिल्म अभिनेत्री वैजयंतीमाला एवं सुप्रसिद्ध कत्थक नृत्यांगना सितारादेवी की शिष्या है.

यहां प्रस्तुत है उन से की गई एक भेंटवार्ता :

प्रश्न : आप ने कत्थक नृत्य कब से सीखना शुरू किया?

बेहतर नृत्यांगना बनने के लिए जरूरी है रोजरोज का अभ्यास.

पारिवारिक और सामाजिक विरोध को सहते हुए अपनी लगन और मेहनत के बल पर किस प्रकार सुरभि पांडेय ने कत्थक नृत्य में अपना स्थान बनाया है?

उत्तर : मैं ने 11 वर्ष की उम्र से ही नृत्य सीखना शुरू कर दिया था. उस समय मैं कक्षा छः में पढ़ती थी.

प्रश्न : आप ने नृत्य का प्रदर्शन किस उम्र से शुरू किया?

उत्तर : सन 1978 में 14 वर्ष की उम्र से मैं ने दतिया से अपने नृत्य के सार्वजनिक प्रदर्शन की शुरुआत की.

प्रश्न : क्या आप के परिवार में किसी ने आप की इस रुचि का विरोध नहीं किया?

उत्तर : जी नहीं, यद्यपि हलका सा विरोध का स्वर उठा तो मैं ने अपनी मां से स्पष्ट कह दिया था कि मैं नृत्य अवश्य सीखूंगी और उन्होंने मेरा पक्ष लिया तथा मुझे हमेशा प्रोत्साहित किया. इसी का फल है कि मैं निरंतर आगे बढ़ रही हूं.

प्रश्न : आप ने नृत्य का प्रदर्शन अब तक कहांकहां किया है?

उत्तर : मेरे नृत्यों का प्रदर्शन दिल्ली, बंबई दूरदर्शन केंद्रों पर हो चुका है. इस के अलावा पुरी, वाराणसी, पटना, मुगलसराय, गाजीपुर, रामपुर, रामनगर, झांसी, कटक, ग्वालियर, कलकत्ता, भोपाल, भुवनेश्वर में भी एकल नृत्य का प्रदर्शन कर चुकी हूं तथा मध्यप्रदेश शासन द्वारा आयोजित 'बृहद कलांगन 81' में भी मैं ने नृत्य प्रदर्शन किया है.

प्रश्न : नृत्यों के लिए आप ने किनकिन पुस्तकों का अध्ययन किया है?

उत्तर : मैं ने वाणभट्ट की नृत्य शैली, कत्थक मयूरी एवं महालक्ष्मी के कत्थक नृत्य का बड़ी गहनता से अध्ययन किया है.

'पाश्चात्य नृत्यों के आगमन से भारतीय नृत्यों पर कोई असर नहीं पड़ा है' : सुरभि पांडेय.

प्रश्न : क्या आप ऐसा महसूस नहीं करतीं कि पाश्चात्य नृत्यों के आगमन से भारतीय शैली के नृत्यों पर असर पड़ा है?

उत्तर : जी नहीं, पाश्चात्य नृत्यों के आगमन से कोई असर नहीं पड़ा, बल्कि भारतीय शैली के नृत्यों में और निखार आया है, क्योंकि पाश्चात्य नृत्य जैसे डिस्को आदि एक लहर है, जो अब लुप्त सी हो चली है, लेकिन भारतीय शैली के नृत्यों में स्थायित्व है. उन में दर्शकों को हमेशा एक नया आनंद मिलता है और पाश्चात्य नृत्य भारतीय शैली के नृत्यों की तुलना में कमजोर ही सिद्ध होते हैं.

प्रश्न : क्या आप ने किसी फिल्म में भी अभिनय किया है?

उत्तर : जी हां, हिंदी फिल्म 'खिलौना' जब उड़िया में 'वोडा' नाम से बनी (1981 में प्रदर्शित) तो मैं ने उस में अभिनय किया था.

प्रश्न : आप के क्याक्या शौक हैं?

उत्तर : मेरा शौक माडलिंग है, लेकिन मैं अभी इस क्षेत्र में प्रविष्ट नहीं हुई हूं.

—राजीव सक्सेना, वि.वि.प्र.●

इस स्तंभ के लिए समाचारपत्रों की रोचक कटिंग भेजिए. सर्वोत्तम कटिंग पर 15 रुपए की पुस्तकें पुरस्कार में दी जाएंगी. कटिंग के साथ अपना नाम व पूरा पता अवश्य लिखें.

भेजने का पता: संपादकीय विभाग, मुक्ता, ई-3, रानी झांसी मार्ग, नई दिल्ली-110055.

विश्व का सब से लंबा मुकदमा

पुणे की एक अदालत में विश्व का सब से लंबा मुकदमा चला, जिस का फैसला 761 वर्ष बाद सुनाया गया.

अदालतों में विलंब टालने विषय पर आयोजित एक गोष्ठी में बताया गया कि गिनी विश्व रिकार्ड पुस्तक में इस का उल्लेख किया गया है.

पुस्तक के अनुसार 27 अप्रैल, 1966 को बाला साहब पाटलोगिथोराट के पक्ष में एक मुकदमे का फैसला सुनाया गया, जो उन के पूर्वजों ने 1205 में दायर किया था.

—राजस्थान पत्रिका, जयपुर (प्रेषक: प्रदीप गुप्ता) (सर्वोत्तम)

*

मृत व्यक्तियों के नाम पर भोजन दर्ज

पूना के एक स्थानीय सरकारी हस्पताल में मृत व्यक्तियों तक के नाम पर भोजन खर्च दर्ज होने का मामला प्रकाश में आया है.

अध्ययन दल के अध्यक्ष मानगुडकर ने बताया कि हस्पताल प्रशासन लगभग साढ़े बारह सौ मरीजों का खानेपीने का खर्च देता है. इन में चार सौ मरीज ऐसे आते हैं, जिन्हें खाने की जरूरत नहीं होती या वे खाने में अक्षम होते हैं. इस श्रेणी में वे भी शामिल हैं, जो हस्पताल छोड़ चुके हैं या मर चुके हैं.

—नवभारत, जबलपुर (प्रेषक: मोहनलाल बातरी)

*

मुरगे पर विवाद छिड़ा

बिलासपुर शहर के बापू नगर में एक मुरगे को ले कर दो व्यक्तियों में विवाद इतना बढ़ गया कि पुलिस को हस्तक्षेप करना पड़ गया.

प्राप्त जानकारी के अनुसार चैतराम नाम के एक व्यक्ति ने 13 रुपए का एक मुरगा खरीदा और उसे अपने भाई के घर छोड़ कर रायपुर चला गया. वापसी पर महल्ले के प्रीतम नाम के व्यक्ति ने उस मुरगे पर अपना दावा ठोंक दिया.

महल्ले के लोगों ने विवाद निबटाने के लिए कहा कि मुरगा छोड़ दिया जाए और जिस का होगा उस के घर चला जाएगा. मुरगा छोड़ दिया गया और जब वह चैतराम के घर में घुसने लगा तो प्रीतम ने उसे पत्थर मार दिया. मुरगा घायल हो गया. घटना की रिपोर्ट थाने में लिखाई गई.

पुलिस मुरगे को जब्त कर के दोनों को थाने ले गई और दोनों के खिलाफ दंगाफसाद का जुर्म कायम किया. चैतराम ने प्रीतम के खिलाफ रिपोर्ट वापस ले ली और घायल मुरगा पुलिस वालों को भेंट कर के वापस आ गया.

— नवभारत, रायपुर (प्रेषक: कुमारराजेंद्र अग्रवाल)

आंचल तो नहीं है
यह मेघ किसी रूप का काजल तो नहीं है,
चर्चे हैं, बड़ा शोर है, आंचल तो नहीं है.
खुशबू के पत्र बांटती फिरती है द्वारद्वार,
सौंधी हवा ये सिरफिरी पागल तो नहीं है.
चमके है स्वर्ण रेख सी बलखाती बिजुरिया,
प्रकृति नटी के पांव की पायल तो नहीं है.
दुबकी है झुरमुटों में सईसांझ से तपन,
ओलों की सख्त मार से घायल तो नहीं है.
अच्छे से जांच लेना परख लेना शहर को,
इस्पात, ईंट, कांच का जंगल तो नहीं है.
—इसाक 'अश्क'
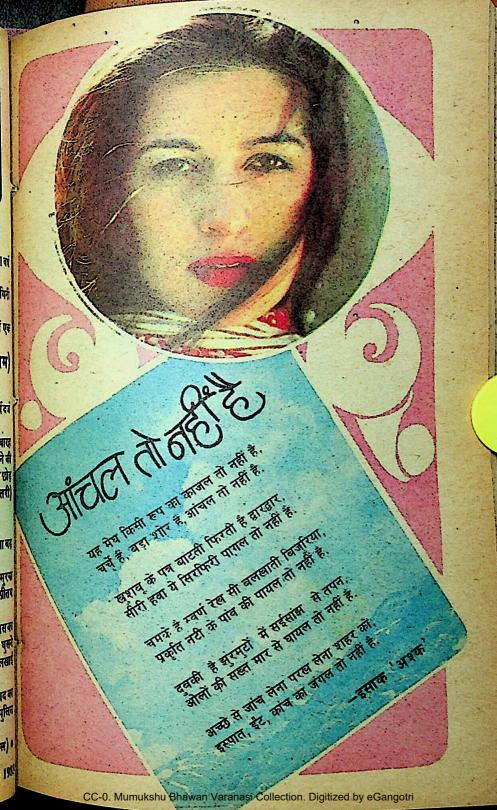
दिल्ली प्रेस विचार प्रतियोगिता

दिल्ली प्रेस पत्रिकाओं द्वारा देश के विभिन्न विश्वविद्यालयों/महाविद्यालयों के छात्रछात्राओं को अपने विचार स्वतंत्रता पूर्वक व्यक्त करने के लिए प्रोत्साहित करने तथा उन की वैचारिक शक्ति के विकास के उद्देश्य से विचार प्रतियोगिताएं आयोजित करवाई जाती हैं. पिछले दिनों विभिन्न विश्वविद्यालयों में हमारे प्रतिनिधियों द्वारा आयोजित करवाई गई प्रतियोगिताओं में से एक की रिपोर्ट यहां प्रस्तुत है:

उज्जैन के सांदीपनि वाणिज्य एवं कला महाविद्यालय में 'दिल्ली प्रेस विचार प्रतियोगिता' का आयोजन किया गया. प्रतियोगिता का विषय था— 'सांप्रदायिक दंगों की शुरुआत धार्मिक स्थलों से होती है.'

इस प्रतियोगिता में विभिन्न महाविद्यालयों के छात्रों ने भाग लिया.

प्रतियोगिता में प्रथम पुरस्कार सां... वाणिज्य एवं कला महाविद्यालय के बी.... (तृतीय वर्ष) के छात्र अजितकुमार जै... प्राप्त किया. इस विषय पर अपने वि... व्यक्त करते हुए अजित ने कह...

"सांप्रदायिक दंगों की शुरुआत के लिए न तो धार्मिक स्थल दोषी हैं और न ही कभी दोषी होंगे.

"इन दंगों की शुरुआत के लिए मनुष्य स्वयं जिम्मेदार है. जिस ने विभिन्न धर्म एवं जातियां बना रखी हैं. अपने धर्म को दूसरे धर्म से ऊंचा दिखाने के लिए मनुष्य ईर्ष्यावश दूसरे धर्म के आदर्शों को खोखला सावित करने का प्रयास करता है और जब ऐसे प्रयास टकराते हैं तो बस वहीं से सांप्रदायिक दंगों की शुरुआत होती है.

"वैसे कुछ दंगों की शुरुआत धार्मिक स्थलों से भी होती है, लेकिन वर्तमान स्थिति को देखते हुए न तो विभिन्न धर्मों को खत्म किया जा सकता है और न ही धार्मिक स्थलों को."

द्वितीय पुरस्कार विजेता प्रशांत राव ने अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि "इस बात में अधिक सचाई नहीं है कि सांप्रदायिक दंगों की शुरुआत धार्मिक स्थलों से होती है. अधिकांश दंगों की शुरुआत राजनीतिक स्थलों से होती है. इन्हें वे भ्रष्ट सत्ता के लालची नेता करवाते हैं, जिन के सामने एकमात्र उद्देश्य– अपने स्वार्थों की पूर्ति रहता है. ये सफेदपोश नेता दूसरों को लालच दे कर उन से दंगे करवाते हैं.

"पिछले कुछ वर्षों में हमारे देश में हुए सांप्रदायिक दंगे इस बात का सबूत हैं कि इन दंगों में किसी न किसी रूप में राजनीतिक दलों का हाथ था." प्रशांत माधव विज्ञान महाविद्यालय में बी.एससी. (तृतीय वर्ष) का छात्र है.

प्रतियोगिता में तृतीय पुरस्कार प्राप्त ऋषिकुमार शर्मा ने अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि "कभी भी सांप्रदायिक दंगों की शुरुआत धार्मिक स्थलों से नहीं बल्कि उस जगह से होती है जहां राजनीतिबाजों के राजनीतिक स्वार्थ टकराते हैं. लोगों में मेलजोल भाईचारे की भावना है, किंतु ये राजनीतिबाज ही सांप्रदायिकता फैला कर दंगे करवाते हैं. इस के लिए हमारी राजनीतिक व्यवस्था दोषी है. हमारे देश में सांप्रदायिक दंगों की शुरुआत की जड़ राजनीतिक दल हैं, धार्मिक स्थल नहीं.

विचार प्रतियोगिता में प्रथम पुरस्कार प्राप्त अजितकुमार जैन.

"प्राचीन समय में धार्मिक स्थल मानवीय आचार संहिता पर चलने का एक रास्ता माने जाते थे, लेकिन राजनीतिबाजों ने लोगों को एकदूसरे के धार्मिक जीवन को नष्ट करने का तरीका सिखाया, जिसे लोगों ने अपना कर धार्मिक स्थलों को सांप्रदायिक दंगों का स्थल बना दिया."

ऋषि सांदीपनि वाणिज्य एवं कला महाविद्यालय का बी.ए. (तृतीय वर्ग) का छात्र है.

कार्यक्रम की अध्यक्षता कर रहे महाविद्यालय के प्राचार्य डा. कौशलकुमार मिश्र ने कहा कि "इन दंगों के लिए हमारे देश की गंदी राजनीतिक व्यवस्था दोषी है. दंगों की शुरुआत के लिए धार्मिक स्थल तो सिर्फ एक बहाना हैं, जिस की आड़ वे राजनीतिबाज लेते हैं, जिन के पास ईमानदारी व सचाई नहीं है और जो लोगों की मित्रता के प्रति अपनी निष्ठा नहीं रखते.

"ये राजनीतिबाज अपनी दुकानदारी जमाने के लिए सांप्रदायिक दंगों का सहारा लेते हैं. हमें इस व्यवस्था से यह उम्मीद नहीं करनी चाहिए कि यह हमें अच्छा नागरिक बनाने का प्रयास करेगी."

प्रतियोगिता के निर्णायक सांदीपनि वाणिज्य एवं कला महाविद्यालय के डा. प्रमोद त्रिवेदी, प्रो. हरिनारायण शर्मा और प्रो. मुकुल जिंदल थे. प्रतियोगिता के आयोजक ललित जैन थे. —**ललित जैन, वि.वि.प्र.** ●

तमाशेवाली नर्तकियां

लेख • रघुनाथ पाटि

नवंबर के प्रारंभ से ही महाराष्ट्र के ग्रामीण अंचलों में तमाशा मंडलियों के लोकनाट्य कार्यक्रम प्रारंभ हो जाते हैं. तमाशा ग्रामीणों के लिए लोकप्रिय मनोरंजन का एक सस्ता साधन है.

तमाशे का सारा दारोमदार सोंगाडया (जोकर) तथा कलावतियों (नर्तकियों) पर ही निर्भर रहता है. तमाशे में इन नर्तकियों का विशिष्ट स्थान रहता है. नृत्यगान में ये नर्तकियां बहुत ही कुशल होती हैं.

इन नर्तकियों के पैरों में बहु घुंघरू बंधे होते हैं. ये नर्तकियां नौ गज साड़ी पहन कर अपने कूल्हे मटकाती हैं, तरह से अपनी जीभ लपलपा कर भावभंगिमाओं का प्रदर्शन करती हैं. देख कर लोगों के चेहरों पर मुसकराहट फव्वारे छूट पड़ते हैं.

स्वतंत्रता से पूर्व महाराष्ट्र के गां तमाशे का बहुत प्रचलन था. हर गांव में से कम एक नर्तकी अवश्य हुआ करती उसी नर्तकी के साथ गांव के धनिक मनचले लोग तमाशा करते थे. पुरुषों के काम करने के कारण इन नर्तकियों को ही हेय दृष्टि से देखा जाता था. आज भी दृष्टिकोण बरकरार है.

तमाशे में लोगों का मनोरंजन क वाली इन नर्तकियों का जीवन बहुत कष्टप्रद, घृणास्पद, कलंकित तथा शोषण

महाराष्ट्र के ग्रामीण अंचलों में अपने नृत्य द्वारा लोगों का मनोरंजन करने वाली नर्तकियां उपेक्षित, कुंठित और अपमानित जीवन जीने पर मजबूर क्यों हैं?

भरा हुआ है. आर्थिक, सामाजिक तथा पारंपरिक गुलामी के बंधनों से मुक्त होना उन के लिए स्वप्नवत है.

तमाशे में काम करना ही इन नर्तकियों के लिए सब से बड़ी बदनामी है. तमाशे में नृत्य करने के कारण इन को समाज हेय दृष्टि से देखता है.
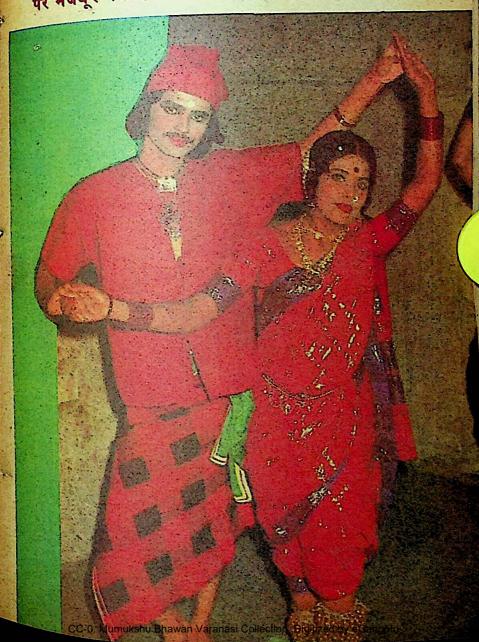
तमाशे में अश्लीलता, फूहड़पन तथा दोहरे अर्थ वाले शब्दों का खुल कर प्रयोग किया जाता है. (अधिकतर दर्शक इसी वजह से तमाशा देखते हैं) इसी तरह से जोकर व नर्तकियों के हंसीमजाक के संवाद काफी निम्न स्तर के तथा अश्लील होते हैं.

तमाशे का दर्शक केवल पुरुष वर्ग ही होता है. महिलाएं कभी भी भूल कर तमाशा नहीं देखतीं. सभ्य पुरुष भी तमाशा देखना पसंद नहीं करते.

ऐसी हालत में तमाशे में काम करने वाली नर्तकियों को कौन अच्छी निगाह से देखेगा? लोगों को ऐसी नर्तकियों का चरित्र संदिग्ध ही नजर आता है.

नर्तकी को रखैल के रूप में देखने वाले कई पुरुष आर्थिक तथा सामाजिक रूप से वरवाद हुए थे. तव वरवादी का कारण ऐसी नर्तकियों को ही समझा गया. आज भी समाज में ऐसी धारणा विद्यमान है.

इस तरह से देखा जाए तो ये नर्तकियां अनेक कारणों से सदैव बदनाम रही हैं.

शोषणभरी जिंदगी

बदनामी के साथ ही ये नर्तकियां शोषण भरी जिंदगी की भी शिकार हैं. हर तरह से उन का शोषण किया जाता है.

पहले जमाने में इन नर्तकियों को रखैल के रूप में रखा जाता था, लेकिन आजकल ऐसा प्रचलन नहीं है, जिस के कारण उन की आय का महत्त्वपूर्ण स्रोत वंद हो गया है.

बरसात के चार महीनों में तमाशा दिखाने का कार्यक्रम वंद रहता है. इन दिनों इन नर्तकियों के पास आय का कोई साधन नहीं रहता. इसलिए उन को अपने तमाशा मालिकों से कर्ज लेना पड़ता है, जो बाद में हर माह उन के वेतन में से वसूल कर लिया जाता है.

इन नर्तकियों को बहुत मामूली वेतन दिया जाता है. इसी वेतन में से उन्हें कर्ज चुकाने और अपने परिवार का खर्च चलाने के अलावा कपड़े और मेकअप का सामान खरीदना पड़ता है. इसलिए इन नर्तकियों की

नर्तकियां : सामाजिक मजबूरियों के कारण पीढ़ी दर पीढ़ी नर्तकी ही बनी रहने को बाध्य..

माली हालत सदैव दयनीय बनी रहती है.

आर्थिक अभाव में ये नर्तकियां कभीकभी शरीर का व्यापार भी करती हैं. विशेष रूप से बरसात के मौसम में इन की मजबूरियां और भी बढ़ जाती हैं.

कई बार उन्हें ग्रामीण गुंडों तथा बदमाशों की हवस का शिकार भी बनना

(शेष पृष्ठ 128 पर)

तमाशा: आज स्थितियां क्या है?
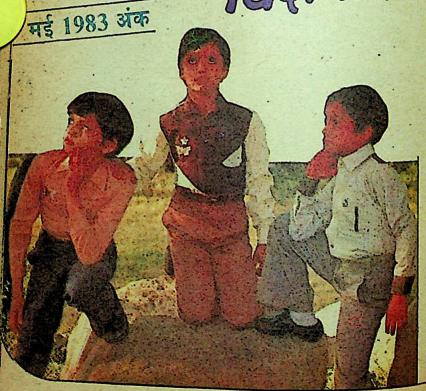
लेख • शिवराम शुक्ल

जादूगर राष्ट्रीय पुरस्कार से वंचित क्यों ?
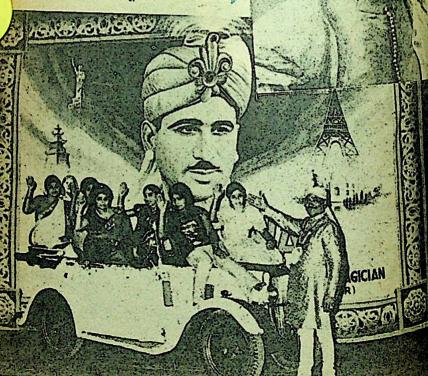
जादूगर ओ.पी. अग्रवाल

भारत के जादूगरों की एक संस्था 'मैजिकाना आफ इंडिया' द्वारा कलकत्ता महाजाति सदन में चार दिवसीय सम्मेलन का आयोजन हुआ. संस्था के अध्यक्ष

जादू कला के प्रति सरकार के उपेक्षापूर्ण रवैए के कारण जादूगरों में तो असंतोष व्याप्त है ही, यह पुरानी मनोरंजक कला भी देश में विलुप्त होने की स्थिति में पहुंच गई है...

व देश के प्रमुख जादूगर ओ.पी. अग्रवाल मुख्य अतिथि थे. बंगला देश से भी चार जादूगर (एक महिला) आए थे. लंदन में प्रख्यात जादूगर सी.आर. दास भी पधारे थे. भारत के विभिन्न प्रांतों से आए जादूगरों की संख्या करीब 150 थी, इन में शौकिया जादूगर अधिक थे.

तीन दिन तो जादू कार्यक्रम ही चलते रहे. जादूगरों की कला देखने वालों की भीड़ क्रमशः बढ़ती ही गई. ओ.पी. अग्रवाल का कार्यक्रम निस्संदेह सराहनीय था. बंबई के जादूगर चंदू दि ग्रेट ने समारोह का उद्घाटन कर अपने चमत्कार दिखाए. दिल्ली के

गोली से उड़ा देने के जादू के खेल का एक दृश्य (बाएं) व 'इंडिया मैजिक सर्किल' की रजत जयंती पर उपस्थित जादू कलाकार (नीचे).
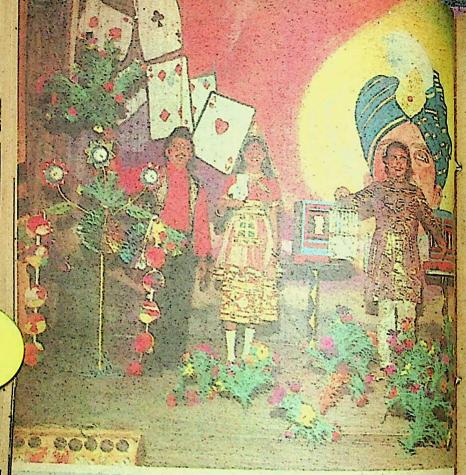
जादूगर आगा ने भी अपने करतव पेश किए. देशविदेश के जादूगरों के चातुर्य को देखने के पश्चात् ओ.पी. अग्रवाल से एकांत में भेंट की और कुछ प्रश्न उन के सामने रखे. उन्होंने उन के उत्तर दिए, पर साथ ही खेद भी व्यक्त किया कि देश में सभी किस्म की कलाओं, साहित्य, खेलकूद व अन्य विषयों में सरकार समयसमय पर पुरस्कार व उपाधियां प्रदान करती है, किंतु जादू कला की निरंतर उपेक्षा करती आ रही है. आज भी इस प्राचीन कला पर ध्यान नहीं दिया जाता. क्या जादूगर प्रशंसा के हकदार नहीं?

इंडिया मैजिक सर्किल के अध्यक्ष ओ.पी. अग्रवाल 35 वर्षों तक देशविदेश में अपने जादुई कारनामे दिखा कर काफी ख्याति और धन अर्जित कर चुके हैं. उन्हें विदेशों में (जापान, कोरिया, ताइवान, बैंकाक, हांगकांग व अफ्रीका) इस विधा में कोई नई बात देखने को नहीं मिली. कुछ लोग जादूगरी से हट कर आर्थिक कारणों से 'ओझा' भी बन जाते हैं. उन के अनुसार उन के गुरु जौनपुर (उत्तर प्रदेश) निवासी जे.पी. दुबे आजकल ओझा बन कर रोजीरोटी कमाते हुए अंधविश्वासों को बढ़ावा दे रहे हैं.

हरियाणा, पंजाब व दिल्ली में इस पेशे के लोगों पर व्यवसाय कर भी लगा दिया गया है. यही कारण है कि अन्य राज्यों में इस की उपलब्धियां अधिक हैं.

जादू की शुरुआत के प्रश्न पर उन्होंने ने बताया, "यह कला सर्व प्रथम राजा आ

(तिब्बत) के जमाने में प्रकाश में आई." इस में आधुनिकता का विस्तार क्यों नहीं हुआ. इस बारे में कहने लगे, "भारत में यह कला काफी महंगी है. सारी सामग्री खुद बनानी पड़ती है. हमारे पास लगभग 20 लाख रुपए मूल्य की जादू सामग्री है. इस कला में समय, धन व दिमाग तीनों की सख्त जरूरत है. राज्य सरकार या केंद्रीय सरकार की न तो मदद प्राप्त है और न ही प्रशिक्षण की कोई व्यवस्था है. यही कारण है कि देश में जादू कला में बहुत कम लोग सफल हो पाते हैं."

ओ.पी. अग्रवाल पेशेवर जादूगर हैं.

जादू के खेल में आकर्षक रंगबिरंगी पोशाकें भी बड़ा महत्त्व रखती हैं (बाएं) व लड़की को काटने के खेल का एक दृश्य (नीचे).

उन की संस्था में देश के 2,500 और 450 विदेशी सदस्य हैं. वार्षिक चंदा देशी जादूगरों से 32 रुपए व विदेशियों से 22 डालर लिया

जाता है. सभी सदस्य जादूगर ही हैं. यद्यपि सभी सदस्य जादू दिखा सकते हैं, पर अवसर और मंच के अभाव में सिर्फ शादीविवाह छोटेछोटे क्लबों या यारदोस्तों को अपना जादू दिखा कर संतोष कर लेते हैं. मंच पर वही जादूगर उपस्थित होता है, जिस के पास चार से छः घंटे रोज इस कला को देने का समय रहता है.

जादू का महंगा खेल

जादू की सामग्री में मंच की साजसज्जा, संगीत सामग्री, बत्ती व अन्य सामग्री होती है. ज्यादातर सामग्री खुद बनाई जाती है, जो 15 से 20 वर्ष तक चलती है. उन के सहयोगियों का मासिक खर्च 50 हजार रुपए है. इन के 35 सहयोगी हैं, लेकिन कुछ विश्वस्त सूत्रों का कहना है कि सिर्फ पांच आदमी हैं. चार व्यक्तियों को 200 रुपए मासिक तथा एक बढ़ई है, जिसे 650 रुपए देने पड़ते हैं. खेल प्रदर्शन के समय कुछ और सहयोगी बुला लिए जाते हैं, जिन्हें 200 रुपए के हिसाब से उसी समय पारिश्रमिक दे दिया जाता है. कम से कम तीन रुपए व ज्यादा से ज्यादा 25 रुपए का टिकट होता है.

जादूगर ओ.पी. अग्रवाल (बीच में): "यदि सरकारी उपेक्षा व असहयोग जारी रहा तो यह कला देश में विलुप्त हो जाने की आशंका है."
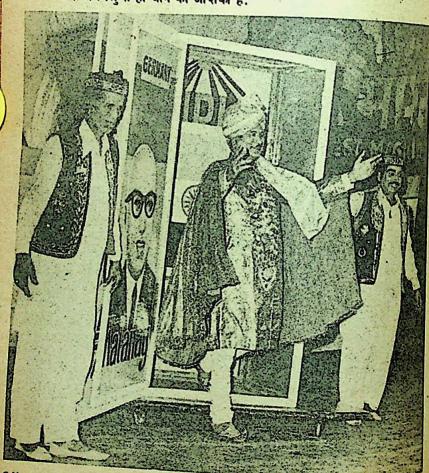
'इंडिया मैजिक सर्किल' के रजत जयंती समारोह के अवसर पर उपस्थित जादूगरों को माल्यार्पण करते जादूगर ओ.पी. अग्रवाल.

यह पूछने पर कि इस कला से देश, समाज का क्या फायदा होता है. वह कहने लगे, "देश के कोनेकोने में व्याप्त अंधविश्वास को जादू के जोर से दूर किया जा सकता है, क्योंकि लोग भूतप्रेत मंच पर साक्षात देख सकते हैं. दूसरे, इस मनोरंजन से वुद्धि का विकास होता है. इतना होने पर भी इस विषय को शिक्षा में शामिल न किया जाना, जादूगरों के असंतोष का कारण है."

महिलाएं जादू से दूर क्यों?

महिलाएं इस कला से दूर क्यों हैं, इस वारे में उन्होंने बताया कि "परिश्रम, भ्रमण, सामग्री उठनाबैठाना उन के बस का नहीं. फिर भी महिलाएं प्रमुख जादूगर की प्रधान सहयोगी तो होती ही हैं." 1984 में अंतरराष्ट्रीय जादूगर सम्मेलन के भारत में आयोजन की उन्होंने बात कही.

प्राचीन कला होते हुए भी इस में रुचि लेने वाले लोगों की संख्या में कोई बढ़ोत्तरी नहीं हुई. पेशेवर जादूगर बहुत ही कम हैं, जो हैं, वे प्राय: पश्चिम बंगाल के हैं. महिला जादूगरों में कुमारी उमादास गुप्त अपने करतवों से लोगों में प्रसिद्ध हो चुकी हैं.

जादूगरों की पहली संस्था 1882 में कलकत्ता में सत्य घोष ने स्थापित की थी. धीरेधीरे पूरे बंगाल में जादूगरों के 21 संगठन बन गए. इन संगठनों में प्रमुख थे—इंडियन मैजिशियन क्लब, इंडियन मैजिक सर्किल व इंडियन सोसाइटी आफ मैजीशियंस.

पश्चिम बंगाल के पी.सी. सरकार का नाम जादूगरी में देशविदेश में प्रसिद्ध है. इन का जन्म सन 1913 में मैमनसिंह जिले के रंगाइल महल्ले में हुआ था, किंतु हिंदुस्तान पाकिस्तान बटवारे के बहुत पहले ही वह कलकत्ता में आ बसे थे और वहीं उन्होंने इस कला में ख्याति प्राप्त की थी. उन का एकएक खेल दर्शकों को स्तब्ध कर देता था. उन्होंने कई क्लब स्थापित किए तथा जादू कला को काफी बढ़ावा दिया.

आज ज्यादातर लोग उन के ही खेलों को दोहरा रहे हैं. कोई नई कला सामने नहीं आती दीखती. सरकार का असहयोग इस का प्रधान कारण है. कोई ऐसी कला या खेल नहीं है, जिस पर राष्ट्रीय पुरस्कार या उपाधि न मिलती हो, किंतु जादू कला पर कुछ भी नहीं. यही कारण है कि जादू कला का विकास देश में नहीं हो पाया. यदि यही हाल रहा तो शीघ्र ही इस कला के देश से विलुप्त हो जाने की आशंका है. ●
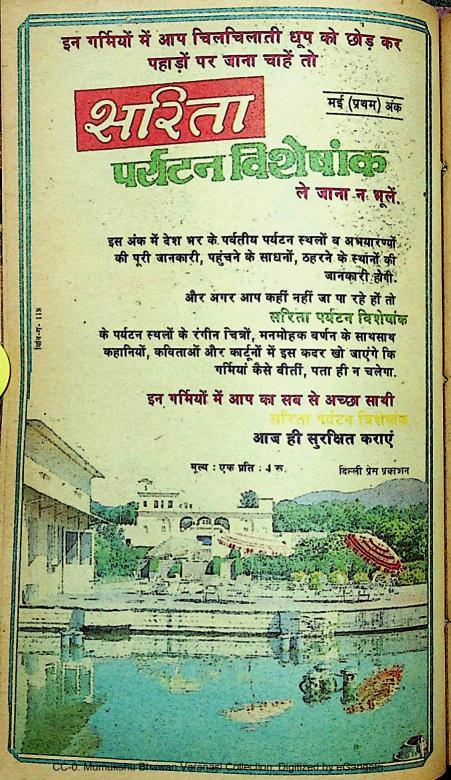
इन गर्मियों में आप चिलचिलाती धूप को छोड़ कर
पहाड़ों पर जाना चाहें तो
सरिता
मई (प्रथम) अंक
पर्यटन विशेषांक
ले जाना न भूलें.
इस अंक में देश भर के पर्वतीय पर्यटन स्थलों व अभयारण्यों की पूरी जानकारी, पहुंचने के साधनों, ठहरने के स्थानों की जानकारी होगी.
और अगर आप कहीं नहीं जा पा रहे हों तो
सरिता पर्यटन विशेषांक
के पर्यटन स्थलों के रंगीन चित्रों, मनमोहक वर्णन के साथसाथ कहानियों, कविताओं और कार्टूनों में इस कदर खो जाएंगे कि गर्मियां कैसे बीतीं, पता ही न चलेगा.
इन गर्मियों में आप का सब से अच्छा साथी
सरिता पर्यटन विशेषांक
आज ही सुरक्षित कराएं
मूल्य : एक प्रति : 4 रु.
दिल्ली प्रेस प्रकाशन

इस स्तंभ के लिए अपने रोचक संस्मरण भेजिए. प्रकाशित होने पर 15 रुपए की पुस्तकें पुरस्कार में दी जाएंगी, पत्र पर अपना नाम व पूरा पता अवश्य लिखें.

भेजने का पता:
संपादकीय विभाग, मुक्ता, ई-3, रानी झांसी मार्ग, नई दिल्ली-110055.

मैं एक बार रेलगाड़ी से दिल्ली जा रहा था. मेरे सामने वाली सीट पर एक युवक बैठा हुआ अपनी बातों से सहयात्रियों को हंसा रहा था. इतने में वहां एक भिखारी आया और उस युवक से 10 पैसे मांगने लगा. युवक ने बिना सोचेसमझे ही जवाब दिया, "अगर मेरे पास 10 पैसे होते मैं शादी नहीं करवा लेता."

इतना सुनते ही उस भिखारी ने जेब से 10 पैसे निकाल कर उस युवक को देते हुए कहा, "आप 10 पैसे के लिए कुंआरे मत रहिए."

उस युवक का मुंह देखने लायक था.

—नरेशकुमार नंदवानी

*

बात उस समय की है, जब मैं और मेरे कुछ दोस्त रायपुर के मालवीय रोड स्थित बाजार जा रहे थे. हम में से एक दोस्त कुछ मजाकिया स्वभाव का था. रास्ते में एक लड़की, जो देखने में सुंदर लग रही थी, ऊंची ऐड़ी का जूता और जींस व टीशर्ट पहने हुए थी. उस की शर्ट पर सामने अंगरेजी के अक्षर 'ए' का चिह्न बना हुआ था.

मेरे दोस्त ने उस लड़की को छेड़ते हुए कहा, "यार, यह तो केवल वयस्कों के लिए है."

इतना सुनते ही हम लोगों के बीच हंसी का ठहाका गूंजा व लड़की बुरी तरह झेंप गई.

—अरविंद अवधिया

*

मैं और मेरा दोस्त पुष्प प्रदर्शनी में पुष्प से बने हुए गहने तथा मालाएं देख रहे थे. वहां मौजूद आठदस लड़कियां हमें देख कर कुछ ज्यादा मजाक करने लगीं. उन में से एक लड़की ने मेरे दोस्त को संबोधित करते हुए कहा, "यह लड़का सोच रहा है कि मैं अपनी पत्नी को कैसे माला पहनाऊंगा?" इस पर मेरे एक दोस्त ने एक माला तपाक से उस लड़की के गले में डाल दी और बोला, "जी, ऐसे पहनाऊंगा." उस समय लड़की का गुस्से और शर्म से भरा चेहरा देखने के काबिल था.

—राजकुमार राजोरिया

*

हिंदी की कक्षा में लड़कियों की संख्या कुछ ज्यादा ही थी. एक दिन हम लोग पढ़ने के मूड में नहीं थे. शिक्षक ने भी आते ही घोषणा की कि आज पढ़ाई नहीं होगी, बल्कि इस बात पर चर्चा होगी कि आजकल के दुल्हादुलहन कैसे हों?

उन की बात सुन कर एक लड़का लड़कियों की तरफ देख कर बोला, "श्रीमानजी, दुलहन वही जो पिया मन भाए."

उस के इतना कहते ही लड़कियों में से एक ने तपाक जवाब दिया, "श्रीमानजी, दुल्हा वही जो चूल्हा जलाए."

इसे सुन कर पूरी कक्षा ठहाकों से गूंज उठी.

—सुधीर

लंबी कहानी • रंजना वर्मा

रक्तगंगा

द्वार पर घोड़े की टापों का स्वर सुन कर गृहपति वसुमित्र चौंक पड़ा. इस समय घोड़े पर भला कौन आया है? कहीं कोई राज्य कर्मचारी या सैनिक तो नहीं? किंतु अर्धरात्रि के इस समय उन के आने की बात उस के मन ने स्वीकार नहीं की. तभी द्वार पर दस्तक हुई. वसुमित्र ने एक क्षण कुछ सोचा, फिर अपनी एकमात्र पुत्री कलिंगसेना को जगा कर सावधान रहने का निर्देश दे कर द्वार खोल दिया.

द्वार पर एक अपरिचित, असुंदर किंतु वलिष्ठ पुरुष को सैनिक वेश में देख कर वसुमित्र ने पूछा, "कौन हो भाई?"

"राही हूं, मार्ग भूल गया हूं. शिकार के लिए निकला था, वन में भटक गया." आगंतुक ने उत्तर दिया.

"कहां के हो?"

"मगध का."

"क्या चाहते हो?" मगध का परिचय पा कर वसुमित्र ने रुखे स्वर में पूछा.

"रात्रि भर के लिए आश्रय और भोजन. यह कौन सा देश है भाई, जहां के लोग अतिथि का स्वागत करना भी नहीं जानते?" कुछ रुष्ट हो कर आगंतुक ने पूछा.

कलिंगसेना राजकन्या न होने के कारण महारानी का दरजा नहीं ले सकी, पर तिष्यरक्षिता ने महारानी बन कर किस प्रकार सम्राट अशोक के साथ विश्वास-घात किया?
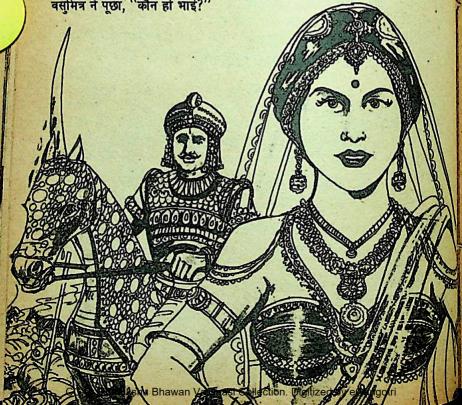
"यह कलिंग है मागध! और हम कलिंगवासी मागधों की अपेक्षा अतिथि का सत्कार करना अधिक अच्छी तरह जानते हैं." इतना कह कर क्रुद्ध वसुमित्र ने म्यान से तलवार खींच ली.

"ओह! कलिंग में अतिथि का स्वागत संभवतः इसी तरह तलवार से किया जाता है." आगंतुक ने तीखा व्यंग किया और घोड़े से उतर पड़ा. "यदि कलिंग की यही रीति है तो भोजन और विश्राम से पहले दोदो हाथ कर ही लिए जाएं. कहते हुए आगंतुक ने भी तलवार निकाल ली.

अभी वे अपनी भुजाओं को तोल ही रहे थे कि अचानक कलिंगसेना दोनों के बीच में आ खड़ी हुई. पिता की ओर उन्मुख हो कर बोली, "यह क्या पिताजी? अतिथि ने युद्ध नहीं, आश्रय मांगा है. आप इस प्रकार अपनी मातृभूमि का मान क्यों घटाते हैं?" उस ने पुनः अतिथि की ओर पलट कर कहा, "आप का हमारी कुटिया में स्वागत है. पिताश्री के कृत्य के लिए मैं आप से क्षमा मांगती हूं, किंतु आप को भी शत्रु देश में आ कर इस प्रकार की बातें नहीं करनी चाहिए थीं. यहां आप अकेले हैं और..."

"वीर कभी अकेला नहीं होता, देवी. मेरे साथ मेरा आत्मबल और सत्व है. सदैव इसी की विजय होती है."

"ओह, इतना आत्मविश्वास?"

"यही आत्मबल विजेताओं की थाती है देवी, जहां मैं हूं वहां भय कहां?"

कलिंगसेना ने उस निडर, निर्भीक पुरुष पर एक कोमल दृष्टि डाली और अतिथिशाला की ओर संकेत कर के बोली, "आप पधारें, मैं भोजन भिजवाती हूं."

उस रात उस अतिथि ने दासी चारुमित्रा से कलिंगसेना तथा वसुमित्र का पूर्ण परिचय प्राप्त कर लिया. वसुमित्र कलिंग का एक सामान्य सैनिक था और कलिंगसेना उस की एकमात्र दुहिता. कलिंगसेना की कोमल दृष्टि सारी रात अतिथि के हृदय के द्वार थपथपाती रही. उस का अपरूप सौंदर्य हजार रूपों में उस के स्वप्नों में नाचता रहा.

प्रात: की पहली किरण के साथ ही वह उठ बैठा. घोड़े पर जीन कसी और गृहपति की अभ्यर्थना हेतु उस के सम्मुख पहुंच गया.

वसुमित्र का रोष अब समाप्त हो चुका था. सहज हास्य से उस ने अपने अतिथि का स्वागत किया.

"रात नींद तो अच्छी आई न?" कोई कष्ट तो नहीं हुआ?"

"नहीं, विदा लेने आया हूं. साथ ही कुछ मांगने भी."

"मांगने?" वसुमित्र ने चौंक कर उस की ओर देखा.

"हां, मैं आप की पुत्री से विवाह करना चाहता हूं."

"क्या?" वसुमित्र तड़प उठे.

"तुम ने यह कैसे समझ लिया कि मैं अपनी पुत्री को एक शत्रु के हाथ में सौंप दूंगा?"

"हम शत्रु नहीं विजेता रहे हैं. कलिंग मगध के अधीन रहा है और..."

"हमारी स्वतंत्रता पर अपने शासन की मुहर लगा कर, हमें दासता का दंड दे कर भी शत्रुता के संबंध पर शंका करते हो? मेरे ही देश में आ कर मेरे देश का अपमान करने वाले धृष्ठ, चले जाओ यहां से, अन्यथा..."

"अन्यथा?"

"अन्यथा मुझे अतिथि का आतिथ्य भाव नष्ट कर देना होगा." क्रोध से मुट्ठियां भींचते हुए वसुमित्र ने कहा. इसी बीच कलिंगसेना अपनी सखी और दासी चारुमित्रा के साथ निकट आ कर खड़ी हो गई.

"वीर पुरुष वीरों के साथ संबंध बना कर प्रसन्न होते हैं. तुम वीर हो और मैं भी वीर हूं. केवल इसी नाते मैं ने कलिंगसेना का हाथ मांगा है. अपनी वीरता का प्रमाण देने के लिए मैं प्रस्तुत हूं. वैसे पास के वन में मृत पड़े सिंह युगल भी मेरी वीरता के साक्षी हैं. जिन्हें मैं ने कल तलवार से मारा था." अतिथि ने गंभीर स्वर में कहा.

"आखिर तुम हो कौन?"

"मगध का एक सैनिक मा., किंतु संबंधों की गुरुता को देखते हुए मेरा परिचय और भी है. मुझे प्रियदर्शी अशोक कहा जाता है." अतिथि ने मंद मुस्कान के साथ उत्तर दिया.

"अशोक? सम्राट अशोक? मगध का शासक?" वसुमित्र ने आश्चर्य से पूछा.

"हां श्रीमन, क्या अब भी आप को मेरे प्रस्ताव स्वीकार करने में आपत्ति है?"

वसुमित्र ने पुत्री की ओर देखा. रेशमी परदे के पीछे छिपने का प्रयत्न कर रही थी.

"**इधर** आओ बेटी," वसुमित्र ने उस का हाथ थाम कर अपने पास खींचते हुए कहा, "कहां मेरी यह फूल सी बच्ची और कहां यह नीरस पर्वत जैसा सौंदर्यहीन पुरुष. नहींनहीं, मैं यह संबंध किसी भी प्रकार स्वीकार नहीं कर सकूंगा," वसुमित्र अशोक के काले भद्दे चेहरे की ओर दृष्टि जमाता हुआ बोल पड़ा.

कलिंगसेना ने एक बार अशोक की आंखों में उमड़ते स्वाभिमान और पराक्रम की आग को देखा और दृष्टि झुका कर शांत, किंतु दृढ़ स्वर में कहा, "पिताश्री, सौंदर्य तो नारी का गुण है. पुरुष का सौंदर्य उस का शौर्य, पराक्रम और आत्मबल ही होता है." और वह सिर झुका कर भीतर चली गई.

उस की इस स्वीकृति से वसुमित्र का विरोध निर्जीव हो गया. पुत्री की इच्छा जान कर उस ने उसे अशोक के हाथों सौंप दिया. उसी समय गुपचुप विवाह संपन्न हुआ और अपनी एकमात्र सखी तथा दासी चारुमित्रा के साथ कलिंगसेना विदा हो गई.

वसुमित्र स्वयं उसे मगध की सीमा तक छोड़ने आया और वापस जाते समय पुत्री तथा पुत्री तुल्य चारुमित्रा का हाथ थाम कर एक वचन उन से लेता गया, "बेटी मातृभूमि का ऋण अभी तुम पर शेष है. अवसर मिलने पर उसे चुकाने का प्रयत्न करना."

कलिंगसेना मगध में अशोक की पत्नी बन कर आई थी, किंतु राजकन्या न होने के कारण वह पट्टमहिषी का अधिकार नहीं पा

जब अशोक ने कलिंग सेना से आदेश के रूप में साथ चलने को कहा तो उस ने "जैसी आप की इच्छा" कह कर विवाद की स्थिति को समाप्त कर दिया.
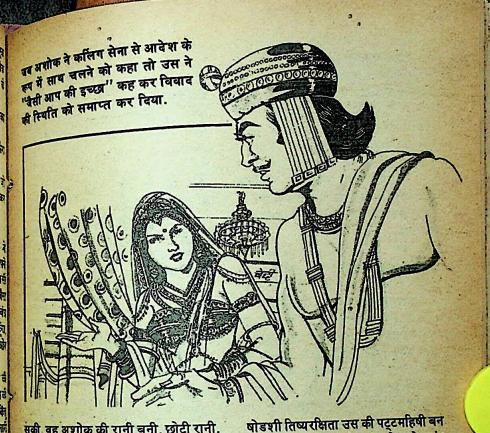
सकी. वह अशोक की रानी बनी, छोटी रानी.

बहुत दिनों तक अशोक उस के रूप सौंदर्य तथा स्वाभिमानी व्यक्तित्व के कारण उस के निकट रह कर उस के रूप सौंदर्य का पान करता रहा, किंतु समय बीतने के साथसाथ उस का मन उस से दूर होता गया और साम्राज्य विस्तार की आकांक्षा से मंत्रियों की सलाह पर उस ने विदिशा की राजकुमारी, अतुलित रूप की स्वामिनी तिष्यरक्षिता से विवाह कर उसे पट्टमहिषी के पद पर अभिषिक्त कर दिया.

नई रानी के आकर्षण में बंध कर सम्राट उचितअनुचित की उपेक्षा कर उस में पूर्णरूपेण आसक्त हो गया. इसी बीच पट्टमहिषी तिष्यरक्षिता के षड्यंत्र का शिकार हुआ उस का सौतेला पुत्र कुणाल, जो युवराज पद का अधिकारी था.

अशोक की आयु ढल रही थी. 45 वर्ष की आयु में उस ने 15 वर्षीया कलिंगसेना से विवाह किया था और 52 वर्ष की आयु में षोडशी तिष्यरक्षिता उस की पट्टमहिषी बन कर मगध में आ गई थी. कहां सोलहवें वसंत से आंखमिचौनी खेलती रूपसी काम कमान सी तिष्यरक्षिता और कहां प्रौढ़ावस्था की सीमा पर खड़ा अशोक, किंतु आयु ढलने के साथसाथ साम्राज्य तथा सौंदर्य को अधीन करने का उस का उन्माद कम न हुआ था.

षोडशी तिष्यरक्षिता कलिंगसेना के समान पतिव्रता न बन सकी. 20 वर्षीय तरुण युवराज कुणाल उस के हृदय में कामदेव बन कर जा समाया. अनेक बार अप्रत्यक्ष व प्रत्यक्ष आमंत्रण देने पर भी जब वह अपनी पत्नी कंचनमाला के साथ विश्वासघात करने तथा माता पुत्र के पवित्र संबंध पर कलंक लगाने को तैयार न हुआ तो तिष्यरक्षिता घायल सर्पिणी के समान उस से बदला लेने को तत्पर हो उठी. उसे प्रतिशोध का अवसर भी शीघ्र ही मिल गया.

मगध की दक्षिणी सीमा पर कुछ आततायियों का उत्पात बहुत अधिक बढ़ गया

था. विद्रोही अब जवतब सिर उठाने लगे थे. उन विद्रोही सामंतों को उचित शिक्षा देने के लिए अशोक ने अपने समर्थ पुत्र कुणाल को सेनापति बना कर वहां भेजा. युद्धस्थल से विजय का समाचार प्रेषित कर जब राजकुमार ने पिता सम्राट अशोक से वापस आने की आज्ञा मांगी, तो तिष्यरक्षिता को अपनी कुटिलता दिखाने का अवसर मिल गया. कुमार के पास सम्राट का मुद्रांकित आज्ञा पत्र भेज कर उस ने छलपूर्वक उस की आंखें निकलवा कर उसे देश से निष्कासित करा दिया.

कलिंगसेना उस समय 22 वर्ष की हो चुकी थी. विवाह के सात वर्ष बाद भी उस की गोद सूनी थी और अब तो सम्राट को तिष्यरक्षिता के आगे उस की याद भी कम ही आती थी. कभी भूले से वह उस के महल की ओर आ निकलते तो उस की श्यामल अलकों की छाया में पलभर विश्राम कर पुनः नए नीड़ की ओर लौट जाते और परित्यक्ता सी कलिंगसेना विवशता से देखती रह जाती. तिष्यरक्षिता की शय्या ज्वालाओं की सेज थी और कलिंगसेना का प्यार शीतल छाया, किंतु इस छाया में अधेड़ सम्राट अधिक देर टिक न पाते. तिष्यरक्षिता छाया के समान उन के साथ रहती थी. यही नहीं राजकार्यों और आखेट में भी वह साथ रहती. इस प्रकार मानो वह उन्हें पूरी तरह आत्मसात कर लेना चाहती थी.

ऐसी ही उदासी भरी घड़ियों में एक दिन चारुमित्रा ने अपनी सखी रानी के हृदय के कोमल तारों को छेड़ दिया. "कितना अकेलापन घिर आया है, इस महल में. छोटी रानी, एक नन्हा सा बच्चा भी होता तो..."

"चुप कर चारु," छोटी रानी ने उसे डपटते हुए कहा, "मैं ऐसी ही भली हूं."

"लेकिन छोटी रानी, कुमार जैसा ही कोई नन्हा सा शिशु आप की गोद में होता तो क्या यह महल नंदन वन न बन जाता?"

"कुणाल जैसा पुत्र पा कर मैं धन्य हो जाती चारु, पर मैं नहीं चाहती थी कि मेरी संतान भी युवराज कुणाल के समान महारानी की ईर्ष्या का शिकार हो और फिर... राजकुल की न होने के कारण पहले विवाह कर जा कर भी छोटी रानी ही रह गई हूं, तो मेरा बच्चा भी तो दासों जैसे जीवन का ही अधिकारी होता. नहीं चारु, मैं अपने बच्चे की ऐसी उपेक्षा नहीं सह सकती. इस से तो मेरी गोद सूनी ही भली." ठंडी सांस खींच कर कलिंगसेना ने कहा.

"छोटी रानी," चारुमित्रा ने अपनी स्वामिनी की ओर गीले नेत्रों से देखा और चुप रह गई. सुख सौभाग्य और आनंद का प्रतीक बनने वाला विषय अवांछित प्रसंग बना कर जानबूझ कर पीछे ठेल दिया गया. नारी जीवन की सब से श्रेष्ठ और सब से स्वाभाविक कामना का सिर कुचल दिया गया. ममता के द्वार बंद कर विवश अधरों पर मौन के ताले डाल दिए गए.

कुछ देर के मौन के बाद कलिंगसेना ने एक आह भर कर फिर कहा, "मुझे तो जहां पहुंचना था, पहुंच गई, लेकिन चारु, मेरे कारण तू तो क्वांरी ही रह गई. यह दुख मुझे बहुत सालता है. कलिंग में होती तो अब तक तेरा किसी अच्छे युवक से विवाह हो चुका होता, तेरा भी अपना घरसंसार होता."

"दासदासियों का अपना घरसंसार नहीं हुआ करता, छोटी रानी."

"तू मेरी दासी ही नहीं सखी भी है चारु. तुझे किसी बलिष्ठ युवक के दासत्व में देते समय क्या मैं तुझे अपने दासत्व से मुक्त न कर देती?"

"दासता दासता ही होती है, चाहे वह पति की हो या स्वामिनी की."

"नहीं चारु, पति की दासता दासता न हो कर स्वामित्व होती है. पत्नी घर में दासी और स्वामिनी दोनों ही होती है."

"छोटी रानी!"

"हां चारु, मैं ने तेरे विवाह के बड़े सुंदर स्वप्न देखे थे... तब क्या जानती थी कि भविष्य तेरे जीवन को मेरे साथ बांध कर शुष्क बना देगा."

"ऐसा न कहें छोटी रानी! आप के निकट रह कर मैं जितनी सुखी हूं, उतनी अपने घरसंसार में रह पाती या नहीं, यह तो नहीं जानती, पर इतना अवश्य जानती हूं कि बचपन से ही आप के निकट, आप की छत्रछाया में पल कर अब मैं आप से अलग नहीं रह सकती."

"इतना प्यार करती है तू मुझे? अच्छा बता, तू ने क्या कभी किसी युवक को प्रेमभरी दृष्टि से नहीं देखा? तुझे कोई जंचा हो तो बता दे. मैं तेरा उस से विवाह करा कर अपनी दासता से मुक्त कर दूंगी."

"नहीं छोटी रानी, अब मुझे अपने निकट रहने दें. आप के साथ रह कर मैं ने राजकुमार कुणाल और महाराज अशोक के अतिरिक्त किसी अन्य पुरुष को दृष्टि भर देखा तक नहीं. मुझे तो आप के चरणों में ही अंतिम सांस तक आश्रय मिला रहे, इस के अतिरिक्त मैं और कुछ नहीं चाहती." चारुमित्रा ने झुक कर अपनी स्वामिनी के चरणों पर सिर रख दिया.

"चारु, मेरी सखी, मेरी बहन," कहती कलिंगसेना उसे अपने पार्श्व में खींच कर किसी मासूम बच्चे की तरह फूटफूट कर रो पड़ी. अपने जीवन का एकाकीपन और शून्य उसे जितना उस दिन खला, उतना कभी न खला था.

दिन बीतते गए.

छोटीबड़ी

कितनी ही घटनाएं उन के दुखते घावों को कुरेदती रही और वे आपस में एकदूसरे से कहसुन कर अपना मन हल्का करती रहीं. दिन ब दिन अशोक की आसक्ति तिष्यरक्षिता के प्रति और प्रगाढ़ और कलिंगसेना के प्रति क्षीण होती रही. तिष्यरक्षिता उसे साम्राज्य विस्तार की प्रेरणा देती और युद्ध के लिए उकसाती रहती थी. अधेड़ अशोक की साम्राज्यलिप्सा की अग्नि वासना की तरह तिष्यरक्षिता के प्रयासों से भड़क उठी तो उस ने अपने निकटस्थ राज्यों पर आक्रमण कर उन्हें जीत लिया. छोटेछोटे राज्यों पर विजय करती हुई उस की सेनाएं कलिंग तक जा पुहंची.

निगाहें

देख चश्मे यार मुझ को
इन निगाहों से न देख,
दे चुकी हैं ये निगाहें
बारहा धोखा मुझे.

—अदम

कलिंग पर आक्रमण करने से पूर्व तिष्यरषिता ने उस से कहा, "छोटी रानी पर बहुत विश्वास है महाराजा को."

"उस ने अब तक मुझे अविश्वास का कोई अवसर नहीं दिया, तिष्य. उसे पत्नी के रूप में पा कर मैं स्वयं को भाग्यशाली समझता हूं." अशोक ने गर्व से उत्तर दिया.

"मैं ने यह नहीं कहा कि वह अविश्वसनीय हैं, किंतु..."

"किंतु क्या?"...

"कलिंग अभियान में यदि वह भी साथ रहती तो उचित था."

"क्यों? इस से पूर्व किसी युद्ध में मैं ने अंतःपुर को साथ नहीं रखा. तुम स्वेच्छा से आग्रह कर मेरे साथ युद्धभूमि में जाती हो, परंतु कलिंगसेना ने कभी ऐसी रुचि नहीं दिखाई. वह हमारे न रहने पर महल का प्रबंध भली प्रकार करती है."

"अन्य युद्धों की बात और है महाराज और कलिंग की और. छोटी रानी हैं तो अंततः कलिंग की ही कन्या. कलिंग पर आप को विजय पाते देख कर..."

"तुम्हारी आशंका निर्मूल है महारानी, कलिंगसेना ऐसी नहीं है. वह क्षत्रिय स्त्री है और क्षत्रिय रक्त विश्वासघात नहीं करता." अशोक ने उद्विग्न हो कर कहा.

"विश्वासघात मातृभूमि के साथ या पति के साथ?"

"महारानी?"

"महाराज, उन का यहां रहना उन्हें

कभी भी कर्तव्य पथ से विचलित कर सकता है. यहां रह कर कलिंग को आवश्यक सूचनाएं अधिक सुगमता से भेजी जा सकती हैं... युद्ध में सावधानी तथा सतर्कता अपेक्षित होती है. वहां, हमारे नेत्रों के समक्ष रहने पर वह चाह कर भी हमारे विरुद्ध न हो सकेंगी."

तिष्यरक्षिता ने किसी चतुर राजनीतिज्ञ के समान अपने वाकजाल में फंसा कर अशोक को निरुत्तर कर दिया और उस के हृदय में कलिंगसेना तथा उस की दासी चारुमित्रा के प्रति संदेह का बीज अंकुरित कर दिया.

युद्ध में साथ जाने के प्रस्ताव को सहजता से अस्वीकार करते हुए कलिंगसेना ने कहा, "महाराज मैं यहीं रह कर आप के कल्याण तथा विजय लाभ की कामना किया करूंगी. मुझे युद्धभूमि में रहने की रुचि नहीं है."

छोटी रानी की यह अस्वीकृति अशोक के मन में उत्पन्न शंका को और सशक्त करने लगी और उस ने आदेश के से स्वर में कहा, "तुम्हें चलना ही होगा, छोटी रानी."

"जैसी आप की इच्छा." कह कर छोटी रानी ने विवाद की स्थिति ही समाप्त कर दी.

कलिंग की ओर जाते समय अपनी मातृभूमि को फिर से देख पाने की आशा ने उन दोनों के मन को प्रफुल्ल कर दिया था. इस आशा से जहां कलिंगसेना का हृदय उल्लसित हो उठता, वहीं अपनी स्थिति का विचार कर वह उदास भी हो जाती. जिस भूमि पर जन्म ले कर उस ने स्वयं को धन्य माना था, जिस के अन्नजल से पुष्पित हो कर वह मगध सम्राट की प्रेयसी पत्नी बनी थी, उसी देश को आक्रांत कर उसे ही रौंद कर जीतने के लिए वह जा रही है. यह भावना उस के हृदय को रहरह कर व्यथित कर रही थी.

वह जानती थी कि कलिंगवासी अशोक की अधीनता स्वीकार करने से पूर्व युद्धभूमि में अपने प्राण न्यौछावर कर देंगे. अशोक कलिंग को जीत सकेगा, कलिंगवासियों को नहीं, पर चाह कर भी वह अपने पति को इस अभियान से रोक नहीं सकती थी. एक भयंकर विनाशलीला अपनी संपूर्ण विभीषिका के साथ उस के सम्मुख खेली जाने वाली थी और वह उसे किसी भी प्रकार रोक नहीं सकती थी.

कलिंग की सीमा से कुछ पूर्व ही सुंदर खेमे लगा कर रानियों के निवास की व्यवस्था कर दी गई. कलिंगसेना के खेमे के दोनों ओर अशोक तथा तिष्यरक्षिता के खेमे थे और इन दोनों खेमों को केंद्र बना कर चारों ओर कई छोटेबड़े खेमे लगा दिए गए थे, जिन में संपूर्ण सेना के आवास की व्यवस्था की गई थी.

दो दिन तक वहीं पड़ाव डाल कर अशोक तथा उस की सेना ने विश्राम किया. इस बीच कलिंग की सेना भी अपनी सीमा पर आ डटी. दो दिन के विश्राम से यात्रा की थकान दूर कर अशोक ने अपनी सेना को आक्रमण का आदेश दे दिया, क्योंकि इस बीच उस के भेजे दूत ने कलिंग के स्वतंत्रता प्रेमियों का आधीनता स्वीकार करने के बजाए मर मिटने का संदेश उसे ला कर सुना दिया था.

घमासान युद्ध होने लगा. दोनों ओर के सैनिक पूरी शक्ति से युद्ध में रत हो गए. मगध की सेना जीतने की आकांक्षा से लड़ रही थी, किंतु कलिंग के योद्धा अपनी स्वतंत्रता को बरकरार रखने के लिए प्राणपण से जूझ रहे थे. अतः उन में उत्साह की मात्रा कुछ अधिक ही थी. रणभूमि में बजते वाद्ययंत्रों के स्वर तथा शस्त्रों की टंकार सुन कर कायर से कायर पुरुषों की भुजाएं भी उत्साह से फड़कने लगती थीं.

कलिंगसेना उस युद्ध में स्वयं को बंदी सा अनुभव कर रही थी. उस के चारों ओर सैनिकों की पंक्तियां यद्यपि उसे संपूर्ण सम्मान दे रही थीं, किंतु उन में कुछेक की तीखी दृष्टि उस की आंखों से बची न रह सकी. बंदनी होने के अनुभव ने उस के हृदय में जिस वेदना को जन्म दिया, उस से उस का हृदय छटपटाने लगा. अपमान की अनुभूति ने उस के शांत व्यक्तित्व में भूचाल सा उठा दिया. फिर भी वह असीम धैर्य से उस युद्ध की मूक दर्शक बनी रही.

(क्रमशः)

सामाजिक व पारिवारिक पुनर्निर्माण की पाक्षिक
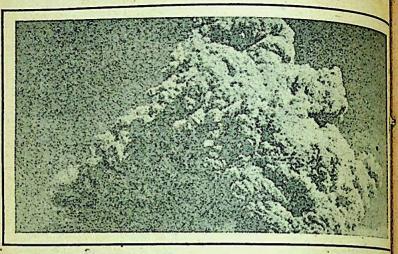
मुकदमा परमाणु बम से सिसकते लोगों का

क्या कोई सरकार 30 वर्ष पूर्व परमाणु बम परीक्षणों से मरे और नागरिकों पर पड़े दुष्प्रभावों के लिए जिम्मेदार ठहराई जा सकती है? संभवत: इस प्रश्न का उत्तर उन लोगों के दायर किए मुकदमे से ही मिल सकता है, जो परीक्षण स्थल के इर्दगिर्द रहते हैं और उस से प्रभावित हुए हैं. सन 1950 के आसपास आस्ट्रेलिया, ब्रिटेन और अमरीका ने ढेरों परमाणु बम परीक्षण किए थे.

सिडनी में पिछले कुछ अरसे से अदालत में अपनी किस्म का एक मुकदमा चल रहा है. इस मुकदमे में परमाणु बम विस्फोट के परिणामस्वरूप परीक्षण क्षेत्र में रहने वालों पर पड़े घातक प्रभावों का ब्रिटेन की सरकार से मुआवजा देने की मांग की गई है. सन 1956-57 में ब्रिटेन ने दक्षिण आस्ट्रेलिया के रेगिस्तानी इलाके में अपनी परमाणु बम परीक्षण शृंखला चालू की थी.

सिडनी के उच्चतम न्यायालय में मुकदमा दायर करने वाला 48 वर्षीय लि[illegible] जानस्टोन 26 वर्ष पूर्व आस्ट्रेलिया की [illegible] सेना में ड्राइवर था. उसे एक सुनसान [illegible] पर जहां ब्रिटेन परीक्षणात्मक पर[illegible] विस्फोट कर रहा था, भेजा गया [illegible] जानस्टोन का काम सिर्फ इतना ही था कि [illegible] अपनी गाड़ी में हर परीक्षण के बाद सुरक्षा [illegible] लिए पहने हुए कपड़ों की गठरी और छोटे [illegible] सामान, जो परीक्षण स्थल पर गरम न हु[illegible] हो, अपनी गाड़ी में रख कर दूसरे स्थान [illegible] जाए.

विभिन्न देशों में परमाणु परीक्षणों के घातक परिणामों से पीड़ित लोगों ने वहां की सरकारों को किस प्रकार परेशानी में डाल दिया है?

एक बार उसे एक खोए व्यक्ति को तलाश करने के लिए परीक्षण स्थल वाले रेगिस्तान में भी भेजा गया था. उस व्यक्ति को तलाश करने में उसे दो दिन लगे थे और इस दौरान ही उस ने एक ऐसा गांव भी देखा था, जहां सन्नाटा था. ऐसा लगता था जैसे इस छोटे स्थान पर रहने वाले सभी लोग मर गए हों. बाद में जानस्टोन को इस बात का पता चला कि वह जिस सुनसान गांव में से गुजरा था, उस का नाम इंमफील्ड था और यह सन 1952 में दक्षिण आस्ट्रेलिया के रेगिस्तान में

परमाणु परीक्षण का एक दृश्य.

ब्रिटेन द्वारा किए गए प्रथम परमाणु परीक्षण का स्थल था.

जानस्टोन को वहां काम करते समय उलटी होने के साथसाथ छाती में दर्द की शिकायत हुई और बाद में वह बीमार पड़ गया. जानस्टोन ने अपने मुकदमे में कहा है कि वह परमाणु विस्फोटों से उत्पन्न विकिरण से आज भी बुरी तरह पीड़ित है.

सिडनी उच्चतम न्यायालय में दायर इस मामले के विभिन्न पहलुओं की अनेक लोग बारीकी से जांचपड़ताल कर रहे हैं. इस मामले को प्रस्तुत करने में दो वर्ष पूर्व गठित एक संस्था सक्रिय रूप से भाग ले रही है. इस संस्था में परमाणु परीक्षण स्थल पर काम करने वाले 2,000 भूतपूर्व कर्मचारी और उन के परिवार के वे लोग शामिल हैं, जो परीक्षणात्मक परमाणु विस्फोट से पीड़ित हुए हैं.

इसी तरह का एक दूसरा मुकदमा यूटा (अमरीका) के साल्ट लेक शहर में भी चलाया जा रहा है. अमरीका में चलाए जा रहे इस मुकदमे की उल्लेखनीय बात यह है कि मुकदमा दायर करने वाले के पक्ष में कुछ वकील, वैज्ञानिकों और विशेषज्ञों से परमाणु परीक्षण से मनुष्य और जीवजंतुओं पर पड़ने वाले दुष्प्रभावों के बारे में विस्तृत जानकारी एकत्र कर रहे हैं.

यूटा के दक्षिण पश्चिमी किनारे पर स्थित पैरोवान कसबे के लोगों को उस दिन कुछ भी पता नहीं लगा, जब सुबहसुबह उठ कर उन्होंने दूर आसपास में एक काला उठता बादल देखा था. यह काला बादल इस गांव के
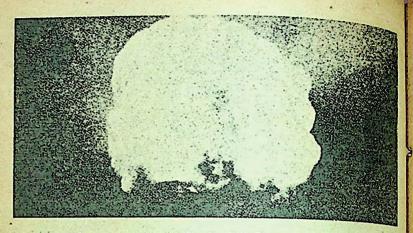
परमाणु परीक्षण : उस क्षेत्र के जीवजंतुओं के लिए भयानक रोगों का आमंत्रण.

समीप नेवाडा के परमाणु परीक्षण स्थल से उठा था. पीले भूरेमटमैले रंग के बादल जब उन के कसबे से गुजर कर उड़ रहे थे, तब किसी ने भी उन लोगों को यह नहीं बताया था कि ये बादल घातक हैं या परमाणु बम परीक्षण स्थल के इर्दगिर्द का मीलों का क्षेत्र विकिरण से प्रभावित हो जाता है. 30 वर्ष पूर्व घटित इस घटना के प्रत्यक्षदर्शी लोगों को आज इस का पता चला है कि क्यों उन के कसबे के लोग परमाणु परीक्षण के कुछ महीनों बाद ही मर गए थे और अनेक लोग कुछ भयानक रोगों से पीड़ित हो कर आज भी जी रहे हैं.

इन लोगों को परमाणु बम परीक्षण के कुछ दिनों बाद ही यह पता चला था कि आसमान में उठा बादल प्रकृति का नहीं, वरन मनुष्य निर्मित घातक विषैली जानलेवा गैसों का था. इस कसबे के 12 बच्चे कैंसर, होगस्किन और ल्यूकेमिया से पीड़ित हो कर मर गए. पैरोवान में रहने वाले गैलिना ओरटन नामक एक व्यक्ति के मातापिता परमाणु परीक्षण के कुछ दिन बाद ही कैंसर से पीड़ित हो कर मर गए थे. उस के पास परमाणु बम के दुष्प्रभावों से मरे सभी लोगों की सूची है. उस समय टेलीफोन डायरेक्टरी में कसबे के 1,750 लोगों के नाम लिखे हुए थे, जिन में करीब 90 कैंसर से मर गए और 100 कैंसर से पीड़ित हो कर आज भी जी रहे हैं.

नेवाडा के समीपवर्ती कसबे सेंट जार्ज में रहने वाली रोमा टामस नामक महिला ने भी पड़ोस के पैरोवान वालों को बताया कि उस के इलाके के भी 29 लोग कैंसर से मर गए हैं. परमाणु बम परीक्षण के समय इस कसबे की आबादी 5,000 थी, जिन में से 200 लोग परमाणु परीक्षण के बाद घातक विकिरण से पीड़ित हुए.

जिम्मेदारी से बेखबर

मजेदार बात यह है कि अमरीकी सरकार इस बात की कोई जिम्मेदारी अपने ऊपर नहीं ले रही है कि इस तरह के परमाणु परीक्षण से नवजात शिशुओं में हुई विकृति या बच्चों की मौत के लिए वह किसी भी रूप में जिम्मेदार है. नेवाडा में सन 1957 में जब अमरीका ने परमाणु परीक्षण शुरू किए थे, तब अमरीका के अणुशक्ति कमीशन ने अमरीकियों को इस बात से आश्वस्त किया था कि परीक्षण स्थल के आसपास किसी भी प्रकार की कोई आबादी या जीवजंतु नहीं है.

'सनफ्रांसिस्को क्रानिकल' में प्रकाशित एक संपादकीय लेख में इस बात का रहस्योद्घाटन किया गया है कि सितंबर, 1982 में 1,195 लोगों की तरफ से साल्ट लेक न्यायालय में सरकार के खिलाफ मुकदमा

दायर किया गया है. इस मुकदमे में यूटा और नेवाडा के समीपवर्ती क्षेत्रों में रहने वाले 300 लोगों के कैंसर से मरने की बात भी कही गई है और इस की पुष्टि के लिए प्रामाणिक विवरण दिया गया है.

अमरीका के सहायक अटार्नी हेनरी गिल ने दो बार अदालत से मुकदमे को खत्म करवाने की कोशिश की हैं, लेकिन संघीय जिला न्यायाधीश बुस.एस. जेन किस का मत है कि इस मुकदमे में उठाए मुद्दे विचारणीय हैं. इस मुकदमे में सिर्फ मुद्दे ही नहीं हैं, अपितु इस से अनेक सामाजिक मुद्दे भी जुड़े हुए हैं. इस मुकदमे का जल्द फैसला नहीं होने वाला है. यदि संयोग से मुकदमा दायर करने वालों के पक्ष में इस मुकदमे का फैसला होता है तो अमरीकी सरकार को 24,000 लाख डालर की रकम चुकानी पड़ेगी.

यह कहा जाता है कि 16 जुलाई, 1945 से ले कर 4 नवंबर, 1962 तक 181 परीक्षाणात्मक परमाणु बमों का प्रशांत महासागर और नेवाडा के निकट खुली हवा में विस्फोट किया गया. परीक्षण स्थल के निकट करीब 40,000 सैनिकों ने भाग लिया और हजारों सूअरों को परीक्षण स्थल के निकट वैज्ञानिक परीक्षण के लिए रखा गया.

ब्रिटेन के समाचारपत्र 'आब्जर्वर' ने भी हाल में इस बात का रहस्योद्घाटन किया है कि ब्रिटेन के परमाणु परीक्षणों से उत्पन्न विकिरण से 264 ब्रिटिश और आस्ट्रेलियाई सैनिक मौत के मुंह में चले गए हैं. पत्र में इस बात का भी उल्लेख किया गया है कि 1952 से 1958 तक आस्ट्रेलिया और क्रिसमस द्वीप में किए गए 20 परमाणु परीक्षणों में 10 हजार ब्रिटिश सैनिकों ने भाग लिया था. आस्ट्रेलिया सरकार भी अपने नौ हजार नागरिकों की खोज करा रही है.

इस सारे मामले पर ब्रिटेन में एक टी.वी. फिल्म तैयार की जा रही है. इस में आस्ट्रेलिया की भूतपूर्व सैनिक एसोसिएशन ने दावा किया है कि इन परमाणु विस्फोटों के कारण 114 आस्ट्रेलियाई सैनिकों की मृत्यु हुई.

इन में 109 कैंसर से मरे. 'आब्जर्वर' ने लिखा है कि 150 से अधिक ब्रिटिश सैनिक कैंसर या विकिरण से उत्पन्न किसी अन्य रोग से मरें. ●

इस स्तंभ के लिए समाचारपत्रों की कटिंग भेजिए. कटिंग के नीचे अपना नाम व पूरा पता अवश्य लिखें. सर्वोत्तम कटिंग पर 15 रुपए की पुस्तकें पुरस्कार में दी जाएंगी.

भेजने का पता: संपादकीय विभाग, मुक्ता, ई-3, रानी झांसी मार्ग, नई दिल्ली-110055.

ढोंगी बाबा लड़की को ले कर फरार

खंडवा में पुलिस एक ऐसे ढोंगी बाबा की तलाश कर रही है, जो यहां की एक लड़की को बहलाफुसला कर भगा ले गया. गुड़ी वाले बाबा के नाम से प्रसिद्ध इस ढोंगी ने नगर के कई लोगों को अपनी ओर आकर्षित कर लिया था.

कहा जाता है कि जिस लड़की को वह खंडवा से गुड़ी ले गया, उस से यह कहा कि वह वहां उस की नौकरी के लिए तंत्रमंत्र करेगा.

पुलिस ने उस ढोंगी बाबा के विरुद्ध मामला दर्ज कर लिया है. उस लड़की को भगाने में कुछ अन्य लोगों का भी हाथ होने की आशंका है. पुलिस उन से भी पूछताछ कर रही है.

—दैनिक स्वदेश, इंदौर (प्रेषक : ज.ट. रामटेके)

*

अघोरी के वेष में ठगा

सरसींवा में अघोरियों का वेष धारण कर तीन व्यक्तियों ने यहां के लोगों को हाथ की सफाई दिखा कर उन का काफी माल ठग लिया.

ये ठग अलगअलग घरों में जा कर अपनी चमत्कारी भाषा का प्रयोग कर हठ के साथ पानी की मांग करते थे. पानी पीने के बाद वे मुंह से सफेदसफेद गाढ़ा पानी निकालते थे और कहते थे कि आप का घर दूधदही से भर जाएगा. ये लोग थोड़ी धूल ले कर उसे गेहूं व नोट का तावीज बना कर दिखाते थे. इन का चमत्कार देख भोलेभाले ग्रामीणों ने इन्हें पैसा देना शुरू कर दिया.

इस की भनक मिलते ही पुलिस सक्रिय हो गई. उस ने एक ठग को तुरंत पकड़ लिया. दो अन्य ठगों को यहां से पांच किलोमीटर दूर एक गांव में पकड़ लिया गया, जहां ये सपरिवार डेरा डाले हुए थे.

रात में इन्हें थाने में रखा गया तो इन्होंने अपने को अघोरी बताया और कहा, "हम से दुश्मनी अच्छी नहीं. हम एक मंत्र मारेंगे तो यह ताला खुल जाएगा और तुम सब भस्म हो जाओगे."

सुबह उन्हें जेल भेज दिया गया. —नवभारत, नागपुर (प्रेषक: अशोक बिसेन)

*

धोखेबाज अरब नागरिक

बंबई में समाचारपत्रों में छह फुट लंबे एक अरब नागरिक से सावधान रहने की खबर पढ़ने के कारण एक व्यापारी ने न केवल एक अरब नागरिक बल्कि उस के दो साथियों को जेल की हवा खिला दी.

समाचारपत्र की खबर से बेखबर ये अरब नागरिक भरयवाड़ा में एक आभूषण की दुकान पर खरीदारी करने पहुंचे. जैसे ही मालिक का ध्यान इधरउधर हुआ तीनों ने जेबों में नोट व

आभूषण भरना शुरू कर दिया. शोर मचाने पर तीनों भाग निकले, लेकिन दो को लोगों ने पीछा कर के पकड़ लिया. तीसरे को बंबई सेंट्रल रेलवे स्टेशन पर उस समय पकड़ा गया जब वह बंबई से बाहर भागने की कोशिश कर रहा था.

—नवभारत टाइम्स, नई दिल्ली (प्रेषक: कन्हैयालाल गुप्त 'नन्हे')

*

रिश्ता पक्का करने से पहले

कोई रिश्ता ले कर आए तो सब से पहले उस से अच्छी तरह परिचित हो जाना चाहिए. वरना ऐसा भी हो सकता है जैसे पिछले दिनों पंजाब में हुआ.

यहां कुछ लोग एक परिवार में अपनी पुत्री के विवाह के लिए आए. लड़के वालों ने रिश्ता पक्का करने से पहले अच्छीखासी रकम की मांग की, जिसे लड़की वालों ने पूरा कर दिया. यही नहीं, उन की अच्छी तरह खातिर भी की, लेकिन असलियत का पता तो दो दिन बाद चला, जब रिश्ते के लिए आए मेहमान रात के अंधेरे में कीमती सामान ले कर चले गए.

—इतवारी पत्रिका, जयपुर (प्रेषक: सुरेश कटारिया)

*

देवी दुर्गा के लिए लड़कियों का उपहार

पुणे में एक अदालत ने 17 वर्षीय एक लड़की को फुसला कर लाने व देवी दुर्गा के कोप का भय दिखा कर उस से अनेक बार बलात्कार करने के जुर्म में, खुद को अवतार बताने वाले एक व्यक्ति को सात वर्ष की सजा सुनाई.

स्वामी प्रवीणकुमार नामक इस व्यक्ति ने उक्त लड़की के परिवार वालों को यह कह कर विश्वास में ले लिया था कि उस में देवी दुर्गा को प्रसन्न करने की शक्ति है. इस के बाद इस लड़की को रंगरेलियां मानने के लिए हरिद्वार, मथुरा और वृंदावन ले गया और उस के साथ बलात्कार किया. पुलिस द्वारा जांच करने से पता चला कि इस व्यक्ति ने इस से पूर्व देवी दुर्गा के उपहार के रूप में तीन अन्य महिलाओं को भी फंसाया था.

—नवभारत, रायपुर (प्रेषक: श्रीकांतचंद्र रहाटंगावकर)

(सर्वोत्तम) •

विश्व बाल साहित्य

मनोरंजक, वीरतापूर्ण, ज्ञानवर्धक, प्रेरक
एवं देशभक्तिपूर्ण बाल पुस्तकें...

रु. 2.00
स्वतंत्रता सेनानी

प्रत्येक रु. 2.50
तेनालीराम
बस में चोरी
तिनके का सहारा
गलतफहमी
चीकू
नकलची ननकू
चमत्कारी बाबा
घमंडी भैंसा
हाथी का शिकार
पंचतंत्र भाग I, II
घमंडी कौआ
बहादुर विनीता

रु. 3.00
आखिरी सरकस

प्रत्येक रु. 4.00
अपहरण
सम्राट चंद्रगुप्त
आगरे वाले मामा जी

VISHVVIJAY DBC 105

आज ही अपने पुस्तक विक्रेता से लें
या आदेश भेजें

दिल्ली बुक कंपनी

एम-12, कनाट सरकस, नई दिल्ली-110001.

रुपए अग्रिम भेजने पर पूरा सैट 38 रुपए में. डाक खर्च नहीं. रुपए अग्रिम भेजने पर दस पुस्तकों तक के आदेश पर डाक खर्च नहीं.
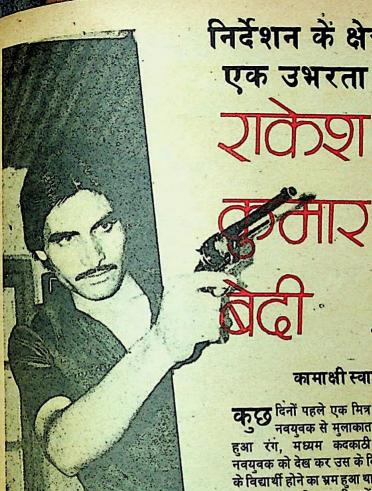
निर्देशन के क्षेत्र में एक उभरता नाम

राकेश कुमार बेदी

भेंटवार्ता

•

कामाक्षी स्वामीनाथन

निर्देशक के रूप में फिल्मों में पांव जमाने वाले राकेश-कुमार बेदी की यहां तक पहुंचने की कहानी भी अत्यंत रोचक है...

कुछ दिनों पहले एक मित्र के घर एक नवयुवक से मुलाकात हुई. खुलता हुआ रंग, मध्यम कदकाठी वाले उस नवयुवक को देख कर उस के किसी कालिज के विद्यार्थी होने का भ्रम हुआ था, लेकिन बाद में पता चला कि वह फिल्मों के सहायक-निर्देशक राकेशकुमार बेदी हैं.

भेंटकर्ता को उन की उम्र देख कर बड़ा आश्चर्य हुआ कि इतनी छोटी आयु में ही उन्होंने इस क्षेत्र में कैसे जगह बना ली है? उन से निम्नलिखित प्रश्न पूछे गए.

प्रश्न : आप कितने वर्षों से फिल्म उद्योग में हैं?

उत्तर : बचपन से. सब से पहले मैं ने बाल कलाकार की हैसियत से पंजाबी फिल्मों में काम करना शुरू किया.

प्रश्न : अच्छा, क्या आप पंजाब के रहने वाले हैं?

उत्तर : जी, पंजाब के 'गुरुदासपुर' जिले (जोगोबाल बेदियां) का रहने वाला हूं.

इस जिले के रहने वाले नाम के आगे बेदी लगाते हैं.

प्रश्न : अपने बचपन के फिल्मी जीवन के बारे में कुछ और बताएंगे?

उत्तर : हां, मैं आप को अपने बचपन की फिल्मों के बारे में बतलाऊंगा, क्योंकि वे ही तो मेरे फिल्मी जीवन की नींव हैं.

मुझे बचपन से ही गाने का बड़ा शौक था. मेरे दो बड़े भाई पंजाब में गायक थे. उन्हीं से मैं ने शुरू में गाना सीखा था. फिर सात साल की उम्र से ही अपने स्कूल और दूसरे मंचीय कार्यक्रमों में मुझे गाने के मौके मिलते रहे. उसी दौरान कई पंजाबी फिल्मों के निर्माताओं ने मुझे पंजाबी फिल्मों में बाल कलाकार की भूमिकाएं दीं और मैं उन में काफी सफल रहा.

12-13 साल की उम्र का होने पर मेरा कद बढ़ गया और मैं बच्चे की भूमिका के लिए बड़ा लगने लगा. फिर मुझे कुछ वर्षों के लिए काम मिलना बंद हो गया. उन दिनों मुझे अपना खाली समय बड़ा भारी पड़ने लगा था. इसलिए मैं ने चंडीगढ़ के कलाकेंद्र में फिर से गाना सीखना शुरू कर दिया. वहीं पर मैं ने तबला और हारमोनियम बजाना भी सीखा.

उसी दौरान मैं ने रेडियो, टी.वी., रेफ्रिजिरेशन और फिल्म तकनीक का पाठ्यक्रम भी पूरा किया. तकरीबन दो साल के बाद मुझे फिर से पंजाबी फिल्मों में किशोर नायक की भूमिकाएं मिलने लगीं. इस तरह मेरा फिल्मी जीवन फिर से शुरू हो गया. बाल और किशोर दोनों की भूमिकाओं में मैं ने कुल 85 फिल्मों में काम किया है. जिन में से 35 फिल्मों ने रजत जयंती मनाई है. किशोरावस्था की फिल्मों में— 'तेरी मेरी इक जिंदगी', 'भांगड़ा', 'दाज', 'चोरां नु मोर', 'गोरी दीयां झांजरां', 'वेड़ा लंबड़दा' वगैरह बहुत ही कामयाब फिल्में हैं.

प्रश्न : आप निर्देशन के क्षेत्र में कैसे आए, वह भी हिंदी फिल्मों में?

उत्तर : 1975 में आपातकालीन स्थिति के समय भगवंतसिंह अनंत ने 20 सूत्रीय कार्यक्रम पर एक हिंदी फिल्म 'भारत की संतान' बनाई थी. उन्होंने मेरे पंजाबी फिल्मों के काम से प्रभावित हो कर मुझे 'भारत की संतान' के निर्देशन का मौका दिया. फिल्म के पूरी होने तक आपातकालीन स्थिति भी समाप्त हो गई और जनता सरकार ने उसे प्रदर्शित नहीं होने दिया. अब इंदिरा सरकार के आने पर वह दिल्ली में प्रदर्शित हुई है.

इस के तुरंत बाद मैं बंबई आ गया और इस क्षेत्र में बाकायदा काम करने के लिए संघर्ष करने लगा. मेरे रेडियो, टेलीविजन वगैरह के किए गए कोर्स इस दौरान बहुत काम आए.

दो वर्षों के लगातार संघर्ष के बाद मुझे 1978 से सहायक निर्देशक के तौर पर काम मिलने लगा. इस दौर की फिल्में— 'चरस', 'कसमे वादे', 'धनवान', 'नारी', 'बिन मां के बच्चे', 'बीवी ओ बीवी', 'बसेरा' हैं. मेरी आने वाली फिल्में हैं— 'पापी पेट का सवाल', 'बेताब', 'सितम'.

'मिलन की रात' और 'गुनाह और प्यार' में मैं ने गीत भी गाए हैं तथा 'बे आबरू', 'दूर नहीं किनारा' आदि फिल्मों में भूमिकाएं भी की हैं.

स्वतंत्र रूप से निर्देशन

आजकल मैं स्वतंत्र रूप से भी कुछ फिल्मों का निर्देशन कर रहा हूं. उन में एक हिंदी फिल्म है— 'आप की याद' और एक भोजपुरी फिल्म है— 'गोरिया के मितवा'.

इन से पहले मैं ने दूरदर्शन के लिए भी एक वृत्त चित्र 'बुरे फंसे' बनाया था, जो किन्हीं कारणों से प्रदर्शित नहीं किया जा सका.

आम तौर पर सहायक निर्देशकों के बारे में दर्शक ज्यादा नहीं जान पाते, लेकिन वास्तविक रूप से देखा जाए तो फिल्मों में 75 प्रतिशत काम सहायक निर्देशकों का ही होता है. ये लोग प्रचार से ज्यादा, काम सीखने और काम पाने को महत्त्व देते हैं. मेरी इच्छा है कि मैं सभी बड़े निर्देशकों के साथ काम करूं और अपना अनुभव बढ़ाऊं. मैं बलदेव राज चोपड़ा और मनमोहन देसाई जैसे निर्देशकों
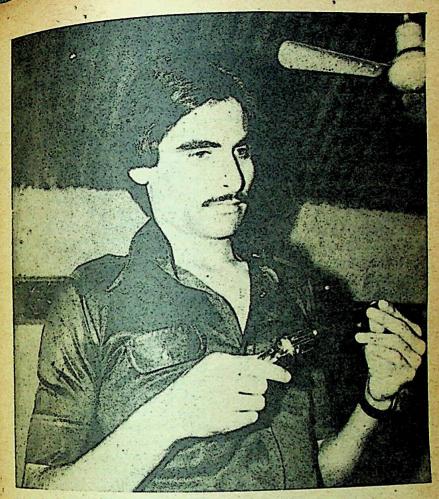
राकेशकुमार बेदी : निर्देशन के साथसाथ अभिनय भी.

के साथ काम करने का इच्छुक हूं.

प्रश्न : वड़े सितारों और आप के बीच कैसे संबंध रहते हैं?

उत्तर: कुछ सितारे तो बड़ा दोस्ताना व्यवहार करते हैं. काम में भी सहयोग देते हैं.

प्रश्न : नए सितारों में आप को कौन पसंद हैं.

उत्तर : अभिनेत्रियों में स्मिता पाटिल उच्च कोटि की अभिनेत्री हैं और अभिनेताओं में मैं सुरेश ओबेराय की अभिनय प्रतिभा से बेहद प्रभावित हूं.

प्रश्न : निकट भविष्य में स्वतंत्र निर्देशक के रूप में आप की किस प्रकार की फिल्मों के निर्देशन करने की योजना है?

उत्तर : मेरी हमेशा यही कोशिश रहेगी कि मैं फिल्मी दुनिया की भेड़चाल से बच कर रहूं और मेरी हर फिल्म में कोई न कोई नयापन हो.

मैं बंबई के जीवन पर एक नए ढंग से फिल्म बनाना चाहता हूं, जो बंबई की जिंदगी के हर पहलू को छूती हो, यहां की सही तसवीर पेश करे.

आशा है उन की लगन उन्हें चोटी के फिल्म निर्देशकों में ला कर रहेगी. •

पिछले छः महीनों की फिल्में

निर्देशिका

उ. : उद्देश्यपूर्ण/अवश्य देखिए
स. : समय काटिए/चलताऊ
म. : मनोरंजक/देख लें
अ. : अपव्यय/समय की बरबादी
नि. : निर्देशक
मु. पा. : मुख्य पात्र

अर्पण: एक नारी शोभा की कहानी है, जो अपने प्रेमी के परिवार की इज्जत बचाने के लिए अपना प्रेम तक बलिदान कर देती है. बेसिरपैर की जज्बाती फिल्म. दोदो नायक और दोदो नायिकाएं हो कर भी फिल्म फीकी है. नि.: ज. ओमप्रकाश, मु.पा: जितेंद्र, रीना राय, परवीन बाबी, राजबब्बर, प्रीति सप्रू, सुजीत कुमार. स.

नास्तिक: शंकर का भगवान से विश्वास उठ जाता है, पर अंत तक पहुंचतेपहुंचते वह पहले से भी अधिक नास्तिक बन जाता है. भाग्यवाद व अंधविश्वास का प्रचार करने वाली फिल्म. नि.: प्रमोद चक्रवर्ती, मु.पा.: अमिताभ, हेमा, प्राण, देवेन वर्मा, अमजद, रीता भादुड़ी, सारिका, भारतभूषण. अ.

मासूम : विवाहित मलहोत्रा को पता चलता है कि वह एक अनाथ बच्चे का बाप है, जिसे जन्म दे कर उस की प्रेमिका मर गई थी. 'मासूम' उस बच्चे की भावपूर्ण कहानी है कि कैसे धीरेधीरे मलहोत्रा की पत्नी उसे बेटे के रूप में स्वीकार करती है. नि.: शेखर कपूर, मु.पा.: नसीरुद्दीन, शबाना, जुगल हंसराज, सईद जाफरी, तनूजा, सुप्रिया पाठक. उ.

चलती का नाम जिंदगी : निर्माता, निर्देशक, लेखक, संगीत निर्देशक, गायक व अभिनेता किशोरकुमार की बेसिरपैर की फिल्म. गरीब ब्रजमोहन को उस की पत्नी छोड़ जाती है. मन्नू और जग्गू अनेक चालें चल कर इन्हें दोबारा मिलाते हैं. नि: किशोकुमार, मु.पा.: अशोककुमार, अमितकुमार, अनूपकुमार, रीताभादुड़ी. निरुपा राय. अ.

मेहंदी : मेजर गौतम की प्रेमिका की हत्या हो जाती है और उधर माधुरी का प्रेमी अजीत युद्ध में बंदी हो जाता है. जब अजीत लौटता है तो माधुरी व गौतम की शादी हो चुकी होती है. अजीत के बलिदान के साथ फिल्म का अंत होता है. गुलशन नंदा की इस बेसिरपैर की कहानी को असित सेन का निर्देशन भी प्रभावपूर्ण नहीं बना सका. नि.: असित सेन, मु.पा.: राज बब्बर, विनोद मेहरा, रंजीता, बिंदिया गोस्वामी, शक्ति कपूर. अ.

रुस्तम : एक पहलवान मंगल की कहानी, जो अपने बच्चे की खुशी के लिए अधेड़ होने पर भी अखाड़े में उतरता है. जीत उसी की होती है लेकिन जीवन दे कर उसे इस की कीमत चुकानी पड़ती है. स्टंट दृश्यों का अच्छा संयोजन. नि.: दारासिंह, मु.पा.: दारा सिंह, तनूजा, राजेंद्र, बिन्नी. म.

यह इश्क नहीं आसान : मुसलिम विषय पर बनी एक त्रिकोणीय प्रेम कथा फिल्म, जो न सिर्फ बेहद सामान्य है बल्कि उबाऊ भी. नि.: टीनू आनंद, मु.पा.: ऋषि कपूर, पद्मिनी, दीप्ति. अ.

स्वामी दादा : भारतीय आध्यात्मिकता की दकियानूसी बातों को पश्चिमी लेबल में पेश करनेवाली एक अधकचरी फिल्म, जो न तो स्टंट फिल्म है और न ही सही मायने में धार्मिक फिल्म. नि.: देव आनंद, मु.पा.: देव, मिथुन, रति, पद्मिनी. अ.

मंगल पांडे : प्रतिशोध पर आधारित एक सामान्य अपराध फिल्म, जो तकनीक व तेज गति की वजह से ही प्रभावित कर पाती है, 1857 के स्वाधीनता संग्राम के मंगल पांडे से इस का कोई लेनादेना नहीं है. नि.: हरमेश मलहोत्रा, मु.पा.: शत्रुघ्न, परवीन, अजीत. स.

लक्ष्मी : परिस्थितियों की वजह से वेश्या बनी औरत की कहानी, जो काफी हद तक 'ममता' से मिलतीजुलती है. कमजोर निर्देशन की वजह से फिल्म अपना असर नहीं छोड़ पाती. नि.: व.ए. थापा, मु.पा.: रीना राय, राज बब्बर, रंजीत. स.

कामचोर : काम से जी चुराने वाले एक व्यक्ति की कहानी, जो अपनी स्वाभिमानी पत्नी की वजह से सुधर जाता है. अच्छे विषय का हास्यपूर्ण प्रस्तुतीकरण. नि.: क. विश्वनाथ, मु.पा.: राकेश रोशन, जयप्रदा, सुरेश ओबराय. म.

ताकत : डाकू विषय पर बनी एक सामान्य फिल्म जिसे बेहद असरहीन ढंग से बनाया गया है. फिल्म जगहजगह दम तोड़ती नजर आती है. नि.: नरेंद्र बेदी, मु.पा.: विनोद खन्ना, राखी, परवीन, प्राण. अ.

जीने की आरजू : एक ऐसे जहरीले युवक की कहानी, जो अपने भीतर जहर होने की वजह से जीने की इच्छा रखने के बाद भी जी नहीं पाता. प्रस्तुतीकरण काफी अस्वाभाविक है. नि.: राजशेखर, मु.पा.: मिथुन, रति, बिंदिया, राकेश. अ.

गंगा मेरी मां : बच्चों के बिछुड़ने व डाकुओं और तस्करों के टकराव की एक और सामान्य फिल्म. जिस में नएपन के नाम पर कुछ नहीं है. नि.: शाम रल्हन, मु.पा.: शत्रुघ्न, नीतू, डैनी, अमजद. अ.

जानी, आई लव यू : पहाड़ों की पृष्ठभूमि पर फिल्माई गई एक रोमांटिक फिल्म, जिस में तर्क व वास्तविकता से दूर मारधाड़ व संयोगों को ही ज्यादा प्रधानता दी गई है. नि.: राकेश, मु.पा.: संजय दत्त, रति, सुरेश ओबराय, अमरीश पुरी. स.

वक्त के शहजादे : विभिन्न धर्मों के पांच युवकों की मसाला कहानी. ये तथाकथित शहजादे बचपन में बिछुड़

जाते हैं और एक के बाद एक कर के इन का मिलन होता है. बचकाना चित्रण. नि.: कुक्कू कपूर, मु.पा.: दीपक पाराशर, रति, मुकेश खन्ना, धीरज, कल्पना अय्यर, शक्ति कपूर, रणजीत. अ.

वहशत : डाक्टर विशाल की दृष्टि में इनसान अधूरा है. उस में जानवरों के कुछ गुण ला कर उसे संपूर्ण बनाया जा सकता है. वह जानवरों पर तरहतरह के प्रयोग करता है. इन्हीं प्रयोगों में उस की शक्ल भयानक पशु जैसी हो जाती है. केवल भयानक चेहरों के बल पर बनी बेजान कहानी. नि.: तुलसी रामसे, श्याम रामसे, मु.पा.: ओम शिवपुरी, नवीन निश्चल. अ.

निकाह : नीलोफर की वसीम से शादी होती है, पर शीघ्र ही वसीम उसे तलाक दे देता है. नीलोफर दोबारा हैदर से शादी करती है, पर उसे के चरित्र पर शक कर के हैदर भी उसे तलाक देने को तैयार हो जाता है. मुसलिम समाज में तलाक के विषय में नारी की बेबसी का मार्मिक चित्रण. नि.: बलदेवराज चोपड़ा, मु.पा.: राज बब्बर, सलमा आगा, दीपक पाराशर, हिना कौसर. उ.

टैक्सी चोर : दो जुड़वां हमशक्ल भाइयों की घिसीपिटी कहानी. एक टैक्सी चोर है तो दूसरा गायक. मिथुन इन में से किसी भी भूमिका में जान नहीं डाल सका. नि.: सुशील व्यास, मु.पा.: जैरीना, मिथुन, मदन पुरी, राज मेहरा, अभि भट्टाचार्य, मुराद. अ.

गंगा मांग रही बलिदान : पृथ्वीराज चौहान की ऐतिहासिक कहानी पर इतिहास की अपेक्षा काल्पनिक घटनाओं का बाहुल्य. फिल्म इतिहास एवं मनोरंजन दोनों दृष्टियों से बेकार. नि.: राधाकांत, मु.पा.: सोहराब मोदी, देवकुमार, हिना कौसर, कमल कपूर, तिवारी, जयश्री तलपदे, महमूद जूनियर. अ.

शक्ति : कर्तव्यपरायण पुलिस अधिकारी पिता व परिस्थितियोंवश अपराध प्रवृत्ति पाल लेने वाले पुत्र के बीच भावात्मक टकराव की कहानी, जिस में अमिताभ व दिलीपकुमार ने शानदार अभिनय किया है. नि.: रमेश सिप्पी, मु.पा.: अमिताभ, दिलीप, राखी, स्मिता. उ.

बाल शिवाजी : बाल चित्र समिति द्वारा शिवाजी के जीवन पर बनाई गई एक दिलचस्प फिल्म, जिस में उन की बहादुरी, देशभक्ति, न्यायप्रियता व स्वाभिमान का अच्छा चित्रण हुआ है. नि.: प्रभाकर पेठारकर, मु.पा.: आनंद जोशी, जाह्नवी खांडेकर. उ.

भीगी पलकें : पतिपत्नी के वैवाहिक संबंधों में अहं की वजह से आ जाने वाले टकराव और गलती का एहसास होने पर पश्चात्ताप का अच्छा विषय इस फिल्म में फार्मूला ढंग से उठाया गया है. नि.: शिशिर मिश्र, मु.पा.: राज बब्बर, स्मिता पाटिल, सलमा. अ.

जियो और जीने दो : एक नारी प्रधान फिल्म, जिस में नूतन को उस का पति चरित्रहीनता के आरोप में घर से निकाल देता है. बीच में डाकुओं व तस्करों की मारपीट, रोमांस व तमाम जानेपहचाने मसाले हैं. नि.: श्याम रल्हन, मु.पा.: जितेंद्र, रीना, डैनी, नूतन व प्राण. स.

चोरनी : परिस्थितियों की वजह से चोर बनी नीतू को जब सहानुभूति का व्यवहार मिलता है तो वह बदल जाती है. अच्छे विषय का सही फिल्मांकन नहीं हो सका है. नि.: ज्योति स्वरूप, मु.पा.: नीतू, जितेंद्र, डा. श्रीराम लागू. अ.

कसम दुर्गा की : बलात्कार व जमींदार के जुल्म के शिकार एक परिवार के बड़े लड़के द्वारा दुर्गा की मदद से अपराधियों का खात्मा करने की कहानी. बेहद ऊटपटांग घटनाएं व अति नाटकीय अभिनय. नि.: जोगिंदर, मु.पा.: जोगिंदर, विजय अरोड़ा, रजनी शर्मा. अ.

सुन सजना : एक गायक व ग्रामीण बाला की सामान्य प्रेम कहानी का दुखद अंत होता है. गीतसंगीत प्रधान इस फिल्म में कोई भी खास विशेषता नहीं है. नि.: चंदर बहल, मु.पा.: मिथुन, रंजीता. स.

राजमहल : दुष्ट सेनापति राजा की हत्या कर, खुद राजा बन जाता है. उस के खोए हुए बच्चे बड़े हो कर उस से बदला लेते हैं. बेतुकी ऐतिहासिक पृष्ठभूमि पर बनी सामान्य फिल्म. नि.: परवेज़, मु.पा.: विनोद खन्ना, नीतूसिंह, अमजद. स.

गंगाधाम : ईश्वरीय सत्ता को चमत्कारों व अंधविश्वासों से मनवाने की कोशिश करने वाली बेतुकी फिल्म, जो हर दृष्टि से कमजोर है. नि.: थापा, मु.पा.: नमिता चंद्र, अरुण गोविल, शक्ति. अ.

फर्ज और कानून : ईमानदार पुलिस अधिकारी द्वारा फर्ज की रक्षा के लिए खुद को गिरा देने की अस्वाभाविक कहानी, जिस में जितेंद्र की दोहरी भूमिका है. नि.: राघवेंद्र राज, मु.पा.: जितेंद्र, हेमा, रति. स.

अपराधी कौन : हत्याओं और रहस्य रोमांच से उलझी हुई अनमेल विवाह की बेसिरपैर की कहानी. विधुर दीनदयाल जवान अरुणा से शादी कर लेता है और उस के परिणाम भुगतता है. नि.: मोहन भाकड़ी, मु.पा.: जावेद खान, रजनी शर्मा, अर्पणा चौधरी, रजा मुराद, मदन पुरी. अ.

संबंध : प्रकाश के मन में बचपन में पिता द्वारा मां की हत्या के कारण कुछ ऐसी गांठें बन जाती हैं कि वह जब भी पत्नी के पास जाता है, उन्मत्त हो कर सुधबुध खो बैठता है. एक नए विषय को निर्माता ने केवल सैक्स प्रदर्शन के लिए इस्तेमाल किया है. नि.: शिबू मित्रा, मु.पा.: अशोककुमार, विनोद मेहरा, रति अग्निहोत्री, तेज सप्रू, अर्पणा चौधरी. अ.

डायल 100 : हीरों की चोरी की मारधाड़ से भरपूर, सामान्य अपराध कथा. हीरे गिटार में छिपा दिए जाते हैं. बाद में गिटार की खोज की कहानी बन जाती है. नि.: रामनाथन, मु.पा.: अशोककुमार, बिंदिया, विनोद मेहरा, रणजीत. अ.

मेहंदी रंग लाएगी : एक युवती की कहानी, जो अपने पति को छोड़ कर दूसरी स्त्री का घर बसाती है और बाद में एक अन्य लड़की के लिए अपने प्रेम का भी बलिदान कर देती है, तर्कहीन कहानी. नि.: दासारी नारायण राव, मु.पा.: अशोककुमार, जितेंद्र, रेखा, अनिता राज, अरुणा ईरानी. अ.

व्यंग्य • परदेशीराम वर्मा

भूख

वह कुछ भी हो सकते हैं. लेखकों में क्रांतिकारी हैं और क्रांतिकारियों में लेखक हैं. उन्होंने एक संघ बना लिया है— क्रांतिकारी लेखक संघ. संघ का मंगल यानी कल्याण से सीधा संबंध है. मंगल पूजन के लिए उपयुक्त दिन कहा जाता है. सब से पहले लेखकजी अपने महल्ले के मंदिर में अपने संघ के सदस्यों सहित मत्था टेकते हैं, फिर पास के पान वाले ठेले के पास आ कर पत्थर पर बैठ जाते हैं. बैठते ही क्रांतिकारी लेखक संघ के अध्यक्ष हो जाते हैं और देश, समाज, प्रतिक्रांतिकारी, शोषण और श्रम आदि शब्दों को वाक्यों में प्रयुक्त करने लगते हैं. आंखें चढ़ जाती हैं. हर तरह के पाखंड के खिलाफ मुट्ठियां तानते हैं, ईश्वर में अविश्वास व्यक्त करते हैं, कुरते की आस्तीनें चढ़ा लेते हैं, बाल बिखरा लेते हैं और इस तरह उस दिन का कार्यक्रम शुरू होता है.

मैं लेखकजी से परेशान रहता हूं, फिर भी स्वयं लेखक बनने के लिए मंदिर के पास वाले पान के ठेले के पास चला जाता हूं. लेखकजी मुझ में लेखक बनने की अनंत संभावनाएं देखते हैं. मैं लेखकजी में आदमी की तलाश करता हूं. मैं ने हमेशा ही उन्हें आदमी के रूप में बरामद करने की कोशिश में गालियां खाई हैं.

उन का एक ही उत्तर होता है, "बंधु, तुम मुझे क्या पढ़ते हो, पढ़ो मेरी पुस्तकों को.

लेखकजी को शोहरत और धन की बहुत भूख थी और अपनी इसी भूख को मिटाने के लिए वह क्याक्या हथकंडे अपनाते थे?

अज्ञानी हो. मेरे चरित्र को क्या चाटोगे? तुम देखो कि मेरे पास कौशल कैसा है."

मैं निवेदन करता हूं, "लेखकजी, एक गिरे हुए आदमी से उठने का आदेश कोई क्यों सुने. जो खुद ही गयागुजरा होगा वह दूसरों का क्या सुधार करेगा?"

लेखकजी तैश में आ जाते हैं, "बंधु, तुम बारबार गलती करते हो, कौन है इस अंचल में राष्ट्रीय ख्याति का लेखक? 12 किताबें हैं. बंधु, हिंदी में किताब प्रकाशित करवा लेना चमत्कार है. एक कहानी तो अच्छी पत्रिका में छपती नहीं, चले हैं चरित्र की बारीकी तलाश करने?"

लेखकजी उन्माद में आ जाते हैं. श्रोता मिलते ही उन्हें बातों का दौरा पड़ने लगता है. उन के वचन एक ही तरह के होते हैं. वही बातें, वही कुतर्क, वही असंबद्ध विचार.

क्रांतिकारी लेखक संघ के सदस्य उन्हें चुपचाप सुनते हैं, पर सिर भी धुनते हैं. लेखकजी बात शुरू करते हैं बंबई से और दूसरी पंक्ति तक कलकत्ता पहुंच जाते हैं. कलकत्ता और बंबई के संस्मरण सुनतेसुनते समस्त सदस्य महानगरीय बारीकियों को समझने लगे हैं.

लेखकजी बताते हैं कि उन्होंने काफी पापड़ बेले हैं. संस्मरण सुनाते समय तन्मय रहते हैं. कोई गुस्ताख सदस्य अगर सुनने में कोताही बरतता है तो तुरंत झिड़क देते हैं, "न लिखोगे, न सुनोगे, बेवकूफ कहीं के. इसी तरह के लोगों के कारण ही क्रांति नहीं हो रही है."

और सदस्य सिर झुका लेते हैं. लेखकजी उन्हें बताते हैं कि लेखक कैसे बना जा सकता है. सदस्य उत्सुक हो जाते हैं. लेखकजी का ब्योरा शुरू हो जाता है, "हां, लेखक बनना है तो समय को साधना सीखो. समय को साधने की कला अगर लेखक में नहीं होगी तो उस का लेखक होना ही बेकार है. अगर लेखक हो कर भी समय को साध नहीं सके तो तुम से तो घसियारा बेहतर है. काहे के लेखक हुए तुम."

इस के बाद लेखकजी की नसीहतें शुरू हो जाती हैं, "यह तो लेखन कर्मशाला है. यहीं सब सीखना है."

हम सीखते हैं, लेखकजी सिखाते हैं. वह औलिया हैं, उन की बात नहीं कट सकती. हमारे सिर की नसें अलबत्ता फट सकती हैं.

वह आगे कहते रहते हैं, "हां तो बंधु, कुरतेपाजामे के साथ एक अद्द झोला तो जरूरी है ही. हां शुरू में कुछ भी ऊटपटांग लिखिए. किसी की भी टांग खींचिए. तनाव में रहिए. सत्ता की मुखालफत का स्वांग जरूरी है. यह भी याद रखिए कि सत्ता की मुखालफत केवल एक ही उद्देश्य के लिए करें कि लोग आप की ओर आकृष्ट हों. किताबें ही न लिखिए, किताबें तो बहुत लोग लिखते रहते हैं, लिखतेलिखते मर भी जाते हैं, कुछ मरमर कर भी लिखते हैं, पर होता कुछ भी नहीं. ऐसे लिखने से क्या होगा.

"जब तक आप लोगों को चौंकाएंगे नहीं तो लोग आप को पहचानेंगे नहीं और लोग चौंकेंगे तब, जब आप हमेशा मरनेमारने, जलनेजलाने और उलटनेउलटाने की बात करेंगे. हो सके तो किसी पार्टी में भी जाइए. बस जाना ही तो है, कौन सा वहां जा कर फांसी चढ़ना है. फांसी तो चढ़ते हैं बेवकूफ लोग. लेखक क्यों चढ़ेगा फांसी. आप तो बस जमने-जमाने के लिए जाइए."

इसी बीच एक मरियल सदस्य पूछता है, "लेखकजी, यह तो दगाबाजी है."

लेखक जी उखड़ जाते हैं, "चुप बे, अरे यह सोच कि इस में बाजी है कि नहीं, चाहें दगा से ही बाजी अपनी हो. बाजी मारना है प्यारे. जिस तरह से भी हो." लेखकजी ऊपर देखते हैं. पान वाला लड़का पान ले आता है. लेखकजी पूरा बीड़ा एक साथ मुंह में भर लेते हैं. लड़का चला जाता है.

लेखकजी फिर शुरू करते हैं. "हां तो, बंधु सुनो." लगता है कि जैसे वह वक्त को पुकार रहे हों. मैं आंख नीचे किए हुए होता हूं, पर वह मुझे ही पुकार रहे हैं. वह पुचकारते हैं. मैं दुखी हूं. लेखकजी मुझे मजबूत बना रहे हैं. मन तो रोता है कि अगले मंगल को न

आऊं. पर हर मंगल को चला जाता हूं. उकताहट के बावजूद उन्हें सुनता हूं. साहित्य में नामवरी भी एक ही भूख है और वह भूख मुझे भी सता रही है. लेखकजी भी वैसे ही लेखक नहीं बन गए हैं. यह सब तो लेखक बनने के लिए करना ही पड़ता है. लेखकजी के अनुभव बहुत कीमती हैं.

वह आगे कहते हैं, "बंधु, देखो मैं ने कितनों को गालियां सुनासुना कर कवि, लेखक बना दिया है, रेडियो तक पहुंचा दिया है."

हम मान लेते हैं. इसी उम्मीद में तो जी रहे हैं कि लेखकजी हमें भी लेखक बना देंगे. लेखकजी पारस हैं, हम लोहा हैं. उन की रगड़ से हमें सोना तो बनना ही है.

लेखकजी की नजर मुझ पर है. वह कुछ कठोर दिख रहे हैं. मैं डर रहा हूं. अब वह मेरी खबर लेंगे.

"सुनता हूं, तुम रायपुर से प्रकाशित होने वाले अखबारों में छपने के लिए मरे जा रहे हो?"

"अरे नहीं लेखकजी, यह आप ने क्या सुन लिया."

"बनो मत."

"बनता कौन है?"

"तुम बन रहे हो."

"और आप?"

"हम तो बने बनाए हैं, पुत्तर."

"तो समझिए हम भी बन कर ही रहेंगे."

"बनने से लाभ नहीं है बंधु, बनाने में लाभ है."

"किसे बनाएं? लेखकजी, यहां तो हर आदमी एक दूसरे को बनाने पर आमादा है."

"अभी बच्चे हो, दिल्ली बंबई की धूल फांको. ये क्या रायपुरिया पत्रों के लिए मरे जा रहे हो, बेवकूफ कहीं के. अरे, ध्रुव की कहानी पढ़ी है कि नहीं, बैठना है तो गुरूजनों की गोदी में बैठो, लेटना हो तो गुरूजनों के चरणों में लेटो, जहां नाम और दाम की ज्यादा संभावना है. हां... हां... हां... हां..."

लेखकजी अट्टहास करने लगते हैं. मैं रोनी सूरत लिए बैठा रह जाता हूं. उन की हंसी जारी रहती है. पान

"अधिक जिज्ञासा से भी अहित होता है. वह क्या कहा है लेनिन ने " जब लेखकजी नाराज होते हैं तो महापुरुषों को उद्धृत करने लगते हैं.

वाले लड़के के हाथ रुक जाते हैं. बगल की चाय की दुकान से लड़के के हाथ से गिलास छूट जाता है, पर उन की हंसी जारी रहती है. लेखकजी बहुत देर तक हंसते हैं.

पान वाला लड़का उन की हंसी का मतलब समझ जाता है. झटपट पान बना कर ले आता है. लेखकजी उसे तुरंत मुंह के हवाले कर देते हैं. पाठ जारी रहता है. जिस में क्रांतिकारी लेखकों के नुसखे हैं.

मैं उन के सामने चुप रह जाता हूं. चुप तो खैर बड़ेबड़े हो जाते हैं, जब लेखकजी बोलते हैं. लेखकजी क्रांतिकारी हैं, स्वयं घोषित क्रांतिकारी. आजकल वह लेखक बनाओ अभियान में लगे हैं. क्रांति के रास्ते में कल तक जिन को रोड़ा समझते थे, उन्हीं के सहयोग से अब क्रांति करने की सोच रहे हैं. उन की क्रांति के प्रति सब को जिज्ञासा है.

सब की ओर से मैं ही पूछता हूं, "लेखकजी आप तो क्रांतिकारी हैं. लेखक बनाओ समारोह जो आप कर रहे हैं, उस के लिए सेठों से, मिलमालिकों से ही सहयोग ले रहे हैं. आप ने अपने ट्रेड यूनियन मित्रों को किनारे कर क्यों दिया है?"

इतना सुनते ही लेखकजी गुर्राने लगते हैं. मैं उन की गुर्राहट देखने का आदी हो गया हूं. यह उन की एक खास अदा है. वह अपने खिलाफ कुछ भी नहीं सुनना चाहते. इसे वह तानाशाही नहीं बल्कि स्तर की चिंता से उत्पन्न सात्विक क्रोध का नमूना मानते हैं.

वह संभलते हैं, पैंतरा बदलते हैं, आंखें तरेरते हैं, फिर फरमाते हैं, "हां तो तुम कह रहे थे कि सेठों को क्यों साध रहा हूं. अबे, कभी कुछ समझोगे भी? देखो, तुम पूछते बहुत हो, इतना मत पूछा करो. अधिक जिज्ञासा से भी अहित होता है. वह क्या कहा है लेनिन ने...."

मैं उन की स्थिति समझ जाता हूं. जहां लेखकजी नाराज होते हैं, वहां महापुरुषों को उद्धृत करने लगते हैं. विषयांतर भी कर देते हैं. सीधे रूस की धरती पर उतर आते हैं. हम उन्हें थामते हैं. लेखकजी फिर शुरू होते हैं,

"देखो, सेठ के पास पैसा है, हमारे पास दिमाग है. सेठ को न साधूं तो क्या तुम्हें साधूं. शराब पिलाओगे रोज. दो हजार माह का खर्चा है घर का, कौन उठाएगा."

"लेखकजी. आप शराब पीते हैं?"

"जरूर."

"शराब पी कर क्रांति करेंगे?"

"जरूर!"

"मगर..."

"चुप बे, मगरवगर कुछ नहीं: सुनतासमझता तो है नहीं. असल में नए लेखकों के साथ यही मुसीबत है. वे लेखक को सन्यासी समझते हैं. कितने साल से लिख रहा है तू?"

"10 साल से."

"कितनी कहानी छपी हैं?"

"कुल तीन."

"कोई संग्रह?"

"नहीं."

"कुछ इनाम?"

"कुछ नहीं."

"तभी बात नहीं समझता. सेठ की अंटी में पैसा है. तुम्हारे खोपड़े में भेजा है, दोनों मिलें तो बात बने."

"तब फिर हमें यह रोज, चरित्र, संघर्ष, प्रगतिशीलता, मेहनतकश बांहें, ये सब क्या पढ़ाते रहते हैं."

"ये सब तो खेल है, प्यारे."

"मतलब?"

"मतलब यह कि अगर लेखक बनना है तो शुरू में शब्दजाल साधो. फिर पट्ठों की तरह बाहर निकलो. फिर सेठों का माल साधो. काम करो, कुछ नाम करो. सब नामदाम का चक्कर है. दुनिया है... बेवकूफ बनाने वाला चाहिए. मुखौटा तो जरूरी है. मर जाओगे वरना...".

"लेकिन लेखकजी, आप कहते हैं हम प्रेमचंद की संघर्षशील परंपरा के लेखक बनेंगे, तो क्या इसी तरह..."

"जरूर."

(शेष पृष्ठ142पर)

ओलंपिक आंदोलन नए परिवर्तनों की तरफ

आधुनिक ओलंपिक खेलों का इतिहास अब करीब 90 साल पुराना हो गया है. शुरू में इस के लिए जिन नियमों की व्यवस्था की गई थी वे पुराने तो पड़ ही गए हैं, उन में बदलाव की जरूरत भी एक अरसे से महसूस की जा रही है. इस के लिए कोशिशें भी शुरू हो गई हैं. 1984 के ओलंपिक खेल लास एंजेलेसं (अमरीका) में होने जा रहे हैं और अमरीकी सरकार ने फैसला किया है कि इन खेलों के आयोजन में सरकार कम से कम दखल देगी. लगभग सभी महत्त्वपूर्ण काम निजी संस्थाओं को सौंप दिए गए हैं.

इन संस्थाओं ने खिलाड़ियों को ठहराने के एवज में संबंधित देशों से अपेक्षाकृत ज्यादा रकम लेने की बात कही है. टिकटों की कीमत कुछ बढ़ा दी गई है और विज्ञापन दरों में भी वृद्धि की गई है. कुछ क्षेत्रों में इस स्थिति की आलोचना की ज़ा रही है, लेकिन इस का सुखद पहलू यह है कि लास एंजेलेस ओलंपिक अपना सारा खर्चा निकाल कर आयोजकों को मुनाफा भी देगा. ओलंपिक खेलों के लिए यह एक नई बात है. अब तक तो ओलंपिक खेल आयोजित करने वाले देश को अरबों रुपयों का नुकसान होता था और यह वही पैसा होता था जिसे वहां की सरकारें आम व्यक्ति पर कर लगा कर वसूला करती थीं.

पेशेवर और गैरपेशेवर का मसला भी ओलंपिक खेलों के लिए खास विवाद का विषय रहा है. अब यह सोचा जा रहा है कि ओलंपिक खेलों के दरवाजे पेशेवर खिलाड़ियों के लिए भी खोल दिए जाने चाहिए. दक्षिण कोरिया इस के लिए विशेष दिलचस्पी दिखा रहा है. सियोल (दक्षिण कोरिया) में ही 1988 के ओलंपिक खेल होंगे.

क्रिकेट ही क्रिकेट

इमरान, जहीर व सरफराज के भारत न आने की घोषणा के बावजूद सितंबर अक्तूबर में पाकिस्तान की क्रिकेट टीम का भारत दौरा निश्चित है. इन तीनों खिलाड़ियों ने अपने व्यंस्त क्रिकेट कार्यक्रम की वजह से भारत न आ पाने में असमर्थता व्यक्त की है, लेकिन

यह सचाई नहीं है.

यह बात साफ हो चुकी है कि पाकिस्तानी खिलाड़ी अपने ही देश में ज्यादा अच्छा खेल पाते हैं. 1979-80 के पिछले भारतीय दौरे में सभी नामी खिलाड़ी प्रायः असफल रहे थे. इस स्थिति को वे दोबारा नहीं आने देना चाहते, क्योंकि उन्हें पता है कि विश्व के किसी भी हिस्से में वे घटिया खेलें तो चल सकता है, लेकिन भारत में उन की असफलता उन की साख के लिए खतरा साबित हो सकती है.

लगता है कि सितंबर में पाकिस्तान की कई नए खिलाड़ियों वाली टीम भारत आएगी. इस से पाकिस्तान क्रिकेट बोर्ड के लिए भी दो फायदे हैं—अगर भारत की जीत होती है, जिस की कि संभावना ज्यादा है तो यह कह कर दिलासा दिया जा सकता है कि भारत ने दूसरे दरजे की टीम को ही तो हराया, लेकिन अगर कहीं पाकिस्तान जीत जाता है, तब तो उस के पौ बारह हैं ही.

बहरहाल क्रिकेट के उन्मादी लोगों के लिए इस साल सितंबर से ले कर दिसंबर तक के तीन महीनों में क्रिकेट बोर्ड ने नौ टेस्ट मैच खेले जाने की व्यवस्था कर दी है. तीन पाकिस्तान के विरुद्ध होंगे और छः वेस्टइंडीज के विरुद्ध. हो सकता है कि जनवरी में भारतीय टीम श्रीलंका चली जाए.

क्रिकेट बोर्ड के लिए तो नौ टेस्टों का मतलब है लाखों रुपयों की आमदनी. खिलाड़ियों को भी अच्छा खासा पैसा मिल जाएगा, लेकिन खेल का रोमांच कहां बाकी रह पाएगा? 19 अक्तूबर को नागपुर में

जहीर अब्बास : कहीं पहले जैसा हाल न हो?

इमरान खां : अपने खेल के प्रति अविश्वास?

पाकिस्तान के विरुद्ध तीसरा टेस्ट मैच खत्म होगा और 21 अक्तूबर से दिल्ली में वेस्टइंडीज के विरुद्ध टेस्ट मैच शुरू हो जाएगा. ऐसे मशीनी कार्यक्रम में खिलाड़ी मशीन से ज्यादा अपनी अहमियत कैसे बनाए रख सकेगा? इस से शायद क्रिकेट बोर्ड के अधिकारियों को मतलब भी नहीं है.

विश्व क्रिकेट का बंटवारा

जो बात पिछले चारपांच सालों से शंकाएं पैदा करती रही है, वह 1983 में कभी भी साकार हो सकती है. दक्षिण अफ्रीका को टेस्ट क्रिकेट में शामिल करने के सवाल पर नए सिरे से विचार शुरू हो गए हैं. भारत, पाकिस्तान, वेस्टइंडीज जिवाब्वे ने ऐसी किसी भी व्यवस्था का विरोध किया है. इंगलैंड के दो भूतपूर्व खिलाड़ियों—डेविस कायटन व जान एड्रिच ने इंगलिश क्रिकेट क्लब-एम.सी.सी. को इस बात के लिए तैयार कर लिया है कि वह अपने 18 हजार सदस्यों से दक्षिण अफ्रीका का दौरा किए जाने के बारे में सहमति प्राप्त करने का प्रयत्न करे.

एम.सी.सी इस के लिए मतदान कराएगी, लेकिन तीसरी विश्व कप क्रिकेट प्रतियोगिता के बाद, क्योंकि इस से पहले कोई विवाद उठता है तो विश्व कप के कार्यक्रम पर इस का असर पड़ सकता है.

इंगलैंड के पक्ष का समर्थन न्यूजीलैंड कर रहा है और आस्ट्रेलिया भी हाल में विरोध के बावजूद गोरों के गुट में शामिल हो सकता है.

इंगलैंड के क्रिकेट क्लब के लिए दक्षिण अफ्रीका से जुड़ना आर्थिक वजह से जरूरी भी है. एम.सी.सी बेहद गंभीर आर्थिक संकट से गुजर रही है. हाल ही में वहां एक दिन की क्रिकेट को जिंदा रखने के लिए तंबाकू की एक कंपनी ने करीब तीन करोड़ रुपए की रकम अगले पांच सालों में देने का वादा किया है, लेकिन यह रकम भी आर्थिक संकट को पूरी तरह खत्म नहीं कर सकेगी. दक्षिण अफ्रीका के कई उद्योगपति नोटों की बोरियां लिए मदद को तैयार हैं, बशर्ते कि इंगलैंड के नामी खिलाड़ी दक्षिण अफ्रीका में जा कर खेलें.

बुजुर्ग खिलाड़ियों की अस्तव्यस्त प्रतियोगिता

जिस जवाहरलाल नेहरु स्टेडियम में चार महीने पहले नवें एशियाई खेलों का सफल आयोजन किया गया था, वहीं 18 से 20 मार्च तक हुई 40 साल से ज्यादा की उम्र के पुरुष व 35 साल से ज्यादा उम्र की महिला खिलाड़ियों की दूसरी एशियाई व चौथी राष्ट्रीय प्रतियोगिता पूरी तरह अव्यवस्था का शिकार रही.

कहने को इस प्रतियोगिता में इंडोनेशिया, मलयेशिया, सिंगापुर व ब्रुनेई के खिलाड़ियों ने भी हिस्सा लिया, लेकिन नाम मात्र को. मुख्य रूप से तो यह भारत की राष्ट्रीय प्रतियोगिता जैसी ही रही.

प्रतियोगिता देखने के लिए निमंत्रण पत्र जारी किए गए, लेकिन यह कहां मिलेंगे, इस की कोई सूचना नहीं दी गई. प्रतियोगिता दिन में शुरू की जा सकती थी, लेकिन उसे रात में

शुरू किया गया. तब तक वर्षा शुरू हो गई थी. बुजुर्ग खिलाड़ी फिर भी मार्चपास्ट में हिस्सा लेने उतरे, पानी में भीगते हुए, लेकिन अधिकारी छाता लगाए रखने पर भी अपनी जगह नहीं टिक पाए.

अगर एकदो रुपए का टिकट लगा कर प्रतियोगिता की जाती तो ज्यादा दर्शक मैदान में पहुंच पाते और इस से जो रकम मिलती, उसे खिलाड़ियों को मदद के रूप में दिया जा सकता था. सुविधाओं की कमी का यह हाल रहा कि कब कौन सा मुकाबला शुरू होने वाला है, इस की सूचना खिलाड़ियों तक को ऐन वक्त पर दी गई.

तमाम अव्यवस्थाओं के बावजूद 91 वर्षीय बाबा पृथ्वीसिंह आजाद व 77 वर्षीय गुलाब सिंह का युवाओं की सी चुस्तीफुरती से दौड़ना काफी सुखद लगा. दोनों ने ही अपनी सफलता का रहस्य नियमित खानपान, समयबद्ध दिनचर्या व हर किस्म के नशों से परहेज को बताया.

क्या क्रिकेट अश्लील है?

क्रिकेट की आलोचना तरहतरह से की गई है, लेकिन इस पर नए तरह का हमला पाकिस्तान के एक मौलवी साहब ने किया है. उन्होंने पाकिस्तान के राष्ट्रपति जिया उल हक को लिखे पत्र में सुझाव दिया है कि क्रिकेट का खेल महिलाओं को नहीं देखने देना चाहिए. क्रिकेट पर प्रतिबंध लगाने के लिए उन्होंने एक आंदोलन छेड़ा हुआ है. उन का कहना है कि क्रिकेट एक अश्लील खेल है. अश्लील इसलिए कि गेंदबाज गेंद फेंकते समय उसे पैंट के जिस हिस्से पर रगड़ता है, वह क्रिया मुसलिम कानून के हिसाब से अनुचित है. कोई ताज्जुब नहीं कि उन का तर्क मान कर क्रिकेट पर प्रतिबंध लगा ही दिया जाए.

करों का जाल

करों ने पूरी दुनिया को परेशान कर रखा है. ब्योर्न बोर्ग के बाद विश्व टेनिस में स्वीडन के युवा खिलाड़ी मैट्स विलैंडर ने जबरदस्त ख्याति पाई है, लेकिन पिछले एक साल में टेनिस से उस ने जो 50 लाख रुपए कमाए, उस में से साढ़े बयालीस लाख रुपए वहां की सरकार ने करों के रूप में झपट लिए. मैट्स ने इस पर निराश हो कर कहा, "मैं किस के लिए टेनिस खेलूं? क्या सरकारी खजाना भरने के लिए?"

बोर्ग की तरह अब उस ने भी फ्रांस के भूमध्य सागरवर्ती तट पर स्थित मोनाको नाम के एक छोटे से स्वतंत्र राज्य के नगर मांटे कार्लो में बसने का फैसला कर लिया है, क्योंकि वहां सब से कम कर लगते हैं. ●

कंप्यूटर नियंत्रित प्रक्षेपास्त्र

अमरीकी विशेषज्ञ एक ऐसे प्रक्षेपास्त्र के निर्माण की योजना में जुटे हुए हैं, जो दुश्मनों के प्रक्षेपास्त्रों तथा विध्वंस के अन्य साधनों को हवा में ही नष्ट कर देगा.

इस प्रकार के प्रक्षेपास्त्र को 'सुपर कंप्यूटर' (जिस के शीघ्र बनाए जाने की योजना है) के द्वारा नियंत्रित किया जाएगा.

आशा व्यक्त की जा रही है कि ये सुपर कंप्यूटर सामान्य कंप्यूटरों से कई हजार गुणा तेजी से काम कर सकेंगे.

इस प्रक्षेपास्त्र विध्वंसक प्रक्षेपास्त्र के निर्माण से प्रक्षेपास्त्रों का युद्ध नाकामयाब साबित होगा और इस प्रकार विश्व शांति भी स्थापित हो सकेगी.

ये तमाशेवाली नर्तकियां

(पृष्ठ 89 का शेष)

पड़ता है. तमाशा मालिक तथा साथी कलाकार की रखैल बन कर रहती हैं.

रखैल बनना भी सभी नर्तकियों के लिए संभव नहीं होता. स्वस्थ तथा सुंदर नर्तकियां ही रखैल बनाई जाती हैं. साधारण नर्तकियों की हालत तो काफी बदतर रहती है.

इस तरह से देखा जाए तो इन नर्तकियों

नर्तकियां : चेहरे की मुसकराहट में अपने जख्मों को छिपा कर लोगों का मनोरंजन करना ही जिन का पेशा है. (ऊपर व दाएं).

कलाकार भी कभीकभी उन के जिस्म से खेलते हैं. कभीकभी उन के इशारों पर भी इन नर्तकियों को अनचाहा काम करना पड़ता है.

तमाशा नर्तकियों में यह परंपरा है कि उन का विवाह नहीं होता. यदि कोई नर्तकी विवाह करना भी चाहती हो तो कोई व्यक्ति उस के साथ विवाह नहीं करता. ऐसी हालत में ये नर्तकियां किसी व्यक्ति या अपने साथी
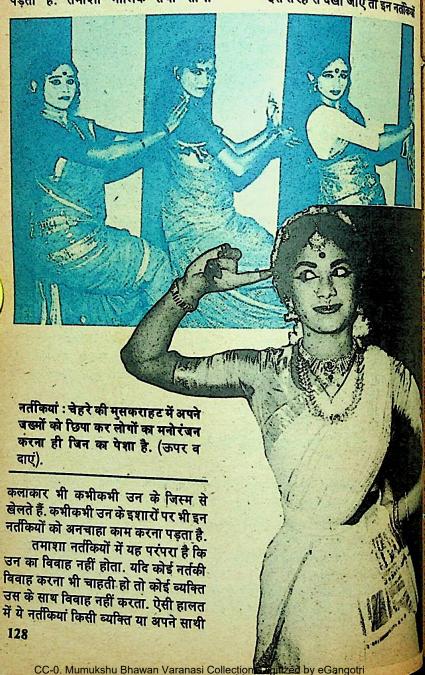
का आर्थिक, सामाजिक तथा दैहिक रूप से शोषण किया जाता है. इस शोषणभरी जिंदगी के भंवर से उबर पाना उन के लिए कठिन ही नहीं, अपितु असंभव होता है.

अंधविश्वासों की शिकार

ये नर्तकियां स्वयं ही कई अंधविश्वासों की गिरफ्त में फंसी हुई हैं, जिस के कारण उन के जीवन का समुचित विकास नहीं हो पाता.

शुक्रवार का व्रत, संतोषी माता की भक्ति तथा अन्य देवीदेवताओं की पूजा ये नर्तकियां असीम भाव से करती हैं. इसलिए देवीदेवता के प्रकोप का भय उन्हें सदा बना रहता हैं. चिरकाल से चली आ रही परंपराओं को त्यागने की हिम्मत उन में नहीं होती.

अंधविश्वासों की पकड़ उन में इतनी मजबूत है कि उस से मुक्त होने का विचार तक उन के मन में नहीं आता. अंधविश्वासों के कारण ये नर्तकियां नारकीय जीवन के दलदल में फंसी हुई हैं.

इन नर्तकियों में आज भी मातृप्रधान परंपरा का प्रचलन है. बच्ची का पैदा होना शुभ माना जाता है. ये नर्तकियां अपनी संतानों के नाम के आगे अपना नाम लगवाती हैं, क्योंकि संतान का पिता वास्तव में कौन है, इस का उन्हें स्वयं निश्चित रूप से पता नहीं होता.

इन नर्तकियों में देह व्यापार को बुरा नहीं माना जाता. परंपरा के अनुसार नर्तकी की लड़की को आगे चल कर नर्तकी ही बनना पड़ता है.

इन नर्तकियों का जीवन एक कटी पतंग के समान है. इस क्षेत्र में प्रवेश पाना सरल है, लेकिन बाहर निकलना लगभग असंभव ही है.

कोल्हाटी तथा डोंकारी जनजाति की अधिकतर युवतियां परंपरागत व्यवसाय के रूप में तमाशे में काम करती हैं. तमाशे में काम करने पर इन नर्तकियों का संबंध अपनी बिरादरी से लगभग समाप्त ही हो जाता है.

अन्य पिछड़ी जाति की मजबूर युवतियां, घर से भागने वाली युवतियां तथा प्रेम में निराशा का सामना करने वाली युवतियां इस व्यवसाय को अपना लेती हैं. परिणामस्वरूप ऐसी युवतियों का समाज से नाता ही टूट जाता है.

तमाशा मंडली गांवगांव घूमती है, इसलिए इन नर्तकियों के पांव कहीं पर भी जम नहीं पाते. समाज से वह लगभग अलग ही रहती हैं.

सामाजिक उपेक्षा की शिकार होने से ये नर्तकियां विना डोर की पतंग के समान अपना जीवन व्यतीत कर रही हैं.

तमाशा मालिक इन नर्तकियों की कभी भी छुट्टी कर सकते हैं. वे रखैल के रूप में रखने वाले अपने साथी कलाकारों पर भी भरोसा कर के नहीं चल सकतीं. वे कभी भी उन्हें झूठी पत्तल के समान अपने से दूर फेंक सकते हैं. इस प्रकार उन की जिंदगी न घर की होती है, न घाट की.

नैतिकता को ताक पर रख कर बड़ी निर्लज्जता के साथ इन्हें मंच पर अपने हावभाव प्रदर्शित कर लोगों का मनोरंजन करना पड़ता है, पर पुरस्कार के रूप में समाज से उन्हें मिलती है घृणा तथा चरित्रहीनता के आरोप.

परिवर्तन के प्रयास

तमाशा कलाकारों को संगठित कर उन की हालत में परिवर्तन करने का प्रयास जारी है, फिर भी इन नर्तकियों को इस का कोई विशेष लाभ नहीं मिला है.

सामाजिक तथा पारंपरिक रीतिरिवाजों में परिवर्तन की दिशा में प्रयासों का अभाव है.

कुछ नर्तकियां स्वयं ही तमाशे की मालिक हैं. उन की माली हालत अच्छी है. कुछ नर्तकियों ने इस क्षेत्र में अच्छा नाम कमाया है, लेकिन ज्यादातर नर्तकियों की हालत बदतर है.

इन नर्तकियों के प्रति समाज के दृष्टिकोण में अब परिवर्तन आना चाहिए. नर्तकियों को चाहिए कि वे भी परंपरा से हट कर अपना संसार आबाद करें, अपनी पुत्रियों को इस व्यवसाय में न ढकेलें. ●

नाविक रे

लहरों से टकरा जा नाविक रे...
टकराजा लहरों से, तट से
कुछ भी बोल नहीं,
प्यास बुझ गई तो जीवन का
कोई मोल नहीं.
होंठ सिए जा देख जलन के दौर में
सांसें हैं खामोश
धड़कनें बेकल हो कर गा रहीं
दुखती रग धीरेधीरे सहला रहीं.
लहरों से टकरा जा नाविक रे...

एक किरन तड़के उठ कर
धरती से प्यार जता रही,
और दूसरी ओर चांदनी
प्यासी ढलती जा रही.
ऊषा के रक्तिम अधरों का
धीरज ही है जो
नए सूर्य के संग जगत में
नया सवेरा ला रही
अंतिम पल में भी नवजीवन ला रही.
लहरों से टकरा जा नाविक रे...
अर्थी लिए शाम की काली
रात सर पर छा रही,
और अमावस कालचक्र सी
सपनों पर मंडरा रही.
फिर भी जीने का सम्मोहन
जाने कैसा है
ढलते सूरज की लाली से
संध्या मांग सजा रही
मुरझाए चेहरों पर सुमन खिला रही
लहरों से टकराजा नाविक रे...

—प्रवीण 'तन्मय'

लेख • चंद्रकुमार मिश्र

हाइड्रोजन

हाइड्रोजन से आप कार चलाएं, भोजन पकाएं और घर को गरम रखें, यह सोच या सुन कर अभी अजीब सा लगता है. हाइड्रोजन का जो सब से

यह गैस किस प्रकार ऊर्जा के एक नए स्रोत के रूप में सामने आ रही है?

हाइड्रोजन के दो प्रयोग: राकेट के ईंधन के रूप में (दाएं) व खाना पकाने में (नीचे)

साधारण उपयोग हम सब जानते हैं—वह है उसे गुब्बारे में भरना. वैसे हाइड्रोजन के अनेक उपयोग हैं, रासायनिक खाद तथा वनस्पति घी के उत्पादन में इस का विशेष रूप से उपयोग होता है, किंतु हाइड्रोजन का ईंधन की भांति उपयोग एक नवीन संभावना है.

गत कुछ वर्षों से तेल तथा प्राकृतिक गैस के उत्पादन और उपभोग दोनों ही में तेजी से वृद्धि हुई है. इस समय विश्व की कुल प्रयुक्त ऊर्जा का 60 प्रतिशत भाग तेल तथा गैस से प्राप्त होता है, किंतु यह स्थिति सदैव नहीं चल सकती. यह निश्चितप्राय: है कि अभी कुछ वर्षों तक तेल तथा गैस का उत्पादन बढ़ता जाएगा, किंतु उस के पश्चात जब पृथ्वी के तेल तथा गैस के स्रोत समाप्त होने लगेंगे तो स्वत: ही उत्पादन कम होने लगेगा और जैसा कि सऊदी अरब के तेल मंत्री ने कहा है, "कच्चा तेल बजाए बैरलों के लीटरों में बेचा जाएगा."

प्रश्न केवल तेल के मूल्यों का ही नहीं है, वैसे मूल्य को भी नजरअंदाज नहीं किया जा सकता. विश्व की अर्थव्यवस्था को सब से बड़ा आघात उस समय पहुंचा, जब कुछ वर्ष पूर्व तेल उत्पादक देशों ने एकाएक तेल की कीमतें बढ़ा दीं. फलस्वरूप सभी वस्तुओं के मूल्य बढ़ गए और मुद्रास्फीति का भयंकर रूप से प्रसार हुआ. परिस्थिति ने विश्व के प्रमुख देशों को बाध्य कर दिया कि वे तेल और गैस का विकल्प खोज निकालें.

ऊर्जा के नए स्रोत

ऊर्जा के नए स्रोतों के रूप में सौर ऊर्जा, वायु ऊर्जा, तरंग ऊर्जा, भूताप ऊर्जा इत्यादि के विकास के लिए व्यापक प्रयास चल रहे हैं, किंतु इन में से कोई भी तेल या गैस का विकल्प नहीं हो सकती. इस का मुख्य कारण यह है कि तेल या गैस को एक स्थान से दूसरे स्थान पर आसानी से ले जाया जा सकता है, पर अन्य प्रकार के ऊर्जा स्रोत में ऐसा सरलता से संभव नहीं है.

कुछ वर्ष पूर्व ऐसा प्रतीत होता था कि परमाणु शक्ति ऊर्जा के स्रोत के रूप में उभर कर आ जाएगी, किंतु अब यह असंभव प्रतीत होता है. कारण यह है कि परमाणु भट्ठी में यूरेनियम के विखंडन से प्राप्त ऊर्जा को विद्युत ऊर्जा में परिवर्तित किया जाता है. अभी भी इस ढंग से प्राप्त बिजली पनबिजली घर या ताप बिजलीघर द्वारा उत्पादित बिजली की तुलना में महंगी पड़ती है. परमाणु बिजलीघर को स्थापित करने में बहुत अधिक पूंजी की आवश्यकता होती है.

इस के अलावा अभी तक ऐसी परमाणु भट्ठी विकसित नहीं की जा सकी है, जिसे एक स्थान से दूसरे स्थान तक आसानी से पहुंचाया जा सके. इस के कारण परमाणु भट्ठी से प्राप्त बिजली को संप्रेषण (ट्रांसमिशन) लाइन द्वारा अन्यत्र पहुंचाया जाता है. बिजली भेजने में काफी व्यय होता है और बिजली की भी हानि होती है.

बिजली की चोरी

भारत में तो बिजली की चोरी की भी समस्या है. एक अनुमान के अनुसार लगभग 30 प्रतिशत उत्पादित बिजली की हानि चोरी तथा अन्यत्र भेजने के कारण होती है. अतः आवश्यकता ऐसे ईंधन या ऊर्जा स्रोत की है जिसे सरलता से प्राप्त पदार्थों से बनाया जा सके तथा तेल या गैस की भांति उसे एक स्थान से दूसरे स्थान पर ले जाया जा सके और आवश्यकतानुसार उस का उपयोग किया जा सके. सामान्य रूप से प्राप्त पदार्थों के कृत्रिम विखंडन या संयोजन से प्राप्त ईंधनों को संश्लेषित यानी कृत्रिम ईंधन कहते हैं.

यदि संश्लेषित ईंधन से प्राप्त प्रति किलोग्राम ऊर्जा की मात्रा तेल या गैस से प्राप्त प्रति किलोग्राम ऊर्जा की मात्रा से अधिक हो तो वह ईंधन और अधिक लाभप्रद होगा.

इस प्रकार के ईंधनों को खोजने तथा उसे बनाने का प्रयास अनेक देशों में चल रहा है. एक संभावित प्रक्रिया के अनुसार परमाणु भट्ठी से प्राप्त ऊर्जा का उपयोग कर सरलता तथा बहुलता से प्राप्त पदार्थों जैसे वायु तथा

जल का उपयोग कर ऐसे संश्लेषित ईंधनों का उत्पादन किया जा सकता है. इन ईंधनों में हाइड्रोजन, अमोनिया, हाइड्राजीन तथा मेथानाल मुख्य हैं.

संभवतः संश्लेषित ईंधनों में हाइड्रोजन सब से अच्छा ईंधन है. हाइड्रोजन गैस में रंग, गंध तथा स्वाद नहीं होता. यह वायुमंडल में 10 लाख भाग में एक के अनुपात में विद्यमान है. हाइड्रोजन को जल के विद्युत संश्लेषण से अर्थात उस को उस के मूल पदार्थों में बिजली की सहायता से खंडित कर के प्राप्त किया जा सकता है.

– हाइड्रोजन के उपयोग

हाइड्रोजन के ईंधन की भांति भिन्नभिन्न उपयोग हो रहे हैं. हाइड्रोजन का सब से सरल उपयोग भोजन पकाने तथा घर को गरम करने के लिए संभव है. इसे नलों द्वारा सरलता से एक स्थान से दूसरे स्थान को भेजा जा सकता है. यह अमोनिया की भांति हानिकारक नहीं है.

हाइड्रोजन में अन्य ईंधनों की अपेक्षा अधिक ऊर्जा होती है.. इसी कारण इस का उपयोग शनि ग्रह को भेजे गए सैटर्न-5 अंतरिक्षयान के द्वितीय और तृतीय खंड के राकेट मोटरों में किया जा चुका है.

संभवतः आप जानते होंगे कि राकेट को गति प्रदान करने के लिए न्यूटन के गति संबंधी नियम का उपयोग किया जाता है. इस नियम के तहत प्रत्येक क्रिया की बराबर तथा विपरीत प्रतिक्रिया होती है. राकेट की नोक से अत्यंत तीव्र वेग की गैस या अन्य पदार्थ निकलता है. इस पदार्थ को प्रापेलेंट कहते हैं. प्रापेलेंट के नोक से निकलने के फलस्वरूप

हाइड्रोजन गैस का कार के ईंधन के रूप में प्रयोग शीघ्र ही आम हो जाएगा.

राकेट को विपरीत दिशा में बल प्राप्त होता है, अतः वह तेजी से धक्का खा कर आगे बढ़ता है.

प्रापेलेंट को राकेट में ही रखा जाता है. वह ऐसा पदार्थ है, जो अन्य पदार्थ से रासायनिक क्रिया कर तीव्र वेग की गैस उत्पन्न कर सकता है. प्रापेलेंट अत्यंत उच्च दाब तथा ताप पर थ्रस्ट चैंबर में प्रवेश करता है, जहां उसे अत्यंत उच्च दाब तथा ताप पर अन्य ज्वलनशील पदार्थों से संयुक्त कर जलाते हैं. जलने के कारण उत्पन्न गैस को त्वरित कर नोक से निकालते हैं, जिस के कारण राकेट आगे बढ़ता है. प्रापेलेंट के लिए हाइड्रोजन का फ्लोरीन के साथ उपयोग राकेटों में काफी समय से हो रहा है.

हाइड्रोजन का उपयोग ईंधन सेल में किया जाता है. इन सेलों का उपयोग अंतरिक्षयानों में बिजली उत्पादन के लिए किया जाता है. हाइड्रोजन को द्रव में बदलना अब कठिन नहीं है, क्योंकि यह गैस बहुत कम तापक्रम पर ही द्रव में बदल जाती है. तेज चाल के विमानों में भी द्रव हाइड्रोजन का उपयोग ईंधन की भांति संभव है.

जब हाइड्रोजन द्रव रूप में होता है तब इस की तुलना ऐसे पेट्रोल से की जा सकती है जिस की 'आक्टेन संख्या' बहुत अधिक हो. सामान्य रूप से किसी ईंधन की आक्टेन संख्या के अधिक होने का अर्थ यह है कि उस ईंधन में पूर्णतया तथा शीघ्र ऊर्जा में परिवर्तित होने वाले 'हाइड्रोकार्बन' की मात्रा अधिक है. इस बात को आप यों अधिक आसानी से समझ सकते हैं कि हाइड्रोजन के जलने से प्रति किलोग्राम मिलने वाली ऊर्जा 120 मेगा जूल है, जब कि प्रति किलोग्राम पेट्रोल से केवल 45 मेगा जूल ऊर्जा ही प्राप्त होती है. मतलब यह है कि समान मात्रा के लिए हाइड्रोजन पेट्रोल की अपेक्षा तीन गुना अधिक ऊर्जा देगी.

सड़क यातायात में

कार तथा ट्रकों में हाइड्रोजन के उपयोग की संभावना ईंधन टंकी से जुड़ी हुई है. हाइड्रोजन को द्रव रूप में परिवर्तित कर इस का फिर से ईंधन के रूप में उपयोग क[illegible] शायद संभव न होगा, क्योंकि इस [illegible] अधिक स्थान की आवश्यकता होगी [illegible] व्यय भी अधिक आएगा. अतः एक [illegible] प्रक्रिया खोजी गई है.

हाइड्रोजन और आक्सीजन के मे[illegible] जल, गंधक के साथ मेल से हाइड्रो सल्फ[illegible] गैस, नाइट्रोजन के साथ मेल से अमो[illegible] तथा कार्बन के साथ मेल से मीथेन बनत[illegible] इन यौगिकों को हाइड्राइड कहते हैं. [illegible] हाइड्राइडों में कुछ का उपयोग राकेटों [illegible] ईंधन की भांति किया जाता है. इन हाइड्राइ[illegible] में कुछ का उपयोग हाइड्रोजन उत्पादन [illegible] लिए किया जाता है. लीथियम हाइड्राइड ए[illegible] ऐसा हाइड्राइड है, जिस से पुनः हाइड्रोज[illegible] प्राप्त की जा सकती है.

उपयोगी हाइड्राइड

सब से अधिक उपयोगी धातु से [illegible] हाइड्राइड धात्विक हाइड्राइड होते हैं. [illegible] हाइड्राइडों का मुख्य उपयोग हाइड्रोज[illegible] उत्पादन तथा विटामिनों के उत्पादन में हो[illegible] है. संभवतः धात्विक हाइड्राइडों का [illegible] से महत्त्वपूर्ण उपयोग मोटरकारों के लि[illegible] हाइड्रोजन को ईंधन रूप में उपलब्ध करा[illegible] रेफ्रीजेरेशन और एयरकंडीशनिंग में हो[illegible]

हाइड्राइड बनाने के लिए हाइड्रोजन [illegible] उच्च दाब पर कुछ विशेष धातुओं की चाद[illegible] के संपर्क में लाते हैं. इन धातुओं से हाइड्रोज[illegible] क्रिया कर उन से संबद्ध हो जाती है. इस क्रि[illegible] में ऊष्मा का भी उत्पादन होता है, जिस [illegible] उपयोग घरों तथा मोटरों को गरम करने [illegible] लिए किया जा सकता है.

इस प्रकार बने हाइड्राइड को गर[illegible] करने से हाइड्रोजन को पुनः प्राप्त किया ज[illegible] सकता है. इस क्रिया में हाइड्राइड अप[illegible] आसपास की ऊष्मा को भी सोख लेता है, जि[illegible] से हाइड्राइड के आसपास का क्षेत्र ठंडा हो [illegible] जाता है और रेफ्रीजेरेशन संभव हो जाता है.

उपर्युक्त विधि का उपयोग [illegible] मर्सडीज बेंज कार के जरमन उद्योगपति [illegible] अपने घर के लिए गरम जल, रसोई के लि[illegible]

हाइड्रोजन गैस तथा कार के लिए हाइड्रोजन ईंधन हासिल किया है.

एक अन्य विधि में दो हाइड्राइड टैंक भिन्नभिन्न तापक्रम पर रखे जाते हैं तथा एक से हाइड्रोजन गैस को निकाल कर दूसरे में भेजने तथा दूसरे से पुनः पहले टैंक में भेजने पर इच्छानुसार ठंडा या गरम किया जा सकता है.

मोटरकार से निकलने वाली एक्जास्ट गैस या मोटर इंजन को ठंडा रखने वाले जल में एकत्र उष्मा का उपयोग कर हाइड्राइड से हाइड्रोजन तैयार की जा सकती है.

हाइड्रोजन की प्रज्वलन क्षमता पेट्रोल की प्रज्वलन क्षमता से कहीं अधिक है. हाइड्रोजन के जलने से पानी की भाप बनती है तथा इंजन से निकली गैस दुर्गंधहीन होती है.

हाइड्रोजन गैस का ईंधन के रूप में उपयोग करने वाली प्रथम कार सन 1965 ईसवी में बनी और अब 'डाज ओमनी' कार बिक्री के लिए उपलब्ध है. इन कारों की मुख्य विशेषता यह है कि हाइड्रोजन ईंधन की समाप्ति पर इसे पेट्रोल से चलाया जा सकता है. हाइड्रोजन का उपयोग करने वाली कार के इंजन और पेट्रोल कार के इंजन में कोई विशेष अंतर नहीं होता. केवल हाइड्रोजन इंजन में 'एटोमाइजर' नहीं होता (एटोमाइजर पेट्रोल को गैस वाष्प में बदलता है). शेष मशीन सामान्य पेट्रोल इंजन की तरह ही होती है, लेकिन सब से बड़ी कठिनाई यह है कि यदि कभी हाइड्रोजन ईंधन टंकी में आक्सीजन प्रवेश पा जाए तो तुरंत वह ठोस द्रव्य में परिवर्तित हो जाती है. इस से हाइड्रोजन के प्रवाह में रुकावट पैदा हो जाती है तथा विस्फोट होने की संभावना हो जाती है.

हाइड्रोजन का उत्पादन

जैसा कि आप जानते हैं, सब से सरल तथा कम खरचीली विधि पानी का बिजली द्वारा विखंडन करना है. फिर भी इस विधि से प्राप्त हाइड्रोजन तेल या गैस के मूल्य का मुकाबला नहीं कर सकती. कुछ मास पूर्व विकसित विधि में जल विखंडन से प्राप्त हाइड्रोजन के प्रतिशत में काफी वृद्धि हुई है.

कुछ वैज्ञानिकों का मत है कि कुछ ऐसी धातुएं खोजी जा सकती हैं, जो जल के साथ रासायनिक क्रिया कर अपने साथ आक्सीजन को संयुक्त कर लें तथा हाइड्रोजन का उत्पादन संभव हो जाए. साथ ही अधिक ताप पर ये धातुएं आक्सीजन को अपने से अलग कर दें और स्वयं मूल रूप में आ जाएं. ●

गोपाल मिश्र रंगमंच के क्षेत्र में चर्चित नाम हैं. लखनऊ विश्वविद्यालय में स्नातक कर रहे गोपाल ने

नई प्रतिभाएं

आज से सात वर्ष पूर्व भारतेंदु नाट्य अकादमी से नाटक निर्देशन में प्रशिक्षण प्राप्त किया और रंगमंच को चुनौती के रूप में स्वीकार किया.

24 वर्षीय इस युवा कलाकार द्वारा निर्देशित पहला नाटक 'अलीबाबा' था.

गोपाल ने दो दूरदर्शन वृत्तचित्रों में मुख्य भूमिका भी निभाई है, उस ने रेडियो के कई नाटकों में भाग लिया है. फिल्म निर्देशक भीम सेन के साथ मुख्य सहायक निर्देशक रहा है तथा 'अब लौट आओ' फिल्म में एक घूसखोर अधिकारी की एक छोटी सी भूमिका भी उस ने की है.

गोपाल मिश्र: प्रादेशिक स्तर पर फिल्म निर्माण को प्रोत्साहन देने की चाह.

गोपाल मिश्र आजकल छोटी फिल्में बनाने और प्रादेशिक स्तर पर फिल्म निर्माण को प्रोत्साहन दिए जाने के लिए प्रयत्नशील है. —राकेशचंद्र मिश्र, वि.वि.ग.

इस वर्ष इलाहाबाद विश्वविद्यालय की एम.ए. (गणित) परीक्षा में सत्यभानसिंह ने सर्वाधिक अंक (92 प्रतिशत) प्राप्त कर कला संकाय का स्वर्ण पदक प्राप्त किया.

सत्यभान प्रारंभ से ही पढ़ने में काफी तेज है. वह हमेशा प्रथम श्रेणी में पास होता रहा है.

सत्यभान सिर्फ किताबी कीड़ा नहीं है खेलकूद व वादविवाद प्रतियोगिताओं में भी उस की गहरी रुचि है. अपने छात्रावास की

इलाहाबाद विश्वविद्यालय के मेधावी छात्र सत्यभान स्वर्ण पदक प्राप्त करते हुए.

युवा गतिविधियां

टेबिल टेनिस और शतरंज टीमों के कप्तान के रूप में उस ने अपने श्रेष्ठ खेल और नेतृत्व के गुणों का प्रदर्शन किया है. उस ने वादविवाद प्रतियोगिताओं व सामान्य ज्ञान प्रतियोगिता में भाग ले कर बहुत से प्रमाण पत्र प्राप्त किए हैं.

सत्यभान की सफलता का रहस्य उस के द्वारा 10 से 12 घंटे नियमित अध्ययन करना है. उस का लक्ष्य भारतीय प्रशासनिक सेवा में जाना है.

—रामेंद्र कुशवाहा, वि.वि.प्र.

हाल ही में इंदौर में संपन्न मध्य प्रदेश कला प्रदर्शनी में सर्वप्रथम पुरस्कार शहर के फाइन आर्ट कालिज के छात्र हरचंदसिंह भट्टी ने जीता. देहरादून में जन्मे हरचंदसिंह के संयोजनों में गहन संप्रेषणीयता है, जो उस की गहन आत्मानुभूति का सक्षम प्रमाण है.

23 वर्षीय इस प्रतिभाशाली कलाकार ने शंकर अंतरराष्ट्रीय कला प्रदर्शनी में श्रेष्ठ पुरस्कार सहित अनेक प्रतियोगिताओं में

हरचंदसिंह भट्टी (बाएं) व उन की पुरस्कृत कृति (नीचे).

सागर सरहदी द्वारा लिखित नाटक 'भूखे भजन न होए गोपाला' के दो दृश्य (ऊपर व बाएं).
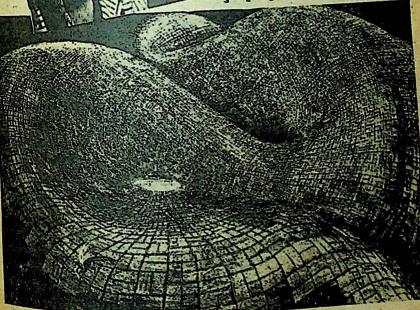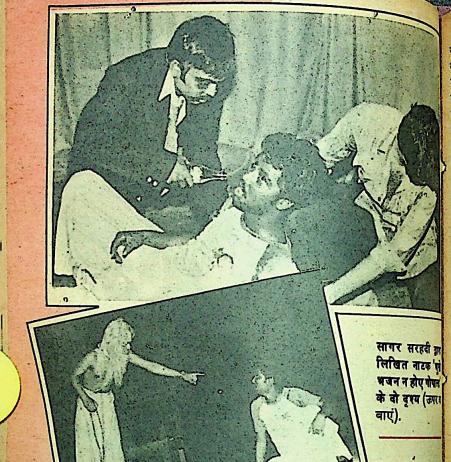
पुरस्कार प्राप्त किए हैं. गाजियाबाद के नेहरू यूथ सेंटर और चिल्ड्रन वर्ल्ड, दिल्ली में भी उस की कला कृतियां संग्रहीत हैं. इस प्रदर्शनी के निर्णायक प्रख्यात कला समीक्षक रिचर्ड बार्थोलोम्यू थे.

—आशुतोष वाजपेयी, चि.वि.प्र.

रंगमंच

ज्ञान मंच कलकत्ता द्वारा स्थानीय लायंस क्लब के सहयोग से सागर सरहदी के नाटक 'भूखे भजन न होए गोपाला' का मंचन किया गया.

देश के युवाओं की आर्थिक विपन्नता द्वारा उपजी दयनीय मनोदशा इस नाटक में उभारी गई है कि आज युवा वर्ग केवल पेट की चिंता से जुड़ गया है, उस से आगे और कुछ भी नहीं सोच पाता.

नाटक का दूसरा प्रमुख पहलू यह उजागर करता है कि किस तरह तथाकथित 'महर्षि' एवं 'स्वामी' भोलीभाली जनता को मूर्ख बना कर अपना उल्लू सीधा करते हैं.

नगर के युवा नाट्यकर्मी प्रका

जायसवाल की इस प्रस्तुति को लोगों ने सराहा. वह अवधेश, खुरशीद, इकराम तथा मनोज बन्ना से बहुत सधा हुआ अभिनय करवा पाने में सफल रहे. पृष्ठभूमि से इकबाल की नज्म "सारे जहां से अच्छा..." तथा स्वामी की वेशभूषा में 'घड़ी' का उपयोग नाटक में निहित व्यंग्य को और कटीला बना गया.

—महमिया अजय, वि.वि.प्र.

पिछले दिनों महू नगर (मध्य प्रदेश) में लायंस क्लब की चार्टर नाईट में भारतीय संस्कृति पर आधारित नाटक 'काली चींटी' का मंचन हुआ.

परिवार के बुजुर्ग की भूमिका को नाटक के लेखक योगेश यादव ने भली प्रकार निभाया. बेटी की भूमिका को मीना सोलंकी ने गंभीरता से पेश किया. पागल भाई का कुशल अभिनय राजेश बंसल ने किया. शिक्षित भाई के अभिनय में राबर्ट भारती सामान्य रहे. मंच सज्जा सामान्य थी. इस नाटक का निर्देशन श्यामलाल मेहरा ने किया था.

—दिनेश सोलंकी, वि.वि.प्र.

झूमरीतलैया में जैसीज द्वारा आयोजित विचार प्रतियोगिता में अपने विचार व्यक्त करते एक प्रतियोगी.

महू में मंचित नाटक 'काली चींटी' का एक दृश्य.

भोपाल में संपन्न हुई 13वीं विश्वविद्यालयी खेलकूद प्रतियोगिता में पुरस्कार प्राप्त करते हुए छात्राएं.

'इजीफेस्ट-83' के अंतर्गत प्रस्तुत सोवियत नृत्य बैले का एक भावपूर्ण दृश्य.
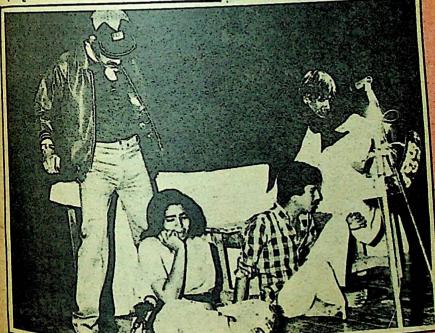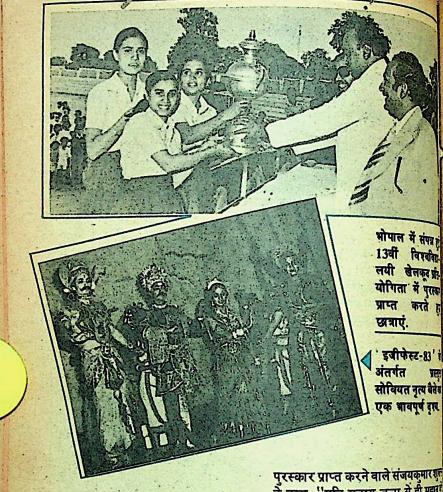
प्रतियोगिताएं

पिछले दिनों झूमरीतलैया (बिहार) जेसीज की युवा शाखा ने स्थानीय सी.डी. बालिका उच्च विद्यालय में अंतरविद्यालयी विचार प्रतियोगिता तथा मेधावी छात्रों के बीच पुरस्कार वितरण का संयुक्त कार्यक्रम किया.

विचार प्रतियोगिता का विषय था—'मनुष्य जन्म से नहीं, कर्म से महान होता है.'

इस प्रतियोगिता में सर्वश्रेष्ठ वक्ता का पुरस्कार प्राप्त करने वाले संजयकुमार शुक्ल ने कहा, "यदि मनुष्य जन्म से ही महान हो जाए तो फिर उच्च कुल में जन्म लेने वाले सभी लोग विद्वान हो जाएं."

इसी कार्यक्रम में पांच विभिन्न विद्यालयों के ऐसे छात्रछात्राओं को 'मेधावी छात्र' का पुरस्कार दिया गया, जिन्होंने गत वर्ष की वार्षिक परीक्षा में अपनीअपनी कक्षा में प्रथम स्थान प्राप्त किया था.

—राजेश छाबड़ा, वि.प्र.

भोपाल विश्वविद्यालय के तत्वावधान में 13 वीं विश्वविद्यालयी खेलकूद प्रतियोगिता का आयोजन तात्या टोपे स्टेडियम में किया गया.

इस में सेफिया महाविद्यालय ने 185 अंक प्राप्त कर के विश्वविद्यालय चैंपियनशिप जीती. एम.ए.सी.डी. महाविद्यालय ने 154 अंक प्राप्त कर के उप चैंपियनशिप जीती. महिला एथलीट चैंपियनशिप महारानी लक्ष्मीबाई महाविद्यालय तथा टी.टी. नगर कन्या महाविद्यालय ने संयुक्त रूप से जीती.

स्पर्धा की व्यक्तिगत चैंपियनशिप विश्वविद्यालय अध्यापन विभाग के ओ.पी. अग्रवाल को मिली. महिला व्यक्तिगत चैंपियनशिप बी.एस.भोपाल की मार्गरिट जोसेफ ने प्राप्त की.

सर्वश्रेष्ठ मार्चपास्ट के लिए शासकीय कन्या महाविद्यालय टी.टी. नगर भोपाल को पुरस्कृत किया गया. सेफिया महाविद्यालय के दिलीप शर्मा ने आल राउंडर एथलीट का गौरव प्राप्त किया.

—माया माहेश्वरी, वि.वि.प्र.

सांस्कृतिक कार्यक्रम

दिल्ली विश्वविद्यालय के 'दिल्ली कालेज आफ इंजीनियरिंग' में नवां अखिल भारतीय सांस्कृतिक समारोह 'इंजीफेस्ट—83' मनाया गया.

इस चार दिवसीय सांस्कृतिक समारोह में देश के विभिन्न विश्वविद्यालयों के प्रतियोगियों ने भाग लिया.

'इंजीफेस्ट—83' का मुख्य आकर्षण दिल्ली कालेज आफ इंजीनियरिंग के छात्रछात्राओं द्वारा रूसी लोक नृत्य पर आधारित नाटक था, जो विदेशी लोक नृत्य के भारतीय परिवेश में सम्मिश्रण का अद्भुत उदाहरण था.

'भारतीय नृत्य' के अंतर्गत मिरांडा हाउस कालेज की छात्रा हेमा माया द्वारा प्रस्तुत 'भरतनाट्यम' काफी सराहा गया.

कव्वालियां, संगीत, पेंटिंग, वादविवाद प्रतियोगिता, एकांकी, कार्टून फिल्म आदि समारोह के अन्य मुख्य कार्यक्रम थे.

—अशोक बजाज, वि.वि.प्र.

राष्ट्रीय कैडिट कोर की ओर से महारानी लक्ष्मीबाई कन्या महाविद्यालय, भोपाल में एक शिविर का आयोजन किया, गया. शिविर में अनेक शिक्षाप्रद, सामाजिक कार्यों के अतिरिक्त 13 छात्राओं द्वारा रक्तदान भी किया गया.—माया, वि.वि.प्र.●

दिल्ली प्रेस विश्वविद्यालय प्रतिनिधि

पिछले वर्षों की तरह इस बार भी दिल्ली प्रेस की ओर से अपनी पत्रिकाओं के लिए वर्ष 1983-84 के लिए विश्वविद्यालय प्रतिनिधि नियुक्त किए जा रहे हैं, जो अपने कालिज/विश्वविद्यालय एवं नगर की सांस्कृतिक, राजनीतिक व अन्य गतिविधियों के समाचार, भेंटवार्ताएं आदि ले कर हमें भेजेंगे.

लेखन एवं पत्रकारिता में रुचि रखने वाले छात्रछात्राओं के लिए अपनी प्रतिभा का विकास करने का यह एक अच्छा अवसर है, इच्छुक प्रार्थी अपने पूर्ण विवरण सहित निम्न पते पर आवेदन करें:

अध्यक्ष,
छात्र विभाग, दिल्ली प्रेस,
ई-3, रानी झांसी मार्ग, नई दिल्ली-110055.

भूख

(पृष्ठ से 123 आगे)

"आप क्यों वेकार में मुंशी प्रेमचंद को अपने साथ जोड़ते हैं?"

"क्यों न जोड़ें?"

"हम कहते हैं लेखकजी कि आप एक अच्छे लेखक भले ही न वनें, एक नेक आदमी तो वन सकते हैं."

"वकवास बंद कर."

"साहित्य से तो लोग अपने लिए आलोक मांगते हैं और आप हैं कि अंधेरे को माध रहे हैं."

"तुम्हारी भाषा छायावादी है."

"और आप की?"

"हमारी तो क्रांतिकारी भाषा है."

इसी संवाद के साथ सभा विमर्जित होने लगती है. लेखकजी मेरे कंधों पर हाथ रख कर मुझे एक तरफ ले जाते हैं. रोनेरोने को हो आते हैं. भरे गले से कहते हैं, "वंधु, तुम अच्छे लड़के हो. ठीक रास्ते पर हो. हमारे तो कदम ही गलत राह पर पड़ गए. महत्त्वाकांक्षा के कारण व्यर्थ हीं लोगों को दुश्मन वना लिया. अव भोग रहे हैं. अपने लोगों से मेरा परिचय करा दो. और दुर्जनों से तो आजिज आ गया हूं. अव सज्जनों के करीब जाना चाहता हूं."

"लेखकजी अभी तो आप..."

"मारो गोली लेखकजी को, क्या रखा है यार पढ़नेलिखने में. अरे चंदे से तो कितावें छप सकती हैं. अव देखो, देर न करो, मुझे अपने साथियों से मिलवा दो. तो तुम्हीं मेरा काम बना सकते हो."

"तो काम बनाने का आप का यह तरीका है."

"है न, मैं ने आज तक जो भी किया है इसी तरह चौंका कर किया है. कोई ध्यान नहीं देता. प्रतिभा क्या चीज है, चीज तो है तिकड़म."

मैं उन्हें आश्वासन देता हूं, सहयोग का आश्वासन. तिकड़म में साझेदारी का आश्वासन. वननेवनाने में हिस्सेदारी का आश्वासन.

लेखकजी खुश हो जाते हैं. पानवाला एक पान और वना कर डरतेडरते लेखकजी के सामने आ खड़ा हुआ है. वह जानता है, लेखकजी के मुंह में कुछ होना जरूरी है, अन्यथा लेखकजी किसी तरफ और कहीं भी मुंह मार सकते हैं, उन्हें भूख जो बेहद...

शादियों के चक्कर में जेल

अमरीका में 53 वर्षीय एक व्यक्ति ने 105 बार विवाह कर के अपने किस्म का एक नया कीर्तिमान तो स्थापित कर दिया, लेकिन उस को वहां की एक अदालत ने इतने विवाह करने के आरोप में लंबी कैद की सजा सुनाई है.

जियोवन्नी नामक इतावली मूल का यह व्यक्ति अनेक महिलाओं को धोखा दे कर उन से विवाह कर चुका है.

अदालत में मुकदमे की काररवाई के दौरान जियोवन्नी के वकील ने यह दलील दी कि उन का मुवक्किल जीवन तथा सौंदर्य से प्रेम करता है, जिस का प्रमाण उस के ये अनेक विवाह हैं. ध्यान देने योग्य बात यह है कि उस ने किसी भी पत्नी से कभी कटु व्यवहार नहीं किया.

जियोवन्नी की अंगूठी पर, जिसे वह सदा पहने रहता है, खुदा है– 'मैं सदा अकेला...

लेख • विनोद गुप्ता

पुरुष भी अपना व्यक्तित्व संवारें

उस दिन हम खरीदारी करने गए हुए थे. एक सौंदर्य प्रसाधन की दुकान पर मेरी पत्नी की कोई पूर्व परिचित सहेली मिल गई. पत्नी ने मुझ से अपनी सहेली का परिचय कराया, "यह है शीला, मेरी वचपन की सहेली, काफी स्मार्ट है." वाकई शीला का व्यक्तित्व काफी प्रभावशाली था. लगता था वह वहुत ढंग से रहती है और फिर पत्नी मेरी तरफ मुखातिव हो कर वोली, "और आप हैं मेरे पति—विनोद."

आकर्षक तथा सभ्य दिखना पुरुषों के लिए भी जरूरी है, छोटीछोटी बातों पर ध्यान दे कर पुरुष अपना व्यक्तित्व निखार सकते हैं.
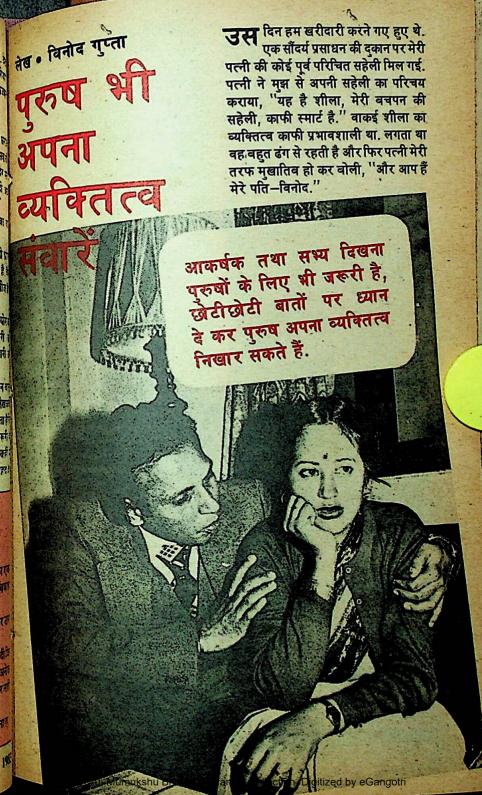
परिचय के पश्चात औपचारिकतावश नमस्तेनमस्ते हुई. इतनी ही देर में एक व्यक्ति ने आवाज दी, "शीला, चलो न, काफी समय हो रहा है."

हम ने देखा कि उस व्यक्ति की दाढ़ी बढ़ी हुई थी. चप्पल टूटी हुई थी, कपड़े मैलेकुचैले थे. ऐसा लगता था कि शायद बिस्तर से उठ कर सीधा चला आ रहा हो. उसे देख कर मेरी पत्नी ने शीला से कहा, "शायद आप का कोई परिचित आप के ... रहा है."

इस पर शीला झेंपती हुई बोली, "... वह तो मेरे पति हैं" और इतना कहती ... उधर चली गई, जहां वह व्यक्ति ... खड़ा था.

उन पतिपत्नी को देख कर ... दिमाग में कई विचार एक साथ उठे. ... व्यक्ति इन दोनों को देख कर पतिपत्नी ... कह सकता था, क्योंकि शीला के ... का पति नौकर लग रहा था. यदि वह ...

व्यक्तित्व को आकर्षक बनाने के लिए चेहरे को साफसुथरा रखना चाहिए (ऊपर) व सूट पर टाई लगाना व्यक्तित्व में चारचांद लगा देता है. (दाएं)
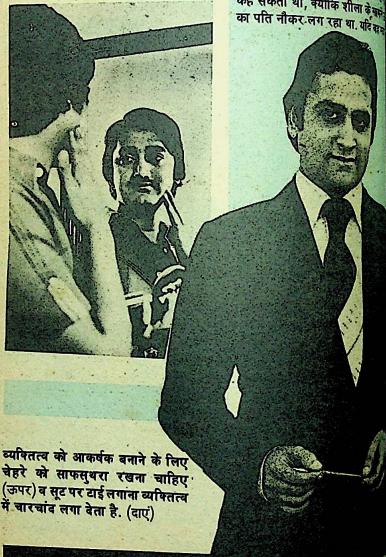
पर न होता तो शायद हम शीला से यही कहते कि "तुम्हारा नौकर तुम्हें बुला रहा है."

अधिकतर पुरुष अपनी पत्नियों को बड़ा ठीकठाक रखना चाहते हैं, लेकिन अपने ऊपर जरा भी ध्यान नहीं देते. फलस्वरूप उन्हें कभीकभी उपहास का पात्र बनना पड़ता है, जिस से न केवल उन स्वयं की बेइज्जती होती है, उन की पत्नी को भी शर्मिंदगी महसूस होती है. अत : जितना ध्यान आप पत्नी के बनावश्रृंगार पर देते हैं, क्या उतना ही ध्यान आप को अपने संवारने की ओर नहीं देना चाहिए?

जिस प्रकार प्रत्येक पति चाहता है कि उस की पत्नी दूसरों की पत्नियों से अधिक सुंदर व आकर्षक लगे, उसी प्रकार प्रत्येक पत्नी भी यह चाहती है कि उस का पति दूसरी स्त्रियों के पतियों के मुकाबले अधिक आकर्षक लगे. यह इच्छा विशेष रूप से तब प्रबल होती है, जब आप अपनी पत्नी सहित अपनी ससुराल, ससुराल पक्ष के किसी रिश्तेदार के यहां या अपनी पत्नी की किसी सहेली के यहां जाते हैं. इस समय आप की पत्नी चाहेगी कि आप का व्यक्तित्व आकर्षक और प्रभावशाली हो, क्योंकि आप के आकर्षक व्यक्तित्व से आप की पत्नी का भी मान बढ़ता है और फिर आप की पत्नी सुंदर है तो आप उस के साथ जाने में संकोच नहीं करेंगे, लेकिन यदि आप अपने व्यक्तित्व पर ध्यान दिए बिना ही उस के साथ जाएंगे तो देखने वाले भी आप को देख कर उलजलूल फिकरे कसेंगे. अत: यह बहुत जरूरी है कि आप अपने व्यक्तित्व को आकर्षक बनाने का प्रयत्न करें.

शरीर का आकर्षण

जो रंगरूप आप का है, उस में आमूलपरिवर्तन तो नहीं किया जा सकता, लेकिन कुछ प्रयत्नों से आप अपने शरीर को आकर्षक अवश्य बना सकते हैं. अच्छा कद, फूला हुआ सीना, भरा बदन और ओजस्वी चेहरा—पुरुष के आकर्षक व्यक्तित्व के प्रधान लक्षण हैं.

बालों को काला करने तथा साफ धुले व इस्तिरी किए हुए कपड़े पहन कर भी व्यक्तित्व निखारा जा सकता है.

अपने चेहरे को सुंदर और आकर्षक बनाए रखना चाहिए. यदि चेहरे पर मुंहासे अधिक हों तो कुशल चिकित्सक से परामर्श लेना चाहिए. आप की दाढ़ी सही ढंग से बनी होनी चाहिए. बढ़ी हुई दाढ़ी आप के व्यक्तित्व के आकर्षण में बाधक हो सकती है. यदि आप मूंछे रखना चाहते हैं तो उस के आकार का चुनाव अपने चेहरे के अनुरूप करें तथा उन्हें आवश्यकतानुसार कतरते रहें. बाल भी समयसमय पर कटाते रहना चाहिए. अधिक बढ़े हुए बाल अच्छे नहीं लगते हैं. कई बार बाल या दाढ़ी बढ़ी हुई होने की वजह से

कहीं आनेजाने का कार्यक्रम स्थगित करना पड़ता है. इस से कोफ्त तो होती ही है, पत्नी का मूड भी खराब हो सकता है, जो मनमुटाव का कारण बन सकता है.

पुरुषों को भी सौंदर्य प्रसाधन सामग्रियों का थोड़ाबहुत इस्तेमाल करना चाहिए. जाड़े के दिनों मे त्वचा खुश्क हो जाती है, अतः उन दिनों कोल्ड क्रीम लगाई जा सकती है. गरमियों में पसीना अधिक आता है, अतः सीमित मात्रा में टेलकम पाउडर का भी प्रयोग किया जा सकता है. मंजन या टूथपेस्ट भी दिन में दो बार करना जरूरी है. यदि असमय ही बाल सफेद हो गए हों, तो उन्हें कृत्रिम रूप से काला किया जा सकता है. यदि अल्पायु में ही सिर के बाल उड़ गए हों तो कृत्रिम बालों की विग का इस्तेमाल कर के इस कमी को पूरा किया जा सकता है.

शारीरिक गठन

महिलाओं की भांति पुरुषों के आकर्षक व्यक्तित्व के लिए उन के शारीरिक गठन का बहुत महत्त्व है. सुडौल और गठा हुआ शरीर आकर्षक होता है. अधिक मोटे और अधिक दुबले पुरुष भद्दे लगते हैं. अतः विभिन्न व्यायामों के जरिए शरीर को आवश्यकता के अनुसार ढाला जा सकता है.

इसी प्रकार आवश्यकता से अधिक लंबे और एकदम ठिगने लोग भी अच्छे नहीं लगते, लेकिन लंबे पुरुषों का छोटा होना संभव नहीं है, हां, विभिन्न व्यायामों से ठिगने लोगों का कद कुछ बढ़ जाता है. इसी प्रकार पुरुषों की जरूरत से ज्यादा निकली तोंद भद्दी लगती है. अतः इसे भी नियंत्रित करने की आवश्यकता है. इसी प्रकार व्यायामों से सीने को आकर्षक व सुडौल बनाया जा सकता है. चौड़ा सीना पुरुष के व्यक्तित्व में चार चांद लगाता है.

पुरुषों का व्यक्तित्व भी उन की वेशभूषा पर निर्भर करता है. वेशभूषा अपने व्यापार व व्यवसाय के अनुरूप होनी चाहिए. सौम्य और सुंदर वेशभूषा आप के व्यक्तित्व में निखार ला देती है. आप के वस्त्र साफ धुले हुए और प्रेस किए हुए होने चाहिए तथा उन की सिलाई भी आप के शारीरिक माप के अनुरूप होनी चाहिए. ज्यादा ढीले या कसे तंग कपड़े अच्छे नहीं लगते.

आप की वेशभूषा मौसम के अनु... होनी चाहिए. सूट पर टाई काफी सुंदर ल... है. यदि आप पैंट और कमीज पहनते हैं कमीज को ऊपर रखने की बजाए पैंट के अं... करना चाहिए. इस से आप की न केवल ... कम लगेगी वरन आप स्वयं में स्फूर्ति का अनुभव करेंगे.

यदि आप का कद जरूरत से ज्या... लंबा है तो आप को आड़ी डिजाइन के या ... डिजाइन के कपड़े पहनने चाहिए, ताकि ... देखने पर आप का कद कम लगे. यदि ... जरूरत से ज्यादा ठिगने हैं तो आप को ... डिजाइन या छोटी डिजाइन के वस्त्र ... चाहिए.

अपने जूते में ऊंची ऐड़ी या छोटी ... लगवा कर भी क्रमशः ठिगने व लंबे ... अपने व्यक्तित्व में कुछ परिवर्तन ला स...

कमीज के बटन बंद रखना चा... कुछ लोग ऊपर के दोतीन बटन खुले रख... जो उचित नहीं है. व्यक्तित्व को आ... बनाने के लिए चप्पल की बजाए जूते ... चाहिए, लेकिन वे पालिश किए हुए हों ... उन्हें बिना मोजे के नहीं पहनना चाहि...

आप को अपने साथ रूमाल और ... रखना चाहिए. आप की चाल भी ... व्यक्तित्व को प्रभावित करती है. कमर ... कर चलने की बजाए सीना तान कर ... ज्यादा अच्छा लगता है.

पुरुषों का व्यक्तित्व उन ... आचारविचार से ज्यादा प्रकट होता है ... का व्यवहार सौहार्दपूर्ण और मधुर ... चाहिए. मृदुभाषी पुरुष शीघ्र ही दूसरों ... अपनी तरफ आकर्षित कर लेता है. ... बोलते समय संयम से काम लेना चाहिए ... उच्चारण करें, धीरे बोलें और दूसरों ... बोलने का मौका दें. यदि आप को ... अनेक भाषाओं का ज्ञान है तो आप ... जरूरत पड़ने पर प्रयोग करें, इस से ... व्यक्तित्व और आकर्षक हो सकता है.

रंग बिरंगे
मनमोहक
न्यू डायमंड कामिक्स
मोटू पतलू
पागलखाने में
धरती मांग
रही बलिदान
अंकुर और

"कर्कश और दानेदार मंजन,
आपके मसूढ़ों और दांतों को
नुकसान पहुंचा सकते हैं..."

कोलगेट टूथ पाउडर से अपने दांतों और मसूढ़ों की सुरक्षा कीजिये – और सांस की दुर्गन्ध भी रोकिए!
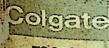
कोलगेट टूथ पाउडर अति सूक्ष्म और सफ़ेद है। यह कोमलता के साथ आपके मसूढ़ों की मालिश करता है, जब कि इसका पालिश करनेवाला तत्व आपके दांतों पर से मैल की परत हटाता है, इन्हें ज्यादा साफ़ और ज्यादा सफ़ेद बनाता है। कोलगेट भरपूर झागदार होने के कारण आपके दांतों के बीच की जगहों में घुसकर दुर्गंध और दंत क्षय पैदा करनेवाले कीटाणुओं को नष्ट कर देता है और सांस की दुर्गंध खत्म हो जाती है।

कोलगेट टूथ पाउडर से अपने परिवार को आधुनिक दंत संरक्षण दीजिये। उन्हें इसका पेपरमिंट का ठंडा स्वाद बेहद पसंद आयेगा।

TP.G.31

रंजीत ने कल खेल का पासा ही पलट दिया -और घर लौटा तो सूरत देखने लायक थी!
"वही भाग्यशाली कमीज़ –फिर से इतनी सफ़ेद !"
हाई पावर सर्फ़ की सबसे सफ़ेद धुलाई ...जो देखने में आई !
High power Surf washes whitest ...and it shows!
यह बेहतरीन – कपड़े सफ़ेद हों या रंगीन
LINTAS-SU 253-1810 HI
हिन्दुस्तान लीवर का एक उत्कृष्ट उत्पाद

मुक्ता

सजग, सफल, सरस जीवन की पत्रिका

संपादक व प्रकाशक
विश्वनाथ

दिसंबर (प्रथम) 1982
392

लेख

कथा साहित्य

कविताएं

स्तंभ

संपादन व प्रकाशन कार्यालय : ई-3, झंडेवाला एस्टेट, रानी झांसी मार्ग, नई दिल्ली-55. दिल्ली प्रेस पत्र प्रकाशन प्रा.लि. के लिए विश्वनाथ द्वारा दिल्ली प्रेस, नई दिल्ली व दिल्ली प्रेस म.प.प्रा.लि. गाजियाबाद में मुद्रित.

मूल्य : एक प्रति 3.00 रुपए, एक वर्ष : 72.00 रुपए, विदेश में (समुद्री डाक से) एक वर्ष : 150.00 अमरीका में (हवाई डाक से) एक वर्ष : 400.00 रुपए, यूरोप में (हवाई डाक से) एक वर्ष : 325.00 रुपए. मुख्य वितरक व वार्षिक शुल्क भेजने का स्थान : दिल्ली प्रकाशन वितरण प्रा.लि., झंडेवाला एस्टेट, रानी झांसी मार्ग, नई दिल्ली-110055. व्यक्तिगत विज्ञापन विभाग : एम-12, कनाट सरकस, नई दिल्ली-110001. बंबई कार्यालय : 79ए, मित्तल चैंबर्स, नारीमन पाइंट, बंबई-400021. मद्रास कार्यालय : अपार्टमेंट नंबर 342, छठी मंजिल, 31 2 ए पैंथन रोड, खलील शिराजी एस्टेट, मद्रास-600008.

रेलों के संबंध में आप के विचार (मुक्त विचार/नवंबर/प्रथम) सोलह आने सही हैं. देश और जनता के प्रति अपनी जिम्मेदारी निभाना पुलिस का परम कर्तव्य है. अभी हाल ही में, दुर्गापूजा के कुछ दिन पहले, मैं तिनसुकिया मेल से जा रहा था. यह रेल गाड़ी जमालपुर से किऊल के बीच कहीं नहीं रुकती है, लेकिन धरहरा के पास दो लड़के डब्बे का ढेर सारा तार काट कर जंजीर खींच कर भाग गए. रेल रुक गई.

उसी डब्बे में एक सिपाही भी था. आरक्षित डब्बे के रेल सहायक ने उस सिपाही से उन लड़कों को पकड़ने को कहा. लेकिन वह गाड़ी से उतरा ही नहीं. तार निकाल लिए जाने के कारण डब्बे के यात्रियों को मुगल सराय के बाद ही बिजली प्राप्त हुई. सिपाही ने अपना कर्तव्य नहीं निभाया. आखिर डब्बे में उसे साथ भेजने का और औचित्य क्या है?

—प्रकाशनारायण भट्टाचार्य

*

रेलों के संबंध में आप की टिप्पणी पढ़ी. एक बार मैं फुलेरा स्टेशन पर गाड़ी के दरवाजे के पास खड़ा हुआ बाहर देख रहा था कि इतने में एक जेबकतरे ने उतरने वाले यात्री की ऊपर की जेब से कुछ रुपए निकाल लिए. मुझ पर नजर पड़ते ही उस ने मुझे घूर कर देखा और पास ही खड़े पुलिस कर्मचारी से बातें करने लगा. मैं कुछ करने की सोच ही रहा था कि तभी गाड़ी चल पड़ी. उधर वह पुलिस कर्मचारी उसी डब्बे में चढ़ कर सामने बैठ गया और मुझे घूरने लगा. मानो कह रहा हो अगर ज्यादा चूंचपड़ की तो अपनी मंजिल के बजाए थाने पहुंच जाओगे.

—विक्रमसिंह सिसोदिया

*

रेल व रेल प्रशासन के संबंध में आप का कहना बिलकुल सही है कि पुलिस और अपराधी दोनों मिल कर यात्रियों को लूटते हैं. जब इस तरह की कोई घटना घटती है तो सरकार यह कहती है कि जल्द कोई कदम उठाया जाएगा. परंतु वास्तविकता कुछ और ही होती है.

पुलिस का काम शांति और व्यवस्था कायम करना है परंतु वर्तमान स्थिति को देखते हुए तो यही लगता है कि सिर्फ अपराधों को बढ़ावा देना पुलिस का काम रह गया है. रेलगाड़ियों में पुलिस की तैनाती करना न करना एक ही बात है. पुलिस यात्रियों को सुरक्षा प्रदान करने के बजाए अपराधियों की अधिक सहायक रहती है.

यात्रा के दौरान अगर कोई लुटेरा डब्बे के यात्रियों को लूट रहा है तो आसपास के अन्य यात्री अपराधी के प्रति रवैया सख्त नहीं अपनाते. डब्बे में मौजूद पुलिस वाले भी

'संपादक के नाम' के लिए मुक्ता की रचनाओं पर आप के विचार आमंत्रित हैं. साथ ही आप देश के राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक आदि विषयों पर भी अपने विचार इस स्तंभ के माध्यम से रख सकते हैं. प्रत्येक पत्र पर लेखक का पूरा नाम व पता होना चाहिए, चाहे वह प्रकाशन के लिए न हो. पत्र इस पते पर भेजिए :

संपादकीय विभाग,
मुक्ता,
ई-3, झंडेवाला एस्टेट,
रानी झांसी मार्ग,
नई दिल्ली-110055.

वक्त में मूक दर्शक बने रहते हैं. अगर कोई पुलिस से अपराधी को पकड़ने के लिए कहे तो वे जवाब देते हैं, ये हमारे क्षेत्र में नहीं आता. निश्चय ही अगर यही हाल रहा तो स्थिति बहुत ज्यादा बिगड़ जाएगी?

—गुरबीरसिंह चावला

*

रेलों पर आप के विचार सामयिक रहे. आजकल यात्रा करने में भारी कठिनाइयों का सामना करना पडा रहा है. गाड़ी के भीतर भी सुरक्षा की कोई व्यवस्था नहीं है. पुलिस अपना कर्तव्य नहीं निभाती. अपराध ... अपराधी की जानकारी होने के पश्चात ... पुलिस वाले चुप्पी साधे रहते हैं.

भारत के अधिकतर छोटे रेलवे स्टेशन निर्जन स्थानों पर स्थित हैं, जहां से आबादी काफी दूरी पर है. वहां संचार तथा बिजली की व्यवस्था नहीं होने से लूटमार करने वालों को और ज्यादा मौका मिलता है.

—गुरविंदरसिंह नारंग

*

'कम्यूनिस्ट तानाशाही चालू है' (मुक्त विचार/नवंबर/प्रथम) पढ़ कर लगा कि कम्यूनिस्ट शासन व्यवस्था पूर्णतः खोखली है. मैं राजनीतिशास्त्र का विद्यार्थी हूं. जब कभी भी मैं ने कम्यूनिस्ट शासन पद्धति के सिद्धांत का अध्ययन किया है, तब यही लगा कि इस शासन पद्धति से अच्छी और कोई पद्धति नहीं होगी. लेकिन विश्व में इस शासन प्रणाली के देशों की स्थिति देख कर साफ जाहिर है कि शायद इस से बदतर कोई शासन प्रणाली नहीं है.

पोलैंड में जो कुछ हुआ, वह आश्चर्यजनक नहीं है. कम्यूनिस्ट प्रारंभ से ले कर अब तक सिवा दमन और तानाशाही के कुछ भी नहीं दे सके. 'मजदूरो एक हो जाओ' का नारा लगा कर मजदूरों को गुलाम ही बनायाँ जाता है.

काफी अरसे से भारत में भी समाजवादी विचारों का व्यापक प्रचार किया जा रहा है. पिछले कुछ वर्षों में तो इस में काफी तेजी आई है. इस का एक कारण निःशुल्क या कम मूल्य पर प्राप्त सोवियत पुस्तकों का जहरीला प्रभाव है. हमें इन पुस्तकों को कम मूल्य में प्राप्त करने का मोह त्यागना चाहिए.

—अशोक बजाज

*

'कशमीरी सिरदर्द बरकरार' (मुक्त विचार/अक्तूबर/द्वितीय) के संदर्भ में यह कहना अनुचित न होगा कि जहां शेख अब्दुल्ला भारत के लिए सिरदर्द थे, (वरना वह नजरबंद क्यों रहते) वहां उन के ...

मुक्ता
स्तंभों के बारे में सूचना

मुक्ता में प्रकाशित होने वाले विविध स्तंभों के लिए चुटकुले, अपने रोचक अनुभव, संस्मरण व अन्य सामग्री भेजने के लिए अलगअलग लिफाफा प्रयोग करने की आवश्यकता नहीं है. एक ही लिफाफे में एक से अधिक स्तंभों में प्रकाशन योग्य सामग्री भेजी जा सकती है.

सामग्री भेजते समय स्पष्ट अथवा सुपाठ्य शब्दों में अपना नाम, पता और भेजने की तारीख अवश्य लिखें. साथ ही यह भी लिख कर भेजें कि रचना मौलिक एवं अप्रकाशित है. भेजी हुई सामग्री किसी भी हालत में लौटाई नहीं जाएगी. अतः बजाए टिकट लगा व पता लिखा लिफाफा भेजने के उस की एक प्रति अपने पास सुरक्षित रख लें. जहां तक संभव हो, सामग्री टाइप करवा कर अथवा साफ शब्दों में कागज के एक ओर हाशिया छोड़ कर लिख कर भेजें. हर तरह की सामग्री कम से कम शब्दों में और रोचकतापूर्ण होनी चाहिए.

सभी स्तंभों के लिए सामग्री एक ही लिफाफे में रख कर इस पते पर भेजें: संपादन विभाग, मुक्ता, ई-3, झंडेवाला एस्टेट, रानी झांसी मार्ग, नई दिल्ली-110055.

डाक्टर फारूक अब्दुल्ला भी उन से कम नहीं हैं. यदि फारूक अब्दुल्ला चाहते तो 'पुनर्वास विधेयक' को समाप्त कर तारीफ के पात्र बन सकते थे. परंतु कुरसी की चाह व क्षुद्र राजनीतिक स्वार्थों के कारण वह ऐसा करने में असमर्थ रहे.

—आशुतोष पाराशर

*

मशीनी मानव से संबंधित लेख (नवंबर/प्रथम) अच्छा लगा. आज विज्ञान काफी तरक्की पर है. किंतु मशीनी मानव का विकास ऐसे कार्यों के लिए ही करना चाहिए जो मानव के लिए बहुत मुशकिल हों. ऐसे कामों के लिए मशीनों का उपयोग नहीं करना चाहिए, जिस से बेरोजगारी बढ़े. विकसित देशों में तो इस का कोई ज्यादा प्रभाव नहीं पड़ेगा, परंतु विकासशील व विकासोन्मुख देशों के लिए ऐसा विज्ञान जन विरोधी बन कर रह जाएगा. हमें देखना होगा कि आने वाली पीढ़ी विज्ञान को अभिशाप की संज्ञा न दे.

—कृष्ण लाल

*

लेख 'भारत और भूटान' (नवंबर/प्रथम) पढ़ कर मुझे आश्चर्य हुआ कि भारत जैसे लोकतांत्रिक देश में भी उपनिवेशवादी एवं साम्राज्यवादी विचार रखने वाले लोग हैं. लेख में सब से हास्यास्पद बात तो यह है कि हर जगह भूटान के साथ उदाहरण के रूप में नेपाल का भी जिक्र किया गया है. एक जगह कहा गया है कि भूटान को पूर्ण रूप से नेपाल और बंगला देश की तरह मुक्त कर दिया जाए अथवा सिक्किम के समान भूटान को भी भारत के संघीय राज्य में सम्मिलित होने के लिए प्रेरित किया जाए.

शायद लेखक को यह मालूम नहीं है कि भारत की तरह ही नेपाल भी एक स्वतंत्र और प्रभुसत्ता संपन्न राष्ट्र है (असलियत तो यह है कि जब भारत अंगरेजों का गुलाम था, तब भी नेपाल स्वतंत्र था) इसी लिए उस के किसी अन्य देश से मुक्ति पाने का सवाल ही नहीं उठता. लेखक को यह भी जानकारी होनी चाहिए कि नेपाल एक गुटनिरपेक्ष राष्ट्र है और उस के लिए सभी पड़ोसी देश एक समान हैं. चाहे वह भारत हो या चीन, बंगला देश हो या पाकिस्तान. भारत को यह नहीं सोचना चाहिए कि सभी छोटे पड़ोसी देश उस के गुलाम हैं और उस की हर बात चुपचाप मानेंगे.

—प्रभाकर खड़का

*

'छूपछांव' स्तंभ (नवंबर/प्रथम) 'छात्र का करिश्मा' को सर्वोत्तम कतरन ठहराना बिलकुल ही गलत एवं बेबुनियाद है. हकीकत यह है कि पिछले दो वर्षों में मेरठ विश्व विद्यालय में जितनी शांति, अनुशासन व ईमानदारी से परीक्षाएं आयोजित की जा रही हैं, उतनी शायद देश के किसी भी अन्य विश्वविद्यालय में आयोजित नहीं हो रहीं. आज स्थिति यह है कि नकल कर के उत्तीर्ण होने वाले छात्रों ने मेरठ विश्वविद्यालय से परीक्षा देना ही छोड़ दिया है.

—सुभाषचंद अग्रवाल

*

वन्य जीवों से संबंधित लेख (अक्तूबर/द्वितीय) अच्छा लगा. जब उत्तर प्रदेश के मुख्य मंत्री विश्वनाथ प्रतापसिंह थे, तब डाकुओं ने शिकार खेलने गए उन के बड़े भाई की, जो इलाहाबाद उच्च न्यायालय में न्यायाधीश थे, जंगल में हत्या कर दी थी: हत्या क्यों हुई, यह अलग बात है, पर वह शिकार खेलने गए थे यह तो निश्चित है. क्या इन उच्च पदस्थ लोगों को वन्य पशुपक्षियों का शिकार करने की छूट है? पर जब इन्हीं के समक्ष कोई ऐसा अभियुक्त पेश किया जाएगा, जिस पर अवैध रूप से शिकार करने का आरोप लगा होगा तो ये उन्हें जरूर दंडित करेंगे. क्या यही वन्य प्राणियों की रक्षा है?

—धर्मेश यशलहा 'प्रिय'

*

लेख 'बाल मजदूर कितने मजबूर' (अक्तूबर/द्वितीय) में बाल श्रमिकों की समस्या का सटीक चित्रण किया गया है.

समयसमय पर इस संबंध में कई कानून

राष्ट्र की सुखसमृद्धि के लिए तालाबंदियां

निस्संदेह, हर कर्मचारी का यह मूलभूत अधिकार है कि यदि वह कहीं काम करना पसंद नहीं करता तो न करे. इसी प्रकार किसी भी कारखाने के मालिक का यह अधिकार है कि वह अपना कारखाना चालू रखना नहीं चाहता तो न रखे, किंतु आधुनिक समाज का मिश्रित और जटिल ढांचा इस प्रकार के मनमाने व्यवहार की अनुमति नहीं देता.

अतीत काल में किसी एक कारखाने में मुट्ठी भर लोग काम किया करते थे. तब उस कारखाने के चालू रहने अथवा बंद हो जाने से उस कारखाने के कर्मचारियों अथवा मालिक के अतिरिक्त अन्य किसी पर प्रभाव नहीं पड़ता था. आज उत्पादन का हर भाग एक व्यापक जालसूत्र में एकदूसरे से इतना अधिक संबद्ध है कि चाहे किसी कारखाने में कुछ सौ कर्मचारी ही काम करते हों, किंतु यदि वह कारखाना बंद हो जाता है तो उस से बहुत से अन्य प्रतिष्ठान और व्यापारगृह भी बंद हो जाते हैं. इस प्रकार न केवल हजारों कर्मचारी बेकार हो जाते हैं, अपितु बहुत से लोगों को उपभोग्य वस्तुओं से भी वंचित होना पड़ता है.

उदाहरण के लिए, यदि कोई कपड़ा मिल बंद हो जाए तो कपास ओटने और धुनने वाले कारखानों, मिल तक माल लाने ले जाने वाले लोगों, रंग आदि कच्चे माल की आपूर्ति करने वालों, छपाई और पैकिंग का काम करने वालों एवं बिजली तथा पानी के सप्लायरों के पास काम नहीं रहेगा. इस का बैंकों, डाकघरों तथा देश भर में कपड़ों के वितरकों तथा दुकानदारों पर भी बुरा प्रभाव पड़ेगा. कपड़े की कमी से बाजार में इस के मूल्य बढ़ जाएंगे और उस का सब से बुरा असर पड़ेगा खरीदार पर.

यही नहीं, सरकार को भी उत्पादन शुल्क, बिक्री कर और आय कर में हानि होगी. और यह कोई छोटीमोटी राशि नहीं होगी, बल्कि कुल लाभ के लगभग 80 से 90 प्रतिशत के बराबर होगी. सरकार इस हानि को या तो और अधिक टैक्स लगा कर पूरा कर सकती है अथवा किन्हीं सेवाओं में कमी कर के. श्रमिकों के वेतन में जो हानि होगी, उस से माल की मांग अथवा बिक्री में कमी हो जाएगी. कारखाने के मालिक को होने वाली क्षति से उद्योग को धन मिलने में रुकावट पड़ेगी.

रेलों, बंदरगाहों, जहाजों, डाकघरों, विद्युत तथा जल प्रदाय संस्थानों, हवाई कंपनियों, बस सेवाओं और तेलशोधक कारखानों आदि किसी भी सार्वजनिक उपयोग के क्षेत्र में हड़ताल होने से और भी अधिक हानि होती है, इस से राष्ट्र के जीवन में गतिरोध आ जाता है. श्रमिकों, श्रमदाताओं, उपभोक्ताओं, प्रशासन और किसकिस को नुकसान नहीं उठाना पड़ता?

भारत में आज श्रमिकों और श्रमदाताओं के आपसी झगड़ों को न्यायालय द्वारा निपटाने की एक सुगठित और निष्पक्ष व्यवस्था मौजूद है. फिर व्यर्थ में हड़तालों और तालाबंदियों की क्या आवश्यकता?

आखिर, श्रमिकों के झगड़े किस लिए होते हैं? अधिक लाभ तथा सुविधाएं प्राप्त करने के लिए ही तो. उचित (अन्य लोगों को मिलने वाले वेतनों की दृष्टि से) वेतनों और स्वास्थ्य बीमा, भविष्य निधि तथा सेवा पुरस्कार आदि आधारभूत सुरक्षाओं समेत आवश्यक सुविधा की फैक्टरी कानूनों में पहले से ही व्यवस्था है. लड़ाई तो और अधिक लाभ, और अधिक सुविधाएं, और वास्तव में और अधिक पैसा हासिल करने के लिए है.

और हड़तालों पर रोक लगाओ

अधिकतर हड़तालें मजदूर नेताओं के आपसी विरोध के कारण होती हैं. ये प्राय: बाहर के राजनीतिक व्यक्ति होते हैं और यह सिद्ध करने के प्रयत्न में रहते हैं कि किस का अधिक बड़ा साम्राज्य, अधिक बड़े समूह पर नियंत्रण है और कौन उन्हें अपने इशारे पर नचा सकता है. अपने इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए वे श्रमिकों एवं समाज को होने वाले भारी नुकसानों तथा कष्टों की भी परवा नहीं करते.

किसी भी आधुनिक समाज में आर्थिक विवादों को हल करने के लिए बलप्रयोग, हिंसा अथवा जोरजबरदस्ती का सहारा नहीं लिया जा सकता.न्याय पाने के लिए कानूनी व्यवस्था का ही सहारा लिया जाना चाहिए. इसी प्रकार श्रमिकों और श्रमदाताओं के आपसी झगड़ों को हड़तालों, मोर्चों, धरनों,घेरावों,प्रबंधकों पर हमलों अथवा जवाबी कार्यवाही के रूप में तालाबंदियों के जरिए नहीं, बल्कि अदालती अथवा पंच फैसले द्वारा ही निपटाया जाना चाहिए.

निस्संदेह, श्रमिकों को अपना श्रम न बेचने का मूलभूत अधिकार है, किंतु क्या इस अधिकार से उसे कारखाने के मालिक को केवल श्रमिकों द्वारा निश्चित की गई शर्तों पर ही अपना कारखाना चलाने के लिए बाध्य करने का अधिकार भी प्राप्त हो जाता है?

यह सही है कि पश्चिम के किसी भी लोकतंत्री देश में अभी तक इस विषय में न्यायालय अथवा पंच द्वारा फैसला कराने की व्यवस्था को लाजिमी नहीं ठहराया गया और न समाजवादी देशों की तरह हड़तालों और तालाबंदियों पर रोक लगाई गई है, किंतु स्थिति तेजी से बदल रही है.औपनिवेशिक साम्राज्यों में आवश्यकताओं से अधिक उत्पादन होने और सस्ता तेल मिलने की वजह से ही वहां हड़तालों और तालाबंदियों की छूट दी जाती है मानो ये बातें कारखानों में रोजरोज की ऊबाऊ मेहनतमजदूरी और काम से हट कर मनबहलाव का कोई स्वस्थ साधन हों.

किंतु आज आसमान को छूने वाली कीमतों पर निरंतर बढ़ती हुई बेरोजगारी ने पश्चिमी देशों को राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था में सामूहिक सौदेबाजी, हड़तालों और तालाबंदियों की भूमिका और औचित्य पर फिर से विचार करने के लिए बाध्य कर दिया है. वह दिन दूर नहीं जब उन्हें उत्पादन और रहनसहन के स्तर को बनाए रखने के लिए हड़तालों और तालाबंदियों का खात्मा करना होगा.

न्यायालय का कार्य साधारणत: मंद गति से चलता है, किंतु जल्दी ही फैसले करवाने के लिए काफी संख्या में नई अदालतें और नए जज भी तो नियुक्त किए जा सकते हैं. इस देश में कानूनी प्रतिभाओं की कोई कमी नहीं है. हड़तालों और तालाबंदियों से होने वाली हानियों के मुकाबले इन नई अदालतों पर बैठने वाला खर्च बहुत कम होगा.

किसी भी कारखाना मालिक को तालाबंदी कर के अपने माल का उत्पादन और सेवाएं रोकने की अनुमति नहीं दी जानी चाहिए.

किसी भी श्रमिक को अपने श्रम से इनकार कर के उत्पादन को भंग करने की अनुमति नहीं दी जानी चाहिए.

● न हड़तालें, न तालाबंदी ● अदालती फैसला लाज़िमी

वने, लेकिन अभी तक वाल मजदूरों की प्रथा कायम है. इसी से स्पष्ट है कि कानून कितना पंगु है.

राजनीतिवाज व अन्य समाज सुधारक आज भाषण तो लंवलंवे देते हैं, लेकिन इस समस्या को दूर करने के समय पीछे हट जाते हैं.

वच्चों से कार्य करवाना गलत नहीं है. लेकिन उन से जवरदस्ती उन की क्षमता से अधिक कार्य लेना अनुचित है जिस तरीके से इन वच्चों का शोषण किया जाता है, इन पर अत्याचार किया जाता है, यह भी सरकार व कानून पर करारा तमाचा है.

अत: सरकार को चाहिए कि वह वाल श्रमिकों के विकास के लिए लफ्फाजी नहीं, सचमुच कार्य करे. इन के कार्य करने का निश्चित समय, वेतन, मजदूरी व अन्य सुविधाएं निश्चित करे. इन वातों का उल्लंघन करने वालों को कड़ी से कड़ी सजा देने में हिचकिचाए नहीं. तभी इन की समस्याओं का समाधान होना.

—ललित गर्ग

*

'जिया का कसता शिकंजा' लेख (अक्तूबर/प्रथम) में पाकिस्तान का जो चित्र उभरा है क्या वैसा ही चित्र भारत के भविष्य का नहीं वन रहा है? किस तरह यहां लोकतंत्र की आड़ में एकतंत्र अपनी जड़ें जमा रहा है, यह सर्वविदित है. यदि ऐसा हुआ तो यह भारत के लिए अंगरेजों की गुलामी से भी ज्यादा शर्मनाक होगा. —हंसमुख दवे

लेख 'भारतीय हाकी की मौत' (अक्तूबर/प्रथम) बड़ा ही सामयिक रहा. भारत जैसा देश भी, जिस का राष्ट्रीय खेल हाकी माना जाता है, आज दिग्भ्रमित है. सरकार को चाहिए कि वह भारतीय हाकी की स्थिति में सुधार लाए. ऐसा नहीं होता तो हाकी की जगह क्रिकेट को राष्ट्रीय खेल घोषित कर दिया जाए, क्योंकि आजकल उसी का बोलवाला है.

—ललितकुमार पटेल

लड़कियों से छेड़खानी से संबंधित लेख (सितंवर/द्वितीय) और उस पर पाठकों की प्रतिक्रियाएं पढ़ीं. इस के लिए मुख्यत: विदेशी संस्कृति को ही दोषी ठहराया गया है. अपनी हर वुरी चीज के लिए विदेशी संस्कृति पर दोषारोपण करने की हम भारतीयों की आदत है. हालांकि हम स्वयं ही इस का अंधानुकरण करते हैं. हमें याद रखना चाहिए कि गांवों में भी, जहां विदेशी सभ्यता का प्रभाव नगण्य है, ऐसी छेड़खानी होती है. वस तरीके भिन्न हैं. कभीकभी तो इसी वात को ले कर गांवों में सिरफुटव्वाल की नौवत आ जाती है. सचाई यह है कि जव तक सामाजिक मान्यताओं की वजह से स्त्रीपुरुष के वीच की दूरी कम नहीं होगी, स्त्री पुरुष के लिए अजूवा वनी रहेंगी और तव तक यह समस्या खत्म हो ही नहीं सकती.

अकेली लड़की के प्रतिकार करने से कुछ नहीं हो सकता. इस में उस की दुर्गति होने की आशंका ज्यादा रहती है. सामाजिक स्तर पर इस का विरोध होना चाहिए. सार्वजनिक स्थल पर छेड़छाड़ होते वक्त मौन रह कर अनदेखा करने या मजा लेने के वजाय लोगों को एक हो कर वदमाशी का विरोध करना व अपराधी को तत्काल दंड देना चाहिए, ताकि भविष्य में उसे छेड़छाड़ करने का साहस ही न हो.

पर शर्म की बात है कि गलत बातों का विरोध करने का साहस हम में है ही नहीं. अपराध होते देख कर भी चुप, निष्क्रिय रहना भी तो कम अपराध नहीं. —समीर

*

कहानी 'देर आयद दुरुस्त आयद' (अगस्त/द्वितीय) पर एक पाठक की आलोचना पढ़ी. पाठक का मैं बहुत आभारी हूं कि उन्होंने मेरी कहानी को पढ़ने में रुचि दिखाई और मेरी कुछ कमियों की ओर प्रकाश डाला. पाठक की कुछ वातें तो सही हैं, लेकिन सब नहीं.

पाठक का यह कहना कि कहानी के फ्लैश बैक में घटनाओं की भरमार करने से कहानी बोझिल हो गई, बहुत हद तक सही है

कहानी भेजते समय ही इस का आभास मुझे हो गया था, लेकिन कहानी के नायक की गतिविधियां इतनी रोचक थीं कि मैं तय नहीं कर पा रहा था कि किस घटना को शामिल करूं और किसे छोड़ूं? —रवींद्रकुमार वर्मा

*

सरकार ने हर चीज का सरकारीकरण कर के अपने पैर इतने फैला लिए हैं कि अब उस से स्थिति संभल नहीं पा रही है. सरकारी कर्मचारी इतने बेईमान हो गए हैं कि बिना गलत काम किए उन का काम ही नहीं चलता. ऐसे में किसी भी जगह ईमानदार व्यक्ति टिक ही नहीं पाते.

चीनी को ही लिया जाए. उचित दर की चीनी देहात में कभी मिलती है तो कभी नहीं. जो मिलती है, उस में चीनी को पानी से भिगो कर बांटा जाता है. यदि किसी से कहा जाए तो कोई सुनवाई नहीं. चीनी ही क्यों, सिचाई के पानी का मामला ले लें. नहर में एक बार भी पानी नहीं आया. पर सरकारी कर्मचारी की वेईमानी देखिए कि हर किसान को पानी दिया गया लिख कर पैसा दर्ज कर दिया गया.

इस के अलावा न जाने कितनी दिक्कतें प्रशासन के वेईमान कर्मचारियों के कारण जनसाधारण को भुगतनी पड़ती हैं.

—रामफेरसिंह 'दीप' ●

मुक्ता के लखक

पुष्पा सक्सेना

इस अंक में प्रकाशित कहानी 'पराजित आस्था' की लेखिका पुष्पा सक्सेना ने भूगोल में स्नातकोत्तर की उपाधि ली है. वर्तमान में आप शोध कार्य में संलग्न हैं. कहानियों के अतिरिक्त आप सामयिक विषयों पर भी लिखती हैं.

शिवराम शुक्ल

इस अंक में प्रकाशित लेख 'लुई ब्रेली मेमोरियल स्कूल' के लेखक शिवराम शुक्ल मूलत: राजनीतिक और आर्थिक विषयों को अपने लेखन का आधार बनाते हैं. लेखन के अतिरिक्त फोटोग्राफी में भी आप की रुचि है.

मुक्त विचार

एशियाई खेलों में अकाली विघ्न

दिल्ली में हो रहे एशियाई खेलों के दौरान शांति भंग करने की अकाली दल की धमकी ने अकाली दल को जो नुकसान पहुंचाया है, वह खालिस्तान की मांग से भी न हुआ होगा. धार्मिक व राजनीतिक मांगों के नाम पर अकाली जिस तरह की मनमानी कर रहे हैं, उस से पहले ही अन्य देशवासी उन से काफी नाराज थे.

फिर भी उम्मीद थी कि अकाली दल यह स्टंट सिर्फ सत्ता में आने के लिए कर रहा है और अकाली सिख वास्तव में वैसे ही देशभक्त हैं जैसे पहले थे. खालिस्तान की मांग भी मजाक में ली जाती थी और यह सोच कर संतोष कर लिया जाता था कि वास्तव में सिख कभी भी इस पर जोर न देंगे.

एशियाई खेलों के समय एकत्र भीड़ को आतंकित करने की घोषणा की इतनी आसानी से अवहेलना नहीं की जा सकती. जरनैलसिंह भिंडरांवाले जैसे आतंकवादियों के होते उपद्रव कराने व बम फेंकने की घटनाओं का हो जाना कोई बड़ी बात नहीं. पंजाब में तो आए दिन सिख आतंकवादी इस प्रकार के हथकंडे अपना ही रहे हैं.

अकालियों की इस धमकी का असर यह हुआ कि हर केशधारी आम जनता की नजर में संदेहास्पद हो गया. दिल्ली के चारों ओर पुलिस ने एक प्रकार से घेरा डाल दिया और अकालियों को दिल्ली न पहुंचने देने के प्रयास में लगभग हर आने वाले सिख की बारीकी से जांच की. आम जनता बजाए इस कदम से नाराज होने के संतुष्ट ही हुई.

पंजाब से चलने वाली विशेष रेलें रद्द कर दी गईं. दिल्ली आने वाली बसों की संख्या भी कम करा दी गई ताकि सिख कम से कम संख्या में दिल्ली पहुंच पाएं.

एशियाई खेलों का कोई औचित्य होता न हो, लेकिन कोई भी देशवासी यह नहीं चाहेगा कि जब पूरे एशिया के खिलाड़ी व प्रतिनिधि हमारे देश में आए हुए हों, तब कोई ऐसा काम हो जिस से भारत की दूसरे देशों में व्यर्थ में बदनामी हो. इसी लिए केवल अकाली सिख ही नहीं, गैर अकाली सिख भी अब आम जनता से वह आदर व सम्मान नहीं पा रहा है जो पहले पाता रहा है.

अफसोस यही है कि धर्मांध नेता अपने समर्थकों की इस तरह की कठिनाइयों की परवाह नहीं करते. वे तो ईश्वर, खुदा, गाड या वाह गुरूजी के नाम पर देश को ही नहीं, सारी जनता को भी समाप्त कर देने पर उतारू हो जाते हैं. यही ईरान में आयतुल्लाह कर रहे हैं और यही पंजाब में अकाली नेता करा रहे हैं.

नागालैंड में भी छल की सरकार

नागालैंड के नए चुनावों में इंदिरा कांग्रेस यद्यपि स्पष्ट बहुमत प्राप्त नहीं कर सकी, फिर भी हरियाणा और हिमाचल प्रदेश

की तरह वह वहां भी निर्दली सदस्यों की सहायता से एक बार फिर सत्तारूढ़ हो गई है. 60 सदस्यों वाली विधान सभा में इंदिरा कांग्रेस और नागालैंड नेशनल डेमोक्रेटिक पार्टी को 24-24 स्थान मिले और बाकी निर्दली सदस्यों को.

इंदिरा कांग्रेस ने सत्ता में आने के लिए निर्दलियों को कैसे फंसाया होगा, यह इसी बात से जाहिर है कि चुनाव परिणामों की घोषणा के तुरंत बाद इंदिराजी के दो वरिष्ठ व विश्वसनीय मंत्री– प्रणव मुखर्जी व अंनतप्रसाद शर्मा तुरंत नागालैंड पहुंचे. पद, पैसे व सुविधा के लालच से जो निर्दली इंदिरा कांग्रेस के पक्ष में आए हैं, उन से इस सीमावर्ती व समस्याग्रस्त राज्य को क्या मिल सकेगा, इस का अंदाजा लगाना मुशकिल नहीं है.

नागालैंड के निवासी अभी तक अपने आप को भारत का अभिन्न अंग मानने को पूरी तरह तैयार नहीं हैं. फिजो के समर्थक कभी भी हथियार उठा कर राज्य की शांति के लिए खतरा पैदा कर सकते हैं.

जब वहां के मतदाताओं को यह बताया जाएगा कि जिस दल को वे बहुमत से ठुकरा चुके थे, वह पैसे और छलकपट के बल पर फिर सत्ता में आ गया है तो जनता में जो थोड़ाबहुत विश्वास पैदा हुआ था, वह भी समाप्त हो जाएगा.

बाकी देश की जनता तो अल्पमत पाने वाली सरकारों को धैर्य से स्वीकार कर लेती है, क्योंकि कुछ तो वह शांतिप्रिय है और कुछ दब्बू व कायर, लेकिन नागालैंड की जनता में न धैर्य है और न ही वह कायर और दब्बू है. यदि वहां के लोगों को किसी ने विश्वास दिला दिया कि उन के साथ धोखा हुआ है तो यह राज्य फिर देश के लिए सिरदर्द बन जाएगा.

अच्छा यही रहता कि इंदिरा कांग्रेस सब्र से काम लेती और नागालैंड नेशनल डेमोक्रेटिक पार्टी को ही सरकार बनाने देती. चुनावों के वादे जब पूरे न होते (जो कोई भी दल नहीं कर सकता) तो नागालैंड की जनता अपने आप ही उस का सफाया करने के लिए पूरी तरह इंदिरा कांग्रेस की शरण में आ जाती.

लगता है इंदिरा कांग्रेस के नेता अब पूरी तरह सत्ता के नशे में चूर हैं और वे कहीं भी कैसा भी विरोध नहीं देखना चाहते.

सरकारी उद्योगों को फटकार

केंद्रीय उद्योग मंत्री नारायणदत्त तिवारी ने सरकारी औद्योगिक संस्थानों को बुरी तरह फटकारा है कि वे तुरंत प्रबंध की समस्याएं दूर करें व आर्थिक अनुशासन लागू करें. उन्होंने स्पष्ट शब्दों में कहा है कि सरकारी संस्थान बिक्री की ओर तो ध्यान देते ही नहीं हैं और उन का रुख यही रहता है कि जिसे गर्ज हो वह खरीदने आए. इस तरह सरकारी संस्थान अपना उत्तरदायित्व कभी पूरा नहीं कर पाएंगे और वह (यानी मंत्रीजी) और सरकार इसे सहन नहीं करेगी.

यह सचमुच संतोष की बात है कि मंत्रीजी ने सरकारी संस्थानों की प्रशंसा के पुल नहीं बांधे वरना अब तक तो मंत्री और राजनीतिबाज करोड़ों रुपयों का नुकसान देने वाले और बेहद घटिया माल बनाने वाले सरकारी उद्योगों की जयजयकार ही करते रहते थे. इन उद्योगों में जनता से वसूले गए जबरन कर का 15,000 करोड़ रुपया लगा हुआ है और सब मिला कर ये मात्र डेढ़दो सौ करोड़ रुपए का मुनाफा कमाते हैं. फिर भी सरकार इन्हें हर तरह का संरक्षण देती है.

यदि इतनी पूंजी नागरिक उद्योगों में लगी होती तो कम से कम 4,000 करोड़ रुपए सालाना का लाभ होता और अकेले सरकार को दोढाई हजार करोड़ रुपए कर के रूप में ही हर साल मिलते.

अब तो यह भी नहीं कहा जा सकता कि ये संस्थान सस्ते मूल्य पर सामान बेच रहे हैं. दिल्ली परिवहन हो या दूध सेवा, अब सब सरकारी कंपनियां नागरिक क्षेत्र की कंपनियों से ज्यादा ही पैसा लेती हैं. जिन कुछेक क्षेत्रों में सरकारी व नागरिक कंपनियां दोनों हैं, वहां तो सरकारी कंपनियों के कारण नियंत्रित मूल्य भी बढ़ाने पड़े हैं जिस से नागरिक कंपनियों को बैठेबिठाए भारी लाभ हो गया.

तिवारीजी की डांट मात्र से अगर सरकारी संस्थान सुधर जाते तब तो यह कुछ लाभदायक होती पर सत्य तो यह है कि न तो मंत्रीजी को और न ही सरकारी संस्थानों के प्रबंधकों को इस बात की परवाह है कि ये उद्योग सही ढंग से चलें.

उद्योगों में लाभ हो या हानि, उत्पादन हो या नहीं, ऊपर से नीचे तक के हर कर्मचारी का वेतन व सुविधाएं ही नहीं, पदोन्नति तक सुरक्षित है. अनुशासनहीनता या अकुशलता के लिए सरकारी संस्थानों में दंड का कोई विधान ही नहीं है. अतः कोई इस बात की चिंता नहीं करता कि काम हो रहा है या नहीं.

मंत्रीजी अगर अपनी डांट के साथ कोई अल्टीमेटम भी देते कि फलांफलां तारीख तक सब काम ठीक कर लो तो कुछ बात भी होती. अगर वह प्रबंधकों को अच्छे काम के लिए इनाम व खराब काम के लिए नौकरी से निकाल देने की बात कहते तो उन के कथन का कुछ असर भी होता. अब तो यह भाषण एक दिन का शगूफा बन कर रह जाएगा.

दिल्ली में एक और मंजिल

दिल्ली में कुछ समय से 18-20-25 मंजिले मकान बनने लगे हैं. लेकिन यह सुविधा नगर निगम, विकास प्राधिकरण या केंद्रीय सरकार की मर्जी से ही मिल पाती थी. जिस जगह पर इन विभागों की मर्जी होती, वहां वे ऊंचे भवन बनाने की इजाजत दे देते और जहां न,होती, नहीं देते थे.

इस से दिल्ली में बड़ी अजीब स्थिति पैदा हो गई. एक भूखंड की कीमत तो करोड़ों में पहुंच गई, क्योंकि वहां गगनचुंबी इमारत बन सकती है, पर पास के ही भूखंड की कीमत केवल लाखों में रह गई, क्योंकि वहां पर गगनचुंबी भवन तो क्या, तीन मंजिला मकान भी नहीं बनाया जा सकता.

इस से सरकार के इन विभागों में खूब धांधली होने लगी. गगनचुंबी भवन बनाने की इजाजत लेने के लिए लोग लाखों रुपए रिश्वत आदि में खर्च करने लगे, क्योंकि इस से करोड़ों का लाभ संभव था.

अब सरकार ने सारे शहर में दो के स्थान पर तीसरी व तीन के स्थान पर चौथी मंजिल बनाने देने की नीति को मंजूरी दे दी है. यद्यपि वास्तविक मंजूरी देने और मकानों के बन जाने में अभी कई साल लगेंगे. पर आशा है कि इस से लगभग ढाईतीन लाख रिहायशी घर अतिरिक्त बन जाएंगे.

यह निर्णय असल में बहुत पहले ही ले लिया जाना चाहिए था. दिल्ली को, जिस के चारों ओर फैलने की गुंजाइश है, वास्तव में गगनचुंबी इमारतों की जरूरत ही नहीं थी. इन इमारतों के कारण ही मकानों, जायदाद के दाम बेतहाशा बढ़े, क्योंकि शहर के बीचोबीच इन्हीं में दफ्तरी या रिहायशी स्थान उपलब्ध थे. यदि उसी समय अतिरिक्त मंजिलें बनाने की अनुमति दे दी जाती तो छोटे मकानदार अपनी सीमित बचत से भी भवन बना सकते थे.

आशा की जानी चाहिए कि इस नई नीति से ऊंचेऊंचे मकान बनाने की प्रवृत्ति कुछ कम होगी, क्योंकि तीसरी मंजिल की लागत तेहरवीं मंजिल से कहीं कम होगी. ऊंचे मकान बनाने से न केवल शहर घुटाघुटा सा हो जाता , उन के आसपास यातायात की समस्याएं भी बढ़ जाती हैं. आग लगने पर उन में खतरा भी बहुत होता है.

श्रीलंका में लोकतंत्र

श्रीलंका के राष्ट्रपति जयवर्धने राष्ट्रपति पद के चुनाव में अपनी विजय का अब दुरुपयोग करने पर उतारु हो गए हैं. अब वह 1977 में चुनी गई संसद का कार्यकाल छः साल के लिए और बढ़ाने के लिए जनमत संग्रह करा रहे हैं ताकि उन के दल यूनाइटेड नेशनल पार्टी को एक बार फिर मतदाताओं के सामने न जाना पड़े.

भूतपूर्व प्रधान मंत्री श्रीमती भंडारनायके ने समाजवाद के नाम पर श्रीलंका के उद्योग व्यापार को नष्टप्राय कर दिया था. वह और उन की सरकार अपनी

व्यक्तिगत शक्ति और संपत्ति के लिए ही नियमकानून बनाते थे. समाचारपत्रों से ले कर चाय बागान तक का सरकारीकरण कर के उन्होंने देश को मुसीबत में डाल दिया था.

श्री जयवर्धने की व्यावहारिक नीतियों से श्रीलंका की स्थिति बहुत सुधर गई है और इसी लिए उन्हें राष्ट्रपति पद के चुनाव में विजय मिली. लेकिन संसद के सदस्यों का एक अलग महत्त्व होता है. राष्ट्रपति को चुनते समय मतदाता और उम्मीदवार बहुत दूरदूर होते हैं. इस चुनाव में केवल राष्ट्रीय मुद्दों की ही चर्चा होती है.

संसद के चुनावों का सब से बड़ा लाभ यह होता है कि बूढ़े हो रहे निष्क्रिय, अकुशल या बेईमान सदस्यों की छंटाई हो जाती है तथा नए लोगों को नेतृत्व करने का अवसर मिलता है. यदि वर्तमान संसद अपना कार्यकाल छः साल के लिए बढ़ा लेगी तो उस के सदस्य अब जनता के प्रति जिम्मेदारी से बेखबर हो जाएंगे. श्री जयवर्धने अब संसद का कार्यकाल इस लिए बढ़ाना चाहते हैं क्योंकि उन के दल को 168 स्थानों में से 143 स्थान प्राप्त हैं और वह यह सोच कर जोखिम नहीं लेना चाहते कि कहीं उन के दल का बहुमत कम न हो जाए या वह अल्पमत में न आ जाए. इसी कारण संसद का कार्यकाल बढ़ाना न केवल गलत है बल्कि सरासर बेईमानी भी है.

रूस में नया नेतृत्व

रूस के राष्ट्रपति श्री लियोनिद ब्रेजनेव की मृत्यु से रूस को जहां एक अनुभवी नेता खोना पड़ा है वहीं एक नए तरह की नेतृत्व की आशा भी है. श्री ब्रेजनेव 18 वर्षों तक संसार की दूसरी सब से बड़ी शक्ति के सर्वेसर्वा के रूप में रहे और उन्होंने देश को अपने खास व्यक्तियों की सहायता से एक विशेष ढंग से चलाया. अब राष्ट्रपति को नया शक्ति संतुलन कायम करना होगा. जब तक ऐसा नहीं होगा, रूस की आंतरिक व विदेश नीति दोनों पूरी तरह तय नहीं हो पाएंगी.

यह अफसोस की बात है कि क्रांति के 55 वर्ष बाद और काफी उन्नति कर लेने के बावजूद आज रूस में हर नए शासक के चुने जाने के समय अनिश्चय का सा वातावरण पैदा हो जाता है और नए नेतृत्व के बारे में बेकार की अटकलें लगानी पड़ती हैं.

इस का कारण स्पष्ट है. रूस में हर आम व्यक्ति की तरह शासक भी हर समय आतंक के वातावरण में रहते हैं और उन्हें डर रहता है कि न जाने कब क्या हो जाए. वहां विचारों का हल अपने विचारों को स्पष्ट रूप से रख कर उन में समन्वय स्थापित कर के नहीं किया जाता. वहां छोटे से छोटे व्यक्ति से ले कर राष्ट्रपति तक अपनी बात कहने में घबराता है. इसी लिए वहां गुटबाजी शुरू हो जाती है. हर गुट दूसरे को नीचा दिखाने की कोशिश करता है और फिर आपसी खींचतान चलने लगती है.

यही खींचतान तनाव का वातावरण पैदा करती है जिस से आतंक का जन्म होता है. जिस के हाथ में सत्ता व शक्ति होती है, वह अपने आलोचक को दबा देता है, चाहे आलोचना सही हो या गलत.

श्री ब्रेजनेव के गुट ने भी अपने शासनकाल में यही किया और कितने ही वरिष्ठ अधिकारियों को बिना स्पष्ट कारण के ऐसे हटा दिया कि उन का पता नहीं चला. अब रूस की कम्यूनिस्ट पार्टी के नए महासचिव श्री यूरी आंद्रोपोव भी कुछ ऐसा ही करेंगे.

फिर भी आशा की जानी चाहिए कि नया नेतृत्व इस आतंक की स्थिति से देश को निकालने की कोशिश करेगा. रूस अब सैनिक तौर पर अमरीका से भी ज्यादा शक्तिशाली है. पोलैंड और अफगानिस्तान के मामले में संसार को उस की जिद माननी ही पड़ी. पश्चिमी यूरोप उस से कई तरह के आर्थिक समझौते करने को लालायित है.

ऐसी स्थिति में देश को एक खुली जेल बना कर रखने से कोई लाभ नहीं है. नए नेतृत्व को चाहिए कि वह देशवासियों को उन्मुक्त जीवन जीने का अवसर दे, उन पर विश्वास व्यक्त करे और आधी सदी से चले आ रहे आतंक को समाप्त कर दे. •

प्रेम : वरदान भी, अभिशाप भी

"प्यार किया नहीं जाता, हो जाता है"— ठीक से नहीं कहा जा सकता कि यह कथन किस का है, लेकिन यह

लेख
•
संतोषकुमार 'निर्मल'

प्रेम के बारे में गलत धारणाएं, सूझबूझ की कमी व भावुकता में लिए गए निर्णय प्रेम को अभिशाप बना देते हैं, लेकिन प्रेम वरदान भी तो बन सकता है...

वाक्य पता नहीं कितने युवकयुवतियों की सोचनेसमझने की शक्ति हर लेता है और वे केवल शारीरिक आकर्षण से प्रभावित हो कर प्यार (?) के बंधन में बंध जाते हैं.

हिंदी में बनने वाली अधिकांश फिल्मों का विषय 'प्रेम' ही होता है. कुछ निर्माताओं ने किशोर वय के प्रेम को आधार बना कर फिल्में बनाईं और बेशुमार दौलत कमाई. 'जूली,' 'बाबी,' 'लव स्टोरी,' 'एक दूजे के लिए' व 'प्रेम रोग' जैसी फिल्मों से कच्ची उम्र के लड़केलड़कियां बुरी तरह प्रभावित हो गए. अपना भलाबुरा सोचे बिना वे उन्मुक्त प्रेम की राह पर चल पड़े. 'एक दूजे के लिए' के प्रदर्शन के कुछ ही दिनों बाद अखबारों में खबर आई थी कि कई प्रेमी युगलों ने इस फिल्म में दिखाए गए दुखांत दृश्य के अनुसार आत्महत्या कर ली थी. इस के बाद ही इस फिल्म का अंत बदल कर उसे सुखांत बनाया गया.

सहशिक्षा वाले कालिजों में यह समस्या और भी उभर कर सामने आई. इस का कारण यह था कि इस आयु में लड़केलड़कियों की बुद्धि इतनी विकसित नहीं होती कि वे प्रेम के

कैशोर्य प्रेम पर बनी फिल्में— 'बाबी' (ऊपर) व 'लव स्टोरी' (नीचे) युवा वर्ग को क्या दे सकीं.
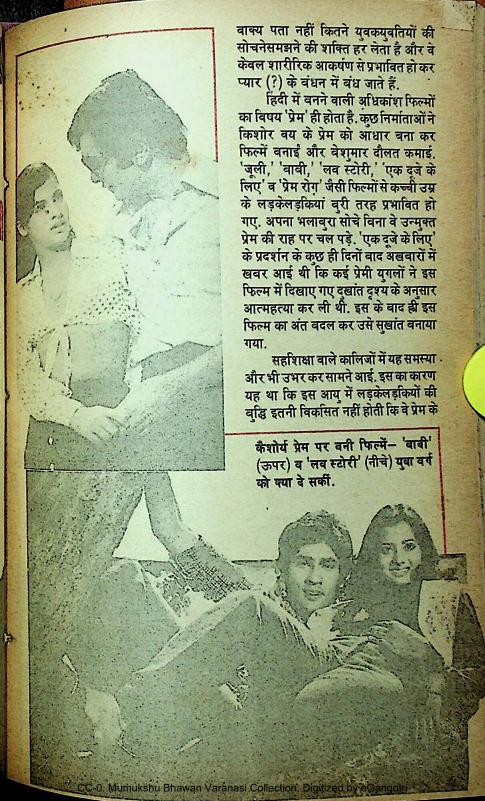
अर्थ को समझ सकें. बाह्य आकर्षण, चकाचौंध व फैशन की दौड़ में शामिल होने के नाम पर किए गए प्रेम को वे प्रेम समझ बैठे. यही कारण है कि इस कथित प्रेम में असफल होने के बाद लोग आत्महत्या तक कर लेते हैं.

लेकिन गौर से देखा जाए तो अपनी इस स्थिति के लिए वे खुद ही जिम्मेदार होते हैं. देखा गया है कि प्रेम करते समय दोनों में से कोई भी एकदूसरे की पृष्ठभूमि व उम्र के बारे में नहीं सोचता. उन की आंखें तब खुलती हैं, जब समाज व परिवार वालों द्वारा उन्हें चेतावनी दी जाती है, क्योंकि लाख कोशिश करने पर भी प्रेम छिपता नहीं है.

शेक्सपियर ने प्रेम के संबंध में बड़ी ही रोचक बात कही है– दोपहर में हुई हत्या का समाचार भी इतनी तेजी से नहीं फैलता, जितनी जल्दी दो प्रेमियों के प्यार का समाचार. चेतावनी सुन कर दोनों की आंखें खुलती हैं, दोनों एकदूसरे के बारे में सोचने लगते हैं. साथसाथ जीनेमरने के वादे भुला दिए जाते हैं. अपने को अत्याधुनिक समझने वाली लड़कियां भी घर वालों की इच्छा के आगे नहीं बोल पातीं, लेकिन अपने प्रेमी की नजरों में वे स्वयं को कमजोर व बेवफा साबित नहीं करना चाहतीं, इसलिए सारा दोष मांबाप पर डाल कर अपने को साफ बचा ले जाती हैं. लड़के भी ऐसे समय अपने को श्रवणकुमार साबित करने में पीछे नहीं रहते. फिल्मों व सस्ते उपन्यासों को पढ़ कर उत्पन्न हुआ प्रेम सफल होने से पहले ही टूट जाता है.

क्यों टूटता है यह प्रेम संबंध? इस का उत्तर यह है कि हम में इतना साहस नहीं होता कि हम अपने स्वतंत्र व्यक्तित्व के लिए संघर्ष कर सकें. जरा सा विरोध होने पर ही हम साहस खो देते हैं. सामाजिक संस्कारों में पली लड़की समाज की उपेक्षा सहने का साहस नहीं जुटा पाती. हाथों में हाथ डाल कर घूमना और बात है, लेकिन जीवन भर के लिए वही हाथ थामने के लिए जिस साहस की जरूरत होती है, उस की उन के पास कमी होती है. लड़कों में भी ऐसे साहस का अभाव देखा गया है.

बहुत कम मातापिता ऐसे होते हैं, जो इन प्रेम संबंधों को सहजता से स्वीकार कर पाते हैं. लेकिन इस में उन का कोई दोष नहीं है, क्योंकि यह प्रेम संबंध इतना लचर और अविवेकपूर्ण होता है कि उसे कोई भी मान्यता नहीं दे सकता.

प्रेमी युगल का विवाह होना ही प्रेम संबंध की सफलता है. विवाहित जीवन की सफलता पतिपत्नी के आपसी व्यवहार पर निर्भर करती है. लेकिन असफल प्रेम दोनों के जीवन में जहर घोल देता है. विवाह पूर्व प्रेम संबंध दोनों के जीवन में कटुता को बढ़ावा देता है. पत्नी अपने इस कार्य को ... समझती है और जीवन भर अपराध भावना से ग्रस्त रहती है. पारिवारिक कलह का मूल कारण यही है. इस एक छोटी सी भूल के कारण अनेक परिवार टूट जाते हैं.

समस्या तब और गंभीर हो जाती है, जब कोई पत्नी पति से अपने विवाह पूर्व ... की चर्चा कर देती है. मगर यह स्थिति इतनी विषम होती है कि उसे जीवन भर इस का दुष्परिणाम भुगतना पड़ता है. उस के पति का अहं यहां आड़े आ जाता है. वह उस की नजरों में गिर जाती है. पति कभी यह सहन नहीं कर सकता कि उस की पत्नी ने विवाह पूर्व किसी से प्रेम किया हो. उसे पता न लगे, यह दूसरी बात है, लेकिन वह जानबूझ कर मक्खी नहीं निगल पाता. कुछ ही लोग ऐसे होते हैं जो पत्नी की इस स्थिति को स्वीकार कर पाते हैं. पति से अपने पूर्व प्रेम संबंध की चर्चा करना पत्नी के लिए अभिशाप बन जाता है.

इसलिए भूल कर भी पत्नी को ... पूर्व प्रेम संबंधों के विषय में अपने पति से ... नहीं कहना चाहिए. आखिर इस की आवश्यकता भी क्या है, हालांकि कुछ ... अपनी पत्नियों से ये बातें कुरेदकुरेद कर पूछने की कोशिश करते हैं.

असफल प्रेम की परिणति

यह एक कटु सत्य है कि प्रेम में असफल होने के बाद किसीकिसी में प्रतिशोध की भावना जन्म ले लेती है. वह बदला लेने ...

प्रेम करते समय दोनों में से कोई भी एक दूसरे की पृष्ठभूमि व उम्र के बारे में नहीं सोचता, जब कि पहले इसी बारे में सोचना चाहिए.

लिए अवसर की तलाश में रहता है. प्रेमिका द्वारा लिखे गए पत्रों व प्रेम संबंधों के दौरान लिए गए चित्रों को उस के पति को दिखा देने की धमकी दे कर वह उसे ब्लैकमेल करने की कोशिश करता है. इस तरह एक हरीभरी जिंदगी पर प्रतिशोध की बिजली गिरती है और उसे जला कर राख कर देती है. प्यार का कुपरिणाम यह होगा, ऐसा लड़कियां प्रायः नहीं सोचतीं. कोईकोई तो इस से घबरा कर आत्महत्या तक कर लेती हैं.

वास्तव में यह स्थिति दुखदायी है, लेकिन इस के लिए दोनों ही समान रूप से दोषी होते हैं. विवाह पूर्व का उन्मुक्त प्रेम, साथसाथ जीनेमरने के किए गए वादे उन्हें सपनों की दुनिया में पहुंचा देते हैं. स्थिति तो तब दयनीय हो जाती है, जब दोनों में से कोई एक यह कहता है, "मुझे तुम से प्यार तो है, लेकिन मैं तुम से शादी करने में असमर्थ हूं." अब आप ही सोचिए, वह ऐसे प्यार का क्या करें?

अधिकतर प्रेमिकाएं अपने प्रेमियों को इसी मीठे बहाने से बहलाती रहती हैं व दूसरी जगह शादी कर लेती हैं. बेचारा प्रेमी प्रेमिका के इस वादे पर विश्वास कर के जिंदगी भर कुंआरा बैठा रहता है, जब कि प्रेमिका अपने वैवाहिक जीवन में व्यस्त हो जाती है. लेकिन सभी ऐसे नहीं होते. कुछ प्रेमी थोड़े समय बाद प्रेमिका के इस मीठे धोखे को पहचान जाते हैं व उसे भुला कर शादी कर के अपना वैवाहिक जीवन प्रारंभ कर लेते हैं. इस तरह के सैकड़ों उदाहरण समाज में भरे पड़े हैं.

एक बार एक व्यक्ति को उस की प्रेमिका द्वारा लिखा प्रेम पत्र देखने में आया. पत्र में लिखा था. "अगले सप्ताह मेरी शादी होने वाली है, लेकिन तुम मुझे भुलाना नहीं. तुम शादी मत करना, क्योंकि जो स्थान कभी मेरा रहा, वहां पर मैं किसी और को नहीं देख सकती. हमारा तुम्हारा प्यार अमर है और अमर रहेगा. अगले जन्म में हम जरूर मिलेंगे." उस व्यक्ति पर इस पत्र का गहरा

असर हुआ था और उस ने अपने प्रेम को अमर करने के लिए शादी न करने का फैसला कर लेया था.

बहुत समझानेबुझाने के बाद ही वह अपने इस निर्णय को बदलने को तैयार हुआ.

प्रेम संबंधों में दरार

प्रेम संबंध टूटने का एक अन्य कारण यह भी है कि लड़का आर्थिक रूप से अपने पैरों पर खड़े हुए बिना ही किसी की तरफ आकर्षित हो जाता है, लेकिन वह उस से विवाह करने का साहस इसलिए नहीं कर पाता, क्योंकि वह आर्थिक रूप से अपने मांबाप पर निर्भर होता है. अगर मांबाप ने विवाह की स्वीकृति दे दी, तब तो ठीक, नहीं तो बेचारा प्रेमी अपनी प्रेमिका को यही समझाता है कि उसे प्यार तो उसी से है, लेकिन वह घर वालों की इच्छा को भी ठुकरा नहीं सकता. इसलिए वह उसे भूल ही जाए तो अच्छा है.

इस तरह उस का प्यार एक सौदे में बदल जाता है. वह जानता है कि मांबाप की इच्छा के बिना शादी करने पर वह न घर का रहेगा, न घाट का. केवल दरदर की ठोकरें खाता फिरेगा, जब कि उन की इच्छा से शादी करने पर दहेज की एक मोटी रकम मिलने की संभावना होती है. काश, वह प्यार करते समय भी अपने मांबाप की इच्छा का ख्याल रखता तो यह स्थिति न आती.

किसी से प्रेम होने का ढंग भी आजकल निराला है. आश्चर्य होता है कि इतनी जल्दी प्रेम होना संभव है. केवल किसी को एक नजर देख कर बिना बात किए ही प्रेम हो जाने का लोग दावा करते हैं. एकतरफा प्रेम करना तो बहुत बुरी स्थिति है. इस का परिणाम क्षोभ, अपमान व पछतावे के सिवा कुछ नहीं है.

एक साहब रोज बस से दफ्तर जाते हैं. एक दिन अधिक भीड़ होने की वजह से एक लड़की ने उन्हें पैसे देते हुए टिकट लेने को कहा. बस, इतने में ही उन महाशय को भ्रम हो गया कि लड़की उन की तरफ आकर्षित है. संयोग से लड़की रोज ही उन्हें उसी बस में मिलने लगी. उन महाशय ने इसे सुनहरा मौका समझा. धीरेधीरे उन्होंने लड़की का नामपता जानने की कोशिश की, लेकिन इस के बदले में उन्हें अपमानित होना पड़ा.

पत्नी को भूल कर भी अपने पूर्व प्रेम संबंधों के विषय में पति को नहीं बताना चाहिए, हालांकि कुछ पति पत्नी से कुरेदकुरेद कर यह पूछते हैं.
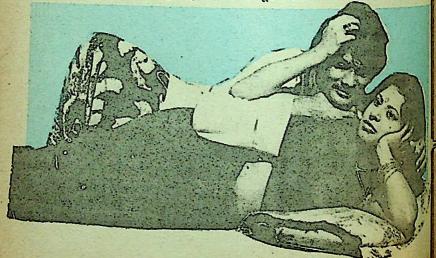
लड़की ने उन्हें 'लोफर' की उपाधि दे दी, जिस से वह खिसिया कर रह गए. बड़ी मायूसी से जब उन्होंने इस बात का जिक्र अपने मित्रों से किया तो उन्होंने समझाया कि गलती उन की ही थी. इस तरह का प्रेम केवल फिल्मों में ही होता है, वास्तविक जीवन से इस का कोई संबंध नहीं.

फिल्मों का दुष्प्रभाव

फ़िल्मों के प्रभाव से ही उत्पन्न एक और दुष्परिणाम तब सामने आता है, जब प्रेमीप्रेमिका घर से भाग जाते हैं. काफी भटकने के बाद उन्हें वास्तविक जीवन की कटुता समझ में आती है, लेकिन जब तक बहुत देर हो चुकी होती है. प्रेमी तो साथ छोड़ ही चुका होता है. समाज में बदनामी का भय लड़की को वापस नहीं आने देता. वह घबरा कर या तो आत्महत्या कर लेती है या जीवन व्यतीत करने के लिए मजबूरन शरीर का सौदा करने लगती है.

अधिकांश लड़कियां इस में विश्वास रखती हैं कि विवाह पूर्व वे जो चाहें कर सकती हैं. बाद में तो किसी एक की होना ही है. छात्रावास में रहने वाली लड़कियों के सोचने का दृष्टिकोण प्रायः यही होता है. लड़कों से रोमांस व मिलनाजुलना उन की दिनचर्या में शामिल हो जाता है. घर से पढ़ाई का उद्देश्य ले कर चलने वाली लड़कियां रास्ते में ही भटक जाती हैं. विवाह होने के बाद अपना पतित अतीत उन्हें कचोटता रहता है.

प्रेम की समस्या केवल कुंआरे लोगों की ही नहीं है, विवाहित भी इस से पीड़ित रहते हैं. पत्नी का परपुरुष से प्रेम करना पति के लिए डूब मरने वाली बात हो जाती है. खुद चाहे वह कितनी ही स्त्रियों से संबंध रखे, लेकिन पत्नी का यह कदम वह सहन नहीं कर पाता. ऐसी स्थिति में मनमुटाव या संबंध विच्छेद तो होता ही है, कभीकभी आवेश में आ कर वह हत्या जैसा जघन्य अपराध भी कर डालता है और जीवन भर इस का कुपरिणाम भुगतता है. अगर पति को दूसरी स्त्री से प्रेम हो और उस की उस से विवाह

असफल प्रेम दोनों के जीवन में जहर घोल देता है.

करने की इच्छा हो तो वह अपनी पत्नी की हत्या भी कर डालता है.

तीन साल पहले की बात है. पाठकों ने शायद समाचारपत्रों में पढ़ा होगा कि हरदोई के सरकारी हस्पताल के डाक्टर विनयकुमार ने एक नर्स भगवती सिंह से विवाह करने के लिए अपनी सुंदर व सुशील पत्नी सुधा की हत्या कर दी थी, जिस पर अदालत ने अभियुक्त को मृत्यु दंड की सजा दी. इस तरह एक डाक्टर ने अपने सुनहरे भविष्य को स्वयं ही घोर अंधेरे में बदल दिया.

कभी स्थिति इस के विपरीत होती है. अपने प्रेमी से मिल कर अपने पति की हत्या करने वाली पत्नियों के उदाहरणों की भी कमी नहीं है. कैसी विडंबना है कि यह जघन्य अपराध प्रेम की आड़ में किए जाते हैं. प्रेम, ज वरदान बन सकता था, अभिशाप बन कर र जाता है.

प्रश्न यह है कि हत्या कर के हम अपने पैरों पर क्यों कुल्हाड़ी मारते हैं? अगर कोई हमें धोखा देता है तो हमें उस से संबंध विच्छेद कर लेना चाहिए, न कि उस की हत्या कर

(शेष पृष्ठ 146 पर)

कहानी ◦ चंद्रशेखर दुबे
डायन
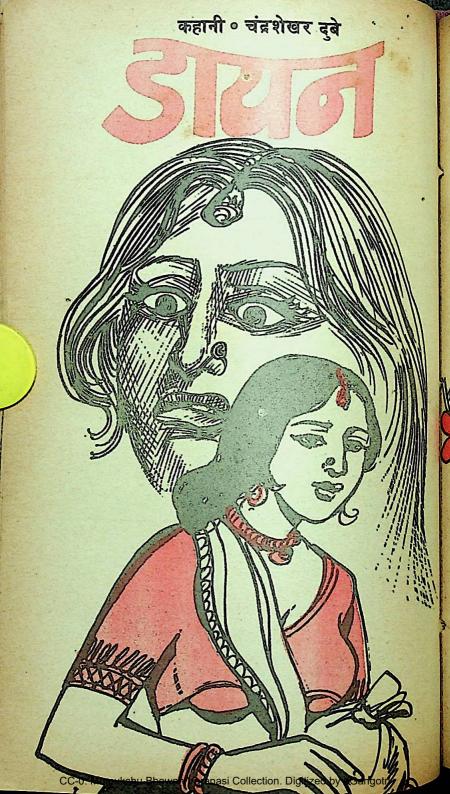
पेमा की बहू की लाश के आते ही भील आदिवासियों के झोंपड़ों में खलबली मच गई. घरघर चर्चा चल पड़ी कि जरूर कुछ न कुछ गड़बड़ है. पिछले छः महीनों में इस तरह चार अकाल मौतें हो चुकी हैं. पहले भी तो इन झोंपड़ों में बालबच्चे होते रहे हैं, पर उन में से तो कोई नहीं मरा. जच्चाबच्चा सब सकुशल रहे. कभीकभार कोई इक्कीदक्की अनहोनी भले ही हो गई हो, लेकिन इन पिछले छः महीनों में ही ऐसा क्या हो गया कि एक के बाद एक, चार जवान मौतें हो गईं. बच्चे भी गए और जच्चाएं भी. जरूर कुछ न कुछ गड़बड़ है.

सेमल्या की घरवाली मंगली तो इस अनहोनी से आश्चर्यचकित ही रह गई. इस मौत से उसे विशेष आघात लगा, क्योंकि पेमा की बहू उस के ही पीहर की थी; इसी लिए

भोले आदिवासियों में अंधविश्वास भरने वाले तांत्रिक ने मंगली को गांव भर में बदनाम कर डाला पर इस का बदला मंगली ने कैसे लिया?

दोनों में खूब पटती थी. सगी बहनों से भी अधिक स्नेह था दोनों में. जापे से पहले ही उस ने अपनी इस सहेली को सलाह दी थी कि वह अपना जापा किसी हस्पताल में करवाए, क्योंकि यहां पहाड़ों पर बने इन झोंपड़ों में आड़े वक्त कोई मदद नहीं मिल सकती. यहां तो बड़ीबूढ़ियों से ही पाला पड़ता है. वे अपने परंपरागत ढंग से जापा करती हैं. अपने आगे

किसी की नहीं चलने देतीं. जहां जरा मुंह खोलो तो वे झिड़क देती हैं. वे डींगे मारने लगती हैं कि उन्होंने ऐसे पचासों जापे कर डाले हैं.

किंतु बिगड़े हुए जापों की उन्हें कभी याद नहीं रहती. उन्हें वे भगवान की लीला ठहरा देती हैं. पिछली बार डूंगर दादा की बहू कैसे तड़पतड़प कर मरी थी. वक्त पर अगर वह हस्पताल पहुंच जाती तो उस का बच्चा पेट में न मरता और न उसे जहर चढ़ता. पर ये लोग किसी की सुनें तब न? वैसे भी छोटे मुंह बड़ी बात. कोई कहे तो कैसे कहे? उस का कहना तो यों भी इन बड़ीबूढ़ियों को बुरा लगता है. चार अक्षर पढ़ी होना जैसे गुनाह हो गया.

पेमा की बहू को अपनी सहेली मंगली की ये बातें जची थीं. इसी लिए उस ने हस्पताल में नाम लिखाने का आग्रह भी किया था. अपने पति के साथ एक बार कसबे के हस्पताल में जा कर वह डाक्टरनी को दिखा भी आई थी. डाक्टरनी ने भी जैसे मंगली की ही बातें दोहराई थीं. उस ने वहां हस्पताल में ही जापा कराने की सलाह दी थी, किंतु उस की बूढ़ी सास ने किसी की नहीं चलने दी थी.

उस ने अपने बेटे पेमा को डरा दिया था. उस के कान में फुसफुसा दिया था, "तू ने यह भी नहीं सोचा कि वहां हस्पताल में जापा करवाने से नसबंदी हो जाती है? वे लोग गुपचुप ही कर देते हैं. अभी तेरे यहां यह पहली संतान होने वाली है और अगर अभी से नसबंदी हो गई तो औलाद के लिए रोएगा, इसलिए हस्पताल का नाम मत ले."

पेमा ने उस दिन से अपनी घरवाली की एक नहीं सुनी. उस ने तो बस अपनी मां की बात ही गांठ बांध ली. मंगली की बात भी उस ने नहीं सुनी. बराबर बहानेबाजी करता रहा.

फिर जिस बात की आशंका थी, वही हुई. पेमा की बहू का जापा तो अच्छा भला हो गया, किंतु हंसिए से नाल काटने के कारण वह टेटेनस (मांसपेशियों की कष्टप्रद सिकुड़न) की शिकार हो गई. अब उस के घर के लोग बिना कहे ही बीमार को हस्पताल ले गए. खटिया सहित बीमार को सड़क तक ले गए, वहां से मोटर में ले गए. किंतु हस्पताल में दाखिल होने से पहले ही जच्चाबच्चा दोनों ने दम तोड़ दिया. दोनों की लाशें ही वापस आईं.

इन लाशों के आते ही मंगली ने हस्पताल की परची देखी. हायर सेकंडरी तक पढ़ी होने और प्राथमिक स्वास्थ्य सेवा के साधारण ज्ञान होने के कारण वह इस परची को पढ़ कर जान गई कि मृत्यु टेटेनस से हुई है. उस की आशंका सही निकली.

किंतु इस समय मंगली की बात सुनने को कोई तैयार नहीं था. सब के मन में दहशत सी बैठ गई थी. शंकाओं का जाल बुन कर वे सब उसी में उलझे हुए थे. सब के मन में बस एक ही बात घर कर गई थी कि इन अनहोनियों के पीछे कोई खास कारण है, कोई गड़बड़ है.

इसी लिए पेमा की बहू और बच्चे की लाश को ठिकाने लगाते ही महल्ले के सभी लोग इस गड़बड़ी की जांच कराने को तत्पर हो उठे. बिना कहे ही सभी 21 झोंपड़ों के लोग आ गए. अगर कोई बड़ा पुरुष किसी कारण से नहीं आ पाया तो उस घर से कोई किशोर आ गया. बीमार व्यक्तियों ने अपने प्रतिनिधि के रूप में अपने किसी रिश्तेदार को भेज दिया. मंगली का घरवाला सेमल्या भी उन में शामिल था.

उन लोगों ने ग्राम पंचायत के कार्यालय में जा कर प्रमाणपत्र लिया. सभी के नाम पते आदि इस प्रमाणपत्र में लिखवाए. कहां जा रहे हैं, क्यों जा रहे हैं, यह सब कुछ भी इस में दर्ज करवाया.

ग्राम पंचायत का प्रमाणपत्र ले कर लोग संबंधित थाने में पहुंचे. वहां भी उन लोगों ने सारी बात का इंदराज करवाया. उन की अनुपस्थिति में कोई वारदात हो जाने पर वे लोग व्यर्थ में फंस जाएं, इसी लिए उन लोगों ने यह सतर्कता बरती थी.

सारी बातों से निश्चिंत हो जाने पर लोग 100 मील दूर के भगत बड़वा यानी तांत्रिक से गड़बड़ की

बड़वा के गले की कंठी को बल देते हुए मंगली बोली, "नहीं, मैं तो इस का यह खोटा धंधा ही चौपट करूंगी ताकि यह भविष्य में मेरी तरह किसी और को न सताए."

कराने चल पड़े. सब ने अपनाअपना यात्रा टिकट खरीदा. पेमा पर किसी ने बोझ नहीं डाला.

तांत्रिक के यहां पहुंच कर उन लोगों ने सारा माजरा कह सुनाया. उस से गड़बड़ की वारीकी से जांच करने का निवेदन भी किया.

यह बड़वा उन लोगों की तरह एक आदिवासी ही था. किंतु अपनी इस 'विद्या' के कारण उस की माली हालत आम आदिवासियों जैसी नहीं रही थी. उस के पास संपन्न लोगों जैसी सब सुखसुविधाएं हो गई थीं. उस का अच्छा लंवाचौड़ा पक्का मकान था. मकान में विजली, पंखे, पलंग, रेडियो सेट, लोहे की वड़ीवड़ी अलमारियां आदि सभी वस्तुएं थीं. वाहर आनेजाने के लिए उस के पास मोटर साईकिल भी थी. वह वेशभूषा, वोलचाल किसी भी दृष्टि से आदिवासी प्रतीत नहीं होता था. अनजान आदमी तो उसे आदिवासी मान ही नहीं सकता था.

इस सौ दो सौ मील के अंचल में इस बड़वा का वड़ा मान था. इस की विद्या में आदिवासियों को बड़ी श्रद्धा थी. इस के निर्णय पर वे शंका नहीं करते थे. आंख मींच कर इस की बात को मान लेते थे. इस को भेंट आदि भी वे लोग मुंह मांगी देते थे. उन का ऐसा विश्वास था कि इस के पास कोई ऐसी सिद्धि है, जिस के वल पर यह हर बात की तह में पहुंच जाता है.

वे लंगोटधारी भील आदिवासी भी इसी थोथे विश्वास के कारण खिंचे से यहां आ गए थे. इस बड़वा को मुंहमांगी भेंट दे कर वे गड़बड़ की जांच का आग्रह कर रहे थे.

भोले आदिवासियों की अंधश्रद्धा का यह बड़वा भरपूर लाभ उठाता था. अपनी लंवीचौड़ी तांत्रिक क्रियाओं द्वारा वह उन लोगों को सम्मोहित सा कर देता था. इस की

क्रियाएं देख कर उन की आंखें आश्चर्य से जैसे फटी की फटी रह जाती थीं. इसी लिए वे इस के निर्णयों पर कोई शंका नहीं कर पाते थे. इस के इलाज से उन्हें अगर लाभ हो जाता था तो वे इसे इस की सिद्धि का प्रताप सहज ही मान लेते थे. और यदि वांछित परिणाम नहीं निकलता था तो वे वारवार इस की शरण में आते थे. यह किसी खयाली भूत, चुड़ैल, डायन आदि का हौवा खड़ा कर के उन्हें आतंकित करता रहता था.

इस आतंक को उन के संस्कार सहज ही स्वीकार कर लेते थे, क्योंकि पीढ़ी दर पीढ़ी वे इसी अंधविश्वास में जी रहे थे. यह अंधविश्वास, यह अज्ञान, यह आतंक जैसे उन के खून में समाविष्ट हो गया था. ये खयाली भूत, चुड़ैल, डायन आदि इसी कारण उन्हें साक्षात से लगते रहे थे. इन से बचने के लिए वे वड़वा की ही शरण लेते रहे थे. यह वड़वा उन्हें कवच देता कवच के वावजूद यदि कोई विपत्ति उन्हें दवोच लेती थी तो वे इसे अपना दुर्भाग्य मानते थे, बड़वा की अक्षमता नहीं. वड़वा तो उन की निगाहों में हमेशा सक्षम ही रहता था.

उन की निगाहों में अंधविश्वास को कायम रखने के लिए वड़वा वड़ी चतुराई से काम लेता था. वह जब तव कुछ चमत्कार भी दिखाता रहता था. अपनी इस सम्मोहन क्रिया में उड़द के दानों को पानी में तैराने वाला चमत्कार वह प्रायः किया करता था. इस के लिए वह वड़े कौशल से कुछ दानों को भीतर से खाली कर देता था. इन खाली किए दानों पर वह पहचान के लिए चिह्न वना देता था. दूसरे दाने तो भारी होने से पानी में डूव जाते थे, किंतु ये चिह्नित दाने पोले होने के कारण डूव नहीं पाते थे. इन्हीं के सहारे वह चमत्कार दिखा कर अंधेरे में लाठी घुमा देता था. जिस पर भी वह लाठी पड़ जाती थी, उसे व्यर्थ ही लांछन भोगना पड़ता था. वह दौड़ादौड़ा बड़वा की ही शरण में आता था. बड़वा उस लांछन को धो देता था. उस का यह चमत्कार ऐसे ही छलप्रपंचों के आधार पर चल रहा था.

इस वार भी वड़वा ने इसी प्रपंच का सहारा लिया. इन 21 आदिवासियों को सम्मोहित करने के लिए उस ने अपनी विशिष्ट क्रिया प्रारंभ की. सारंगी वजाते हुए वह मंत्रनुमा अपने विशिष्ट गीत गाने लगा. गीत गातेगाते वह किसी अदृश्य शक्ति का आह्वान सा करने लगा. फिर वह एक कांसे के कटोरे में 'अभिमंत्रित' उड़द के दाने छोड़ने लगा. सभी आदिवासी मंत्रमुग्ध हो उस की क्रिया देखने लगे.

उन लोगों में से एकएक को वह वारीवारी से वुलाता जा रहा रहा था. वुलाए गए व्यक्ति से वह उस के परिवार के वालिग तथा विवाहित व्यक्तियों के नाम पूछने व 'अभिमंत्रित' उड़द के दाने पानी से भरे कांसे के उस वड़े से कटोरे में छोड़ जा रहा था.

अभी तक सभी के दाने खटाखट कटोरे में वैठते गए थे. सतरह व्यक्ति इस तरह निवट कर चैन की सांस ले रहे थे. वाकी के चारों व्यक्ति मन ही मन मना रहे थे कि वे भी इसी तरह निर्दोष सिद्ध हो जाएं. किंतु जव तक उन के परिवार के लोगों के नाम से छोड़े गए दाने कटोरे में वैठे नहीं थे, तव तक उन के मन में धुकधुकी सी लगी हुई थी, क्योंकि गड़बड़ करने वाला चोर अभी पकड़ में नहीं आया था.

अठारहवां नंवर सेमल्या का आया. उस ने मां, बाप, बूआ और खुद का नाम पहले वताया. इन चारों के नाम के दाने खटाखट कटोरे में डूव गए. वे निर्दोष सिद्ध हो गए, किंतु जैसे ही उस ने अपनी घरवाली मंगली का नाम लिया और बड़वा ने कटोरे में उस के नाम का उड़द का दाना छोड़ा कि वह दाना बजाय डूबने के पानी पर तैरने लगा. सेमल्या का चेहरा बुझे लैंप की तरह फक्क सा हो गया. बड़वा ने मंगली का नाम ले कर दूसरा दाना छोड़ा, तीसरा छोड़ा, किंतु ये सभी दाने पानी की सतह पर तैरते ही रहे, डूबे नहीं. सेमल्या ने अपना सिर पीट लिया. उधर बड़वा अपने विशिष्ट अंदाज में झूमते हुए बोला, "चोर पकड़ में आ गया. आ गया चोर पकड़ में."

एकाएक सन्नाटा सा छा गया. चोर क

दिल

दिल को क्याक्या
सकून होता है,
जब कोई आसरा
नहीं होता.

—जिगर

नाम सुन कर सभी आश्चर्यचकित रह गए, क्योंकि अपनी बस्ती में सेमल्या की घरवाली मंगली को सभी लोग पढ़ीलिखी होने के कारण बहुत मानते थे. रूपरंग, चालढाल, बातचीत सभी बातों में वह उन के लिए आदर्श सी थी. इसी लिए कोई कल्पना ही नहीं कर सकता था कि मंगली में ऐसा खोट हो सकता है.

उधर बड़वा उड़द के दानों को हाथ में थामे हुए कहे जा रहा था, "यही है चोर. इसी ने जच्चा और बच्चे को खाया है. पहले की भी मौतें इसी की करतूत हैं. यह पूरी डायन है."

बड़वा के ये शब्द पिघले सीसे की तरह सेमल्या के कानों में पड़ रहे थे. उस के पैरों के नीचे की धरती ही जैसे खिसक गई थी. वह किसी से भी आंखें नहीं मिला पा रहा था. खासकर पेमा की ओर देखने का तो उस में जैसे साहस ही नहीं रहा था. सब से नजरें चुराता हुआ वह मन ही मन कामना कर रहा था कि कितना अच्छा हो यदि यह धरती फट जाए और वह उस में समा जाए. वह जानता था कि 'डायन' के इस कलंक को धोना सहज नहीं है. आदिवासी समाज में ऐसी बुराई वाली स्त्री के साथ जीवन बिताना संभव नहीं है. वह भले ही ऐसी कलंकित स्त्री को बरदाश्त कर ले, किंतु दूसरे लोग उसे बरदाश्त नहीं करेंगे. वे तो उस की छाया से भी दूर भागेंगे. आंख की किरकिरी की तरह वह उन्हें चुभती रहेगी.

सेमल्या से आंखें मिलते ही बड़वा हाथ ऊंचा कर बोला, "जिस किसी की भी इच्छा हो वह इन दानों को आ कर देख ले."

मगर न तो सेमल्या, न कोई और ही उन दानों को देखने आगे आया. सेमल्या के साथ वाले तो उठ कर कमरे से बाहर चल दिए. सब से आखिर में सेमल्या भी उठ खड़ा हुआ.

बड़वा ने सेमल्या को संकेत से पास बुला कर कहा, "घबरा मत, तेरी घरवाली का भी इलाज हमारे पास है. हम यह दोष दूर कर देंगे."

मगर सेमल्या कुछ बोल नहीं पाया. उस का कंठ जैसे रुंध गया था. अपनी हरीभरी गृहस्थी पर गिरी इस गाज ने उसे संज्ञाशून्य सा कर दिया था. गुनाह के बोझ से जैसे वह दबा जा रहा था.

अपराधी की तरह सेमल्या अपने गांव वालों के पीछेपीछे चलता रहा. राह में किसी से भी वह एक शब्द भी नहीं बोला. बस एक ही प्रश्न उस के मस्तिष्क को इस समय मथ रहा था, 'अब क्या होगा? मेरी घरवाली तो अब मेरे घर में रह नहीं सकती. उसे पासपड़ोस वाले ही मार डालेंगे. खासकर पेमा तो उसे किसी हालत में जीवित नहीं छोड़ेगा. उस का जख्म अभी बिलकुल हरा है. वैसे भी इतने बड़े लांछन के बाद कोई कैसे सहन कर सकता है? डायन को कौन अपने आसपास रहने देगा? डायन को तो लोग कड़कती बिजली, मौत जैसा मानते हैं. मौत को भला कौन न्योता देगा? मंगली के पीहर वाले भी अब उस से नजरें चुराएंगे.'

तो फिर अब क्या किया जाए? यह प्रश्न सेमल्या अपनेआप से बारबार पूछने लगा. किंतु इस प्रश्न का कोई संतोषजनक उत्तर उसे नहीं मिल पा रहा था. लेदे कर बस एक

ही राह उसे नजर आ रही थी. वह राह थी—इसी वड़वा की शरण. यह वड़वा ही इस लांछन को धो कर उसे फिर से समाज में मुंह दिखाने लायक वना सकता था, उस की हरीभरी जिंदगी को वरबाद होने से वही बचा सकता था.

किंतु सेमल्या जानता था कि इस लांछन को धोने के लिए बड़वा खासी बड़ी रकम मांगेगा. मामूली रकम में वह डायन निकालने को राजी नहीं होगा. इतनी बड़ी रकम वह कहां से लाएगा?

सब से बड़ी वात तो यह है कि वड़वा की रकम का इंतजाम यदि उस ने किसी तरह कर लिया तो भी कठिनाई दूर नहीं होगी, क्योंकि मंगली इस वड़वा के यहां चलने को राजी नहीं होगी. उसे ऐसी वातों पर विश्वास ही नहीं है. वह जंव देखो तव इन वातों की खिल्ली उड़ाया करती है.

पिछली वार ढोरों में गलाघोंटू बीमारी फैलने पर जब गांव के लोग इस वड़वा को वुलाने गए थे तो मंगली ने इस का तीव्र विरोध किया था. वह पास के कसवे से जानवरों के डाक्टर को वुला लाई थी. बड़वा से इसी कारण मंगली की मामूली सी ठन भी गई थी. यह वड़वा उस दिन जातेजाते कह गया था, "मास्टरनी वाई, अपनी पढ़ाईलिखाई का ज्यादा घमंड मत करो. किसी दिन बीतेगी तो हमारे ही पास आना पड़ेगा. ये डाक्टर उस समय कुछ नहीं कर पाएंगे."

वड़वा के उस दिन के ये शब्द सेमल्या के कानों में गूंज रहे थे. वह मन ही मन डरता रहा था कि बड़वा कहीं कुछ अनिष्ट न करं दे. नाराज हो जाने पर ये लोग कुछ भी करने से नहीं चूकते. इसी लिए उस दिन वड़वा के सामने सेमल्या ने मंगली को खूब झिड़का था. अपनी घरवाली की ओर से उस ने बड़वा से माफी भी मांगी थी. वह उस दिन बड़वा को बस में बैठाने के लिए भी सड़क तक गया था. फिर भी वह उस की ओर से पूरी तरह से आश्वस्त नहीं हो पाया था.

अब जब वड़वा ने उस की घरवाली को सब के सामने चोर घोषित किया तो सेमल्या का माथा ठनका. उसे लगा कि वड़वा ने शायद पशुओं के रोग के वक्त का बदला लिया है. किंतु मन की इस वात को वह होंठों तक नहीं ला पाया. वह वड़वा से भी बिगाड़ना नहीं चाहता था. आदिवासी समाज उस की शक्ति के सामने अपनेआप को नगण्य सा पा रहा था. इसी लिए वह मन मसोस कर रह गया.

ऐसी स्थिति में घरवाली को वड़वा की शरण में जाने के लिए राजी करना सेमल्या को टेढ़ी खीर नजर आ रहा था. वह जानता था कि मंगली इस प्रस्ताव पर आगवबूला हो जाएगी और छूटते ही दो टूक प्रश्न करेगी, "इसी वूते पर तुम ग्रामसेवक का काम करोगे? तुम भी अगर इन की रौ में वह कर चलोगे तो फिर तुम्हारी पढ़ाईलिखाई बेकार है. छोड़ दो ग्रामसेवक का काम और बांध लो तुम भी इन की तरह लंगोटी. और नाचो वड़वा की डुगडुगी पर."

सेमल्या को लग रहा था कि गांव में पहुंचते ही वहां खासा कांड होगा. डायन का नाम सुनते ही मंगली बिफरे सांड की तरह भड़क उठेगी. वह इस लांछन को स्वीकार ही नहीं करेगी. बड़वा की सात पुश्तों को कोसती हुई वह खम ठोक कर मैदान में आ जाएगी और वड़वा को चुनौती देगी. गांव के लोगों को बुराभला कहेगी.

शंकित मन से सेमल्या जब अपनी झोंपड़ी के करीब आया तो उस ने देखा कि मंगली एक गठरी लिए द्वार के पास बैठी है. सेमल्या का माथा ठनका. वह ठिठक गया. गठरी उठा कर मंगली उस के पास आते हुए बड़े शांत स्वर में बोली, "वापस चलो. मुझे छोड़ आओ?"

सेमल्या समझ गया कि जंगल की आग की तरह बात फैल गई है. अतएव उस ने बड़ी संजीदगी से पूछा, "कहां छोड़ आऊं?"

"मेरे पीहर."

"पीहर?"

"हां."

"कल चलेंगे."

"नहीं, अभी चलो. मैं अब यहां नहीं रहूंगी."

"तुम्हारी नौकरी का क्या होगा?"

"जो होगा, देखा जाएगा."

"नौकरी छोड़ दोगी?"

"हां, तुम चलो मेरे साथ. दिन डूबने वाला है, इसलिए तुम्हें साथ ले रही हूं. नहीं तो मैं अकेली ही चली जाती."

"इसी लिए तो कह रहा हूं कि सुबह चलेंगे."

"नहीं, अभी चलो. यहां मेरा दम घुट रहा है."

"देखो, फजूल की जिद मत करो. पीहर जाने में कोई सार नहीं है."

"तो फिर क्या यहां घुटघुट कर मरने में सार है?"

"वहां भी घुटघुट कर ही मरना पड़ेगा. वे लोग भी इसी दुनिया के हैं."

"यहां से तो अच्छी ही रहूंगी."

"वे लोग तुम्हें आने देंगे?"

"नहीं आने देंगे तो पास ही नदी है, वहां डूब मरूंगी. तुम्हें सताने नहीं आऊंगी."

"देखो, मेरी बात को ठंडे दिल से सोचो, गुस्सा मत करो."

"गुस्सा मैं किस पर करूं? तुम मेरे साथ चलो. जिस मां ने मुझे पेट में नौ माह रखा है, वह अभी जीवित है. वह मेरे लिए द्वार बंद नहीं करेगी."

"मेरी सुनो तो..."

"मैं कुछ नहीं सुनूंगी, तुम्हें साथ नहीं चलना हो तो साफसाफ कह दो, मैं अकेली ही चली जाऊंगी."

गठरी ले कर मंगली चल दी. सेमल्या असमंजस की मुद्रा में कुछ देर खड़ा रहा. फिर वह तेज गति से कदम बढ़ाता हुआ मंगली की ओर चल पड़ा. मंगली के पीछेपीछे चलते हुए उस ने उस से पूछा, "बच्चों को किस के भरोसे छोड़ा है?"

उन की फिक्र मत करो, मौसी की बेटी को सौंप आई हूं."

सेमल्या घरवाली के पीछेपीछे चलता रहा.

सामने वाली पहाड़ी की ओट में सूरज का लाल गोला छिप गया था. क्षितिज पर लाली ही लाली फैल गई थी. चहचहाते पक्षी बड़ेबड़े वृक्षों पर आ बैठे थे. तालाब के फूल संध्या की लाली से जैसे प्रतिस्पर्धा सी कर रहे थे. सागौन की पत्रविहीन नंगी डालियां इस अंचल के निवासियों की तरह निरीह सी लग रही थीं.

पहाड़ी नाले में पानी पी कर जब दोनों आगे बढ़े तो सेमल्या ने अपने मन में घुमड़ती बात पूछने को भूमिका बांधी, "एक बात पूछूं."

"पूछो."

"बुरा तो नहीं मानेगी?"

"नहीं."

सेमल्या का मुंह फिर भी नहीं खुला. मंगली ने इसी लिए जैसे उसे याद दिलाया, "पूछो न, क्या पूछ रहे थे?"

सेमल्या ने मंगली के दोनों कंधों पर हाथ रख कर नजरें मिलाते हुए पूछा, "तू सच में डायन है क्या?"

खिलखिला कर हंसती हुई मंगली

याद

आप की याद अब
आए भी तो महसूस न हो,
दिल है देहात की
सोई हुई राहों की तरह.

—नाजिश प्रतापगढ़ी

बोली, "हां."

"देख, हंसी मत कर, सच बता?"

"सच ही कह रही हूं, तुम्हें भी खा जाऊंगी."

"मुझे अभी तक क्यों नहीं खाया?"

"दूसरी खुराक जो मिलती रही थी."

"क्या कह रही है?"

"सच कह रही हूं."

"मुझे तो विश्वास नहीं हो रहा है."

"क्यों नहीं हो रहा है?"

"मुझे तो यह सब बड़वे की लीला लग रही है."

मंगली की आंखों में चिनगारी सी भड़क उठी. वह गरजी, "तो फिर वहां उस बड़वे के सामने क्यों नहीं बोले?"

"बोलने से कोई फायदा नहीं था. नक्कारखाने में तूती की आवाज कौन सुनता?"

"तो फिर क्या उस बड़वे से हार मान लोगे?"

"हार तो हो ही गई. उस ने कलंक जो लगा दिया है. मेरी बात मान ले, मंगली, पीहर का रास्ता छोड़ कर उसी बड़वे की शरण में चल. अभी आखिरी गाड़ी मिल जाएगी."

मंगली ने कोई जवाब नहीं दिया. गहराते अंधेरे में वह पहाड़ पर चढ़ती रही. पीछेपीछे चलता हुआ सेमल्या बारबार कहता रहा, "पीहर में यह कलंक नहीं धुलेगा, मंगली. बड़वे के पास ही चली चल. उस से टकराने में हम लहूलुहान हो जाएंगे. अभी हमारा समाज पिछड़ा हुआ है. हमारी कोई नहीं सुनेगा. सब उसी की सुनेंगे."

मंगली के भीतर द्वंद्व सा छिड़ा हुआ था. पति की बातों में उसे सार नजर आ रहा था, किंतु बड़वा की शरण में जाना उसे अपने स्वाभिमान के विरुद्ध लग रहा था. इस कड़वी गोली को निगलने में वह अपनेआप को असमर्थ पा रही थी. लेकिन वह यह भी जानती थी कि बड़वा से टकराना सरल नहीं है. आदिवासी समाज में उस का बड़ा मान है. वह बहुत शक्तिशाली है और लोगों के मन में अंधविश्वास की जड़ें भी इतनी गहरी हैं कि उन्हें उखाड़ना आसान नहीं है.

डायन को ले कर ये लोग अनेक अंधविश्वासों से ग्रसित हैं जैसे—डायन की दृष्टि से पत्थर भी फट जाता है. लोगों की मान्यता ऐसी है कि दृष्टि में वह डायनपने का दोष अतृप्त लालसा से आ जाता है और यह दोष बड़वा के सिवा किसी के द्वारा दूर हो ही नहीं सकता. अदृश्य शक्तियों के बल पर बड़वा यह दोष दूर कर देता है, ऐसा उन लोगों का विश्वास है.

मंगली को कुछ सूझ नहीं रहा था कि ऐसे में वह क्या करे. बड़वा ने घर बैठेबैठे उस पर डायन का कलंक लगा कर ऐसा वार किया था कि वह बिलकुल असहाय हो गई थी. इस समाज में उस के लिए अब जैसे स्थान ही नहीं रहा था. बड़वे की शरण में जाने के अलावा जैसे सारे रास्ते ही बंद हो गए थे.

तभी मन ही मन कोई निश्चय सा कर के मंगली पलटती हुई बोली, "चलो."

सेमल्या ने चौंकते हुए पूछा, "कहां?"

"बड़वा के पास," मंगली ने नजरें झुकाते हुए कहा.

सेमल्या को जैसे अपने कानों पर विश्वास नहीं हुआ. उस ने इसी लिए फिर पूछा, "सच?"

"हां, जब और कोई रास्ता ही नहीं बचा है तो क्या करें?"

बच्चों की तरह पुलकित हो कर सेमल्या बोला, "चलो."

किंतु दोचार कदम जा कर ही सेमल्या ठिठक गया और कनखियों से मंगली को घूरते हुए बोला, "तू वहां पर कोई खुराफात तो नहीं करेगी न?"

मंगली ने आंखें चुराते हुए कहा, "कुछ भी करूं, तुम अभी से फिक्र क्यों कर रहे हो?"

"तो फिर मैं तेरे साथ नहीं चलूंगा."

मंगली कोई उत्तर दे, इस से पहले ही उन की नजर चढ़ाई पर आती सवारी गाड़ी पर पड़ गई. मंगली ने दौड़ते हुए कहा, "चलो जल्दी. मोटर आ रही है."

दोनों दौड़ते हुए सड़क तक पहुंचे. तब तक मोटर भी आ गई. उन्होंने रुकने का संकेत किया, गाड़ी रुक गई और वे दोनों उस में सवार हो गए.

मोटर की घरघराहट के बीच सेमल्या ने मंगली से पूछा, "वड़वा को देंगे क्या?"

अपने हाथ की अंगूठी की ओर इशारा करती हुई मंगली बोली, "तुम किसी बात की फिक्र मत करो. तुम तो बस चुपचाप बैठे रहना."

सारंगी पर विशिष्ट गीत गागा कर वड़वा डायन उतारने के लिए, किसी अदृश्य शक्ति का आह्वान सा करने लगा. बीचबीच में वह मंगली पर झाड़नी के लिए मोर के पंखों की झाड़ू हिलाता जा रहा था. कोई मंत्र सा बुदबुदाते हुए वह फूंक मारमार एक रंगीन नाड़े में गांठ भी देता जा रहा था. मंगली विना घूंघट किए वड़वा के सामने बेझिझक बैठी हुई थी. वह एकटक वड़वा की लीला देख रही थी. उस की आंखों में क्षोभ, रोष असमंजस आदि का मिलाजुला सा भाव था. इसलिए वड़वा चौंकचौंक कर बारबार उस की ओर देख रहा था.

तभी मंगली की आंखों से एकाएक जैसे चिनगारियां सी झड़ने लगीं. उस ने अपने होंठ काटते हुए अचकचा कर झाड़नी के लिए हिलाए जा रहे मोर पंखों को पकड़ लिया.

वड़वा ने चौंक कर पूछा, "यह क्या कर रही है, मास्टरनी बाई?"

मंगली ने दांत पीसते हुए कहा, "मैं अब तुझे खाऊंगी. कच्चा चबाऊंगी. मुझ पर डायन सवार हो गई है."

वड़वा ने घबराए से स्वर में कहा, "छोड़ मुझे."

मंगली ने पूरी ताकत से मोर पंखों की उस झाड़ू को तोड़ कर बिखराते हुए कहा, "होशियार हो जा. मैं अब तुझे जीवित नहीं छोड़ूंगी."

पीछे हटते हुए वड़वा अपनी सारंगी उठाने लगा. मंगली ने मुक्कों से तड़ातड़ सारंगी तोड़ दी.

द्वार के पास बैठा सेमल्या आश्चर्य से यह सब देख रहा था.

मंगली ने सारंगी तोड़फोड़ कर वड़वा के गले में झूलती सोने की कंठी मजबूती से पकड़ ली. वड़वा घबरा कर अपनी कंठी छुड़ाने की चेष्टा करने लगा. उस ने मंगली को पीछे धकेला भी, किंतु मंगली ने फिर भी कंठी नहीं छोड़ी. अपनी पूरी ताकत से वह कंठी खींचती ही रही. यों खींचे जाने से वड़वा के गले में दर्द होने लगा. वह चीखा, "छोड़, रांड."

किंतु मंगली पर जैसे जुनून सवार हो गया था. वह वड़वा को धकेल कर उस की छाती पर चढ़ बैठी और कंठी को थामे हुए बोली, "अब मैं तेरा खून पिऊंगी."

वड़वा ने घबरा कर सेमल्या को पुकारा, "सेमलसिंह, संभाल अपनी रांड को, यह मेरे वश की नहीं है."

सेमल्या अपनी जगह से उठा, किंतु मंगली ने हाथ के संकेत से उसे वापस बैठा दिया. वड़वा के गले की कंठी को बल देती हुई वह बोली, "निकाल न मेरी डायन? तू तो

खामोशी

शौक से आप
चुप रहें लेकिन,
खामोशी में भी तो
बात होती है.

—नूर हैदराबादी

बड़ा जानकार है न?"

बड़वा का गला कांपने लगा था. इस लिए उस ने घिघियाते हुए कहा, "तेरे हाथ जोड़े. तू कंठी छोड़ मेरा दम घुट जाएगा."

बड़वा ने अपनी सारी उंगलियां मुंह में दे कर दया की भीख मांगते हुए कहा, "मैं तेरे से हारा, मास्टरनी बाई. तू मुझे छोड़ दे."

पर मंगली ने बड़वा के बड़ेबड़े बाल पकड़ कर उस का सिर धरती पर मारते हुए पूछा, "तूने मुझे डायन क्यों बनाया?"

द्रवित स्वर में बड़वा बोला, "इस पापी पेट के लिए सब करना पड़ता है. तू मेरे रास्ते में रुकावट जो बन रही थी."

"अपने पेट के लिए तूने मेरी हरीभरी गृहस्थी में आग लगा दी. मुझ पर झूठा लांछन लगाते हुए तुझे जरा भी लाज नहीं आई."

"ग़लती हो गई, बाई. माफ कर दे. अपनी अंगूठी वापस ले ले और भी जो जुरमाना करना हो, कर ले. बस मुझे छोड़ दे.

"सब के सामने कबूल कर कि मैं डायन नहीं हूं. तभी मैं छोड़ूंगी. बोल, क्या कहता है?"

"मैं अपने सील सिक्के से प्रमाणपत्र दे दूंगा."

"सब बात कबूल करेगा उस में?"

"यह लिख दूंगा कि मैं ने डायन निकाल दी."

"नहीं, डायन थी ही नहीं, यह लिख."

"मेरा धंधा चौपट मत कर. बाई, अपना लांछन दूर करा ले. भैया सेमल्या, समझा इस को?"

सेमल्या अभी तक असमंजस की मुद्रा में बैठा हुआ था. बड़वा की इस याचना पर वह उठ खड़ा हुआ और अपनी घरवाली का हाथ थामते हुए बोला, "उठ, इतना ही बहुत है."

किंतु सेमल्या की घरवाली ने जिद ठान ली. बड़वा के गले की कंठी को बल देते हुए वह बोली, "नहीं, मैं तो इस का यह खोटा धंधा ही चौपट करूंगी ताकि यह भविष्य में मेरी तरह किसी और को न सताए."

सेमल्या और बड़वा दोनों ने मंगली को खूब समझाया. मगर वह टस से मस नहीं हुई. बड़वा ने इच्छित प्रमाणपत्र लिख कर दिया तभी उस ने कंठी छोड़ी.

बड़वा द्वारा दिए गए इस प्रमाणपत्र को सेमल्या और मंगली आदिवासी अंचल में लगने वाले हर हाट (साप्ताहिक बाजार) में सब को दिखाते फिरे. डोंडी पिटवा कर वे हर हाट में कंठी वाले बड़वा का भंडाफोड़ करते थे.

लेकिन इस आदिवासी अंचल में इस अनोखी डायन की चर्चा हैरत से होने लगी. मंगली की बात को लोग अब बड़ी उत्सुकता से सुनने लगे.

एक तलाक ऐसा भी

पूर्वी जरमनी में बर्लिन की एक महिला ने अपने पति को इस लिए तलाक दे दिया कि उस का पति घरेलू कामकाज इतना अधिक करता था कि उस के पास अपनी पत्नी के लिए कुछ करने के लिए समय ही नहीं बचता था.

काटबस के निकट लुइबेन कसबे की रहने वाली उक्त महिला ने अदालत में कहा कि पहले तो मैं ने उसे अपना आदर्श पति समझा था क्योंकि वह खाना पकाने, घर की सफाई, कपड़ों की धुलाई, बाजार से खरीदारी, बच्चों की देखभाल और यहां तक कि खिड़कियों की सफाई आदि के सभी कार्य को अच्छी तरह से कर लेता था, किंतु इन सब के बावजूद मैं पागल हो गई क्योंकि मेरे करने के लिए वह कोई काम छोड़ता ही नहीं था.

याद के बादल

वड़ा उत्पात करते हैं
तुम्हारी याद के
बादल
कभी खिड़की
खुले, सूने झरोखे से
झमाझम
आ बरसते पास धोखे से
विकल दिनरात करते हैं
तुम्हारी याद के
बादल.
कभी छत
धूल, आपूरित मुंडेरों पर
महज
हस्ताक्षर करते कनेरों पर
प्रबल आघात करते हैं
तुम्हारी याद के
बादल.

—इसाक 'अश्क'

और बिना कुछ खर्च किए लगातार दोनों पत्रिकाएं प्राप्त कीजिए

आप जानते ही हैं कि आप के पूरे परिवार की प्रिय पत्रिका सरिता शुरू से ही सामाजिक क्रांति के क्षेत्र में आगे रही है और अपने देशवासियों को विश्व के उन्नत समाजों के साथ कदम बढ़ा कर चलने के लिए अनेक आंदोलन चलाती रही है. इस के अलावा आप का स्वस्थ मनोरंजन करने में भी सरिता कभी पीछे नहीं रही. रूपरंग व साजसज्जा में भी सरिता अपने क्षेत्र की हर पत्रिका से बढ़चढ़ कर है.

सरिता की पूरक मुक्ता भी हिंदी की प्रमुख पाक्षिक पत्रिका है, जो आप के अपने जीवन को सरस, सजग व स्पष्ट बनाने में आप की सहायता करती है.

सरिता और मुक्ता के प्रकाशन के पीछे जो मूल दृष्टिकोण है, वह अन्य पत्रिकाओं की तरह व्यापारिक नहीं है. सरिता और मुक्ता तो अपने में ऐसी संस्थाएं हैं, जिन का लक्ष्य है हजारों वर्षों से गुलाम, विदेशियों द्वारा पांवों से रौंदे हुए हिंदू समाज को संसार में गर्व से सिर उठा कर चलने के लिए प्रेरणा देना. यदि हिंदू समाज ने अपना पुनर्गठन नहीं कि[illegible] फिर गुलाम होते देर नहीं लगेगी. [illegible] भी हजारों वर्ग मील भारतीय [illegible] विदेशियों के कब्जे में है.

किसी भी ऐसी लक्ष्य की पू[illegible] लिए बहुत बड़े पैमाने पर [illegible] सहयोग और सद्भाव की आव[illegible] होती है.

सरिता किसी सरकारी संस्था[illegible] पूंजीपति या राजनीतिक दल से [illegible] नहीं है, न ही यह किसी से किसी प्रक[illegible] सहायता स्वीकार करती है. यह [illegible] एक ही वर्ग की सहायता और वस्तु[illegible] निर्भर है. और वह हैं सरिता के [illegible] इन्हीं की प्रेरणा, सहायता व प्रोत्सा[illegible] सरिता बड़ी से बड़ी लड़ाई लड़ ले[illegible]

हिंदू समाज के नवनिर्मा[illegible] में भाग लीजिए

आज पत्रकारिता में बड़ी [illegible] सरकार का और देशी व वि[illegible]

राजनीतिक दलों का बड़े पैमाने पर हस्तक्षेप है. इस 'बड़े धन' के कारण स्वतंत्र पत्रकारिता प्रायः खत्म होती जा रही है. स्वतंत्रता बनाए रखने का केवल एक ही तरीका है—पाठक स्वतंत्र पत्रपत्रिकाओं को अपना कर उन्हें बल दें.

सरितामुक्ता विकास योजना इसी विश्वास पर निर्भर है. साथ ही आप को यह अभूतपूर्व सुविधा भी देती है: आप बिना कुछ खर्च किए एक वर्ष में सरितामुक्ता के 48 अंकों 9,000 से भी अधिक पृष्ठों की सामग्री से लाभ उठा सकेंगे.

सरितामुक्ता के प्रसारप्रचार की इस योजना से लाभ उठाने के लिए आप को सिर्फ यह करना होगा:

सरिता कार्यालय के पास 750 रुपए जमा करा दीजिए.

आप के ये रुपए आप की धरोहर के रूप में जमा रहेंगे.

आप जब भी चाहें, छः महीने का नोटिस दे कर अपने रुपए वापस ले सकेंगे. सरिता कार्यालय भी इसी प्रकार छः महीने का नोटिस दे कर आप की अमानत आप को लौटा सकेगा. जब तक यह रकम सरिता कार्यालय में जमा रहेगी, तब तक सरिता व मुक्ता बिना किसी शुल्क के आप को बराबर मिलती रहेंगी. जब यह रकम आप वापस मंगाएंगे या सरिता कार्यालय द्वारा आप को वापस कर दी जाएगी तो सरिता व मुक्ता भेजनी बंद कर दी जाएंगी.

आप यदि 750 रुपए एक साथ जमा न कराना चाहें तो तीन मासिक किस्तों में भेज सकते हैं. पहले मास 300 रुपए, दूसरे मास 300 रुपए और तीसरे मास 150 रुपए. आप की पहली किस्त प्राप्त होते ही सरिता व मुक्ता पाक्षिक के अंक आप के पास भेजे जाने लगेंगे. दूसरी और तीसरी किस्त ठीक एकएक महीने के अंतर से कार्यालय में पहुंच जानी चाहिए अन्यथा सरिता कार्यालय को अधिकार होगा कि तब तक भेजी जा चुकी प्रतियों का मूल्य काट कर आप की रकम आप को लौटा दे.

आप केवल सरिता या केवल मुक्ता भी केवल 400 रुपए जमा कर के प्राप्त कर सकते हैं.

विशेष उपहार
सात सौ पचास रुपए एक किस्त में जमा कराने पर पचास रुपए की पुस्तकें मुफ्त.

अपनी रकम सुरक्षित रख कर बिना कुछ भी व्यय किए सरितामुक्ता की इस विस्तार योजना में भाग लीजिए. मनीआर्डर, बैंक ड्राफ्ट व चैक "दिल्ली प्रेस" के नाम बनवाएं व इस पते पर भेजें:

दिल्ली प्रेस, ई-3, रानी झांसी मार्ग, नई दिल्ली-110055.

स्वतंत्र पत्रकारिता को प्रोत्साहन दीजिए

लेख ० ज्योतिर्मय

धर्म के नाम पर लूट

थोथी मान्यताओं और झूठे प्रचार का सहारा ले कर धर्म के धंधेबाज पुष्कर मेले के नाम पर भोली जनता को किस प्रकार लूटते हैं?
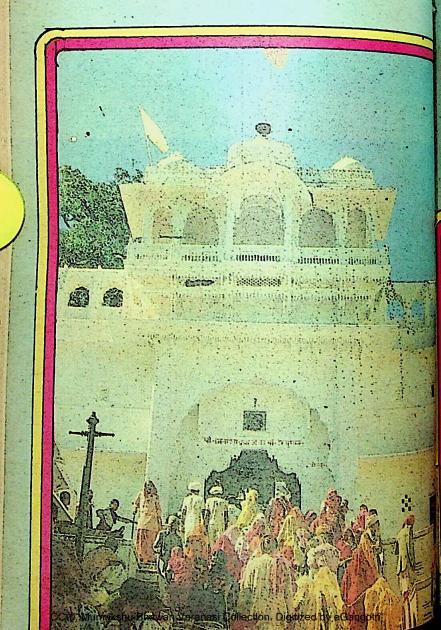
राजस्थान के पूर्वी अंचल में अरावली पर्वतश्रेणियों से घिरा एक शांत शहर है— अजमेर. यहां से लगभग 11 किलोमीटर दूर एक कसबा है— पुष्कर, जिसे तीर्थराज पुष्कर कहते हैं. ऐसी मान्यता है कि सभी तीर्थों की यात्रा कर ली जाए और पुष्कर की यात्रा न की जाए तो तीर्थयात्रा का पुण्य नहीं मिलता.

पुष्कर मेले के दो दृश्य (बाएं) पत्थर पर टिकी श्रद्धा व (नीचे) खिलौनों के सहारे पलती जिंदगी.

पुष्कर को अन्य तीर्थ स्थानों से अधिक या विशेष महत्त्व देने का कारण है यहां का ब्रह्मा का मंदिर. ब्रह्मा का मंदिर और कहीं नहीं है, इसलिए बारहों महीने यहां तीर्थ यात्रियों का आनाजाना बना रहता है. कार्तिक में तो यात्रियों की संख्या बहुत बढ़ जाती है. एकादशी से पूर्णिमा तक भरने वाले मेले में तो
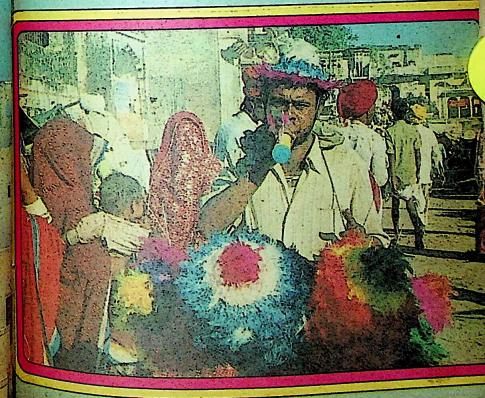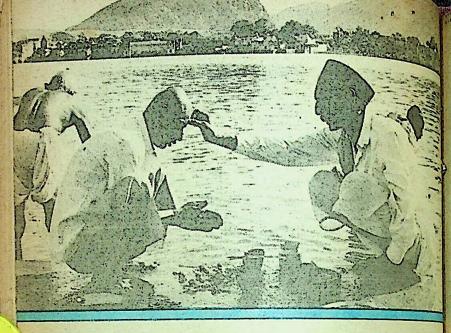
पिंडदान द्वारा जनता को धर्मभीरु बनाने का नाटक.

आखिरी दिन यात्रियों की संख्या दोढाई लाख तक पहुंच जाती है.

ब्रह्मा से संबंधित एकमात्र तीर्थ स्थान पुष्कर में यात्रियों के लिए सब से बड़ा आकर्षण का केंद्र है— पुष्कर ताल और ब्रह्मा मंदिर. दोनों का एकदूसरे से अनन्य संबंध है. पुष्कर ताल में नहा कर ब्रह्मा मंदिर में दर्शन करने से ही तीर्थ यात्रा का फल मिलता है. यह आम धारणा है. इन्हें कब बनाया गया और किस ने बनाया, इस संबंध में कोई प्रामाणिक जानकारी नहीं मिलती.

ब्रह्मा मंदिर के महंत लहरपुरी से पूछने पर उन्होंने इसे ढाई हजार वर्ष पुराना बताया. आरंभ से ही वर्तमान महंत के पूर्वज इस मंदिर की पूजा व्यवस्था देखते आए हैं. कहते हैं कि यहां ब्रह्मा मंदिर का निर्माण सर्वप्रथम आदि शंकराचार्य ने करवाया था, जो लगभग 1,200 वर्ष पहले हुए हैं. उन्हीं के द्वारा प्रवर्तित दशनाम संन्यासी संप्रदाय के पुरी महंत मंदिर की देखभाल करते हैं. मंदिर के वर्तमान महंत लहरपुरी ने बताया कि कभी हमारे पास सैकड़ों बीघा जमीन हुआ करती थी. कई गांवों की जागीर थी. अब तो केवल मंदिर की आमदनी से ही मंदिर के रखरखाव और उन के परिवार तथा कर्मचारियों के खर्च की व्यवस्था करनी पड़ती है.

मंदिर के नाम अभी भी लगभग 200 बीघा जमीन है, कुछ दुकानें हैं, मकान भी हैं. इन से होने वाली आमदनी के अलावा आय का सब से बड़ा स्रोत है— दान और चढ़ावा. मंदिर की सीढ़ियां शुरू होने से मूर्ति के सामने पहुंचने तक कोई दस जगह दानपेटियां रखी हुई हैं. किसी दानपेटी पर लिखा था— पुष्कर राज में अन्नकूट के लिए दान दीजिए, तो किसी पेटी पर लिखा था—गो सेवा के लिए दान दे कर पुण्य के भागी बनिए.

मेले के समय यात्रियों की संख्या सामान्य दिनों की अपेक्षा सौ गुना बढ़ जाती है. महंतजी के अनुसार ही सामान्य दिनों में डेढ़दो हजार यात्री आते हैं. मेले के दिनों में जो कार्तिक शुक्ला एकादशी से पूर्णिमा तक होता है, यात्रियों की संख्या दो लाख तक पहुंच

जाती है. विभिन्न स्थानों पर रखी दानपेटियों तथा इंद्र, पातालेश्वर, महादेव, कुबेर, नारद, पंचमुखी हनुमान, सूर्य और गणेश आदि देवताओं की प्रतिमा के सामने दर्शनार्थी कम से कम पांच रुपए तो चढ़ाता ही है. इस तरह केवल दान से ही इन पांच दिनों में 10 लाख रुपए की आय हो जाती है.

मुख्य मंदिर में ब्रह्मा की मूर्ति के सामने एक बड़ा सा थाल रखा हुआ है. उसे चारों ओर, से घेर कर बैठे मंदिर के कर्मचारी बराबर निगाह रखते हैं कि किस व्यक्ति ने क्या चढ़ाया है. लेखक कुछ समय तक वहां खड़े रह कर देखता रहा और दर्शनार्थी द्वारा चढ़ाई गई रकम तथा उसे प्राप्त होने वाले प्रसाद या चरणामृत में एक अजीब सामंजस्य पाया. एक व्यक्ति ने दो का नोट चढ़ाया. उसे चरणामृत मिल गया. दस का सिक्का डालने वाले एक ग्रामीण को ब्रह्मा की मूर्ति के आगे से हांक सा दिया गया. यह चतुर्दशी की घटना है.

महंत लहरपुरी दशनामी संप्रदाय के प्रतिष्ठित पीठाधीश हैं. गिनेचुने लोग ही उन से मिल पाते हैं. मुक्ता के छायाकार ने जब उन का फोटो लेना चाहा तो वह बड़ी आसानी से तैयार हो गए और उठ कर बरामदे में आ गए. अंदर कमरे में उन के कई चित्र प्रधान मंत्री श्रीमती इंदिरा गांधी, भूतपूर्व राष्ट्रपति श्री नीलम संजीव रेड्डी, कई केंद्रीय मंत्रियों, राजस्थान के मंत्रियों तथा विभिन्न राजनीतिक दलों के नेताओं के साथ लगे हुए थे. अर्थात लगभग सभी प्रतिष्ठित नेता यहां आ चुके हैं.

खैर, महंत लहरपुरी जब बाहर आए तो एक व्यक्ति दौड़ कर उन के पास आया और उन के पैरों में दसदस के दो नोट व एक रुपए का सिक्का रख कर एक तरफ खड़ा हो गया. लेखक ने उस से कहा कि वह एक तरफ हो जाए तो वह आग्रह करने लगा कि महाराज के साथ एक फोटो उस का भी खींच दिया जाए. बड़ी मुशकिल से उसे समझा सके कि हम अखबार वाले हैं और हमें केवल उन का ही फोटो चाहिए.

पुष्कर मेले में विदेशी पर्यटक—सिर्फ तमाशा देखने के लिए.

हार, बुंदे, चूड़ियां— महिलाओं का खास आकर्षण यानी किसी भी बहाने खरीदारी.

फोटो लेने में तो कुछ ही क्षण लगे, किंतु महंतजी करीब पांचसात मिनट तक बरामदे में ही टहलते रहे. इतनी देर में 12 व्यक्तियों ने उन के चरण छुए और किसी ने दस तो किसी ने पांच रुपए उन के चरणों में रखे. अंदर जाने के बाद भी लोग उन्हें प्रणाम करने आते रहे. जितने भी लोग हमारे देखतेदेखते प्रणाम करने आए, उन में से एक भी खाली हाथ नहीं था और न ही किसी ने पांच रुपए से छोटा नोट उन के पैरों पर रखा. इसी से अंदाज लगाया जा सकता है कि चढ़ावे, मकान और दुकानों के किराए तथा जमीन से होने वाली आमदनी के अलावा महंतजी की मुलाकातें भी खासी कमाऊ होती हैं. एक मोटा सा अंदाज है कि मंदिर की आमदनी कम से कम 20 लाख रुपए सालाना है.

ब्रह्मा का वर्तमान मंदिर लगभग 175 साल पहले बनाया गया था. यों यहां ब्रह्मा की प्रतिष्ठा 1,200 साल पहले हुई बताई जाती है, परंतु मध्य युग में इस मंदिर को मुसलमान शासकों ने गिरा दिया और ब्रह्मा की मूर्ति भी तोड़ डाली. सन 1719 में पहली बार नए सिरे से जयपुर की एक ब्राह्मण स्त्री ने यहां ब्रह्मा की मूर्ति प्रतिष्ठापित की और उस के 99 वर्ष बाद दौरतराम सिंधिया के एक मंत्री ने मंदिर बनवाया.

विवादों से घिरा गायत्री मंदिर

इसी मंदिर में ब्रह्मा की मूर्ति के पास ही गायत्री की प्रतिमा है. ब्राह्मण संध्यावंदन के समय इसी गायत्री की उपासना करते हैं. प्रसिद्ध वेदमंत्र गायत्री इसी देवी की प्रार्थना में रचा गया माना जाता है. उसी गायत्री का जन्मस्थान होने के कारण भी यह स्थान सभी तीर्थों में विशिष्ट माना जाता है. ब्रह्मा की तरह गायत्री का भी मंदिर केवल यहीं है लेकिन अब सैकड़ों जगह गायत्री के मंदिर बन गए हैं. मथुरा की एक संस्था गत 40 वर्षों से गायत्री का प्रचार कर रही है और उस संस्था या संप्रदाय के अनुयायियों ने जगहजगह

गायत्री मंदिर बनवाए हैं.

इस संस्था का एक मंदिर 'गायत्री शक्तिपीठ' के नाम से अजमेर में भी है. एक और गायत्री मंदिर है, जो उसी जगह से कुछ दूर हट कर बना है. पहले जहां पुष्कर में गायत्री पर ब्रह्मा मंदिर के महंत का ही एकाधिकार था, वहां अब तीनतीन महंत तैयार हो गए हैं, और गायत्री का जन्मस्थान समझे जाने के कारण तीर्थ यात्रियों की जेबें हलकी करवाते हैं. मेले के समय नए बने गायत्री मंदिर में एक हवन चल रहा था. बड़ी संख्या में यात्री वहां भी जा रहे थे और शक्तिभक्ति के अनुसार दान चढ़ा रहे थे.

नए बने मंदिर का एक कार्यकर्ता हमें अजमेर बस स्टेंड पर ही मिल गया. बिना किसी परिचय के उस ने हम से बातचीत शुरू कर दी और इस बात के लिए प्रेरित करने लगा कि पुष्कर बस स्टेंड के पीछे ही गायत्री मंदिर है. सब से पहले हम वहीं जाएं. हमें मालूम था कि पुष्कर में गायत्री की प्रतिमा केवल ब्रह्मा मंदिर में ब्रह्मा की मूर्ति के ही पास है और ब्रह्मा का मंदिर बस स्टेंड से दूर है. कुछ देर बाद वही व्यक्ति अन्य लोगों को भी इस तरह की सूचना देने लगा. इतना ही नहीं जब बस चल पड़ी तो वह आदमी भी बस में चढ़ गया और लोगों को नए गायत्री मंदिर के बारे में बताने लगा.

पुष्कर के बस स्टेंड पर वह व्यक्ति अपने साथ 10-12 लोगों को मंदिर की ओर लिए जा रहा था. इस मंदिर के बारे में हम ने ब्रह्मा मंदिर के एक पुजारी से पूछा तो उस ने बताया कि गायत्री का असली मंदिर तो यही है. लक्ष्मी के मंदिर विष्णु के साथ होते हैं. सीता के राम के साथ, पार्वती के शंकरजी के साथ तो गायत्री का मंदिर बिना पति के अलग से कैसे हो सकता है.

लौटते समय हम लोग नए गायत्री मंदिर में गए. वहां भी एक पुजारी से, जिस ने अपने कुरते पर एक मशाल का बिल्ला लगा रखा था, लेखक ने यही सवाल किया तो वह शास्त्रीय व्याख्याएं करने लगा. उन व्याख्याओं को यहां देना अनावश्यक है. अलबत्ता दर्शनार्थी वहां भी काफी संख्या में आजा रहे थे. कहने की आवश्यकता नहीं कि मंदिर की जरूरतें और दानपुण्य का महत्त्व बता कर यहां भी लोगों को चढ़ावा चढ़ाने के लिए प्रेरित किया जा रहा था.

पुष्कर ताल

ब्रह्मा मंदिर के सामने ही स्थित है— पुष्कर ताल. उस के चारों ओर पहाड़ियों से झरझर कर पानी उस में आता रहता है. लगभग 10 मीटर गहरे इस ताल के चारों ओर 52 घाट हैं, किंतु बाराह घाट, गऊ घाट और ब्रह्म घाट अन्य घाटों की अपेक्षा अधिक महत्त्वपूर्ण माने गए हैं. मुगल सम्राट जहांगीर ने भी यहां की यात्रा की थी और वह इस ताल की सुंदरता से प्रभावित हुआ था. उस ने

ब्रह्मा मंदिर : धार्मिक आस्थाओं से जकड़े लोगों का केंद्र?
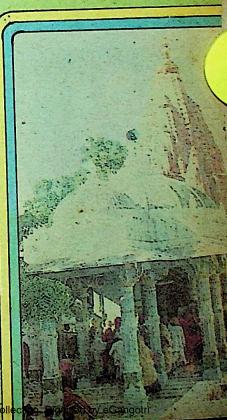
घाट पर स्नान करती औरतें.

पुष्कर ताल के निकास मार्ग पर लाल पत्थरों के दो सुंदर मंडप बनवा दिए थे.

सन 1809 में मराठा सरदारों ने ताल का पुनर्निर्माण कराया. इस ताल में प्रतिवर्ष लाखों लोग आते और स्नान करते हैं, परंतु किसी भी घाट पर स्त्रियों के लिए नहाने की अलग से कोई व्यवस्था नहीं है. देहातों से आने वाली सरल स्वभाव की स्त्रियां और पुरुष एकदूसरे से आंख का परदा रखते हुए स्नान करते हैं. किंतु विदेशी पर्यटकों और शहरी सैलानियों के लिए ये दृश्य मनोरंजन का साधन बन गए हैं. जहांतहां उन्हें कैमरा लटकाए घूमते देखा जा सकता है.

फोटो लेने पर प्रतिबंध

कुछ समय पहले स्थानीय नागरिकों ने घाट पर नहाती हुई स्त्रियों के फोटो खींचने पर रोक लगाने की मांग की थी. घाट पर स्नान दृश्य के फोटो लेने पर प्रतिबंध लगाया तो गया किंतु हम ने केवल पूर्णिमा के दिन ही गऊ घाट, ब्रह्म घाट, वाराह घाट, नृसिंह घाट पर पुलिस वालों को फोटो खींचने से रोकते हुए देखा.

एक जगह कोई सज्जन फोटो लेने आमादा से थे. किसी भी कीमत पर वह फोटो लेना चाहते थे. पुलिस वाले को उन्होंने और एक स्थानीय समाचारपत्र की प्रति कर कहा कि अगर फोटो लेने की मनाही है इस अखबार में यह फोटो कैसे छपा.

इस के अलावा भी उस व्यक्ति ने कई तरह की बातें बना कर शायद फोटो के लिए पुलिस वाले को मना लिया. हम जब थोड़ी दूर जा कर वापस आ रहे वही व्यक्ति घाट की ओर से कैमरा लिए रहा था, जब कि पुलिस वाले जहां बैठे थे चारपांच कैमरे रखे थे. स्पष्ट था कि कैमरों के मालिक घाट पर गए हुए थे.

घाटों पर स्नान करने और कपड़े पहनने के बाद यात्री जैसे ही जाने के लिए तैयार हाथ में एक छोटी सी कटोरी लिए रोली घुली हुई रहती, पंडे आगे आ यात्री जब तक कुछ समझें, तब तक वे माथे पर टीका लगा चुका होता और रुपए सवा रुपए का लेनदार हो जाता. हम कई घाटों का जायजा लिया. कहीं भी यात्रि को टीका लगवाने से एतराज करते नहीं देखा

फिर यह आपाधापी क्यों? एक पंडे से पूछा तो उस ने कहा, "हमेशा से हम ही इस घाट पर जजमानों की सेवा करते रहे हैं. अब दूसरे लोग घुसने लगे, इसलिए थोड़ा सावधान रहना पड़ता है."

दूसरे से पूछा तो उस ने भी घुमाफिरा कर यही उत्तर दिया. अगर संबंधित घाट पर जजमानी करना किसी का पैतृक अधिकार है तो वह उस का विरोध क्यों नहीं करता?

इस सवाल का जवाब था कि झगड़ा करेंगे तो हम दोनों झगड़े में उलझे रहेंगे और दूसरे लोग जजमान के माथे पर रोली पोत जाएंगे.

पिंडदान के बहाने

गया की तरह पुष्कर में भी पितरों के श्राद्ध तर्पण का विशेष महत्त्व है. राजस्थान, मध्य प्रदेश, महाराष्ट्र के लोग तथा गया की अपेक्षा पुष्कर को सस्ता समझने वाले व्यक्ति अपने पूर्वजों का पिंडदान करने यहीं आते हैं. कार्तिक पूर्णिमा को तो इन तीर्थ पुरोहितों को फुरसत ही नहीं होती. आम दिनों में ये लोग पुष्कर के अन्य दर्शनीय मंदिरों की यात्रा करा देते हैं, किंतु कार्तिक पूर्णिमा को इस काम के लिए तैयार होने वाले शायद ही मिलेंगे, क्योंकि इस दिन तर्पण कराने वालों की संख्या काफी बढ़ जाती है.

एक घाट पर देखा कि पंडा तर्पण के लिए आए व्यक्ति से पहले ही दक्षिणा तय कर रहा था. अकसर यह होता है कि पंडे अपने जजमान से तर्पण और पिंडदान की विभिन्न क्रियाओं के बीच में ही सवा रुपए, पांच रुपए, 11 रुपए चढ़ाने के लिए कहते हैं. यहां भी ऐसा ही होता है किंतु जजमान अधिक और पंडे कम हो जाने के कारण पहले से यह तर्पण की फीस तय हो जाती है. एक व्यक्ति को जो अपने पिता का पिंडदान करने आया था, हमारे सामने एक पंडे ने इसलिए झिड़क कर अलग कर दिया कि वह अपने पास पैसे कम होने की बात कह रहा था और फीस में कुछ कमी चाहता था.

ब्रह्मा मंदिर के अलावा पुष्कर में वाराह मंदिर, अटमटेश्वर महादेव, रमा वैकुंठ और रंगनाथजी के पुराने मंदिर हैं. रमा वैकुंठ मंदिर के बाहर बोर्ड लगा हुआ है कि यह प्राइवेट मंदिर है और इसे मारवाड़ी सेठ बांगड़ ने अपने परिवार वालों के लिए पूजा करने के उद्देश्य से बनवाया था. लगभग 50 लाख की लागत से बने इस मंदिर में भगवान के सोनेजागने और लोगों को दर्शन देने का समय नियत है. फिर भी पुजारी जब चाहे मंदिर बंद कर देते हैं. इस से दर्शकों की भीड़ बढ़ जाती है. मेले के दिनों में तो इसी कारण यहां इतनी भीड़ हो जाती है कि मंदिर के सामने से निकलने में एक घंटा लग जाता है.

कार्तिक पूर्णिमा पर स्नान का विशेष महत्त्व होने के कारण ही यहां एकादशी से पूर्णिमा तक मेला लगता है. कहा जाता है कि

धर्म के नाम पर रोटी का बंदोबस्त.
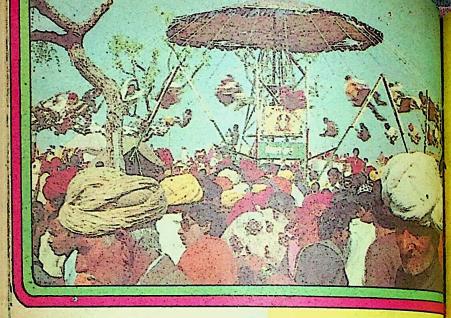
पुष्कर मेले में मनोरंजन के भी भरपूर साधन होते हैं.

इन्हीं दिनों ब्रह्मा ने यहां यज्ञ किया था. अस्तु, इन दिनों यहां आने, पुष्कर ताल में स्नान करने और ब्रह्मा मंदिर में दर्शन करने के लिए दूरदराज से लोग काफी समय पहले से योजना बनाने लगते हैं. लेकिन उन्हें यहां क्या मिलता है, इस का उत्तर शायद वे भी नहीं जानते. कई लोगों से इस बारे में पूछा तो पशुमेले में जानवर बेचने या खरीदने के लिए आने वालों के अलावा अन्य लोगों ने घुमाफिरा कर यहां आने का उद्देश्य पुष्कर में स्नान करना ही बताया.

इस से क्या होगा? इस प्रश्न के उत्तर में लोग कहते, "हमें यह तो नहीं मालूम, पर हम लोग हर साल यहां आने की कोशिश करते हैं. जब आ जाते हैं तो अपना भाग्य सराहते हैं. नहीं आ पाते हैं तो जी में थोड़ा दुख होता है."

पुष्कर ही क्यों किसी भी तीर्थ की यात्रा का उद्देश्य परंपरा के प्रति अंधभक्ति ही हो सकता है. उसी के कारण लोग सैकड़ों रुपए खर्च कर यहां जाते हैं. जब कि उसी पैसे का उपयोग अपनी नितांत जरूरी आवश्यकताओं को पूरा करने या घर उपयोगी साधन लाने के लिए किया जा सकता है.

पुष्कर तीर्थ में एक खास बात और देखने में आई कि यहां विदेशी लोग बड़ी संख्या में आते हैं. पर्यटन विभाग ने उन के लिए अलग से पर्यटक गांव बना रखा है. कहने को तो इस गांव में कोई भी ठहर सकता था, किंतु यहां ठहरना इतना महंगा है कि केवल तीर्थ यात्रा के उद्देश्य से आने वाले लोगों के बस का नहीं हो सकता. खैर, यह तो खर्च की बात हुई. पर्यटक गांव में किसी सामान्य भारतीय के लिए घुसना भी वर्जित था. इस का कारण समझ में नहीं आया.

हम लोग जब पर्यटक गांव में जाने लगे तो प्रवेशद्वार पर ही हमें रोक लिया गया. पूछा गया कि किस की अनुमति है. अपना परिचय देने के बाद द्वारपाल की तरह खड़े एक पहरे वाले ने प्रवेशद्वार के पास ही बने एक तंबू की ओर इशारा किया और कहा कि वहां से अनुमति ले लें.

वहीं एक अधिकारी से पर्यटक गांव में भारतीयों को न घुसने देने का कारण पूछा गया तो वह बोला, "इस की कोई खास वजह नहीं है. अंदर ज्यादातर लोग विदेशी या महत्त्वपूर्ण व्यक्ति (विदेशी दूतावासों के लोग) हैं. भारतीयों की आदत है कि वे विदेशियों को घूरघूर कर देखते हैं, इसलिए हर किसी को अंदर नहीं जाने दिया जाता, क्योंकि इस प्रकार विदेशियों पर हमारी सभ्यता का गलत असर पड़ता है.

उन अधिकारी के अनुसार भारतीय तो केवल घूरघूर कर ही देखते हैं, किंतु विदेशी पुष्कर ताल के आसपास किसी तरह नहाती हुई जवान राजस्थानी औरत का फोटो खींचने के लिए मंडराते रहते हैं. सो क्या विदेशियों को इस तरह के फोटो खींचने देना उचित है?

धर्म के नाम पर भीख

पुष्कर बस अड्डे से मंदिर और मेले तक पहुंचने के लिए पाच और कहींकहीं सात फीट चौड़ी सड़क से जाना पड़ता है, वापसी के लिए भी वही रास्ता है. कहींकहीं गलियां फूटती हैं. ऐसे चौराहों पर विकलांग भिखारी, कोढ़ी, साधु तो कतार सी बांधे पड़े ही हुए थे, पेशेवर भिखारी भी देवीदेवताओं का रूप बनाए लाइन लगा कर खड़े थे. इतना ही नहीं सात फीट चौड़ी सड़क के बीच में भी कोढ़ी, लूलेलंगड़े भिखारी रास्ता रोके पड़े थे. पर्यटन विभाग की दृष्टि में आम भारतीय को पर्यटक गांव में जाने देने से तो विदेशियों पर गलत असर पड़ सकता है, पर वहां की सड़कों पर भिखारियों के ये दृश्य क्या अच्छा असर डालते होंगे?

मेले में आए लोग जिन्हें पुष्कर आने का उद्देश्य भी नहीं मालूम.

राजस्थान में पिछले साल सूखा पड़ा था. मेले में आने वाले दुकानदार, मंदिरों के पुजारी, अधिकारी और रिकशे, तांगे वाले तक चौदस के दिन तक यह कह रहे थे कि इस बार लोग रुपए में चार आने बराबर भी नहीं आए. अर्थात उस समय तक यात्रियों की संख्या पिछले वर्षों की तुलना में 25 प्रतिशत भी नहीं थी. लेकिन पूर्णिमा के दिन यात्रियों की संख्या बेहद बढ़ गई. उस शाम को जब रिकशे, तांगे वालों और दुकानदारों तथा स्थानीय नागरिकों से पूछा गया कि मेला कैसा रहा अर्थात यात्री कम आए हैं या पिछले सालों की तरह तो उत्तर मिला कि शुरू के चार दिनों
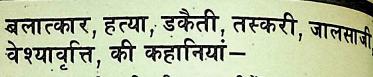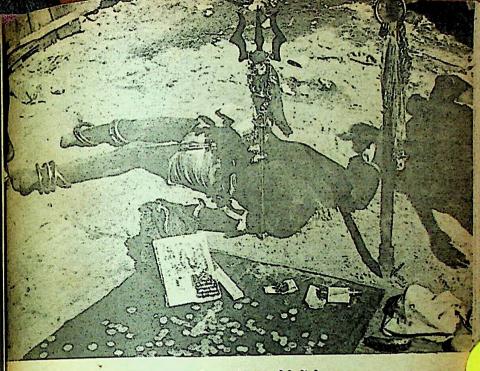
चमत्कार या जनता को भयभीत कर पैसे ऐंठने का नाटक.

घाट के किनारे खड़ी जनता

तक तो लोग कम रहे, पर अब कसर पूरी हो गई है.

हो सकता है अन्य सालों में यात्री पांचों दिन ठहरते हों. पर पिछले साल सूखे के कारण केवल एक दिन के लिए ही आए, लेकिन आए तो सही. आने वालों की संख्या लगभग दो लाख बताई जाती थी. एक व्यक्ति के आनेजाने का औसत खर्च 50 रुपए भी मानें तो इस का मतलब यह है कि दो लाख व्यक्तियों ने मेला देखने पर एक करोड़ रुपए फूंक दिए. यह रुपया बस भाड़े के रूप में या तो सरकारी जेब में गया अथवा चढ़ावे और दान के रूप में मंदिरों या धर्म के धंधेबाजों की जेब में.

निरंतर प्रचार द्वारा धर्म, पुण्य और तीर्थ स्नान के संबंध में फैलाए गए जहर का ही परिणाम है कि बिना सूचना, पूर्व घोषणा के लोग जरूरी काम छोड़ कर भी पुष्कर जैसी जगहों पर पहुंच जाते हैं, जहां जाने का उद्देश्य भी उन्हें नहीं मालूम. •

फिर ऐसे इक बार मिलो

पहली बार मिले थे जैसे फिर ऐसे इक बार मिलो
मैं दीवाना बन कर देखूं तुम दीवानावार मिलो.
सुर्ख दुपट्टा तन से सरके अंग सलोना बिखरा जाए
मन में चमके प्यार का सूरज चेहरा जैसे निखरा जाए,
होंठों पर हों फूल खुशी के वन के मस्त बहार मिलो
मैं दीवाना बन कर देखूं तुम दीवानावार मिलो.
बहकेबहके पांव पड़ें और सांस भी जैसे रुकरुक जाए
बोझ बढ़े जब शर्मोहया का पतली कमर भी झुकझुक जाए,
कुछ तो बोलो, बांहें खोलो, वन के गले का हार मिलो,
पहली बार मिले थे जैसे फिर ऐसे इक बार मिलो

—इब्राहीम 'अश्क'
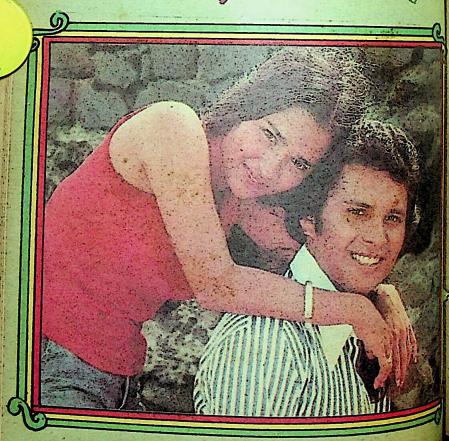
इस स्तंभ के लिए अपने रोचक संस्मरण भेजिए. उन्हें आप के नाम के साथ प्रकाशित किया जाएगा और प्रत्येक प्रकाशित संस्मरण पर 15 रुपए एवं सर्वोत्तम पर 50 रुपए की पुस्तकें पुरस्कार में दी जाएंगी. संस्मरण के साथ अपना नाम व पता अवश्य लिखें.

भेजने का पता : संपादकीय विभाग, मुक्ता, ई-3, रानी झांसी मार्ग, नई दिल्ली-110055.

हमारे विद्यालय में एक शिक्षक थे. हम सभी उन की कंजूसी तथा एकांतप्रियता का हमेशा मजाक उड़ाते थे. एक बार एक छात्र के पिता का देहांत हो गया. उस की मां पहले ही चल बसी थी. हम ने आपस में चंदा एकत्र कर के उस की मदद करने की सोची, पर शिक्षक महोदय ने एक रुपया भी देने से इनकार कर दिया. इस पर सभी ने उन्हें काफी भलाबुरा कहा पर वे चुपचाप सुनते रहे.

दूसरे दिन हम ने देखा कि उस छात्र को उस के सामान एवं छोटी बहन के साथ वही शिक्षक महोदय अपने घर ले आए. आज भी वे दोनों भाईबहन उन्हीं के साथ रहते हुए पढ़ रहे हैं. उन का कहना था—सौ डेढ़सौ चंदा कर के दे देने से उन का जीवन नहीं बन जाता, वरन पढ़ाई छोड़ कर बच्चे पता नहीं कहांकहां भटकते. उन के विचार सुन कर बाद में हम सब को बड़ी आत्मग्लानि हुई.

—सतीशकुमार वर्मा **(सर्वोत्तम)**

*

हमारे वनस्पति शास्त्र के प्राध्यापक बहुत ही सिद्धांतवादी एवं समय के पाबंद हैं. एक दिन जब वह हमारी कक्षा लेने आए तो उन्होंने देखा कि कक्षा की खिड़की का शीशा किसी शरारती लड़के ने तोड़ दिया था, तथा कांच के टुकड़े कक्षा में बिखरे पड़े थे.

यह देख कर उन्होंने छात्रों से कांच के टुकड़े हटाने को कहा, परंतु सभी ने उसे अनसुना कर दिया. कक्षा समाप्त होने पर वे स्वयं कांच के टुकड़े बीनने लगे. यह देख कर सभी छात्रों के सिर शर्म से झुक गए और सभी कांच के टुकड़े इकट्ठे करने में जुट गए. —निलेश पारिख

*

हमारे हिंदी के अध्यापक को पान एवं तंबाकू खाने की काफी आदत थी. जब भी पढ़ाने आते, पान एवं तंबाकू खा कर ही आते थे. एक दिन उन्होंने मेरी हिंदी की पुस्तक ली और सूरदास की कविता पढ़ाने लगे. कक्षा समाप्त होने पर उन्होंने मेरी पुस्तक वापस की और कहने लगे, "माफ करना, कल मैं तुम्हारे लिए दूसरी पुस्तक ला दूंगा." मैं ने पुस्तक खोल कर देखी तो बीच के पृष्ठ पान से लाल हो गए थे. उस दिन के पश्चात फिर कभी भी अध्यापक महोदय पान खा कर पढ़ाने नहीं आए.

—विजय श्रीवास्तव

*

जब मैं कालिज का छात्र था. उस समय हमारा एक सहपाठी प्राध्यापक को तंग करने के लिए पीछे बैठ कर तरहतरह के जानवरों की आवाज निकालनी शुरू कर देता था.

एक दिन जब वह कुत्ते की आवाज निकाल रहा था तो कक्षा में उपस्थित हिंदी के प्राध्यापक हंसने लगे, "देखो, कुत्ता कितनी प्यारी आवाज निकाल रहा है." इस पर हम सभी हंस पड़े परंतु उस लड़के का मुंह देखने लायक था.

—अर्जुनदेव वर्मा •

पुष्कर मेले में सुबहशाम

लेख ० प्रतिनिधि

दैनिक जीवन में काम आने वाली सभी चीजें गांव वालों को अपने ही गांव में हमेशा सुलभ नहीं होतीं, जबकि मेलों में घोड़े, बैल, गाय, बकरी जैसे जानवरों और लाठी से कंघी तक निजी उपयोग में आने वाली चीजों की खरीदारी आसानी से की जा सकती है. इन चीजों के अलावा मेलों में
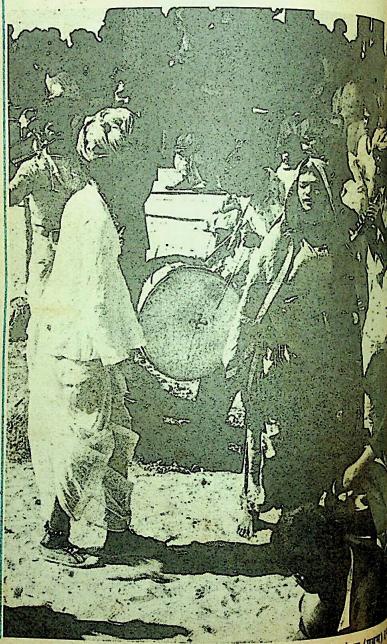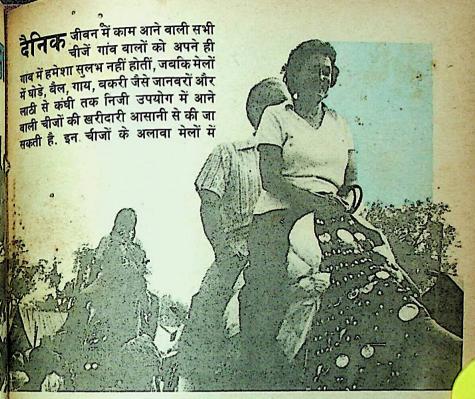
मेले में आए सैलानियों के लिए ऊंट की सवारी एक नया अनुभव होती है.

सरकस, चलतेफिरते चिड़ियाघर, कठपुतलियों के खेल, नाटक, नौटंकी, टूरिंग टाकीज और झूले जैसे मनोरंजन के ढेरों साधन उपलब्ध रहते हैं. इस तरह खरीदारी और आमोदप्रमोद की सुविधा प्रदान करने वाले मेले गांव वालों के लिए विशेष महत्त्व रखते हैं– रोजमर्रा के काम आने वाली चीजें खरीदने की दृष्टि से भी और साल भर में एकाध बार मिलने वाले मनोरंजन के मौके की दृष्टि से भी.

अलगअलग जगहों पर होने वाले मेले स्थान, विशेषता और आकर्षण की दृष्टि से भले ही भिन्न हों, परंतु एक अर्थ में वे सभी समान हैं कि उन में ग्रामीण जिंदगी पूरे हर्ष और उल्लास के साथ व्यस्त नजर आती है. यह व्यस्तता किसी तरह का तनाव पैदा नहीं करती बल्कि हर्ष से भर उठती है. यह बात मेले में आए लोगों की दिनचर्या देख कर अच्छी तरह अनुभव की जा सकती है.

पुष्कर मेले का धार्मिक दृष्टि से बड़ा महत्त्व है. इस महत्त्व के कारण हजारों लोग कार्तिक में यहां आते हैं. धार्मिक महत्त्व के कारण यात्रा करने वाले लोग तो दोचार घंटे या ज्यादा से ज्यादा एक दिन सुबह से शाम तक रुक कर चले जाते हैं, लेकिन मेले का आनंद लूटने के लिए आए लोग तीनचार दिन तक ठहरते हैं. आइए, देखें उन की दिनचर्या क्या होती है.

आसपास के गांव से आने वाले लोग मेले में पहुंचने के लिए प्रायः बैलगाड़ी या ऊंटगाड़ी का उपयोग करते हैं. अव्वल तो उन के गांव तक बसें चलती ही नहीं और चलने लगें तो, "क्या वे बस से आएंगे," यह पूछने पर एक ग्रामीण ने बताया, "बस में बैठ कर तफरीह कहां होती है? कहीं जल्दी हो तो बस से जाएं भी. मेले में तो आते ही इसलिए हैं कि

उसे आराम से देख सकें."

वैलगाड़ी या ऊंटगाड़ी में जितने दिन मेले में रुकना हो, उतने दिन तक चलने लायक खानेपीने का सामान, कपड़ेलत्ते और बिस्तर वगैरह होते हैं. कोई सुविधाजनक स्थान देख कर लोग अपना डेरा डाल देते हैं. पांचसात दिन के लिए वही स्थान उन लोगों का निवास स्थान बन जाता है. गांव में व घर सूना छोड़ कर नहीं आते. दोतीन प्रौढ़ व्यक्ति घर पर ही रहते हैं. बाद में मेले से दोतीन लोग मेला देख कर वापस चले जाते हैं, वे घर पर रह जाते हैं और पहले घर की रखवाली के लिए गांव में रुके व्यक्ति मेले में आ जाते हैं.

मेले में जाते समय ही कहां कितने दिन रहना है, कितनी रकम खर्च करनी है आदि बातें तय कर ली जाती हैं. जिस दिन लोग मेले में पहुंचते हैं और अपनी गाड़ी छोड़ कर डेरे तानते हैं, उसी दिन से शुरू होती है मेले की मौज.

घर से साथ लाया हुआ सामान समय खानेपीने के काम आता है. गांव के लोग मिठाई, नमकीन और गोलगप्पे जैसी चीजें भले ही मेले के बाजार में खाते हों, परंतु खाना तो गाड़ी के नीचे इधरउधर से बीन कर लाए गए ईंटपत्थर से बनाए चूल्हे पर ही पका कर खाते हैं. खाना पकाने और खाने के काम

लोग प्रायः सुबह ही निवट लेते हैं, ताकि दिन भर निश्चित हो कर घूमा जा सका.

ऐसे अवसरों पर स्थानीय प्रशासन मेले का इंतजाम करने में लगभग असफल ही रहते हैं. नहानेधोने के लिए ही नहीं, पीने के लिए भी पर्याप्त पानी का बंदोवस्त नहीं होता. इसलिए मेले में आए लोग नहानेधोने की कोई जरूरत नहीं समझते. त्योहार के दिन, जव मेला स्थल के ही किसी तालाव, घाट पर नहाने की परंपरा हो तो वहां कई लोगों के नहाने से गंदलाए पानी में भी लोग डुवकियां लगा लेते हैं. इस तरह डुवकी लगाने को छोड़ कर शायद ही कोई मेले के दिनों में मेला स्थल पर नहाता हो.

सुवह खापी कर लोग मेला देखने चले जाते हैं. कोई जरूरी नहीं है कि सभी लोग एक साथ ही मेला देखने जाएं. सुविधा देख कर स्त्रियां स्त्रियों के साथ, वड़े, वच्चे अपना झुंड वना कर अलग झुंड में और पुरुष अलग घूमनेफिरने निकल जाते हैं. कहीं कोई तमाशा, सरकस, नाटक, नौटंकी देखने जाना हो तो भले ही सव लोग साथ हो लें अन्यथा अपनेअपने हिस्से का जेव खर्च ले कर सभी अलगअलग घूमने निकल जाते हैं.

ऐसे समय गाड़ी के पास उसी परिवार या गाड़ी में आए लोगों में से दो एक व्यक्ति

पशुओं की खरीद : गांव वालों के लिए पुष्कर मेले का सब से बड़ा आकर्षण.
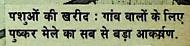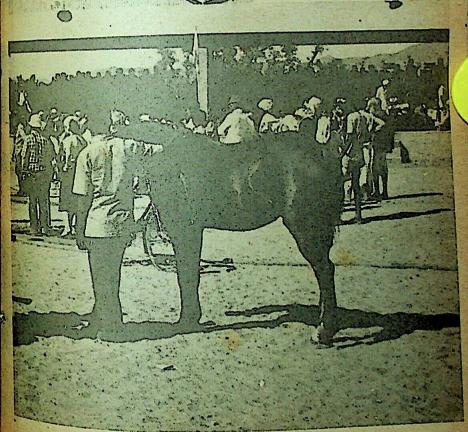
जरूर बैठे रहते हैं. उद्देश्य इतना ही होता है कि साथ लाए गए सामान को चोर, उठाईगीरों से बचाया जा सके. शाम तक मेले में सभी लोग इसी तरह घूमतेघामते और देखी गई चीजों के बारे में बातें करते रहते हैं.

शाम को स्त्रियां कुछ जल्दी लौट आती हैं. उन्हें साथ आए सभी लोगों का खाना बनाना होता है. पुरुषों को अगर किसी नाटकतमाशे में नहीं जाना हो तो वे भी 10-11 बजे तक वापस आ जाते हैं. तमाशा या सिनेमा देखने के लिए जाना हो तो समय से पहले भी लोग अपने डेरे पर आ जाते हैं और खापी कर वापस चले जाते हैं.

मेले की भीड़भाड़, शोरगुल रात के समय तो और परवान चढ़ती हैं. शायद ही कोई ऐसा क्षण हो, जिस में नीरवता रहती हो. ऐसे में किसे नींद आ सकती है. घर से लाए बिछावन बिछा कर लोग किस्सेकहानियां कहते रहते हैं. कहींकहीं गानावजाना भी चलना है. इस तरह गपशप करते हुए लोग दिनभर की थकान मिटा लेते हैं.

मेले की दिनचर्या न जाने क्या ऐसी खासियत लिए हुए रहती है कि लोग इन दिनों अपनी घरेलू समस्याओं, एकदूसरे की निंदाभर्त्सनाओं और नातेरिश्तेदारों के संबंध भुला कर केवल मेले के संबंध में ही बातें करते हैं. फिर वह बात मेले में देखे गए किसी विचित्र जानवर, बौने व्यक्ति, चारों ओर आग जला कर जमीन में सिर गाड़े हुए साधु के बारे में ही क्यों न हो.

व्यापारियों और दुकानदारों की दिनचर्या भी लगभग इसी तरह की होती है. फर्क इतना होता है कि दूसरे लोग जहां गाड़ियों के नीचे या आसपास अपना डेरा डाले रहते हैं, वहां व्यापारी या दुकानदार का परिवार दुकान के इर्दगिर्द ही अपना समय बिता लेता है. दोचार लोग दुकान संभालते हैं, बाकी मेला घूमने निकल जाते हैं.

पुष्कर मेले में अधिकांश दुकानें उन्हीं चीजों की लगती हैं जो गांवों में आसानी से

मेले में ही डेरा. मेले की चमकदमक से दूर कुछ परिवार मेले की शुरुआत से ही वहां आ बसते हैं.
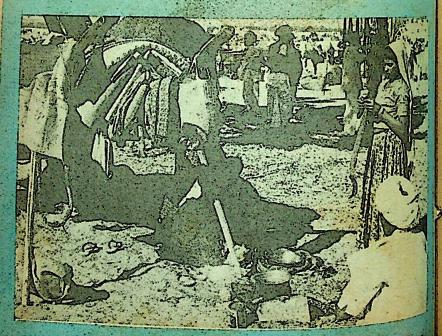
घरपरिवार की बातें (ऊपर) व मेले में मनोरंजन करती महिलाएं (नीचे)

सुलभ नहीं होतीं या जिन्हें खरीदने के लिए बाहर जाना पड़ता है. पुष्कर ताल और ब्रह्मा मंदिर के दाईं ओर की सड़क से ही मेले की दुकानें शुरू हो जाती हैं. तरहतरह की लाठियां, जिन पर लोहे के तार कस कर मनोरम डिजाइन निकाले जाते हैं. जानवरों से रक्षा के लिए छोटेमोटे हथियारों की दुकानें प्रायः मंदिर के आसपास ही होती हैं.

इन दुकानों के बाद सरकस, नौटंकी, टूरिंग टाकीज, झूले, अजायबघर आदि मनोरंजन की सुविधाओं का स्थान आता है. गांव के मर्द तो कभीकभार शहरों में जा कर भी सिनेमा आदि देख आते हैं, पर स्त्रियों को मेलों में ही वैसी सुविधा मिल पाती है. इन स्थानों पर स्त्रियों के बैठने की अलग व्यवस्था रहती है.

सिनेमा, सरकस, नाटक, नौटंकी वाले स्थान से आगे बाईं ओर खानेपीने की दुकानें आती हैं. इन दुकानों पर जलेबी, सेव, कचौरी, बर्फी, बूंदी के लड्डू, बूंदी, खोए की मिठाइयां आदि वस्तुएं बनती और बिकती

यूनानी गणितज्ञ और आविष्कारक आर्कमीडीज ने अपने ऐतिहासिक सिद्धांत की खोज उस समय की थी, जब वह हौज में नहा रहे थे. ज्यों ही उन के मस्तिष्क में एक प्रश्न का हल सूझा, वह 'पा गया... पा गया.' चिल्लाते हुए नंगे ही भागे. यह घटना उन सभी लोगों को मालूम है, जिन्होंने आर्कमीडीज का सिद्धांत पढ़ा है. किंतु यह बात शायद बहुत कम लोग जानते हैं कि आर्कमीडीज का अंत बड़ा दुखद रहा और एक प्रकार से उन के देश, सिसिली द्वीप, ... कारण हुआ.

सिसिली भूमध्य सागर में इटली के ... है. इस द्वीप को ईसापूर्व तीसरी सदी के ... रोमन साम्राज्य की सेना ने जीत कर ... प्रांत और अनाज का भंडार बना लिया ...

प्राकृतिक सौंदर्य से भरा माफिया का केंद्र स्थल :

लेख ◦ अजयकुमार सिन्हा
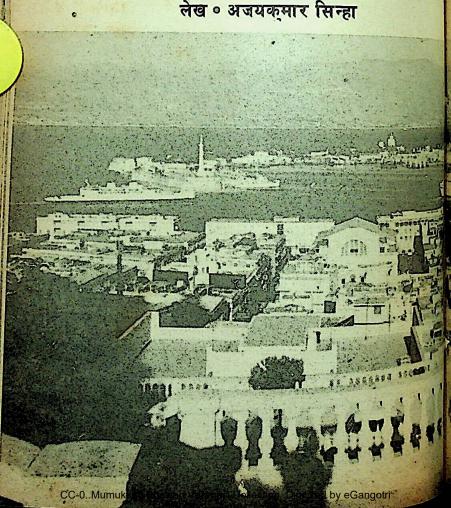
रोमन सेना सिराक्यूसी नामक स्थान को लूट रही थी. गणितज्ञ आर्कमीडीज अपने घर पर गणित के कार्य में इतने डूबे हुए थे कि उन को किसी भी चीज का होश नहीं था. लूटपाट कर रही रोमन सेना का एक सैनिक उन के घर में घुसा. उस ने व्यस्त गणितज्ञ को निर्दयता से मार डाला.

उसी नगर में रोमन शासन ने बाद में, तलवारबाजी की प्रतियोगिता के लिए एक अखाड़ा बनवाया, जो आज भी वहां विद्यमान है और जिस की गणना संसार के सब से बड़े रोमन अखाड़ों में चौथे स्थान पर की जाती है.

लोग सिसिली का संबंध माफिया नामक कुख्यात विश्वव्यापी अपराधी गिरोह से जोड़ते हैं, क्योंकि इस गिरोह में अधिकांश

सिसिली का इतिहास प्राकृतिक आपदाओं और शासकों की क्रूरता व लूटपाट से भरा है. इतिहास की हर करवट सिसिली के साथ एक नया प्रसंग जोड़ती चली गई है....
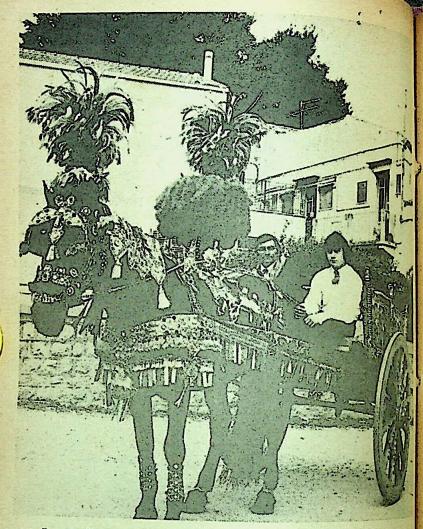
शाही शानशौकत की घोड़ागाड़ी : गराब प्रांत सिसिली में गरीबी और अमीरी के विरोधाभासों का प्रमाण.

लोग सिसिली के बताए जाते हैं. प्रसिद्ध अमरीकी उपन्यास 'गाडफादर' और इसी नाम से बनी फिल्म इसी गिरोह के क्रियाकलाप से संबंधित है, किंतु माफिया के क्रियाकलाप से सिसिली का सही परिचय नहीं मिलता. इस के ठीक विपरीत सिसिली अनेक आकर्षणों का द्वीप है.

भूमध्य सागर के इस सब से बड़े द्वीप का क्षेत्रफल 26,000 वर्ग किलोमीटर है. द्वीप का सौंदर्य विविधता से भरा है. यह अशिक्षित व गरीब लोगों का द्वीप जरूर रहा है और आज भी यहां कहींकहीं बहुत गरीबी है, किंतु अपने इतिहास व सांस्कृतिक विरासत को देखते हुए यह अत्यधिक धनी है और आज यह उसी की कमाई खा रहा है यानी इस द्वीप के सौंदर्य को देखने के लिए लोग दूरदूर से आते हैं.

सिसिली पर पिछले तीन हजार वर्षों से

भिन्नभिन्न देशों के हमले हुए तथा बाहर से बहुत से लोग यहां आ कर बस गए. उन सब की छाप व चिह्न यहां मिलते हैं, जिन का आज बहुत बड़ा महत्त्व है. सब से पहले ईसापूर्व आठवीं सदी में यूनानियों ने यहां आ कर उपनिवेश बनाने शुरू किए.

उन्होंने यहां खूब उन्नति की. इस के अलावा यहां कई अत्याचारी यूनानी शासक भी हुए, जिन में से एक तो इतना निर्दयी था कि अपने शत्रुओं को कांसे के मदिरापात्र में डलवा कर भुनवाता था. इस में उसे मजा आता था, किंतु इन अत्याचारी शासकों ने कई शानदार नगर भी बनवाए. सिराक्यूसी उस समय यूरोप का प्रमुख और शक्तिशाली महानगर था. इस के तीन लाख निवासियों की

सिसिली के ऐतिहासिक आकर्षणों में यहां की पुरानी शैली की इमारतें अत्यंत महत्त्वपूर्ण हैं. (दाएं व नीचे)
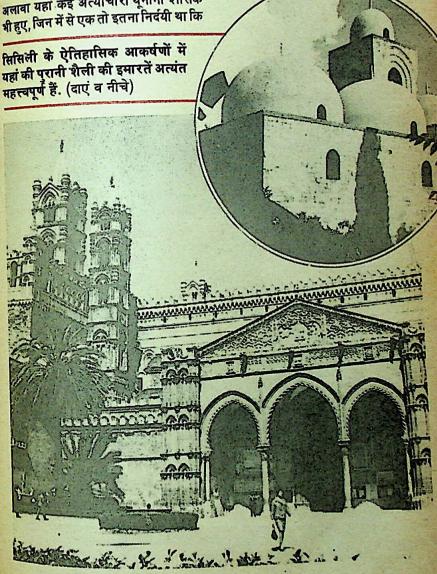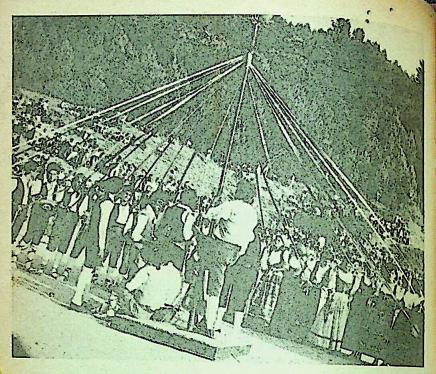
सिसिली निवासी संत दिवस पर रंगबिरंगी पोशाकें पहन कर विशेष प्रकार का नृत्य भी करते हैं.

सुरक्षा के लिए 27 किलोमीटर लंबी दीवार बनाई गई थी. इस किलेबंदी के बीच में यूरीयालस किला बनाया गया था.

सिसिली में पुरानी यूनानी शैली के अनेक दर्शनीय मंदिर हैं. जैसे सेजेस्टा का डोरिक मंदिर, हेरा, कानकोर्ड और हरकुलिस के मंदिर.

रोमन साम्राज्य के विघटन के बाद सिसिली पर बैजंतिया का, फिर ट्यूनिसिया के अरबों का शासन रहा. यूरोप के नारमन सामंतों ने इस द्वीप को एक व्यापारिक केंद्र बना दिया. उस के बाद जरमन सामंतों एवं जागीरदारों, फ्रांसीसी लुटेरों और स्पेन के राजाओं ने इस द्वीप को लूटा. स्पेन के राजाओं के कुशासन के दौरान अनेक विद्रोह हुए और बड़ी संख्या में सिसिलीवासी पहाड़ों में छिप कर लुटेरे और डाकू बन गए. एक लेखक के अनुसार आज के माफिया अपराधी गिरोह के अनेक लोग उन्हीं की संतान हैं.

सिसिली में प्राकृतिक विपत्तियां बहुत आई हैं. यहां पर बहुत भयानक व विनाशकारी भूकंप आए हैं, क्योंकि यूरोप का सब से बड़ा ज्वालामुखी पर्वत माउंट ऐटना इसी द्वीप पर है. इस के प्रमुख और सब से बड़े नगर पालरमो का ऐतिहासिक दृष्टि से बड़ा महत्त्व है. यहां का सब से प्रमुख ऐतिहासिक आकर्षण है— यहां का गिरजाघर. सिसिली का एक अन्य सुंदर नगर है— ऐरिस, जो जीर्ण दीवारों से घिरा है. यहां सौंदर्य व प्रेम की यूनानी देवी ऐफ्रोडाइट का यूनानी व रोमन मंदिर है. मंदिर के पड़ोस में 13वीं सदी में बना नारमन दुर्ग है. आगे टावर है और उस के आगे मध्ययुगीन नगर है. उस के नीचे फोनेशियन दीवारें और स्पेनी किला है अर्थात् थोड़ी ही दूरी में सभी संस्कृतियों के स्मारक व भग्नावशेष कंधे से कंधा मिलाए खड़े हैं.

सिराक्यूसी नगर में सम्राट मेक्सीमिलियन का आवास है. इस में रोमन मोजाइक की चित्रकारी की उत्कृष्ट और दुर्लभ कृतियां देखने में आती हैं. सिसिली का समुद्रतट बड़ा चित्ताकर्षक है. खास तौर पर जेला और आगस्टा का समुद्र तट. मछली पकड़ना यहां का मुख्य धंधा है. औद्योगिक रूप से यह द्वीप अभी ज्यादा विकसित नहीं है और आय के लिए पर्यटन पर ज्यादा निर्भर है.

सिसिलीवासी सरल स्वभाव के, परिश्रमी, स्वाभिमानी और हृष्टपुष्ट हैं. अनेक थपेड़ों को सह कर ये लोग काफी सहनशील हो गए हैं. सिसिली के अनेक क्षेत्रों में बहुत गरीबी है. यहां के पारंपरिक उद्योग समय के साथसाथ नहीं बढ़ सके. बड़ी संख्या में नवयुवक यहां से उत्तरी इटली के कारखानों में रोजगार के लिए चले गए. आर्थिक और औद्योगिक विकास नहीं के बराबर है. किंतु यहां पर्यटक बड़ी संख्या में आते हैं, जिस से यहां का काम चल रहा है.

'सेंट्स डे' (संत दिवस) पर यहां के लोग रंगीन वेशभूषा में धार्मिक जुलूस निकालते हैं और अग्नि के चारों ओर नाचते हैं. इस अवसर पर आतिशबाजी का भी प्रदर्शन होता है. क्रिसमस पर बैगपाइप बजाते हुए वादक लोगों के घरों पर जा कर संगीत सुनाते हैं.

ऐतिहासिक घटनाओं से भरा किंतु आर्थिक विकास में पिछड़ा यह द्वीप एक दयनीय चित्र प्रस्तुत करता है. उत्पादन के प्राकृतिक साधन नगण्य हैं, शायद इसी लिए यहां के लोग अंतरराष्ट्रीय अपराधी बन गए हैं. पर्यटन उद्योग इस प्रदेश को डूबने से उबार रहा है. इटली के मछली उत्पादन का एक चौथाई भाग इस द्वीप से प्राप्त होता है. इस प्रकार यह द्वीप विरोधाभास लिए हुए है. एक ओर बहुमूल्य सांस्कृतिक धरोहर है, तो दूसरी ओर आर्थिक पिछड़ापन. इटली जैसे पिछड़े देश का प्रांत होना भी उस के पिछड़ेपन का एक कारण हो सकता है. इस के पर्यटन संबंधी आकर्षण ही इस का एकमात्र सहारा हैं और इस के सौंदर्य की गाथा को कहते हैं. ●

लेखकों के लिए सूचना

- सभी रचनाएं कागज के एक ओर हाशिया छोड़ कर साफ-साफ लिखी या टाइप की हुई होनी चाहिए.
- प्रत्येक रचना के साथ वापसी के लिए केवल टिकट नहीं, टिकट लगा, पता लिखा लिफाफा आना चाहिए, अन्यथा अस्वीकृत रचनाएं वापस नहीं की जाएंगी.
- प्रत्येक रचना के पहले और अंतिम पृष्ठ पर लेखक के हस्ताक्षर होने चाहिए.
- प्रत्येक रचना पर पारिश्रमिक दिया जाता है, जो रचना की स्वीकृति पर भेज दिया जाता है.
- स्वीकृत रचनाओं के प्रकाशन में अकसर देर लगती है, इसलिए इन के विषय में कोई पत्रव्यवहार नहीं किया जाता.
- मुक्ता और सरिता में पूर्णविराम की जगह बिंदु का प्रयोग होता है. कृपया इसी का प्रयोग करें. इसी प्रकार अंक बजाए नागरी के अंतरराष्ट्रीय होने चाहिए. भारतीय संविधान में राष्ट्रभाषा हिंदी के लिए यही अंक निर्धारित किए गए हैं और सारे संसार में प्रायः सभी भाषाओं में, यही अंक प्रयुक्त होते हैं.

रचना इस पते पर भेजें :
संपादकीय विभाग
मुक्ता, ई-3, रानी झांसी मार्ग,
नई दिल्ली-110055.

इस स्तंभ के लिए समाचारपत्रों की रोचक कटिंग भेजिए. सर्वोत्तम कटिंग पर 15 रुपए की पुस्तकें पुरस्कार में दी जाएंगी. कटिंग के साथ अपना नाम व पूरा पता अवश्य लिखें.

भेजने का पता: संपादकीय विभाग, मुक्ता, ई-3, रानी झांसी मार्ग, नई दिल्ली-110055.

मुर्गे के लिए दो घंटे ट्रेन रुकी

विश्रामपुर कटनी पैसेंजर ट्रेन में यात्रा करने वाले यात्री उस समय आश्चर्य में पड़ गए जब विश्रामपुर से चल कर करंजी एवं सूरजपुर रोड के बीच में दो घंटे ट्रेन को सिर्फ इसलिए रोक दिया गया कि गार्ड महोदय जो मुर्गा खरीद कर ले जा रहे थे, वह छूट कर जंगल में चला गया था और जब किसी तरह वह मुर्गा ढूंढ लिया गया तब कहीं ट्रेन आगे बढ़ी.

—देशबंधु, रायपुर (प्रेषक: मीरा जोब)

*

दरोगा ने दरोगा की जेब काटी

गाजियाबाद में एक दरोगा ने अपने ही एक दरोगा साथी की जेब साफ कर दी.

एक वरिष्ठ दरोगा ने पुलिस में रिपोर्ट दर्ज कराई है कि उन्होंने अपने वेतन के ग्यारह सौ रुपए कुरते की जेब में रख कर उसे चारपाई पर रख दिया था कि दूसरे दरोगा ने वे रुपए गायब कर दिए.

—दैनिक प्रदीप, पटना (प्रेषक: चीमनलाल जुनेजा)

*

खून का रिश्ता

धर्म की दीवारें तोड़ कर एक मुसलिम युवक ने जीवन और मृत्यु के बीच झूल रहे एक हिंदू रोगी को अपना रक्त दे कर उस के प्राण बचा लिए. मुसलिम वेलफेयर सोसायटी के अध्यक्ष के अनुसार सोसायटी के करीब एक दर्जन कार्यकर्ता बांगुड़ हस्पताल में रक्तदान हेतु पंजीकरण करवाने आए थे. आपरेशन थिएटर से एक रोगी के लिए खून देने की मांग की गई. युवक ने तत्काल अपना रक्त दे कर रोगी का जीवन बचा लिया.

—उदयपुर एक्सप्रेस, उदयपुर (प्रेषक: ललितकुमार शर्मा)

*

मिलावट का करिश्मा

जीवन से तंग आ कर तंजौर के एक आदमी ने जहर खा कर आत्महत्या करने की कोशिश की, लेकिन उसे कुछ नहीं हुआ. क्योंकि जहर में मिलावट थी. परंतु जब उस के बच जाने की खुशी में उस के चार दोस्तों ने मिठाई खाई तो सभी मर गए.

हुआ यों कि जीवन से तंग आ कर आत्महत्या की कोशिश करने वाले ने जहर खाने से पूर्व अपने मित्रों को पत्र लिखा कि सुबह मेरी अंत्येष्टि के लिए घर आओ, मैं आत्महत्या कर रहा हूं. जब उस के दोस्त सुबह घर पहुंचे तो पाया कि वह जिंदा है. दोस्त इसी खुशी में झटपट एक दुकान से मिठाई खरीद कर खाने बैठे. मिठाई खाने के थोड़ी देर बाद उन की हालत खराब होने लगी और हस्पताल जातेजाते सब की मौत हो गई.

—अमृत प्रभात, लखनऊ (प्रेषक: देशराजसिंह यादव) (सर्वोत्तम)

एक मांग ऐसी भी

भ्रष्ट अधिकारियों को हटाने की मांग तो सभी करते हैं, किंतु कुछ ऐसे भी लोग हैं जो भ्रष्ट अधिकारियों को ईमानदार घोषित करने की मांग करते हैं. ऐसी ही अनोखी मांग राजस्थान आयुर्वेद नर्सेज एसोसिएशन ने मुख्य मंत्री को एक ज्ञापन दे कर की है.

ज्ञापन में मांग की गई है कि आयुर्वेद विभाग के तथाकथित भ्रष्ट अधिकारी निदेशक को सार्वजनिक रूप से ईमानदार घोषित कर के उन्हें स्थायी रूप से निदेशक बनाया जाए.

ज्ञापन के अनुसार उक्त अधिकारी के खिलाफ लगातार दो वर्षों से भ्रष्टाचार की तथ्यात्मक शिकायतों के बावजूद विधान सभा से ले कर प्रदेश के गली कूचों तक उन्हें सरकारी प्रश्रय मिलता रहा है. —दैनिक न्याय, अजमेर (प्रेषकः लालचंद खत्री)

*

एक हजार वर्ष बाद का टिकट

यह एक कटु सत्य है कि मुक्तसर रेलवे स्टेशन से फाजिल्का तक के रेल सफर का एक हजार वर्ष आगे का मान्यता प्राप्त टिकट बड़ी आसानी से प्राप्त होता है.

बताया जाता है कि मुक्तसर रेलवे स्टेशन से जो टिकटें काटी जा रही हैं, उन में सन 1982 की जगह सन 2982 अंकित हैं. पता चला है कि यह क्रम पिछले 9 मास से चल रहा है, क्योंकि टिकटों पर तिथि प्रतिदिन बदल जाती है, जब कि वर्ष साल में एक बार ही बदला जाता है.

—पंजाब केसरी, जालंधर (प्रेषकः विजय भटनागर)

*

अनोखा बलात्कार

अमृतसर में एक घोड़े द्वारा एक घोड़ी की इज्जत लूटने तथा इस से गर्भवती घोड़ी का गर्भ गिर जाने की एक घटना की सूचना थाना रामबाग तक जा पहुंची. फिर वहां घोड़ी तथा घोड़े दोनों को पेश किया गया. रिपोर्ट घोड़ी के मालिकों ने दर्ज कराई थी.

बताया जाता है कि उक्त घोड़ी गर्भवती थी. एक कुम्हार के घोड़े ने उस से बलात्कार किया, जिस से उस का गर्भ गिर गया. इस पर घोड़ी तथा घोड़े के मालिकों में झगड़ा हो गया. यह झगड़ा पुलिस तक पहुंच गया. पुलिस ने हस्तक्षेप कर के यह मामला समाप्त कराया. दोनों पक्षों के साथ अनेक लोग थाने पहुंचे जिन में कुछ छोटेमोट राजनीतिबाज भी थे.

—पंजाब केसरी, जालंधर (प्रेषक : 'पाल' अमृतसरी)●

मकान बनाने वालों की पहली पसंद

चारमीनार छत की चादरें
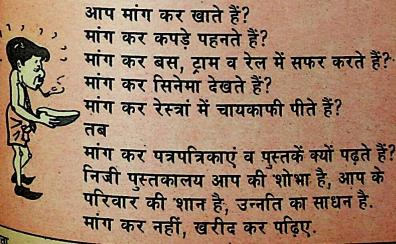
- टिकाऊ
- मौसम का असर नहीं
- आग का असर नहीं
- सस्ती

HYDERABAD ASBESTOS

इमारती सामान में आप को व्यावहारिक, सुंदर, बहुउपयोगी और अग्नि प्रतिरोधक सामग्री चाहिए तो...

मांगिए

फ्लैक्स-ओ-बोर्ड उच्च दबाव वाली स्कीम में उत्पादित इस देश का बना एक मात्र ए.सी. बोर्ड है. इस बोर्ड इमारती बोर्ड का वर्तमान विविध कार्यों में किया जा रहा है और यह सचमुच में बेजोड़ है. इसे चाहे अंतर्भाग (फाल्स सीलिंग) बनाने के काम में लाइए, चाहे पार्टीशन पैनल, डोर्स या साइनबोर्ड बनाने के. इस पर आग का कोई असर नहीं होता. ऊंची इमारतों में उपयोग के लिए यह श्रेष्ठतम है.

इसे काटने, इस में छेद करने, कील गाड़ने या पेंच कसने के लिए साधारण औजारों से ही काम चल जाता है

इसे काटने, इस में छेद करने, कील गाड़ने या पेंच कसने के लिए साधारण औजारों से ही काम चल जाता है

इस पर जैसा चाहें रोगन कीजिए या सजावटी अथवा लेमिनेटेड पेपर लगाइए.

इसे दीमकें नुकसान नहीं पहुंचातीं

HYDERABAD ASBESTOS
CEMENT PRODUCTS LIMITED
Hyderabad 500 018

नए अंकुर

कहानी • राधा अग्रवाल

पूजा का दीपक

पूजा की मौत से उस के प्रेमी दीपू और उस की सहेली सुचि को बराबर का आघात पहुंचा था पर उन्होंने अपनी इस पीड़ा से छुटकारा पाने के लिए क्या किया?
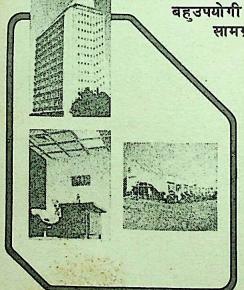
उस दिन सुबह मैं घर का काम निबटा कर कुछ देर सुस्ताने के लिए पलंग पर लेटी थी. लेटेलेटे सोच रही थी कि आज पहले दीपू से और फिर पूजा से जरूर मिलूंगी. इतने में किसी ने दरवाजा खटखटाया. मैं ने कुढ़ते हुए उठ कर दरवाजा खोला, पड़ोस की चाचीजी सामने खड़ी थीं.

"अरे चाचीजी, आप, आइए न, ऐसे क्यों खड़ी हैं?"

"कुछ नहीं बेटी," कह कर उन्होंने बोझिल पांव अंदर रखे थे.

"चाचीजी बतलाइए न, क्या बात है," मैं ने घबराते हुए पूछा था.

"बेटी, क्या बताऊं, पूजा अब..." वाक्य अधूरा छोड़ कर वह फफकफफक कर रो पड़ी थीं.

पूजा ने कहा, "अच्छा तो तुम इसलिए मुझे इतना सब दिलाते हो ताकि मैं तुम्हारी हवस का शिकार बन जाऊं..."
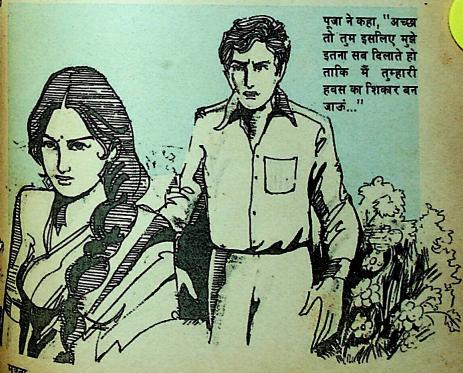
मैं अवाक सी उन का मुख देखती रह गई थी. फिर साहस कर के पूछा था, "क्या कह रही हैं आप, पूजा को क्या हुआ. परसों तो मैं उस से मिली थी, तब तो वह अच्छीभली थी."

लेकिन मेरी बात का उत्तर न दे कर चाचीजी तो पूर्ववत रोती ही रही थीं.

अब मेरा भी धैर्य जवाब देने लगा था. मैं ने चाचीजी को झंझोड़ कर पूछा था, "बतलाइए, क्या हुआ पूजा को. आप बोलती क्यों नहीं. बोलिए न, चाचीजी."

"सुचि बेटी," बस इतना कह कर वह मुझे अपने सीने से लगा कर फूटफूट कर रोने लगी थीं. रोतेरोते ही वह कहने लगी थीं, "सुचि, तेरी सहेली ने नींद की गोलियां खा कर आत्महत्या कर ली."

"नहीं, नहीं, ऐसा कभी नहीं हो सकता. पूजा ऐसा नहीं कर सकती. चाचीजी आप झूठ बोल रही हैं. कह दो चाचीजी, यह सब झूठ है."

"कैसे कह दूं सुचि, क्या मैं अपनी बहन की लड़की के लिए यह सब झूठ कह सकती हूं. यह सच है, सुचि." चाचीजी ने कहा.

बस, इस के आगे मैं कुछ नहीं सुन सकी थी. चकरा कर धड़ाम से फर्श पर गिर पड़ी थी. और जब मेरी आंख खुली तो मैं ने मांजी को अपने पास पाया था. वह धीरेधीरे मेरे पांव सहला रही थीं.

पूजा की मौत का सदमा मेरे लिए जानलेवा था. उन दिनों मैं बहुत असामान्य सी हो गई थी. आखिर किसी से जुदा होना या उस को भुलाना इतना आसान नहीं होता, जितना समझा जाता है. फिर अपने प्रिय को भुलाना तो और भी कठिन होता है, उस का हर घड़ी दिल में बसेरा जो रहता है.

पूजा के साथ बीते हुए लम्हे मेरे दिमाग में चित्रपट की रीलों की तरह घूमते थे. मैं ने तो कभी सोचा भी नहीं था कि बात इतने गंभीर मोड़ पर पहुंच जाएगी. यों तो पूजा ने मुझ से भी अपनी खुदकुशी करने की बात कही थी, लेकिन मैं ने इसे उस का सिर्फ क्षणिक आवेश ही समझा था.

पूजा से मेरी दोस्ती कालिज में ही हु[illegible] थी. वह बड़ी भावुक, शांतिप्रिय [illegible] संवेदनशील प्रवृत्ति की लड़की थी. वह पढ़[illegible] में बहुत तेज थी. हम दोनों के दरम्यान स्नेह [illegible] अपनेपन के स्रोत बहते थे. हम में कहीं [illegible] कोई दुराव व छिपाव नहीं था.

पूजा की विद्वत्ता के कारण हमारे [illegible] पढ़ता एक लड़का दीपू उस की ओर आकर्षि[illegible] हुआ था और शीघ्र ही साधारण सी [illegible] वाली पूजा उसे विश्व की सब से सुंदर [illegible] गुणवान लड़की नजर आने लगी थी और पू[illegible] भी उस को अपना सब कुछ मानने लगी [illegible]

यह सोच कर दिल में एक कसक [illegible] उभर आई थी कि ऐसा क्या हो गया जो पू[illegible] खुदकुशी करने पर विवश हो गई.

चूंकि मैं और पूजा हरदम साथ रहते [illegible] इसलिए दीपू से मेरी भी जानपहचान हो [illegible] थी. अकसर हम तीनों इकट्ठे ही घूमनेफि[illegible] आयाजाया करते थे.

दो दिन पूर्व की घटना मेरी आंखों [illegible] आगे घूम गई.

उस दिन पूजा मेरे घर आई थी. उस[illegible] बड़ा उदास और खोयाखोया सा देख कर मैं[illegible] पूछा था, "पूजा, क्या बात है, सब ठीक[illegible] तो है ना. यह चेहरे पर बारह क्यों बज रहे [illegible] कहीं दीपू से झगड़ा तो नहीं हो गया."

उत्तर में पूजा की आंखें भीग गई [illegible] सुबकते हुए कहने लगी थी, "सुचि, न [illegible] मुझे क्या हो गया था. मैं ने दीपू से इ[illegible] घटिया बात कैसे कह दी, मेरा तो दम ही घु[illegible] जा रहा है. सुचि, अब वह मुझ से नाराज [illegible] गया है."

"बात क्या हुई, बता तो," मैं ने उस[illegible] पूछा था.

"तू तो जानती है सुचि, दीपू मुझ [illegible] कितना खर्च करता है. मैं उस से कई बार म[illegible] भी कर चुकी हूं, फिर भी वह नहीं मानता [illegible] कहने लगता है, 'पूजा, तुम मेरी जिंदगी [illegible] गई हो. तुम्हारे आगे मुझे कुछ नहीं सूझ[illegible] बस, तुम ही तुम दिखाई देती हो.' वह [illegible] बार ऐसा कहता है. तो मैं समझ ही नहीं [illegible]

कि इतना सुंदर व इतने धनी परिवार का लड़का मुझ जैसी साधारण लड़की को इतना क्यों चाहता है.

"सुचि, 'कल हम ढेर सारी खरीदारी कर के लौट रहे थे तो दीपू बोला, 'कुछ समय के लिए जुहू चलें.' हम लोग जुहू आ गए थे. मदहोश करने वाली हवा चल रही थी. यों लग रहा था जैसे आसमान पर मेरे अरमानों की सतरंगी चुनरी फैली हुई है. दिल को लुभाने वाला समां था.

"सुचि, जब उस ने मेरे लिए गजरा खरीदा तो मैं हंसे बिना न रह सकी थी. वह खीज कर बोला था, 'तुम्हारा खयाल कर के यह गजरा खरीद रहा हूं, और तुम अपनी बत्तीसी चमका रही हो, मुझे तो गजरावजरा जरा भी पसंद नहीं.' तो मैं ने कहा, 'जब तुम्हें पसंद ही नहीं तो किस खुशी में खरीद रहे हो. तुम क्या सोचते हो कि यह मुझे बड़ा पसंद है?' तो वह आश्चर्य से कहने लगा था, 'सच पूजा, तुम्हें आम लड़कियों की तरह गजरावेणी से कोई लगाव नहीं?' 'जी नहीं,' मैं ने कहा था, 'हां फूल बहुत पसंद हैं मगर बालों में लगाने के लिए नहीं,' इस पर वह चहक उठा था, 'ओह पूजा, तब तो बहुत अच्छा है, मुझे भी ये सब चीजें पसंद नहीं हैं, हम दोनों की पसंद कितनी मिलती है,' और सुचि हमारी यह मुलाकात शायद आखिरी मुलाकात ही होगी."

"जब कि पूजा का किस्सा खत्म हो चुका है, तुम मुझ से शादी करोगी..." दीपू ने सुचि से कहा.
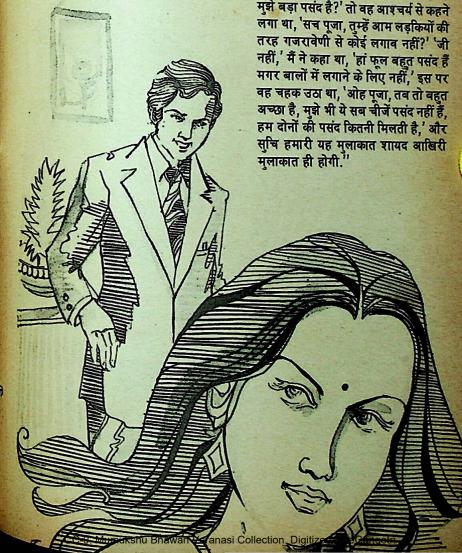
"चल पगली, जब कि तुम दोनों एकदूसरे को इतना चाहते हो, ऐसा कैसे हो सकता है. अच्छा, आगे बता फिर क्या हुआ."

"आगे क्या बताऊं, सुचि, दीपू अब मुझ से बेहद नाराज हो गया है. अब वह शायद मुझ से कभी भी बात नहीं करेगा."

"लेकिन हुआ क्या," मैं ने उसे झंझोड़ते हुए पूछा था.

"सुचि, दीपू भावावेश में आ कर कहने लगा, 'पूजा, क्या करूं, तुम्हारे बिना अब मन नहीं लगता, इसलिए तुम अब जल्द से मेरी जिंदगी में शरीक हो जाओ.' इस पर मैं ने कहा, 'तो क्या अब तुम्हारी जिंदगी से अलग हूं.' 'नहीं पूजा, तुम मेरी जिंदगी में होते हुए भी मेरी जिंदगी से अलग हो, मैं तनहाई में तुम्हारे लिए तड़तड़प जाता हूं.' यह कह कर उस ने अपने होंठ मेरे होंठों की ओर बढ़ाए थे, पर मैं ने उसे अलग हटाते हुए कहा था, 'अभी नहीं, अभी कुछ दिन और इंतजार करो.'

"मगर सुचि, वह नहीं माना था. मैं ने बहुत मना किया मगर वह भी जिद पर अड़ गया. बस, मुझे गुस्सा आ गया. पता नहीं उस के लिए इतने गिरे हुए शब्दों का प्रयोग मैं कैसे कर बैठी.

"मैं ने गुस्से में भर कर कहा, 'अच्छा तो तुम इसलिए मुझे इतना सब दिलाते हो ताकि मैं तुम्हारी हवस का शिकार बन जाऊं. तुम अपने पैसों से मेरा मुंह बंद कर के मुझे खरीदना चाहते हो, मुझ को अपनी वासना का शिकार बनाना चाहते हो.' यह सब सुन कर दीपू में दोतीन मिनट तक हरकत ही नहीं हुई. मैं दुखी व चकित सी उसे हिलाने लगी, तो देखा उस के गालों पर दो आंसू ढुलक आए थे और उस का चेहरा पीला पड़ गया था.

"फिर बड़े ही सर्द व गमगीन लहजे में उस ने कहा, 'पूजा, तुम्हारे दिमाग में मेरी छवि बहुत सुंदर है, तुम ने मेरे लिए बहुत सुंदर सोचा है. अगर मुझे अपनी हवस ही मिटानी होती तो जितने पैसे मैं अब तक तुम पर खर्च कर चुका हूं, उतने पैसों में तो मैं एक से एक सुंदर लड़की को अपने बिस्तर पर बुला सकता था, फिर तुम तो इतनी सुंदर हो भी नहीं.'

"सुचि, इतना कह कर वह तेज कदमों से चल कर अपनी कार में बैठ कर फुर्र हो गया था. मैं ने उसे पुकारा, मगर उस ने नहीं सुना. अब क्या होगा सुचि. वह मुझ से कल से मिला भी नहीं. मैं ने उसे कई बार फोन किया, मगर उस ने मुझ से बात नहीं की. सुचि, मैं ने अपने पांवों पर खुद ही कुल्हाड़ी मार ली. अब मैं क्या करूं. मेरा दिल डूब रहा है सुचि, मैं अब जिंदा नहीं रह पाऊंगी अब... अब मैं खुदकुशी कर लूंगी."

मैं ने उस से कहा था, "हट पगली, ऐसा नहीं कहते, मैं तो अभी हूं ना, मेरे होते हुए तू क्यों घबराती है. मैं दीपू से बात करूंगी."

"नहीं, सुचि, अब कुछ नहीं होगा, खेल खतम हो गया है."

मैं ने उसे समझा कर घर भेजा था, "पूजा तू कुछ नहीं करेगी. मैं दीपू से दोतीन दिन में मिलूंगी, इतने दिन में उस का गुस्सा भी जरा कम हो जाएगा. तू अब जा कर आराम कर."

मैं दीपू से मिलने की बात सोच ही रही थी कि चाचीजी ने यह दुखद समाचार सुना दिया.

मैं नहीं जानती थी कि पूजा इस कदर भावुक हो जाएगी और आत्मग्लानि में आत्महत्या करने पर आमादा हो जाएगी.

दीपू की हालत भी बड़ी बदतर हो गई थी. जब उसे पूजा की खुदकुशी का पता चला तो वह मेरे पास आया था, बिलकुल पागलों की तरह बोलता था, "मैं ने पूजा को मौत की आगोश में धकेल दिया," कभी वह रोने लगता, कभी गंभीर हो जाता.

पूजा तो शून्य में विलीन हो गई. मगर उस की यादें मेरे दिल के जख्म को भरने नहीं देती थीं तथा दीपू की अर्धविक्षिप्त अवस्था जख्म को और टीस जाती थी. आंखों से खारा पानी बहता था. कुछ भी समझ में नहीं आता था कि क्या होगा.

काल का पहिया अपनी गति से घूमता

आईना

किस आईने में अक्स
हमारा दिखाई दे,
हर आईने पे धूल
मिली है जमी हुई.

—सलीम अश्क

रहा और कुछ दिनों बाद ही मेरे जेहन में अजीब से विचार हिचकोले खाने लगे. दीपू की दर्दनाक हालत को देख कर मुझे लगने लगा कि मुझे अपने आंचल से इस के आंसू पोंछ देने चाहिए. मैं नहीं चाहती कि मेरी सहेली की मृत्यु से कोई पलायन की चरम सीमा पर पहुंच जाए.

दीपू के साथ तो मेरे भी कुछ क्षण व्यतीत हुए थे. हम तीनों जब भी साथ होते, वह कहा करता था, "सुचि, तू भी अपना जीवन साथी क्यों नहीं चुन लेती."

मैं उस से हंस कर कहती, "तुम्हारी तरह कोई आशिक मुझे मिलता ही कहां है."

"क्यों झूठ बोलती है सुचि. यह क्यों नहीं कहती कि तू किसी को घास नहीं डालती." वह कहता.

मैं गंभीरता से कहती, "दीपू, सच पूछो तो मुझे तुम्हारे जैसा कोई नजर ही नहीं आया."

"ओह, सुचि, तो यह बात है, कहो तो मैं पूजा को छोड़ कर तुम्हारा दीवाना बन जाऊं." वह हंस कर कहता.

"दीपू, मेरे बन भी सकोगे, जरा अपने गिरहबान में झांक कर तो देखो," मैं उसे चिढ़ा कर कहती. पर तब मन बिलकुल साफ होता था. हम तीनों ही खिलखिला कर हंस पड़ते थे और वह अपनी झेंप सी मिटाते हुए कहता था, "पूजा, जब भी हम तीनों साथ रहते हैं, तो किसी एक की कमी बहुत खलती है. हां, मेरे पास चिराग नहीं है, वरना मैं अब तक सुचि के लिए जीवन साथी ढूंढ़ लाया होता."

हंसमुख दीपू की मायूसी पर मुझे बड़ा रहम आने लगा था. फिर मैं ने मन में दृढ़ निश्चय कर लिया कि जो भी हो, मैं दीपू के गम को बांटूंगी. उस के गम को अपने आंचल में समेट लेने के लिए अब मैं किसी अवसर के फिराक में रहने लगी थी.

"क्या कर रही हो, सुचि." एक दिन मांजी की आवाज ने मुझे खयालों की दुनिया से मुक्त करा कर यथार्थ के धरातल पर ला खड़ा किया था.

"क्या बात है, मांजी, बड़ी खुश नजर आ रही हो," मैं ने कहा था.

"बात ही खुशी की है. तो भला खुश क्यों नहीं नजर आऊंगी. अब हमारी बेटी डोली में बैठ कर अपने पिया के घर जाने वाली है. मैं ने एक जगह बात चलाई है, पांचसात दिन में लड़के वाले आ रहे हैं."

"क्या कह रही हो मां," मैं ने झुंझलाते हुए कहा था, "मुझे अभी शादीवादी नहीं करनी."

"बेटी, तू यह क्या कह रही है, मैं तो अब तेरी शादी कर के इस जिम्मेदारी से नजात पाना चाहती हूं." मां ने कहा था.

"क्या कह रही हो मां, तुम ने मुझ से बिना पूछे ही फैसला कैसे कर लिया," मैं ने व्यथित हो कर कहा था.

"क्यों, क्या तेरी नजर में कोई और लड़का है," मां ने मुसकराते हुए कहा था.

"हां मां," मैं ने सिर झुकाते हुए कहा था.

मां खुश होते हुए बोली थीं, "वाह, हमारी बेटी तो छिपी रुस्तम निकली. क्या मैं

उस खुशनसीब का नाम जान सकती हूं."

"तुम गुस्सा तो नहीं करोगी मां," मैं ने पूछा था.

"वाह, मैं क्यों गुस्सा करने लगी. मेरी तो एक ही ख्वाहिश है कि तू हरदम खुश रहे," मां ने कहा था.

"मां, वह दीपू है."

"क्या कहा?" मां उछल पड़ी थीं, "तू उस जिंदा लाश के साथ शादी करेगी."

"मां, उस के लिए ऐसे अपशब्द बोल रही हो. मैं सोच भी नहीं सकती थी कि हरदम मानवता की बात करने वाली मेरी मां एक अच्छेभले युवक को जिंदा लाश कह सकती है, मगर मां, मेरा फैसला अटल है. अगर तुम उस से शादी करने की आज्ञा नहीं दोगी तो फिर मैं किसी और से भी शादी नहीं करूंगी." मैं ने कहा था.

"सुचि बेटी, यह तुझे क्या हो गया है, तू कैसी बातें कर रही है. अपने हाथों से अपने मां के अरमानों को आग लगाने पर क्यों तुल गई है." मां ने उसांस छोड़ते हुए कहा था.

"मां, तुम ही ने तो मुझे आदर्श व इनसानियत के सबक सिखाए थे. आज तुम ही मुझे उन सब से मुंह मोड़ने के लिए कह रही हैं. मां, इनसानियत के नाते अगर मैं दीपू से शादी कर लूंगी तो क्या अनर्थ हो जाएगा. आज वह गमजदा है, इसलिए न, वरना तुम ही तो कहा करती थीं कि ऐसे लड़के चिराग ले कर ढूंढ़ने से भी नहीं मिलते. फिर मां, आज वह दुखी है, मगर समय एक सा तो नहीं रहता. मैं उस के दर्द को जानती हूं, मां, वह बहुत ही जल्द अच्छा हो जाएगा. मैं उस के घाव पर हमदर्दी और अपनेपन का ऐसा फाहा रखूंगी कि उस के सारे गम दूर हो जाएंगे."

मेरे तर्क देख कर मां ने हथियार डाल दिए. वैसे मेरे फैसले से मां के दिल को ठेस लगी थी, लेकिन मैं जानती थी कि यह फैसला एक दिन मां की झोली में ढेर सारी खुशियां भर देगा, तब सब ठीक हो जाएगा.

तीनचार रोज बाद ही मैं अपने विचारों को सही दिशा देने में व्यस्त हो गई थी. इसी बीच एक दिन दोपहर में दीपू आया था. प्रेस किए हुए साफ कपड़े, दाढ़ी बना हुआ साफ चेहरा, कंघा किए हुए बाल, पालिश किए हुए जूते– पर होंठों पर गहरी संजीदगी.

"नमस्कार," गंभीरता से लिपटे हुए उस के होंठ हिले थे.

"नमस्कार," मैं ने कहा था, "कहो, दीपू कैसे हो."

"तुम से एक जरूरी बात ही करने आया हूं."

"कहो, क्या बात है."

"तुम बुरा तो नहीं मानोगी सुचि."

"तुम्हारी बात का बुरा कैसे मान सकती हूं. अपनों की बात का भी कोई बुरा मानता है."

"नहीं सुचि, पता नहीं किस वक्त क्या हो जाए, कौन बुरा मान जाए. खैर, जब कि पूजा का किस्सा खतम हो चुका है, तो क्या तुम मुझ से शादी करोगी?"

"शादी, तुम से, ऐसा कैसे हो सकता है दीपू?" मैं बौखला कर कह गई थी. मैं ने कभी सपने में भी नहीं सोचा था कि दीपू की तरफ से भी यह प्रस्ताव आ सकता है.

"सुचि, सोच लो. मैं तुम से सिर्फ पूछने आया हूं. तुम्हारा दिल अगर गवाही दे तो तैयार हो जाओ, वरना मेरा तुम पर कोई दबाव तो है नहीं." कुछ क्षण रुक कर वह आगे बोला, "सुचि, मैं इतना पत्थर दिल नहीं हूं कि अपने मातापिता के आंसुओं को अनदेखा कर दूं. उन की वेदना, उन की तड़प मेरे सीने में हलचल मचाती है. उन की ख्वाहिश है कि मेरी शादी हो जाए. लड़की चाहे मेरी पसंद की हो या उन की पसंद की. पर सोचता हूं कि किसी मासूम लड़की के भविष्य के साथ खिलवाड़ क्यों किया जाए. पूजा की यादें तो मेरे दिलोदिमाग में समा चुकी हैं, उन में तुम भी कहीं न कहीं शामिल हो.

"तुम्हारा ध्यान आते ही मेरे दिमाग में एक बात कौंधी, क्यों न शादी के लिए तुम्हें ही चुना जाए? क्योंकि हम दोनों ही गमजदा हैं.

पूजा की मौत से तुम भी तो कहीं न कहीं टूटी हो. इसलिए शायद तुम मेरी मुशकिलों को समझ सको. और हो सकता है, मैं नए सिरे से जिंदगी जी सकूं. अरे सुचि, मैं कब से अपनी ही धुन में बोले जा रहा हूं. शायद तुम्हें बुरा लग रहा है."

"नहीं, दीपू, ऐसी बात नहीं है, पता नहीं कुछ दिन से मेरे जहन में भी यही विचार आया है. उस दिन तुम्हारी दशा देख कर मुझे बहुत दुख हुआ था, लेकिन तुम से कुछ कहने की हिम्मत मैं अब तक नहीं जुटा पाई थी." यह कहतेकहते मेरी आंखों से कुछ बूंदें टपक गई थीं.

"सुचि, यह तुम सच कह रही हो या ऐसे ही मेरा दिल रखने के लिए कह रही हो?"

"तुम्हारा दिल ही रखना होता तो मैं तुम से शादी करने के लिए क्यों तैयार हो जाती."

"सचमुच तुम महान है सुचि, मेरे लिए अपना उत्सर्ग कर देना चाहती हो," दीपू का स्वर कांप रहा था.

"ऐसा कुछ नहीं दीपू, तुम तो खामखा मेरी प्रशंसा कर रहे हो. वैसे भी मैं ने तुम्हें इतने करीब से देखा है, जाना है कि तुम्हारा दुख मेरा अपना दुख बन गया है. फिर पूजा के दीपक को मैं दरबदर की ठोकरें खाते हुए भी तो नहीं देख सकती. दीपू, दरअसल जब मैं ने देखा कि दीपक की ज्योति बुझने वाली है, तो मैं नए सिरे से ज्योति बन कर उस की जिंदगी में आना चाहने लगी."

"सच सुचि." दीपू का गला भर आया था. उस ने मेरा हाथ अपने कांपते हुए हाथ में ले लिया था. अपनी कामयाबी पर मेरे चेहरे से सतरंगी आभा फूट पड़ी थी. ●

"अगर फिर कभी तुम ने मेरी अहिंसावादी नीतियों का विरोध किया, तो इस डंडे से तुम्हारा सिर फोड़ दूंगा."

इन दिनों शादी की परंपराग प्रथा में तेजी से परिवर्तन हो रहे हैं. यूरोप के देशों में तो शादी का दायरा सिकुड़ कर अब करार वाली शादी, अल्पकालीन शादी, मौजमस्ती के लिए की जाने वाली शादी पर आ कर सीमित हो गया है. इटली में जहां रोमन कैथोलिक धर्म का लोगों के आचारविचार, रहनसहन पर काफी प्रभाव है, शादी की प्रथा विलुप्त होती जा रही है. इटली में अब बिना शादी के और पादरी के आशीर्वाद के वगैर ही लड़केलड़कियों ने साथ रहना और गृहस्थी की जिंदगी बिताना शुरू कर दिया है.

सन 1980 के बाद से तो इटली में काफी परिवर्तन आ गया है. सरकार द्वारा हाल ही में किए गए एक सर्वेक्षण से यह निष्कर्ष निकला है कि सन 1981-82 में शादियों में बहुत गिरावट आई है. लड़केलड़कियां परंपरागत शादी के आडंबरों को छोड़ कर स्वयं ही बिना शादी के साथसाथ रहने लगे हैं.

इटली में शादी की प्रथा के टूटने में सरकार ने सर्वेक्षण के दौरान मुख्यत: तीन बातें पाई हैं: देश में मकानों की कमी, बेकारी में वृद्धि और युवतियों के विचारों में परिवर्तन. नारी मुक्ति आंदोलन से यहां का महिला वर्ग काफी प्रभावित हुआ है. इधर चर्च के घटते प्रभाव से पादरी परेशान हैं. इटली की नई पीढ़ी में धर्म के प्रति आस्था घटती जा रही है. युवकयुवतियां स्वच्छंद जीवन बिताने में विश्वास करने लगे हैं.
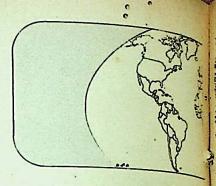
नारी मुक्ति आंदोलन और महिलाओं द्वारा चलाए गए अन्य आंदोलनों ने तो चर्च की प्रतिष्ठा में और भी कमी कर दी है. पादरियों द्वारा सरकार पर दबाव डाला जा रहा है और सरकार परंपरागत रीतिरिवाजों को बनाए रखने में अपने को कमजोर महसूस कर रही है.

रूस में काला बाजारी

रूस के शासक अपने ही देश में बढ़ते भ्रष्टाचार और कालाबाजारियों से परेशान हैं. मौका मिला नहीं कि बढ़िया चीजें काला बाजार में चली जाती हैं. रूस के सरकारी स्टोरों में जब भी किसी वस्तु की कमी होती है तो काला बाजार में सरकारी सख्ती के बावजूद वही वस्तु अधिक दामों पर मिलनी और बिकनी शुरू हो जाती है.

रूस के मजदूर संघों के एक पत्र 'ट्रूड' के अनुसार सरकार ने अब पुरानी मोटर गाड़ियों की खरीदफरोख्त पर प्रतिबंध लगा दिया है. यही नहीं, अब पुरानी मोटर गाड़ियां जहां रजिस्टर्ड हैं और जिस क्षेत्र की हैं, वहीं एक विशेष संगठन के द्वारा निर्धारित राशि पर बेची और खरीदी जा सकेंगी. पुरानी मोटरगाडियों पर बढ़ते ब्लैक और देशव्यापी
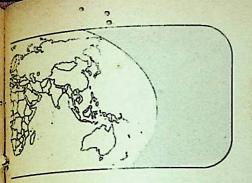
फैलते इस धंधे से सरकार चिंतित हो उठी है.

रूस में पुरानी मोटरगाड़ियों के खरीदनेवेचने का धंधा मुख्यतः एशियाई और जार्जियन भाग के लोग करते हैं. इन का धंधा देशव्यापी फैला हुआ है. इन लोगों के धंधे में काला बाजारी वड़ी आसानी से अपनी पूंजी लगाते थे.

रूस में नई मोटरगाड़ियों का उत्पादन काफी कम है. छोटे परिवार लायक 'झगिली' नामक सैलून कार प्राप्त करने के लिए यहां चार साल इंतजार करना पड़ता है, जब कि पुरानी अच्छी मोटरगाड़ियां आसानी से मिल जाती हैं. बस पुरानी मोटरगाड़ियों के लिए थोड़ा अधिक पैसा देना पड़ता है. पैसा दो और झटपट अच्छी दशा वाली पुरानी मोटरगाड़ी देश में कहीं भी प्राप्त कर लो.

अपने जा रहे हैं

ब्रिटिश द्वीप समूह का आयरलैंड द्वीप काफी समय तक ब्रिटेन के अधीन रह कर अब दो टुकड़ों में बंट चुका है. उत्तरी आयरलैंड ब्रिटेन के अंतर्गत एक स्वशासी राज्य है, जब कि दक्षिण आयरलैंड एक स्वतंत्र गणराज्य है. आयरलैंड में प्रोटेस्टेंट और कैथोलिक संप्रदायों के बीच संघर्ष की स्थिति बने रहने के कारण ही इस का दो टुकड़ों में विभाजन हुआ. उत्तरी आयरलैंड में प्रोटेस्टेंट और दक्षिण आयरलैंड में कैथोलिकों की अधिकता है.

उत्तरी आयरलैंड की गत वर्ष की गई जनगणना से सरकारी अधिकारी परेशान हैं. उत्तरी आयरलैंड से अनगिनत लोग तेजी से दक्षिण आयरलैंड में बसने जा रहे हैं. सन 1972 से ले कर अब तक उत्तरी 1,33,727 लोग अपनी जगह छोड़ कर दक्षिण आयरलैंड जा चुके हैं. इतनी अधिक संख्या में लोगों के जाने के अनेक कारण हैं : उत्तरी आयरलैंड में हत्या, बम विस्फोट, अपहरण और आयरिश रिपब्लिकन आर्मी के आतंकवादी कार्यों से लोग परेशान हो कर शांति और स्वतंत्रता का जीवन बिताने दक्षिण आयरलैंड पहुंच रहे हैं. उत्तरी आयरलैंड में हर साल बम विस्फोटों से हजारों लोग मर जाते हैं.
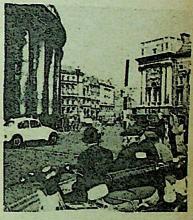
उत्तरी आयरलैंड : सूनी सपाट सड़कें.

इधर उत्तरी आयरलैंड से लोग भाग रहे हैं, उधर दूसरे देशों से लोग उत्तरी आयरलैंड में आ रहे हैं. करीब 30 प्रतिशत प्रवासी बाहर के देशों के हैं. इस देश में भी मुद्रा सफीति और बेरोजगारी बढ़ रही है. इस के बावजूद लोगों के आनेजाने से सरकारी अधिकारी परेशान जरूर हैं.

बंधुआ मजदूर देश

विदेशी कर्ज के कितने बड़े दुष्परिणाम होते हैं, इस का अंदाजा अमरीका के दक्षिण में बसे मैक्सिको की आर्थिक हालत को देख कर किया जा सकता है. कल का तेल के विशाल भंडार वाला यह देश आज 81 अरब डालर

का कर्जदार बन गया है. इस समय इस देश की कुल आय का 60 प्रतिशत लिए हुए कर्ज का ब्याज चुकाने में ही चला जाता है. विदेशी कर्जों से इस देश की हालत इतनी पतली हो गई है कि अपनी अर्थव्यवस्था को बनाए रखने में यह असमर्थ हो गया है. यहां मुद्रा स्फीति की दर 100 प्रतिशत से भी अधिक है जिस के परिणामस्वरूप इस की निर्यात से होने वाली आय वुरी तरह गिर गई है. आर्थिक हालात का अंदाजा इस वात से ही लगाया जा सकता है कि इसे विदेशी बैंकों ने ऋण देना बंद कर दिया है, जिस के परिणामस्वरूप आवश्यक वस्तुओं के आयात में कमी हो गई है. जीवनयापन की चीजों का इस देश में इतना अकाल पड़ रहा है कि देश के विभिन्न हिस्सों में दुकानों के आगे खरीदारों की लंबीलंबी लाइनें दिखाई देती हैं.

कर्ज ले कर ऐशोआराम की जिंदगी जीना कोई अच्छी बात नहीं है. मैक्सिको की तरह ही अनेक विकासशील देश, जिन में भारत भी है, विदेशी कर्ज से लदा हुआ है. विदेशी कर्ज जहां देश की आर्थिक और राजनीतिक स्थिति को प्रभावित करता है, वहां अंतरराष्ट्रीय क्षेत्र में नए बंधुआ मजदूर देश का लेबल भी लगाता है. दूसरों से कर्ज ले कर अपनी अर्थव्यवस्था को गतिशील रखना कभीकभी खतरनाक भी हो जाता है.

करीव 70 करोड़ की आवादी वाले भारत देश पर एक खरब 78 अरव रुपए का असह्य कर्ज भार इस शताब्दी के अंत तक होने के लक्षण अभी से नजर आने लगे हैं. क्या भारत भी दूसरा मैक्सिको वन जाएगा?

लेबनान की नकली मुहर लगे वस्त्र जो सरेआम बाजारों में बिक रहे हैं.

लेबनान के नाम पर

युद्धग्रस्त लेबनान की सरकार और लेवनान का वाणिज्य मंडल देश में नकली वस्त्रों के तेजी से आयात होने से दुखी है. लेवनान के सिलेसिलाए कपड़ों, विशेषकर महिलाओं के कपड़ों की पश्चिम एशिया के देशों में काफी मांग है. अव लेवनान में तस्करी की बदौलत सुदूर पूर्व के देशों–हांगकांग, ताइवान और सिंगापुर का माल वड़ी आसानी से उत्तरी वेरूत में उतर जाता है और यही माल 'मेड इन लेवनान' यानी 'लेवनान में बना' की मुहर लग कर अच्छे पैसों पर दूसरे मुसलिम देशों में बिकने चला जाता है.

लेवनान का वाणिज्य मंडल लेवनान के वस्त्र उद्योग की गिरती साख से परेशान है. आए दिन घटिया माल मिलने की शिकायतें की जाती हैं.

दूसरे देशों में बने इस माल को अच्छे दामों पर बेचने के लिए दुकानदारों को दो काम करने पड़ते हैं— दूसरे देशों के नाम के लेबल उखाड़ना और अपने देश के लेबल लगाना. दुकानदारों को इस कार्य के लिए सिर्फ लेबल, कैंची, सूई और धागा रखना पड़ता है. वस, लंबेचौड़े खर्चे से इन्हें मुक्ति मिल जाती है. मजदूर, मशीन, सिलाईकटाई, पैकिंग के सब खर्चे बच जाते हैं. इस आसान तरीके से

अल्लाहताला में विश्वास करने वाले दूसरे लोगों को व्यापार में ठगने में कोई गुनाह नहीं मानते. यह दूसरी बात है कि जो लोग इस तरह का नकली लेवल लगा कपड़ा पहनते हैं और घटिया माल पाते है, वे बदले में अल्लाहताला से ऐसे लोगों के लिए क्या दुआ मांगते हैं.

फलताफूलता धंधा

अमरीका और ब्रिटेन में पिछले कुछ अरसे से मादक द्रव्यों का तेजी से आयात हो रहा है. इन दोनों देशों में 90 प्रतिशत हेरोइन का आयात अफगानिस्तान के सीमावर्ती पहाड़ी कवीलों के जरिए किया जा रहा है. खैबर दर्रे के पहाड़ी इलाकों में हेरोइन तैयार करने की फैक्टरियां बनी हुई हैं, जहां से चोरीछिपे माल पहले सीधे ब्रिटेन पहुंचाया जाता है और फिर यूरोप के देशों में.

अफगानिस्तान में रूसी हस्तक्षेप और ईरान इराक में युद्ध से पाकिस्तान के व्यापारियों को सब से अधिक नुकसान हुआ है. पाकिस्तान की विषम आर्थिक और राजनीतिक स्थिति में जी कर यहां व्यापारियों में अब एक ऐसा समूह पैदा हो गया है जो अफगानिस्तान की आड़ में मादक द्रव्यों के धंधे को तेजी से चमकाने लगा है. मादक द्रव्यों का धंधा अवैध होता है और इस का ज्यादातर सामान चोरीछिपे लाया ले जाया जाता है. पिछले 15 महीनों में पाकिस्तान के मादक द्रव्यों का धंधा करने वाले लोगों ने अफगानों का सहारा ले कर हेरोइन का बड़े पैमाने पर यूरोप के देशों में निर्यात शुरू कर दिया है.

एक अनुमान के अनुसार मादक द्रव्यों के व्यापार में, विशेष कर अफीम के उत्पादन में पाकिस्तान ने काफी उन्नति की है. पाकिस्तान में सन 1979 में जहां 800 टन अफीम का उत्पादन हुआ था, वहां सन 1980-81 में 970 टन अफीम तैयार हुई. अफीम का अधिकांश भाग अफगानिस्तान के रास्ते ब्रिटेन व अमरीका पहुंच जाता है. ●
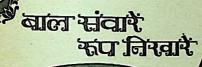
अपनी समस्याएं भेजिए. इस स्तंभ के अंतर्गत नीरजा द्वारा आप की समस्याओं का समाधान किया जाता है.

भेजने का पता : संपादकीय विभाग
ई-3, रानी झांसी मार्ग, नई दिल्ली -110055.

कुछ समय पहले जब मैं बेरोजगार था तो मेरे एक रिश्तेदार ने अपनी अशिक्षित लड़की से मेरे साथ शादी करने का प्रस्ताव किया. इसे मैं ने व मेरे पिताजी ने स्वीकार कर लिया. इस के बाद मेरी सरकारी नौकरी लग गई. अब न तो मैं उस लड़की से विवाह करना चाहता हूं और न मेरे घर वाले ही ऐसा चाहते हैं. वह लड़की अपनी तरफ से मुझ से काफी जुड़ चुकी है और इस बात को भी सब जानते हैं. उस के घर वाले उस से शादी करने के लिए हम पर दबाव डाल रहे हैं. मुझे क्या करना चाहिए?

ऐसा लगता है कि आप व आप के घर वाले काफी स्वार्थी व्यक्ति हैं, तभी आप ने उस समय तो उस अनपढ़ लड़की से शादी करना स्वीकार कर लिया, जब आप खुद कुछ न थे और अब नौकरी लग जाने पर शादी करने से कतरा रहे हैं. अपने स्वार्थ के लिए इस तरह से रिश्ते को तोड़ना व उस लड़की व उस के घर वालों की भावनाओं को ठेस पहुंचाना ठीक नहीं है. अगर आप के दिल में उस लड़की के प्रति जरा भी लगाव है तो आप अपने मातापिता के विरोध के बावजूद उस से शादी कर लें. जहां तक उस की शिक्षा का संबंध है, आप उसे घर पर खुद पढ़नालिखना सिखा सकते हैं.

*

मैं 28 वर्षीय 10वीं पास युवक हूं. चार साल पहले मैं ने अपने एक रिश्तेदार के यहां नौकरी करनी शुरू की थी. जब मैं उन के सामने किसी से कोई बात करता तो वह यह कह कर मुझे चुप करा देते कि "तुम में जरा भी अक्ल नहीं है इसलिए अपनी अक्ल से नहीं, हमारी अक्ल से काम किया करो." जब मैं उन से पूछ कर हर काम करने लगा तो वह कहने लगे कि "इतने बड़े हो गए हो, कभी तो अक्ल से काम लिया करो, कभी तो अपनी अक्ल लगाया करो." उन के इन तानों को सुन कर मैं अपना आत्मविश्वास खो बैठा हूं. मैं ने उन के यहां नौकरी भी छोड़ दी है. बताइए मैं क्या करूं?

ऐसा लगता है कि आप व्यावहारिक व्यक्ति नहीं हैं. जब कोई किसी के आश्रय में रहता है या उस के अधीन काम करता है तो उस का स्वभाव व पसंदनापसंद पहचानना आना चाहिए. इस के अभाव में शांतिपूर्ण ढंग से काम नहीं चल सकता है. हो सकता है कि आप के रिश्तेदार आप के कामों में जरूरत से ज्यादा हस्तक्षेप करते हों, पर उन के व्यवहार को देखते हुए भी आप को व्यावहारिकता से काम लेना चाहिए था. आप अपना आत्मविश्वास न खोएं व हिम्मत जुटा कर काम करें. अपनी राय किसी भी व्यक्ति को तब तक न दें जब तक कि वहां राय देने के लिए आप से वरिष्ठ व्यक्ति मौजूद हो. वैसे इस में दो राय नहीं कि रिश्तेदार नौकर की कोई भी मालिक कदर नहीं करता, क्योंकि वास्तव में वह उसे बोझ समझता है. यदि आप सोचते हैं कि आप योग्य हैं, तो कहीं और नौकरी ढूंढ़िए.

*

मैं 22 वर्षीय मुसलिम युवक हूं. मेरी शादी हुए डेढ़ साल हो गया है, पर अभी तक मैं अपनी पत्नी के साथ शारीरिक संबंध स्थापित नहीं कर पाया हूं, क्योंकि वह इसे गलत समझती है. वह हर तरह से सामान्य है. हमारे घर वाले इस बात से परिचित नहीं हैं. क्या मैं अपनी पत्नी को छोड़ कर दूसरी शादी कर सकता हूं.?

ऐसा लगता है कि आप की पत्नी को

सेक्स के बारे में जरा भी ज्ञान नहीं है. बेहतर यही होगा कि आप अपनी मां, भाभी या घर की किसी अन्य प्रौढ़ महिला, जिस पर आप का विश्वास हो, यह सारी बात बता दें. वह आप की पत्नी के मन में बसे इस भ्रम को दूर कर देंगी. यदि इस के बाद भी आप की पत्नी तैयार नहीं होती है तो आप कानूनन अपनी पत्नी से आसानी से तलाक ले सकते हैं.

*

मैं 20 वर्षीय इंजीनियरिंग का छात्र हूं. कुछ समय से अपने दूर के रिश्ते की एक 17 वर्षीया भतीजी को अपनी छोटी वहन की तरह वेहद प्यार करने लगा हूं. वह भी मुझे पूरा सम्मान देती है. मैं उसे अपने दिल की हालत कैसे वताऊं, जिस से हमारे संवंध अति मधुर हो जाएं.

स्नेह संबंधों की भी एक सीमा होती है और इस सीमा के अंदर रहने पर ही संबंधों की मधुरता को बनाए रखा जा सकता है. वह आप का आदर करती है, इस का स्पष्ट मतलब है कि वह आप की भावनाओं से परिचित है. इस संबंध में आप को उस से कुछ कहने की आवश्यकता नहीं है. बहुत अधिक भावुकता में न बहें. संबंधों में मधुरता एक दूरी रखते हुए ही स्थायी रूप से कायम रखी जा सकती है.

*

मैं 24 वर्षीय युवक हूं. मेरी एक छोटी वहन है जिस का अव विवाह हो गया है. आज से 10 साल पहले मैं ने अनजाने में अपनी वहन के साथ सोते समय बुरा काम करने की कोशिश की, पर सफल नहीं हो सका. मुझे नहीं पता कि उसे सोते में मेरी उस कोशिश का आभास हो गया या नहीं. वह हर साल मुझे अपने हाथ से राखी वांधती रही. शादी के वाद उस ने अपनी ससुराल से मुझे राखी भेज दी, खुद वांधने नहीं आई. पता नहीं, मुझे क्यों लग रहा है कि वह उस पुरानी घटना के कारण नहीं आई. मैं वहुत अधिक हीन भावना से ग्रस्त हो गया हूं. मैं क्या करूं?

आप अपराधबोध से पीड़ित हैं. बचपन में जो कुछ भी हुआ, उसे भूल जाना ही बेहतर है. आप को उस घटना पर पश्चात्ताप है, यह काफी है. अब आप उस बारे में बिलकुल भी न सोचें. अगर आप की बहन को इस बारे में कुछ आभास होता या वह आप से नाराज होती तो इस घटना के बाद ही वह आप के प्रति अपनी विचारधारा बदल सकती थी. उस के ससुराल से न आ पाने के पीछे बहुत सारे कारण हो सकते हैं. अब आप एक सच्चे भाई की तरह उसे प्यार करते रहें. कभी भी उस से या किसी दूसरे व्यक्ति से उस घटना के बारे में कोई चर्चा न करें.

*

मैं 23 वर्षीय सरकारी कर्मचारी हूं. मैं जिस शहर में नौकरी कर रहा हूं, वहां मकान की वहुत समस्या है व एक कमरे में दोदो लोग साथ रहते हैं. मेरे घर वाले मेरी शादी करने के लिए दवाव डाल रहे हैं. पर मैं विना अच्छी तरह से स्थापित हुए व अलग मकान ले सकने की स्थिति में आए विना विवाह नहीं करना चाहता हूं. घर वाले वैसे तो मेरी हर बात मानते हैं, पर इस बारे में अड़े हुए हैं. मैं क्या करूं?

आप के इस समस्या के बारे में जो भी विचार हैं, वह एकदम उचित हैं. शादी के बाद सारी समस्याओं का सामना आप को ही करना पड़ेगा, आप के घर वालों को नहीं. शादी के बाद खर्च बढ़ेंगे, घटेंगे नहीं. ऐसी हालत में जब तक आप पूरी तरह से स्थापित न हो जाएं, शादी के चक्कर में न पड़ें. वैसे भी युवकों को 25-26 साल से पहले शादी नहीं करनी चाहिए. —नीरजा

कीमतें कम करने के लिए :

• सरकारी खर्च कम हो
• करों में कमी हो

बढ़ती हुई कीमतों की मूल वजह (और प्रायः एकमात्र) सरकार द्वारा आवश्यकता से ज्यादा खर्च किया जाना (करों व ऋणों से प्राप्त आय की तुलना में ज्यादा व्यय) और उस घाटे को पूरा करने के लिए नए करेंसी नोट छापना तथा माल व सेवाओं पर नएनए कर थोपना है.

हर नया नोट, हर नया कर माल व सेवाओं की कीमत में तुरंत वृद्धि कर देता है, जिस की वजह से सरकारी खर्च में और अधिक वृद्धि आवश्यक हो जाती है. इस वृद्धि की भरपाई के लिए फिर नए नोट छपते हैं, फिर नए कर लगते हैं और इस से कीमतें लगातार बढ़ती जाती हैं.

राजनीतिबाज बढ़ती हुई कीमतों का सारा दोष उत्पादकों व व्यापारियों के जिम्मे मढ़ कर आम लोगों को धोखा देने की कोशिश करता है, यह अच्छी तरह से जानते हुए भी कि करों द्वारा बढ़ी लागत उत्पादक और व्यापारी अपनी जेब से पूरी नहीं कर सकते. उन्हें चीजों के दाम बढ़ाने ही पड़ते हैं. आम लोगों के हाथ में अतिरिक्त धन आने से भी वस्तुओं की मांग ज्यादा बढ़ जाती है जिस से कीमतें भी और बढ़ जाती हैं.

इस के साथ ही राजनीतिबाजों की अपने अस्तित्व को बनाए रखने के लिए, अपनी पार्टियों को चलाने के लिए और चुनाव लड़ने के लिए काले धन की मांग भी जुड़ जाती है. यह रकम सिर्फ माल व सेवाओं की कीमत से ही प्राप्त हो सकती है. इस प्रकार कीमतें और ज्यादा से ज्यादा बढ़ती जाती हैं.

कभीकभी यह कहा जाता है कि ज्यादा उत्पादन से कीमतें बढ़ना रोका जा सकता है. लेकिन अगर कहीं कोई ज्यादा उत्पादन होगा तो वह कच्चे माल और सेवाओं पर बढ़े हुए करों की वजह से ज्यादा कीमत पर ही होगा. इसलिए बढ़े हुए उत्पादन से भी कीमतें कम नहीं होंगी.

कीमतें कम करने के लिए:

• करों में कमी कीजिए
• सरकारी खर्च कम कीजिए

इस के अलावा और कोई रास्ता नहीं है.

झील सा यौवन

झील सा यौवन तुम्हारा,
कमल सी मुसकान.
कोपलों सा रेशमी तन,
छंद सा आह्वान.

बिछ गई हो फूल की
घाटी में जैसे धूप,
संगमरमर में तराशा
इंद्रधनुषी रूप.

जलतरंगी गुनगुनाहट,
पी कहां, सा गान.
निर्झरी सी खिलखिलाहट,
मधुकरी सी तान.

आइना बन आ गया हूं,
इसलिए प्रिय पास.
रूप मुझ में बस गया है,
हो सके एहसास.

—माया शबनम
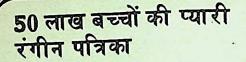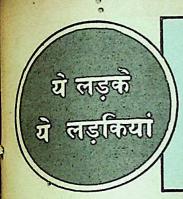
इस स्तंभ के लिए अपने रोचक संस्मरण भेजिए. प्रकाशित होने पर 15 रुपए की पुस्तकें पुरस्कार में दी जाएंगी, पत्र पर अपना नाम व पूरा पता अवश्य लिखें.

भेजने का पता:
संपादकीय विभाग, मुक्ता, ई-3, रानी झांसी मार्ग, नई दिल्ली-110055.

तब मैं 11वीं कक्षा का छात्र था. हमारी परीक्षा चल रही थी. जब परीक्षा समाप्त हुई, तब एक शिक्षक ने हमारी कक्षा के सब से कमजोर छात्र से पूछा, "आज तुम्हारा यह विषय कैसा रहा?" छात्र बोला, "आधाआधा." शिक्षक ने पूछा, "क्या मतलब."

"जो कुछ परीक्षक ने पूछा, वह मेरी समझ में नहीं आया और जो मैं ने लिखा है वह परीक्षक की समझ में नहीं आएगा," छात्र बोला. —संजयकुमार

*

बात उस समय की है. जब मैं 11वीं कक्षा में पढ़ती थी, एक दिन हमारे भौतिक विज्ञान के अध्यापक ने घर से प्रश्न लिख कर लाने को कहा, अगले दिन उन्होंने प्रश्न न लिख कर लाने वाले छात्रों को खड़ा होने के लिए कहा. साथ ही जो उत्तर पुस्तिका घर पर भूल आए थे, उन्हें भी खड़े होने का आदेश दिया. उस दिन मैं भी अपनी उत्तर पुस्तिका घर पर ही भूल गई थी. लेकिन मैं अपनी सीट पर बैठी हुई थी. एक लड़का जो काफी वाकपटु था, अपनी सीट से खड़ा होता हुआ बोला, "गुरुजी, एक सवारी बिना टिकट ही बैठी है." —राजबाला आर्या

*

मैं एक स्कूल में अध्यापिका हूं. गणित की कक्षा में जब सभी छात्राएं प्रश्न हल कर रही थीं तो उस समय मैं निरीक्षण कर रही थी. तभी मैं ने एक छात्रा को चुपचाप बैठे देखा.

मैं ने उस से पूछा, "सवाल क्यों नहीं कर रही हो?"

वह चुप रही. मैं ने उस से फिर पूछा, "क्या कापी नहीं लाई हो?"

"लाई हूं."

"तो क्या किताब नहीं लाई हो?"

"लाई हूं."

"पेन नहीं है क्या?"

"पेन भी है."

"तो फिर सवाल क्यों नहीं कर रही हो?"

"पेन में स्याही नहीं है." उस का उत्तर था. — ईशू

*

बात उस समय की है जब हम लोग दिल्ली से आगरा घूमने गए थे. हमें उसी शाम को लौटना था. ताजमहल देखतेदेखते हमें काफी देर हो चुकी थी.

उसी समय एक लड़की गुस्से में बोली, "अरे, भाई, जल्दी करो."

हम लोगों ने उस से कहा कि शाहजहां और मुमताज महल की कब्र देख कर चलते हैं.

"अरे, कब्र मेरे घर पर चल कर देख लेना क्योंकि अब इतनी देर हो चुकी है कि मेरे घर वालों ने मेरी कब्र बनाने की तैयारी शुरू कर दी होगी." उस ने कहा. — मधु मेहता •

दिसबर,
1982
नए नमूनों व
रंगीन चित्रों से सजासंवरा
गृहशोभा
बुनाई विशेषांक
परिवार के सभी सदस्यों को ध्यान में रख कर
हमारे बुनाई विशेषज्ञों द्वारा विशेष रूप से तैयार
किए गए 16 से अधिक मनमोहक डिजाइन
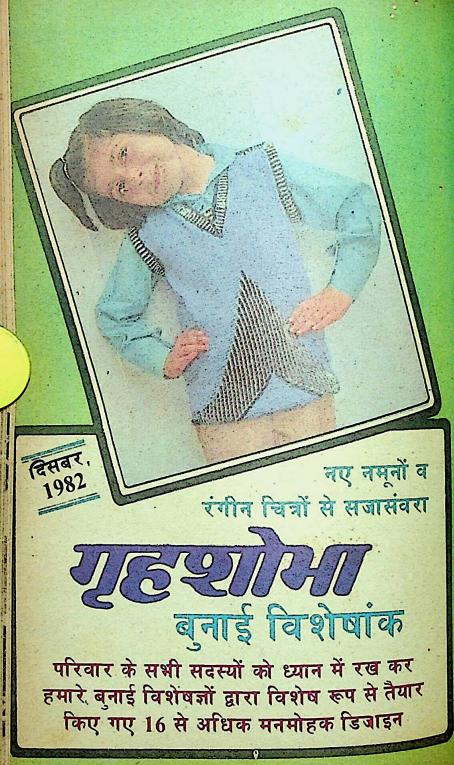
- हलके नीले रंग में गहरे नीले व सफेद तिकोनों वाला कार्डीगन
- गुलाब के फूलों से सजा शाल
- बच्चे का कंबल
- गाजरी रंग का सामने से खुला कार्डीगन
- तिरंगा व गोल गले का ब्लाउज
- आकर्षक शीशा से सजा स्वेटर
- बिल्ली के मोटिफ वाला स्वेटर
- मोटिफ जोड़ कर बनाई गई वाल हैंगिंग
- जबजब ऊन बचे बिटिया रानी सजे
- ऊन का बुना हुआ कुत्ता

इन के अतिरिक्त अन्य कई आकर्षक नमूने, नए डिजाइन, सरल विधियों, बहुरंगे चित्रों व ग्राफों सहित इस ढंग से प्रस्तुत किए जा रहे हैं कि पत्रिका में उन्हें देखते ही आप बनाना शुरू कर देंगी.

साथ ही साजसज्जा, बागबानी, स्वास्थ्य व सौंदर्य, पकवान, दांपत्य व फिल्मों पर सचित्र सामग्री, घरगृहस्थी की समस्याएं सुलझाने वाली कहानियां व व्यंग्य
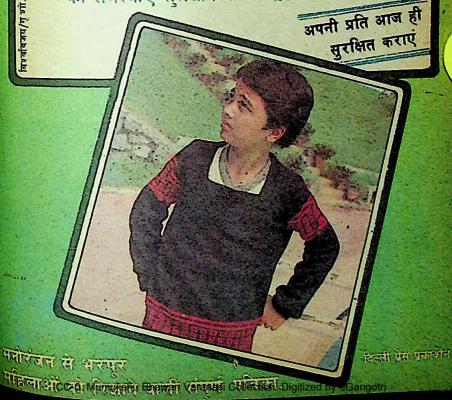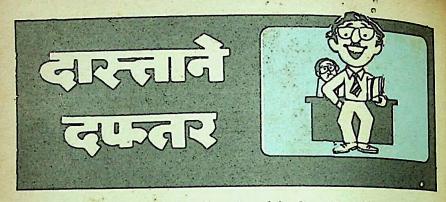
हमारे कार्यालय के एक अधिकारी अपने कार्य के प्रति काफी समर्पित और उत्साही व्यक्ति हैं. दफ्तर का कोई भी बाबू जब उन के सामने फाइल रखता तो वह अकसर लिख दिया करते थे, 'यह आवश्यक है कृपया शीघ्र निबटाएं.' क्योंकि उन की दृष्टि में प्रत्येक कार्य एक महत्त्वपूर्ण कार्य था.

एक बार एक फाइल पर उन्होंने लिखा, 'कसम से, यह वाकई अति आवश्यक है, इसे बहुत शीघ्र निबटाएं', इस को पढ़ कर हम लोगों को हंसी तो आई, परंतु इस में अधिकारी के जल्द से जल्द काम निबटाने की झलक भी दिखाई दी.

—शिवप्रकाश गुप्ता

(सर्वोत्तम)

*

हमारे कार्यालय में एक लिपिक भ्रष्टाचार के खिलाफ हमेशा कुछ न कुछ बोलता रहता है. उस की इस आदत से सभी परिचित थे. एक दिन वह कुछ देर से आया.

अपनी मेज पर बैठते ही उस ने देखा कि सभी मेजों पर प्लास्टिक के गुलदस्ते रखे थे. उस ने एक सहयोगी से पूछा कि "क्या बात है?"

सहयोगी कुछ विनोदी स्वभाव का था, झट से बोला कि "एक ठेकेदार आया था, वही सब को बांट गया है. तुम्हारा गुलदस्ता तुम्हारी मेज की दराज में रखा है, निकाल लो."

इतना सुनना था कि उस ने तीनों दराजें खोल कर देखीं, गुलदस्ता नहीं मिला तो तीनों दराजों को निकाल कर मेज के भीतर देखने लगा कि गुलदस्ते कहीं अटके न पड़े हों.

उस की यह दशा देख कर सभी लोग हंसने लगे. एक ने कहा, "अरे भाई, ये किसी की भेंट नहीं हैं, बल्कि सभी ने फेरी वाले से खरीदे हैं. अपनी मेहनत की कमाई के हैं." यह सुन कर वह अपनी झेंप मिटाने के लिए दूसरों की हंसी में शामिल हो गया.

—रीता

*

हमारे दफ्तर में छःसात लड़कियां भी काम करती हैं. उन के बैठने का स्थान मेरे केबिन के पास ही है. एक दिन वे सब बड़ी तेज आवाज में बातचीत कर रही थीं. उन की किसी घनिष्ठ सहेली के लड़की हुई थी और पंडित ने उस का नाम रखने के लिए 'अ' अक्षर सुझाया था. सभी लड़कियां नाम सुझा रही थीं, जैसे— अनुराधा, अंबिका, अपर्णा, अंजली. इत्यादि. जिसे जब भी कोई नया नाम सूझता, वह जोर से चिल्ला पड़तीं. एकाएक 'अनामिका' के नाम का प्रस्ताव सुनते ही एक बार फिर जोर से शोर हुआ.

इस पर मेरे बगल में ही बने केबिन में बैठे मेरे एक सहयोगी बाहर निकले और लड़कियों से बोले, "जिस की वजह से दफ्तर में इतना शोर हो रहा है, उस का नाम 'अशांति' होना चाहिए.

—रमेशकुमार आहूजा

इस वार वकरीद की छुट्टी में परिवर्तन हो जाने के कारण हमारे कार्यालय के सूचना पट्ट पर एक सूचना लगाई गई कि वकरीद अव 28.9.82 के वजाय 29.9.82 को होगी.

इस सूचना के नीचे किसी सज्जन ने लिख दिया, 'आखिर वकरे की मां कव तक खैर मनाएगी.'

—रामप्रकाश

*

एक वार ड्राफ्ट वनवाने के लिए मैं वैंक में करीव एक वजे पहुंचा. रुपया आदि जमा करने के पश्चात जव मैं ड्राफ्ट लेने क्लर्क के पास पहुंचा तो उस समय भोजनावकाश में (2 वजने में)10 मिनट का समय शेष था कि संबंधित क्लर्क यह कह कर उठ गया कि 'लंच के वाद आना' और वह पास ही वैठे अपने वैंक सहयोगियों से गप्पें मारने लग गया.

मुझे जरूरी काम से वाहर जाना था. अपनी मजवूरी सुनाने पर भी उस पर कोई असर न पड़ा. हार कर मैं शाखा प्रवंधक के पास गया. मेरी मजवूरी सुन कर वह खुद उठ कर आए और उन्होंने ड्राफ्ट वना कर मुझे दिया. यह देख कर अपने साथियों के साथ गप मारने वाले उस क्लर्क का सिर शर्म से झुक गया.

—मुरलीधर टिलवाणी

*

मेरे एक सहकर्मी मित्र मुवारकवाद देने के लिए मशहूर हैं. किसी भी धर्मावलंवी का कोई भी त्योहार हो, सव से पहले वह ही मुवारकवाद पेश करते हैं.

वात मुहर्रम के दूसरे दिन की है. जव हमारे कार्यालय का मुसलमान कर्मचारी आया तो वे तुरंत उस के निकट पहुंचे और हाथ मिलाते हुए वोले, "भाई जान, मुहर्रम की मुवारकवाद कुवूल करें."

इतना सुनते ही हमारा मुसलमान कर्मचारी असमंजस में पड़ गया कि क्या जवाव दे. हम सव भी अपनी हंसी नहीं रोक पाए, क्योंकि मुहर्रम में खुशी नहीं गम मनाया जाता है.

—कामेशकुमार राजपूत

नौकरीपेशा व्यक्तियों को और किसी कार्यवश दफ्तरों में जाने वालों को दफ्तर में अनेक मनोरंजक स्थितियों से गुजरना पड़ता है और कई बार तो किस्सा बहुत ही दिलचस्प बन जाता है. क्या आप की दृष्टि में कोई इस प्रकार की घटना आई है, जो रोचक हो?

आप ऐसे संस्मरण 'मुक्ता' के लिए भेजिए: प्रत्येक प्रकाशित संस्मरण के लिए 15 और सर्वश्रेष्ठ पर 50 रुपए की पुस्तकें पुरस्कार में दी जाएंगी. पत्र के साथ अपना नाम व पूरा पता अवश्य लिखें.

पत्र इस पते पर भेजिए :
संपादकीय विभाग, मुक्ता, ई-3, रानी झांसी मार्ग, नई दिल्ली-110055.

विवाह और विवाद

संजय दत्त और रेखा की शादी की खबर उड़ते ही फिल्म जगत में तहलका मच गया था. यह भी खबर गरम हुई थी कि जब संजय दत्त और रेखा सुनील दत्त से आशीर्वाद लेने पहुंचे तो सुनील दत्त ने रेखा को झापड़ रसीद कर दिया और इस पर संजय दत्त ने सुनील दत्त को पीट डाला. लेकिन अब जब कि इस शादी का संजय दत्त और सुनील दत्त खंडन कर चुके हैं, रेखा पूरी तरह खामोश है.

फिल्म जगत में यह चर्चा जोरों पर है कि इस पूरे तमाशे के पीछे जया भादुड़ी और सुनील दत्त का हाथ रहा है. जया ने इसलिये इस शादी की अफवाह को आम कराया कि अमिताभ पर ऐसा असर पड़े कि रेखा को अमित की दुर्घटना का कोई खयाल नहीं और उस की अनुपस्थिति में अपनी हवस को शांत करने के लिए उस ने संजय दत्त को फांस लिया.

सुनील दत्त ने इसलिये इस खबर को आम कराया कि संजय दत्त को कुछ प्रचार मिले और उस की नई फिल्म 'जानी आइ लव यू' सफल हो जाए. रेखा और सुनील दत्त के कुछ करीबी लोगों का कहना तो यह भी है कि यह किस्सा सांप छछूंदर का है न उगलते बने न निगलते.

फिल्म जगत में जान आई

इस साल की शुरुआत से ही बड़ीबड़ी फिल्मों की असफलता से फिल्म उद्योग चरमरा कर रह गया था. 'देशप्रेमी,' 'राजपूत,' 'धर्मकांटा,' 'बदले की आग,' 'तीसरी आंख,' 'जमाने को दिखाना है' आदि

फिल्में ऐसे निर्माता निर्देशकों की थीं जिन की फिल्में रजत जयंती मनाती हैं. इन फिल्मों की असफलता के बाद फिल्म वाले काफी घबरा गए थे और दुआएं मांग रहे थे कि कोई तो फिल्म सफल हो जाए ताकि फिल्म जगत में धन आए और सब की रोजीरोटी चलती रहे.

सफलता की राह में सब से पहली फिल्म 'खुद्दार' जब सफल हुई तो लोगों के

संजय दत्त और रेखा के विवाह की खबर ने कई अफवाहों को जन्म दिया.
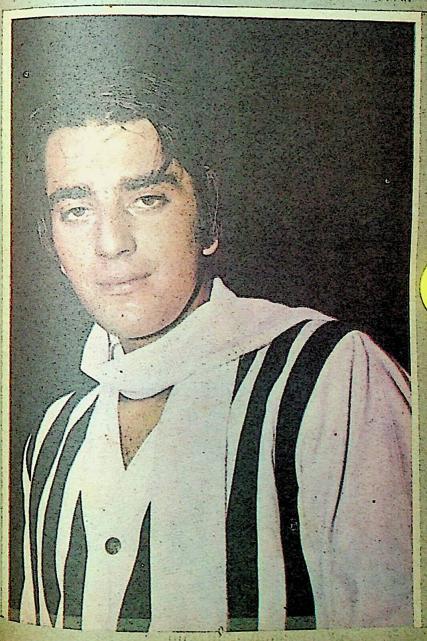
मसूड़ों को मज़बूत बनाइये दाँतों की ज़िन्दगी बढ़ाइये

सिर्फ़ फोरहॅन्स में ही मसूड़ों को मज़बूत बनाने वाला विशेष ऐस्ट्रिंजेंट है

इसका अनोखा स्वाद ही इसके असर का सबूत है!

फोरहॅन्स का ऐस्ट्रिंजेंट मसूड़ों की विशेष तौर से देखभाल करता है. सूजन रोक कर ऐस्ट्रिंजेंट कमजोर और मुलायम मसूड़ों को संकुचित करके उन्हें स्वस्थ बनाता है. आपके दाँतों को लम्बी जिन्दगी और मजबूत आधार स्वस्थ मसूड़े ही दे सकते हैं. यहाँ तक कि मजबूत दाँतों को भी स्वस्थ मसूड़ों की जरूरत होती है. इसी लिये आपको चाहिये फोरहॅन्स-ऐस्ट्रिंजेंट वाला अनोखा टूथपेस्ट.

फोरहॅन्स पर भरोसा रखिये

ये दाँतों के डॉक्टर का बनाया हुआ टूथपेस्ट है

288 F 172 HIN

चेहरों पर कुछ चमक देखने को मिली. 'खुद्दार' के बाद 'प्रेमरोग' भी जबरदस्त सफल हुई और 'निकाह' और 'शक्ति' ने तो फिल्म उद्योग वालों को खुशियां मनाने के लिए मजबूर कर दिया है. ऐसा लगता है कि एक लंबे समय से बेजान हो गए फिल्म उद्योग वालों में नई जान आ गई है.

पुरस्कार के लिए

पिछले दिनों 'बंबई फिल्म एवार्ड' की तरफ से एक बड़ा आयोजन कर के फिल्म 'धर्मकांटा' के लिए राजकुमार को बेहतरीन अदाकारी का पुरस्कार दिया गया. हालांकि यह फिल्म बुरी तरह नाकाम रही है और इस फिल्म में राजकुमार ने एक भी संवाद अच्छी तरह नहीं बोला है.

इसी तरह का एक पुरस्कार फिल्म 'गजब' के निर्देशक दीक्षित को भी सर्वश्रेष्ठ निर्देशन के लिए दिया गया. जानकारी प्राप्त करने पर पता चला कि यह एक नाममात्र की संस्था है जिस का कोई उसूल नहीं है. जो लोग

राजकुमार : शोहरत के लिए हथकंडों का प्रयोग व (नीचे) उन्हीं की एक असफल फिल्म 'धर्मकांटा' का एक दृश्य.
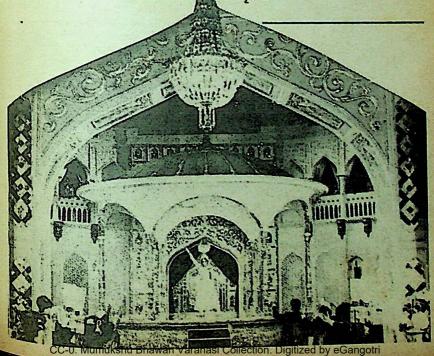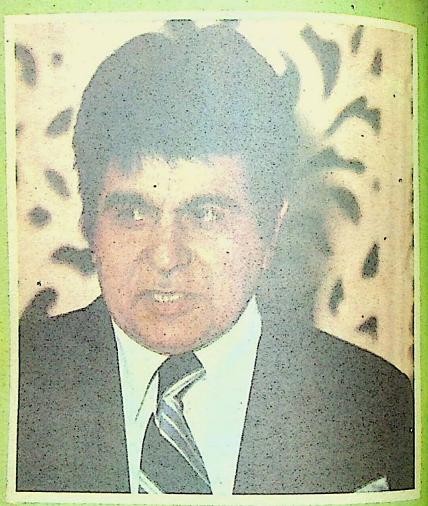
दिलीपकुमार : सब से बड़ा कौन?

इस संस्था के लोगों को पैसा देते हैं उन्हें ही पुरस्कार मिलते हैं. लेकिन राजकुमार जैसे कलाकार से लोगों को ऐसी उम्मीद नहीं थी कि वह झूठी शोहरत का इतना मुहताज है.

अपनेअपने सच

फिल्म 'शक्ति' के बाद एक बहस दिलीपकुमार और अमिताभ बच्चन के चाहने वालों में यह चल पड़ी कि दोनों अभिनेताओं में बड़ा कौन है? कुछ लोग 'शक्ति' में दिलीपकुमार को बड़ा मान रहे हैं, तो कुछ अमिताभ को. दिलीपकुमार के एक पुराने निर्देशक दोस्त से इस प्रतिनिधि ने जब इस सिलसिले में पूछा तो उन्होंने बड़ी अच्छी बात कही.

उन्होंने कहा, "शक्ति में न तो दिलीपकुमार बड़ा है न अमिताभ बच्चन, बल्कि 'शक्ति' में सब से बड़ा रमेश सिप्पी है जो फिल्म का निर्देशक है और जिस ने दिलीपकुमार और अमिताभ बच्चन के होते हुए भी अपनी मर्जी की फिल्म बना कर दिखा
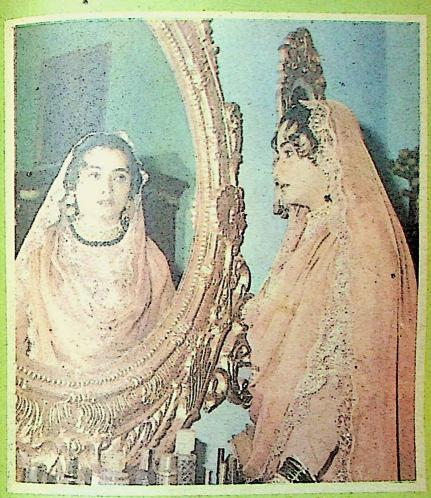
सलमा आगा : क्या फिल्मी दांवपेच का शिकार बनेगी?

दी." काश! दूसरे निर्देशक भी रमेश सिप्पी जैसा साहस कर सकें.

सलमा आगा की सफलता

बलदेवराज चोपड़ा की फिल्म 'निकाह' जिस का पहले नाम 'तलाक तलाक तलाक' था, अब काफी झगड़ों के बाद प्रदर्शन के लिए पेश कर दी गई है. अच्छे गीतसंगीत और सलमा आगा के अभिनय की वजह से यह फिल्म बाक्स आफिस पर काफी सफल रही है. एक ही फिल्म की सफलता के बाद सलमा आगा को कई निर्मातानिर्देशक अपनी अगली फिल्मों में लेने के लिए बेताब हो रहे हैं.

सलमा आगा ने इस फिल्म में अपने गीत खुद ही गाए हैं और लोगों को उस की आवाज में एक नया आकर्षण महसूस हुआ है. सलमा की सफलता से जीनत अमान और मंगेशकर बहनों को काफी ईर्ष्या हो रही है. देखिए, सलमा को परास्त करने के लिए अब क्या राजनीति का जाल बिछाया जाएगा. ●

"मीना आपा की आवाज ही मेरी पहचान है"

साधना खोटे 'तमन्ना'

भेंटवार्ता • स. खान
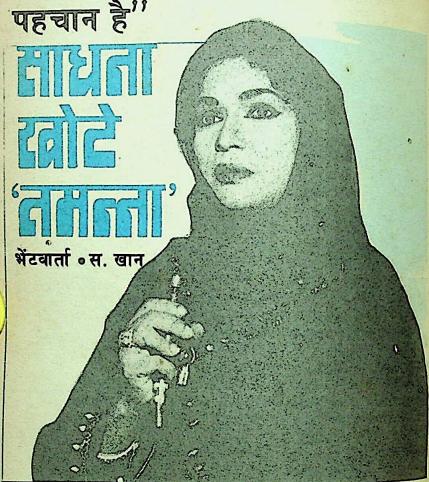
साधना खोटे 'तमन्ना' को लोग भले ही उस के नाम से न जानते हों, मगर उस की आवाज से उसे जरूर पहचानते हैं. उस की आवाज मीना कुमारी की आवाज से हूबहू मिलती है.

"हूबहू तो नहीं मिलती, आप थोड़ा गौर कीजिए मेरी और मीना आपा की आवाज में थोड़ा तो फर्क है ही. बस धोखा सा होता है, सुनने पर," एक भेंट में वह कहने लगी.

"मेरी आवाज शुरू से मीना आपा जैसी नहीं थी. मेरी जिंदगी में एक ऐसा हादसा हुआ कि उस की बदौलत अपनेआप ही मेरी आवाज बदल गई, और वह आवाज मीना आपा जैसी थी. एक फिल्म के सैट पर जब मैं उन से मिली और उन से बातें कीं तो उन्हें भी मेरी आवाज सुन कर बड़ा ताज्जुब हुआ. दोचार मुलाकातों में वह मुझे अपनी बहन की तरह चाहने लगीं थीं. कई बार उन्हीं की जिद पर, उन्हीं के सामने मैं ने उन की आवाज की जगह अपनी आवाज दी, यानी उन के संवाद मैं ने बोले और उन्हीं की सलाह पर मैं स्टेज व रेडियो पर कार्यक्रम देने लगी.

"एक बार उन्होंने मुझ से कहा था, 'साधना, मेरे मरने के बाद लोग मुझे तेरी आवाज की वजह से ही याद करेंगे.' मगर सचाई तो यह है कि मीना आपा की आवाज ही मेरी पहचान है. आज लोगों में मैं मीना आपा की आवाज की वजह से ही पहचानी जाती हूं. वरना मुझे कौन जानता.

"मगर मीना आपा की यह आवाज मेरे लिए अजाब भी बनी. एक बार किसी ने दुश्मनी में मुझे जहर खिला दिया था. मेरी जान तो बच गई मगर मेरा चेहरा खराब हो गया पर मेरी आवाज पर असर नहीं पड़ा. आवाज की वजह से आज भी लोग खुसुरफुसुर करते हैं— 'लो मीना कुमारी आ गई.'

"मीना आपा की सोहबत में ही मुझे शेरोशायरी का शौक पैदा हुआ. उन्होंने उकसाया तो एक दिन मैं कलम ले कर बैठ गई. सोचने लगी क्या लिखूं कि तभी उन की प्यारी सी शख्सियत आंखों के सामने घूमने लगी और उन की तारीफ में कलम कागज पर चल पड़ा. गजल पूरी हुई तो सब से पहले मीना आपा को ही दिखाई. उन्होंने गजल पढ़ कर मुसकुरा कर कहा, 'भई तुम तो बहुत बड़ी शायरा हो.'

"गजल के आखरी शेर में मैं ने अपना नाम 'साधना' लिखा था. मीना आपा ने कहा— 'तखल्लुस 'तमन्ना' रख लो, अच्छा रहेगा.' बस तब से अब तक अपने नाम के आगे 'तमन्ना' ही लिखती हूं. मीना आपा की तारीफ में जो पहली गजल लिखी थी वह इस तरह हैं:

'तू गुलिस्तां में बहारों की
तरह दिलकश थी,
दहन में चांद सितारों की
तरह दिलकश थी.
मौसम ए गुल की
कहानी थी कहानी तेरी,
एक हसीं ख्वाब थी
दुनिया में जवानी तेरी.
तुझ को फितरत ने
तखैयुल में सजाया होगा,
कितने फूलों की
लताफत से बनाया होगा.
एक जादू था जो
दुनिया में उतर आया था,
यह कोई गीत था जो
साज पे लहराया था.
चांदनी रात
लब ए आब नहाए जैसे,
कोई गालिब का
हंसी शेर सुनाए जैसे.
चलताफिरता हुआ जादू था
तेरा पैकर ए नाज,
तेरी मखमूर खामोशी भी
थी पुरसोज आवाज.
पैकर ए नाज तेरा
सुबह का अफसाना था,
तू सनम थी कि
तेरा साथ सनम खाना था.'

"मेरे बारे में आप को यह सुन कर ताज्जुब होगा कि मैं सिर्फ शायरा ही नहीं बल्कि एक अदाकारा भी हूं. अब तक मैं ने हिंदी की लगभग 40 फिल्मों में काम किया है. जिन के नाम हैं— पूर्णिमा, बंदिनी, दो मतवाले, पहाड़ी नागिन, पांच रतन, फौलादी मुक्का, बेकसूर, प्रेमपत्र, टार्जन आफ हर्क्यूलिस, बेटी, डाक्टर एक्स, पुजारिन, गोपाल कृष्ण, सरस्वती चंद्र, दर्पण, हीर-रांझा, आखरी खत, कौरवपांडव, मन का मीत, मेरा साया, मीरा, रंगा राजा, मदहोश, फौजी, यारी जिंदाबाज, पंडित और पठान, शिवचरण, दुश्मनी यार की, हिसाबकिताब, डाकू और महात्मा, साहब बहादुर, वह मैं नहीं, टैक्सी, समाधि, जंजीर, भयानक, दरवाजा, नियाज और नमाज, बिन फेरे हम तेरे और कसम भवानी की. हिंदी की इन 40 फिल्मों के अलावा मैं ने भोजपुरी की 16 फिल्मों में भी काम किया है.

"अंत में मैं आप को इतना और बता दूं कि मीना आपा के लिए मैं ने 'पाकीजा, गोमती के किनारे, बहारों की मंजिल, दुश्मन और मेरे अपने— पांच फिल्मों में अपनी आवाज दी है. मीना आपा पर बनी फिल्म 'मीना कुमारी की अमर कहानी' में पूरी आवाज मेरी ली गई है."

इस स्तंभ के लिए समाचारपत्रों की रोचक कटिंग भेजिए. सर्वोत्तम कटिंग पर 15 रुपए की पुस्तकें पुरस्कार में दी जाएंगी. कटिंग के साथ अपना नाम व पूरा पता अवश्य लिखें.

भेजने का पता : संपादकीय विभाग, मुक्ता, ई-3, रानी झांसी मार्ग, नई दिल्ली-110055.

दुर्घटनाग्रस्त लड़की से शादी

जालंधर की एक युवती का विवाह बुलंदशहर के एक युवक से तय हुआ. युवक के मातापिता शादी से एक सप्ताह पहले ही बुलंदशहर से जालंधर आ गए. संयोगवश शादी से ठीक तीन दिन पहले जब युवती अपनी बहन के साथ रिकशा पर बैठ कर जा रही थी तो एक ट्रक से रिकशा की टक्कर हो गई और उस युवती की टांग को गंभीर चोट आई.

युवती को हस्पताल में दाखिल करवा दिया गया. टांग पर पलस्तर चढ़ाया गया और यह निश्चित नहीं था कि पलस्तर खुलने के बाद टांग ठीक हो जाएगी या नहीं. लड़की तथा उस के मातापिता परेशान थे. कहीं लड़के वाले अब शादी से इनकार न कर दें, लेकिन उन के लिए यह एक सुखद आश्चर्य की बात थी कि लड़के तथा उस के घर वालों ने इस बात पर कोई आपत्ति नहीं की तथा लड़की के पूर्ण स्वस्थ होने का इंतजार भी नहीं किया और हस्पताल में ही लड़की के साथ पूर्ण रीतिरिवाजों के अनुसार शादी कर ली.

लड़के से इस बारे में पूछने पर उस ने बताया कि मंगनी के बाद ही वह युवती को अपना जीवनसाथी मान चुका था और उसे इस प्रकार नहीं छोड़ सकता था.

—पंजाब केसरी, जालंधर (प्रेषकः सुरिंदरपाल कथूरिया)

(सर्वोत्तम)

*

जिलाधीश का आदर्श निर्णय

मध्य प्रदेश के मंदसोर जिले के जिलाधीश ने घोषणा की है कि वह सार्वजनिक समारोहों में न पुष्पहार पहनेंगे और न ही ऐसे कार्यक्रमों में जलपान ही करेंगे. उन्होंने कहा कि इस प्रकार की फजूलखर्ची से बच कर रहा जाए तो इस अपव्यय को एक हद तक रोका जा सकता है.

—नई दुनिया, इंदौर (प्रेषकः विमलकुमार बुरड़)

*

चार बच्चों की जान बचाई

पंजाब के नंगल ताल में हुई नौका दुर्घटना में, जिस में पटियाला के 'अवर लेडी आफ फातिमा' कानवैंट स्कूल के 22 छोटे छात्रछात्राओं सहित 24 लोग डूब गए थे, भारी आतंक और चीखपुकार के बीच एक 11 वर्षीया छात्रा रचना जैन ने अप्रतिम साहस दिखा कर अपने चार सहपाठियों की जान बचा ली.

छठी कक्षा की छात्रा रचना जैन ने पहले दो बच्चों को बचावनौका में हाथ से खींच कर चढ़ाया और फिर तैरतैर कर दो डूब रहे बच्चों को पकड़ कर नौका तक ले आई. रचना के मातापिता को भी इस बात पर काफी आश्चर्य है, क्योंकि उन के अनुसार रचना बेहद डरपोक है.

—पंजाब केसरी, जालंधर (प्रेषकः भूपेंद्र धरेजा)
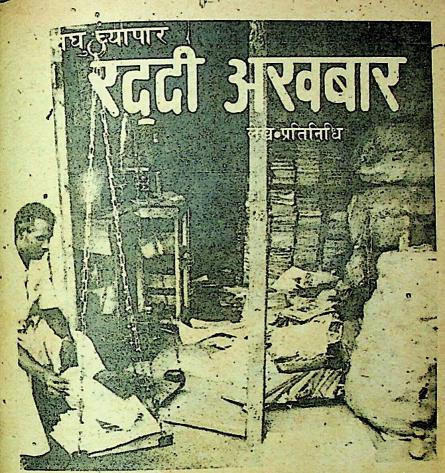
लगभग हरेक व्यक्ति कोई न कोई दैनिक अखबार या पत्रिका अवश्य खरीदता है. साधारणतया एकदो महीने के अखबार इकट्ठे होने पर रद्दी अखबार खरीदने वाले, जिसे कबाड़िया भी कहते हैं, को बेच दिए जाते हैं. रद्दी अखबारों का धंधा एक ऐसा धंधा है जिस में कम लागत पर अच्छा मुनाफा होता है.

इस के लिए दुकान में यद्यपि किसी खास सजावट अथवा बनावट की आवश्यकता नहीं है, फिर भी अगर दुकान का बाहरी हिस्सा कुछ साफ सुथरा रहे तो ग्राहकों की संख्या बढ़ जाती है.

यह धंधा शुरू करने के लिए अगर चार

इस धंधे में कुछ व्यावहारिक जानकारी रखने पर कम पूंजी से भी अच्छा मुनाफा प्राप्त किया जा सकता है.

हजार से आठ हजार तक रुपए लगाए जाएं तो बहुत ही अच्छा रहता है, वरना तीन हजार में भी काम शुरू किया जा सकता है.

दुकान जमाने के लिए शुरूशुरू में आसपास के कबाड़ियों (जो गलियों में फेरी लगाते हैं) से संपर्क कर के उन्हें कमीशन बांध देना चाहिए, ताकि घरों से खरीदे गए रद्दी अखबार इत्यादि वह आप की दुकान पर आ कर बेचें.

पिछले सात वर्षों से दिल्ली के करोल बाग में कबाड़ी का धंधा कर रहे रामनिवास के अनुसार कबाड़ी का धंधा एक ऐसा धंधा है, जिस में कई तरह के गलत धंधो की गुजांइश सब से ज्यादा होती है. मसलन चोरी का सामान खरीदना. शुरू में गलत धंधों में हाथ बिलकुल नहीं डालना चाहिए, क्योंकि इस तरह के काम करने से दुकान की बदनामी हो जाती है तथा दुकानदार को जेल भी जाना पड़ सकता है. अतः लोहा, लक्कड़, पीतल, तांबा इत्यादि खरीदते वक्त यह तसल्ली कर लेनी चाहिए कि सामान चोरी का नहीं है.

इस धंधे में अखबार, प्लास्टिक, डब्बा, शीशा, बोतल, लोहा, पीतल, तांबा, रबड़, पत्रिकाएं, रद्दी कापियां इत्यादि आम लोगों से खरीद कर पुनः उन्हें जरूरतमंद लोगों को बेच दिया जाता है. मसलन रद्दी अखबार, तथा पत्रपत्रिकाएं फल विक्रेता या किराने की दुकान वाले खरीद कर ले जाते हैं. अखबार पुनः कागज बनाने वाली फैक्टरियों में भी चले जाते हैं.

रद्दी कागज इत्यादि का इस्तेमाल गत्ता बनाने में भी होता है. प्लास्टिक, लोहा, शीशा इत्यादि पुनः कारखानों में वापस हो जाता है, जहां उन्हें गलाने के बाद पुनः नई चीजें बनाई जाती हैं. दिल्ली के बाजार में आमतौर पर कबाड़ी के सामान खरीदने एवं बेचने की दरें सूची में दी गई हैं.

कबाड़ी की दुकान खोलने के बाद रोज करीब 400 या 500 रुपए हाथ में रखने चाहिए ताकि सामानों को खरीदा जा सके.

कबाड़ी की दुकानों में 150 या 200 रुपए प्रतिमाह पर एकदो नौकर भी रखने पड़ते हैं, जो अखबारों तथा अन्य सामानों को सिलसिलेवार रखने में मदद कर सकें.

आसपास के दफ्तर, पुस्तकालय इत्यादि से संपर्क कर लेने पर भी धंधे के जमने की गुंजाइश ज्यादा होती है.

कबाड़ी की दुकान 4,000 रुपए की लागत में करने पर 20-30 रुपए रोज की आमदनी हो सकती है. ऐसी दुकानों का पंजीयन समय से करा लेना चाहिए.

कबाड़ी के सामान	खरीदने की दर (प्रति किलोग्राम)	बेचने की दर (प्रति किलोग्राम)
अखबार	दो रुपए से 2.20 रुपए तक	2.10 से 2.40 रुपए तक
प्लास्टिक	आठ से 10 रुपए तक	9.50 से 11 रुपए तक
डब्बे	25 पैसे प्रति डब्बा या 1.25 रुपए प्रति किलोग्राम	30 पैसे प्रति डब्बा या 1.50 रुपए प्रति किलोग्राम
शीशा	25 पैसे	30 पैसे
पीतल	20 रुपए	21 या 22 रुपए
लोहा	यह लोहे की किस्म के ऊपर निर्भर करता है—साधारणतया 70 पैसे, 1.00 रुपए तथा 1.50 रुपए प्रति किलोग्राम	10 पैसा प्रति किलोग्राम के हिसाब से मुनाफा
रबड़	25 पैसे	30 पैसे
पत्रिकाएं	1.50 रुपए से 2.25 रुपए	1.65 से 2.40 रुपए
प्लास्टिक, रबड़ के चप्पल इत्यादि	3.25 रुपए	3.50 रुपए
रद्दी कापियां	1.50 रुपए	1.60 या 1.65 रुपए

मुक्ता

नएँ लेखकों के लिए कहानी प्रतियोगिता

नए अंकुर

मुक्ता ने अपने जन्म ही से नए लेखकों को प्रोत्साहित किया है. कभी लेखकों के नाम से प्रभावित हो कर उन की रचनाओं को तरजीह नहीं दी है. मुक्ता के लिए रचना ही महत्वपूर्ण होती है. लेखकों का नाम या उस की ख्याति नहीं.

नए लेखकों को प्रकाश में लाने के लिए मुक्ता द्वारा समयसमय पर नए अंकुर प्रतियोगिताएं भी आयोजित की जाती रही हैं, जिन में केवल उन्हीं लेखकों की रचनाएं स्वीकृत की जाती हैं जिन की कोई रचना पहले कहीं न छपी हो.

अब इस प्रतियोगिता को सामयिक की बजाए स्थायी रूप दे दिया गया है. यह प्रतियोगिता निरंतर चलती रहेगी. इन में उन सभी नए लेखकों की कहानियों का स्वागत है जिन की कोई रचना पहले कहीं प्रकाशित नहीं हुई है. इन रचनाओं के लिए कोई अंतिम तिथि नहीं है. जैसेजैसे ये प्राप्त होती जाएंगी इन पर विचार कर के निर्णय किया जाता रहेगा और यथासंभव [illegible] प्रकाशित कर दिया जाएगा. प्रत्येक रचना पर 75 रुपए का [illegible] जाएगा. वर्ष के अंत में सभी 'नए अंकुर' रचनाओं पर [illegible] किया जाएगा और सर्वश्रेष्ठ रचनाओं पर निम्नलिखित पुरस्कार दिए जाएंगे :

कहानी • पुष्पा सक्सेना
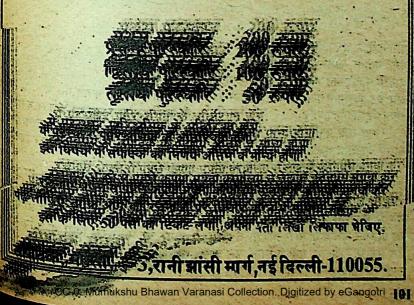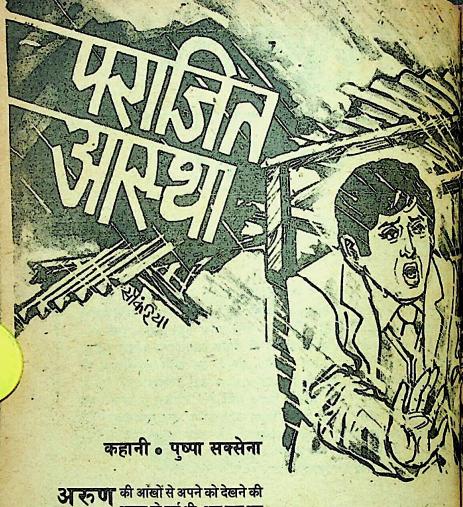
अरुण की आंखों से अपने को देखने की आदत हो गई थी. अब जब वह पास नहीं हैं, अपने आप को देखने को दिल ही नहीं चाहता. अरुण का साथ पाते ही मन बादलों से होड़ लेने लगता था, लेकिन अब... अब जेठ की तपती दोपहरी भरा आकाश को सहने की आदत हो गई है.

पता नहीं क्यों आज मेरा अतीत मेरे सामने आ खड़ा हुआ है.

उस रोज भैया ने अपने कमरे में से मुझे जोर से आवाज दी थी. उन के स्वर में उत्साह छलका पड़ रहा था. हमेशा की तरह धड़धड़ा कर मैं कमरे में घुसी थी, पर एक अपरिचित को देख कर जब थोड़ा सा ठिठकी थी, तो भैया हंस पड़े थे, "अरुण, यही है मिनी. इस का रंगरूप तो ठीक है, पर दिमाग की जगह खाली छूट गई है. वैसे साहित्य में एम.ए. करने की चेष्टा कर रही है," मेरी चढ़ी भृकुटी को अनदेखा कर भैया कहते गए थे, "मिनी, ये हैं डाक्टर अरुण. यहां मेडिकल कालिज में नएनए आए हैं, तो शायद अब इतना परिचय काफी है अब मैं निश्चित हो कर विदेश जा सकता हूं न?"

भैया को अमरीका जाना था इसलिए उन्होंने अपने बचपन के मित्र अरुण को, जो कई साल बाद यहां डाक्टर बन आ गया था, हमारे घर में ही रख दिया था ताकि हमें उन की अनुपस्थिति न खले.

भैया के जाने की तैयारियों में चार दिन

से ही हंस पड़ी थीं और मैं क्रोध से मन ही मन जल गई थी, "चले हैं भैया की नकल करने. पता नहीं मैं ने बी.ए. में स्वर्णपदक पाया है." पर मेरे मुख को पढ़ते ही क्षमायाचना के

प्रेम की राह में एक मोड़ ऐसा भी आया जब मिनी ने अरुण को अपनी आदर्शवादी आस्थाओं के विपरीत पा कर उस से संबंध तोड़ लिए, पर कुछ दिन बाद उस की ये आस्थाएं खुद ब खुद क्यों टूटने लगीं?

मानों चार पल की तरह बीत गए. हर पल मैं भैया के साथ जीना चाहती थी, आखिर वर्षों का अंतराल जो भोगना था इस के बाद. इस बीच अरुण पर न जाने कब मैं अधिकार जमा बैठी, यह मुझे पता ही नहीं चला.

भैया को हवाई अड्डे तक पहुंचाने के लिए हमारे साथ अरुण भी आए थे. भैया के जाते समय जब मां अपना संयम खो बैठी थीं, तो अरुण बड़े सहज हो कर बोले थे, "मां क्या करें, अनिल को मिनी के कारण अमरीका जाना पड़ रहा है. अमरीका में मस्तिष्क प्रत्यारोपण सीखेगा ताकि मिनी के दिमाग की खाली जगह भरी जा सके." मां सजल नयनों

स्वर में अरुण बोले थे, "ऐ, मिनी, जरा मां को हंसाना था तभी यह बात कही. वरना तुम्हारी योग्यता की धाक तो हमारे मेडिकल कालिज तक है." चिढ़ कर भी मैं हंस पड़ी थी.

अरुण ने भैया की अनुपस्थिति कभी खलने नहीं दी. प्रातः मेडिकल कालिज जाने से पूर्व मां का डाक्टरी मुआयना करना मानो उन का प्रथम दायित्व था और अगर मां इस को मना करतीं तो वह हमेशा कहते, "अनिल आप दोनों का दायित्व मुझ पर छोड़ गया है. उस की धरोहर की ठीक से रक्षा न कर सका तो अपने प्यारे दोस्त की दोस्ती खो बैठूंगा."

संध्या होते ही अरुण आ जाते थे. कभी सिनेमा देखने, कभी कहीं घूमने और कभी खरीदारी करने, हम दोनों निकल जाते थे. ठंडी काफी मुझे बहुत पसंद है, यह अरुण जान गए थे.

कभी हस्पताल में ज्यादा व्यस्त होने पर अरुण फोन कर देते, "मिनी, तैयार रहना, यहां से सीधा तुम्हें ले कर पिक्चर देखने चलूंगा."

पर थोड़ा तुनक कर मैं कहती, "न बाबा न, मैं नहीं जाऊंगी तुम्हारे साथ, तुम्हारे कपड़ों से हस्पताल की सी गंध आती होगी. आज रिकशे से चली जाती हूं." पर ऐसा करने का अरुण ने मौका ही कब दिया?

बचपन से अपने ऊपर भैया की स्नेह छाया पाई थी. भैया ने हमेशा मेरा जन्मदिन बहुत धूमधाम से मनाया था. इस बार जन्मदिन पर आई भैया की शुभकामनाएं पा कर मन बहुत उदास हो गया था. अरुण एकदम कमरे में आ गए थे, कार्ड पर दृष्टि जाते ही चौंक गए थे, "वाह, अनिल की शुभकामनाएं" और फिर उन्होंने मां के साथ हड़बड़ी मचा दी थी. मां घबरा उठी थीं, "क्या करूं अरुण, हमेशा अनिल ही इन सब झंझटों से निबटा करता था. आज मिनी की साड़ी..."

बस मां का इतना कहना था कि अरुण ने मुझे जबरन स्कूटर पर बैठाया और साड़ी की दुकान पर ला कर खड़ा किया. पूरे उत्साह और आत्मविश्वास के साथ अरुण साड़ियां निकलवाते रहे और अंत में एक हलकी गुलाबी साड़ी देख जैसे उस पर मुग्ध हो गए. थोड़ी देर में हम साड़ी, केक, मिठाइयां ले घर लौटे थे.

यह सब देख कर मां ने हलका सा विरोध किया था. इस पर अरुण उदास हो गए थे. तो मां ने हंस कर कहा था, "मिनी अब तो यह साड़ी पहन ही ले, तेरे मनपसंद रंग की है." अरुण की आंखों में चमक आ गई थी. वह साड़ी पहन कर पहली बार अरुण की आंखों से अपने को बहुत चाहा था.

विश्वविद्यालय में वादविवाद प्रतियोगिता होने वाली थी. विरोध पक्ष में बोलने के लिए मेरा नाम दे दिया गया था. मैं घबरा रही थी, पर अरुण हंस कर बोले थे, "भई क्या मुशकिल है, जहां भूल जाओ खांसने लगना, हथेली पर लिखे प्वाइंट्स देख, जरा सा मुसकरा कर 'सारी' कह कर फिर बोलने लगना." अतः तरहतरह से अरुण मुझे उत्साहित करते रहे थे.

प्रतियोगिता में धाराप्रवाह बोल कर जब मैं मंच से उतरी थी, तो अरुण की मुग्ध प्रशंसा दृष्टि में मैं ने अपनी विजय का परिणाम पहले ही पढ़ लिया था. मेरे प्रथम पुरस्कार प्राप्ति के बाद अरुण ने मेरे सामने हाथ फैला कर कहा था, "इस पुरस्कार पर मेरा अधिकार है. कितनी झूठी तालियां बजाईं, तब मिला है."

"अच्छा, मेहनत मैं करूं, पुरस्कार आप का?" फिर भी पुरस्कार अरुण के हाथ पर रख कर बहुत अच्छा लगा था.

एक दिन विश्वविद्यालय से ही मेरी सहपाठिन किरन साथ आ गई थी. इधर चाय के साथ पकौड़ी की फरमाइश लिए अरुण भी आ गए थे.

परिहास के स्वर में वह बोले थे, "आज समझ में आया कि साहित्य के लोग रोमांटिक क्यों होते हैं...?"

इस से पहले कि अरुण अपनी बात पूरी करते, किरन ने हंस कर कहा था, "सच डाक्टर साहब, प्रोफेसर मथीर तो केशव के

हस्पताल में अरुण को देखते ही मिनी के मन का कोनाकोना असीम सुख से परिपूर्ण हो गया.
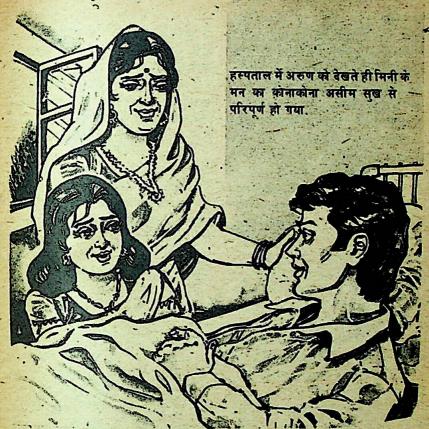
नायिका के 'नखशिख वर्णन' को पढ़ाते समय मिनी की ओर से आंखें ही नहीं हटाते. पूरे मन से मिनी पर स्नेह उंडेलते हैं."

इस पर मैं घृणा से होंठ चबा कर पकौड़ी लाने रसोई की ओर चल दी थी.

उन दिनों सर्दी ज्यादा पड़ने लगी थी. मुझे जुकाम हो रहा था. फिल्म उतरने का अंतिम दिन था. अरुण ने शाम को वह फिल्म दिखाने का वादा किया था. चलते समय हलके बादल छाए थे. मां ने मौसम देख कर हमारे जाने का हलका विरोध भी किया था, "आज सिनेमा नहीं जाएगी तो क्या हो जाएगा. फिर बीमार पड़ेगी तो... अरुण को तंग करेगी."

मां की बात सुनते ही अरुण हंस पड़े थे. फिर थोड़ी गंभीरता का नाटक कर के बोले थे. "सच मां, मिनी को इतनी फिल्में नहीं देखनी चाहिए. आपरेशन टेबल पर मरीज छोड़ कर इसे फिल्म दिखाने के लिए आया हूं, वरना कल क्या घर में घुसने देती?"

मां के मुख पर चिंता उभरी देख कर मैं खीज उठी थी, "ओह मां, आज तो इन की छुट्टी है, तुम भी किस का विश्वास करती हो." इस पर अरुण के साथ मां भी हंस पड़ी थीं और हम दोनों चल दिए थे.

फिल्म की समाप्ति पर बाहर निकले तो हलकी वर्षा शुरू हो गई थी. एक पल आकाश की ओर ताक कर अरुण ने कहा था, "मिनी जल्दी चलो, कहीं पानी तेज पड़ने लगा तो मुशकिल में पड़ जाएंगे."

पिक्चर हाल शहर के बाहर था. अरुण स्कूटर तेजी से भगा कर चल दिए, पर शायद पानी तेजी से पड़ने के लिए हमारी ही राह देख रहा था. पानी की बौछारें मुंह पर

मानो थप्पड़ मार रही थीं. सड़क पर बत्तियां भी बुझ गई थीं. तेज हवा और बारिश में अरुण को स्कूटर चला पाना कठिन हो रहा था. परेशान हो कर एक बंद दुकान के आगे अरुण ने स्कूटर रोक दिया. हम दोनों उस दुकान के छज्जे की शरण पाने दौड़ पड़े थे.

तभी पास कहीं बड़े जोर से बिजली गिरी थी और मैं भयभीत सी हो कर अरुण के एकदम निकट हो गई थी. अरुण ने अचानक मुझे अपने आलिंगन में ले कर अपने होंठ मेरे होंठों पर रख दिए थे. विस्मय, घृणा और क्रोध से मैं तिलमिला गई थी, 'छोड़ दो मुझे छोड़ दो' कहती हुई मैं बरसते पानी में ही निकल पड़ी थी. पीछे से अपराधी स्वर में अरुण भागते हुए आए थे, "मिनी, सुनो तो, मुझे माफ कर दो, मुझ से गलती हुई है."

पर अरुण का हर अनुरोध अनसुना कर मैं आंसू बहाती, पागलों की तरह लगभग दौड़ पड़ी थी. एक रिकशा दिखा था. बस रिकशा वाले को किसी तरह घर का पता बता कर घर पहुंची थी. घर पहुंच कर द्वार की घंटी पर जोर से हाथ रख दिया था. पीछेपीछे स्कूटर पर अरुण भी आ गए थे.

मुझे पूरा भीगा देख कर मां भयभीत हो गई थीं, "देखा, बड़ों का कहना न मानने का नतीजा? चल, जल्दी कपड़े बदल, अभी चाय भेजती हूं. अरे, अरुण कहां है?"

उत्तर में मैं एक साथ कई सीढ़ियां चढ़ कर कमरे में पहुंच गई थी और धम्म से कुरसी पर बैठ गई थी. रिकशे वाले को पैसे जरूर अरुण ने दिए होंगे. पता नहीं मां से क्या कह कर अरुण उलटे पांव लौट गए थे. मां का उन से कपड़े बदलने, रुकने का आग्रह करना व्यर्थ ही हुआ था.

मैं कब, कैसे कपड़े बदल कर पलंग पर पड़ गई थी, कुछ याद नहीं आता. मां बारबार पूछती रही थीं, "क्या अरुण से लड़ कर आई है. इतना सीधा लड़का है, तू हमेशा उसे तंग करती है. मिनी, इतना अभिमान अच्छा नहीं होता. बेचारा अरुण..."

दूसरे दिन मुझे हलका बुखार हो आया था. मां के मना करने पर भी जरूरी काम का बहाना कर के मैं प्रातः अरुण के आने से पहले ही किरन के घर चली गई थी, फिर उस के साथ विश्वविद्यालय. हमारे विभाग में चपरासी ने जब डाक्टर अरुण के नाम की चिट ला कर मुझे दी तो कई जोड़ी आंखें उत्सुकता के साथ मुझ पर जम गई थीं. मैं ने चिढ़ कर चपरासी से कहा था, "कह दो कक्षा में है."

थोड़ी देर बाद चपरासी ने एक बंद लिफाफा ला कर मेरे हाथ पर रख दिया था. चारों ओर फुसफुसाहटें शुरू हो गई थीं. किरन ने रहस्यात्मक अंदाज में मुसकरा कर पूछा था, "क्या बात है भई, रोज मिलती हो, फिर भी बंद लिफाफे?"

क्रोध से जल कर मैं ने कहा था, "किरन, आदमी सब एक से होते हैं. कितना आदर करती थी मैं अरुण का, पर वह भी कितने दुर्बल पुरुष निकले." कहतेकहते आवेश से मेरे होंठ थरथराने लगे थे.

मुझे पत्र फाड़ने की चेष्टा करती देख किरन ने लिफाफा मुझ से ले कर मेरी पुस्तक में रख दिया था और धीरे से कहा था, "छिः, मिनी, अगर किसी व्यक्ति से किसी क्षण कोई दुर्बलता हो जाए तो क्या उसे उस के पूरे चरित्र का मापदंड बना डालेगी? और देख, जब मन शांत हो, तब यह लिफाफा खोल कर जरूर पढ़ना."

घर आते ही मां ने दो गोलियां और पानी का गिलास मेरे सामने रख दिया था, "अरुण दे गया है ये गोलियां. कह रहा था, कल तू बहुत खांस रही थी. क्या तूने उस से बहुत झगड़ा किया है, मिनी?"

क्रोध से मैं फिर तिलमिला गई थी. गोलियां फेंक कर चीख पड़ी थी, "कुछ नहीं हुआ है मुझे, मां, बेकार के दिखावे से मुझे नफरत है."

इस पर मां क्रोध से बड़बड़ाती रह गई थीं, "दिमाग सातवें आसमान पर चढ़ा रहता है, न जाने कैसे निभेगी."

मन को बहुत रोकना चाहा, पर अंततः बंद लिफाफा खोल ही दिया था. बस ज्यादा

कौन

मुझ से आंखें फेर के उस ने
यह मुश्किल भी आसां कर दी.
वरना तेरे गम के बदले
लेता कौन बसेरे दिल में.

—कतील शिफाई

कुछ नहीं लिखा था .

'मिनी,

कल की दुर्घटना के लिए क्षमा करना. डाक्टर हूं न, शायद इसी लिए शरीर का अस्तित्व झुठला नहीं सका. रोगियों, कीटाणुओं से लड़तेलड़ते मन के किसी कोने में तुम्हारी चाह का कोमल अंकुर पनप आया, मुझे पता ही नहीं लगा. इस शरीर के साथ ही मन है, अगर इस तथ्य को सच मान सको तो शायद मुझे अपराधी नहीं पाओगी.

—अरुण'.

पत्र हाथ में ले कर थोड़ी देर सोचती रही थी. अरुण भी एक साधारण पुरुष ही निकले. वही पुरुषोचित दुर्बलताएं उन में भी हैं. पर उसे मैं ने असाधारण पुरुष के रूप में देखना क्यों चाहा? बहुत चाह कर भी मैं अरुण को फिर उसी सामान्य सहज स्थिति में स्वीकार नहीं कर पा रही थी.

अरुण इस पत्र के बाद शायद मेरे पीछे ही मां के पास आते थे, क्योंकि मां की दवाइयां, चैकअप सब सामान्य रूप से चल रहा था. बस हम दोनों अपरिचित हो गए थे.

लंबी छुट्टी पर जाने से पूर्व अचानक अरुण घर जल्दी आ गए थे. अकस्मात उन्हें अपने सामने पा कर मैं चौंक गई थी. उन का सूखा मुंह देख कर मन हाहाकार कर उठा था. वह सूखे गले से बोले थे, "लंबी छुट्टियों पर घर जा रहा हूं मीनाक्षीजी." फिर अपने हाथ में पकड़ी दवाओं की सूची व दवाएं मुझे थमाते हुए बोले थे, "सब सावधानियां लिख दी हैं, मां को समय पर दवाइयां देती रहिएगा. फोन नंबर लिख दिया है, कोई समस्या होने पर डाक्टर गुलशन को बुला लीजिएगा, अच्छा नमस्कार."

बिना किसी जवाब की प्रतीक्षा के अरुण मुड़ कर चले गए थे. मेरे कानों में उन का संबोधन 'मीनाक्षीजी' जैसे डंक बन कर पूरे शरीर में चुभता रहा था. मैं चाह कर भी अरुण को नहीं पुकार सकी थी, पर पता नहीं क्यों जैसे मेरा रोमरोम उन को रोकने का आग्रह करने लगा था.

अरुण को गए दो माह बीत गए. हर पल अनजाने ही उन की प्रतीक्षा करती रही. मन मानो अचानक ही रस विहीन हो उठा था.

कल किरन ने फोन कर के बताया कि अस्वस्थ अरुण मेडिकल कालिज में है. मां के साथ भाग कर उन को देखने पहुंची थी. नर्स ने बताया था कि "विशेष चिंता की बात नहीं, शायद डाक्टर अरुण ने अपने स्वास्थ्य के प्रति बहुत लापरवाही बरती थी." फीकी मुसकान के साथ अरुण ने हमारा स्वागत किया था. उन के कमजोर शरीर को देखते ही मां ने मीठी झिड़की के साथ हिदायतों की झड़ी लगा दी थी. मेरी ओर न जाने कितनी गहरी दृष्टि से देख कर अरुण बस मुसकरा भर दिए थे. अरुण का उस दिन का चुंबन मेरे अधरों पर दहक उठा था. लज्जा से आरक्त मुख को ऊपर उठा कर अरुण की ओर ताकने का दुस्साहस न कर सकी थी, वह मेरी हर बातें पढ़ जो लेते थे.

मैं ने अपने तन को मन के बहुत कड़े अंकुश में रखा था फिर यह तन विद्रोही कैसे बन गया था, मैं सोचने लगी थी. झुक कर अरुण के माथे पर अपना स्नेह चुंवन अंकित करने को मन क्यों अधीर हो उठा था, बांहें उसे अपने में समेट लेने को क्यों व्याकुल हो गई थीं. मुझे अरुण की आंखों में प्यार का अथाह सागर लहराता हुआ क्यों लगा था. पता नहीं क्यों मुझे ऐसे किसी भी प्रश्न का उत्तर नहीं मिल पाया था.

उस पल लगा था जैसे पिछले दो महीनों से मन जिस आग में सुलग रहा था उसे केवल अरुण के इसी स्नेह सागर की अपेक्षा थी. अरुण को देखते ही मन का कोनाकोना असीम सुख से परिपूर्ण हो गया था. यह नया अनुभव पलक कर चेहरे की लाज बढ़ा गया था. मैं ने अपने से धोखा खाया था. जिस से हर क्षण घृणा करनी चाही थी, उसे हर पल प्यार करने लगी थी.

आज अरुण घर आ रहे हैं. क्या फिर वही गुलावी साड़ी पहन लूं, जिसे पहन कर शीशे में अपने को देखने का साहस खो चुकी हूं? पर हाथों ने उसी स्नेह उपहार को हृदय से लगा लिया है. गुलावी साड़ी लिए अपनी आस्था को पराजित कर अरुण की प्रतीक्षा कर रही हूं.

"कितनी अच्छी सलाह है... अब लोग यह नहीं कह सकते कि अंगूठ छाप भी मंत्री बन जाते हैं... हम आठवीं पास जो आसानी से हो जावेगें..."

"भारत ने मुझे बहुत प्रभावित किया है"

हैरी जी. बार्न्ज

भेंटवार्ता ० मृदुला हालन

भारत स्थित अमरीकी राजदूत हैरी बार्न्ज भारत और अमरीका के बीच की दूरियों को पाट कर एक सौहार्द भरा वातावरण बनाने के लिए प्रयत्नशील हैं. प्रस्तुत है उन की सोच, कार्यप्रणाली और उन के व्यक्तिगत जीवन की झलक प्रस्तुत करती अतरंग बातचीत.

17 नवंबर, 1981 को भारत में संयुक्त राज्य अमरीका के नए राजूदत हैरी जी. बार्न्ज ने अपना कार्यभार संभाला. राष्ट्रपति भवन में तत्कालीन राष्ट्रपति श्री नीलम संजीव रेड्डी के समक्ष अपने प्रमाणपत्र प्रस्तुत करते हुए श्री बार्न्ज ने अमरीका और भारत की मैत्री की दीर्घायु की कामना की.

उन्होंने कहा, "हम अमरीकावासी आजादी का महत्त्व और उस का मूल्य पहचानते हैं. तभी तो भारत के स्वतंत्रता संघर्ष में हम भारत के साथ थे." उन्होंने यह भी कहा कि लोकतंत्री देश एकदूसरे का शोषण कर के या उन के विकास में रुकावट डाल कर संपन्न और निश्चिंत नहीं रह सकते. आज यहां भारत में जो कुछ हो रहा है, वह अमरीका में हमारे लिए भी महत्त्वपूर्ण है.

और अगर भारत एक महान (गणतंत्र) शक्ति के रूप में उभर कर सामने आता है तो वह सिर्फ भारत की ही नहीं वरन समूची गणतंत्र शासन पद्धति की सफलता होगी."

आशा और उत्साह से भरे इन शब्दों ने स्थान की दूरियों को पाट कर दोनों देशों के मध्य एक सौहार्द भरे वातावरण के निर्माण की आशा जगा दी.

उपर्युक्त विचारों को व्यक्त करने वाले श्री बार्न्ज का जन्म 5 जून, 1926 को मिनेसोटा में हुआ था. 1949 में वह स्नातक बने और 1968 में उन्होंने कोलंबिया विश्वविद्यालय से एम.ए. की उपाधि प्राप्त की. 1944-46 का समय उन्होंनें अमरीकी फौज की सेवा में व्यतीत किया. अंतत: विदेश सेवा में शामिल हो कर हैरी 1951 में अपनी पहली नियुक्ति पर बंबई पहुंचे. उस समय उन्होंने इस बात की कभी कल्पना तक नहीं की थी कि आने वाले वर्षों में एक दिन वह इस देश में राजदूत के गरिमामय पद पर प्रतिष्ठित होंगे. और अब जब ऐसा हो गया है तो राजदूत बार्न्ज इस संयोग पर सचमुच ही उत्साहित और प्रसन्न हैं.

भारत : संपूर्ण दुनिया का झरोखा

"1960 के दशक में जहां अनेक बार मेरा आनाजाना हुआ, समय की रफ्तार के साथ बदलते और आगे बढ़ते भारत को मैं ने देखा और समझा. आज फिर एक बार उसी देश में लौट आना, आप सोच सकते हैं, मेरे लिए कितना महत्त्वपूर्ण है." वह यह भी महसूस करते हैं कि वह भारत से बहुत प्रभावित हैं और संपूर्ण दुनिया को देखने के लिए भारत उन का झरोखा है.

1951 से 1981 तक का यह सफर कोरा सफर ही नहीं है, विदेशी राजनीतिशास्त्र में पारंगत होने का एक लंबा सिलसिला है. रूस, जरमनी, चेकोस्लोवाकिया, रूमानिया, नेपाल आदि अनेक देशों में विभिन्न पदों पर कार्य करने के साथसाथ हैरी ने अनेक भाषाएं भी सीख ली हैं, क्योंकि उन के विचार में, "इन से एकदूसरे को समझना आसान हो जाता है." फ्रैंच, नेपाली, रूमानियन, रूसी भाषाओं के जानकार बार्न्ज अब हिंदी सीख रहे हैं. हमारी बातचीत के अंत में उन्होंने विशेष आग्रह के साथ कहा था, "जिस अंक में यह भेंटवार्ता प्रकाशित होगी, वह अंक मुझे भेजना न भूलिएगा. उस को पढ़ कर देखूंगा, मेरा हिंदी ज्ञान कहां तक पहुंचा है."

खूबियों भरा व्यक्तित्व

स्वभाव से मिलनसार, एकदम बेबाक व्यक्तित्व, विनोदप्रिय और मृदुभाषी बार्न्ज के रूप में एक ऐसा व्यक्तित्व इस समय चाणक्यपुरी स्थित अमरीकी दूतावास का अधिष्ठाता है, जो भारत और अमरीका के संबंधों को मैत्री की ऊंचाइयों तक ले जाने की इच्छा रखता है. दोनों ही देश विशाल गणतंत्र हैं, स्वतंत्रता का मूल्य पहचानते हैं और उस की गरिमा से भी परिचित हैं, पर उन्होंने अपने प्रमाणपत्र प्रस्तुत करते हुए कहा था, "जैसा कि अभी हाल ही में आप की प्रधान मंत्री ने कहा था, जहां एक से ज्यादा इनसान होंगे, मत वैभिन्न्य और लड़ाईझगड़े होंगे ही. इसी लिए समयसमय पर दोनों देशों की सरकारों के मध्य मत वैभिन्न्य आड़े आता रहा है. मेरा प्रयत्न होगा कि इस को कम किया जाए और जो हैं उन को दूर करें."

हलके नीले रंग की कमीज, कुछ उसी रंग का कार्डीगन व ग्रे पैंट, कमीज की जेब में दो पेन टंगे थे, चश्मा भी झांक रहा था. बाएं हाथ की उंगली में एक अंगूठी जो बातचीत के दौरान हाथ हिलाने में चमकदमक जाती. अमरीकी हिसाब से बार्न्ज का कद औसत दरजे का ही कहा जाएगा. सिर के बाल बीच से कुछ पलायन कर रहे हैं. उन की बातचीत में एक आत्मीयता सी प्रतीत हुई और बेतकल्लुफी भी. शायद इसी कारण वातावरण भी ऐसा था कि प्रश्न बिना किसी रुकावट के किए जाते रहे और राजदूत की ओर से भी उन को दाबने या ढांपने का कोई प्रयास नहीं किया गया.

समाज के विभिन्न वर्गों के लोगों से मिल कर, उन से बातचीत कर के ही देश को या

अमरीकी राजदूत अपनी पत्नी और पुत्री के साथ : भारतीय संस्कृति को गहराई से जानने के लिए उत्सुक परिवार.

समाज को अच्छी तरह समझा जा सकता है. इस सिद्धांत पर बार्न्ज अमल भी करते हैं. समयसमय पर वह ऐसी गोष्ठियां करते रहते हैं. उन का कहना था, "इस से मुझे यहां के हालात को समझने में आसानी होती है."

राजदूत का एक अन्य शौक है—ट्रेकिंग यानी लंबी यात्राएं करना. उन्हीं दिनों वह सपरिवार नेपाल की तरफ ट्रेकिंग के लिए जाने वाले थे. अमरीकी शास्त्रीय संगीत बार्न्ज को सुहाता है और भारत में तो प्राकृतिक संपदा चारों ओर बिखरी हुई है. जितना देखो, खोजो, कम नहीं होगी.

बार्न्ज से हुई बातचीत देने से पहले जरा उन के परिवार से भी मिल लें.

उन की तीन पुत्रियां और एक पुत्र है. सब से बड़ी पुत्री का विवाह हो चुका है. दामाद भी अमरीकी विदेश सेवा में ही है. दूसरी पुत्री इन दिनों अमरीका में काम कर रही है. पुत्र का अभी विवाह हुआ है और वह भी पिता व जीजा की भांति विदेश सेवा में है. सब से छोटी साशा मातापिता के साथ नई, दिल्ली के अमरीकी स्कूल में शिक्षा प्राप्त कर रही है.

राजदूत की पत्नी बैट्सी भी एक खुशमिजाज महिला हैं. उन में भारत की विभिन्न कलाओं को पूर्ण रूप से जान लेने की तीव्र इच्छा है और वह भारत की सक्रिय महिलाओं से अधिकाधिक मिलना चाहती हैं.

यहां प्रस्तुत है श्री बार्न्ज से हुई बातचीत.

भेंटकर्ता: भारत में अमरीकी राजदूत के रूप में आप को सरिता मुक्ता परिवार की ओर से शुभकामनाएं.

राजदूत: धंन्यवाद.

प्रश्न: बंबई आप के विदेश सेवा जीवन का पहला पड़ाव था. आप ने कहा भी है कि आप भारत से अत्यधिक प्रभावित हुए हैं. तनिक स्पष्ट कीजिएगा.

उत्तर: 1951 में जब मैं बंबई आया, एकदम नया था (हंस कर) अर्थात अपने देश से बाहर वह मेरी पहली नियुक्ति थी. उधर दांवपेचों से भरी विदेशी राजनीति और मेरे

अनुभवों की स्लेट एकदम कोरी. बंबई में आ कर हुए अनुभवों की नजर से मैं ने दुनिया को देखना सीखा. दुनिया को देखने के लिए बंबई को मैं अपना झरोखा मानता हूं. हमारी और यहां की भाषा में फर्क था, पर आपसी संबंधों में भाषा कभी अड़चन नहीं बनी. भावनाएं भाषा की मुहताज नहीं होतीं...फिर भारतीय समाज ने हमें बहुत प्यार दिया; खुले दिल से अपनाया. वह प्यार भरा व्यवहार उस कोरी स्लेट पर गहरे से लिखा गया.

प्रश्नः आप ने एक दफा कहा था कि भारत और अमरीका, दोनों ही देशों में विभिन्नताओं में भी एकता है, इस से आप का क्या तात्पर्य है?

उत्तरः भारतीय संस्कृति हजारों साल पुरानी है. विभिन्न धर्म, विभिन्न रीतिरिवाज इस संस्कृति में भरे पड़े हैं. इन सब के होते हुए भी भारतीयता एक है. तुलना में हमारी संस्कृति बहुत नई है और दुनिया के अनेक देशों के लोगों का उस में सहयोग रहा है. भारतीय प्रतिभा भी उन में से एक है. यही हम दोनों देशों की समानता है.

प्रश्नः 1950 से 1980 तक का समय भारत के विकास की कहानी है और आप ने इस कहानी को विभिन्न अवस्थाओं में देखा है. अपनी प्रतिक्रिया स्पष्ट कीजिएगा.

समस्याओं के बदले रूप

उत्तरः परिवर्तन तो वास्तव में अनेक आए हैं. वह समय विभाजन के फौरन बाद का था. सिद्धांत, लक्ष्य, तरीके कुछ स्पष्ट नहीं थे. उदाहरण के लिए 1950 में इस देश के सामने अन्न की बड़ी विकट समस्या थी. अकाल का डर बना हुआ था. लोग आशंकित थे. तो भी लोगों के मन में एक विश्वास [illegible] विकास संभव है. उपलब्धि [illegible] अब स्थिति [illegible] भंडार [illegible] है. [illegible]

जनसंख्या का ही प्रश्न लें. तब यह समस्या नहीं थी. अब है, पर लोगों को इस की परवाह नहीं है. तब लोगों के सामने संभावनाएं नहीं थीं, अब नईनई संभावनाएं हैं और लोग कदम उठा भी रहे हैं.

प्रश्नः प्रमाणपत्र प्रस्तुत करते समय आप ने 'अभी दिल्ली दूर है' मुहावरे का हवाला देते हुए कहा था कि दिल्ली पहुंचने के लिए अभी हमें बहुत कुछ करना है. इस से आप का क्या आशय था?

उत्तरः बहुत सी समानताएं होने के बावजूद अमरीका और भारत उतने करीब नहीं हैं, जितने होने चाहिए थे या हो सकते थे. जब तक यह दूरी है, हम दिल्ली कैसे पहुंच सकते हैं? ठीक है न? (हंसने लगे फिर बात की तह में जाते हुए सोच कर बोले) किन्हीं दो देशों में मैत्री के लिए एक संयुक्त धरातल की जरूरत पड़ती है. समस्याएं ऐसी हों जिन में दोनों की समान अनुभूति हो तो नतीजा अच्छा रहता है

हम दोनों ही देशों की परंपराएं महान हैं. लोग भले हैं, पर हमारी समस्याओं में फर्क है. अपनीअपनी परिस्थितियों के अनुसार भारत की प्राथमिकताएं कुछ और हैं, अमरीका की कुछ और. फलतः यह द्वंद्व सामने है. मेरा प्रयास रहेगा कि किसी समान धरातल को खोज निकाला जाए जिस पर दोनों देश एक साथ आगे बढ़ सकें.

प्रश्नः आप आशान्वित हैं?

उत्तरः मैं स्वभाव से ही आशावादी हूं. मुझे पूर्ण आशा है.

प्रश्नः राजनीति [illegible] पड़ेगा कि [illegible]

उत्तरः [illegible]

को खतरा हो जाता है. ऐसे में पहली जरूरत है उस की बढ़ती हुई गैरगणतंत्र शक्ति की रोकथाम की. फिर भले ही इस के लिए, उस विशेष समय में किसी गणतंत्र मित्र देश की भी उपेक्षा करनी पड़ जाए. जहां तक मैं समझता हूं, बस यही कारण रहा है ऐसे व्यवहार का.

प्रश्न: मेरा यह प्रश्न भी कुछ पिछले प्रश्न की ही पूर्ति करता है. हम दोनों देशों के लोग सामाजिक स्तर पर जब भी मिलते हैं, मैत्री की भावना उन में प्रगाढ़ होती है. हम उन से और वे हम से प्रभावित हैं, दोनों एकदूसरे की मनोभावनाओं को पहचानते हैं. पर ज्यों ही राजनीति बीच में आ जाती है, संपूर्ण नजरिया ही बदल जाता है. एक विरोध सा सतह पर उभर आता है. दोस्ती की इतनी आरजू होते हुए भी राजनीति उसे पनपने क्यों नहीं देती?

उत्तर: आप की बात से मैं पूर्णतया सहमत हूं. दोनों ही देशों की जनता के बीच पूर्ण सद्भाव है. भारतीय जनता का हमारे प्रति प्रेम है. मैं इस का जीताजागता प्रमाण हूं. मैं इस प्यार की पूरी कद्र करता हूं और जानता हूं कि हमारे लोग भी इन्हें पहचानते हैं. पर आप ने जो यह राजनीति की बात कही तो बात वही प्राथमिकताओं की है. एक बात और, हमारी सरकार हमेशा ही भारतीयों के विरोध में रही है, ऐसा तो नहीं है. कैनेडी, कार्टर के समय में अमरीकी सरकार स्पष्टतया भारत के साथ रही है. औरों के वक्त में ऐसा नहीं हुआ. अलगअलग दलों की सैद्धांतिक लड़ाई भी तो अलगअलग धरातल की है.

प्रश्न: मैं एक बात और पूछना चाहूंगी. प्रारंभ से ही अमरीकी सरकार पाकिस्तान सरकार के शस्त्रअस्त्र भंडार खुले दिल से भरती रही है, और उन शस्त्रों का इस्तेमाल हमेशा ही भारत के विरुद्ध लड़ाई में किया गया. अब फिर एक दफा यह दान दिया जा रहा है. ढाल बनाया गया है अफगानिस्तान में रूसी फौजों की मौजूदगी को. अगर रूसी फौजें अफगानिस्तान में न होतीं तो क्या यह शस्त्र

हैरी बार्न्ज : किसी भी देश के लोगों को समझने के लिए वहां की भाषा जानना जरूरी है.

दान न दिया जाता?

उत्तर : मेरा जवाब है—'हरगिज नहीं.' जैसा कि मैं ने पहले कहा था, जब गैरगणतंत्री शक्तियां ज्यादा मजबूत होने लगती हैं तो हमारी प्राथमिकताएं बदल जाती हैं. यह घटना उसी का प्रमाण है. इस प्रमाण से मेरे कथन को आप अच्छी तरह समझ सकेंगी. यहां एक दफा फिर मैं यही कहूंगा कि इस पद पर काम करते हुए मेरा पूरा प्रयत्न होगा कि हम दोनों देशों के संबंधों में सुधार हो.

भेंटकर्ता: आप के इस प्रयास में मेरी पूर्ण शुभकामनाएं आप के साथ हैं.

समय काफी हो चला था. जितना वक्त राजदूत ने हमें दिया था, घड़ी की सूइयां उस को कभी का पीछे छोड़ चुकी थीं. रुखसत होना ही बेहतर था. श्री बार्न्ज को उस आत्मीयता के लिए धन्यवाद दे कर भेंटकर्ता ने विदा ली. दरवाजे तक साथसाथ आते हुए राजदूत ने 'उम्मीद है कि भविष्य में हम फिर मिलेंगे' शब्दों के साथ विदा दी. ●

पिछले छः महीनों की फिल्में

निर्देशिका उ. : उद्देश्यपूर्ण/अवश्य देखिए म. : मनोरंजक/देख लें नि. :निर्देशक
स. : समय काटिए/चलताऊ अ. : अपव्यय/समय की बरबादी मु. पा. : मुख्य पात्र

वक्त के शहजादे : विभिन्न धर्मों के पांच युवकों की मसाला कहानी. ये तथाकथित शहजादे बचपन में बिछुड़ जाते हैं और एक के बाद एक कर के इन का मिलन होता है. बचकाना चित्रण. नि.: कुक्कू कपूर, मु.पा.: दीपक पराशर, रति, मुकेश खन्ना, धीरज, कल्पना अय्यर, शक्ति कपूर, रणजीत. अ.

दहशत : डाक्टर विशाल की दृष्टि में इनसान अधूरा है. उस में जानवरों के कुछ गुण ला कर उसे संपूर्ण बनाया जा सकता है. वह जानवरों पर तरहतरह के प्रयोग करता है. इन्हीं प्रयोगों में उस की शक्ल भयानक पशु जैसी हो जाती है. केवल भयानक चेहरों के बल पर बनी बेजान कहानी. नि.: तुलसी रामसे, श्याम रामसे, मु.पा.: ओम शिवपुरी, नवीन निश्चल, सारिका, नादिरा, देवकुमार. अ.

संबंध : बचपन में प्रकाश के सामने उस की मां की हत्या हो जाती है, जिस से उस के मन में यौन संबंधी ग्रंथि बन जाती है. लेखक सलीम फैज ने इस विषय को ले कर अधिक से अधिक यौन संबंधों का वितृष्णापूर्ण चित्रण किया है. नि.: शिव मित्रा, मु.पा.: अशोककुमार, विनोद मेहरा, रति, तेज, सप्रू, अर्पणा चौधरी. अ.

निकाह : नीलोफर की वसीम से शादी होती है, पर शीघ्र ही वसीम उसे तलाक दे देता है. नीलोफर दोबारा हैदर से शादी करती है. पर उस के चरित्र पर शक कर के हैदर भी उसे तलाक देने को तैयार हो जाता है. मुसलिम समाज में तलाक के विषय में नारी की बेबसी का मार्मिक चित्रण. नि.: बलदेवराज चोपड़ा, मु.पा.: राज बब्बर, सलमा आगा, दीपक पराशर, हिना कौसर. उ.

टैक्सी चोर : दो जुड़वां हमशक्ल भाइयों की घिसीपिटी कहानी. एक टैक्सी चोर है तो दूसरा गायक. मिथुन इन में से किसी भी भूमिका में जान नहीं डाल सका. नि.: सुशील व्यास, मु.पा.: जरीना, मिथुन, मदन पुरी, राज मेहरा, अभि भट्टाचार्य, मुराद. अ.

गंगा मांग रही बलिदान : पृथ्वीराज चौहान की ऐतिहासिक कहानी पर इतिहास की अपेक्षा काल्पनिक घटनाओं का बाहुल्य. फिल्म इतिहास एवं मनोरंजन दोनों दृष्टियों से बेकार. नि.: राधाकांत, मु.पा.: सोहराब मोदी, देवकुमार, हिना कौसर, कमल कपूर, तिवारी, जयश्री तलपदे, महमूद जूनियर. अ.

शक्ति : कर्तव्यपरायण पुलिस अधिकारी पिता व परिस्थितियोंवश अपराध प्रवृत्ति पाल लेने वाले पुत्र के बीच भावात्मक टकराव की कहानी जिस में अमिताभ व दिलीपकुमार ने शानदार अभिनय किया है. नि.: रमेश सिप्पी, मु.पा.: अमिताभ, दिलीप, राखी, स्मिता. उ.

बाल शिवाजी : बाल चित्र समिति द्वारा शिवाजी के जीवन पर बनाई गई एक दिलचस्प फिल्म जिस में उन की बहादुरी, देशभक्ति, न्यायप्रियता व स्वाभिमान का अच्छा चित्रण हुआ है. नि.: प्रभाकर पेठारकर, मु.पा.: आनंद जोशी, जाह्नवी खांडेकर. उ.

भीगी पलकें : पतिपत्नी के वैवाहिक संबंधों में अहं की वजह से आ जाने वाले टकराव और गलती का एहसास होने पर पश्चात्ताप का अच्छा विषय इस फिल्म में फार्मूला ढंग से उठाया गया है. नि.:शिशिर मिश्र, मु.पा.: राज बब्बर, स्मिता पाटिल, सुलमा. अ.

जियो और जीने दो : एक नारी प्रधान फिल्म, जिस में नूतन को उस का पति चरित्रहीनता के आरोप में घर से निकाल देता है. बीच में डाकुओं व तस्करों की मारपीट, रोमांस व तमाम जानेपहचाने मसाले हैं. नि.: शाम रल्हन, मु.पा.: जीतेंद्र, रीना, डैनी, नूतन व प्राण. स.

चोरनी : परिस्थितियों की वजह से चोर बनी नीतू को जब सहानुभूति का व्यवहार मिलता है तो वह बदल जाती है. अच्छे विषय का सही फिल्मांकन नहीं हो सका है. नि.: ज्योति स्वरूप, मु.पा.: नीतू, जीतेंद्र, डा. श्रीराम लागू. अ.

कसम दुर्गा की : बलात्कार व जमींदार के जुल्म के शिकार एक परिवार के बड़े लड़के द्वारा दुर्गा की मदद से अपराधियों का खात्मा करने की कहानी. बेहद ऊटपटांग घटनाएं व अति नाटकीय अभिनय. नि.:जोगिंदर, मु.पा.: जोगिंदर, विजय अरोड़ा, रजनी शर्मा. अ.

सुन सजना : एक गायक व ग्रामीण बाला की सामान्य प्रेम कहानी जिस का दुखद अंत होता है. गीतसंगीत प्रधान इस फिल्म में कोई भी खास विशेषता नहीं है. नि.: चंदर बहल, मु.पा: मिथुन, रंजीता. स.

राजमहल : दुष्ट सेनापति राजा की हत्या कर, खुद राजा बन जाता है. उस के खोए हुए बच्चे बड़े हो कर उस से बदला लेते हैं. बेतुकी ऐतिहासिक पृष्ठभूमि पर बनी सामान्य फिल्म. नि.: परवेज, मु.पा.: विनोद खन्ना, नीतूसिंह, अमजद. स.

गंगाधाम: ईश्वरीय सत्ता को चमत्कारों व अंधविश्वासों से मनवाने की कोशिश करने वाली बेतुकी फिल्म जो हर दृष्टि से कमजोर है. नि.: थापा, मु.पा: नमिता चंद्र, अरुण गोविल, शक्ति. अ.

फर्ज और कानून : ईमानदार पुलिस अधिकारी द्वारा फर्ज की रक्षा के लिए खुद को गिरा देने की अस्वाभाविक कहानी. जिस में जितेंद्र की दोहरी भूमिका

राघवेंद्र राज, मु.पा: जितेंद्र, हेमा, रति.स.

अपराधी कौन : हत्याओं और रहस्य रोमांच में हुई अनमेलविवाहकी बेसिरपैर की कहानी. विधुर ल जवान अरुणा से शादी कर लेता है और उस नाम भुगतता है. नि. : मोहन भाकड़ी. मु.पा. : खान, रजनी शर्मा, अर्पणा चौधरी रजा मुराद, ती. अ.

बंध : प्रकाश के मन में बचपन में पिता द्वारा मां के कारण कुछ ऐसी गांठें बन जाती हैं कि वह पत्नी के पास जाता है, उन्मत्त हो कर सुधबुध ता है. एक नए विषय को निर्माता ने केवल सैक्स के लिए इस्तेमाल किया है. नि. : शिबू मित्रा, अशोककुमार, विनोद मेहरा, रति अग्निहोत्री, , अर्पणा चौधरी. अ.

बल 100 : हीरों की चोरी की मारधाड़ से भरपूर अपराध कथा. हीरे गिटार में छिपा दिए जाते हैं. गिटार की खोज की कहानी बन जाती है. नि.: न. मु.पा.: अशोककुमार, बिंदिया, विनोद रणजीत. अ.

हंदी रंग लाएगी : एक युवती की कहानी जो ति को छोड़ कर दूसरी स्त्री का घर बसाती है और एक अन्य लड़की के लिए अपने प्रेम का भी न कर देती है. तर्कहीन कहानी. नि.: दासारी राव. मु.पा.: अशोककुमार, जितेंद्र, रेखा, राज, अरुणा ईरानी. अ.

णावत : राजसिंहासन का उत्तराधिकारी अमर डोले में पलता है. दुष्ट विक्रम को सिंहासन से और राजकुमारी पद्मा से प्रेम की बेसिरपैर की सभी कलाकार फीके. फिल्म हर दृष्टि से नि.: रामानंद सागर. मु.पा.: धर्मेंद्र, हेमा, रीना राय, सुजीतकुमार. अ.

द्वार : गरीब टैक्सी ड्राइवर छोटू उस्ताद परिश्रम को पढ़ाता है. मैरी से प्रेम करना है और क बंसी के षड्यंत्रों का मुकाबला करना है. सभी रस भरने की कोशिश की गई है. नि.: रवि .पा.: अमिताभ, संजीवकुमार, परवीन बाबी, हरा, तनूजा, बिंदिया, महमूद. स.

रबानी : धर्मेंद्र के परिवार द्वारा डूबे गए से ले कर बनी इस फिल्म में न तो कोई रोचकता ही नवीनता. हर दृष्टि से फिल्म इतनी लचर है बोरियत पैदा करती है. नि.: अजीतसिंह, हेंद्र संधु, सारिका, नरेंद्रनाथ. अ.

नाह कैदी : अपराधी के हृदय परिवर्तन की नीपहचानी विषय वस्तु के आधार पर बनी इस वही पुराने मसाले हैं. जिन्हें दर्शक कईकई बार चुके हैं.. नि.: वी.के. सोबती, मु.पा.: राकेश आरती, शक्ति कपूर. अ.

य कैदी : अपराधी लोगों को ले कर उन से रक्षा करवाने की पुरानी कहानी इस फिल्म में घटनाएं अच्छा असर डालती हैं. वैसे फिल्म ती है. नि.: शिबू मित्रा, मु.पा.: गिरीश कारनाड, अमजद, जरीना. स.

घमंडी : दौलत के नशे में अमीर पत्नी का पति के घर से चला जाना और बाद में आंखें खुल जाने पर वापस आ जाना—इस फिल्म का विषय है. लेकिन बेहद घटिया ढंग से इसे फिल्माया गया है. नि.: रमेश बेदी, मु.पा.: मिथुन, सारिका, रंजीत. अ.

बाजार : मुसलिम समाज में प्रचलित कुरीतियों पर चोट करने वाली फिल्म. इस में दिखाया है कि समाज में एक स्त्री का बाजार में आम बिकाऊ माल से अधिक महत्त्व नहीं है. नि. : सागर सरहदी, मु.पा. : स्मिता पाटिल, सुप्रिया पाठक, सुलभा देशपांडे, नसीरुद्दीन. म.

इनसान : किसी व्यक्ति को महान सिद्ध करने का नरेंद्र बेदी का बेतुका फार्मूला. रवि विधवा सोना से शादी कर लेता है. जब उसे पता चलता है कि सोना का पति शंकर मरा नहीं था, बल्कि जिंदा है तो वह उस के लिए बलिदान हो जाता है. नि. : नरेंद्र बेदी, मु.पा. : विनोद खन्ना, जितेंद्र, रीना, अमजद, करण दीवान. अ.

मैं इंतकाम लूंगा : शीर्षक के अनुरूप प्रतिशोध की कहानी. मुक्केबाज कुमार गोवर्धनदास से अपने पिता की हत्या का बदला लेता है. नि. : रामा राव, मु.पा. : धर्मेंद्र, रीना राय, दारासिंह, श्रीराम लागू, निरूपा, अमरीश पुरी, शारदा. अ.

हमकदम : एक दकियानूसी परिवार की कहानी, जिस में नारी द्वारा नौकरी करना पसंद नहीं किया जाता. घिसापिटा पुराना विषय ले कर बनाई गई फिल्म. नि. : अनिल गांगुली, मु.पा. : राखी, परीक्षित साहनी, विश्वजीत, हंगल, मदनपुरी. स.

ईंट का जवाब पत्थर : प्रसिद्ध लेखक अलैक्जेंडर ड्यूमा के उपन्यास का भारतीयकरण कर के बनाई गई एक घटिया फिल्म. कुछ लोगों के षड्यंत्र का शिकार हो कर माधोसिंह जेल जाता है. जेल से भाग कर वह एकएक कर के सब से बदला लेता है. नि. : पाछी, मु.पा.: नीता मेहता, सुरेंद्रपाल, प्रेमनाथ, अमजद, ओम प्रकाश. म.

गजब : आत्मा जैसी अविश्वसनीय बातों को ले कर गढ़ी गई कहानी, जिस में मानसिक रूप से विकलांग एक व्यक्ति की आत्मा अपने पिता की जायदाद हथियाने वालों से अपने जुड़वा भाई के जरिए बदला लेती है. अविश्वसनीय घटनाओं से भरपूर एक बेतुकी फिल्म. नि.: सी.पी. दीक्षित, मु.पा. : धर्मेंद्र, रेखा, मदनपुरी, रंजीत. अ.

सितारा : गांव की गरीब लड़की की नामी हीरोइन बनने की कहानी. चोटी पर पहुंच जाने के बाद वह सच्चा प्यार नहीं पाती और वापस अपनी दुनिया में लौट जाती है. कुछ दिलचस्प प्रसंग होने के बाद भी यह एक सतही नि. : मराज, मु.पा. : मिथुन, जरीना, कन्हैयालाल. स.

आधारशिला : क्षेत्र चाहे कोई भी क्यों न हो, हर युवा को सफलता पाने के लिए संघर्ष की कई बाधाएं पार करनी होती हैं. 'आधारशिला' में इसी विषय को उठाया गया है. कमजोर व प्रतीकात्मक प्रस्तुतीकरण की वजह से फिल्म कोई असर नहीं छोड़ पाती. नि. : अशोक आहूजा, मु.पा. : नसीरुद्दीन शाह, अनिता. अ.

लखनऊ नाट्य समारोह-82

लेख • कृष्णकुमार श्रीवास्तव

लखनऊ की नाट्य संस्था 'लक्रीस' द्वा
मंचित 'बाकी इतिहास' का एक दृ
(बाएं) व कानपुर की नाट्य सं
'दर्पण' द्वारा मंचित 'कोमल गांधार'
राकेश वर्मा व रंजना गौड (ऊपर).

समूचे उत्तर प्रदेश में राज
लखनऊ नाट्य गतिविधि
प्रमुख केंद्र बन गई है. नगर के एक
नाट्य थिएटर 'रवींद्रालय' में हर रोज
कोई नाटक प्रदर्शित होता रहता है. नाट

लिए कठिन है. अतएव ऐसी संस्थाओं को अपने नाटक के प्रदर्शन के लिए स्कूल अथवा अन्य छोटेमोटे हाल किराए पर लेने पड़ते हैं.

पिछले दिनों उत्तर प्रदेश संगीत नाटक अकादमी ने यहां एक हफ्ते का नाट्य समारोह अयोजित किया. जिस में प्रदेश एवं बाहर की सात नाट्य संस्थाओं ने अपनेअपने नाटक प्रस्तुत किए. अकादमी ने बाहर से आए नाट्यकर्मियों को एक नाटक के लिए 3,000

बेरोजगारी की समस्या पर केंद्रित नाटक 'हमारा कोई नाम नहीं' का एक महत्त्वपूर्ण दृश्य.

अपने आपसी मतभेदों को भुला कर संगीत नाटक अकादमी यदि ऐसे ही आयोजन करती रहे तो क्या रंगमंच को नई दिशा नहीं मिलेगी?
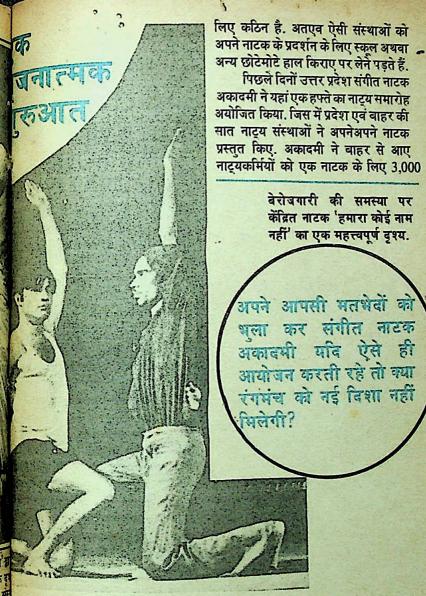
...प्रियता इतनी बढ़ गई है कि रवींद्रालय के ...ों रंगमंचों के लिए दो ढाई महीने पहले ही ...ग करानी पड़ती है. लेकिन वहां वही ...य संस्था अपने नाटक प्रस्तुत कर सकती ...ी दोतीन हजार रुपए नाटक पर खर्च कर ...ती हो. यहां प्रत्येक नाटक के मंचन के ...ए 750 रुपए प्रतिदिन तो किराया ही देना ...ता है, जो एक नवोदित नाट्य संस्था के

रुपए (आनेजाने का किराया तथा रवींद्रालय का किराया) तथा प्रदेश की नाट्य संस्थाओं को 2,000 रुपए का भुगतान किया, लेकिन इस मामले में भी नवोदित नाट्य संस्थाओं की सरासर उपेक्षा की गई.

1978-79 में उत्तर प्रदेश संगीत नाटक अकादमी आपसी रंजिश एवं कतिपय राजनीतिक कारणों से निष्क्रिय हो गई थी.

तब नगर की आठ नाट्य संस्थाओं ने मिल कर बिना सरकारी सहयोग तथा अनुदान के नवंबर, 1972 में एक सात दिवसीय नाट्य समारोह का इसी रवींद्रालय में आयोजन किया था. फिर दूसरा नाट्य समारोह जुलाई, 1980 में तथा तीसरा 1981 में किया गया. इन तीनों समारोहों में केवल लखनऊ की ही नाट्य संस्थाओं ने भाग लिया था.

इस बार नाटकों का मंचन लखनऊ के बंगाली क्लब के विशाल कक्ष में निशुल्क किया गया, जो काफ़ी सफल रहा. इस से रवींद्रालय के भारी किराए से नवोदित संस्थाओं को मुक्ति मिली. लखनऊ नाट्य समारोह 1982 के सात नाटकों का मंचन भी इस क्लब में ही किया गया.

नए नाटकों की प्रमुख समस्या दर्शकों की कमी होती है. इस नए नाट्य समारोह के माध्यम से नाटकों के नए दर्शक तैयार करने का भी कार्य किया गया.

नाट्य समारोह में लखनऊ की चार संस्थाओं 'मेघदूत', 'खोज', 'नक्षत्र', 'लक्रीस', कानपुर के दो नाट्य दलों- 'दर्पण' और 'प्रतिध्वनी', तथा आजमगढ़ की नाट्य संस्था 'समानांतर' ने अपने नाटक बिना किसी सरकारी अनुदान या सहायता के प्रदर्शित किए.

इस समारोह में प्रेमचंद की कहानी पर आधारित नाटक 'सद्गति', डा. शंकर शेष के दो चर्चित नाटकों—'फंदी' तथा 'कोमल गांधार' एवं बादल सरकार के तीन नाटकों—'बल्लभपुर की रूप कथा', 'बा... इतिहास' तथा 'स्पार्टाकस' का मंचन कि... गया. ये सभी नाटक नाट्य कला के विवि... रूपों को प्रस्तुत करते हैं.

नाट्य समारोह में पिछले ... समारोह की तरह आम दर्शकों से जुड़े... प्रयास के साथ विषमताओं के खिलाफ ... करने की भी बात दिखाई दी. ले...

कला के विभिन्न रूपों को प्रस्तुत करता बादल सरकार द्वारा लिखित नाटक 'बल्लभपुर की रूपकथा'.
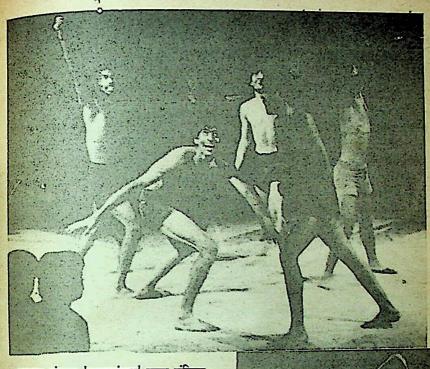
नाट्य संस्था 'समानांतर' द्वारा मंचित 'स्पार्टकिस' जिसे जागरूक दर्शकों ने सराहा (ऊपर) व (दाएं) मध्यमवर्गीय तकलीफों को सामने रखता शंकर शेष कृत 'फंदी' का एक मार्मिक दृश्य.

कलात्मकता की दृष्टि से नाट्य समारोह की प्रस्तुतियां कुछ हलकी ही रहीं. यह नए प्रेक्षागृह और नए दर्शकों का परिणाम भी कहा जा सकता है.

पत्रपत्रिकाओं के प्रतिनिधियों को पास देने की गलत नीति, दर्शकों से दुर्व्यवहार आदि ने नए दर्शक कम पैदा किए. इस बार नाट्य संस्थाओं के पूर्वाग्रह भी काफी प्रबल रहे. अतएव मिल कर नाटक के उन्नयन के लिए कार्य करने के प्रयास को आघात लगा. एक रंगमंच पर मंचन का प्रयास भी ज्यादा सफल नहीं रहा. लेकिन हिंदी रंगमंच दिशाहीन है, राष्ट्र के निर्माण में बाधक है और आम आदमी से नहीं जुड़ रहा है—ये धारणाएं इस समारोह में गलत साबित हुईं.
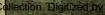
हद से हद हिंदी रंगमंच को भ्रमित कहा जा सकती है.

पहले दिन 'मेघदूत' (लखनऊ) ने प्रेमचंद की कहानी 'सद्गति' पर आधारित नाटक प्रस्तुत किया, जिस के निर्देशक थे सूर्यमोहन कुलश्रेष्ठ. 'सद्गति' का नायक दुखिया विषमताओं को सहता जाता है और शोषण का विरोध नहीं करता, लेकिन शहर से लौटा रघुवर शोषण के खिलाफ मुंह खोलने पर मारा जाता है. आजादी के बाद शोषितों में परिवर्तन आया है. रूपांतर कुछ कमजोर था. अनावश्यक प्रहसन नाटक को और निष्प्रभावी बनाते रहे. निर्देशक चाहता तो इन दृश्यों को छोड़ भी सकता था. अभिनय की दृष्टि से राजा अवस्थी व राकेश प्रभावी रहे. निर्देशक कुलश्रेष्ठ अपनी पुरानी प्रस्तुतियों की सीमा से बाहर नहीं आ सके और रंग कल्पना, प्रकाश तथा दृश्य संयोजन में कुछ नयापन नहीं दे सके.

दूसरी प्रस्तुति 'खोज' (लखनऊ) की थी. 'हमारा कोई नाम नहीं' नाटक अशोक अग्रवाल की कहानी पर आधारित था. इस का नाट्य रूपांतर नफीस अफरीदी ने किया था.

बेरोजगारी, गरीबी, शोषण आदि समस्याओं में ज़कड़े नीचे तबके के लोगों पर आधारित कथा को नाट्य लेखक तथा उस से भी अधिक निर्देशक जितेंद्र मित्तल ने पेचीदा कर दिया.

इस समारोह की सर्वश्रेष्ठ प्रस्तुति 'कोमल गांधार' कानपुर की 'दर्पण' संस्था की थी. डा. शंकर शेष के इस आखिरी नाटक को राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय के स्नातक रवि शर्मा ने काफी प्रभावशाली ढंग से प्रस्तुत किया. मनुष्य क्रूर और बदला लेने वाला कैसे बनता है, यह नाटक की कहानी है. महाभारत की पृष्ठभूमि पर आधारित यह नाटक नारी के शोषण को उजागर करता है. नारी को महान बनाने का ढोंग रच कर पुरुष समाज अपनी स्वार्थसिद्धि के लिए सदियों से उसे अपनी कठपुतली बनाए हुए है. गांधारी भी ऐसी ही स्त्री थी, जिस की शादी छल से अंधे धृतराष्ट्र से कर दी गई थी. इस पर गांधारी ने अपनी
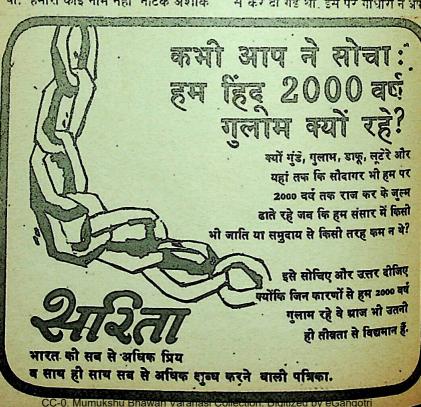
आंखों पर पट्टी बांध कर अपने पति का साथ दिया. पर प्रतिशोध की आग में जलते हुए उस के भाई शकुनि ने पूरे वंश से इस का बदला लिया.

सेट, प्रकाश, संगीत की दृष्टि से नाटक सफल था. इस का सर्वाधिक सशक्त पक्ष अभिनय था, जिस में गांधारी (रंजना गौड़), दासी (इंदु शर्मा), धृतराष्ट्र (राकेश वर्मा) ने विशेष रूप से प्रभावित किया.

लखनऊ की नाट्य संस्था 'नक्षत्र' ने बादल सरकार के नाटक 'बल्लभपुर की रूप कथा' का मंचन कुमुद नागर के निर्देशन में किया. इस का हिंदी अनुवाद प्रतिभा अग्रवाल ने किया था. चुनाव की दृष्टि से यह नाटक सही नहीं था. इस नाटक में अंधविश्वास, भूतप्रेत, आत्मा आदि का ज्यादा उल्लेख रहा. इसलिए दर्शक उस से भलीभांति जुड़ नहीं पाए. लेकिन अभिनय की दृष्टि से विष्णुदत्त गौड़ ने जरूर प्रभावित किया.

कानपुर की नाट्य संस्था 'प्रतिध्वनि' ने पंडित विजय दीक्षित के निर्देशन में डा. शंकर शेष के नाटक 'फंदी' का मंचन किया. समाज के आधुनिकीकरण के साथ पुराने कानूनों को भी बदलना चाहिए. फंदी एक ट्रक चालक है जो गरीबी के कारण कैंसर से पीड़ित अपने पिता का इलाज न करा पाने पर उस की गला घोंट कर हत्या कर देता है. क्या फंदी हत्यारा है? यही नाटक का कथ्य है. यह दर्शकों को भी सोचने को विवश करता है. वह यह सोचता है कि कोई व्यक्ति हत्या क्यों करता है.

फंदी और वकील के रूप में क्रमशः कुमार व अशोक गोस्वामी ने अच्छे अभिनय का प्रदर्शन किया गया.

'लंक्रीस' (कानपुर) द्वारा बादल सरकार कृत 'बाकी इतिहास' नाटक प्रस्तुत किया गया, जिसे मनोशारीरिक (साइकोसोमैटिक) रंगमंच में प्रस्तुत किया गया. तीसरे अंक की प्रस्तुति में शरीर की भाषा होती है, महज संवाद या लटकेझटके नहीं. इस में ध्वनि, बिंब स्थितियां या थोड़े संवादों का प्रयोग होता है.

कर्म

वही कार्य सब से अच्छा है जिस से बहुसंख्यक लोगों को अधिक से अधिक आनंद मिल सके.

–हचिसन फ्रांसिस

लखनऊ और देश में यह अपने आप में एक नया प्रयोग था. इस में अतुल रस्तोगी, चित्रा बरनवाल, पारिजात नागर, लक्ष्मण वर्मा, हेमंत रस्तोगी, शशांक बहुगुणा ने अच्छा अभिनय किया.

अंतिम शाम आजमगढ़ की नाट्य संस्था 'समानांतर' के नाम थी. जिस ने बादल सरकार के चर्चित नाटक 'स्पार्टाकस' का मंचन श्री भौमिक के निर्देशन में किया. स्पार्टाकस गुलामों की बगावत की कहानी है. स्पार्टाकस शोषित वर्ग का प्रतिनिधित्व करता है. वह आज भी अत्याचार के खिलाफ लड़ रहा है.

बादल सरकार के इस नाटक को भौमिक ने सीधीसादी शरीर की भाषा में संवादों का उपयोग कर के प्रस्तुत किया. साधारण प्रकाश में इस नाटक ने जागरूक दर्शकों को प्रभावित किया.

इस नाट्य समारोह में एक नई नाट्य संस्था 'यायावर' ने नाटकों को उपलब्ध कराने के लिए अपना सहयोग प्रदान किया, जो हिंदी रंगमंच के लिए बहुत जरूरी है.

काश, लखनऊ नाट्य समारोह समिति अपने क्षुद्र स्वार्थों, पूर्वाग्रहों, मतभेदों को मिटा कर समारोह आयोजित करे तो वह काफी यश प्राप्त कर सकती है और रंगमंच के लिए भी सार्थक कार्य कर सकती है. यह जरूरी है कि सब हिंदी नाट्य संस्थाएं मिल कर कार्य करें, तभी लखनऊ रंगमंच प्रदेश के रंगमंच को नई दिशा प्रदान कर सकता है. ●
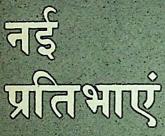
कला एवं शिल्प महाविद्यालय लखनऊ में युवा चित्रकार गंगादत्त उपाध्याय ने अपने चित्रों की प्रदर्शनी का आयोजन किया.

वह पिछले दिनों चित्रकूट व खजुराहो गए थे, वहां के दृश्यों को उन्होंने लैंडस्केप तथा स्केच ग्राफिक में चित्रित किया है.

22 वर्षीय गंगादत्त उपाध्याय कला एवं शिल्प महाविद्यालय के 'म्यूरल' चतुर्थ वर्ष के छात्र हैं. प्रथम, द्वितीय तथा तृतीय वर्ष में उन्होंने पेंटिंग तथा ग्राफिक में द्वितीय तथा अपनी कक्षा में प्रथम स्थान प्राप्त किया. उन्होंने कई पुरस्कार भी प्राप्त किए हैं.

उन्होंने अपने रेखाचित्रों (स्केचों) में आम आदमी को काफी स्थान दिया है. उन का दृष्टिकोण है कि 'कला, कला के साथ आम आदमी तक पहुंचनी चाहिए.'

—राकेशचंद्र मिश्र, वि.वि.प्र.

उमा पटेल को भारत की प्रथम महिला टैक्सटाइल इंजीनियर होने का गौरव प्राप्त है. उसे म.स. विश्वविद्यालय में, टैक्सटाइल

गंगादत्त उपाध्याय की दो कलाकृतियां. खजुराहो का शिल्प (ऊपर), लेंडस्केप (नीचे).

युवा गतिविधिया

इंजीनियरिंग में योग्यता सूची में प्रथम स्थान पर आने के लिए स्वर्ण पदक दिया गया है. उस की शिक्षण व कविता लिखने में रुचि है. उस की कविताएं यदाकदा छपती भी रहती हैं.

उमा पटेल : प्रथम महिला टैक्सटाइल इंजीनियर.
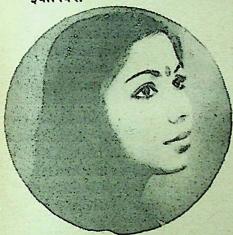
यह पूछे जाने पर कि उस ने इस क्षेत्र व[illegible] क्यों चुना, उस ने कहा, "भारत की कपड़[illegible] मिलें महिलाओं को उत्पादन इकाई [illegible] नियुक्त नहीं करती हैं. वे गुणवत्ता नियंत्र[illegible] (क्वालिटी कंट्रोल) या शिक्षण संस्थाओं में [illegible] जा सकती हैं. आज किस क्षेत्र में महिलाएं न[illegible] हैं? हर उस क्षेत्र में जो पुरुष प्रधान थ[illegible] महिलाएं आगे आ रही हैं. फिर उस क्षेत्र [illegible] संदर्भ में गौर करने पर मैं ने पाया कि महिला[illegible] इस में अपना काफी सुदृढ़ स्थान बना सक[illegible] हैं."
—मानवेन दुबे 'राकेश,' वि.वि.[illegible]

13 वर्षीय शेफाली रावत [illegible] भरतनाट्यम नृत्य में काफी नाम कमाया [illegible] उस की संगीत और नृत्य के प्रति रुचि बचप[illegible] से ही रही है. उस ने चौथी कक्षा से गु[illegible] सरकार से संगीत की शिक्षा ली. उस के बा[illegible] उस ने नौ वर्ष की उम्र में भातखंडे हिंदुस्ता[illegible]

अभियांत्रिकी महाविद्यालय रायपुर में मंचि[illegible] नाटक 'जगाने का अपराध' का एक दृश्य

महारानी लक्ष्मीबाई महाविद्यालय में हुई वालीबाल प्रतियोगिता का एक दृश्य.

संगीत महाविद्यालय के भरतनाट्यम विभाग में प्रवेश लिया और पिछले तीन वर्षों से वह वसंती सुब्रह्मण्यम से भरतनाट्यम की शिक्षा प्राप्त कर रही है.

वह अब तक कई सफल कार्यक्रम दे चुकी है.

इस वर्ष एशियाई खेलों के अवसर पर मनोरंजन के लिए, उत्तर प्रदेश के राष्ट्रीय कैडेट कोर के कैडेटों द्वारा प्रस्तुत किए जाने वाले सामूहिक नृत्य में शेफाली को भी चुना गया है.
—राकेश, वि.वि.प्र.

पिछले दिनों अभियांत्रिकी महाविद्यालय, रायपुर में 'नाट्य मंच' द्वारा नरेंद्र कोहली लिखित व्यंग्य 'जगाने का अपराध' के नाट्य रूपातंर का सफल मंचन किया गया, जो यांत्रिकीय गणनाओं के जाल में फंसे छात्रों की सांस्कृतिक चेतना का परिचायक कहा गया.

इस नाटक में आम आदमी की त्रासदी का सजीव चित्रण किया गया था, जो भ्रष्ट प्रशासन के पंजे में फंसा दम तोड़ता रहता है.

इस व्यंग्य में नाट्य रूपांतर से निर्देशन तक का कार्य अंतिम वर्ष के छात्र उमाप्रकाश ओझा ने किया और साथ ही नाटक के मुख्य पात्र थानेदार की भूमिका भी निभाई.

थानेदार अंधे प्रशासन का प्रतीक था, तो 'नारंग' एक ऐसा क्रूर पूंजीपति था जिस के लिए मानवता एवं नैतिकता सौदागरी की चीजें हैं. इस में अन्य पात्रों का अभिनय भी सराहनीय रहा.
—श्रीकांत च. रहाटगांवकर, वि.वि.प्र.

वालीबाल प्रतियोगिता

महारानी लक्ष्मीबाई महाविद्यालय में भोपाल विश्वविद्यालय महिला वालीबाल प्रतियोगिता संपन्न हुई. जिस में शासकीय महाविद्यालय ने मेजबान महाविद्यालय को 4-1 से पराजित किया.

मैच के प्रारंभ में मेहमान टीम, मेजवान टीम से 10-15 से पिछड़ गई थी, पर उस ने दूसरा गेम काफी संघर्ष के बाद 17-16 से जीत लिया. अंतिम दो गेम उस ने 15-11, 15-7 से आसानी से जीत लिए.
—माया माहेश्वरी, वि.वि.प्र.

वादविवाद प्रतियोगिता

जोधपुर विश्वविद्यालय सांस्कृतिक गतिविधियों के मामले में लगभग शून्य ही रहता है, परंतु इस सत्र में सांस्कृतिक गतिविधियों की शुरुआत हुई हिंदी वादविवाद प्रतियोगिता से, जिस का विषय था,-'इस सदन की राय में संसदीय प्रणाली ही भारत के हित में है.' विषय के पक्ष में बोलते हुए सुशीला मूथा ने कहा कि "संसदीय

विषय था—'महिलाएं और उन की समस्याओं के संबंध में गांधीजी के विचार.' महारानी लक्ष्मीबाई महाविद्यालय, भोपाल में संपन्न हुई इस वादविवाद प्रतियोगिता में क[illegible] छात्राओं ने भाग लिया.

प्रथम पुरस्कार विजेता ऋतु [illegible] अनुसार, "गांधीजी एक व्यावहारिक नेता [illegible] अतः महिला समस्याओं के प्रति गांधीजी [illegible] जो विचार व्यक्त किए हैं, वे नारी समाज [illegible] व्याप्त वर्तमान समस्याओं से मुक्ति पाने [illegible] लिए अत्यंत व्यावहारिक हैं."

द्वितीय पुरस्कार विजेता पतलवी [illegible] कहा, "हालांकि गांधीजी जनसंख्या नियंत्र[illegible] के कृत्रिम उपायों से सहमत नहीं थे, पर [illegible] के अन्य विचारों को अपना कर नारी अप[illegible] प्राचीन काल जैसा सम्मान प्राप्त कर सक[illegible] हैं.

—मोया, वि.वि.प्र.

प्रणाली से व्यवस्थापिका व कार्यपालिका में सामंजस्य रहता है और जनता का शासकों पर नियंत्रण रहता है." इस प्रतियोगिता में उसे प्रथम पुरस्कार मिला.

द्वितीय पुरस्कार विजेता कमला नेहरू कालिज की छात्रा प्रभा भारती ने विषय के विपक्ष में बोलते हुए कहा कि "संसदीय प्रणाली में चुने गए अधिकांश प्रतिनिधि अयोग्य होते हैं और वे जातिगत आधार पर चुनाव जीतते हैं. इस से तो अच्छा है कि योग्य व्यक्ति के हाथों में सत्ता सौंप दी जाए और फिर वह योग्य व्यक्तियों को ही अपने मंत्रिमंडल में सम्मिलित करे."

प्रतियोगिता में अन्य अनेक छात्र-छात्राओं ने भाग लिया. प्रतियोगिता का संचालन हिंदी विभाग के रीडर डा. जगदीशप्रसाद शर्मा ने किया.

—रामबाबू शर्मा 'मुद्गल', वि.वि.प्र.

गांधी जयंती के अवसर पर गांधी आश्रम के तत्त्वावधान में एक वादविवाद प्रतियोगिता का आयोजन किया गया. इस का

विश्वविद्यालय प्रतिनिधि

समाज निर्माण में पत्रकारिता के बढ़ते हुए महत्त्व व इस क्षेत्र में लोगों की बढ़ती हुई रुचि को देखते हुए दिल्ली प्रेस ने युवा वर्ग को इस क्षेत्र में आने के लिए प्रोत्साहित करने व उन का उचित मार्गदर्शन करने के उद्देश्य से विभिन्न कालिजों एवं विश्वविद्यालयों में छात्रछात्राओं की प्रतिनिधियों के रूप में नियुक्ति की है.

ये विश्वविद्यालय प्रतिनिधि अपने कालिज, विश्वविद्यालय व नगर से संबंधित गतिविधियों की रिपोर्ट भेंटवार्ताएं आदि नियमित रूप से भेजते हैं. समयसमय पर ये प्रतिनिधि अपने कालिज या विश्वविद्यालय में ऐसी प्रतियोगिताओं का भी आयोजन करते हैं, जिन में भाग लेने वाले किसी निर्धारित विषय पर अपनेअपने विचार व्यक्त करते हैं.

टेलीफोन

व्यंग्य • सिंधु गोयल

एक दिन मेरी बचपन की सहेली वीना एकाएक मेरे कार्यालय में आई और [illegible]दी से बोली, "चायपानी को पूछना बाद में. [illegible]ले जरा यह बता, तेरे दफ्तर का टेलीफोन [illegible]हां है?"

"क्यों?"

"क्यों, क्या टेलीफोन से इश्क [illegible]ड़ाऊंगी? अरे, चाचाजी को एक जरूरी [illegible]श देना है."

"पर टेलीफोन में तो ताला पड़ा है और [illegible]धकजी बाहर गए हुए हैं." मैं ने मजबूरी [illegible]ताते हुए कहा.

"टेलीफोन जैसी जरूरी चीज में आखिर ताला लगाने की क्या तुक है? वड़ा घटिया दफ्तर है तेरा." वीना ने तुनक कर जरा गुस्से में कहा.

मुझे ध्यान आया, ठीक यही वाक्य रमणजी ने कहा था, जब वह बंगलौर से नई दिल्ली स्थित इस कार्यालय का कार्यभार संभालने आए थे व अन्य महत्त्वपूर्ण चाबियों के साथ ही उन्हें एक सेंटीमीटर लंबी पीतल की टेलीफोन की चाबी भी सौंपी गई थी.

बड़े बाबू ने थोड़ा झिझक कर कहा था, "श्रीमानजी, ताला लगा रहने से लाइन खामखां एंगेज भी नहीं रहती व बेतुके बिल भी नहीं आते..."

"नहींनहीं..." बात काट कर रमणजी थोड़ा रोष से बोले थे, "हम सब ठीक कर लेंगे. अरे भाई, इस से ज्यादा क्या, किसी जरूरी काम की वजह से ही हमारे कार्यालय वाले टेलीफोन इस्तेमाल कर लेते होंगे, जरा खुद सोचिए, क्या इन गरीब बाबुओं के घर पर टेलीफोन लगे हुए हैं जो ये इस से चिपके रहेंगे?"

कार्यालय अनुशासन में अपने से बड़े अधिकारी के सामने चुप रहना ही ठीक है—यह सोच कर ही बड़े बाबू, "जैसा आप ठीक समझें" कह कर अपनी कुरसी पर चले गए थे.

और फिर उस के बाद कार्यालय की वे मूर्तियां फिर सक्रिय हो गई थीं जिन के टेलीफोन प्रेम ने पहले भी ताले को आमंत्रित किया था.

आरतीजी गोरी, लुभावनी और आकर्षक व्यक्तित्व की स्वामी हैं. वह हमारे कार्यालय में विगत तीन वर्षों से पुस्तकालयाध्यक्ष के पद पर कार्यरत हैं.

इतवार के दिन आरतीजी हिंदी व

का ताला

अंगरेजी के वे सारे अखबार खरीदती थीं जिन में वैवाहिक विज्ञापन होते थे.

अपनी शादी के लिए खुद चिट्ठी लिखना आरतीजी को पसंद नहीं था, अतः जिन विज्ञापनों में टेलीफोन नंबर दिया होता था, आरतीजी उन सभी नंबरों पर निशान लगा दिया करती थीं और सप्ताह के शेष दिनों में वह उन सभी नौजवानों के घर पर टेलीफोन करती थीं.

अकसर ही एकदो बार में संपर्क नहीं हो पाता था या बात अधूरी रह जाया करती थी, तो आरतीजी की नाजुक उंगली को पुनः नंबर मिलाने के लिए बड़ा कष्ट करना पड़ता था.

पर असली परेशानी तो तब आती थी जब मुआ टेलीफोन नंबर दिल्ली से बाहर—मद्रास, कलकत्ता, बंबई आदि का हुआ करता था.

आरतीजी को सीधी डायल सेवा में अधिक नंबर घुमाने पड़ते थे, साथ ही एक नंबर मिलाने के लिए उंगलियों को कईकई बार कसरत करनी पड़ती थी, बोलना भी जोर से पड़ता था और एक ही बार में लंबे समय तक बात करनी पड़ती थी, क्योंकि दूर के नंबर आसानी से नहीं मिलते हैं.

कार्यालय को टेलीफोन के इस खुले सदुपयोग का हजारों रुपए भुगतान करना पड़ा, परंतु आरतीजी कुंआरी से श्रीमती नहीं बन सकीं.

एक थीं कामनीजी, जो बस श्रीमती बनने ही वाली थीं. उन के मंगेतर भी पास ही के एक दूसरे कार्यालय में टाइपिस्ट थे.

कामनीजी को अपने भावी पति की चिंता खाए जाती थी, "आज बस में परेशानी तो नहीं हुई, बैठने को

जगह तो मिल गई थी, किसी कालिज की छात्रा के पास तो नहीं बैठे, ज्यादा आंकड़ों का काम तो नहीं मिला टाइप करने को, मशीन तो ठीक काम कर रही है, खाने में क्या लाए, अचार का तेल बह कर कपड़ों पर तो नहीं गिर गया, खीरे या आम के ऊपर पानी तो नहीं पिया, कहीं अम्मांजी गुड़ रखना तो नहीं भूल गई थीं, शाम को कहां मिलना है, कौन सी आइसक्रीम खानी है."
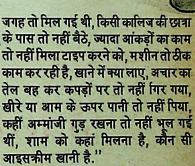
ऐसी हजारों समस्याओं का समाधान करने के लिए कामनीजी घड़ीघड़ी टेलीफोन

कार्यालय का कार्यभार संभालते वक्त रमणजी ने टेलीफोन में ताला डालने का कोई औचित्य नहीं समझा था पर कुछ दिनों बाद वह खुद ही टेलीफोन में ताला डालने पर विवश क्यों हो गए थे?

का प्रयोग महीना नक करती रही थीं और यह अवधि उस समय और बढ़ गई थी जब विवाह से एक सप्ताह पूर्व उन की भावी ददिया सास का देहांत हो गया था.

पर ऐसे किसी भी मसले से दूर असलम साहब हैं. वह बहुत इनकलाबी व्यक्ति हैं. दुनिया में कहीं भी बेईमानी हो रही हो, ज्यादती या जुल्म हो रहा है— असलम साहब को गवारा नहीं होता.

सुबह आठ बजे वाली खबरें सुन कर तथा निविदाओं से ले कर संपादकीय तक अखबार चाट कर, असलम साहब दफ्तर चलने से पहले ही तय कर लेते थे कि आज कहां बिजली गिरानी है.

यदि मामला हिंदुस्तानी है तो वह संबद्ध मंत्री या दफ्तर के अधिकारी को टेलीफोन पर आड़े हाथों लेते थे.

एक बार जब उन्होंने अखबार में बिजली बोर्ड की कुछ लाख रुपए की निविदा के बारे में पढ़ा, तो फौरन बोर्ड के अध्यक्ष को टेलीफोन कर के ईमानदारी बरतने की सलाह दी, साथ ही सतर्कता विभाग को भी संभावित बेइमानी से आगाह करा दिया.

एक बार जब उन्होंने सर्वोच्च न्यायालय में टेलीफोन कर के एक संवैधानिक मामले में मुख्य न्यायाधीश को सलाह देनी चाही, तो बात खासी बढ़ गई व असलम साहब का शुक्रिया अदा करने पुलिस आ गई.

चोरी करने में महिलाएं आगे

न्यूयार्क के 'लेडीज होम जर्नल' के अनुसार दुकानों से सामान की चोरी करने के मामले में महिलाएं दूसरे लोगों की अपेक्षा कम संकोच करती हैं. वे एकरसता, अकेलेपन व शारीरिक रूप से संतुष्ट न होने की प्रतिक्रियाओं के फलस्वरूप ऐसा करती हैं. इस तरह की चोरी करने वाली अधिकतर महिलाएं 20 से 50 वर्ष तक की उम्र की होती हैं.

अंतरराष्ट्रीय मामलों में असलम साहब सीधे संबंधित दूतावास या उच्चायोग को टेलीफोन कर के विरोध प्रकट करते हैं. साथ ही सख्त हिदायत भी कर देते हैं कि यदि आइंदा यह हरकत हुई तो उन से बुरा कोई न होगा.

हमारे खयाल से उन की पाक, साफ व लच्छेदार उर्दू किसी की समझ में ही नहीं आती होगी, वरना दूतावासों की ओर से भी पुलिस हमारे दफ्तर के चक्कर काटती.

एक हैं शिवधानजी. उन की रंगीन तबीयत के आगे सब कुछ फीका है. क्लब, कैबरे व हुस्न की तलाश ही जैसे उन की जिंदगी का अहम मकसद है.

किस थिएटर में कितना गरम पंजाबी ड्रामा चल रहा है, किस क्लब में कौन नर्तकी कैबरे कर रही है, कौन गायिका गजलें गा रही है, कौन से सिनेमाघर में वयस्कों के लिए हिंदी फिल्म या अश्लील अंगरेजी फिल्म लगी है, जैसे दिलफेंक सवालों के जवाबों के लिए शिवधानजी को टेलीफोन ही का तो सहारा था.

पर यह बात और है कि वह इन तमाम मनोरंजनों में से किसी भी एक का सिर्फ तनख्वाह मिलने वाले दिन ही आनंद ले पाते थे, पर उन का विचार था कि रोजाना की पूछताछ जहां उन का राजधानी के बारे में सामान्य ज्ञान बढ़ाती है, वहीं उन्हें तरोताजा व जिंदादिल भी रखती है.

परंतु 'कंजूस' उपनाम से विख्यात वीरेंद्रजी का रंगतरंग से कोई वास्ता नहीं. उन का शरीर ही हमारे कार्यालय में रहता था, दिल व दिमाग स्टाक एक्सचेंज में अटका रहता था.

देश की बड़ीबड़ी कंपनियों के भविष्य की चिंता वीरेंद्रजी को लगातार खाए जाती थी.

किसी कंपनी का 100 रुपए वाला शेयर 1,400 रुपए से गिर कर 740 रुपए पर आ गया, उसे किसी मजदूर यूनियन ने परेशान कर रखा है, किसी फैक्टरी को अपना उत्पादन बढ़ाने की इजाजत नहीं मिल पा

कार्य कैसा भी हो घरेलू या दफ्तरी टेलीफोन का प्रयोग प्रायः हर कोई अपनी चीज समझ कर ही करता है.

रही, किसी उद्योगपति का मलयेशिया में कारखाना लगाने का मामला अधर में अटका हुआ है, उद्योग मंत्री अमरीकी उद्योगपतियों को भारत में धन लगाने के लिए उकसा रहे हैं, एक नई आटो आ गई तो पहले से चल रही मोपेड का क्या होगा?

इन तमाम जिम्मेदारियों से लदे वीरेंद्रजी स्टाक एक्सचेंज, कंपनी, कार्यालयों व प्रमुख दलालों से अपने कार्यालय के टेलीफोन द्वारा लगातार विचारविमर्श करते रहते थे. प्रबंधक द्वारा दिया गया अनुवाद का काम पूरा हुआ या नहीं— इस से उन्हें कभी कोई मतलब नहीं रहता.

इसी क्रम में एक और महान विभूति से मिलिए, यह हैं— आशाजी.

यह इन का सौभाग्य कहिए या कंपनी के मालिक का दुर्भाग्य कि टेलीफोन आपरेटर हैं, पर साथ ही पत्रकारिता में गहरी दिलचस्पी रखती हैं. जनताजनार्दन को छूने वाले अछूते विषयों पर प्रारंभिक जानकारी स्वयं इकट्ठी करती हैं और फिर लेख लिखती हैं.

कुछ समय पहले उन्होंने 'समय की पाबंदी' लेख लिखा. सरकारी व निजी कार्यालय, क्लब, थिएटर, सिनेमाहाल, दूतावास, दुकानें, प्रतिष्ठान, बस, ट्रेन, जहाज, आदि समय से चल रहे हैं, खुल रहे हैं, या नहीं— इस जानकारी के लिए उन को सैकड़ों स्थानों पर लगातार कई हफ्ते तक फोन करना पड़ा. तब कहीं जा कर उन की रचना प्रभावी और महत्त्वपूर्ण हो पाई.

अंत में जब टेलीफोन का जबरदस्त बिल रमणजी ने देखा तो उन के होश उड़ गए थे और उन्होंने बड़े अदब से बड़े बाबू को बुला कर उस छोटी ताली के उपयोग का विनम्र आदेश दे दिया था.

रमणजी तो टेलीफोन में ताला लगाने का कारण समझ गए थे, पर वीना को इस का कारण कैसे समझाऊं? ●

एशियाई खेल: यह कैसा इनसाफ

नवें एशियाई खेलों के आयोजन पर जरूरी व गैरजरूरी कामों पर 1,000 से 1,500 करोड़ रुपए तक खर्च किए गए हैं. न जाने कितने लोगों ने इस बड़ी रकम की वैतरणी में गोते लगाए हैं. सैकड़ों अधिकारी कईकई बार न सिर्फ मुफ्त में विदेश घूम आए हैं, बल्कि पिछले एकडेढ़ साल से वे एशियाई खेलों के लिए की जा रही अपनी 'सेवाओं' की भारी भरकम कीमत वसूल रहे हैं.

फजूलखर्ची के इस आलम में भारतीय ओलंपिक संघ ने काफी मितव्ययता का परिचय दिया है. उस ने सभी खेल संगठनों से कहा है कि एशियाई खेलों में उन के जो खिलाड़ी हिस्सा लेंगे उन के आनेजाने, ठहरने व खानेपीने के अलावा खेल के सामान का व्यय उन्हें ही उठाना पड़ेगा. भारत के खेल संगठनों के पास तब तो काफी पैसा आ जाता है जब उन के अधिकारियों को भारतीय खेलों का स्तर सुधारने के नाम पर विदेश जाना होता है, लेकिन खिलाड़ी की मदद करने के लिए वे हमेशा कंगाल हो जाते हैं.

लगभग सभी खेल संगठनों ने खिलाड़ियों से कहा है कि अगर एशियाई खेलों में शामिल होने की उन की इच्छा है तो वे अपना सारा व्यय, जो करीब साढ़े पांच हजार रुपए है, खुद ही भरें. यानी एक खिलाड़ी, जो दो साल से कड़ी मेहनत कर रहा है, उसे पदक जीतने की कोशिश के लिए टैक्स भरना पड़ेगा. इस से ज्यादा घटिया मजाक क्या कोई और हो सकता है?

जब ब्रिसबेन के राष्ट्रमंडलीय खेलों में हिस्सा लेने के लिए भारतीय खिलाड़ी गए थे तो उन से कुल खर्च का 15 प्रतिशत, करीब सात हजार रुपए मांगे गए थे. ऐन वक्त पर अगर सरकार 15 प्रतिशत की भी अदायगी का कदम नहीं उठाती तो बहुत से खिलाड़ी राष्ट्रमंडलीय खेलों में हिस्सा ही नहीं ले पाते.

अगर यही तमाशे खिलाड़ियों के साथ किए जाते हैं तो तमाम खेल संगठनों को भंग कर ऐसा नियम क्यों नहीं बनाया दिया जाता कि जिस खिलाड़ी में अपना खर्च उठाने का बूता हो, वही अंतरराष्ट्रीय प्रतियोगिताओं में हिस्सा ले.

रामप्रकाश मेहरा : बुरे क्यों समझे जाते थे? ▶

हरे बदलने से कुछ नहीं होता

दिल्ली क्रिकेट संघ पर जब तक ामप्रकाश मेहरा का राज्य था, तब तक एक रोधी गुट बारबार यह आरोप लगा रहा था क उन्होंने दिल्ली क्रिकेट में अव्यवस्था लाई है. अब जब से विरोधी गुट के सरगना शनसिंह बेदी के हाथों में दिल्ली क्रिकेट की गडोर आई है, हालात और भी बिगड़ गए ं.

हाल में फिरोजशाह कोटला में हुए ईरानी ट्राफी मैच में यह अव्यवस्था काफी स्पष्ट रूप से देखने को मिली. पीने के पानी का कोई इंतजाम नहीं था. खानेपीने की चीजों के मनमाने दाम वसूले जा रहे थे.

प्रेस बाक्स में बेदी गुट के खेल पत्रकारों का ही दखल था. गुट से बाहर के लोगों से वे ऐसे सवालजवाब करते, मानों उन की शिनाख्त कर रहे हों. यह हालत तब और दुखद लगी जब यह मालूम हुआ कि इन गुटबाज पत्रकारों से अपमानित होने वाले लोगों के पास दिल्ली व जिला क्रिकेट संघ द्वारा जारी किए गए पास थे.

ईरानी ट्राफी मैच बेहद मामूली माना जाता है. आमतौर पर इस में ज्यादा भीड़ नहीं होती फिर भी किन्हीं पत्रकार महोदय को 15 पास तक दिए गए. यही काम रामप्रकाश मेहरा नहीं करते थे, इसलिए बुरे थे.

क्रिकेट टीम : नए चेहरे

पाकिस्तान की तीसरी यात्रा पर छः टैस्ट मैच खेलने जा रही भारतीय क्रिकेट टीम की घोषणा कर दी गई है. इस में तीन खिलाड़ियों का चयन आश्चर्यजनक है. ये हैं—मनिंदर सिंह (दिल्ली), शिवरामकृष्ण (तमिलनाडु) व बलविंदरसिंह संधु (बंबई).

भारत के लिए यह दौरा बेहद महत्त्वपूर्ण साबित होगा, क्योंकि हाल ही में पाकिस्तान की टीम ने आस्ट्रेलिया को तीन टेस्टों की शृंखला में 3-0 से हराया है. •

वीणा अपनी बेटी मधु को डाक्टर बनाना चाहती थी परंतु सुशील इस के खिलाफ था. वह नहीं चाहता था कि जो कुछ उस के साथ घटा है वही सब उस की बेटी के साथ भी घटे.

कहानी • चंद्रा र. देवत
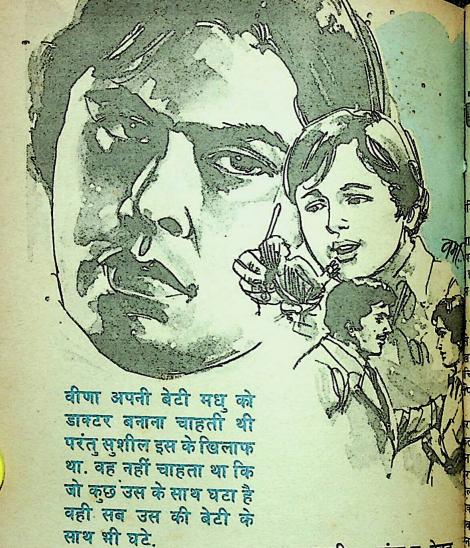
समाचारपत्र पर दृष्टि गड़ाए सुशील कहीं खोया हुआ था. समाचार तो कोई विशेष नहीं था, पर एक सुंदर चित्र ने उस का ध्यान आकर्षित कर रखा था. खिलौने के लिए एक नए-डिजाइन का धुंधला अक्स उस की कल्पना में उभर रहा था. तभी उस का ध्यान भंग हो गया.

"अजी, सुनते हो, तुम्हारी लाड़ली डाक्टर बनेगी बड़ी हो कर." उल्लसित स्वर में पुकारती वीणा मधु को उठाए बैठक में चली आई. सुशील ने चौंक कर पूछा, "तुम्हें कैसे मालूम? भविष्य जानने की कोई विद्या तुम्हारे हाथ लग गई है क्या?"

"अभी से थर्मामीटर वगैरह पसंद आ... हैं इसे. मैं ने पूछा, 'डाक्टर बनेगी क्या?' इस पर फौरन 'हां' में सिर हिला दिया इस ने."

"मधु ने समझा होगा, यह भी कोई खिलौना होगा. इसी कारण उठा लिया होगा. अभी से यह क्या जाने कि डाक्टरी किस...

सपने अपने अपने

ड़िया का नाम है."

सुशील की बात पर वीणा की ममता को
ा लगा, "कैसी बातें करते हो जी? तुम्हें
पनी बच्ची के भविष्य की चिंता नहीं है? मैं
इसे डाक्टर ही बनाऊंगी, इस के बाद ही
इस का ब्याह करेंगे."

"चिंता है, तभी तो कह रहा हूं. इस में
कुछ बनने की योग्यता प्रकट होगी, हम
वही बनाएंगे. हमें तो केवल इतना ध्यान
ना है कि यह गलत रास्ता न चुने. बच्चे की
चि न होने पर भी उस पर अपनी इच्छाएं
पना ठीक नहीं होता."

वीणा तिलमिला कर मुंह फुलाए उठ
र चली गई. उस की स्वयं डाक्टर बनने की
तनी इच्छा थी, परंतु उस की यह इच्छा
न की मन में ही रह गई. अच्छा घरवर देख
र उस के मातापिता और स्वयं उस का मन
ल गया था. उस ने सोचा था, वह स्वयं
क्टर नहीं बन सकी, पर अपनी बेटी को
वश्य डाक्टर बनाएगी. इस से ही उस के
न को संतोष मिल जाएगा. पर सुशील कुछ
रने दे, तब न. नाराज, उदास
णा कामकाज में व्यस्त हो
ई.

सुशील भी क्या करता?
पने भटकते जीवन के कटु
नुभव उसे भूले नहीं थे.

एक दिन मिट्टी की
ड़ियां में अंतिम रंग भर
र नन्हे सुशील ने उसे सामने
ख कर देखा. अपनी ही
ति पर उस की आंखों में
प्रशंसा के भाव उभर आए. वाह, कितनी
सुंदर बनी है. आज तो पहली बार रंग भरा है.
तनिक सांवली हो गई है. अगली गुड़िया
ज्यादा खूबसूरत व गोरीचिट्टी बनाऊंगा.
मुग्ध दृष्टि से गुड़िया को निहारता हुआ वह
कल्पना जगत में खो गया.

तभी सब कुछ बिखर गया. गुड़िया टूटी
हुई भूमि पर पड़ी थी. स्तब्ध सुशील अभी
स्थिति को समझ भी नहीं पाया था कि एक
जोरदार तमाचा उस के गाल पर पड़ा. साथ
ही उस के पिता की क्रोध से भरी आवाज भी
सुनाई दी.

आगबबूला हुए पिता ने दांत पीसते हुए
गुड़िया को चूरचूर करने के लिए पैर उठाया
ही था कि सुशील के मुंह से निकला, "नहीं."
और उस ने टूटी गुड़िया को हथेली से ढक
लिया. क्रोधांध पिता का पैर सुशील की
उलटी हथेली पर पड़ा. बूट से पूरा जोर
लगाते हुए उन्होंने हाथ सहित गुड़िया कुचल
डाली.

सुशील की हृदय विदारक चीख निकल
गई. हथेली के दोनों ओर रक्त छलक आया

था. दर्द से छटपटाता वह भूमि पर लोटपोट हो गया.

एकबारगी उस के पिता भी सिटपिटा गए. चीख सुन मां व दादी दौड़ी आईं. दृश्य देख कुछ अनुमान तो हुआ, पर स्पष्ट नहीं. दादी ने पौत्र को तुरंत गोदी में भरने की चेष्टा करते हुए अपने पुत्र को फटकारा, "हर वक्त इस के पीछे पड़ा रहता है. बच्चा सारा दिन कैसे किताबों में मगज मारेगा? खेलेगा नहीं कभी?"

यों सुशील अब भी विलख रहा था. पर मां व पत्नी को देख सुशील के पिता पुनः क्रोध में आ गए और बोले, "लाड़प्यार में बिगाड़ दो इसे. हजार बार कहा, पढ़ने में मन लगा. बड़ा हो कर आई.ए.एस. अफसर बनना है इसे. मगर यह...पिछले साल द्वितीय श्रेणी में उत्तीर्ण हुआ. इस बार आसार उस से भी बुरे नजर आते हैं. नालायक कहीं का. जरा नजर चूकी नहीं कि ले कर बैठ गया मिट्टीपत्थरों को. ये काम आएंगे इस के? रोटी कमा कर देंगे इसे?" उन्हें चिल्लाता छोड़ सुशील की मां अपने सहमेसिसकते बेटे को ले सजल नयनों से भीतर चली गईं.

भीतर सुशील फूटफूट कर रो पड़ा. सुशील का हाथ साफ कर पट्टी बांधते हुए मां भी रोती हुई बोलीं, "क्यों तू दिन भर इन खिलौनों के पीछे पड़ा रहता है. तुझे मालूम तो है, तेरे बावूजी तेरे ये खेल सहन नहीं कर पाते. क्यों रोजरोज मार खाता है? बेटा, छोड़ दे इन्हें. यही पढ़ाईलिखाई जिंदगी में काम आएगी. बड़ा अफसर बनेगा मेरा राजा बेटा. गाड़ी, बंगला, रुपयापैसा, शानशौकत सब कुछ होगा. इस के पास."

मां की सांत्वनामयी गोद में सिसकते हुए सुशील ने बताया, "मां, मैं पहले ही पढ़ रहा था. मुझे समाजशास्त्र का एक प्रश्न समझ में नहीं आया तो मैं ने बावूजी से पूछा. उन्होंने मुझे डांट कर भगा दिया. फिर मैं ने सोचा, अभी अतुल आएगा तो उस से पूछूंगा. पर वह गुड़िया लिए बिना मुझे उत्तर नहीं बताएगा. उसी के लिए गुड़िया बनाई थी मैं ने, पर बावूजी ने तोड़ दी. अब मैं किस से पूछूंगा?"

अब तो मां को भी गुस्सा आ गया. पट्टी बांधते ही सीधे बाहर पहुंचीं और पति को खूब खरीखोटी सुनाई. सब जान कर सुशील के पिता भी सकपका गए. उन्हें अनुमान भी नहीं था कि सुशील की कला उस के मित्रों में इतनी लोकप्रिय है. वह देर तक खिसियाए, कुढ़ते, वड़बड़ाते रहे.

लेकिन सुशील को डांटने फटकारने का क्रम बराबर जारी रहा. अवकाश के क्षणों में लालायित बच्चे सुशील के आसपास जुट जाते और सुशील के हाथ अपनेआप मिट्टी, कागज थाम लेते. बच्चे ईर्ष्या, प्रशंसा, कौतूहल से पूछते और सुशील सब कुछ भूल प्रसन्नता से झूमता किसी नई रचना में खो जाता. वह बच्चों के उत्सुक प्रश्नों का वड़ेबूढों की तरह गंभीर बन कर उत्तर देता. कोई आइस्क्रीम खिलाता, कोई टाफी.

धीरेधीरे उस की कला निखर रही थी. एकदो बार स्कूल में उस ने पुरस्कार भी जीते. पुरस्कार देख कर तो पिता प्रसन्न होते, पर उसे डांटनेफटकारने से वाज न आते. कभी पीट भी डालते, विशेषकर परीक्षा परिणाम के बाद. "सुशील परीक्षा में प्रथम क्यों नहीं आया?" ऐसा वह कहते.

लेकिन प्रशंसा किसे नहीं लुभाती, सुशील तो आखिर बच्चा ही था. कभीकभी तो अपना गुण उसे भयंकर अवगुण प्रतीत होने लगता. दूसरों के व्यंग्य उस के मन में हीन भावना के साथसाथ झल्लाहट पैदा कर देते.

नतीजा यह हुआ कि स्कूल की पढ़ाई उसे अरुचिकर, बोझ सी लगने लगी. सब के समक्ष अपमानित किए जाने का कारण उस का यह शौक ही तो है. इस से तो पिता पढ़ाई ही बंद करा दें तो अच्छा है. वह पास सदा होता रहा, पर विशेष योग्यता का प्रदर्शन कर के नहीं. थोपी गई इच्छा उस के स्वाभाविक गुणों का स्थान नहीं ले सकी.

बचपन यों ही बीता. फिर पिता ने मारनापीटना बंद कर दिया. अपने असंतोष

को प्रकट करने से वह कभी नहीं चूके, "एक ही बेटा है, मगर नालायक. मैं तो फिर भी अकाउंटेंट बन गया. बेटा यह भी बन पाएगा, कौन जाने."

पिता की निराशा देख सुशील उन का व परिचितों का सामना करने से कतराता. वैसे अब वह विभिन्न प्रकार के खिलौनों के अतिरिक्त बैठक का सजावटी सामान भी बना लेता था. अलबत्ता वे औरों के घर की शोभा बनते. पिता की निराशाजनित घृणा इतनी तीव्र थी कि सुशील की अपनी अलमारी को छोड़ इस की बनाई कोई चीज घर में कहीं नहीं थी.

पितापुत्र में बातचीत लगभग बंद थी. सुशील ने बी.ए. कर लिया था. ट्यूशन करते हुए एम.ए. भी कर लिया. फिर नौकरी ढूंढने लगा. पर बहुत प्रयत्न करने पर भी नौकरी नहीं मिली.

एक दिन बातोंबातों में किसी मित्र ने उसे सुझाव दिया, " तुम अपने बनाए खिलौने बेचने का धंधा क्यों आरंभ नहीं करते? चाहो तो..."

वहीं बैठे उस के पिता व्यंग्यपूर्वक हंस पड़े, "जरूर, बेटा, रेहड़ी लगा लो. सड़क पर खड़े हो कर 'टके के दो, आने के चार' चिल्लाना, पेट को रोटी और तन को लंगोटी तो मिल ही जाएगी."

"ऐसा क्यों कहते हैं, चाचाजी?" मित्र ने टोका, "छोटा ही सही, पर अपना धंधा करना अपमानजनक तो नहीं."

"ठीक है बेटा. इस के जी में जो आए करे. मेरी तो इस ने कभी सुनी नहीं, वरना आज अफसर होता. चार नौकर आगेपीछे घूमते. शान होती. जीवन में जूतियां चटखाते फिरना ही लिखा हो तो कोई क्या करे."

पर उस दिन सुशील फूट पड़ा, "नौकरी की शान होती है रिश्वत व बेईमानी के दम पर. जैसी आती है, वैसे ही चली भी जाती है. और बिना ऊंची डिगरी के भी ऊंची अफसरी हासिल कर लेते हैं लोग."

"चाचाजी, सिर्फ नौकरी करना ही प्रतिष्ठा की बात नहीं," मित्र ने सुशील का

पक्ष लिया.

"कुछ कर नहीं पाया तो कह दिया अंगूर खट्टे हैं. ऐसा ही गुमान है तो कुछ कर के दिखाता उन पत्थरों से."

विवाद देर तक चला. जब सुशील उठा तो उस के मन में इतनी पीड़ा थी कि खिलौने बनाना भी उस ने काफी समय के लिए लगभग बंद कर दिया.

पर उस दिन सुशील इंटरव्यू दे कर बाहर निकला तो वह थका हुआ था. यों ही पलट कर उस ने उस इमारत को देखा, जिस में से अभीअभी वह बाहर निकला था और तब लंबा सांस ले कर और सिर झटक कर लंबेलंबे डग भरता हुआ वह बस स्टाप की ओर चल दिया.

इंटरव्यू अच्छा ही हुआ था. इस पर भी पूर्व अनुभव के आधार पर वह जानता था कि उस के हाथ असफलता ही लगने वाली है. साक्षात्कार औपचारिक था. निश्चय ही उम्मीदवार चुना जा चुका था. एक कड़वी मुसकराहट उस के होंठों पर तैर आई.

वह बस की प्रतीक्षा में खड़ा हो गया. लाइन लंबी थी. वह सोचने लगा, शायद एकाध बस छोड़नी पड़े. उसे भी अभी क्या काम है? मन हुआ एक कप चाय पी आए. फिर जेब का खयाल कर स्वयं को समझा लिया. बहुत बढ़ गई है महंगाई, फजूलखर्ची से बचना चाहिए.

तभी ब्रेक लगने से एक कार के रुकने की आवाज आई. सुशील ने चौंक कर देखा. पहचानने में कुछ देर लगी, मगर आखिर वह श्याम को पहचान ही गया. स्कूल छोड़ने के बाद उस ने उसे पहली बार देखा था. शक्लसूरत काफी बदल गई थी. सुशील से दोतीन वर्ष बड़ा था वह. शरीर तनिक भराभरा मगर सुडौल था. कीमती सूट में व्यक्तित्व रोबीला लग रहा था.

अनुमानों की भूलभुलैया में खो सुशील औपचारिक अभिवादन भी भूल गया. श्याम ने मुसकराते हुए पास आ कर कहा, "कहो, सुशील, कैसे हो?"

सुशील की तंद्रा टूटी. वह हड़बड़ा कर बोला, "ओह." फिर संभल कर पूछा, "कैसे हो? सब ठीकठाक है न?"

दृष्टि स्वयमेव कार की ओर उठ गई. मानो वह सब कुछ ठीकठाक होने का प्रमाण था. श्याम की मुसकान गहरा गई, "हां, सब ठीक ही है. इतने दिनों से कहां थे? दिखाई नहीं दिए? क्या कर रहे हो आजकल?"

अनायास ही सुशील को ईर्ष्याजनित हीन भावना ने घेर लिया. कटुता से मुंह बना कर बोला, "सब सवाल एक साथ? फिर भी बताता हूं. बेकार था, बेकार हूं. आगे भी बेकार रहने के ही आसार हैं. समझ ही गए होगे. नौकरी ढूंढ़ रहा हूं."

श्याम ने गौर से उसे देखा. उस की कटुता का कारण समझते उसे देर नहीं लगी. गंभीर हो उस ने कहा, "आओ, किसी रेस्तोरां में बैठ कर चाय पीएंगे और अपनीअपनी कहेंगे और सुनेंगे." उस का सौहार्द देख सुशील सकुचा गया. संभल कर नम्रता से बोला, "क्षमा करना, यार, मेरी बस आने वाली है."

"मैं छोड़ आऊंगा." तुम आओ तो.

"लेकिन..."

"पुराने मित्रों को यों दुरकाते हैं, सुशील?" श्याम ने शिकायत की. सुशील शर्मिंदा हो गया.

रेस्तोरां में चाय व कुछ खाने का आर्डर दे श्याम सुशील से बातें करने लगा. स्वयं आर्डर देने से बचने के लिए सुशील ने प्रश्न किया, "तुम क्या कर रहे हो आजकल?"

"अपने लिए तो पिताजी ने पैदा होने से पहले ही काम तैयार कर दिया था. उन्हीं का व्यापार संभालता हूं."

"मगर स्कूल में तो तुम कहते थे कि वकालत करोगे."

"कहने में क्या जाता है, प्यारे, मगर अपने अंदर योग्यता भी तो होनी चाहिए." श्याम बोला.

"क्या मतलब?" इस स्पष्टोक्ति पर सुशील सचमुच चकित रह गया.

"भई, जब स्कूल में था, तब कितनी बुद्धि थी मुझ में, यह तो तुम जानते हो. मैं अन्य दोस्तों की तरह सपनों के महल बनाता था. कोई कहता डाक्टर बनूंगा, कोई इंजीनियर, कोई आइ.ए.एस. अफसर, तो कोई कुछ. देखादेखी मैं भी कह देता, 'मैं वकील बनूंगा.' हमारे यहां पिताजी के एक वकील मित्र का बहुत आनाजाना था. वह बेहद प्रतिभाशाली व्यक्ति थे. गुंडेबदमाशों से ले कर पुलिस तक पर रोब था उन का. यह सब देख मैं भी सपनों में झूलने लगता. सोचता उन जैसा वकील बनूंगा मैं," बोलतेबोलते श्याम हंस पड़ा.

सुशील मूर्तिवत उसे देखता रहा. फिर पूछा, "तो तुम ने एलएल. बी. किया ही नहीं."

"किया, जैसेतैसे डिगरी ले ली. सनद के लिए आज आवेदन करूंगा, कल करूंगा, सोचते हुए समय बीतता गया और फिर पिताजी का हाथ बंटाना शुरू कर दिया. फिर पता नहीं कब सनद मंगाने का विचार भी दिमाग से निकल गया. मैं व्यापार में ऐसा रम गया कि वकालत करने का विचार ही दिमाग से निकल गया.

"अब मैं समझ गया हूं कि मेरी स्वाभाविक प्रवृत्ति व गुण व्यापार उद्योग में ही सही तरह प्रयुक्त हो सकते थे. यह तो तुम भी मानते होगे कि आदमी पूरी एकाग्रता व तन्मयता से काम न करे तो कभी सफल नहीं

श्याम ने सुशील को जब अपने एक परिचित खिलौने के व्यापारी उमा शंकर से मिलवाया तो श्याम की प्रतिभा देख कर उन के मुख पर प्रशंसा के भाव छा गए.

हो सकता. और ये दोनों अपने स्वभाव व रुचि के कार्यों के प्रति ही बन पाती हैं. बहरहाल अब मैं खुश हूं."

सुशील के मस्तिष्क को ठोकर सी लगी थी. अभी वह विचार कर ही रहा था कि श्याम ने पूछ लिया, "नौकरी ढूंढ़ने के अलावा और क्या कर रहे हो?"

एक बार सुशील ने सहज, ईर्ष्यारहित भावना से उत्तर दिया, "कुछ नहीं, सड़कें नापता फिरता हूं. कमाई के नाम पर एकाध ट्यूशन कर लेता हूं."

तभी चायनाश्ता आ गया. खातेपीते हुए दोनों अपनेअपने विचारों में खोए रहे. एकाएक श्याम ने मौन भंग किया." बुरा न मानो तो एक बात कहूं, सुशील."

"हां, कहो, बुरा क्यों मानूंगा?"

"नौकरी हमारे लिए इतनी महत्त्वपूर्ण क्यों है? नौकरी की चाह में एड़ियां रगड़ना हम जैसे युवकों को शोभा तो नहीं देता. तुम अपना कोई व्यवसाय क्यों नहीं करते?"

"उस के लिए पूंजी चाहिए, जो मेरे पास नहीं है."

"तुम पूंजी किसे कहते हो दोस्त? सिर्फ रुपए को जिस का निरंतर अवमूल्यन हो रहा है? सुनो, जिसे सर्वप्रथम लगा कर फिर आवश्यकतानुसार कड़ा परिश्रम कर के उस से लाभ प्राप्त किया जाए वही पूंजी कहलाती है.

"इस सिद्धांत के अनुसार प्रत्येक व्यक्ति में प्रकृति प्रदत्त जो गुण, रुचियां व प्रवृत्तियां हैं, वे ही मूल रूप में प्रत्येक मनुष्य की पूंजी हैं, जैसे किसी मजदूर की पूंजी उस का सबल शरीर, किसी कलाकार की पूंजी उस की जन्मजात प्रतिभा, किसी व्यापारी की पहली पूंजी उस की व्यापारिक प्रकृति व दृष्टिकोण होते हैं.

"सफलता पाने के लिए इन्हीं गुणों का यथास्थान उपयोग करने से प्राप्त रुपए, पैसे, यश, नाम, पद, मानप्रतिष्ठा इत्यादि के रूप में जो फल मिलता है, वही पूंजी पर मिलने

वाला प्रथम लाभ है. इस के बाद ही इनसान इस से लाभ कमाता है.

"रुपया भी पूंजी है, किंतु अनाड़ी हाथों में पड़ कर अतिचंचलता लक्ष्मी सहज ही खिसक जाती है. इस निराशा को मन में स्थान मत दो कि तुम धनवान नहीं हो."

"मैं ने माना, फिर भी रुपए की आवश्यकता तो कदमकदम पर होती है और मैं..." सुशील वितृष्णापूर्वक हंसा, "मेरी हालत तो यह है कि बस की प्रतीक्षा के दौरान एक प्याली चाय पीने की इच्छा का भी दमन करना पड़ा था अभी."

"परंतु तुम्हारी पहली पूंजी तुम्हारी मेहनत, लगन, सूझबूझ तो तुम्हारे पास थी. उसे लगा कर लाभ स्वरूप रुपया व अनुभव कमाते. तब कोई लघु उद्योग आरंभ कर सकते थे. अब तक तुम स्वयं को एक बावली तलाश के पीछे दौड़ता नहीं पाते, बल्कि तुम्हें अनुभव होता."

सुशील भी स्वयं इसी दिशा में सोचने लगा था. श्याम की फटकार भली लगी थी. अपनी भूल निस्संकोच स्वीकारते हुए लज्जित हो उस ने पूछा, "तो क्या करूं मैं? मेरा मतलब है पैसा कमाने के अलावा. पैसा तो मैं कमा लूंगा. बूंदबूंद ही सही, घड़ा तो भर ही जाएगा, यह मुझे विश्वास है."

श्याम के होंठों पर संतोषपूर्ण मुसकान झलकी, "स्कूल के बाद से ही हम नहीं मिले. मैं नहीं जानता, अब तुम्हारे गुण व नैसर्गिक प्रतिभा क्या है. लेकिन बचपन में तुम मिट्टी के बहुत सुंदर खिलौने बनाया करते थे. बच्चे तुम्हारे खिलौने पाने को लालायित रहते थे. मुझे याद है, अतुल के लिए खिलौना बनाने पर तुम्हें अपने पिताजी से मार भी पड़ी थी. अभी भी यह गुण तुम में हैं या..."

सुशील की आंखें चमक उठीं. वह बोला, "अब तो मैं प्लास्टिक, कांच, कागज, कपड़े, मिट्टी इत्यादि वस्तुओं से खिलौने व घरेलू साजसज्जा का सामान बना लेता हूं."

"अभी होंगे कुछ?"

"हांहां, बहुत हैं. मुझे रास्ता मिल गया है, श्याम. तुम्हारा शुक्रिया दोस्त. तुम ने मुझे मेरे ही दर्शन करा दिए," सुशील एकाएक उतावला हो उठा था.

"मैं तुम्हारे बनाए खिलौने देखना चाहता हूं."

समय ने सुशील को गहरा सबक दिया था. पहले जैसी भूल वह दोहराना नहीं चाहता था. उसी शाम दोनों श्याम के एक परिचित उमाशंकर से मिले, जिन का खिलौनों का ही व्यापार था. सब सुन कर तथा खिलौने व सजावटी सामान देख उन के मुख पर सचमुच प्रशंसा के भाव छा गए. उन्होंने सुशील की ओर देखा. घबराहट से सुशील अनजाने ही उंगलियां चटखाने लगा. वह मुसकराए. सरल हृदय युवक कलाकार अपनी कलाकृतियों की भांति ही उन्हें भाया था.

श्याम ने पुनः कहा, "चाचाजी, मुझे विश्वास है, आप इसे निराश नहीं करेंगे. अभी तक यह पगला एक मृगतृष्णा के पीछे भाग रहा था."

"देर आयद, दुरुस्त आयद," उन्होंने बात काटी, "बेटे, हमारी शिक्षा पद्धति ही दोषपूर्ण है. हम अपने बच्चों की बुद्धि का इस ढंग से विकास नहीं करते कि वे कर्मक्षेत्र में पदार्पण करते ही अपनी राह आप चुन लें. उच्च शिक्षा के नाम पर हम ने बलात उन्हें एक दिशा में धकेल दिया है. सुशील बेटे, नैसर्गिक प्रतिभा ही तुम्हें जीवन में सफलता प्रदान करेगी. पर इस में कुछ समय लगेगा. अपनी कला में स्वाभाविकता कायम रखते हुए उसे तनिक व्यापारिक रूप भी देना होगा. प्रतीक्षा कर सकोगे?"

"जी हां, क्यों नहीं," खुशी से बावला हो सुशील झटके से खड़ा हो गया. यह बचपना देख उमाशंकर व श्याम हंस पड़े. तनिक झेंप कर संयत हो सुशील ने कृतज्ञ स्वर में कहा, "मैं आप के विश्वास को कभी ठेस नहीं पहुंचाऊंगा. आप के साथ कभी धोखा नहीं.."

"नहीं, बेटे. ऐसा मत समझो. मैं तुम्हें बांधना नहीं चाहता. व्यापारिक गुलामी की जंजीरों में कैद हो कर. सिर्फ बिकने वाली

चीज बन कर कलाकार की प्रतिभा कुंद हो जाती है. नैसर्गिक कला के स्वाभाविक विकास के लिए तो स्वतंत्र सहजता अत्यंत आवश्यक है. इसी लिए तो लोग कहते हैं कि कलाकार मूडी होते हैं."

तीनों हंस पड़े.

अगले दो वर्षों में सुशील एक कुशल व्यावसायिक कलाकार बन गया था. उमाशंकरजी ने उसे अपनी फैक्टरी में कुशल कलाकारों के साथ लगा दिया था. इस पर भी अपनी मौलिकता एवं अलग पहचान बनाए रखने के लिए उस ने अपनी कला को मात्र विकाऊ नहीं बनने दिया. आर्थिक रूप से वह तुरंत इतना संपन्न नहीं हुआ, तब भी संतुष्ट था. अब वह पूर्ववत बेकार नहीं था. कुछ करते रहने का नशा शायद संसार में श्रेष्ठतम नशा है.

आत्मविश्लेषण के लिए अकसर सुशील की दृष्टि अपने अतीत में लौट जाती. पिता को वह अपराधी नहीं मानता था. मातापिता तो संतान के हितचिंतक ही होते हैं. उस के उज्ज्वल, सुखमय भविष्य की शुभकामना ही करते हैं. हां, कभीकभी उन की कामनाएं संतान के स्वाभाविक गुणों, रुचि व योग्यता से मेल नहीं खा पातीं. सुशील के पिता भूल कर रहे थे, किंतु दुर्भावनावश नहीं.

जो भी हो, सुशील उन्हें उन की कल्पना का छोटा सा सुख संसार दे सका, उस के लिए परम संतोष की बात यही थी. पिता के मुख पर कभीकभी पश्चाताप की भावना, नजरें चुराना उसे खलता था. फिर भी उस ने कभी कुछ नहीं कहा. दो वर्षों के बाद कुछ सपन्न होते ही सुशील ने विवाह कर लिया.

तंद्रा पुनः टूट गई. फ्राक पहने सजीध[illegible] मधु उस का हाथ पकड़ कर हिला रही थ[illegible] "पिताजी...पिताजी...खाना." सुशील[illegible] होंठों पर स्नेहमयी मुसकान खिल उठी. उस[illegible] उठते हुए बेटी को उठा कर हवा में उछाल व[illegible] लपक लिया. पितापुत्री दोनों आह्लाद[illegible] खिलखिला उठे.

तभी सुशील ने देखा, वीणा मुंह फुल[illegible] भीतरी द्वार पर खड़ी है. सुशील उसे मन[illegible] का निश्चय कर नम्र स्वर में बोला, "अब त[illegible] रुष्ट हो, वीणा? अरे पगली, मांबाप अ[illegible] बच्चों के पथप्रदर्शक, संरक्षक, सहाय[illegible] मित्र, सहयोगी हों, यह आवश्यक है. पर[illegible] तानाशाह क्यों हों? मनुष्य में गुण, प्रवृ[illegible] स्वभाव, रुचि, पसंद सभी उस के जन्म[illegible] उत्पन्न होते हैं. उन्हें केवल सही शिक्ष[illegible] संस्कार व वातावरण दे कर संवारानिखा[illegible] सदुपयोगी बनाया जा सकता है. ऐसा ही ह[illegible] भी करेंगे. जो कुछ करने की हमारी अप[illegible] इच्छा नहीं होती, वह हम किसी के भी विव[illegible] करने पर नहीं कर सकते.

"मधु पर अपनी अपूर्ण इच्छा थोप [illegible] तुम इसे भविष्य में कुंठित, भ्रमित ही करो[illegible] इस के स्वाभाविक गुणों का विकास होने[illegible] ताकि हम तदनुसार इस के लिए साधन[illegible] अवसर प्रदान कर सकें." यह कह कर उस[illegible] उंगली से पत्नी का चेहरा उठाया और [illegible] उस की आंखों में झांकते हुए पूछा, "[illegible] जीवन को भूल गईं तुम? वीनू, बच्चे हम[illegible] अपूर्ण इच्छाओं की पूर्ति का साधन मात्र [illegible] होते. उन का अपना जीवन होता है. है न[illegible]

वीणा ने सहमति में अपना सिर झु[illegible] लिया.

जमाना

वैसे तो मेरे हाल पर
हंसता है जमाना,
यह क्या तेरी आंख में
नम देख रहा हूं.

—अख्तर

लुई ब्रेली मेमोरियल स्कूल

लेख • शिवराम शुक्ल
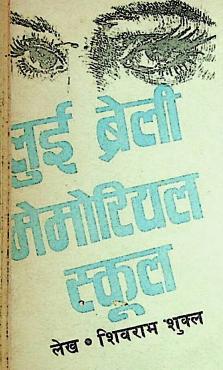
विश्व के पांच करोड़ अंधों में से 80 लाख अंधे केवल भारत में हैं और इस में से छः लाख अंधे केवल पश्चिमी बंगाल में हैं. पश्चिमी बंगाल में, अंधों को पढ़ना सिखाने व संगीत या अन्य दस्तकारी आदि का प्रशिक्षण दे कर उन्हें आत्मनिर्भर बनाने के उद्देश्य से नौ प्राथमिक विद्यालय व एक अध्यापक प्रशिक्षण केंद्र (नरेंद्रपुर में रामकृष्ण मिशन में) स्थापित किया गया है. इन्हीं में एक प्राथमिक विद्यालय है—लुई ब्रेली मेमोरियल स्कूल. वैसे देश में इस प्रकार के कुल 150 स्कूल हैं. इन में सब से ज्यादा 23 गुजरात में हैं.

इस स्कूल का नामकरण लुई ब्रेली के नाम पर किया गया है. लुई ब्रेली ने दृष्टिहीनों के लिए 'स्पर्श वर्णमाला' (टचिंग अलफावेट) शिक्षा प्रणाली का आविष्कार किया था. 1853 में इस प्रणाली को मान्यता मिल गई थी. इस प्रणाली से केवल कक्षा आठ तक ही विधिवत शिक्षा प्राप्त की जा सकती है. इस के आगे की शिक्षा सुन कर तथा स्पर्श वर्णमाला पर याद कर के प्राप्त की जा सकती हैं, पर तब परीक्षा देते समय अपनी कक्षा से छोटी कक्षा

सहायता भी प्राप्त नहीं होती जब कि इ
प्रकार के अन्य स्कूलों को किसी न किसी रू
में सरकारी आर्थिक सहायता अवश्य मिल
है.

इस स्कूल को, इस में पढ़ते छात्रों
अभिभावक कुछ आर्थिक सहायता देते
बाकी धन ये नेत्रहीन छात्र सड़क पर मांग क
प्राप्त करते हैं, जो किसी भी दृष्टि से उचि
प्रतीत नहीं होता. आवास की सुविधा प्रा
छात्रों के भोजन आदि पर 150 रु. दैनिक
खर्च आता है. इस के अलावा 300 रु
मासिक किराए का स्कूल का भवन है.

इस स्कूल में भवन के नाम पर मात्र

अंधे विद्यार्थियों को आत्मनिर्भर बनाने के उद्देश्य से स्थापित यह विद्याल आज केंद्र व राज्य सरकार की उपेक्षा का शिकार क्यों हो रहा है?

कमरे हैं. इन्हीं में पढ़ाई होती है व यंत्र
रहते हैं. इन्हीं में छात्र भी रहते हैं. र
अलग है. यहां एक प्रधानाध्यापक के अल
दो अध्यापक व पांच अन्य कर्मचारी
अध्यापकों की अत्यधिक कमी है, क्योंकि
अध्यापक केवल तीन छात्रों को ही पढ़ा प
है. प्रधानाचार्य ने इन सारी कठिनाइयों
संबंध में सरकार से पत्रव्यवहार भी किया
पर अभी तक किसी के कान पर जूं तक
रेंगी है.

स्पर्श वर्णमाला प्रणाली से पढ़ने में '
स्लेट' तथा अंक गणित के लिए 'टेलर फ्रे
का प्रयोग होता है. टेलर फ्रेम पर 450
होते हैं. इन छिद्रों में धातु के टुकड़े (अ

का एक छात्र अपने लेखक (राइटर) के रूप में लेना पड़ता है, जो अंधे व्यक्ति के बोलते रहने पर कापी पर लिखता है.

कलकत्ता में लुई ब्रेली मेमोरियल स्कूल की स्थापना 17 अक्तूबर, 1977 को कलकत्ता विश्वविद्यालय के उपकुलपति डा. मुखर्जी द्वारा की गई थी और पंकजकुमार दास (जो स्वयं अंधे हैं) को प्रधानाध्यापक बना कर इस स्कूल की जिम्मेदारी सौंप दी गई थी. गत वर्षों से अनेक कठिनाइयों को सहते हुए पंकजकुमार दास इस जिम्मेदारी को निभा रहे हैं.

इस में प्रवेश पाने के दो आयुवर्ग हैं. पहले में छः से 14 वर्ष की आयु तथा दूसरे में 15 से 25 वर्ष तक की आयु के नेत्रहीन व्यक्ति अपनी रुचि के अनुसार प्रशिक्षण पाते हैं.

पश्चिमी बंगाल में नेत्रहीनों के सब विद्यालयों में मिला कर कुल 550 अंधे व्यक्तियों के प्रशिक्षण की व्यवस्था है—पर इस लुई ब्रेली स्कूल में कुल 25 अंधे लोगों की पढ़ाई व प्रशिक्षण की व्यवस्था है. आजकल यहां इन 25 नेत्रहीन व्यक्तियों में आठ लड़कियां भी हैं. इस स्कूल में आवास की असुविधा तो है ही, इसे सरकारी आर्थिक

चाए जाते हैं. विलियम टेलर फ्रेम पर
ग्रेजी के अलावा सभी भारतीय भाषाओं
था अंक गणित का अध्ययन किया जाता है.
केन आजकल इन के स्थान पर
इपराइटर की तरह का आधुनिक उपकरण
ा लिया गया है.

सरकारी रवैया

इस स्कूल के प्रधानाध्यापक
कजकुमार दास ने सरकार से स्कूल के
न, छात्रछात्राओं के अलगअलग रहने की
वास व्यवस्था करने व आर्थिक सहायता
की मांग की है. जनवरी 1982 में वह तीन
क्तियों का एक प्रतिनिधि मंडल बना कर
ज्य के मुख्य सचिव से मिल कर उन्हें अपनी
ठनाइयों से अवगत करा चुके हैं. इस से पूर्व
1978 से सरकार को पत्र लिख कर अपनी
स्याओं से बराबर अवगत कराते रहे हैं. 5
ाई, 1982 को विशेष अधिकारी
हिम्मतलाल ने स्कूल का निरीक्षण किया और
सरकार को अपनी रिपोर्ट पेश कर दी. शिक्षा

द्यार्थियों को पढ़ाते हुए अध्यापक
द्याधर मल्लिक (दाएं) व (नीचे)
द्यालय के प्राचार्य पंकजकुमार दास.
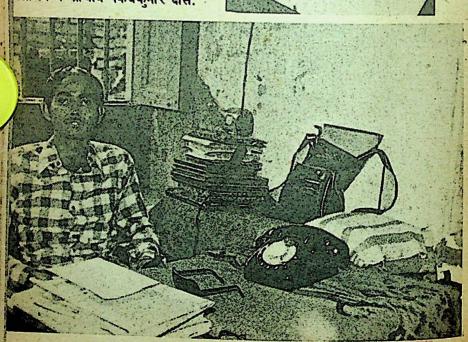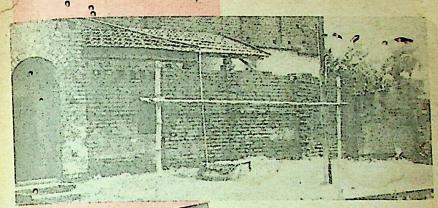
विभाग के तकनीकी निर्देशक ने भी स्कूल का मुआयना कर के अपनी रिपोर्ट विभाग को दे दी, पर अभी तक कहीं से कोई कारवाई नहीं हुई. हां स्कूल की पांचवीं वर्षगांठ पर प्रधान मंत्री व राज्य के राज्यपाल के शुभकामना संदेश अवश्य प्राप्त हुए.

क्या केंद्र और राज्य सरकारों का यह कर्तव्य नहीं है कि वे ऐसी संस्थाओं की सहायता करें? ●

किराए पर ली गई विद्यालय की टूटी-फूटी इमारत (ऊपर) व (वाएं) मिट्टी के खिलौने बनाते अंधे बच्चे.
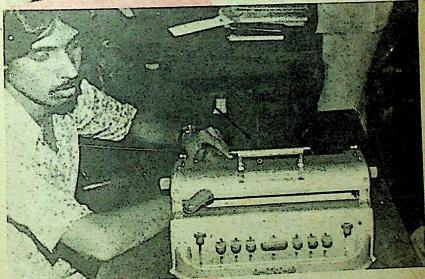
विद्यालय का एक छात्र आधुनिक यंत्र पार्किंग ब्रेलर का उपयोग करते हुए.

(पृष्ठ 23 से आगे)

देनी चाहिए. विश्वासघात करने वालों की आजकल कमी नहीं है. कभी पति पत्नी से विश्वासघात करता है, कभी पत्नी पति से. आखिर हम किसकिस की हत्या करते रहेंगे? हत्या करने से तो कोई समस्या नहीं सुलझती. ऐसा कर के हम अपना व अपने बच्चों का भविष्य अंधकारमय कर देते हैं. मुकदमेबाजी व भागदौड़ में सारा धन पानी की तरह बह जाता है और बाकी जिंदगी जेल की चारदीवारी के अंदर बीत जाती है. थोड़े से संयम से काम लेने पर इस स्थिति से बचा जा सकता था.

असंगत प्रेम भी कम दुखदायी नहीं होता. विवाहित पुरुष या स्त्री से प्रेम, निर्धन का अत्यंत धनी से प्रेम, चचेरी, मौसेरी, फुफेरी व ममेरी बहनों से प्रेम, घरेलू नौकरानी से प्रेम, साली से प्रेम आदि असंगत प्रेम के थोड़े से उदाहरण हैं. इस के संबंध में लोग यह तर्क दे सकते हैं कि प्रेम उचितअनुचित, संगतअसंगत किसी का ध्यान नहीं रखता. यह तो बिना सोचेसमझे कहीं भी, किसी से भी हो सकता है. बहुत से लोग तो यह कहते हैं कि वह उसे पसंद है, अच्छी लगती है या लगता है, इसलिए उसे उस से प्रेम हो गया है. सोचने की बात है कि अगर प्रेम संबंध इसी आधार पर होने लगें तो हम किसकिस से प्रेम करते रहेंगे. छोटे से छोटा निर्णय लेने से पहले हम कई बार सोचते हैं, तब हम बिना सोचेसमझे प्रेम कैसे कर लेते हैं, जब कि वह पूरी जिंदगी को प्रभावित करती है?

इस के अतिरिक्त प्रेमसंबंध को वर्षों तक खींचना भी दोनों को महंगा पड़ता है. समय के परिवर्तन से कब किस का विचार बदल जाए, कुछ कहा नहीं जा सकता. इसलिए जो निर्णय करना हो, शीघ्र कर लेना चाहिए. मांबाप की अनुमति व सामाजिक एवं आर्थिक परिस्थितियों को ध्यान में रख कर यदि शीघ्र निर्णय ले लिया जाए तो ज्यादा अच्छा रहता है. वर्षों तक रोज मिलना व कोरे वादे करना कोई महत्त्व नहीं रखता. अगर विवाह हो जाए तब तो बहुत ही अच्छा है. लेकिन यदि यह संभव न हो तो दोनों को मिलनाजुलना बिलकुल बंद कर देना चाहिए. अगर वे मांबाप की अनुमति के बिना शादी करने का साहस रखते हों तो उन्हें इस में देर नहीं करनी चाहिए. कोरी भावुकता पर आधारित प्रेम का वास्तविक जीवन से कोई संबंध नहीं है.

वास्तव में हम जिसे प्रेम का नाम देते हैं, वह एक मित्रता के अतिरिक्त कुछ नहीं है. दोनों का एक दूसरे के प्रति आकर्षण स्वाभाविक है. लेकिन ऐसे हर संबंध को प्रेम संबंध का नाम नहीं दिया जा सकता. अगर वे ऐसा करते हैं तो अपने जीवन में निराशा, कटुता व असफलता को खुद निमंत्रण देते हैं. प्रेम वास्तव में एक वरदान है, लेकिन गलत परिस्थितियों में, गलत पात्र से किया गया प्रेम किसी अभिशाप से कम नहीं है. ●

वधू आटा गूंधे, वर काटे लकड़ी

सोवियत गणराज्य एस्तोनिया के तार्तु जिले के उलेनुम बस्ती में यह प्रथा है कि नवविवाहित दंपती में से वधू को आटा गूंधना पड़ता है और वर को लकड़ी काटनी पड़ती है ताकि नए परिवार के लिए रोटी तैयार की जा सके. इस प्रथा को धूमधाम और उत्साह के साथ मनाया जाता है.

इसी प्रकार यहां के सारेम्मा द्वीप के नवविवाहितों के लिए एक नई प्रथा शुरू हुई है. यहां किंगिसेप्प नगर में एक पुराने मध्ययुगीन किले का जीर्णोद्धार किया जा रहा है. जिस के लिए नव दंपति को अब पत्थर की छोटीछोटी ईंटें ला कर पहुंचानी पड़ती है. यह कार्य इस का प्रतीक माना जाता है कि नए परिवार का आधार भी उतना ही सुदृढ़ बन सके जितनी सुदृढ़ इस किले की दीवार है.